धूमावतीरहस्यम्

(महाविद्या धूमावती उपासना की सम्पूर्ण विधियों का समावेश)

'अशोकेन्दु' हिन्दी-टीकासंवलित





व्याख्याकार

डॉ० अशोक कुमार गौड

धूमावतीरहस्यम्

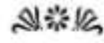
व्याख्याकार : डॉ0 अशोक कुमार गौड



॥ श्रीः ॥

चौखम्बा सुरभारती ग्रन्थमाला

541



धूमावतीरहस्यम्

(महाविद्या धूमावती उपासना की सम्पूर्ण विधियों का समावेश)

'अशोकेन्दु' हिन्दी-टीकासंवलित

व्याख्याकार

डॉ० अशोक कुमार गौड

वेदाचार्य, पी०एच-डी०



चौखम्बा सुरभारती प्रकाशन

वाराणसी

धूमावतीरहस्यम्
पृष्ठ : 496

प्रकाशक
चौखम्बा सुरभारती प्रकाशन
(भारतीय संस्कृति एवं साहित्य के प्रकाशक तथा वितरक)
के. 37/117 गोपालमन्दिर लेन
पो. बा. नं. 1129, वाराणसी 221001
दूरभाष : +91 542-2335263; 2335264
email : chaukhambasurbharatiprakashan@gmail.com
website : www.chaukhamba.co.in

प्रथम संस्करण 2018 ई०
मूल्य : ₹ 200.00

अन्य प्राप्तिस्थान
चौखम्बा पब्लिशिंग हाउस
4697/2, भू-तल (ग्राउण्ड फ्लोर)
गली नं. 21-ए, अंसारी रोड
दरियागंज, नई दिल्ली 110002
दूरभाष : +91 11-23286537
email : chaukhambapublishinghouse@gmail.com

•

चौखम्बा संस्कृत प्रतिष्ठान
38 यू. ए. बंगलो रोड, जवाहर नगर
पो. बा. नं. 2113, दिल्ली 110007

•

चौखम्बा विद्याभवन
चौक (बैंक ऑफ बड़ौदा भवन के पीछे)
पो. बा. नं. 1069, वाराणसी 221001

समर्पित



जिनके जीवन में कर्म, ज्ञान और भक्ति की विमल त्रिवेणी
सदैव प्रवाहित होती है
ऐसे
धर्मप्राण व भारतीय संस्कृति के रक्षक

सुधीरकुमारशर्मविदुषे धर्मवर्मणे
हरियाणासंस्कृताकादमीनिदेशकाय च।
धूमावतीरहस्यं हि सम्यक् साधु विभाषितम्
अशोकेन कुमारेण गौडेनेदं समर्प्यते॥

भावत्क एव—**अशोककुमारगौडः**

जीवन परिचय

हरियाणा वैदिक काल से ही विद्या की व्याप्ति हेतु विश्व विनन्दित है। हरियाणा प्रदेश के अन्तर्गत गाँव-रानीला, जिला-भिवानी में वहाँ के प्रतिष्ठित नागरिक श्री रामअवतार शर्मा के घर में ५ दिसम्बर १९७१ में एक बालक का जन्म हुआ। नामकरण-संस्कार के उपरान्त उस बालक का नाम सुधीर रखा गया। चूँकि परिवार में पहला पुत्र होने के कारण इनका लालन-पालन अत्यन्त लाड़-प्यार से किया गया और इनकी प्रारम्भिक शिक्षा भिवानी में ही हुई। इसके पश्चात् बी.ए. की परीक्षा आपने महर्षि दयानन्द यूनिवर्सिटी, रोहतक से प्रथम श्रेणी में व संस्कृत से एम.ए. की परीक्षा पंजाब यूनिवर्सिटी, चण्डीगढ़ से प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण की। इग्नू के द्वारा बी.एड. की परीक्षा भी प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण कर, पंजाब यूनिवर्सिटी चण्डीगढ़ से संस्कृत में पी-एच.डी. की उपाधि प्राप्त की। वर्तमान समय में कुमाऊं यूनिवर्सिटी, नैनीताल से आप डी-लिट्. हेतु शोधग्रन्थ लिख रहे हैं।

आप शिक्षा विभाग, हरियाणा में प्राध्यापक, राष्ट्रीय संस्कृत परिषद् मानव संसाधन मन्त्रालय के सदस्य तथा देहली संस्कृत अकादमी एवं हिमाचल संस्कृत एकेडमी के संचालक मण्डल के भी सदस्य हैं। ऐसे न जाने कितनी ही गणमान्य संस्थाओं के आप सदस्य हैं। आपको अभी तक विभिन्न संस्थाओं द्वारा ४६ पुरस्कारों, मैडल व सम्मानों से सम्मानित किया जा चुका है। जिनमें संस्कृत सेवा सम्मान, हरियाणा संस्कृत एकेडमी व देहली संस्कृत एकेडमी द्वारा दधिची सम्मान, श्री बृजदेवी पं० हनुमन्त शास्त्री मेमोरियल एकेडमी जयपुर द्वारा, संस्कृत सेवा सम्मान, प्राच्य विद्या संस्थान कुरुक्षेत्र यूनिवर्सिटी द्वारा विशेष सम्मान। न जाने कितनी ही सभाओं की अध्यक्षता करते हुए व मुख्य आतिथ्य से आपने गौरवान्वित किया। इतना ही नहीं समय-समय पर आपने अनेकानेक संस्थाओं में अपने विचारों को व्यक्त किया और बहुत सी विद्वद् गोष्ठियों का आयोजन किया। आप प्रारम्भ से ही कवि हृदय हैं और आपने भारतवर्ष के अनेकानेक स्थानों पर अपनी कविताओं से श्रोताओं को मन्त्र-मुग्ध किया है। अपनी उद्भट लेखनी से 'गृहवास्तु एक समीक्षण', 'संस्कृत तरंगिणी', 'सरंग संस्कृत शिक्षण', 'हरिप्रभा संस्कृत पत्रिका, हरियाणा' एवं 'अरुणा नावेल' (संस्कृत) का सम्पादन एवं प्रकाशन किया। वर्तमान समय में आप हरियाणा संस्कृत अकादमी के निदेशक (डायरेक्टर) के पद पर आसीन हैं। आपकी धर्मपत्नी श्रीमती अनीता शर्मा न्यू इण्डिया इन्श्योरेन्स कं० लि० में एडमिनेस्ट्रेटिव आफिसर के पद पर आसीन हैं। आपके दो पुत्र हैं।

प्रो० सर्वेश्वरराजहंस

पूर्व संकायाध्यक्ष-दर्शन संकाय, विभागाध्यक्ष-न्याय एवं मीमांसा
सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय, वाराणसी

प्रस्तावना

जब सती अपने पिता दक्ष के यज्ञ में बिना निमंत्रण के जाने के लिए उद्यत हुई, तब शिवजी ने उन्हें मना किया। किन्तु वह न मानीं, उस समय उन्होंने अति भयानक और विकराल रूप धारण किया। उनके इस रूप को देखकर शिव तो भाग चले। किन्तु भागते हुए उनको दसो दिशाओं में रोकने के लिए सती ने अपनी अङ्गभूता दस देवियों को प्रकट किया। देवी की ये स्वरूपा शक्तियाँ ही दस महाविद्यायें हैं, इन्हीं दस महाविद्याओं में धूमावती सातवें स्थान पर आती हैं।

धूमावती देवी के विषय में कथा आती है कि एक बार पार्वती ने शिवजी से अपनी क्षुधा को निवारण करने का निवेदन किया। किन्तु वे चुप रह गए। कई बार निवेदन करने पर जब शिवजी ने उनकी ओर ध्यान नहीं दिया, तब उन्होंने शिव को ही निगल लिया। उनके शरीर से धूमराशि निकली। तब शिवजी ने शिवा से कहा कि आपकी मनोहर मूर्ति वगला अब 'धूमावती' या 'धूम्रा' कही जाएगी। शास्त्रकारों ने अपने ग्रन्थों में धूमावती का स्वरूप इस प्रकार से वर्णित किया है—जो धूम्र आभा से युक्त होते हुए, अपनी देहयष्टि पर धूमिल वस्त्र धारण करती हैं, जिनके दाँत टेढ़े-मेढ़े और बाहर की ओर दिखाई देते हैं। जिनके केश बिखरे हुए हैं, ऐसी धूमावती कौआ के चिह्न से युक्त ध्वजावाले रथ पर सदैव विराजित रहती हैं। धवल वर्ण के दोनों हाथों में वह सूप धारण की हुई हैं, जिनका शरीर रुक्ष है और वे सदैव भूख-प्यास से आकुल रहती हैं। जिनके दोनों नेत्र रक्त के समान लाल हैं और जिनकी नाक अत्यधिक बड़ी व आँखों से टेढ़ा देखनेवाली हैं, जो सदा भय और कलह देनेवाली हैं। ऐसी विरूपा और भयानक आकृति वाली होती हुई भी धूमावती अपने भक्तों व साधकों को पुत्रलाभ, धनलाभ और शत्रुओं पर विजय प्रदान करवाती हैं। अभिचार कर्मों में इनकी उपासना का विधान है।

आज भी इनके देवालय वाराणसी (उत्तर प्रदेश), दतिया (मध्य प्रदेश) और हिमाचल प्रदेश के जिला-कांगड़ा में ज्वालामुखी नामक स्थान पर है। इनके अतिरिक्त भारतवर्ष के और भी नगरों में इनके देवालय प्राप्त होते हैं।

धूमावती देवी से सम्बन्धित अनेकानेक पुस्तकों का प्रकाशन हो चुका है, किन्तु मैंने इस 'धूमावती-रहस्यम्' नामक पुस्तक में इनकी प्रतिष्ठा, पूजन और हवन की पूर्ण विधियों को प्रस्तुत किया है। मुझे विश्वास है कि इस पुस्तक का आश्रय लेकर वैदिक, कर्मकाण्डी और इनके भक्त निःसन्देह लाभान्वित होंगे।

डी. ७/१४ सकरकन्द गली, वाराणसी

भवदीय

अशोक कुमार गौड

विषयानुक्रमणिका

धूमावतीप्रतिष्ठाविधिः

मंगलाचरणम्

या वेरिकाख्यसविधे हरियाणराज्ये दुर्वाससः समधिगम्य पुनः प्रतिष्ठा।
सा पूर्वसिद्धरिपुमर्दिनिभीमरूपा भीमा सदाऽवतु परा कुलदेवता नः॥ १॥

गौडाशोककुमारेण समर्चासाङ्गपूर्तये।
धूमावतीरहस्याख्यः कृतो ग्रन्थो यथाविधि॥ २॥

प्रायश्चित्तम्

धूमावती देवी की प्रतिष्ठा करने की इच्छा रखनेवाला मनुष्य प्रथम दिन से पूर्व किसी शुभ दिन में प्रतिष्ठा के अधिकार की सिद्धि के लिये छः वर्षीय, तीन वर्षीय या डेढ़ वर्षीय क्रमशः एक सौ अस्सी, नब्बे, पैंतालीस संख्या की गायों के मूल्य के समान द्रव्य सामने रखकर प्रायश्चित्त करे। शक्ति हो तो भींगे वस्त्र में चार, सात, बारह, अट्ठारह, चौबीस अथवा अट्ठाईस धर्माधिकारी सभ्यों की प्रदक्षिणा करे और निम्न श्लोकों का उच्चारण करे—

ॐ समस्तसम्पत्समवाप्तिहेतवः समुत्थितागःकुलधूमकेतवः।
अपारसंसारसमुद्रसेतवः पुनन्तु मां ब्राह्मणपादपांसवः॥
आपद्घनध्वान्तसहस्रभानवः समीहितार्थार्पणकामधेनवः।
समस्ततीर्थाम्बुपवित्रमूर्तयो रक्षन्तु मां ब्राह्मणपादपांसवः॥
विप्रौघदर्शनात्सद्यः क्षीयन्ते पापराशयः। वन्दनान्मङ्गलावाप्तिरर्चनादच्युतं पदम्॥
आधिव्याधिहरं नृणां मृत्युदारिद्र्यनाशनम्। श्रीपुष्टिकीर्तिदं वन्दे विप्रश्रीपादपङ्कजम्॥

तदुपरान्त ब्राह्मण यजमान से पूछें—

किन्ते कार्यं वदास्माकं किं वा मृगयसे द्विज।
तत्त्वतो ब्रूहि तत्सर्वं सत्यं हि गतिरात्मनः॥
(सत्येन द्योतते सूर्यः सत्येन द्योतते शशी।
सत्येन द्योतते वह्निः सर्वं सत्ये प्रतिष्ठितम्॥)
अस्माकं चैव सर्वेषां (सत्यमेव परा गतिः) सत्यमेव परं बलम्।
यदि चेद्रक्षसे सत्यं नियतं प्राप्स्यसे (सुखम्) शुभम्॥

यद्यागतोऽस्यसत्येन न त्वं शुद्ध्यसि कर्हिचित्।
स्वल्पं वाऽथ प्रभूतं वा धर्मविद्भ्यो निवेदयेत्।
रहस्यकृतपापानि उपांशुं न च संस्मरेत्॥

ऐसा पूछने पर गन्ध, अक्षत और पुष्प से ब्राह्मणों की पूजा करके गौ एवं वृष के मूल्य को उनके सामने रखकर यजमान निम्न संकल्प करे—

ॐ तत्सदद्य करिष्यमाणप्रायश्चित्ताङ्गत्वेन इदं गोवृषनिष्क्रयद्रव्यं सभ्येभ्यो ब्राह्मणेभ्यो दातुमहमुत्सृज्ये। ब्राह्मण लोग उस द्रव्य को आपस में विभाजित कर लेवें।

ततः प्रायश्चित्तो ब्रूयात्—अमुकस्य मम जन्मप्रभृति अद्य दिनं यावत् ज्ञाताज्ञात-कामाकाम-सकृदसकृत्कृत - कायिक - वाचिक - मानसिक - सांसर्गिक - स्पृष्टास्पृष्ट - भुक्ताभुक्त - पीतापीत - सकल-पातकातिपातकोपपातकलघुपातक - सङ्करीकरण - मलिनीकरणा-पात्रीकरणजातिभ्रंशकरप्रकीर्णकपातकानां मध्ये संभावितानां पापानां निरासार्थमनुगृह्य प्रायश्चित्तमुपदिशन्तु भवन्तः। (पुत्रादिश्चेदाचरति तदा ममास्य पित्रादेः इति वाच्यम्।)

ब्राह्मणप्रार्थना

आ ब्रह्मस्तम्बपर्यन्तं भवद्वशमिदं जगत्।
यक्षरक्षःपिशाचादिसदेवासुरमानुषम् ॥
सर्वे धर्मविवेक्तारो गोप्तारः सकला द्विजाः।
मम देहस्य संशुद्धिं कुर्वन्तु द्विजसत्तमाः॥
मया कृतं महाघोरं ज्ञातमज्ञातकिल्विषम्।
प्रसादः क्रियतां मह्यं शुभानुज्ञां प्रयच्छत।
पूज्यैः कृतः पवित्रोऽहं भवेयं द्विजसत्तमैः॥

(पुत्रादिश्चेत्प्रायश्चित्तकर्ता तदा अस्मच्छब्दस्थाने 'अस्य', 'एतत्कृतम्', 'प्रसादः क्रियतामस्य', 'पवित्रोऽयं भवेच्च' इत्यादि-वाच्यम्) ततः 'मामनुगृह्णन्तु भवन्तः' इत्युक्त्वा पुनः प्रणमेत्।

(मामित्यत्र 'एतम्' इत्यन्यकर्तृके) ततो गन्धाक्षतपुष्पैः पुस्तकं सम्पूज्य गोमूल्यं निबन्धपूजात्वेन निवेदयेदित्याचारः। ततोऽनुवादकं सम्पूज्य तस्मै दक्षिणां दद्यात्। ततः—अनुवादकस्याग्रे—'अमुकशर्मणस्तव' जन्मप्रभृत्यद्य दिनं यावत् ज्ञाताज्ञातकामाकाम - सकृदसकृत्कृत-कायिक-वाचिक-मानसिक-सांसर्गिक-स्पृष्टास्पृष्ट-भुक्ताभुक्त-पीतापीत-सकलपातकातिपातकोपपातक-लघुपातक-सङ्करीकरण-मलिनीकरणापात्रीकरणजातिभ्रंशकरप्रकीर्णकपातकानां मध्ये सम्भावितानां पापानां निरासार्थं सभ्यैरुपदिष्टं षडब्द-त्र्यब्द-सार्द्धाब्दान्यतमं सर्वप्रायश्चितं गोनिष्क्रयद्रव्यदानप्रत्याम्नायद्वारा पूर्वाङ्गोत्तराङ्गयुतं त्वयाऽऽचरितव्यं तेन तव (पित्रादेः) शुद्धिर्भविष्यति तेन त्वं कृतार्थो भविष्यसि। इति ब्रूहि इति वदेत् ततः सभ्येन प्रेरितोऽनुवादकः—(इत्येनमुपदेशं प्रायश्चित्तिनं प्रति त्रिर्ब्रूया-दिति मयूखे) 'भवदनुग्रहः' इति वदेत् पर्षदं विसृजेच्च।

प्रतिज्ञासंकल्पः

कुशयवतिलजलान्यादाय—श्रीमदनन्तवीर्यस्य आदित्यनारायणस्य अचिन्त्यापरिमितशक्त्या ध्रियमाणस्य महाजलौघमध्ये परिभ्रममाणानामनेककोटिब्रह्माण्डानामेकतमे अव्यक्तमहदहङ्कारपृथिव्यप्तेजोवाय्वाकाशाद्यावरणैरावृते अस्मिन् महति ब्रह्माण्डखण्डयोर्मध्ये आधारशक्ति-वराहकूर्मानन्ताद्यष्टदिग्गजोपरि प्रतिष्ठिते सप्तपातालोपरिभागे सप्तान्त-लोकषट्कस्याधोभागे महाकालायमानशेषस्य सहस्रफणामणिमण्डिते दिग्दन्तिदन्तशुण्डादण्डोत्तम्भिते लोकालोकाचलवलयिते लवणेक्षु-सुरासर्पिदधिक्षीरोदकार्णवपरिवृतेजम्बूप्लक्षशाल्मलिकुशक्रौञ्चशाक-पुष्करसप्तद्वीपमण्डिते कांस्यताम्रगभस्तिनागगन्धर्वचारणभारतादिनव-खण्डखण्डिते भारतवर्षे भरतखण्डे अयोध्या - मथुरा -माया - काशी-काञ्च्यवन्ती - द्वारवती - कुरुक्षेत्र - पुष्करादिनानातीर्थयुक्तकर्मभूमौ

(मध्यरेखायाः पूर्वदिग्भागे भागीरथ्याः पश्चिमे तीरे) जगत्स्रष्टुः परार्द्धद्वयजीविनो ब्रह्मणो द्वितीये परार्द्धे तस्य प्रथमवर्षे प्रथममासे प्रथमपक्षे प्रथमदिवसे अह्नो द्वितीययामे तृतीयमुहूर्ते प्रथमघटिकायां सप्तमे वैवस्वतमन्वन्तरेऽष्टाविंशतितमे कलियुगे कलिप्रथमचरणे बौद्धावतारे विक्रमशके वर्तमानेऽमुकनाम्नि संवत्सरे उत्तरायणे सूर्ये वसन्तऋतौ अमुकमासे अमुकपक्षे अमुकतिथौ अमुकवासरे अमुकनक्षत्रे अमुकयोगे अमुककरणे अमुकराशिस्थिते चन्द्रे अमुकराशिस्थिते सूर्ये अमुकराशिस्थिते देवगुरौ शेषेषु ग्रहेषु यथास्थानस्थितेषु सत्सु एवं गुणगणविशिष्टे देशे काले च अमुकशर्मणो मम जन्मप्रभृति अद्य दिनं यावत् ज्ञाताज्ञात-कामाकाम-सकृदसकृत्कृत्-कायिक-वाचिक-मानसिक-सांसर्गिक-स्पृष्टास्पृष्ट-भुक्ताभुक्त-पीतापीत-सकलपातकातिपातकोपपातक-लघुपातकसङ्करीकरणमलिनीकरणापात्रीकरणजातिभ्रंशकरप्रकीर्णकपातकानां मध्ये संभावितानां पापानां क्षयद्वारा श्रीधूमावतीप्रतिष्ठाकर्माधिकारार्थं श्रीपरमेश्वरप्रीत्यर्थं गोमूल्यदानरूपप्रत्याम्नायद्वाराऽहमाचरिष्ये।

संकल्पः—प्रारीप्सितप्रायश्चित्तस्याङ्गत्वेन केशश्मश्रुनखानि वापयिष्ये (वप्स्ये)।

आचार्य निम्न श्लोक का उच्चारण करके यजमान की शिखा को ऊपर करके नीचे और चारो ओर के केशों का वपन करावें—

ॐ यानि कानि च पापानि ब्रह्महत्यासमानि च।
केशानाश्रित्य तिष्ठन्ति तस्मात्केशान् वपाम्यहम्॥

तदुपरान्त—

ॐ आयुर्बलं यशो वर्चः प्रजापशुवसूनि च।
ब्रह्म प्रज्ञां च मेधां च त्वं नो देहि वनस्पते॥
ॐ अन्नाद्याय व्यूहध्वर्ठ० सोमो राजाऽयमागमत्।
स मे मुखं प्रमाक्ष्यते यशसा च भगेन च॥

पीछे दिए गए मन्त्रों से बारह अंगुल के अपामार्ग आदि के काष्ठ के द्वारा पूर्वाभिमुख या उत्तराभिमुख होकर, मुख की दुर्गन्धि के नाश के लिए दन्तधावन करके चुपचाप मार्जनात्मक स्नान कर निम्न संकल्प करें—

करिष्यमाण-प्रायश्चित्ताङ्गत्वेन यजमानशरीरसम्बन्धसमस्तपाप-क्षयार्थं भस्मादिभिर्दशविधस्नानानि करिष्ये। ऐसा संकल्प करके वहाँ पहले श्रौत या स्मार्त भस्म से स्नान करे अथवा उसके अभाव में अन्य भस्म को लेकर बायें हाथ में रखकर दाहिने हाथ से ढँककर—**ॐ अग्निरिति भस्म वायुरिति भस्म जलमिति भस्म स्थलमिति भस्म व्योमेति भस्म सर्वठं॰ हवा इदं भस्म मन एतानि चक्षूंसि भस्मानि।** इस मन्त्र से भस्म का अभिमन्त्रण करके कहें—**ॐ ईशानः सर्वविद्यानामीश्वरः सर्वभूतानां ब्रह्माधिपतिर्ब्रह्मणोऽधिपतिर्ब्रह्मा शिवो मे अस्तु सदा शिवोम्—शिरसि। ॐ तत्पुरुषाय विद्महे महादेवाय धीमहि। तन्नो रुद्र प्रचोदयात्—मुखे। ॐ अघोरेभ्योऽथ घोरेभ्यो घोरघोरतरेभ्यः। सर्वेभ्यः शर्वसर्वेभ्यो नमस्ते अस्तु रुद्ररूपेभ्यः—हृदये। ॐ वामदेवाय नमो ज्येष्ठाय नमः श्रेष्ठाय नमो रुद्राय नमः कालाय नमः कलविकरणाय नमो बलविकरणाय नमो बलाय नमो बलप्रमथनाय नमः सर्वभूतदमनाय नमो मनोन्मनाय नमः—गुह्ये। ॐ सद्यो जातं प्रपद्यामि सद्योजाताय वै नमो नमः। भवे भवे नातिभवे भवस्व मां भवोद्भवाय नमः—पादयोः।** 'ॐ' इस प्रणव के द्वारा मस्तक से लेकर पैर तक सभी अंगों में भस्म लपेटे। उसके बाद शुद्ध गोबर लेकर—

**ॐ अग्रमग्रं चरन्तीनामोषधीनां रसं वने।
तासामृषभपत्नीनां पवित्रं कायशोधनम्।
यन्मे रोगं च शोकं च नुद गोमय सर्वदा॥**

इस मन्त्र से अभिमन्त्रित करके सूर्य को दिखावें—**ॐ मा नस्तोके तनये मा न आयुषि मा नो गोषु मा नो अश्वेषुरीरिषः। मा नो वीरान् रुद्र भामिनो वधीर्हविष्मन्तः सदमित्वा हवामहे।**

यजमान इस मन्त्र से दक्षिण हाथ से गृहीत गोमय के द्वारा सिर से नाभि पर्यन्त और बायें हाथ से गृहीत गोमय के द्वारा नाभि से पैर तक लेप करे। देश के भेद से मन्त्र की आहुति होती है। तदुपरान्त मिट्टी लेकर निम्न श्लोकों का उच्चारण करे—

ॐ अश्वक्रान्ते रथक्रान्ते विष्णुक्रान्ते वसुन्धरे।
शिरसा धारयिष्यामि रक्ष मां त्वं पदे पदे॥ १॥
उद्धृतासि वराहेण कृष्णेन शतबाहुना।
मृत्तिके ब्रह्मदत्तासि काश्यपेनाभिवन्दिता॥ २॥
मृत्तिके हर मे पापं यद्दैवं यच्च मानुषम्।
मृत्तिके देहि मे पुष्टिं त्वयि सर्वं प्रतिष्ठितम्।
त्वया हतेन पापेन जीवामि शरदां शतम्॥ ३॥

पुनः—**ॐ नमो मित्रस्य वरुणस्य चक्षसे महो देवाय तदृतर्ठ० सपर्यत॥ दूरे दृशे देवजाताय केतवे दिवस्पुत्राय सूर्याय सर्ठ० सत॥** इस मन्त्र से सूर्य को दिखाकर। **ॐ इदं विष्णुर्विचक्रमे त्रेधा निदधे पदम् समूढमस्यपार्ठ० सुरे स्वाहा॥** इस मन्त्र का उच्चारण करते हुए गोबर का लेपन करे। इसके बाद जल से स्नान करे। **ॐ आपो अस्मान्मातरः शुन्धयन्तु घृतेन नो घृतप्वः पुनन्तु। विश्वर्ठ०हि रिप्रम्प्रवहन्ति देवीः॥** इस मन्त्र से नदी आदि में डुबकी लगावे—**ॐ उदिदाभ्यः शुचिरा पूतऽएमि॥** इस मन्त्र से उन्मंजन करे।

नदी के अभाव में—**ॐ इदं विष्णुर्विचक्रमे त्रेधा निदधे पदम्। समूढमस्य पार्ठ०सुरे स्वाहा॥** इस मन्त्र से स्नान करे। शक्ति के अभाव में—
ॐ आपो हि ष्ठा मयोभुवस्ता न ऽऊर्जे दधातन। महेरणाय चक्षसे॥ १॥
ॐ यो वः शिवतमोरसस्तस्य भाजयते ह नः। उशतीरिवमातरः॥ २॥
ॐ तस्माऽअरङ्ग मामवो यस्य क्षयाय जिन्वथ। आपो जनयथा चनः॥ ३॥

उपरोक्त तीन मन्त्रों से क्रमानुसार मार्जन करे। गायत्री मन्त्र से गोबर की तरह गोमूत्र भी शरीर में लपेटे, तदुपरान्त पूर्व की तरह गोबर लपेटे।

इस मन्त्र का उच्चारण करके दधि लपेटे—**ॐ आप्यायस्व समेतु ते विश्वतः सोम वृष्ण्यम्। भवा वाजस्य सङ्गथे॥** इस मन्त्र का उच्चारण करके दधि लपेटे—**ॐ दधिक्राव्णो अकारिषं जिष्णोरश्वस्य वाजिनः। सुरभि नो मुखा करत्प्रण आयूंषि तारिषत्॥** इस मन्त्र का उच्चारण करके घृत लपेटे—**ॐ तेजोऽसि शुक्रमस्यमृतमसि धाम नामासि प्रियं देवानामनाधृष्टं देवयजनमसि॥ इति घृतमनुलिप्य॥** इस मन्त्र का उच्चारण करके कुशा के जल से स्नान करे—**ॐ देवस्य त्वा सवितुः प्रसवेश्विनो-र्बाहुभ्यां पूष्णो हस्ताभ्याम्॥** उसके बाद नाभिमात्र जल में बैठे हुए स्नान और तर्पण करें।

यजमान नवीन यज्ञोपवीत धारण करके पूर्वाभिमुख होकर अक्षत और जल लेकर—**ॐ ब्रह्मादिदेवांस्तर्पयामि। ॐ भूर्देवांस्तर्पयामि। ॐ भुव-र्देवांस्तर्पयामि। ॐ स्वर्देवांस्तर्पयामि। ॐ भूर्भुवः स्वर्देवांस्तर्पयामि।** इन मन्त्रों से एक-एक अंजलि देवतीर्थ से प्रदत्त कर, उत्तर मुख होकर माला की तरह जनेऊ को धारण कर यव और जल से प्राजापत्यतीर्थ से—**ॐ कृष्णद्वैपायनादिऋषींस्त०। ॐ भूऋषींस्त०। ॐ भुवः ऋषींस्त०। ॐ स्वर्ऋषींस्त०। ॐ भूर्भुवः स्वर्ऋषींस्त०।** इन मन्त्रों के द्वारा दो-दो अंजलि जल देकर, दक्षिणाभिमुख होकर, अपसव्य होकर पितृतीर्थ से तिल और जल के द्वारा—**सोमं, पितृमन्तं, यमं अग्निष्वातं कव्यवाहनादीस्त०। भूः पितॄँस्त०। भुवः पितॄँस्त०। स्वः पितॄँस्त०। भूर्भुवः स्व पितॄँस्त०।**

इस प्रकार से तर्पण करके तीर पर आकर निम्न श्लोक का उच्चारण करके तट पर एक अंजलि जल छोड़ें—

ॐ अग्निदग्धाश्च ये जीवा येऽप्यदग्धाः कुले मम।
भूमौ दत्तेन तोयेन तृप्ता यान्तु पराङ्गतिम्॥

निम्न श्लोक का उच्चारण करके तीर पर वस्त्र निचोड़कर सव्य होवें—

ॐ ये के चास्मत्कुले जाता अपुत्रा गोत्रिणो मृताः।
ते गृह्णन्तु मया दत्तं वस्त्रनिष्पीडनोदकम्॥

निम्न श्लोक का उच्चारण करके यक्ष्म का तर्पण करें—

ॐ यन्मया दूषितं तोयं शरीरमलसंभवात्।
तद्दोषपरिहारार्थं यक्ष्माणं तर्पयाम्यहम्॥

पुन: निम्न श्लोक का उच्चारण करें—

ॐ ज्ञानतोऽज्ञानतो वापि यन्मया दुष्कृतं कृतम्।
तत्क्षमस्वाखिलं देवि जगन्मातर्नमोऽस्तु ते॥

यजमान धुले हुए वस्त्रों को धारण करके आसन पर बैठकर— **ॐ केशवाय नम:। ॐ नारायणाय नम:। ॐ माधवाय नम:।** इन तीन नाममन्त्रों का उच्चारण करके आचमन करे। इसके उपरान्त—**ॐ ऋषिकेशाय नम:। ॐ गोविन्दाय नम:** का उच्चारण करके अपने हाथों को शुद्ध जल से धोवे।

यजमान भस्म से त्रिपुण्ड या चन्दन आदि से उर्ध्वपुण्ड करके पार्वण विधि से विष्णुश्राद्ध का संकल्प करे। या शालिग्राम शिला पर श्वेत चन्दन आदि से भगवान् विष्णु की षोडशोपचार पूजा करके निम्न संकल्प करे— '**ब्राह्मणचतुष्टयं विष्णूद्देशेन भोजयिष्ये—ब्राह्मणचतुष्टयपर्याप्तं भोजनमिष्टलड्डुकादिकम् आमान्नं तन्निष्क्रयं वा दास्ये। इति तेन श्रीभगवान् पापापहा महाविष्णु: प्रीयताम्।**

यही प्रायश्चिताङ्ग विष्णुश्राद्ध है, ऐसा कहा जाता है।

संकल्प:—तत: प्रायश्चित्ताधिकारसिद्ध्यर्थं प्रारीप्सितप्रायश्चित्तपूर्वाङ्गतया विहितगोदानप्रत्याम्नायत्वेन यथाशक्ति गोमूल्यं सुवर्णादिद्रव्यं वह्न्यादिदैवतं तुभ्यमहं संप्रददे इति दत्वा, महाव्याहृतिभिराज्येनाष्टोत्तरशतमष्टाविंशति वा होमं करिष्ये।

स्थण्डिल पर तीन कुशाओं से तीन बार परिसम्मूहन करके गोबर और जल से तीन बार लीपे, स्रुवे से उत्तरोत्तर क्रम से प्रागग्र तीन रेखा स्थण्डिल तक अथवा प्रादेशमात्र करके अनामिका व अंगूठे से, जिस क्रम से रेखा की गई है। उसी क्रम से रेखाओं पर से मिट्टी उठाकर ईशानकोण में फेके,

मणिकपात्र के रहने पर उसके जल से, उसके अभाव में कमण्डलु के जल से न्युब्ज हाथ से जल छिड़ककर पञ्चभूसंस्कारों को करके कांस्यपात्र में स्थित 'विधि' नामक लौकिक अग्नि को वेदी पर स्वाभिमुख निम्न मन्त्र का उच्चारण करके स्थापित करें।

ॐ अग्निंदूतं पुरो दधे हव्यवाहमुपब्रुवे। देवाँ२॥ ऽआसाद-यादिह॥ तत्पश्चात् अग्नि से उत्तर आचार्य और ब्रह्मा का यजमान इस संकल्प का उच्चारण करके वरण करे—**अद्य अमुकोऽहं प्रायश्चित्त-होमकर्मणि आचार्यब्रह्मणोः पूजनपूर्वकं वरणं करिष्ये।** ऐसा संकल्प करके गन्ध, अक्षत और पुष्प से आचार्य और ब्रह्मा की पूजा करके वरण सामग्री लेकर निम्न संकल्प के द्वारा आचार्य का वरण करे—**देशकालौ संकीर्त्य, करिष्यमाणामुकहोमकर्मणि आचार्यकर्मणि आचार्य-कर्मकर्तुमाचार्यत्वेन त्वामहं वृणे। वृतोस्मीति प्रत्युक्तिर्ब्रह्मणः।**

वरण के पश्चात् यजमान निम्न श्लोक का उच्चारण करके आचार्य की प्रार्थना करे—

आचार्यस्तु यथा स्वर्गे शक्रादीनां बृहस्पतिः।
तथा त्वं मम यज्ञेऽस्मिन् आचार्यो भव सुव्रत॥

तदुपरान्त यजमान निम्न संकल्प का उच्चारण करके ब्रह्मा का वरण करे—**देशकालौ संकीर्त्य, प्रायश्चित्तहोमकर्मणि कृताकृतावेक्षणादि-ब्रह्मकर्मकर्तुं ब्रह्मत्वेन त्वामहं वृणे। वृतोऽस्मीति प्रतिवचनम्।**

ब्रह्माणं प्रार्थयेत्

यथा चतुर्मुखो ब्रह्मा सर्ववेदधरो विभुः।
तथा त्वं मम यज्ञेऽस्मिन् ब्रह्मा भव द्विजोत्तम॥ १॥
अस्य यागस्य निष्पत्तौ भवन्तोऽभ्यर्थिता मया।
सुप्रसन्नैः प्रकर्तव्यं यज्ञोयं विधिपूर्वकम्॥ २॥
अस्मिन् होमकर्मणि त्वं मे आचार्यो भव।
अहं भवानीति प्रत्युक्तिः त्वं मे ब्रह्मा भव॥ ३॥

भवानीति प्रत्युक्तिः। इति वरणं विधाय अग्नेर्दक्षिणतो ब्रह्मासनं पीठं कुशैराच्छाद्य अग्नेरुत्तरतः पूर्वं वृत्तं ब्रह्माणं तत्रोपवेश्य प्रतिनिधिभूत आचार्य आत्मासनमग्नेः पश्चात्, यजमानासनञ्चाग्नेरुत्तरतः प्रागग्रैः कुशैः सम्पाद्य अग्नेरुत्तरतः पश्चिमभागे एकमासनं पूर्वभागे द्वितीयमासनं प्रागग्रैः कुशैः कल्पयित्वा प्रणीतापात्रं द्वादशाङ्गुलदीर्घं चतुरङ्गुलखातं सव्यहस्ते कृत्वा दक्षिणहस्तोद्धृतपात्रस्थजलेनापूर्य दर्भैराच्छाद्य ब्रह्मणो मुखमवलोक्य पश्चिमासने निधाय आलभ्य पूर्वासने निदध्यात्। पूर्वादिदिक्षु प्रागग्रैरुदगग्रैश्च त्रिभिस्त्रिभिश्चतुर्भिश्चतुर्भिर्वा कुशैरग्निं परिस्तरेत्। पुरस्ताद्दक्षिणतः पश्चादुत्तरतः। तत्र पुरस्तात् पश्चाच्च उदगग्रैः, दक्षिणत उत्तरतश्च प्रागग्रैः। ततः अर्थवन्ति वस्तुनो अग्नेः पश्चिमतः प्राक्संस्थानि प्राग्बिलान्युदगग्राणि, उत्तरतश्चेत् उदक्संस्थानि उदग्बिलानि प्रागग्राणि कार्यक्रमेण द्वन्द्वमासादयेत्। पवित्रच्छेदनानि त्रीणि कुशतरुणानि, द्वे पवित्रे साग्ने अनन्तर्गर्भे, प्रोक्षणीपात्रम्, आज्यस्थाली, सम्मार्जनकुशाः त्रयः पञ्च वा, उपयमनकुशास्त्रिप्रभृतयस्त्रयोदशपर्यन्ताः, समिधस्तिस्रः पालाश्यः प्रादेशमात्र्यः, स्रुवः खादिरः, गव्यमाज्यम्, पूर्णपात्रं षट्पञ्चाशदधिकमुष्टिशतद्वयं तण्डुलपूरितं वा, बहुभोक्तुः पुरुषाहारपरिमितं वा, कर्मोपयोगिनी दक्षिणा, गौर्ब्राह्मणस्य वरः, इत्युक्तो वरो वा। एतानि वस्तूनि अग्नेः पश्चात् प्राक्संस्थानि स्थापयेत्। पात्रासादनानन्तरमुपकल्पनीयानि सुवर्ण-रजत-ताम्र-पद्मपलाशादिपात्रं, यज्ञियकाष्ठं, हरितानि सप्ताधिकानि कुशपत्राणि, पञ्चगव्यं च, गोमूत्रादि पृथक् पृथगिति। तत्र पात्राणि प्रागानीतान्युदगग्राणि स्थापयेत्। त्रिभिर्दर्भैः द्वे प्रच्छिद्य प्रादेशमात्रे पवित्रे कुर्यात्। प्रोक्षणीपात्रं प्रणीतासन्निधौ निधाय तत्र पात्रान्तरेण हस्तेन वा प्रणीतोदकमासिच्य पवित्राभ्यामुत्पूय पवित्रे प्रोक्षणीषु निधाय दक्षिणेन हस्तेन प्रोक्षणीपात्रमुत्थाय सव्ये कृत्वा तदुदकं दक्षिणेनोच्छाल्य (दक्षिणहस्तमुत्तानं कृत्वा मध्यमानामिकाङ्गुल्योर्मध्यपर्वभ्यां जलस्योच्छालनं

कृत्वा) प्रणीतोदकेन प्रोक्षेदिति प्रोक्षणीसंस्कारः। पवित्राभ्यां प्रोक्षणी-भिरद्भिः, आज्यस्थालीमुत्तानहस्तेन देवतीर्थेन संप्रोक्ष्य, सम्मार्जन-कुशान्, उपयमनकुशान्, समिधः तिस्रः, स्रुवम्, आज्यम्, पूर्णपात्रम्, दक्षिणाश्च। सादनक्रमेणैकैकशः संप्रोक्ष्य, असञ्चरे अग्निप्रणीतयोर्मध्ये प्रोक्षणीपात्रं सपवित्रं स्थापयेत्। आसादितमग्नेः पश्चान्निहितायामाज्य-स्थाल्यामाज्यं गृहीत्वा अग्नावारोपयेत्। अधिश्रिते आज्ये ज्वलदुल्मुक-माज्यस्य समन्ताद् भ्रामयेत्। दक्षिणेन स्रुवमधोमुखं प्राञ्चं प्रतप्य सव्ये कृत्वा सम्मार्जनकुशाग्रैर्मूलतोऽग्रपर्यन्तम्, कुशमूलैः अधस्ताद्भागे अग्रमारभ्य मूलपर्यन्तम् सम्मार्जनकुशान् अग्नौ प्रहरेत्। ततः प्रणीतोदकेन स्रुवमभ्युक्ष्य पुनः प्रतप्य कराभ्यां सम्मार्ज्य आत्मनो दक्षिणतः कुशोपरि निदध्यात्। आज्यमुत्तार्य उत्तरतः स्थापयित्वा अग्नेः पश्चात् आनयेत्। अङ्गुष्ठाभ्याम् अनामिकाभ्यां च धृताभ्याम् उदगग्राभ्याम् पूर्वपवित्रा-भ्याम् आज्यं उत्पूय अवेक्ष्य अपद्रव्यनिरसनं कृत्वा प्रोक्षणीश्च पूर्वपवित्राभ्याम् उत्पूय तासु पवित्रे निदध्यात् उपयमनकुशान् दक्षिणेनादाय वामहस्ते कृत्वा पवित्रे प्रणीतासु निदध्यात्। ततः विधिनामाग्ने सुप्रतिष्ठितो वरदो भव इति प्रतिष्ठाप्य ध्यायेत्—

ॐ अग्निं प्रज्वलितं वन्दे जातवेदं हुताशनम्।
सुवर्णवर्णममलं समिद्धं सर्वतोमुखम्॥ १॥
सर्वतः पाणिपादश्च सर्वतोऽक्षिशिरोमुखः।
विश्वरूपो महानग्निः प्रणीतः सर्वकर्मसु॥ २॥

विधिनाम्ने अग्नये नमः। इति संपूज्य रेखाः पूजयेत्—पूर्वरेखायाम्, ॐ ब्रह्मणे नमः। मध्यरेखायाम्—ॐ विष्णवे नमः। उत्तररेखायाम्—ॐ रुद्राय नमः।

ततो अग्निजिह्वापूजनम्—ॐ कराल्यै नमः। ॐ धूमिन्यै नमः। ॐ श्वेतायै नमः। ॐ लोहितायै नमः। ॐ महालोहितायै नमः। ॐ सुवर्णायै नमः। ॐ पद्मरागायै नमः।

इस प्रकार जिह्वाओं की पूजा करके दाहिने घुटने को मोड़कर ब्रह्मा से आरभ्य करके प्रज्वलित अग्नि में मौन होकर घृत द्वारा स्रुवे से निम्न मन्त्रों द्वारा हवन करें—**ॐ प्रजापतये स्वाहा—इति मनसा ध्यायन् हविर्द्रव्यमग्नौ प्रक्षिप्य इदं प्रजापतये न मम—इति त्यागं मनसा कृत्वा हुतशेषं प्रोक्षणीपात्रे क्षिपेत्, एवं सर्वत्र। ततः—ॐ इन्द्राय स्वाहा-इदमिन्द्राय न मम। इत्याघारौ। ॐ अग्नये स्वाहा—इदमग्नये न मम। ॐ सोमाय स्वाहा—इदं सोमाय न मम। इत्याज्यभागौ च हुत्वा।**

ततः—अष्टोत्तरशतमष्टाविंशतिः वाऽऽज्याहुतीनां व्यस्तसमस्ताभिर्महा-व्याहृतिहोमः। ॐ भूः स्वाहा—इदमग्नये न मम। ॐ भुवः स्वाहा—इदं वायवे न मम। ॐ स्वः स्वाहा—इदं सूर्याय न मम। ॐ भूर्भुवः स्वः स्वाहा—इदं प्रजापतये न मम। एवं सप्तवारं कृते अष्टाविंशतिराहुतयः।

ब्रह्मकूर्चहोमः—सुवर्णादिपात्रे गायत्र्या गोमूत्रम्—ॐ गन्धद्वारां दुराधर्षां नित्यपुष्टां करीषिणीम्। ईश्वरीं सर्वभूतानां तामिहोपह्वये श्रियम्॥ गोमयम्॥ ॐ आप्यायस्व समे तु ते विश्वतः सोम वृष्ण्यम्। भवा वाजस्य सङ्गथे॥ दुग्धम्॥ ॐ दधिक्राव्णो अकारिषं जिष्णोरश्वस्य वाजिनः। सुरभि नो मुखा करत्प्रण आयूंᳫ॰ षि तारिषत्॥ दधि॥ ॐ तेजोऽसि शुक्रमस्य मृतमसि धामनामासि प्रियं देवानामना धृष्टं देवयजमसि॥ घृतम्॥ ॐ देवस्य त्वा सवितुः प्रसवेश्विनोर्बाहुभ्यां पूष्णो हस्ताभ्याम्॥

इस प्रकार कुशोदक का संग्रह करके 'प्रणव' से आलोडित कर यज्ञीय काष्ठ के द्वारा मथकर पुनः 'प्रणव' से अभिमन्त्रित करके सात से अधिक हरे दर्भ (कुश) पत्र से पञ्चगव्य द्वारा इन मन्त्रों से होम करे—**ॐ इरावती धेनुमती हि भूतः सूयवसिनी मनवे दशस्या। व्यस्कभ्ना रोदसी विष्णवेते दाधर्त्थ पृथिवीमभितो मयूखैः स्वाहा॥ इदं पृथिव्यै न मम॥ इदं विष्णु र्विचक्रमे त्रेधा निदधे पदम्॥ समूढमस्य पाᳫं॰सुरे स्वाहा॥ इदं विष्णवे न मम॥ मा नस्तोके तनये मा न आयुषि मा नो गोषुमा नो अश्वेषु रीरिषः। मा नो वीरान् रुद्र भामिनो वधीर्हविष्मन्तः सदमित्त्वा हवामहे स्वाहा॥ इदं**

रुद्राय न मम॥ शन्नो देवीरभिष्टय आपो भवन्तु पीतये। शं योरभिस्रवन्तु नः स्वाहा॥ इदमद्भ्यो न मम॥ ॐ अग्नये स्वाहा—इदमग्नये न मम। ॐ सोमाय स्वाहा—इदं सोमाय न मम। भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि। धियो यो नः प्रचोदयात् स्वाहा॥ इदं सवित्रे न मम। ॐ स्वाहा—इदं परमेष्ठिने न मम। ॐ भूर्भुवः स्वः स्वाहा—इदं प्रजापतये न मम। इति हुत्वा पञ्चगव्यमिश्राज्येन—ॐ अग्नये स्विष्टकृते स्वाहा—इदमग्नये स्विष्टकृते न मम॥ इति स्विष्टकृद्धोमः॥

उसके बाद—**भो विप्रा व्रतग्रहणं करिष्ये**। ऐसी ब्राह्मणों से यजमान प्रार्थना करे—**ॐ कुरुष्व**—ऐसी ब्राह्मणों से आज्ञा पाकर हुतशेष पञ्चगव्य को प्रणव से शब्द न करते हुए पीवें। इस दिन दूसरा आहार छोड़ दे, अशक्ति में दूध आदि का आहार करे, उसके बाद रात्रि बिताकर दूसरे दिन अथवा उसी दिन देयद्रव्य की पूजा करके कुश, यव, तिल और जल लेकर यह संकल्प करे—**देशकालौ स्मृत्वा, मम (पित्रादेः) जन्मप्रभृत्यद्य यावत् इत्यादि निरासार्थम् इत्यन्तमुल्लिख्य इमानि अशीत्यधिकनवतिपञ्च-चत्वारिंशत् अन्यतमसङ्ख्याककृच्छ्रप्रत्याम्नायभूतानां गवां मूल्यभूतानि पूर्वोक्तान्यतमसङ्ख्याकानि सुवर्णनिष्काणि, तदर्धानि, तदर्धार्धानि वा चन्द्रदैवतानि पणद्वात्रिंशत्कानि वा सूर्यदैवतानि कार्षापणानि वा ब्राह्मणेभ्यो यथाकालं दास्ये। ॐ तत्सत् न मम—इति सङ्कल्प्य दद्यात्।**

पुनः—ॐ भूः स्वाहा—इदमग्नये न मम। ॐ भुवः स्वाहा—इदं वायवे न मम। ॐ स्वः स्वाहा—इदं सूर्याय न मम। ॐ भूर्भुवः स्वः स्वाहा-इदं प्रजापतये न मम। इति सप्तकृत्वः सप्तविंशतिकृत्वो वा हुत्वा, ततो ब्रह्मणान्वारब्धः-ॐ भूः स्वाहा—इदमग्नये न मम। ॐ भुवः स्वाहा—इदं वायवे न मम। ॐ स्वः स्वाहा—इदं सूर्याय न मम।

ॐ त्वं नो अग्ने वरुणस्य विद्वान्देवस्य हेडो अवयासिसीष्ठाः। यजिष्ठो वह्नितमः शोशुचानो विश्वा द्वेषा॑ᳫंसि प्रमुमुग्ध्यस्मत्स्वाहा॥ इदमग्नीवरुणाभ्यां न मम॥ स त्वन्नो अग्नेऽवमो भवोती नेदिष्ठा अस्या

उषसा व्युष्टौ। अव यक्ष्व नो वरुणर्ठ० रराणो वीहि मृडीकर्ठ० सुहवो नऽएधि स्वाहा॥ इदमग्नीवरुणाभ्यां न मम॥ अयाश्चाग्ने- ऽस्यनभिशस्तिपाश्च सत्यमित्वमया असि। अया नो यज्ञं वहास्यया नो धेहि भेषजर्ठ० स्वाहा॥ इदमग्नये अयसे न मम॥ ये ते शतं वरुण ये सहस्त्रं यज्ञियाः पाशा वितता महान्तः। तेभिर्नोऽ अद्य सवितोत विष्णुर्विश्वेमुञ्चन्तु मरुतः स्वर्काः स्वाहा॥ इदं वरुणाय सवित्रे विष्णवे विश्वेभ्यो देवभ्यो मरुद्भ्यः स्वर्केभ्यश्च न मम॥ उदुत्तमं वरुणं पाशमस्मदवाधमं विमध्यमर्ठ० श्रथाय। अथा वयमादित्य व्रते तवानागसो- ऽअदितये स्याम स्वाहा॥ इदं प्रजापतये न मम॥

ततः—इदं प्रजापतये न मम। ततः संस्त्रवप्राशनमवघ्राणं वा कृत्वा द्विराचम्य अग्नौ पवित्रप्रतिपत्तिं स्वाहा इति कुर्यात्। ततः प्रणीता- विमोकमग्नेः पश्चिमतः कुर्यात्।

ब्रह्मणे पूर्णपात्रदानम्—प्रायश्चित्तहोमकर्मणः साङ्गफलप्राप्तये साद्गुण्यार्थं पूर्णपूरणार्थं च इदं पूर्णपात्रं सद्रव्यं ब्रह्मणे तुभ्यमहं सम्प्रददे। ॐ तत्सत् न मम।

ततः अग्निं प्रार्थयेत्—ॐ सदस्पतिमद्भुतं प्रियमिन्द्रस्य काम्यम्। सनिं मेधामया सिषर्ठ० स्वाहा॥ यां मेधां देवगणाः पितरश्चोपासते॥ तया मामद्य मेधयाग्ने मेधाविनं कुरु स्वाहा॥ मेधां मे वरुणो ददातु मेधामग्निः प्रजापतिः। मेधामिन्द्रश्च वायुश्च मेधान्धाता ददातु मे स्वाहा॥

तदुपरान्त—प्रायश्चित्तोतराङ्गविष्णुश्राद्धसंपत्तये ब्राह्मणचतुष्टयाय पक्वान्नम्-आमान्नं तन्निष्क्रयं वा दास्ये। इस प्रकार संकल्प करके विष्णुश्राद्ध के अनुकल्प भूत अन्न आदि को देकर—प्रायश्चित्तस्योत्तराङ्गत्वेन विहितगोदान- प्रत्याम्नायत्वेन यथाशक्तिगोमूल्यं तुभ्यं संप्रददे।

उत्तरगोदान करके वायव्य में उत्तराङ्गभूत अग्नि का पूजन निम्न मन्त्र का उच्चारण करें—ॐ अग्ने नय सुपथा राये अस्मान्विश्वानि देव वयुनानि विद्वान्। युयोद्ध्यस्मज्जुहुराणमेनो भूयिष्ठां ते नमऽ उक्तिं विधेम॥

आचार्य निम्न श्लोक का उच्चारण करते हुए यजमान से पूजन करावें—

ॐ श्रद्धां मेधां यशः प्रज्ञां विद्यां पुष्टिं बलं श्रियम्।
आयुष्यं द्रव्यमारोग्यं देहि मे हव्यवाहन॥

अब त्र्यायुषकरण करे, जिसकी विधि यह है—अनामिका अंगुली के द्वारा स्रुवे में लगे घी और भस्म को निम्न नाममन्त्रों का उच्चारण करते हुए अपने शरीर के अंगों पर लगावे—**ॐ त्र्यायुषं जमदग्नेः—ललाटे। ॐ कश्यपस्य त्र्यायुषम्—ग्रीवायाम्। ॐ यद्देवेषु त्र्यायुषम्—दक्षिण-बाहुमूले। ॐ तन्नोऽअस्तु त्र्यायुषम्—हृदि।**

होमाङ्गदक्षिणासङ्कल्पः—प्रायश्चित्तहोमकर्मणः साङ्गफलप्राप्तये साद्गुण्यार्थं च इमां दक्षिणामाचार्याय तुभ्यं संप्रददे। कृतस्य प्रायश्चित्त-कर्मणः साद्गुण्यार्थं पञ्चदश ब्राह्मणान् भोजयिष्यामि। अस्मिन् प्रायश्चित्तकर्मणि न्यूनातिरिक्तदोषपरिहारार्थं भूयसीं दक्षिणामन्येभ्यो ब्राह्मणेभ्यो विभज्य दास्ये।

आचार्य निम्न श्लोकों और मन्त्रों का उच्चारण करते हुए यजमान से अग्निदेव का विसर्जन करावें—

गच्छ गच्छ सुरश्रेष्ठ स्वस्थाने परमेश्वर।
यत्र ब्रह्मादयो देवास्तत्र गच्छ हुताशन॥ १॥
भो भो वह्ने महाशक्ते सर्वकर्मप्रसाधक।
कर्मान्तरेऽपि संप्राप्ते सान्निध्यं कुरु सादरम्॥ २॥
यान्तु देवगणाः सर्वे पूजामादाय मामिकाम्।
इष्टकामसमृद्ध्यर्थं पुनरागमनाय च॥ ३॥

ॐ यज्ञ यज्ञं गच्छ यज्ञपतिं गच्छ स्वां योनिं गच्छ स्वाहा। एष ते यज्ञपते सहसूक्त वाकः सर्ववीरतं जुषस्व स्वाहा॥ १॥ धामच्छदग्निरिन्द्रो ब्रह्मा देवो बृहस्पतिः। सचेतसो विश्वे देवा यज्ञं प्रावन्तु नः शुभे॥ २॥

तदुपरान्त तिलक, रक्षाबन्धन, घृतछायादर्शन और आशीर्वाद मन्त्र पाठ आदि करें।

दश दानानि

स्वर्णयुक्त सींगोंवाली, चाँदी से अलंकृत खुरोंवाली, ताम्र से सुशोभित पृष्ठवाली, मुक्ता से युक्त पुच्छवाली, कांसे के दोहन पात्रवाली गाय को नवीन वस्त्र से अलंकृत करके तथा गंधादि के द्वारा पूजित कर निम्न वाक्य का उच्चारण करते हुए यजमान गौ की पूजा करें—**ॐ सवत्सायै गवे नमः**। इस नाममन्त्र से गाय की पूजा करके निम्न मन्त्र से प्रार्थना करे—

ॐ इरावती धेनुमती हि भूतर्ठ० सूयवसिनी मनवे दशस्या।
व्यस्कभ्ना रोदसी विष्णवे ते दाधर्थ पृथिवीमभितो मयूखैः स्वाहा॥

ब्राह्मणवरणसंकल्पः—करिष्यमाण-गोदानकर्मणिएभिः वरणद्रव्यैः अमुकगोत्रममुकशर्माणं ब्राह्मणं गोदानप्रतिग्रहीतृत्वेन त्वामहं वृणे।

ॐ व्रतेन दीक्षामाप्नोति दीक्षयाप्नोति दक्षिणाम्।
दक्षिणा श्रद्धामाप्नोति श्रद्धया सत्यमाप्यते॥

ॐ यदाबध्नन्दाक्षायणा हिरण्यर्ठ० शतानीकायसुमनस्यमानाः।
तन्म आबध्नामि शतशारदायायुष्माञ्जरदष्टिर्य्यथासम्॥

उपरोक्त दो मन्त्रों का उच्चारण करके 'ॐ स्वस्ति' ऐसा ब्राह्मण कहे, यहाँ कुछ लोग गोपुच्छ तर्पण भी करते हैं। अतः यजमान के दायें हाथ में त्रिकुश, जल, अक्षत, द्रव्य और गोपुच्छ देकर आचार्य निम्न संकल्प करावें—

देशकालौ सङ्कीर्त्य, अमुकगोत्रोऽमुकशर्माहम् (वर्माऽहम्, गुप्तोऽहम्, दासोऽहम्) कृतानेकपापक्षयपूर्वकं मम गृहे उत्तरोत्तरशुभफलप्राप्त्यर्थं च इमां सवत्सां गां रुद्रदैवत्यां स्वर्णशृङ्गीं रौप्यखुरां ताम्रपृष्ठां मुक्ता-लाङ्गूलयुतां कांस्यदोहनवस्त्रायुगच्छन्नां गोरोमसङ्ख्यसहस्त्रावछिन्न-गोलोकवासकामः गोत्राय शर्मणे तुभ्यमहं संप्रददे। ततः प्रार्थना—

यज्ञसाधनभूताया विश्वस्याघौघनाशिनी।
विश्वरूपधरो देवः प्रीयतामनया गवा॥
गावो ममाग्रतः सन्तु गावो मे सन्तु पृष्ठतः।
गावो मे हृदये सन्तु गवां मध्ये वसाम्यहम्॥

तदुपरान्त निम्न कामस्तुति का उच्चारण करें—

ॐ कोदात्कस्माऽअदात्कामोदात्कामायादात्।
कामो दाता कामः प्रतिग्रहीता कामैतत्ते॥

इसके बाद **ॐ स्वस्ति** कहें। उसके बाद दान की प्रतिष्ठा करे, इस संकल्प के द्वारा—**कृतैतत् गोदानकर्मणः साङ्गतासंपत्तये गोत्राय शर्मणे दक्षिणां तुभ्यमहं संप्रददे।**

यजमान प्रदक्षिणा करे और आचार्य निम्न श्लोक का उच्चारण करें—

या लक्ष्मीः सर्वभूतानां या च देवे व्यवस्थिता।
धेनुरूपेण सा देवी मम पापं व्यपोहतु॥

भूदानम्—आचार्य पूर्व की तरह वरण आदि करवाके यजमान से निम्न संकल्प करावें—**अद्येत्यादि गोत्रः शर्मा गोत्राय शर्मणे सालङ्कृताय षष्टिसहस्त्रवर्षमितं वैकुण्ठे विष्णुलोकावाप्तिकामः इमां भूमिं सस्योद्भवां सवृक्षफलपुष्पाद्युपेतां विष्णुदैवतां तुभ्यमहं संप्रददे॥** ब्राह्मण के हाथ में दे। ब्राह्मण भूमि की प्रदक्षिणा करते हुए दान लें और **ॐ देवस्य त्वा सवितुः प्रसवेऽश्विनोर्बाहुभ्यां पूष्णो हस्ताभ्याम्॥** इस मन्त्र का उच्चारण करें और 'स्वस्ति' कहकर प्रार्थना करे—

सर्वेषामाश्रया भूमिर्वराहेण समुद्धृता।
अनन्तसस्यफलदा अतः शान्तिं प्रयच्छ मे॥
यस्यां रोहन्ति बीजानि वर्षाकाले महीतले।
भूमेः प्रदानात्सकला मम सन्तु मनोरथाः॥

प्रार्थना के पश्चात् यजमान आचार्य सहित ब्राह्मणों को दक्षिणा प्रदान करे।

तिलदानम्—आचमन से लेकर भूतोत्सादन पर्यन्त कर्म करके तीन द्रोण (पौने तेरह सेर एक पल) अथवा यथाशक्ति तिलों को आगे किसी पात्र या बर्तन में रखकर कुशा, यव आदि लेकर यह संकल्प करे—**देशकालौ सङ्कीर्त्य, मम (पित्रादेः) सकलपापक्षयद्वारा श्रीविष्णुप्रीतये तिलदानं करिष्ये।**

प्रतिज्ञा करके यजमान ब्राह्मण की पूजा करके तिलों को पोंछकर—

विष्णोर्देहसमुद्भूताः कुशाः कृष्णतिलास्तथा।
धर्मस्य रक्षणायार्थमेत्प्राहुर्दिवौकसः॥

इस प्रकार पूजा करके '**विष्णुप्रीतये इत्यन्तं पूर्वोक्तमुल्लिख्य इमान् द्रोणत्रय-द्रोणद्वय-एकद्रोणान्यतमपरिमितान् तिलान् प्रजापतिदेवान् सुपूजिताय ब्राह्मणाय तुभ्यमहं सम्प्रददे। ॐ तत्सत् न मम।** ऐसा कहकर ब्राह्मण के हाथ में जलादि देकर—

महर्षेर्गोत्रसंभूताः काश्यपस्य तिलाः स्मृताः।
तस्मादेषां प्रदानेन मम पापं व्यपोहतु॥

ऐसा कहकर तिलद्रोण का स्पर्श करे। तिलपात्र दान को सोलह पल से निर्मित अथवा यथाशक्ति निर्मित ताम्रपात्र में रखकर यथाशक्ति उसमें सुवर्ण रखकर—

यानि कानि च पापानि ब्रह्महत्यासमानि च।
तिलपात्रप्रदानेन तानि नश्यन्तु मे सदा॥

पूर्वोक्त विधि से और उपरोक्त मन्त्रविशेष को पढ़ते हुए यथाशक्ति सुवर्ण अथवा उसका मूल्य दक्षिणादान की प्रतिष्ठा की सिद्धि के लिए दे। तिल का मूल्य तिल के परिमाण के अनुसार संकल्प करे।

हिरण्यदानम्—यजमान आचमन से लेकर भूतोत्सादन पर्यन्त गोदान की तरह करके कुश, यव, तिल और जल हाथ में लेकर यह संकल्प करे—**देशकालौ सङ्कीर्त्य, अक्षयस्वर्गकामः, पापक्षयकामः, पितृतारणकामः, ईश्वर-प्रीतिकामो वा सुवर्णदानं करिष्ये।**

ऐसी प्रतिज्ञा करके पुनः यह संकल्प करें—**तदङ्गत्वेन ब्राह्मणस्य पूजनपूर्वकं वरणं सुवर्णस्य पूजनं च करिष्ये।** संकल्प के उपरान्त गन्ध आदि के द्वारा ब्राह्मण की पूजा करके पूर्व की तरह वरण करके सुवर्ण का प्रोक्षण करके निम्न श्लोक का उच्चारण करें—

ॐ हिरण्यगर्भगर्भस्थं हेमबीजं विभावसोः।
अनन्तपुण्यफलदमतः शान्तिं प्रयच्छ मे॥

पुन: यजमान देशकाल का पूर्व की तरह उच्चारण करके तथा उद्देश्य का उच्चारण करके यह संकल्प करे—**देशकालौ सङ्कीर्त्य, इदं कर्षमात्रं सुवर्णमग्निदैवतं तुभ्यमहं सम्प्रददे। ॐ तत्सत् न मम।** ऐसा कहकर—

ॐ हिरण्यगर्भगर्भस्थं हेमबीजं विभावसोः।
अनन्तपुण्यफलदमतः शान्तिं प्रयच्छ मे॥

इस दानवाक्य का यजमान उच्चारण करके ब्राह्मण के हाथ में कुश और जल के साथ सुवर्ण देवे, उसके बाद सुवर्णदान की दक्षिणा प्रदान करने के लिए निम्न संकल्प करे—**देशकालौ सङ्कीर्त्य, सुवर्णदानप्रतिष्ठासिद्ध्यर्थमिदं सुवर्णमग्निदैवतं दक्षिणां तुभ्यमहं संप्रददे।** यह कहकर दक्षिणा देवें और ब्राह्मण इस यजु का उच्चारण करे—**ॐ देवस्यत्वा सवितुः प्रसवेऽश्विनोर्बाहुभ्यां पूष्णो हस्ताभ्याम्॥** पुन: ब्राह्मण यह कहें—'**ॐ स्वस्ति' अग्निदैवतायै सुवर्णं प्रतिगृह्णामि,** ऐसा कहकर ब्राह्मण दान ले ले। इसके उपरान्त इस मन्त्र का उच्चारण करके कामस्तुति पढ़े—**ॐ कोदात्कस्मा-अदात्कामोदात्कामायादात्। कामो दा ता कामः प्रतिग्रहीता कामै तत्ते॥**

आज्यदानम्—चार सेर, दो सेर या एक सेर घृत सामने रखकर पूर्व की तरह दान की प्रतिज्ञा कर ब्राह्मण की पूजा और वरण करके घृत का प्रोक्षण करने के उपरान्त पूजा करके यजमान यह संकल्प करे—**देशकालौ सङ्कीर्त्य, मम (पित्रादेः) सकलपापक्षयद्वाराविष्णुप्रीतये इदमाज्यं विष्णुदैवतं (मृत्युञ्जयदैवम्) तुभ्यमहं संप्रददे। ॐ तत्सत् न मम।** सुवर्ण की दक्षिणा या उसका मूल्य, दानप्रतिष्ठा की सिद्धि के लिए निम्न श्लोक का उच्चारण करके यजमान प्रदान करे—

ॐ कामधेनोः समुद्भूतं देवानामुत्तमं हविः।
आयुर्वृद्धिकरं दातु राज्यं पातु सदैव माम्॥

वस्त्रदानम्—सूक्ष्मतन्तु से बने हुए दो हाथ से ज्यादा चौड़ा और आठ हाथ के लम्बे जिनका किनारा कटा न हो, ऐसे नये दो वस्त्र आगे रखकर पूर्व की तरह दान, प्रतिज्ञा, ब्राह्मणपूजन, वरण, वस्त्रप्रोक्षण एवं पूजन आदि करके

यजमान इस संकल्प करके ब्राह्मण को प्रदान करे—**देशकालौ सङ्कीर्त्य, मम-(पित्रादेः) सकलपापक्षयद्वारा विष्णुप्रीतये इदं वासोयुग्मं बृहस्पति-दैवतं तुभ्यमहं संप्रददे॥ ॐ तत्सत् न मम।** इस संकल्प को पढ़कर देवें।

निम्न श्लोक को यजमान पढ़कर वस्त्र देवे—

ॐ शीतवातोष्णसंत्राणं लज्जाया रक्षणं परम्।
देहालङ्करणं वस्त्रमतः शान्तिं प्रयच्छ मे॥

सुवर्ण की दक्षिणा अथवा उसका मूल्यदान प्रतिष्ठा सिद्धि के लिए यजमान ब्राह्मण (आचार्य) को प्रदान करे।

धान्यदानम्—सतहत्तर सेर सोलह पल धान सामने रखकर दानप्रतिज्ञा आदि पूर्व की तरह करके धान्य का प्रोक्षण और पूजन करके यह संकल्प करें—**देशकालौ संकीर्त्य, मम (पित्रादेः) सकलपापक्षयद्वारा विष्णुप्रीतये इदं धान्यं प्रजापतिदैवतं तुभ्यमहं संप्रददे। ॐ तत्सत् न मम।** इस संकल्प को पढ़कर देवें।

निम्न श्लोक का उच्चारण करके यजमान धान्य का दान करे—

सर्वदेवमयं धान्यं सर्वोत्पत्तिकरं महत्।
प्राणिनो जीवनोपायमतः शान्तिं प्रयच्छ मे॥

दान की प्रतिष्ठा सिद्धि के लिए सुवर्ण अथवा उसका मूल्य आचार्य को देवें। धान्य का मूल्य परिमाण के अनुसार करना चाहिए।

गुडदानम्—तीन सेर अथवा यथाशक्ति गुड़ को आगे रखकर दान-प्रतिज्ञा आदि पूर्व की तरह करके गुड़ का प्रोक्षण और पूजन करके यजमान यह संकल्प करें—**देशकालौ संकीर्त्य, मम (पित्रादेः) सकलपाप-क्षयद्वारा विष्णुप्रीतये इमं गुडं सोमदैवतं तुभ्यमहं संप्रददे। ॐ तत्सत् न मम।** इस संकल्प को पढ़कर देवें। निम्न श्लोक का उच्चारण करके यजमान गुड़ का दान करे—

ॐ यथा देवेषु विश्वात्मा प्रवरश्च जनार्दनः।
सामवेदस्तु वेदानां महादेवस्तु योगिनाम्॥

प्रणवः सर्वमन्त्राणां नारीणां पार्वती यथा।
तथा रसानां प्रवरः सदैवेक्षुरसो मतः।
मम तस्मात्परालक्ष्मीं ददस्व गुड सर्वदा॥

दान की प्रतिष्ठा सिद्धि के लिए सुवर्ण अथवा उसका मूल्य आचार्य को देवें। गुड़ का मूल्य परिमाण के अनुसार करना चाहिए।

रजतदानम्—तीन पल अथवा एक पल या यथाशक्ति रजत (चाँदी) को आगे रखकर दान-प्रतिज्ञा आदि पूर्व की तरह करके रजत का प्रोक्षण और पूजन करके यह संकल्प यजमान करे—**देशकालौ संकीर्त्य, मम (पित्रादेः) सकलपापक्षयद्वारा विष्णुप्रीतये इदं रजतचन्द्रदैवतं तुभ्यमहं संप्रददे। ॐ तत्सत् न मम।** इस संकल्प को पढ़कर देवे।

निम्न श्लोक का उच्चारण करके यजमान रजत का दान करे—

ॐ प्रीतिर्यतः पितृणां च विष्णुशङ्करयोः सदा।
शिवनेत्रोद्भवं रौप्यमतः शान्तिं प्रयच्छ मे॥

दान की प्रतिष्ठा सिद्धि के लिए सुवर्ण अथवा उसका मूल्य आचार्य को देवें। रजत का मूल्य परिमाण के अनुसार करना चाहिए।

लवणदानम्—सतहत्तर सेर सोलह पल अथवा यथाशक्ति लवण को आगे रखकर दानप्रतिज्ञा आदि पूर्व की तरह करके लवण का प्रोक्षण और पूजन करके यजमान यह संकल्प करें—**देशकालौ संकीर्त्य, मम (पित्रादेः) सकलपापक्षयद्वारा विष्णुप्रीतये इदं लवणं सोमदैवतं तुभ्यमहं सम्प्रददे।** इस संकल्प को पढ़कर देवें।

निम्न श्लोक का उच्चारण करके यजमान लवण का दान करे—

ॐ यस्मादन्नरसाः सर्वे नोत्कृष्टा लवणं विना।
शंभोः प्रीतिकरं यस्मादतः शान्तिं प्रयच्छ मे॥

दान की प्रतिष्ठा सिद्धि के लिए सुवर्ण अथवा उसका मूल्य आचार्य को देवें। लवण का मूल्य परिमाण के अनुसार करना चाहिए।

मंगलस्नानम्

धूमावती देवी की प्रतिष्ठा के आयोजन के पहले दिन नित्यक्रिया करके यजमान अपनी पत्नी के साथ उपवास रखकर निम्न संकल्प करके मंगलस्नान करे—

संकल्पः—देशकालौ सङ्कीर्त्य, अमुकगोत्रोऽमुकशर्माहम् (वर्माऽहम्, गुप्तोऽहम्, दासोऽहम्) करिष्यमाण-धूमावतीप्रतिष्ठानिमित्तं सपत्नीकोऽहं मङ्गलस्नानं करिष्ये।

संकल्प के उपरान्त यथायोग्य सर्वौषधि आदि सुगन्धित चूर्णों से और आँवले आदि के सुगन्धित तैल से शरीर पर लेपन कर यजमान स्नान करके आचमन कर मन्त्र के साथ नये ऊपर एवं नीचे के वस्त्रों को धारण करे। उन वस्त्रों को धारण करवाने के लिए आचार्य निम्न मन्त्र का उच्चारण करें—

ॐ परिधास्यै यशोधास्यै दीर्घायुत्वाय जरदष्टिरस्मि। शतं च जीवामि शरदः पुरूचो रायस्पोषमभिसंव्यायिष्ये॥ इस मन्त्र से अधोवस्त्र पहनकर यजमान दो बार आचमन करे। इसके बाद—

ॐ यशसा मा द्यावा पृथिवी यशसेन्द्राबृहस्पती।
यशो भगञ्च माऽविदधद्यशो मा प्रतिपद्यताम्॥

यदि यजमान को नवीन वस्त्र धारण न करवाना हो तो आचार्य मन्त्र का उच्चारण न करे। पत्नी का भी वस्त्र धारण और कंचुकी (चोली) आदि का धारण बिना मन्त्र के ही आचार्य को करवाना चाहिए। (इसी प्रकार संस्कार्य का भी यथासम्भव वस्त्रधारण होना चाहिए) प्रत्येक वस्त्र के धारण पर दो बार आचमन करना चाहिए। सौभाग्य कुमकुम आदि के द्वारा तिलक करना चाहिए। तदुपरान्त गोबर से लिपी हुई रंगवल्ली स्वस्तिक आदि से अलंकृत, शुभ वस्त्र से आच्छादित पवित्र भूमि पर श्रीपर्णी आदि प्रशस्त काष्ठ के पीढ़े पर अथवा कम्बल या कुशा आदि के आसन पर स्वयं पूर्वाभिमुख बैठकर अपने पीढ़े के समान दो पीठों पर पत्नी एवं संस्कार्य को बिठावें। यजमान के

दाहिने पत्नी होगी और पत्नी के दाहिने संस्कार्य होगा। सभी कर्मों के आरम्भ में किये जानेवाले कर्म की निर्विघ्नता सिद्धि के लिए कुलाचार के अनुसार गणेश अथवा गणेशाम्बिका की पूजा करे। वह इस प्रकार है—शिखा बाँध करके, कच्छा बाँध करके हाथ में कुश लेकर निम्न श्लोक का उच्चारण करके पूजन-सामग्री एवं अपने ऊपर यजमान जल छिड़के—

ॐ अपवित्रः पवित्रो वा सर्वावस्थाङ्गतोऽपि वा।
यः स्मरेत्पुण्डरीकाक्षं स बाह्याभ्यन्तरः शुचिः॥

ॐ पुण्डरीकाक्षः पुनातु, ॐ पुण्डरीकाक्षः पुनातु, ॐ पुण्डरीकाक्षः पुनातु।

ॐ पवित्रे स्थो वैष्णव्यौ सवितुर्वः प्रसव उत्पुनाम्यच्छिद्रेण पवित्रेण सूर्यस्य रश्मिभिः॥ तस्य ते पवित्रपते पवित्र पूतस्य यत्कामः पुने तच्छकेयम्॥

उपरोक्त दो यजुर्मन्त्रों से दाहिने एवं बायें हाथ की अनामिका अंगुली के मूल में अथवा मध्य में क्रमशः पवित्र धारण करके स्मार्तविधि से आचमन करें। वह स्मार्तविधि इस प्रकार से है—आचमन के लिए विहित पात्र में जल लेकर अंगूठे और कनिष्ठिका को पृथक् कर शेष मिली हुई तीन अंगुलियों से युक्त हाथ द्वारा उड़द डूबने भर जल लेकर तीन बार पीवे। तदुपरान्त हाथ को धोकर अंगों का स्पर्श करें, उसका क्रम इस प्रकार से है—अंगूठे के मूल से दो बार मुँह का स्पर्श करके मिली हुई तीन अंगुलियों वाले हाथ से चेहरे का स्पर्श करें। अंगूठा और तर्जनी से दोनों नासिकाओं को अंगूठा और अनामिका से दोनों आँखों को, उन्हीं दोनों से कानों को, कनिष्ठिका और अंगूठे से नाभि को, हाथ के तलवे से हृदय को, सभी अंगुलियों से सिर को, हाथ के अगले भाग से कंधों को स्पर्श करें। एक के लिए एक बार आचमन करके पुनः दूसरी बार तीन आचमन करके पूर्व की तरह अंगों का स्पर्श करें। यह स्मार्त आचमन है। पौराणिक आचमन में तो केशव आदि निम्न चौबीस नामों का उच्चारण करें—**ॐ केशवाय नमः। ॐ नारायणाय नमः। ॐ माधवाय नमः। ॐ गोविन्दाय नमः। ॐ विष्णवे नमः। ॐ मधुसूदनाय नमः।**

ॐ त्रिविक्रमाय नमः। ॐ वामनाय नमः। ॐ श्रीधराय नमः। ॐ हृषीकेशाय नमः। ॐ पद्मनाभाय नमः। ॐ दामोदराय नमः। ॐ सङ्कर्षणाय नमः। ॐ वासुदेवाय नमः। ॐ प्रद्युम्नाय नमः। ॐ अधोक्षजाय नमः। ॐ नारसिंहाय नमः। ॐ अच्युताय नमः। ॐ जनार्दनाय नमः। ॐ उपेन्द्राय नमः। ॐ हरये नमः। ॐ प्रजापतये नमः। ॐ हिरण्यगर्भाय नमः। ॐ कृष्णाय नमः।

आचार्य निम्न वाक्यों का उच्चारण करते हुए यजमान से प्राणायाम करावें—

ॐ भूः ॐ भुवः ॐ स्वः ॐ महः ॐ जनः ॐ तपः ॐ सत्यम् ॐ तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि। धियो यो नः प्रचोदयात्। ॐ आपो ज्योतीरसोऽमृतं ब्रह्म भूर्भुवः स्वरो३म्।

उपरोक्त गायत्री मन्त्र का नौ बार उच्चारण करके पहले अंगूठे से दाहिनी नाक का स्पर्श करके मौन होकर नेत्रों को बन्द करके नाभि में स्थित चतुर्भुज भगवान् का ध्यान करते हुए बायीं नासिका से धीरे-धीरे श्वाँस को खींचते हुए तीन बार मन्त्र की आवृत्ति करते हुए पूरक प्राणायाम करे। इसके पश्चात् अंगूठे से दक्षिण नासिका को और अनामिका एवं कनिष्ठिका अंगुली से बायीं नाक को बन्द करके श्वाँस को रोककर हृदय में ब्रह्माजी का ध्यान करके तीन बार उपरोक्त मन्त्र को पढ़ते हुए कुम्भक प्राणायाम करे। पुनः दाहिनी नाक से अंगूठे को हटाकर अनामिका अंगुली व कनिष्ठिका अंगुली से बायें नाक को बन्द करके श्वाँस को दाहिनी नाक से धीरे-धीरे छोड़ते हुए ललाट में भगवान् शिव का ध्यान करके उपरोक्त मन्त्र को तीन बार पढ़ते हुए रेचक प्राणायाम करे।

तदुपरान्त यजमान निम्न श्लोक का उच्चारण करके रक्षादीप प्रज्वलित करे।

भो दीप! देवरूपस्त्वं कर्मसाक्षी ह्यविघ्नकृत्।
यावत्कर्मसमाप्तिः स्यात् तावत् त्वं सुस्थिरो भव॥

आचार्य और ब्राह्मण स्वस्तिवाचन के मन्त्रों का उच्चारण करें। तदुपरान्त आचार्य निम्न श्लोक का उच्चारण करते हुए यजमान के मस्तक पर तिलक करें—

आदित्या वसवो रुद्रा विश्वेदेवा मरुद्‌गणाः।
तिलकं ते प्रयच्छन्तु कामधर्मार्थसिद्धये॥

आचार्य निम्न श्लोक का उच्चारण कर तिलक के मध्य में अक्षत लगावें—

येऽक्षताः क्षतहन्तारो हन्तारोऽखिलवैरिणाम्।
ताँस्ते मूर्ध्नि प्रयच्छामि तेन ते शं सदा भवेत्॥

जलयात्रा

ब्राह्मणों से आज्ञा प्राप्त कर यजमान अपनी पत्नी, सधवा स्त्रियों और आचार्य सहित ब्राह्मणों को साथ लेकर आठ अथवा नौ कलश लेकर जलाशय को जावें और वहाँ हाथ-पैर धोकर आसन पर बैठकर आचमन करके प्राणायाम करे, तदुपरान्त आचार्य निम्न संकल्प यजमान से करावें—

देशकालौ सङ्कीर्त्य, अमुकगोत्रोऽमुकशर्माहम् (वर्माऽहम्, गुप्तोऽहम्, दासोऽहम्) करिष्यमाण-धूमावतीप्रतिष्ठाङ्गभूतत्वेन जलयात्रां करिष्ये। ततो गणपतिवरुणादीन् षोडशोपचारैः पूजयेत्।

पुनः मण्डल के दक्षिण, पश्चिम और उत्तर में पूर्व की तरह तीन कलशों का स्थापन एवं पूजन करे। इसी प्रकार ईशानकोण से लेकर वायव्यकोण तक चारों कोने में चार कलशों की तथा उनके मध्य में वरुण की पूजा करके निम्न प्रार्थना करें।

एह्येहि यादोगणवारिधीनां गणेन पर्जन्यसहाप्सरोभिः।
विद्याधरेन्द्रामरगीयमानः पाहि त्वमस्मान् भगवन्नमस्ते॥
तीक्ष्णायुधं तीक्ष्णगतिं दिगीशं चराचरेशं वरुणं महान्तम्।
प्रचण्डपाशाङ्कुशवज्रहस्तं भजामि देवं कुलवृद्धिहेतोः॥

आवाहयाम्यहं देवं वरुणं यादसां पतिम्।
प्रतीचीशं जगत्प्राणसेवितं पाशहस्तकम्॥

उपरोक्त श्लोकों द्वारा कलश पर वरुण का आवाहन करके पूजन करें। उसके बाद जलमाताओं की पूजा करें। उसका प्रकार यह है कि अग्निकोण में वस्त्र से ढँकी हुई भूमि पर अक्षत का सातपुञ्ज दक्षिण से उत्तर की ओर बनावें। उनपर-

जलमातृणां पूजनम्—ॐ भूर्भुवः स्वः मत्स्यै नमः मत्सीमावाहयामि स्थापयामि॥ १॥ ॐ भूर्भुवः स्वः कूर्म्यै नमः कूर्मिमावाहयामि स्थापयामि॥ २॥ ॐ भूर्भुवः स्वः वाराह्यै नमः वाराहीमावाहयामि स्थापयामि॥ ३॥ ॐ भूर्भुवः स्वः दर्दुर्यै नमः दर्दुरीमावाहयामि स्थापयामि॥ ४॥ ॐ भूर्भुवः स्वः मकर्यै नमः मकरीमावाहयामि स्थापयामि॥ ५॥ ॐ भूर्भुवः स्वः जलूक्यै नमः जलूकीमावाहयामि स्थापयामि॥ ६॥ ॐ भूर्भुवः स्वः तन्तूक्यै नमः तन्तुकीमावाहयामि स्थापयामि॥ ७॥

तदुपरान्त—**ॐ मनो जूतिर्जुषतामाज्यस्य बृहस्पतिर्यज्ञमिमं तनोत्वरिष्टं यज्ञᳪ० समिमं दधातु। विश्वेदेवास ऽइह मादयन्तामो ३ँ प्रतिष्ठ॥** इस मन्त्र का उच्चारण करके आचार्य प्रतिष्ठापन करावें।

पुनः—**ॐ भूर्भुवः स्वः मत्स्याद्यावाहितमातरः सुप्रतिष्ठिताः वरदाः भवत्।** तदुपरान्त '**ॐ भूर्भुवः स्वः मत्स्याद्यावाहितजलमातृभ्यो नमः**' यह कहकर पञ्चोपचार से पूजन करें। तदुपरान्त जीव माताओं का पूजन वहीं सात अक्षतपुञ्जों का बनाकर निम्न क्रम से करें—

जीवमातृणां पूजनम्—ॐ भूर्भुवः स्वः कुमार्यै नमः कुमारीमावाहयामि स्थापयामि॥ १॥ ॐ भूर्भुवः स्वः धनदायै नमः धनदामावाहयामि स्थापयामि॥ २॥ ॐ भूर्भुवः स्वः नन्दायै नमः नन्दामावाहयामि स्थापयामि॥ ३॥ ॐ भूर्भुवः स्वः विमलायै नमः विमलामावाहयामि

स्थापयामि ॥ ४ ॥ ॐ भूर्भुवः स्वः मङ्गलायै नमः मङ्गलामावाहयामि स्थापयामि ॥५॥ ॐ भूर्भुवः स्वः अचलायै नमः अचलावाहयामि स्थापयामि ॥६॥ ॐ भूर्भुवः स्वः पद्मायै नमः पद्मामावाहयामि स्थापयामि ॥ ७ ॥

तदुपरान्त—ॐ मनो जूतिर्जुषतामाज्यस्य बृहस्पतिर्यज्ञमिमं तनोत्वरिष्टं यज्ञठं० समिमं दधातु। विश्वेदेवास ऽइह मादयन्तामो ३ँ प्रतिष्ठ ॥ इस मन्त्र का उच्चारण करके आचार्य प्रतिष्ठापन करावें।

पुनः—ॐ भूर्भुवः स्वः कुमार्याद्यावाहितजीवमातृकाः सुप्रतिष्ठिताः वरदाः भवत्। तदुपरान्त 'ॐ भूर्भुवः स्वः कुमार्याद्यावाहितजीवमातृभ्यो नमः' यह कहकर पञ्चोपचार से पूजन करें।

पुन स्थलमातृकाओं का पूजन करें। वहीं आगे सात अक्षतपुञ्जों को बनाकर—

स्थलमातॄणां पूजनम्—ॐ भूर्भुवः स्वः ऊर्म्यै नमः ऊर्मिमावाहयामि स्थापयामि ॥ १ ॥ ॐ भूर्भुवः स्वः लक्ष्म्यै नमः लक्ष्मीमावाहयामि स्थापयामि ॥ २ ॥ ॐ भूर्भुवः स्वः महामायायै नमः महामायामावाहयामि स्थापयामि ॥ ३ ॥ ॐ भूर्भुवः स्वः पानदेव्यै नमः पानदेवीमावाहयामि स्थापयामि ॥ ४ ॥ ॐ भूर्भुवः स्वः वारुण्यै नमः वारुणमावाहयामि स्थापयामि ॥ ५ ॥ ॐ भूर्भुवः स्वः निर्मलायै नमः निर्मलामावाहयामि स्थापयामि ॥ ६ ॥ ॐ भूर्भुवः स्वः गोधायै नमः गोधामावाहयामि स्थापयामि ॥ ७ ॥

तदुपरान्त—ॐ मनो जूतिर्जुषतामाज्यस्य बृहस्पतिर्यज्ञमिमं तनोत्वरिष्टं यज्ञठं० समिमं दधातु। विश्वेदेवास ऽइह मादयन्तामो ३ँ प्रतिष्ठ ॥ इस मन्त्र का उच्चारण करके आचार्य प्रतिष्ठापन करावें।

पुनः—ॐ भूर्भुवः स्वः ऊर्म्याद्यावाहितस्थलमातृकाः सुप्रतिष्ठिताः वरदाः भवत्। तदुपरान्त—ॐ भूर्भुवः स्वः ऊर्म्याद्यावाहितस्थलमातृभ्यो नमः। यह कहकर पञ्चोपचार से पूजन करावें।

इस समय कुछ लोग सप्तसागर के पूजन की भी इच्छा करते हैं। उसकी विधि यह है—सर्वप्रथम अक्षतपुञ्जों पर निम्न मन्त्र से आवाहन करके षोडशोपचार या पञ्चोपचार के द्वारा पूजा करावें। **ॐ समुद्रादूर्मिर्मधुमाँ २॥ उदारदुपाठ० शुना सममृतत्वमानट्। घृतस्य नाम गुह्यं यदस्ति जिह्वा देवानाममृतस्य नाभिः॥**

पुनः आचार्य इन्द्रादि दशदिग्पालों का यजमान से आवाहन करवा के पूजन करावें। इस अवसर पर कुछ लोग दिग्पालबलिदान भी करते हैं। इसके उपरान्त आचार्य जलाशय स्थित वरुण का पूजन निम्न मन्त्र का उच्चारण करके यजमान से करावें—**ॐ उरुठ०हि राजा वरुणश्चकार सूर्याय पन्था मन्वेत वाऽ उ। अपदेपादा प्रति धातवेकरुतापवक्ता हृदया विधश्चित्॥ नमो वरुणायाभिष्ठितो वरुणस्य पाशः॥** इस मन्त्र से आवाहन करके '**ॐ वरुणाय नमः**' इस नाममन्त्र से अथवा षोडशोपचारों द्वारा पूजन करके उसके बाद निम्न मन्त्र से अथवा नाममन्त्रों से बारह आहुति दें—

ॐ अदभ्यः स्वाहा वार्भ्यः स्वाहोदकाय स्वाहा तिष्ठन्तीभ्यः स्वाहा स्रवन्ताभ्यः स्वाहा स्यन्दमानाभ्यः स्वाहा कूप्याभ्यः स्वाहा सूद्याभ्यः स्वाहा धार्याभ्यः स्वाहार्णवाय स्वाहा समुद्राय स्वाहा सागराय स्वाहा॥ इस मन्त्र से। नाममन्त्र के पक्ष में—**ॐ अद्भ्यः स्वाहा। ॐ वार्भ्यः स्वाहा। ॐ उदकाय स्वाहा। ॐ तिष्ठन्तीभ्यः स्वाहा। ॐ स्रवन्तीभ्यः स्वाहा। ॐ स्यन्दमानाभ्यः स्वाहा। ॐ कूप्याभ्यः स्वाहा। ॐ सूद्याभ्यः स्वाहा। ॐ धार्व्याब्भ्यः स्वाहा। ॐ अर्णवाय स्वाहा। ॐ समुद्राय स्वाहा। ॐ सागराय स्वाहा।** इन मन्त्रों से हवन करें।

आचार्य निम्न श्लोक का उच्चारण करके वरुण देवता को यजमान से नमस्कार करावें—

**ॐ नमो नमस्ते स्फटिकप्रभायः सुश्वेतहाराय सुमङ्गलाय।
सुपाशहस्ताय झषासनाय जलाधिनाथाय नमो नमस्ते॥**

आचार्य निम्न श्लोकों का उच्चारण करके यजमान से वरुण देवता की प्रार्थना करावें—

ॐ प्रतीचीश नमस्तुभ्यं सर्वाघौघनिषूदन।
पवित्रं कुरु मां देवः सर्वकार्येषु सर्वदा॥ १॥
ज्ञानतोऽज्ञानतो वापि यावान्विधिरनुष्ठितः।
स सर्वस्त्वत्प्रसादेन पूर्णो भवत्वपांपते॥ २॥

तदुपरान्त यजमान सुहागिन स्त्रियों को सौभाग्यद्रव्य, ताम्बूल और चना आदि देकर ब्राह्मणों को यथाशक्ति दक्षिणा देवें।

पुनः निम्न मन्त्र का उच्चारण करके आचार्य कलशों को उठाकर सुवासिनियों के हाथ में देवें—**ॐ उत्तिष्ठ ब्रह्मणस्पते देवयन्तस्त्वे महे। उपप्रयन्तु मरुतः सुदा न वऽ इन्द्र प्राशूर्भवा शचा॥**

आचार्य सहित सभी ब्राह्मण निम्न मन्त्र का उच्चारण करें—

ॐ यथे मां वाचं कल्याणीमावदानि जनेब्भ्यः। ब्रह्म-राजन्याभ्यार्ठ० शूद्राय चार्याय च स्वाय चारणाय च। प्रियो देवानां दक्षिणायै दातुरिह भूयासमयं मे कामः समृध्यतामुप मादो नमतु॥

आचार्य और ब्राह्मण—**ॐ आ नो भद्राः क्रतवो यन्तु विश्वतो-ऽदब्धासो अपरीतास उद्भिदः। देवा नो यथा सदमिद्वृधे असन्नप्रायुवो रक्षितारो दिवे दिवे॥ १॥ देवानां भद्रा सुमतिर्ऋजूयतां देवानार्ठ० रातिरभि नो निवर्तताम्। देवानार्ठ० सख्यमुपसेदिमा वयं देवा न आयुः प्रतिरन्तु जीवसे॥ २॥ तान्पूर्वया निविदा हूमहे वयं भगं मित्रमदितिन्दक्षमस्त्रिधम्। अर्यमणं वरुणर्ठ० सोममश्विना सरस्वती नः सुभगा मयस्करत्॥ ३॥ तन्नो वातो मयो भुव्वातु भेषजन्तन्माता पृथिवी तत्पिता द्यौः। तद्ग्रावाणः सोमसुतो मयोभुवस्तदश्विना शृणु तन्धिष्ण्या युवम्॥ ४॥ तमीशानं जगतस्तस्थुषस्पतिं धियं जिन्वमवसे हूमहे वयम्। पूषा नो यथा वेदसामसद्वृधे रक्षिता पायुरदब्धः स्वस्तये॥ ५॥ स्वस्ति**

न इन्द्रो वृद्धश्रवाः स्वस्ति नः पूषा विश्ववेदाः। स्वस्ति नस्ताक्ष्यों अरिष्टनेमिः स्वस्ति नो बृहस्पतिर्दधातु॥६॥ पृषदश्वा मरुतः पृश्निमातरः शुभं यावानो विदथेषु जग्मयः। अग्निजिह्वा मनवः सूरचक्षसो विश्वे नो देवा अवसागमन्निह॥७॥ भद्रं कर्णेभिः शृणुयाम देवा भद्रं पश्येमाक्षभिर्यजत्राः। स्थिरैरङ्गैस्तुष्टुवाꣳसस्तनूभिर्व्यशेमहि देवहितं यदायुः॥८॥ शतमिन्नु शरदो अन्ति देवा यत्रा नश्चक्रा जरसं तनूनाम्। पुत्रासो यत्र पितरो भवन्ति मा नो मध्या रीरिषतायुर्गन्तोः॥९॥ अदितिर्द्यौरदितिरन्तरिक्षमदितिर्माता स पिता स पुत्रः। विश्वे देवा अदितिः पञ्चजना अदितिर्जातमदितिर्जनित्वम्॥१०॥ द्यौः शान्ति-रन्तरिक्षꣳ शान्तिः पृथिवी शान्तिरापः शान्तिरोषधयः शान्तिः। वनस्पतयः शान्तिर्विश्वे देवाः शान्तिर्ब्रह्म शान्तिः सर्वꣳ शान्तिः शान्तिरेव शान्तिः सा मा शान्तिरेधि॥११॥ यतो यतः समीहसे ततो नो अभयं कुरु। शं नः कुरु प्रजाभ्योऽभयं नः पशुभ्यः॥१२॥

इस बलि मन्त्र का आचार्य उच्चारण करें—ॐ नमो भगवते क्षेत्रपालाय भासुराय त्रिनेत्रज्वालामुख अवतर अवतर कपिल पिङ्गल ऊर्ध्वकेश-जिह्वालालन छिन्दि-छिन्दि भिन्धि-भिन्धि कुरु-कुरु चल-चल ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रैं बलिं गृहाण स्वाहा।

तत्पश्चात् सपत्नीक यजमान, बन्धु, ज्ञाति से समन्वित होकर मण्डप की ओर प्रस्थान करें। मण्डप के पश्चिमद्वार के समीप में जाकर पूर्ववत् सभी दोष के शमन के लिए क्षेत्रपाल को बलि प्रदान करें। इसके बाद मण्डप के पश्चिमद्वार पर आकर स्थित हुए यजमान और उसकी पत्नी की सुवासिनियाँ आरती करके पश्चिमद्वार से ही मण्डप के मध्य में उन्हें ले जावें।

धूमावतीप्रतिष्ठारम्भः

यजमान और उसकी धर्मपत्नी को आसन पर पूर्वाभिमुख बैठाकर निम्न मंत्र का उच्चारण करते हुए यजमान के मस्तक पर आचार्य तिलक करें—

ॐ स्वस्ति न इन्द्रो वृद्धश्रवाः स्वस्ति नः पूषा विश्ववेदाः।
स्वस्ति नस्ताक्ष्र्यो अरिष्टनेमिः स्वस्ति नो बृहस्पतिर्दधातु॥

आचार्य निम्न तीन नामों का उच्चारण करते हुए यजमान से आचमन करावें—**ॐ केशवाय नमः ॐ नारायणाय नमः ॐ माधवाय नमः।**

तदुपरान्त **ॐ ऋषिकेशाय नमः, ॐ गोविन्दाय नमः** का उच्चारण करके यजमान का हाथ जल से धुलवावें।

आचार्य निम्न मन्त्र का उच्चारण करके यजमान को कुशा की पवित्री धारण करवाके प्राणायाम करावें—**ॐ पवित्रे स्थो वैष्णव्यौ सवितुर्वः प्रसव उत्पुनाम्यच्छिद्रेण पवित्रेण सूर्यस्य रश्मिभिः॥ तस्य ते पवित्रपते पवित्र पूतस्य यत्कामः पुने तच्छकेयम्॥**

आचार्य निम्न श्लोक का उच्चारण करके यजमान के ऊपर और प्रतिष्ठा-सामग्री की पवित्रता हेतु दूर्वा के द्वारा जल छिड़कें—

ॐ अपवित्रः पवित्रो वा सर्वावस्थां गतोऽपि वा।
यः स्मरेत् पुण्डरीकाक्षं स बाह्याभ्यन्तरः शुचिः॥
ॐ पुण्डरीकाक्षः पुनातु, ॐ पुण्डरीकाक्षः पुनातु, ॐ पुण्डरीकाक्षः पुनातु।

आचार्य निम्न मंत्र और आगे दिए हुए श्लोक का उच्चारण करते हुए यजमान से भगवान श्रीविष्णु का ध्यान करावें—

ॐ इदं विष्णुर्विचक्रमे त्रेधा निदधे पदम्। समूढमस्य पाठं०सुरे स्वाहा॥

ध्येयः सदा सवितृमण्डलमध्यवर्ती, नारायणः सरसिजासनसन्निविष्टः।
केयूरवान् मकरकुण्डलवान् किरीटी, हारी हिरण्मयवपुर्धृतशङ्खचक्रः॥

आचार्य निम्न विनियोग और पौराणिक श्लोक का उच्चारण करते हुए यजमान से आसन शुद्धि कर्म करावें—

ॐ पृथ्वीतिमन्त्रस्य मेरुपृष्ठ ऋषिः, सुतलं छन्दः, कूर्मो देवता आसनपवित्र करणे विनियोगः।

ॐ पृथ्वि त्वया धृता लोका देवि त्वं विष्णुना धृता।
त्वं च धारय मां देवि! पवित्रं कुरु चासनम्॥

आचार्य निम्न श्लोक का उच्चारण करके यजमान से उसकी शिखा का बन्धन करावें—

ॐ ऊर्ध्वकेशि विरूपाक्षि मांसशोणितभोजने।
तिष्ठ देवि शिखामध्ये चामुण्डे चापराजिते॥

अथवा

ब्रह्मभावसहस्त्रस्य रुद्रभावशतस्य च।
विष्णोः संस्मरणार्थं हि शिखाबन्धं करोम्यहम्॥

आचार्य भूमि में अक्षत छोड़वाकर निम्न मंत्र का उच्चारण करते हुए उसपर यजमान से दीपक प्रज्वलित करावें—

भो दीप! देविरूपस्त्वं कर्मसाक्षी ह्यविघ्नकृत्।
यावत्कर्मसमाप्तिः स्यात् तावत्त्वं सुस्थिरो भव॥

आचार्य निम्न श्लोक का उच्चारण करते हुए यजमान से दीपक की प्रार्थना करावें—

शुभं करोतु कल्याणमारोग्यं धनसम्पदाम्।
शत्रुबुद्धिविनाशाय दीपज्योतिर्नमोऽस्तु ते॥

स्वस्तिवाचनम्

ॐ आ नो भद्राः क्रतवो यन्तु विश्वतोऽदब्धासो अपरीतास उद्भिदः। देवा नो यथा सदमिद्वृधे असन्नप्रायुवो रक्षितारो दिवे दिवे॥ १॥ देवानां भद्रा सुमतिर्ऋजूयतां देवानाᳬं रातिरभि नो निवर्तताम्। देवानाᳬं सख्यमुपसेदिमा वयं देवा न आयुः प्रतिरन्तु जीवसे॥ २॥ तान्पूर्वया निविदा हूमहे वयं भगं मित्रमदितिन्दक्षमस्त्रिधम्। अर्यमणं वरुणᳬं सोममश्विना सरस्वती नः सुभगा मयस्करत्॥ ३॥ तन्नो वातो मयो भुव्वातु भेषजन्तन्माता पृथिवी तत्पिता द्यौः। तद्ग्रावाणः सोमसुतो मयोभुवस्तदश्विना शृणु तन्धिष्ण्या युवम्॥ ४॥ तमीशानं जगतस्त-स्थुषस्पतिं धियं जिन्वमवसे हूमहे वयम्। पूषा नो यथा वेदसामसद्वृधे रक्षिता पायुरदब्धः स्वस्तये॥ ५॥

भावार्थ—हमको सभी ओर से कल्याण करनेवाले बल प्राप्त हों, जिसको कोई क्षीण न कर सके और वह सदैव बढ़नेवाले हों, जिससे देवगण सदैव हमारी वृद्धि के लिए हों और प्रमाद रहित होकर प्रतिदिन हमारे रक्षक बने रहें॥ १॥ सरलता को चाहनेवाले देवताओं का कल्याण करनेवाली सुमति और देवताओं का दान हमारी ओर झुके, हम देवताओं की मैत्री को प्राप्त करने का प्रयत्न करे और देवता हमारी आयु में वृद्धि करें, जिससे हम चिरकाल तक जीवित रहें॥ २॥ हम उनको प्राचीन स्तुतियों द्वारा बुलाते हैं। भग को, मित्र को, अदिति को, दक्ष को और जिसे कोई दुःखी नहीं कर सकता, उस अर्यमा को, वरुण को, सोम को और अश्विनों को, सौभाग्यवती सरस्वती हमको सुखी करें॥ ३॥ वायु हमारे लिये उस सुख देनेवाले औषध को लावें, उसको माता पृथ्वी, पिता द्यौ और मङ्गलदायक सोम कूटने के पत्थर लावें, हे पूज्य अश्विनी! आप इस पुकार को सुनें॥ ४॥ हम उस ईशन करनेवाले जङ्गम और स्थावर के प्रति और स्तुति के प्रेरणा करनेवाले को रक्षा के लिये बुलाते हैं, जिससे पूषा हमारे लिये धनों की वृद्धि करनेवाला तथा कल्याण के लिये न चूकनेवाला रक्षक हो॥ ५॥

स्वस्ति न इन्द्रो वृद्धश्रवाः स्वस्ति नः पूषा विश्ववेदाः। स्वस्ति नस्तार्क्ष्यो अरिष्टनेमिः स्वस्ति नो बृहस्पतिर्दधातु॥ ६॥ पृषदश्वा मरुतः पृश्निमातरः शुभं यावानो विदथेषु जग्मयः। अग्निजिह्वा मनवः सूरचक्षसो विश्वे नो देवा अवसागमन्निह॥ ७॥ भद्रं कर्णेभिः शृणुयाम देवा भद्रं पश्येमाक्षभिर्यजत्राः। स्थिरैरङ्गैस्तुष्टुवाꣳस स्तनूभिर्व्यशेमहि देवहितं यदायुः॥ ८॥ शतमिन्नु शरदो अन्ति देवा यत्रा नश्चक्रा जरसं तनूनाम्। पुत्रासो यत्र पितरो भवन्ति मा नो मध्या रीरिषतायुर्गन्तोः॥ ९॥ अदितिर्द्यौरदितिरन्तरिक्षमदितिर्माता स पिता स पुत्रः। विश्वे देवा अदितिः पञ्चजना अदितिर्जातमदितिर्जनित्वम्॥ १०॥

भावार्थ—बढ़े हुए यज्ञवाला इन्द्र हमें कल्याण देवे, सम्पूर्ण धन का स्वामी पूषा हमारे लिए मङ्गलकारी हो, जिसके पहिये की धारा कभी नहीं टूटती, ऐसा सूर्य हमारे लिए (सदैव) शुभदायक हो, बृहस्पति हमको (सर्वदा) सुख प्रदत्त करे॥ ६॥ शुभ वाहनवाले आकाश-मातृक शुभ देनेवाले यज्ञगृहों में जानेवाले अग्नि के सदृश ज्ञानी, सूर्य के तुल्य विश्वेदेवा रक्षा निमित्त यहाँ आवें॥ ७॥ हे पूजनीय देवताओं! हम आपकी स्तुति करते हुए कानों से मङ्गल सुनें, आँखों से मङ्गल को देखें, दृढ़ शरीर और अङ्गों से युक्त होते हुए देवताओं से नियत की हुई आयु को प्राप्त हों॥ ८॥ हे देवों! यह सौ शरत् काल बीत जाता है कि जिनके अन्दर अन्दर आप लोगों ने हमारे शरीरों की जरावस्था निर्धारित कर दी है। इस अवधि के अन्दर पुत्र भी पितर बन जाते हैं। हे देवों! जीवन यात्री की आयु को मध्य में मत काटो॥ ९॥ द्यौ, अन्तरिक्ष, माता, पिता, पुत्र, विश्वेदेवा, पञ्चजन, उत्पन्न और होनेवाले सभी अदिति के अधीन हों॥ १०॥

द्यौः शान्तिरन्तरिक्षर्ठ० शान्तिः पृथिवी शान्तिरापः शान्तिरोषधयः शान्तिः। वनस्पतयः शान्तिर्विश्वे देवाः शान्तिर्ब्रह्म शान्तिः सर्वर्ठ० शान्तिः शान्तिरेव शान्तिः सा मा शान्तिरेधि॥ ११॥ यतो यतः समीहसे ततो नो अभयं कुरु। शं नः कुरु प्रजाभ्योऽभयं नः पशुभ्यः॥ १२॥ सुशान्तिः सर्वारिष्टशान्तिर्भवतु॥

श्रीमन्महागणाधिपतये नमः॥

आचार्य निम्न नाममन्त्रों का कर्ता से हाथ जोड़वाकर उच्चारण करावें—

ॐ लक्ष्मीनारायणाभ्यां नमः। ॐ उमामहेश्वराभ्यां नमः।
ॐ वाणीहिरण्यगर्भाभ्यां नमः। ॐ शचीपुरन्दराभ्यां नमः।
ॐ मातापितृचरण कमलेभ्यो नमः। ॐ इष्टदेवताभ्यो नमः।
ॐ ग्रामदेवताभ्यो नमः। ॐ कुल देवताभ्यो नमः।
ॐ स्थानदेवताभ्यो नमः। ॐ वास्तुदेवताभ्यो नमः।
ॐ एतत्कर्मप्रधानदेवताभ्यो नमः। ॐ गुरुचरणकमलेभ्यो नमः।
ॐ सर्वेभ्यो देवेभ्यो नमः। ॐ सर्वेभ्यो ब्राह्मणेभ्यो नमः।
ॐ भूर्भुवः स्वः श्रीसिद्धिबुद्धिसहिताय श्रीमन्महागणाधिपतये नमः।

भावार्थ—द्यौ से, अन्तरिक्ष से, पृथ्वी से, जल से, औषधियों से, वनस्पतियों से, सब देवों से, सब सृष्टि से, स्वयं शान्त से जो शान्ति है, वह मुझे प्राप्त हो॥ ११॥ सभी स्थानों से हमको अभय करो, हमारी प्रजा का कल्याण करो, हमारे पशुओं को भय-मुक्त करो॥ १२॥

पौराणिकश्लोका:

ॐ सुमुखश्चैकदन्तश्च कपिलो गजकर्णकः।
लम्बोदरश्च विकटो विघ्ननाशो विनायकः॥ १ ॥
धूम्रकेतुर्गणाध्यक्षो भालचन्द्रो गजाननः।
द्वादशैतानि नामानि यः पठेच्छृणुयादपि॥ २ ॥
विद्यारम्भे विवाहे च प्रवेशे निर्गमे तथा।
संग्रामे संकटे चैव विघ्नस्तस्य न जायते॥ ३ ॥
शुक्लाम्बरधरं देवं शशिवर्णं चतुर्भुजम्।
प्रसन्नवदनं ध्यायेत् सर्वविघ्नोपशान्तये॥ ४ ॥
अभीप्सितार्थसिद्ध्यर्थं पूजितो यः सुरासुरैः।
सर्वविघ्नहरस्तस्मै गणाधिपतये नमः॥ ५ ॥
वक्रतुण्ड! महाकाय! कोटिसूर्यसमप्रभ!।
अविघ्नं कुरु मे देव! सर्वकार्येषु सर्वदा॥ ६ ॥
सर्वमङ्गलमङ्गल्ये शिवे सर्वार्थसाधिके!।
शरण्ये त्र्यम्बके गौरि नारायणि! नमोऽस्तु ते॥ ७ ॥

भावार्थ—सुमुख, एकदन्त, कपिल, गजकर्णक, लम्बोदर, विकट, विघ्ननाश, विनायक, धूम्रकेतु, गणाध्यक्ष, भालचन्द्र और गजानन इन बारह नामों को विद्यारम्भ, विवाह, गृहप्रवेश, यात्रा संग्राम और संकट के समय में जो पढ़ता या सुनता है उसको विघ्न नहीं होता है। सभी विघ्नों की शान्ति के लिये सफेद वस्त्र को धारण करनेवाले व चन्द्रमाके समान वर्णवाले तथा प्रसन्नमुख देव का ध्यान करना चाहिये। सभी विघ्नों को हरण करनेवाले जो अभिलषित अर्थ की सिद्धि के लिए देवताओं और राक्षसों के द्वारा पूजित हैं, उन गणेशजी को नमस्कार है॥ १-५ ॥ हे वक्रतुण्ड! हे महाकाय! करोड़ों सूर्य के समान प्रभावाले हे देव! मेरे सभी कार्यों में सर्वदा विघ्नों का नाश करें॥ ६ ॥ सभी मंगलों को मंगलमय बनानेवाली, सभी अर्थों को साधनेवाली, हे शिवे! हे शरण्ये! हे त्र्यम्बके! हे गौरि! हे नारायणि! तुम्हें नमस्कार है॥ ७॥

तदेव लग्नं सुदिनं तदेव ताराबलं चन्द्रबलं तदेव।
विद्याबलं दैवबलं तदेव लक्ष्मीपते तेऽङ्घ्रियुगं स्मरामि॥ ८ ॥
लाभस्तेषां जयस्तेषां कुतस्तेषां पराजयः।
येषामिन्दीवरश्यामो हृदयस्थो जनार्दनः॥ ९ ॥
यत्र योगेश्वरः कृष्णो यत्र पार्थो धनुर्धरः।
तत्र श्रीर्विजयो भूतिर्ध्रुवा नीतिर्मतिर्मम॥ १०॥
अनन्याश्चिन्तयन्तो मां ये जनाः पर्युपासते।
तेषां नित्याभियुक्तानां योगक्षेमं वहाम्यहम्॥ ११॥
स्मृते सकलकल्याणभाजनं यत्र जायते।
पुरुषं तमजं नित्यं व्रजामि शरणं हरिम्॥ १२॥
सर्वेष्वारम्भकार्येषु त्रयस्त्रिभुवनेश्वराः।
देवा दिशन्तु नः सिद्धिं ब्रह्मेशानजनार्दनाः॥ १३॥
विश्वेशं माधवं ढुण्ढिं दण्डपाणिं च भैरवम्।
वन्दे काशीं गुहां गङ्गां भवानीं मणिकर्णिकाम्॥ १४॥

भावार्थ—वही लग्न है, वही सुदिन है, वही ताराबल है, वही चन्द्रबल है, वही विद्याबल है, वही दैवबल है, अतः हे लक्ष्मी के पति आपके दोनों चरणों का स्मरण कर रहा हूँ॥ ८॥ जिनके हृदय में श्रेष्ठ कमल के तरह श्याम जनार्दन स्थित रहते हैं उनको लाभ होता है। उनका ही जय होता है उनका पराजय कैसे हो सकता है॥ ९॥ जहाँ योगेश्वर भगवान् श्रीकृष्ण रहते हैं, और जहाँ पार्थ धनुर्धर रहते हैं, वहाँ श्री और विजय होते हैं, यह ध्रुव नियम है और ऐसा मेरा मत है॥ १०॥ अनन्य चिन्तन करते हुए जो मन हमारी उपासना करते हैं, उन नित्य भक्तों का योगक्षेम मैं स्वयं करता हूँ॥ ११॥ जिनके स्मरण करने पर जीव सम्पूर्ण कल्याणों का पात्र हो जाता है। उस भगवान् हरि की शरण में मैं जाता हूँ। त्रिभुवन के ईश्वर (स्वामी) तीनों ब्रह्मा, शंकर एवं जनार्दन भगवान् और (सभी) देवता सभी आरम्भ किए जानेवाले कार्यों में हमको सिद्धि प्रदान करे। विश्वेश, माधव, ढुण्ढि, दण्डपाणि, भैरव, काशी, गुहा, गङ्गा, भवानी और मणिकर्णिका की वन्दना अर्थात् प्रार्थना कर रहा हूँ॥ १२-१४॥

संकल्पः

यजमानः स्वदक्षिणहस्ते जलाऽक्षत-द्रव्यं चादाय, सङ्कल्पं कुर्यात्– ॐ विष्णुर्विष्णुर्विष्णुः श्रीमद्भगवतो महापुरुषस्य विष्णोराज्ञया-प्रवर्तमानस्य अद्य श्रीब्रह्मणोऽह्नि द्वितीयपरार्द्धे श्रीश्वेतवाराहकल्पे वैवस्वतमन्वन्तरे अष्टाविंशतितमे कलियुगे कलिप्रथमचरणे जम्बूद्वीपे भरतखण्डे भारतवर्षे आर्यावर्तैकदेशे, अमुकक्षेत्रे अमुकनद्या अमुकतीरे विक्रमशके बौद्धावतारे अमुकनाम्नि संवत्सरे अमुकायने अमुकऋतौ महामाङ्गल्यप्रदमासोत्तमेमासे अमुकमासे अमुकपक्षे अमुकतिथौ अमुकवासरे अमुकनक्षत्रे अमुकयोगे अमुककरणे अमुकराशिस्थिते चन्द्रे अमुकराशिस्थिते सूर्ये अमुकराशिस्थिते देवगुरौ शेषेषु ग्रहेषु यथास्थानस्थितेषु सत्सु एवं गुणगणविशेषणविशिष्टायां शुभपुण्य-तिथौ अमुकगोत्रोऽमुकशर्माहं (वर्माऽहम्, गुप्तोऽहम्, दासोऽहम्) मम सभार्यस्य सपरिवारस्य सकलपापक्षयपूर्वकं पितृतो मातृतश्च दश पूर्वान्दशपरानात्मानं चोद्धर्तुकामः क्षेमस्थैर्यदीर्घायुरारोग्यैश्वर्यस्थिर-लक्ष्मीपुत्रपौत्रधनधान्यदीर्घायुरारोग्यैश्वर्यादिसमृद्ध्यर्थं निरतिशयानन्द-ब्रह्मपदप्राप्तिश्रीसर्वफलाक्षयसुखकामः श्रुति-स्मृति-पुराणोक्तफला-वाप्तिकामश्च धर्मार्थकाममोक्षचतुर्विधपुरुषार्थसिद्ध्यर्थं धूमावतीदेवता-प्रीत्यर्थं च चलां (अचलां) धूमावतीप्रतिष्ठामहं करिष्ये।

तदङ्गत्वेन पुण्याहवाचनं षोडशमातृकापूजनं वसोर्द्धारा-पूजनमायुष्यमन्त्रजपं नान्दीश्राद्धमाचार्यादिवरणानि च करिष्ये। तत्रादौ निर्विघ्नतासिद्ध्यर्थं गणेशाम्बिकयोः पूजनं करिष्ये।

---

१. उत्तरं यत्समुद्रस्य हेमाद्रेश्चैव दक्षिणम्। वर्षं तद्भारतं नाम भारती यत्र सन्ततिः।
आसमुद्रात्तु वै पूर्वादासमुद्रात्तु पश्चिमात्। तयोरेवान्तरं गिर्योरार्यावर्त्तं विदुर्बुधा इति।
(विष्णुपुराण)

२. अव्युत्पन्नोऽयमदःशब्दपर्यायः। पुरश्चर्यार्णवे—अमुके चामुकक्षेत्रे गोत्रप्रवरमुच्चरेत्। स्वनामजातिनामानि द्विजाच्छर्म च वर्म च। गुप्तो दासोऽथामुकस्य मन्त्रस्य सिद्धिकामुकः। अद्यारभ्य दिनैस्तैरसति प्रतिबन्धके। करिष्य इति। सङ्कल्प मनसैव प्रकल्पयेदिति।

गणेशाऽम्बिकापूजनम्

आवाहनम्

यजमान हाथ में लाल पुष्प और अक्षत लेकर निम्न श्लोकों और मन्त्रों का उच्चारण करते हुए गणेशाम्बिका का आवाहन करें—

हे हेरम्ब त्वमेह्येहि अम्बिकात्र्यम्बकात्मज।
सिद्धिबुद्धिपते त्र्यक्ष लक्षलाभपितुः प्रभो॥
नागास्यं नागहारं त्वां गणराजं चतुर्भुजम्।
भूषितं स्वायुधैर्दिव्यैः पाशाङ्कुशपरश्वधैः॥
आवाहयामि पूजार्थं रक्षार्थं च मम क्रतोः।
इहागत्य गृहाण त्वं पूजां यागञ्च रक्ष मे॥

ॐ गणानां त्वा गणपतिर्ठ॰ हवामहे प्रियाणां त्वा प्रियपतिर्ठ॰ हवामहे निधीनां त्वां निधिपतिर्ठ॰ हवामहे वसो मम। आहमजानि गर्भ धमा त्वमजासि गर्भ धम्॥

ॐ भूर्भुवः स्वः सिद्धिबुद्धिसहिताय श्रीमन्महागणपतये नमः, गणपतिमावाहयामि स्थापयामि।

ॐ अम्बे अम्बिकेऽम्बालिके न मा नयति कश्चन।
ससस्त्यश्वकः सुभद्रिकां कां पीलवासिनीम्॥
हेमाद्रितयनां देवीं वरदां भैरवप्रियाम्।
लम्बोदरस्य जननीं गौरीमावाहयाम्यहम्॥

ॐ भूर्भुवः स्वः गौर्यै नमः, गौरीमावाहयामि स्थापयामि।

प्रतिष्ठापनम्

ॐ मनो जूतिर्जुषतामाज्यस्य बृहस्पतिर्यज्ञमिमं तनोत्वरिष्टं यज्ञर्ठ॰ समिमं दधातु। विश्वेदेवास ऽइह मादयन्तामो ३ँ प्रतिष्ठ॥

अस्यै प्राणाः प्रतिष्ठन्तु अस्यै प्राणाः क्षरन्तु च।
अस्यै देवत्वमर्चायै मामहेति च कश्चन॥

ॐ भूर्भुवः स्वः गणेशाऽम्बिके सुप्रतिष्ठिते वरदे भवेताम्।

आसनम्

ॐ पुरुष एवेदर्ठ० सर्वं यद्भूतं यच्च भाव्यम्।
उतामृतत्त्वस्येशानो यदन्नेनातिरोहति॥

ॐ भूर्भुवः स्वः गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, आसनार्थे अक्षतान् समर्पयामि

पाद्यम्

ॐ एतावानस्य महिमातो ज्यायाँश्च पूरुषः।
पादोऽस्य विश्वा भूतानि त्रिपादस्यामृतं दिवि॥

ॐ भूर्भुवः स्वः गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, पाद्यं समर्पयामि।

अर्घ्यम्

ॐ त्रिपादूर्ध्वऽउदैत्पुरुषः पादोऽस्येहाभवत्पुनः।
ततो विष्वङ् व्यक्रामत्साशनानशने अभि॥

ॐ भूर्भुवः स्वः गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, अर्घ्यं समर्पयामि।

आचमनीयम्

ॐ ततो विराडजायत विराजो अधि पूरुषः।
स जातो अत्यरिच्यत पश्चाद् भूमिमथो पुरः॥

ॐ भूर्भुवः स्वः गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, आचमनीयं जलं समर्पयामि।

स्नानम्

ॐ तस्माद्यज्ञात् सर्वहुतः सम्भृतं पृषदाज्यम्।
पशूँस्ताँश्चक्रेवायव्यानारण्या ग्राम्याश्च ये॥

ॐ भूर्भुवः स्वः गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, स्नानं समर्पयामि।

पञ्चामृतस्नानम्

ॐ पञ्च नद्यः सरस्वतीमपि यन्ति सस्त्रोतसः।
सरस्वती तु पञ्चधा सो देशेऽभवत्सरित्॥

ॐ भूर्भुवः स्वः गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, पञ्चामृत स्नानं समर्पयामि। पञ्चामृतस्नानान्ते शुद्धोदकस्नानं समर्पयामि।

शुद्धोदकस्नानम्

ॐ शुद्धवालः सर्वशुद्धवालो मणिवालस्त आश्विनाः श्येतः श्येताक्षो ऽरुणस्ते रुद्राय पशुपतये कर्णा यामा अवलिप्ता रौद्रा नभो रूपाः पार्जन्याः ॥

ॐ भूर्भुवः स्वः गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, शुद्धोदकस्नानं समर्पयामि। शुद्धोदकस्नानान्ते आचमनीयं जलं समर्पयामि।

वस्त्रम्

ॐ सुजातो ज्योतिषा सह शर्म्म वरूथमासदत्स्वः।
वासो अग्ने विश्वरूपर्ठ० संव्ययस्व विभावसो॥

ॐ भूर्भुवः स्वः गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, वस्त्रं समर्पयामि। वस्त्रान्ते आचमनीयं जलं समर्पयामि।

उपवस्त्रम्

ॐ युवा सुवासाः परिवीत ऽआगात्स ऽउ श्रेयान्भवति जायमानः।
तन्धीरासः कवय ऽउन्नयन्ति स्वाध्यो मनसा देवयन्तः॥

ॐ भूर्भुवः स्वः गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, उपवस्त्रं समर्पयामि। उपवस्त्रान्ते आचमनीयं जलं समर्पयामि। अथवा ॐ भूर्भुवः स्वः गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, वस्त्रोपवस्त्रार्थे रक्तसूत्रं समर्पयामि। अलङ्करणार्थे अक्षतां समर्पयामि।

यज्ञोपवीतम्

ॐ यज्ञोपवीतं परमं पवित्रं प्रजापतेर्यत्सहजं पुरस्तात्।
आयुष्यमग्र्यं प्रतिमुञ्च शुभ्रं यज्ञोपवीतं बलमस्तु तेजः॥
यज्ञोपवीतमसि यज्ञस्य त्वा यज्ञोपवीतेनोपह्यामि।
नवभिस्तन्तुभिर्युक्तं त्रिगुणं देवतामयम्।
उपवीतं मया दत्तं गृहाण परमेश्वर॥

ॐ भूर्भुवः स्वः गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, यज्ञोपवीतं समर्पयामि। यज्ञोपवीतान्ते आचमनीयं जलं समर्पयामि।

गन्धम्

ॐ त्वां गन्धर्वा अखनँस्त्वामिन्द्रस्त्वां बृहस्पतिः।
त्वामोषधे सोमो राजा विद्वान्यक्ष्मादमुच्यत॥

कनिष्ठामूलगताङ्गुष्ठयोगेन गन्धमुद्रां प्रदर्श्य अनामिकया ॐ भूर्भुवः स्वः गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, गन्धं समर्पयामि।

अक्षतान्

ॐ अक्षन्नमीमदन्त ह्यव प्रिया अधूषत। अस्तोषत स्वभानवो विप्रा नविष्ठया मती योजान्विन्द्र ते हरी॥

ॐ भूर्भुवः स्वः गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, अक्षतान् समर्पयामि।

पुष्पमालाम्

ॐ ओषधीः प्रतिमोदध्वं पुष्पवतीः प्रसूवरीः।
अश्वा ऽइव सजित्वरीर्वीरुधः पारयिष्णवः॥

तर्जन्यङ्गुष्ठयोगेन ॐ भूर्भुवः स्वः गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, पुष्पमालां समर्पयामि।

दूर्वाम्

ॐ काण्डात्काण्डात्प्ररोहन्ती परुषः परुषस्परि।
एवा नो दूर्वे प्रतनु सहस्रेण शतेन च॥

ॐ भूर्भुवः स्वः गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, दूर्वाङ्कुरान् समर्पयामि।

नानापरिमलद्रव्याणि

ॐ अहिरिव भोगैः पर्येति बाहुं ज्याया हेतिं परिबाधमानः।
हस्तघ्नो विश्वा वयुनानि विद्वान् पुमान् पुमार्ठ०सं परि पातु विश्वतः॥

ॐ भूर्भुवः स्वः गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, नानापरिमलद्रव्याणि समर्पयामि।

सिन्दूरम्

ॐ सिन्धोरिव प्राद्ध्वने शूघनासो वातप्रमियः पतयन्ति यह्वा।
घृतस्य धारा अरुषो न वाजी काष्ठा भिन्दन्नूर्मिभिः पिन्वमानः॥

ॐ भूर्भुवः स्वः गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, सिन्दूरं समर्पयामि।

धूपम्

ॐ धूरसि धूर्व धूर्वन्तं धूर्व तं योऽस्मान् धूर्वति तं धूर्वयं वयं धूर्वामः। देवानामसि वह्नितमर्ठ० सस्नितमं पप्रितमं जुष्टतमं देवहूतमम्॥

तर्जनीमूलयोरङ्गुष्ठयोगेन धूपमुद्रां प्रदर्श्य ॐ भूर्भुवः स्वः गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, धूपं समर्पयामि।

दीपम्

ॐ अग्निर्ज्योतिर्ज्योतिरग्निः स्वाहा सूर्यो ज्योतिर्ज्योतिः सूर्यः स्वाहा। अग्निर्वर्चो ज्योतिर्वर्चः स्वाहा सूर्योवर्चो ज्योतिर्वर्चः स्वाहा। ज्योतिः सूर्यः सूर्यो ज्योतिः स्वाहा॥

मध्यमाङ्गुष्ठयोगेन दीपमुद्रां प्रदर्श्य ॐ भूर्भुवः स्वः गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, दीपं दर्शयामि। हस्तौ प्रक्षाल्य।

नैवेद्यम्

ॐ नाभ्या आसीदन्तरिक्षर्ठ० शीर्ष्णो द्यौः समवर्त्तत।
पद्भ्यां भूमिर्दिशः श्रोत्रात्तथालोकाँ२ अकल्पयन्॥

अनामामूलयोरङ्गुष्ठयोगेन नैवेद्यमुद्रां प्रदर्श्य ग्रासमुद्राः प्रदर्शयेत् तद्यथा—अङ्गुष्ठ-प्रदेशिनीमध्यमाभिः—ॐ प्राणाय स्वाहा॥ १॥ अङ्गुष्ठमध्यमानामिकाभिः—ॐ अपानाय स्वाहा॥ २॥ अङ्गुष्ठानामिकाकनिष्ठिकाभिः—ॐ व्यानाय स्वाहा॥ ३॥ कनिष्ठिकातर्जन्यङ्गुष्ठैः—ॐ समानाय स्वाहा॥ ४॥ साङ्गुष्ठाभिः सवाङ्गुलिभिः—ॐ उदानाय स्वाहा॥ ५॥ इति प्रदर्श्य ॐ भूर्भुवः स्वः गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, नैवेद्यं समर्पयामि। नैवेद्यान्ते आचमनीयं जलं समर्पयामि। मध्ये पानीयं समर्पयामि। उत्तरापोशनं समर्पयामि।

करोद्वर्तनम्

ॐ अर्ठ० शुनाते अर्ठ० शुः पृच्यतां परुषापरुः।
गन्धस्ते सोममवतु मदाय रसो अच्युतः॥

ॐ भूर्भुवः स्वः गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, करोद्वर्तनार्थे गन्धानुलेपनं समर्पयामि।

ताम्बूलम्

ॐ यत्पुरुषेण हविषा देवा यज्ञमतन्वत।
वसन्तोऽस्यासीदाज्यं ग्रीष्मऽइध्मः शरद्धविः॥

ॐ भूर्भुवः स्वः गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, मुखशुद्ध्यर्थं ताम्बूलपत्रं पूगीफलं च समर्पयामि।

ऋतुफलानि

ॐ याः फलिनीर्या अफला अपुष्पा याश्च पुष्पिणीः।
बृहस्पतिप्रसूतास्तानो मुञ्चन्त्वर्ठ० हसः॥

ॐ भूर्भुवः स्वः गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, ऋतुफलानि समर्पयामि।

दक्षिणाम्

ॐ हिरण्यगर्भः समवर्त्तताग्रे भूतस्य जातः पतिरेक आसीत्।
स दाधार पृथिवीं द्यामुतेमां कस्मै देवाय हविषा विधेम॥

ॐ भूर्भुवः स्वः गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, कृतायाः पूजायाः साद्गुण्यार्थे-द्रव्यदक्षिणां समर्पयामि।

कर्पूरनीराजनम्

ॐ आ रात्रि पार्थिवर्ठ० रजः पितुरप्रायि धामभिः।
दिवः सदार्ठ०सि बृहती वि तिष्ठस आ त्वे षं वर्तते तमः॥ १॥

ॐ इदर्ठ० हविः प्रजननं मे अस्तु दशवीरर्ठ० सर्वगणर्ठ० स्वस्तये। आत्मसनि प्रजासनि पशुसनि लोकसन्यभयसनि। अग्निः प्रजां बहुलां मे करोत्वन्नं पयो रेतो अस्मासु धत्त॥ २॥

कदलीगर्भसम्भूतं कर्पूरं तु प्रदीपितम्।
आरार्तिकमहं कुर्वे पश्य मे वरदो भव॥

ॐ भूर्भुवः स्वः गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, कर्पूरनीराजनं समर्पयामि।

पुष्पाञ्जलिम्

ॐ यज्ञेन यज्ञमयजन्त देवास्तानि धर्माणि प्रथमान्यासन्।
ते ह नाकं महिमानः सचन्त यत्र पूर्वे साद्ध्याः सन्ति देवाः॥

ॐ राजाधिराजाय प्रसह्य साहिने नमो वयं वैश्रवणाय कुर्महे। स मे कामान् कामकामाय मह्यम्। कामेश्वरो वैश्रवणो ददातु। कुबेराय वैश्रवणाय महाराजाय नमः॥ ॐ स्वस्ति। साम्राज्यं भौज्यं स्वाराज्यं वैराज्यं पारमेष्ठ्यं राज्यं महाराज्यमाधिपत्यमयं समन्तपर्यायी स्यात्, सार्वभौमः सार्व्वायुष आन्तादापरार्धात्, पृथिव्यै समुद्रपर्यन्ताया एकराडिति॥ तदप्येष श्लोकोऽभिगीतो मरुतः परिवेष्टारो मरुत्तस्यावसन् गृहे। आवीक्षितस्य कामप्रेर्विश्वेदेवाः सभासद इति॥

ॐ विश्वतश्चक्षुरुत विश्वतोमुखो विश्वतोबाहुरुत विश्वतस्पात्।
सं बाहुभ्यां धमति सम्पतत्रैर्द्यावाभूमी जनयन् देव एकः॥

नानासुगन्धिपुष्पाणि यथाकालोद्भवानि च।
पुष्पाञ्जलिर्मयादत्तो गृहाण परमेश्वर॥

ॐ भूर्भुवः स्वः गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, मन्त्रपुष्पाञ्जलिं समर्पयामि।

प्रदक्षिणाम्

ॐ ये तीर्थानि प्रचरन्ति सृकाहस्ता निषङ्गिणः।
तेषार्ठ० सहस्रयोजनेऽव धन्वानि तन्मसि॥

यानि कानि च पापानि ज्ञाताज्ञातकृतानि च।
तानि सर्वाणि नश्यन्ति प्रदक्षिणापदे पदे॥

ॐ भूर्भुवः स्वः गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, प्रदक्षिणां समर्पयामि।

विशेषार्घ्यम्

ताम्रपात्र या सकोरा अथवा दोने में जल, चन्दन, अक्षत, फल, पुष्प, दूर्वा तथा दक्षिणा रखकर बाएँ घुटने को मोड़कर अर्घ्यपात्र को दोनों अंजलि में लेकर आगे दिए हुए श्लोकों का उच्चारण करते हुए विशेषार्घ्य प्रदान करें—

रक्ष रक्ष गणाध्यक्ष रक्ष त्रैलोक्यरक्षक।
भक्तानामभयं कर्ता त्राता भव भवार्णवात्॥ १॥
द्वैमातुर कृपासिन्धो षाण्मातुराग्रज प्रभो।
वरदत्वं वरं देहि वाञ्छितं वाञ्छितार्थदा॥ २॥
अनेन सफलार्घेण फलदोऽस्तु सदा मम।
ॐ भूर्भुवः स्वः गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, विशेषार्घ्यं समर्पयामि।

प्रार्थना

विघ्नेश्वराय वरदाय सुरप्रियाय, लम्बोदराय सकलाय जगद्धिताय।
नागाननाय श्रुतियज्ञ विभूषिताय, गौरीसुताय गणनाथ नमो नमस्ते॥ १॥
भक्तार्तिनाशनपराय गणेश्वराय, सर्वेश्वराय शुभदाय सुरेश्वराय।
विद्याधराय विकटाय च वामनाय, भक्तप्रसन्नवरदाय नमो नमस्ते॥ २॥
नमस्ते ब्रह्मरूपाय विष्णुरूपाय ते नमः।
नमस्ते रुद्ररूपाय करिरूपाय ते नमः॥ ३॥
विश्वरूपस्वरूपाय नमस्ते ब्रह्मचारिणे।
भक्तप्रियाय देवाय नमस्तुभ्यं विनायक!॥ ४॥
लम्बोदर नमस्तुभ्यं सततं मोदकप्रिय।
निर्विघ्नं कुरु मे देव सर्वकार्येषु सर्वदा॥ ५॥
त्वां विघ्नशत्रुदलनेति च सुन्दरेति
भक्तप्रियेति सुखदेति फलप्रदेति।
विद्याप्रदेत्यघहरेति च ये स्तुवन्ति
तेभ्यो गणेश! वरदो भव नित्यमेव॥ ६॥

इति गणेशाम्बिकयोः पूजनं कृत्वा पूर्ववदर्घपात्रे गन्धादि कृत्वा—
ॐ रूपं देहि जयं देहि सौभाग्यं देहि देवि मे।
पुत्रान् देहि धनं देहि सर्वान् कामांश्च देहि मे॥
'ॐ अम्बिकायै नमः' इति विशेषार्घ्यं समर्पयामि। 'अनया पूजया गणेशाम्बिके प्रीयेतां न मम' इति जलं प्रक्षिपेत्। 'आचरितगणेशाम्बिका-पूजनविधौ यन्न्यूनातिरिक्तं तत्परिपूर्णमस्तु।'

कलशपूजनम्

आचार्य निम्न मन्त्र का उच्चारण करते हुए यजमान से जिस स्थान पर कलश स्थापित करवाना हो, वहाँ की भूमि का स्पर्श करवा के वहाँ कुंकुमादि से पवित्र भूमि पर अष्टदलपद्म का निर्माण करावें—**ॐ मही द्यौः पृथिवी च न ऽइमं यज्ञं मिमिक्षताम्। पिपृतान्नो भरीमभिः॥**

यजमान ने भूमि का जहाँ स्पर्श किया हो वहाँ आचार्य एक किलो सप्तधान्य निम्न मन्त्र का उच्चारण करते हुए छोड़वायें—

ॐ ओषधयः समवदन्त सोमेन सह राज्ञा। यस्मै कृणोति ब्राह्मणस्तꣳ राजन्पारयामसि॥

आचार्य धान्य पुञ्ज पर निम्न मन्त्र का उच्चारण करते हुए यजमान से कलश स्थापित करवायें—

ॐ आजिघ्र कलशं मह्या त्वा विशन्त्विन्दवः। पुनरूर्जा निवर्तस्व सा नः सहस्त्रं धुक्ष्वोरुधारा पयस्वती पुनर्माविशताद्रयिः॥

कलश में शुद्ध जल को यजमान से आचार्य निम्न मन्त्र का उच्चारण करते हुए भरवायें—

ॐ वरुणस्योत्तम्भनमसि वरुणस्य स्कम्भसर्जनी स्थो वरुणस्य ऽऋतसदन्यसि वरुणस्य ऽऋतसदनमसि वरुणस्य ऽऋतसदनमासीद॥

आचार्य निम्न मन्त्र का उच्चारण करते हुए यजमान से कलश में गन्ध छोड़वायें—

ॐ त्वां गन्धर्वाअखनंस्त्वामिन्द्रस्त्वां बृहस्पतिः। त्वामोषधे सोमो राजा विद्वान्यक्ष्मादमुच्यत॥

आचार्य कलश में सर्वौषधि निम्न मन्त्र का उच्चारण करते हुए यजमान से छोड़वायें—

ॐ या ओषधीः पूर्वा जाता देवेभ्यस्त्रियुगं पुरा। मनैनु बभ्रूणामहꣳ शतं धामानि सप्त च॥

आचार्य कलश में दूर्वा निम्न मन्त्र का उच्चारण करते हुए यजमान से छोड़वायें—

ॐ काण्डात्काण्डात् प्ररोहन्ती परुषः परुषस्परि। एवा नो दूर्वे प्रतनु सहस्रेण शतेन च॥

आचार्य कलश में पञ्चपल्लव आगे दिए हुए मन्त्र का उच्चारण करते हुए यजमान से छोड़वायें—

ॐ अश्वत्थे वो निषदनं पर्णे वो वसतिष्कृता। गोभाज इत्किलासथ यत्सनवथ पूरुषम्॥

आचार्य निम्न मन्त्र का उच्चारण करते हुए कलश में सप्तमृत्तिका यजमान से छोड़वायें—

ॐ स्योना पृथिवि नो भवानृक्षरा निवेशनी। यच्छा नः शर्म स प्रथाः॥

आचार्य निम्न मन्त्र का उच्चारण करते हुए कलश में पूगीफल यजमान से छोड़वायें—

ॐ याः फलिनीर्या अफला अपुष्पा याश्च पुष्पिणीः। बृहस्पति-प्रसूतास्ता नो मुञ्चन्त्वर्ठ०हसः॥

आचार्य कलश में पञ्चरत्न निम्न मन्त्र का उच्चारण करते हुए यजमान से छोड़वायें—

ॐ परि वाजपतिः कविरग्निर्हव्यान्यक्रमीत्। दधद्रत्नानि दाशुषे॥

आचार्य कलश में स्वर्ण निम्न मन्त्र का उच्चारण करते हुए यजमान से छोड़वायें—

ॐ हिरण्यगर्भः समवर्तताग्रे भूतस्य जातः पतिरेक आसीत्। स दाधार पृथिवीं द्यामुतेमां कस्मै देवाय हविषा विधेम॥

आचार्य आगे दिए हुए मन्त्र का उच्चारण करते हुए यजमान से दो वस्त्रों के द्वारा कलश को चारों ओर से वेष्टित करावें—

ॐ सुजातो ज्योतिषा सह शर्म वरूथमासदत्स्वः। वासो अग्ने विश्वरूपर्ठ० संव्ययस्व विभावसो॥

आचार्य निम्न मन्त्र का उच्चारण करते हुए यजमान से ताँबे के पात्र में अक्षत भरवाकर कलश के ऊपर स्थापित करवायें—

ॐ पूर्णा दर्वि परापत सुपूर्णा पुनरापत। वस्नेव विक्रीणावहा इषमूर्जर्ठ० शतक्रतो॥

आचार्य निम्न मन्त्र का उच्चारण करते हुए कलश के ऊपर अपने अभिमुख लालवस्त्र आदि से वेष्टित नारिकेल फल का स्थापन यजमान से करावें—

ॐ याः फलिनीर्या अफला अपुष्पा याश्च पुष्पिणीः। बृहस्पति-प्रसूतास्ता नो मुञ्चन्त्वर्ठ० हसः॥

आचार्य निम्न मन्त्र का उच्चारण करते हुए स्थापित कलश में अंग के सहित सपरिवार सायुध-सशक्तिक वरुण का आवाहन व स्थापन यजमान से करावें—

ॐ तत्त्वा यामि ब्रह्मणा वन्दमानस्तदाशास्ते यजमानो हविर्भिः। अहेडमानो वरुणेह बोध्युरुशर्ठ० स मा न आयुः प्रमोषीः॥

अस्मिन् कलशे वरुणं साङ्गं सपरिवारं सायुधं सशक्तिक-मावाहयामि स्थापयामि।

'ॐ अप्पतये वरुणाय नमः' इति पञ्चोपचारैर्वरुणं सम्पूज्य ततस्तत्रैव देवता आवाहयेत्—

कलशस्य मुखे विष्णुः कण्ठे रुद्रः समाश्रितः।
मूले त्वस्य स्थितो ब्रह्मा मध्ये मातृगणाः स्मृताः॥ १॥
कुक्षौ तु सागराः सर्वे सप्तद्वीपा वसुन्धरा।
अर्जुनी गोमती चैव चन्द्रभागा सरस्वती॥ २॥
कावेरी कृष्णवेणी च गङ्गा चैव महानदी।
तापी गोदावरी चैव माहेन्द्री नर्मदा तथा॥ ३॥

नदाश्च विविधा जाता नद्यः सर्वास्तथापराः।
पृथिव्यां यानि तीर्थानि कलशस्थानि तानि वै॥ ४॥
सर्वे समुद्राः सरितस्तीर्थानि जलदा नदाः॥ ५॥
ऋग्वेदोऽथ यजुर्वेदः सामवेदो ह्यथर्वणः।
अङ्गैश्च सहिताः सर्वे कलशन्तु समाश्रिताः॥ ६॥
अत्र गायत्री सावित्री शान्तिः पुष्टिकरी तथा।
आयान्तु मम शान्त्यर्थं दुरितक्षयकारिकाः॥ ७॥

कलशेवरुणाद्यावाहितदेवताः सुप्रतिष्ठिता वरदाभवन्तु। ॐ वरुणाद्यावाहितदेवताभ्यो नमः। विष्ण्वाद्यावाहितदेवताभ्यो नमः, इति वा। आसनार्थेऽक्षतान् समर्पयामि। पादयोः पाद्यं समर्पयामि। हस्तयोः अर्घ्यं समर्पयामि। आचमनं समर्पयामि। पञ्चामृतस्नानं समर्पयामि। शुद्धोदकस्नानं समर्पयामि। स्नानाङ्गाचमनं समर्पयामि। वस्त्रं समर्पयामि। आचमनं समर्पयामि। यज्ञोपवीतं समर्पयामि। आचमनं समर्पयामि। उपवस्त्रं समर्पयामि। आचमनं समर्पयामि। गन्धं समर्पयामि। अक्षतान् समर्पयामि। पुष्पमालां समर्पयामि। नानापरिमलद्रव्याणि समर्पयामि। धूपमाघ्रापयामि। दीपं दर्शयामि। हस्तप्रक्षालनम्। नैवेद्यं समर्पयामि। आचमनीयं समर्पयामि। मध्ये पानीयम्। उरत्तापोशन च समर्पयामि। ताम्बूलं समर्पयामि। पूगीफलं समर्पयामि। कृतायाः पूजायाः साद्गुण्यार्थे द्रव्यदक्षिणां समर्पयामि। आर्तिक्यं समर्पयामि। मन्त्रपुष्पाञ्जलिं समर्पयामि। प्रदक्षिणां समर्पयामि। नमस्कारं समर्पयामि। अनया पूजया वरुणाद्यावाहितदेवताः प्रीयन्तां न मम।

यजमानः स्वदक्षिणहस्ते अक्षतान् गृहीत्वा, ॐ मनो जूतिर्जुषतामाज्यस्य बृहस्पतिर्यज्ञमिमं तनोत्वरिष्टं यज्ञठं० समिमं दधातु। विश्वेदेवास इह मादयन्तामों ३ँप्रतिष्ठ॥ इति मन्त्रेण क्षिपेत्।

कलशप्रार्थना

देवदानवसंवादे मथ्यमाने महोदधौ।
उत्पन्नोऽसि तदा कुम्भ विधृतो विष्णुना स्वयम्॥ १॥
त्वत्तोये सर्वतीर्थानि देवाः सर्वे त्वयि स्थिताः।
त्वयि तिष्ठन्ति भूतानि त्वयि प्राणाः प्रतिष्ठिताः॥ २॥
शिवः स्वयं त्वमेवासि विष्णुस्त्वं च प्रजापतिः।
आदित्या वसवो रुद्रा विश्वेदेवाः सपैतृकाः॥ ३॥
त्वयि तिष्ठन्ति सर्वेऽपि यतः कामफलप्रदाः।
त्वत्प्रसादादिमं यज्ञं कर्तुमीहे जलोद्भव!।
सान्निध्यं कुरु मे देव प्रसन्नो भव सर्वदा॥ ४॥
नमो नमस्ते स्फटिकप्रभाय सुश्वेतहाराय सुमङ्गलाय।
सुपाशहस्ताय झषासनाय जलाधिनाथाय नमो नमस्ते॥ ५॥
पाशपाणे नमस्तुभ्यं पद्मिनीजीवनायक!।
पुण्याहवाचनं यावत् तावत्त्वं सन्निधौ भव॥ ६॥

स्वस्तिपुण्याहवाचनम्

यजमान अपने दोनों घुटनों को पृथ्वी पर मोड़कर कमल के तुल्य अपनी अञ्जली को सिर पर रखकर अपने दायें हाथ में स्वर्णादि के जल से पूर्ण कलश को अपने मस्तक से स्पर्श कर आचार्य सहित ब्राह्मणों से आशीर्वाद प्राप्त करने के लिये निम्न श्लोक का उच्चारण करे—

दीर्घा नागा नद्यो गिरयस्त्रीणि विष्णुपदानि च।
तेनायुःप्रमाणेन पुण्यं पुण्याहं दीर्घमायुरस्तु॥

विप्राः—अस्तु दीर्घमायुः।

ॐ त्रीणि पदा विचक्रमे विष्णुर्गोपा ऽअदाब्भ्यः। अतो धर्म्माणि धारयन्॥

तेनायुः प्रमाणेन पुण्यं पुण्याहं दीर्घमायुरस्तु—इति यजमानः।
पुण्यं पुण्याहं दीर्घमायुरस्तु—इति द्विजाः।
एवं द्विरपरं शिरसि भूमौ निधाय।

यजमानः ब्राह्मणानां हस्ते—शिवा आपः सन्तु इति दद्यात्। सन्तु शिवा आपः। इति ब्राह्मणाः। एवं सर्वत्र वचनोत्तरं दद्युः।

यजमानः—सौमनस्यमस्तु इति पुष्पम्। विप्राः—अस्तु सौमनस्यम्। यजमानः—'अक्षतं चाऽरिष्टं चाऽस्तु' इत्यक्षतान्। विप्राः—अस्त्वक्षतमरिष्टं च। यजमानः—गन्धाः पान्तु इति गन्धम्। विप्राः—सौमङ्गल्यं चाऽस्तु।

यजमानः—अक्षताः पान्तु। विप्राः—आयुष्यमस्तु। यजमानः—पुष्पाणि पान्तु। विप्राः—सौश्रियमस्तु। यजमानः—सफलताम्बूलानि पान्तु। विप्राः—ऐश्वर्यमस्तु।

यजमानः—दक्षिणाः पान्तु। विप्राः—बहुदेयं चास्तु। यजमानः—पुनरत्राऽऽपः पान्तु। विप्राः—स्वर्चितमस्तु। यजमानः—दीर्घमायुः शान्तिः पुष्टिस्तुष्टिः श्रीर्यशो विद्या विनयो वित्तं बहुपुत्रं बहुधनं चाऽऽयुष्यं चाऽस्तु। विप्राः—तथाऽस्तु। यजमानः—यं कृत्वा सर्ववेदयज्ञक्रियाकरणकर्मारम्भाः शुभाः शोभनाः प्रवर्तन्ते तमहमोङ्कारमादिं कृत्वा, ऋग्यजुः सामाऽथर्वाऽऽशीर्वचनं बहुऋषिमतं समनुज्ञातं भवद्भिरनुज्ञातः पुण्यं पुण्याहं वाचयिष्ये। विप्राः—वाच्यताम्।

करोतु स्वस्ति ते ब्रह्मा स्वस्ति चाऽपि द्विजातयः।
सरीसृपाश्च ये श्रेष्ठास्तेभ्यस्ते स्वस्ति सर्वदा॥ १॥
ययातिर्नहुषश्चैव धुन्धुमारो भगीरथः।
तुभ्यं राजर्षयः सर्वे स्वस्ति कुर्वन्तु नित्यशः॥ २॥
स्वस्ति तेऽस्तु द्विपादेभ्यश्चतुष्पादेभ्य एव च।
स्वस्त्यस्त्वापादकेभ्यश्च सर्वेभ्यः स्वस्ति ते सदा॥ ३॥
स्वाहा स्वधा शची चैव स्वस्ति कुर्वन्तु ते सदा।
करोतु स्वस्ति वेदादिर्नित्यं तव महामखे॥ ४॥

लक्ष्मीररुन्धती चैव कुरुतां स्वस्ति तेऽनघ।
असितो देवलश्चैव विश्वामित्रस्तथाऽङ्गिराः॥५॥
वशिष्ठः कश्यपश्चैव स्वस्ति कुर्वन्तु ते सदा।
धाता विधाता लोकेशो दिशश्च सदिगीश्वराः॥६॥
स्वस्ति तेऽद्य प्रयच्छन्तु कार्त्तिकेयश्च षण्मुखः।
विवस्वान् भगवान् स्वस्ति करोतु तव सर्वदा॥७॥
दिग्गजाश्चैव चत्वारः क्षितिश्च गगनं ग्रहाः।
अधस्ताद् धरणीं चाऽसौ नागो धारयते हि यः॥८॥
शेषश्च पन्नगश्रेष्ठः स्वस्ति तुभ्यं प्रयच्छतु।

ॐ द्रविणोदाः पिपीषति जुहोत प्प्रचतिष्ठत। नेष्टादृतुभिरिष्यत॥१॥ सविता त्त्वा सवानार्ठ० सुवतामग्निर्गृहपतीनार्ठ० सोमो वनस्पतीनाम्। बृहस्पतिर्वाच ऽइन्द्रो ज्यैष्ठाय रुद्रः पशुभ्यो मित्रः सत्त्यो वरुणो धर्मपतीनाम्॥२॥ न तद्रक्षार्ठ०सि न पिशाचास्तरन्ति देवानामोजः प्रथमजर्ठ० ह्येतत्। यो बिभर्ति दाक्षायणर्ठ० हिरण्यर्ठ० स देवेषु कृणुते दीर्घमायुः स मनुष्येषु कृणुते दीर्घमायुः॥३॥ उच्चा ते जातमन्धसो दिवि सद्भूम्याददे। उग्रर्ठ० शर्म्म महि श्रवः॥४॥ उपास्मै गायता नरः पवमानायेन्दवे। अभि देवाँ२॥ इयक्षते॥ इत्येता ऋचः पुण्याहे ब्रूयात्॥५॥

व्रत-जप-नियम-तपः-स्वाध्याय-क्रतु-शम-दम-दया-दान-विशिष्टानां सर्वेषां ब्राह्मणानां मनः समाधीयताम्। इति यजमानः। समाहितमनसः स्मः इति विप्राः। प्रसीदन्तु भवन्तः इति यजमानः। प्रसन्नाः स्मः इति विप्राः।

ततो यजमानःऽशक्तौ सति आचार्यो ब्रूयात्—ॐ शान्तिरस्तु इत्यादि। 'अस्त्वि'ति द्विजाः। एवं वचनं प्रतिवचनं सर्वत्र दद्युः। ॐ शान्तिरस्तु। ॐ पुष्टिरस्तु। ॐ तुष्टिरस्तु। ॐ वृद्धिरस्तु। ॐ अविघ्नमस्तु।

ॐ आयुष्यमस्तु। ॐ आरोग्यमस्तु। ॐ शिवमस्तु। ॐ शिवं कर्माऽस्तु। ॐ कर्मसमृद्धिरस्तु। ॐ धर्मसमृद्धिरस्तु। ॐ वेदसमृद्धिरस्तु। ॐ शास्त्रसमृद्धिरस्तु। ॐ धनधान्यसमृद्धिरस्तु। ॐ इष्टसम्पदस्तु। (बहिः) ॐ अरिष्टनिरसनमस्तु। यत्पापं रोगोऽशुभमकल्याणं तद्दूरे प्रतिहत-मस्तु। (अन्तः) ॐ यच्छ्रेयस्तदस्तु। उत्तरे कर्मणि निर्विघ्नमस्तु। उत्तरोत्तरमहरहरभिवृद्धिरस्तु। उत्तरोत्तराः क्रियाः शुभाः शोभनाः सम्पद्यन्ताम्। ॐ तिथिकरण-मुहूर्त-नक्षत्र-ग्रहलग्नाधिदेवताः प्रीयन्ताम्। ॐ तिथि-करणे स-मुहूर्ते स-नक्षत्रे स-ग्रहे स-लग्ने साधिदैवते प्रीयेताम्। ॐ दुर्गा पाञ्चाल्यौ प्रीयेताम्। ॐ अग्निपुरोगा विश्वेदेवाः प्रीयन्ताम्। ॐ इन्द्रपुरोगा मरुद्गणाः प्रीयन्ताम्। ॐ वसिष्ठपुरोगा ऋषिगणाः प्रीयन्ताम्। ॐ माहेश्वरीपुरोगा मातरः प्रीयन्ताम्। ॐ अरुन्धतीपुरोगा एकपत्न्यः प्रीयन्ताम्। ॐ विष्णुपुरोगाः सर्वे देवाः प्रीयन्ताम्। ॐ ब्रह्मपुरोगाः सर्वे प्रीयन्ताम्। श्रीसरस्वत्यौ प्रीयेताम्। ॐ श्रद्धामेधे प्रीयेताम्। ॐ भगवती कात्यायनी प्रीयताम्। ॐ भगवती माहेश्वरी प्रीयताम्। ॐ भगवती ऋद्धिकरी प्रीयताम्। ॐ भगवती वृद्धिकरी प्रीयताम्। ॐ भगवती पुष्टिकरी प्रीयताम्। ॐ भगवती तुष्टिकरी प्रीयताम्। ॐ भगवन्तौ विघ्नविनायकौ प्रीयेताम्। ॐ सर्वा कुलदेवताः प्रीयन्ताम्। ॐ सर्वा ग्रामदेवताः प्रीयन्ताम्। ॐ सर्वा इष्टदेवताः प्रीयन्ताम्। (बहिः) ॐ हताश्च ब्रह्मद्विषः। ॐ हताश्च परिपन्थिनः। ॐ हताश्च विघ्नकर्तारः। ॐ शत्रवः पराभवं यान्तु। ॐ शाम्यन्तु घोराणि। ॐ शाम्यन्तु पापानि। ॐ शाम्यन्त्वीतयः। ॐ शाम्यन्तूपद्रवा। (अन्तः) ॐ शुभानि वर्द्धन्ताम्। ॐ शिवा आपः सन्तु। ॐ शिवा ऋतवः सन्तु। ॐ शिवा अग्नयः सन्तु। ॐ शिवा आहुतयः सन्तु। ॐ शिवा वनस्पतयः सन्तु। ॐ शिवा अतिथयः सन्तु। ॐ अहोरात्रे शिवे स्याताम्।

ॐ निकामे निकामे नः पर्जन्यो वर्षतु फलवत्यो न ओषधयः पच्यन्तां। योगक्षेमो नः कल्पताम्।

शुक्राङ्गारक बुध-बृहस्पति-शनैश्चर-राहु-केतु-सोमादित्यरूपाः सर्वे ग्रहाः प्रीयन्ताम्। ॐ भगवान् नारायणः प्रीयताम्। ॐ भगवान् पर्जन्यः प्रीयताम्। ॐ भगवान् स्वामी महासेनः प्रीयन्ताम्। पुरोऽनुवाक्या यत्पुण्यं तदस्तु। याज्यया यत्पुण्यं तदस्तु। वषट् कारेण यत्पुण्यं तदस्तु। प्रातः सूर्योदये यत्पुण्यं तदस्तु। एतत्कल्याणयुक्तं पुण्यं पुण्याहं वाचयिष्ये, इति यजमानः। ॐ वाच्यतामि 'ति ब्राह्मणाः।

ॐ ब्राह्मं पुण्यमहर्यच्च सृष्ट्युत्पादनकारकम्।
वेदवृक्षोद्भवं नित्यं तत्पुण्याहं ब्रुवन्तु नः॥

भो ब्राह्मणाः! मम सकुटुम्बस्य सपरिवारस्य धूमावतीप्रतिष्ठा-कर्मणः पुण्याहं भवन्तो ब्रुवन्तु।

इति क्रमेण मन्द्रमध्यमोच्चस्वरेणत्रिर्ब्रूयात्।

ॐ पुण्याहम्, ॐ पुण्याहम्, ॐ पुण्याहम्। इति ब्राह्मणाः।

ॐ अस्य कर्मणः पुण्याहं भवन्तो ब्रुवन्तु इति यजमानः। ॐ पुण्याहम्, ॐ पुण्याहम्, ॐ पुण्याहम्। इति ब्राह्मणाः एवं वचन प्रतिवचनं च त्रिःपठित्वा।

ॐ पुनन्तु मा देवजनाः पुनन्तु मनसाधियः। पुनन्तु विश्वाभूतानि जातवेदः पुनीहि मा॥ इति ब्राह्मणाः।

ॐ पृथिव्ययामुद्धृतायान्तु यत्कल्याणं पुरा कृतम्।
ऋषिभिः सिद्धगन्धर्वैस्तत्कल्याणं ब्रुवन्तु नः॥

भो ब्राह्मणाः! मम सकुटुम्बस्य सपरिवारस्य धूमावतीप्रतिष्ठाकर्मणः कल्याणं भवन्तो ब्रुवन्तु। इति क्रमेण मन्द्रमध्यमोच्चस्वरेणत्रिर्ब्रूयात्।

ॐ कल्याणम्, ॐ कल्याणम्, ॐ कल्याणम्।

ॐ यथेमां वाचं कल्याणीमावदानि जनेभ्यः। ब्रह्म राजन्याभ्यार्ठ० शूद्राय चार्याय च स्वाय चारणाय च। प्रियो देवानां दक्षिणायै दातुरिह भूयासमयं मे कामः समृद्ध्यतामुप मादो नमतु॥ इति ब्राह्मणाः पठेयुः।

सागरस्य तु या ऋद्धिर्महालक्ष्म्यादिभिः कृता।
सम्पूर्णा सुप्रभावा च तां च ऋद्धिं ब्रुवन्तु नः॥

भो ब्राह्मणाः! मम सकुटुम्बस्य सपरिवारस्य धूमावतीप्रतिष्ठा-कर्मणः ऋद्धिं भवन्तो ब्रुवन्तु। इति क्रमेण मन्द्रमध्यमोच्चस्वरेणत्रिर्ब्रूयात्।

ॐ कर्म ऋध्यताम् इति त्रिःब्रूयात्। इति ब्राह्मणाः।

ॐ सत्रस्य ऽऋद्धिरस्यगन्मज्योतिरमृताऽअभूम। दिवं पृथिव्या ऽअद्ध्यारु हामाविदाम देवान्त्स्वर्ज्योतिः॥

स्वस्तिस्तु याऽविनाशाख्या पुण्यकल्याणवृद्धिदा।
विनायकप्रिया नित्यं तां च स्वस्तिं ब्रुवन्तु नः॥

भो ब्राह्मणाः! मम सकुटुम्बस्य सपरिवारस्य धूमावतीप्रतिष्ठा-कर्मणे स्वस्तिं भवन्तो ब्रुवन्तु। इति क्रमेण मन्द्रमध्यमोच्चस्वरेणत्रिर्ब्रूयात्।

ॐ आयुष्मते स्वस्ति। इति तथैव त्रिर्विप्राः ब्रूयुः।

ॐ स्वस्ति न ऽइन्द्रो वृद्धश्रवाः स्वस्ति नः पूषा विश्ववेदाः। स्वस्ति नस्ताक्ष्र्यो ऽअरिष्टनेमिः स्वस्ति नो बृहस्पतिर्दधातु॥

समुद्रमथनाज्जाता जगदानन्दकारिका।
हरिप्रिया च माङ्गल्या तां श्रियं च ब्रुवन्तु नः॥

भो ब्राह्मणाः! मम सकुटुम्बस्य सपरिवारस्य धूमावतीप्रतिष्ठा-कर्मणः श्रीरस्त्विति भवन्तो ब्रुवन्तु। इति क्रमेण मन्द्रमध्यमोच्चस्वरेणत्रिर्ब्रूयात्।

ॐ अस्तु श्रीः, ॐ अस्तु श्रीः, ॐ अस्तु श्रीः। इति तथैव त्रिर्विप्राः ब्रूयुः।

ॐ श्रीश्च ते लक्ष्मीश्च पत्न्यावहोरात्रे पार्श्वे नक्षत्राणि रूपमश्विनौ व्यात्तम्। इष्णन्निषाणामुं म ऽइषाण सर्वलोकं म ऽइषाण॥

मृकण्डसूनोरायुर्यद् ध्रुवलोमशयोस्तथा।
आयुषा तेन संयुक्ता जीवेम शरदः शतम्॥

इति यजमानः। शतं जीवन्तु भवन्तः—इति ब्राह्मणाः।

ॐ शतमिन्नु शरदो ऽअन्ति देवा यत्रा नश्चक्रा जरसं तनूनाम्। पुत्रासो यत्र पितरो भवन्ति मा नो मध्यारीरिषतायुर्गन्तोः॥

शिवगौरीविवाहे या या श्रीरामे नृपात्मजे।
धनदस्य गृहे या श्रीरस्माकं साऽस्तु सद्मनि॥

इति यजमानः। ॐ अस्तु श्रीः इति ब्राह्मणाः।

ॐ मनसः काममाकूतिं वाचः सत्यमशीय। पशूनार्ठ० रूपमन्नस्य रसो यशः श्रीः श्रयतां मयि स्वाहा॥

प्रजापतिर्लोकपालो धाता ब्रह्मा च देवराट्।
भगवाञ्छाश्वतो नित्यं स नो रक्षन्तु सर्वतः॥

इति यजमानः—ॐ भगवान् प्रजापतिः प्रीयताम्। इति ब्राह्मणाः।

ॐ प्प्रजापते न त्वदेतान्यन्यो विश्वा रूपाणि परि ता बभूव। यत्कामास्ते जुहुमस्तन्नो अस्तु वयर्ठ०स्याम पतयो रयीणाम्॥

आयुष्मते स्वस्तिमते यजमानाय दाशुषे।
श्रिये रत्नाशिषः सन्तु ऋत्विग्भिर्वेदपारगैः॥

इति यजमानः। आयुष्मते स्वस्ति। इति विप्राः ब्रूयुः।

ॐ प्रति पन्था म पद्महि स्वस्ति गामनेहसम्। येन विश्वाः परि द्विषो वृणक्ति विन्दते वसु॥

ॐ स्वस्तिवाचनसमृद्धिरस्तु। इति विप्राः ब्रूयुः।

यजमानः 'कृतैतत्पुण्याहवाचनकर्मणः साङ्गतासिद्ध्यर्थं तत्सम्पूर्णफल-प्राप्त्यर्थं च पुण्याहवाचकेभ्यो ब्राह्मणेभ्यो विभज्य मनसोदिष्टां दक्षिणां दातुमहमुत्सृज्ये'। इति दक्षिणा दद्यात्। 'अस्तु' इति ब्राह्मणाः ब्रूयुः। ततः यजमानः 'अस्मिन् पुण्याहवाचने न्यूनातिरिक्तो यो विधिः स उपविष्टब्राह्मणानां वचनाच्छ्रीमहागणपतिप्रसादाच्च परिपूर्णोऽस्तु' इति वदेत्। 'अस्तु परिपूर्णः' इति ब्राह्मणा ब्रूयुः। अनेन पुण्याहवाचनेन प्रजापतिः प्रीयताम्।

अभिषेकः

उत्तरमुख (पश्चिममुख) ऋत्विक् वरुण कलश से कुछ जल दूसरे पात्र में लेकर यजमान और उसके बायीं ओर बैठी हुई उसकी पत्नी का निम्न मन्त्रों का उच्चारण करते हुए पञ्चपल्लव और दूर्वा से जल छिड़ककर अभिषेक करें—

ॐ देवस्य त्वा सवितुः प्रसवेऽश्विनोर्बाहुभ्यां पूष्णो हस्ताभ्याम्। सरस्वत्यै वाचो यन्तुर्यन्त्रिये दधामि बृहस्पतेष्ट्वा साम्राज्येनाभिषिञ्चाम्यसौ॥ १॥

पयः पृथिव्यां पय ओषधीषुपयो दिव्यन्तरिक्षे पयो धाः ॥ पयस्वतीः प्रदिशः सन्तु मह्यम्॥ २॥

पञ्चनद्यः सरस्वतीमपियन्ति सस्रोतसः। सरस्वती तु पञ्चधा सो देशे भवत्सरित्॥ ३॥

आपो हि ष्ठा मयोभुवस्तान ऽऊर्जे दधातन। महे रणाय चक्षसे॥ ४॥

यो वः शिवतमो रसस्तस्य भाजयतेह नः। उशतीरिव मातरः ॥ ५॥

तस्मा ऽअरं गमाम वो यस्य क्षयाय जिन्वथ। आपो जनयथा च नः ॥ ६॥

द्यौः शान्तिरन्तरिक्षꣳ शान्तिः पृथिवी शान्तिरापः शान्तिरोषधयः शान्तिः। वनस्पतयः शान्तिर्विश्वे देवाः शान्तिर्ब्रह्म शान्तिः सर्वꣳ शान्तिः शान्तिरेवशान्तिः सा मा शान्तिरेधि॥ ७॥

यतोयतः समीहसे ततो नो अभयं कुरु। शन्नः कुरु प्रजाभ्यो भयं नः पशुभ्यः ॥ ८॥

इत्यभिषिच्य—'अमृताभिषेकोऽस्तु' इति वदेयुः ॥ दक्षिणादानम्—यजमानः दक्षिणहस्ते जलाऽक्षत-द्रव्यं चादाय, संकल्पं कुर्यात्—कृतस्याभिषेककर्मणः समृद्ध्यर्थं दक्षिणां दातुमहमुत्सृज्ये इति दद्यात्। ततो द्विराचामेत्—पत्नी च सकृदाचम्य दक्षिणत उपविशेत्।

षोडशमातृकापूजनम्

संकल्पः—देशकालौ सङ्कीर्त्य 'करिष्यमाण-धूमावतीप्रतिष्ठा-कर्माङ्गत्वेन षोडशमातृकापूजनं करिष्ये।'

अग्निकोण में लकड़ी के पीढ़े पर पश्चिम से पूर्व या दक्षिण से उत्तर दिशा तक सोलह स्थानों पर अक्षत की ढेरी पर गणेशजी से प्रारम्भ कर तुष्टि एवं कुलदेवी पर्यन्त मातृका का स्थापन निम्न क्रम द्वारा करें—

गणेश—ॐ गणानां त्वा गणपतिर्ठ० हवामहे प्रियाणां त्वा प्रियपतिर्ठ० हवामहे निधीनान्त्वा निधिपतिर्ठ० हवामहे वसो मम। आहमजानि गर्भधमा त्वमजासि गर्भधम्॥

समीपे मातृवर्गस्य सर्वविघ्नहरं सदा।
त्रैलोक्यवरदं देवं गणेशं स्थापयाम्यहम्॥

ॐ भूर्भुवः स्वः गणपतये नमः गणपतिमावाहयामि स्थापयामि॥ १॥

गौरी—ॐ आयङ्गौः पृश्निरक्रमीदसदन्मातरम्पुरः। पितरञ्चप्रयन्त्स्वः॥

हेमाद्रितनयां देवीं वरदां भैरवप्रियाम्।
लम्बोदरस्य जननीं गौरीमावाहयाम्यहम्॥

ॐ भूर्भुवः स्वः गौर्यै नमः गौरीमावाहयामि स्थापयामि॥ २॥

पद्मा—ॐ हिरण्यरूपाऽउषसो विरोक ऽउभाविन्द्राऽ उदिथः सूर्यश्च। आरोहतं वरुणमित्रगर्तन्ततश्चक्षाथामदितिन्दितिञ्च मित्रोसि वरुणोसि॥

पद्मिनीं पद्मवदनां पद्मनाभोपरिस्थिताम्।
जगत्प्रियां पद्मवासां पद्मामावाहयाम्यहम्॥

ॐ भूर्भुवः स्वः पद्मायै नमः। पद्मामावाहयामि स्थापयामि॥ ३॥

शची—ॐ निवेशनः सङ्गमनोवसूनां विश्वारूपाभिचष्टे शचीभिः। देवऽइवसवितासत्यधर्म्मेन्द्रो न तस्थौ समरेपथीनाम्॥

दिव्यरूपां विशालाक्षीं शुचिमण्डलधारिणीम्।
रत्नमुक्ताद्यलङ्कारां शचीमावाहयाम्यहम्॥

ॐ भूर्भुवः स्वः शच्यै नमः शचीमावाहयामि स्थापयामि॥ ४॥

मेधा—ॐ मेधां मे वरुणो ददातु मेधामग्निः प्रजापतिः। मेधामिन्द्रश्च वायुश्चमेधान्धाता ददातु मे स्वाहा॥

विश्वस्मिन् भूरिवरदां जरां निर्जरसेविताम्।
बुद्धिप्रबोधिनीं सौम्यां मेधामावाहयाम्यहम्॥

ॐ भूर्भुवः स्वः मेधायै नमः मेधामावाहयामि स्थापयामि॥ ५॥

सावित्री—ॐ सवितात्त्वासवानाॅठ० सुवतामग्निगृर्हपतीनाॅठ० सोमो वनस्पतीनाम्। बृहस्पतिर्वाचऽइन्द्रो ज्यैष्ठ्याय रुद्रःपशुभ्यो मित्रः सत्योवरुणा-धर्मपतीनाम्॥

जगत्सृष्टिकरीं धात्रीं देवीं प्रणवमातृकाम्।
वेदगर्भां यज्ञमयीं सावित्रीं स्थापयाम्यहम्॥

ॐ भूर्भुवः स्वः सावित्र्यै नमः सावित्रीमावाहयामि स्थापयामि॥ ६॥

विजया—ॐ विज्यन्धनुः कपर्दिनो विशल्योबाणवाँ२उत। अनेशन्न-स्ययाऽइषवऽआभुरस्य निषङ्गधिः।

सर्वास्त्रधारिणीं देवीं सर्वाभरणभूषिताम्।
सर्वदेवनुतां ध्यातां विजयां स्थापयाम्यहम्॥

ॐ भूर्भुवः स्वः विजयायै नमः विजयामावाहयामि स्थापयामि॥ ७॥

जया—ॐ बह्वीनाम्पिताबहुरस्य पुत्रश्चिश्चाकृणोति समनागत्य। इषुधिः सङ्काः पृतनाश्च सर्वाः पृष्ठे निनद्धो जयतिप्रसूतः॥

सुरारिमथिनीं देवीं देवानामभयप्रदाम्।
त्रैलोक्यवन्दितां देवीं जयामावाहयाम्यहम्॥

ॐ भूर्भुवः स्वः जयायै नमः जयामावाहयामि स्थापयामि॥ ८॥

देवसेना—ॐ इन्द्रऽआसान्नेता बृहस्पतिर्दक्षिणायज्ञः पुरऽएतु सोमः। देवसेनानामभिभञ्जतीनाञ्जयन्तीनाम्मरुतोयन्त्वग्ग्रम्॥

मयूरवाहनां देवीं खड्गशक्तिधनुर्धराम्।
आवाहये देवसेनां तारकासुरमर्दिनीम्॥

ॐ भूर्भुवः स्वः देवसेनायै नमः देवसेनामावाहयामि स्थापयामि॥ ९॥

स्वधा—ॐ पितृभ्यः स्वधायिभ्यः स्वधा नमः पितामहेभ्यः स्वधायिभ्यः स्वधा नमः प्रपितामहेभ्यः स्वधायिभ्यः स्वधा नमः। अक्षन्पितरो मीमदन्त पितरोतीतृपन्त पितरः पितरः शुन्धध्वम्॥

कव्यमादाय सततं पितृभ्यो या प्रयच्छति।
पितृलोकार्चितां देवीं स्वधामावाहयाम्यहम्॥

ॐ भूर्भुवः स्वः स्वधायै नमः स्वधामावाहयामि स्थापयामि॥ १०॥

स्वाहा—ॐ स्वाहा प्राणेभ्यः साधिपतिकेभ्यः पृथिव्यै स्वाहाग्नये स्वाहान्तरिक्षाय स्वाहा वायवे स्वाहा॥

हविर्गृहीत्वा सततं देवेभ्यो या प्रयच्छति।
तां दिव्यरूपां वरदां स्वाहामावाहयाम्यहम्॥

ॐ भूर्भुवः स्वः स्वाहायै नमः स्वाहामावाहयामि स्थापयामि॥ ११॥

मातृ—ॐ आपो अस्मान्मातरः शुन्धयन्तु घृतेन नो घृतप्वः पुनन्तु॥ विश्वꣳहि रिप्रम्प्रवहन्ति देवीरुदिदाभ्यः शुचिरापूतऽएमि। दीक्षातपसोस्तनूरसि तान्त्वाशिवाꣳ शग्माम्परिदधे भद्रं वर्णं पुष्यन्॥

आवाहयाम्यहं मातृः सकला लोकपूजिताः।
सर्वकल्याणरूपिण्यो वरदा दिव्यभूषिताः॥

ॐ भूर्भुवः स्वः मातृभ्यो नमः मातृमावाहयामि स्थापयामि॥ १२॥

लोकमाता—ॐ रयिश्च मे रायश्च मे पुष्टञ्च मे पुष्टिश्च मे विभुच मे पूर्णञ्च मेपूर्णतरञ्च मे कुयवञ्च मे क्षितञ्च मे न्नञ्च मे क्षुच्च मे यज्ञेन कल्पन्ताम्॥

आवाहये लोकमातृर्जयन्तीप्रमुखाः शुभाः।
नानाभीष्टप्रदाः शान्ताः सर्वलोकहितावहाः॥

ॐ भूर्भुवः स्वः लोकमातृभ्यो नमः लोकमातृः आवाहयामि स्थापयामि॥ १३॥

धृति—ॐ यत्प्रज्ञानमुत चेतो धृतिश्च यज्योतिरन्तर मृतं प्रजासु। यस्मान्न ऋते किंचन कर्म क्रियते तन्मे मनः शिवसङ्कल्पमस्तु॥

सर्वहर्षकरीं देवीं भक्तानामभयप्रदाम्।
हर्षोत्फुल्लास्यकमलां हृष्टिमावाहयाम्यहम्॥

ॐ भूर्भुवः स्वः धृत्यै नमः धृतिमावाहयामि स्थापयामि॥ १४॥

पुष्टि—ॐ त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्द्धनम्। उर्वारुकमिवबन्धनान्मृत्योर्मुक्षीयमामृतात्॥

पोषयन्तीं जगत्सर्वं शिवां सर्वार्थसाधिकाम्।
बहुपुष्टिकरीं देवीं पुष्टिमावाहयाम्यहम्॥

ॐ भूर्भुवः स्वः पुष्ट्यै नमः पुष्टिमावाहयामि स्थापयामि॥ १५॥

तुष्टि—ॐ अङ्गान्यात्मन्भिषजा तदश्विनात्मानमङ्गैः समधात् सरस्वती। इन्द्रस्य रूपर्ठ० शतमानमायुश्चन्द्रेण ज्योतिरमृतन्दधानाः॥

आवाहयामि सन्तुष्टिं सूक्ष्मवस्त्रान्वितां शुभाम्।
सन्तोषभावयित्रीं च रक्षन्तीमध्वरं शुभम्॥

ॐ भूर्भुवः स्वः तुष्ट्यै नमः तुष्टिमावाहयामि स्थापयामि॥ १६॥

आत्मनः—ॐ प्प्राणाय स्वाहाऽपानाय स्वाहा व्यानाय स्वाहा चक्षुषे स्वाहा श्रोत्राय स्वाहा वाचे स्वाहा मनसे स्वाहा॥

आत्मनो देवतां देवीमैश्वर्यसुखदायिनीम्।
वंशवृद्धिकरीं नित्यामाह्वये च कुलाम्बिकाम्॥

ॐ भूर्भुवः स्वः अमुकनाम्न्यै आत्मनः कुलदेवतायै नमः, अमुकनाम्नीमात्मनः कुलदेवतामावाहयामि स्थापयामि॥ १७॥

गौरी पद्मा शची मेधा सावित्री विजया जया।
देवसेना स्वधा स्वाहा मातरो लोकमातरः॥

हृष्टिः पुष्टिस्तथा तुष्टिरात्मनः कुलदेवता।
गणेशेनाधिका ह्येता वृद्धौ पूज्यास्तु षोडश॥
'गौर्यादिषोडशमातृभ्योनमः' इत्यावाह्य।

ॐ मनो जूतिर्जुषतामाज्यस्य बृहस्पतिर्यज्ञमिमं तनोत्वरिष्टं यज्ञठं० समिमं द धातु। विश्वेदेवास इह मादयन्तामों ३ँप्रतिष्ठ॥ इति मन्त्रेण प्रतिष्ठाप्य षोडशभिरुपचारैः पूजनं कुर्यात्। ततः—

ॐ आयुरारोग्यमैश्वर्यं ददध्वं मातरो मम।
निर्विघ्नं सर्वकार्येषु कुरुध्वं सगणाधिपाः॥

इति नारिकेलफलं समर्प्य कृताञ्जलिर्भूत्वा गणेशपूर्वक-गौर्यादिषोडशमातृणां पूजनविधौ यन्न्यूनमतिरिक्तं वा तत्सर्वं मातृणां प्रसादात्परिपूर्णमस्तु। 'अनया पूजया सगणेशगौर्यादिषोडशमातरः प्रीयन्ताम्' इति वदेत्। पश्चादर्घपात्रे जलं प्रक्षिपेत्।

वसोर्द्धारापूजनम्

संकल्पः—देशकालौ सङ्कीर्त्य 'करिष्यमाण-धूमावतीप्रतिष्ठा-कर्माङ्गत्वेन वसोर्द्धारापूजनं करिष्ये।'

आचार्य अग्निकोण में काष्ठ के पीढ़े पर सफेद वस्त्र बिछाकर मौली से उसका बन्धन करें, फिर रोली के द्वारा क्रम से ऊपर से नीचे तक एक, दो, तीन, चार, पाँच, छः तथा सात बिन्दु बनावें। उन बिन्दुओं के ऊपरी भाग में 'श्रीः' लिखे, पुनः उसके नीचे की सात बिन्दुओं में—

ॐ वसोः पवित्रमसि शतधारं वसोः पवित्रमसि सहस्रधारम्। देवस्त्वा सविता पुनातु वसोः पवित्रेण शतधारेण सुप्वा कामधुक्षः॥

उपरोक्त मन्त्र के द्वारा घृतधारा कर और 'कामधुक्षः०' इस मन्त्र का उच्चारण कर गुड़ के चूरे से सातों घृतधाराओं को एक में मिलाकर उन सातों धाराओं में क्रमानुसार आगे दिए गए एक-एक मन्त्र का उच्चारण करते हुए

प्रत्येक पर अक्षत छोड़वाकर एक-एक देवी का आवाहन स्थापन यजमान से करावें—

श्रियै-ॐ मनसः काममाकूतिं वाचःसत्यमशीय। पशूनाठं० रूपमन्नस्य रसो यशः श्रीर्तं०श्रयतां मयि स्वाहा॥

सुवर्णपद्महस्तां तां विष्णोर्वक्षःस्थले स्थिताम्।
त्रैलोक्यवल्लभां देवीं श्रियमावाहयाम्यहम्॥
ॐ भूर्भुवः स्वः श्रियै नमः श्रियमावाहयामि स्थापयामि॥ १॥

लक्ष्म्यै-ॐ श्रीश्चतेलक्ष्मीश्चपत्न्यावहोरात्रेपार्श्वेनक्षत्राणिरूप-मश्विनौव्यात्तम्। इष्णनिषाणामुम्मऽइषाणसर्वलोकम्मऽइषाण॥

शुभलक्षणसम्पन्नां क्षीरसागरसंवृताम्।
चन्द्रस्य भगिनीं सौम्यां लक्ष्मीमावाहयाम्यहम्॥
ॐ भूर्भुवः स्वः लक्ष्म्यै नमः लक्ष्मीमावाहयामि स्थापयामि॥ २॥

धृत्यै-ॐ भद्रङ्कर्णेभिःशृणुयाम देवा भद्रं पश्येमाक्षभिर्यजत्राः। स्थिरैरङ्गैस्तुष्टुवाठं०सस्तनूभिर्व्यशेमहिदेवहितं यदायुः॥

सर्वहर्षकरीं देवीं भक्तानामभयप्रदाम्।
हर्षोत्फुल्लास्यकमलां धृतिमावाहयाम्यहम्॥
ॐ भूर्भुवः स्वः धृत्यै नमः धृतिमावाहयामि स्थापयामि॥ ३॥

मेधायै-ॐ मेधां मे वरुणो ददातु मेधामग्निः प्रजापतिः। मेधामिन्द्रश्च वायुश्च मेधां धाता ददातु मे स्वाहा॥

सदसत्कार्यकरणक्षमां बुद्धिविशालिनीम्।
भव्यकार्ये शुभकरीं मेधामावाहयाम्यहम्॥
ॐ भूर्भुवः स्वः मेधायै नमः। मेधामावाहयामि स्थापयामि॥ ४॥

स्वाहायै-ॐ प्राणाय स्वाहा ऽअपानाय स्वाहा व्यानाय स्वाहा चक्षुषे स्वाहा श्रोत्राय स्वाहा वाचे स्वाहा मनसे स्वाहा॥

हविर्गृहीत्वा सततं देवेभ्यो या प्रयच्छति।
तां दिव्यरूपां वरदां स्वाहामावाहयाम्यहम्॥
ॐ भूर्भुवः स्वः स्वाहायै नमः स्वाहामावाहयामि स्थापयामि॥ ५॥

प्रज्ञायै–ॐ आयङ्गौः पृश्निरक्रमीदसदन्मातरम्पुरः। पितरञ्च प्रयन्त्स्वः॥
प्रणवस्यापि जननीं रसनाग्रस्थितां सदा।
प्रागल्भ्यदात्रीं चपलां प्रज्ञामावाहयाम्यहम्॥
ॐ भूर्भुवः स्वः प्रज्ञायै नमः प्रज्ञामावाहयामि स्थापयामि॥ ६॥

सरस्वत्यै– पावका नः सरस्वती वाजेभिर्वाजिनीवति। यज्ञं वष्टु धियावसुः॥
सरस्वतीं सुरैर्वन्द्यां धातृपुत्रीं क्षमाकरीम्।
विद्वज्जनस्य सत्कर्त्रीं देवीमावाहयाम्यहम्॥
ॐ भूर्भुवः स्वः सरस्वत्यै नमः सरस्वतीमावाहयामि स्थापयामि॥ ७॥
ॐ श्रीश्च लक्ष्मीर्धृतिर्मेधा स्वाहा प्रज्ञा सरस्वती।
माङ्गल्येषु प्रपूज्यन्ते सप्तैता घृतमातरः॥

ॐ वसोर्द्धारादेवताभ्यो नमः श्रियादिसप्तघृतमातृभ्यो नमः। इत्यावाह्य—

ॐ मनो जूतिर्जुषतामाज्यस्य बृहस्पतिर्यज्ञमिमं तनोत्वरिष्टं यज्ञठं॰ समिमं द धातु। विश्वेदेवास इह मादयन्तामों ३ँप्रतिष्ठ॥

इति मन्त्रेण वसोर्धारादेवताः सुप्रतिष्ठिताः वरदाः भवन्तु। इत्यक्षतैस्तन्त्रेण प्रतिष्ठाप्य षोडशोपचारैः पञ्चोपरैर्वा सम्पूज्य प्रार्थयेत्।
यदङ्गत्वेन भो देव्यः पूजिता विधिमार्गतः।
कुर्वन्तु कार्यमखिलं निर्विघ्नेन क्रतूद्भवम्॥

यजमानः—'आचारितवसोर्द्धारापूजनविधौ यन्न्यूनातिरिक्तं तत्सर्वं परिपूर्णमस्तु'। इति कृताञ्जलिः प्रार्थयेत् 'अनया पूजया श्रियादिसप्तघृतमातरः प्रीयन्ताम्' इति जलमर्घपात्रे प्रक्षिपेत्।

आयुष्यमन्त्रजपः

संकल्पः—देशकालौ सङ्कीर्त्य, करिष्यमाण-धूमावतीप्रतिष्ठा-कर्मणोऽमङ्गलनाशार्थमायुष्यमन्त्रजपं करिष्ये।

आचार्य और सभी ब्राह्मण निम्न मन्त्रों व पौराणिक श्लोकों का उच्चारण करें—

ॐ आयुष्यं वर्चस्यर्ठ० रायस्पोषमौद्भिदम्। इदर्ठ० हिरण्यं वर्चस्वजैत्रायाविशतदु माम्॥ १॥ न तद्रक्षार्ठ०सि न पिशाचास्तरन्ति देवानामोजः प्रथमजर्ठ० ह्येतत्। यो बिभर्त्ति दाक्षायणर्ठ० हिरण्यर्ठ० स देवेषु कृणुते दीर्घमायुः स मनुष्येषु कृणुते दीर्घमायुः॥ २॥ यदाबध्नन्दाक्षायणा हिरण्यर्ठ० शतानीकाय सुमनस्यमानाः। तन्म ऽआबध्नामि शतशारदायायुष्माञ्जरदष्टिर्यथासम्॥ ३॥

अश्वत्थामादिऋषयो वसिष्ठप्रमुखस्तथा।
मार्कण्डेयप्रभृतयः सर्वे सन्तु शिवार्चकाः॥ १॥
जमदग्निः कश्यपश्च दीर्घमायुः करोतु मे।
अन्ये ऋषिगणा देवा इन्द्राद्याश्च सशक्तिकाः॥ २॥
भूसुराः सुतपोनिष्ठाः सत्यव्रतपरायणाः।
दीर्घमायुः प्रयच्छन्तु सर्वकामस्य सिद्धये॥ ३॥
यदायुष्यं चिरं देवाः सप्तकल्पान्तजीविषु।
ददुस्तेनायुषा सम्यक् जीवेम शरदः शतम्॥ ४॥
दीर्घा नागास्तथा नद्यः समुद्रा गिरयो दिशः।
अनन्तेनायुषा तेन जीवेम शरदः शतम्॥ ५॥
सत्यानि पञ्च भूतानि विनाशरहितानि च।
अविनाश्यायुषा तद्वज्जीवेम शरदः शतम्॥ ६॥

आयुष्यमन्त्रजपसंकल्पः—कृतैतत् आयुष्यमन्त्रजपकर्मणः साङ्गता-सिद्ध्यर्थं विप्रेभ्यो दक्षिणां दातुमहमुत्सृज्ये।

नान्दीश्राद्धम्

संकल्पः —देशकालौ संकीर्त्य, करिष्यमाण-धूमावतीप्रतिष्ठा-कर्माङ्गत्वेन नान्दीश्राद्धं करिष्ये।

आचार्य पूर्व दिशा की ओर विश्वेदेव के आसन स्थान पर कुशा उत्तराग्र रक्खे तथा तीन आसन दक्षिण पूर्वाग्र क्रमानुसार रखें। आसनों की दूरी अधिक न हो, केवल आसन एक दूसरे से आपस में सटे न रहें। यजमान से उन स्थापित आसनों पर आचार्य विश्वेदेव सहित उसके पितरों की पूजा निम्न प्रकार सव्य से ही आरम्भ करवायें, आचार्य यजमान से ही उसके मस्तक और श्राद्धसामग्री पर पवित्रीकरण हेतु निम्न श्लोक द्वारा जल छिड़कवायें—

ॐ अपवित्रः पवित्रो वा सर्वावस्थां गतोऽपि वा।
यः स्मरेत्पुण्डरीकाक्षं स बाह्याभ्यन्तरः शुचिः॥

ॐ पुण्डरीकाक्षः पुनातु, ॐ पुण्डरीकाक्षः पुनातु, ॐ पुण्डरीकाक्षः पुनातु।

आचार्य पादप्रक्षालनार्थ के लिए निम्न क्रमानुसार यजमान से जल प्रदान करवायें—**ॐ सत्यवसुसंज्ञकाः विश्वेदेवाः नान्दीमुखाः ॐ भूर्भुवः स्वः इदं वः पाद्यं पादावनेजनं पादप्रक्षालनं वृद्धिः। ॐ मातृ-पितामही-प्रपितामह्यो नान्दीमुख्यः ॐ भूर्भुवः स्वः इदं वः पाद्यं पादवनेजनं पादप्रक्षालनं वृद्धिः। ॐ पितृ-पितामह-प्रपितामहाः नान्दीमुखाः ॐ भूर्भुवः स्वः इदं वः पाद्यं पादावनेजनं पादप्रक्षालनं वृद्धिः। ॐ मातामह-प्रमातामह-वृद्धप्रमातामहाः सपत्नीकाः नान्दीमुखाः ॐ भूर्भुवः स्वः इदं वः पाद्यं पादावनेजनं पादप्रक्षालनं वृद्धिः। इत्युक्त्वा सर्वत्र पात्रे सकुशयवाक्षतजलं प्रक्षिपेत्।**

तदुपरान्त यजमान के पितरों के निमित्त आचार्य निम्न क्रम से आसन प्रदान करावें—

ॐ सत्यवसुसंज्ञकाः विश्वेदेवाः नान्दीमुखाः ॐ भूर्भुवः स्वः इमे आसने वो नमो नमः। नान्दीश्राद्धेक्षणौ क्रियेतां यथा प्राप्नुवन्त्यो

भवन्त्यः तथा प्राप्नुवामः। मातृ-पितामही-प्रपितामह्यः नान्दीमुख्यः ॐ भूर्भुवः स्वः इमे आसने वो नमो नमः। नान्दीश्राद्धेक्षणौ क्रियेतां यथा प्राप्नुवन्त्यो भवन्त्यः तथा प्राप्नुवामः। ॐ पितृ-पितामह-प्रपितामहाः नान्दीमुखाः ॐ भूर्भुवः स्वः इमे आसने वो नमो नमः। नान्दीश्राद्धेक्षणौ क्रियेतां यथा प्राप्नुवन्त्यो भवन्त्यः तथा प्राप्नुवामः। ॐ मातामह-प्रमातामह-वृद्धप्रमातामहाः सपत्नीकाः नान्दीमुखाः ॐ भूर्भुवः स्वः इमे आसने वो नमो नमः। नान्दीश्राद्धेक्षणौ क्रियेतां यथा प्राप्नुवन्त्यो भवन्त्यः तथा प्राप्नुवामः।

यजमान से पितरों के निमित्त जल, वस्त्र, यज्ञोपवीत, रोली, अक्षत, पुष्प, धूप, नैवेद्य, ऋतुफल, ताम्बूल, लवङ्ग, इलायची, सुपारी तथा सुगन्धित इत्र आदि निम्न क्रमानुसार आचार्य प्रदान करावें—

ॐ सत्यवसुसंज्ञकाः विश्वेदेवाः नान्दीमुखाः ॐ भूर्भुवः स्वः इदं गन्धाद्यर्चनं स्वाहा सम्पद्यतां वृद्धिः। ॐ मातृ-पितामही-प्रपितामह्यः नान्दी-मुख्यः ॐ भूर्भुवः स्वः इदं गन्धाद्यर्चनं स्वाहा सम्पद्यतां वृद्धिः। ॐ पितृ-पितामह-प्रपितामहाः नान्दीमुखाः ॐ भूर्भुवः स्वः इदं गन्धाद्यर्चनं स्वाहा सम्पद्यतां वृद्धिः। ॐ मातामह-प्रमातामह-वृद्धप्रमातामहाः सपत्नीकाः नान्दीमुखाः ॐ भूर्भुवः स्वः इदं गन्धाद्यर्चनं स्वाहा सम्पद्यतां वृद्धिः।

यजमान से विश्वेदेव सहित पितरों के निमित्त भोजन निष्क्रय की दक्षिणा निम्न क्रमानुसार आचार्य प्रदान करावें—

ॐ सत्यवसुसंज्ञकाः विश्वेदेवाः नान्दीमुखाः ॐ भूर्भुवः स्वः इदं युग्मब्राह्मणभोजन पर्याप्त आमान्ननिष्क्रयभूतं द्रव्यम् अमृतरूपेण स्वाहा सम्पद्यतां वृद्धिः। ॐ मातृ-पितामही-प्रपितामह्यः नान्दीमुख्यः ॐ भूर्भुवः स्वः इदं युग्मब्राह्मणभोजन पर्याप्त आमान्ननिष्क्रयभूतं द्रव्यम् अमृतरूपेण स्वाहा सम्पद्यतां वृद्धिः। ॐ पितृ-पितामह-प्रपितामहाः नान्दीमुखाः ॐ भूर्भुवः स्वः इदं युग्मब्राह्मणभोजन पर्याप्त आमान्ननिष्क्रयभूतं द्रव्यम् अमृतरूपेण सम्पद्यतां वृद्धिः। ॐ मातामह-प्रमातामह-वृद्धप्रमातामहाः

सपत्नीकाः नान्दीमुखाः ॐ भूर्भुवः स्वः इदं युग्मब्राह्मणभोजनपर्याप्तम् आमान्ननिष्क्रय-भूतं द्रव्यम् अमृतरूपेण स्वाहा सम्पद्यतां वृद्धिः।

यजमान से निम्न क्रमानुसार दुग्धादिसहित यवादि आचार्य प्रदान करावें—

स-क्षीरयवकुशजलदानम्—ॐ सत्यवसुसंज्ञकाः विश्वेदेवाः नान्दीमुखाः प्रीयन्ताम्। ॐ मातृ-पितामही-प्रपितामह्यः नान्दीमुख्यः प्रीयन्ताम्। ॐ पितृ-पितामह-प्रपितामहाः नान्दीमुखाः प्रीयन्ताम्। ॐ मातामह-प्रमातामह-वृद्धप्रमातामहाः सपत्नीकाः नान्दीमुखाः प्रीयन्ताम्। ततः 'अघोराः पितरः सन्तु' इति पूर्वाग्रां जलधारां दद्यात्।

यजमान से जल, पुष्प, अक्षतादि निम्न क्रमानुसार आचार्य प्रदान करावें—

ॐ शिवा आपः सन्तु, ॐ सौमनस्यमस्तु, ॐ अक्षतं चाऽरिष्टं चाऽस्तु।

यजमान से उसके सभी पितरों के निमित्त दाहिने हाथ के अँगूठे की ओर से इस वाक्य द्वारा आचार्य जलधारा प्रदान करावें—**ॐ अघोराः पितरः सन्तु।**

यजमान से दोनों हाथ जुड़वाकर उसके पितरों की निम्न क्रमानुसार आचार्य प्रार्थना करावें—

ॐ गोत्रन्नो वर्धतां दातारो नोऽभिवर्धन्तां वेदाः सन्ततिरेव च। श्रद्धा च नो मा व्यगमद् बहु देयं च नोऽस्तु। अन्नं च नो बहु भवेद तिथींश्च लभेमहि। याचितारश्च नः सन्तु मा च याचिष्म कञ्चनः॥ एताः सत्या आशिषः सन्तु।

प्रतिष्ठास्थल पर उपस्थित आचार्य सहित सभी ब्राह्मण यजमान को निम्न वाक्य द्वारा आशीर्वाद प्रदान करें—**सन्त्वेताः सत्या आशिषः।**

यजमान से विश्वेदेव सहित पितरों के निमित्त आँवला, मुनक्का, यव तथा आदी मूलादि अलग-अलग आगे दिए हुए क्रमानुसार आचार्य वितरण करावें—

ॐ सत्यवसुसंज्ञकाः विश्वेदेवाः नान्दीमुखाः ॐ भूर्भुवः स्वः कृतस्याभ्युदयिकस्य नान्दीश्राद्धस्य फलप्रतिष्ठासिद्ध्यर्थं द्राक्षाऽऽमलकयवमूलनिष्क्रयिणीं दक्षिणां दातुमहमुत्सृज्ये। ॐ मातृ-पितामही-प्रपितामह्यः नान्दीमुख्यः ॐ भूर्भुवः स्वः कृतस्याभ्युदयिकस्य नान्दीश्राद्धस्य फलप्रतिष्ठासिद्ध्यर्थं द्राक्षाऽऽमलकयवमूलनिष्क्रयिणीं दक्षिणां दातुमहमुत्सृज्ये। ॐ मातामह-प्रमातामह-वृद्धप्रमातामहाः सपत्नीकाः नान्दीमुखाः ॐ भूर्भुवः स्वः कृतस्याभ्युदयिकस्य नान्दीश्राद्धस्य फलप्रतिष्ठासिद्ध्यर्थं द्राक्षाऽऽमलकयवमूलनिष्क्रयिणीं दक्षिणां दातुमहमुत्सृज्ये।

माता पितामही चैव तथैव प्रपितामही।
पिता पितामहश्चैव तथैव प्रपितामहः॥
मातामहस्तत्पिता च प्रमातामह कस्तथा।
एते भवन्तु मे प्रीताः प्रयक्षन्तु च मङ्गलम्॥

आचार्य और ब्राह्मण निम्न मन्त्रों का उच्चारण करें—

ॐ इडामग्ने पुरुदर्ठ० सर्ठ० सनिंगोः शश्वत्तमर्ठ० हवमानाय साध। स्यान्नः सूनुस्तनयो विजावाग्ने सा ते सुमतिर्भूत्त्वस्मे॥ १॥ उपास्मै गायता नरः पवमानायेन्दवे। अभि देवाँ२॥ इयक्षते॥ २॥

नान्दीश्राद्ध की सम्पन्नता हेतु यजमान निम्न वाक्य का उच्चारण करते हुए आचार्य से पूछें—**अनेन नान्दीश्राद्धं सम्पन्नम्?** उपरान्त आचार्य तथा अन्य उपस्थित ब्राह्मण यजमान से आनन्दपूर्वक निम्न वाक्य कहें—**निश्चितं सुसम्पन्नम्।**

विसर्जनम्

ॐ वाजेवाजेऽवत वाजिनो नो धनेषु विप्रा ऽअमृता ऽऋतज्ञाः। अस्य मद्ध्वः पिबत मादयद्ध्वं तृप्ता यात पथिभिर्द्देवयानैः॥ १॥

अनुव्रजनम्

ॐ आ मा वाजस्य प्रसवो जगम्यादेमे द्यावापृथिवी विश्वरूपे।
आ मा गन्तां पितरा मातरा चा मा सोमो ऽअमृतत्वेन गम्यात्॥ २॥
ॐ विश्वेदेवाः प्रीयन्ताम्।

यजमान निम्न वाक्य आचार्य सहित ब्राह्मणों से कहे—

मयाऽऽचरितेऽस्मिन् साङ्कल्पिकनान्दीश्राद्धे न्यूनातिरिक्तो यो विधिः स उपविष्टब्राह्मणानां वचनाच्छ्रीगणपतिप्रसादाच्च परिपूर्णोऽस्तु।

यजमान द्वारा कहे गये वाक्यों का प्रत्युत्तर आचार्य और ब्राह्मण निम्न वाक्य द्वारा दें—**अस्तु परिपूर्णः।**

अनेन साङ्कल्पिकनान्दीश्राद्धेन नान्दीमुखाः पितरः प्रीयन्ताम्।

आचार्यादिवरणम्

यजमान उत्तराभिमुख आसन पर बैठकर धूमावतीप्रतिष्ठा के निमित्त निम्न सङ्कल्प करके आचार्य का गन्ध, अक्षत, पुष्प द्वारा पूजन करते हुए वरण करें—

यजमानः दक्षिणहस्ते जलाऽक्षत-द्रव्यं चादाय, सङ्कल्पं कुर्यात्— देशकालौ सङ्कीर्त्य, अमुकगोत्रोत्पन्नोऽहममुकशर्माहम् (वर्माऽहम्, गुप्तोऽहम्, दासोऽहम्) अमुकगोत्रोत्पन्नममुकशर्माणं ब्राह्मणमस्मिन् धूमावतीप्रतिष्ठाकर्मणि एभिर्वरणद्रव्यैः आचार्यत्वेन त्वामहं वृणे।

आचार्य कहें—**वृतोऽस्मि।**

ॐ व्रतेन दीक्षामाप्नोति दीक्षयाप्नोति दक्षिणाम्।
दक्षिणा श्रद्धामाप्नोति श्रद्धया सत्यमाप्यते॥

निम्न मन्त्र का उच्चारण कर रक्षासूत्र बाँधे—**ॐ यदाबन्धन् दाक्षायणा हिरण्यꣳ शतानीकाय सुमनस्यमानाः। तन्म आबध्नामि शतशारदायायुष्मान्जरदष्टिर्यथासम्॥**

पुनः यजमान अपने हाथों को जोड़कर आगे दिए हुए श्लोक द्वारा आचार्य की प्रार्थना करें—

आचार्यस्तु यथा स्वर्गे शक्रादीनां वृहस्पतिः।
तथा त्वं मम यज्ञेऽस्मिन्नाचार्यो भव सुव्रत!॥

ब्रह्मावरणम्

यजमानः—देशकालौ सङ्कीर्त्य, अस्मिन् धूमावतीप्रतिष्ठाकर्मणि एभिर्वरणद्रव्यैरमुकगोत्रममुकशर्माणं ब्राह्मणं ब्रह्मत्वेन त्वामहं वृणे।

ब्रह्मा का वरण ग्रहण करने वाले ब्राह्मण को निम्न वाक्य कहना चाहिये—**वृतोऽस्मि।**

पुनः इस मन्त्र का उच्चारण करें-**ॐ ब्रह्म जज्ञानं प्रथमं पुरस्ताद्वि सीमतः सुरुचो वेन आवः। स बुध्न्या उपमा अस्य विष्ठाः सतश्च योनिमसतश्च विवः॥**

यजमान दोनों हाथ जोड़कर निम्न श्लोक द्वारा प्रार्थना करें—

यथा चतुर्मुखो ब्रह्मा सर्ववेदविशारदः।
तथा त्वं मम यज्ञेऽस्मिन् ब्रह्मा भव द्विजोत्तम!॥

गाणपत्यवरणम्

यजमानः—अस्मिन् धूमावतीप्रतिष्ठाकर्मणि एभिर्वरणद्रव्यैरमुकगोत्रममुकशर्माणं ब्राह्मणं गाणपत्यत्वेन त्वामहं वृणे।

गाणपत्य का वरण ग्रहण करने वाले ब्राह्मण को निम्न वाक्य कहना चाहिये—**वृतोऽस्मि।** पुनः इस मन्त्र का उच्चारण करें-**ॐ गणानां त्वा गणपतिर्ठ० हवामहे प्रियाणां त्वा प्रियपतिर्ठ० हवामहे निधीनां त्वा निधिपतिर्ठ० हवामहे वसो मम। आहमजानि गर्भधमा त्वमजासि गर्भधम्॥**

उपद्रष्टृवरणम्

यजमानः—अस्मिन् धूमावतीप्रतिष्ठाकर्मणि एभिर्वरणद्रव्यैरमुकगोत्रममुकशर्माणं ब्राह्मणं उपद्रष्टृत्वेन त्वामहं वृणे।

उपद्रष्टृ का वरण ग्रहण करने वाले ब्राह्मण को निम्न वाक्य कहना चाहिये—**वृतोऽस्मि**। पुनः इस मन्त्र का उच्चारण करें-**ॐ ऋतये स्तेनहृदयं वैरहत्याय पिशुनं विविक्त्यै क्षत्तारमौपद्रष्ट्यायानुक्षत्तारं बलायानुचरं भूम्ने परिष्कन्दं प्रियाय प्रियवादिनमरिष्ट्या अश्वसादर्ठ० स्वर्गाय लोकाय भागदुघं वर्षिष्ठाय नाकाय परिवेष्टारम्॥**

उपद्रष्टृप्रार्थना

भगवन् सर्वकर्मज्ञ सर्वधर्मभृतां वर।
वितते मम यज्ञेऽस्मिन्नुपद्रष्टा भव द्विज॥

ऋत्विक्वरणम्

यजमानः—अस्मिन् धूमावतीप्रतिष्ठाकर्मणि एभिर्वरणद्रव्यैरमुक-गोत्रममुकशर्माणं ब्राह्मणं ऋत्विक्त्वेन त्वामहं वृणे।

ऋत्विक् वरण को ग्रहण करनेवाला ब्राह्मण निम्न वाक्य को कहे—**वृतोऽस्मि**। पुनः निम्न मन्त्र का उच्चारण करें—**ॐ ब्राह्मणासः पितरः सोम्यासः शिवे नो द्यावापृथिवी ऽअनेहसा। पूषा नः पातु दुरिताद्दतावृधो रक्षा माकिर्नो ऽअघशर्ठ० स ऽईशत॥**

ऋत्विकप्रार्थना

भगवन् सर्वधर्मज्ञ! सर्वधर्मपरायण!।
वितते मम यज्ञेऽस्मिन् ऋत्विक् त्वं मे मखे भव॥

अथवा

एकतन्त्रेण वरणसंकल्पः

ॐ विष्णुर्विष्णुर्विष्णुः श्रीमद्भगवतो महापुरुषस्य विष्णोराज्ञया प्रवर्तमानस्य अद्य श्रीब्रह्मणोऽह्नि द्वितीयपरार्द्धे श्रीश्वेतवाराहकल्पे वैवस्वतमन्वन्तरे अष्टाविंशतितमे कलियुगे कलिप्रथमचरणे जम्बूद्वीपे भरतखण्डे भारतवर्षे आर्यावर्तैकदेशे, अमुकक्षेत्रे अमुकनद्या अमुकतीरे विक्रमशके बौद्धावतारे अमुकनाम्नि संवत्सरे अमुकायने अमुकऋतौ

महामाङ्गल्यप्रदमासोत्तमे मासे अमुकमासे अमुकपक्षे अमुकतिथौ अमुकवासरे अमुकनक्षत्रे अमुकयोगे अमुककरणे अमुकराशिस्थिते चन्द्रे अमुकराशिस्थिते सूर्ये अमुकराशिस्थिते देवगुरौ शेषेषु ग्रहेषु यथास्थानस्थितेषु सत्सु एवं गुणगणविशेषणविशिष्टायां शुभपुण्यतिथौ अमुकगोत्रोऽमुकशर्माऽहम् (वर्माऽहम्, गुप्तोऽहम्, दासोऽहम्) अस्मिन् धूमावतीप्रतिष्ठाकर्मणि एभिर्वरणद्रव्यैः नानानामगोत्रान् नानानामधेयान् शर्मणः आचार्यादिब्राह्मणान् युष्मान् वृणे।

मधुपर्कम्

देशकालौ सङ्कीर्त्य, अमुकगोत्रोऽमुकशर्माहम् (वर्माऽहम्, गुप्तोऽहम्, दासोऽहम्) करिष्यमाण-धूमावतीप्रतिष्ठाकर्मणि वृतान् ऋत्विजो मधुपर्केणार्चयिष्ये।

अपनी शाखा के अनुसार यजमान मधुपर्क कर्म करे। यजमान सभी ब्राह्मणों को पंक्तिबद्ध बैठा दे, उपरान्त ही पारस्कर-गृह्यसूत्र के अनुसार उनका पूजन कर प्रार्थना करे—**ॐ साधु भवन्तस्य आस्यन्तां अर्चयिष्यामो भवतः॥ (ब्राह्मणाः) ॐ अर्चय॥ ऋत्विक्संख्यया विष्टरान्गृहीत्वा (आचार्यः)—ॐ विष्टराः विष्टराः विष्टराः॥ (यजमानः) विष्टराः प्रतिगृह्यन्ताम्। (ब्राह्मणाः) ॐ विष्टराः प्रतिगृह्णीमः॥ ततो कर्ता हस्ताद्विष्टरं गृहीत्वा॥ ॐ वर्ष्मोऽस्मि समानानामुद्यतामिव सूर्यः। इमं तमभि तिष्ठामि यो मा कश्चाभिदासति॥ इति मन्त्रेण ब्राह्मणाः प्रत्येकं विष्टरं उदगग्रं स्वासनतले स्थापयेयुः॥ ततो यजमानः पाद्यपात्रमादत्ते। (आचार्यः) ॐ पाद्यानि पाद्यानि पाद्यानि। (यजमानः) पाद्यानि प्रतिगृह्यन्ताम्। (ब्राह्मणाः) पाद्यानि प्रतिगृह्णीमः॥ ततो कर्ताहस्तात्पाद्यपात्रमादाय॥ ॐ विराजो दोहोऽसि विराजो दोहमसीय मयि पाद्यायै विराजो दोहः॥ इति मन्त्रेण प्रथमं दक्षिणचरणं तत्पश्चाद्वामचरणं च क्रमेण स्वयं प्रक्षालयेत्॥ ततः पूर्ववद्विष्टरान्गृहीत्वा पूर्ववन्मन्त्रं पठित्वा (ब्राह्मणाः)**

स्वस्वचरणयोरधस्तादुत्तराग्रं दद्युः। (तत आचार्यः) ॐ अर्घाः अर्घाः अर्घाः। (यजमानः) अर्घाः प्रतिगृह्यन्ताम्। (ब्राह्मणाः) अर्घान्प्रतिगृह्णीमः॥ ॐ आपः स्थयुष्माभिः सर्वान् कामानवाप्नवानि॥ इति मन्त्रेण (ब्राह्मणाः) अर्घपात्रं शिरसाभिवन्द्य ॐ समुद्रं वः प्रहिणोमि स्वा न्योनिमभिगच्छत। अरिष्टास्माकं वीरामापराचेति मत्पयः॥ इति मन्त्रं पठन्नैशान्यां दिशि जलं क्षिपेत्॥ ततो यजमानः आचमनीयपात्रमादत्ते। (आचार्यः) ॐ आचमनीयानि आचमनीयानि आचमनीयानि। (यजमानः) आचमनीयानि प्रतिगृह्यन्ताम्॥ (ब्राह्मणाः) आचमनीयानि प्रतिगृह्णीमः॥ ततो कर्ताहस्तादाचमनीयपात्रमादाय—ॐ आमागन्यश-सासर्ठ० सृजवर्चसा। तं मा कुरु प्रियं प्रजानामधिपतिं पशूनामरिष्टिं तनूनाम्॥ इति मन्त्रेण सकृदाचामेत् द्विः तूष्णीम्॥ ततो यजमानः कांस्यपात्रे दधिमधुघृतानि कांस्यपात्रपिहितान्यादत्ते। (आचार्यः) ॐ मधुपर्काः मधुपर्काः मधुपर्काः। (यजमानः) मधुपर्काः प्रतिगृह्यन्ताम्। (ब्राह्मणाः) मधुपर्कान्प्रतिगृह्णीमः॥ कर्तृहस्तस्थमेव तत्पात्रमुद्घाट्य॥ ॐ मित्रस्य त्वा चक्षुषा प्रतीक्ष्ये इति मन्त्रेण वीक्ष्य॥ ॐ देवस्य त्वा सवितुः प्रसवेऽश्विनोर्बाहुभ्यां पूष्णो हस्ताभ्याम्॥ इति मन्त्रेण गृहीत्वा सव्ये पाणौ निधाय दक्षिणानामिकया—ॐ नमः स्यावास्यायान्नशने यत्तऽआविद्धंतत्ते निष्कृन्तामि॥ इति मन्त्रेण प्रादक्षिण्येन मधुपर्कमालोड्य किञ्चिद्भूमौ क्षिप्त्वा पुनरेवं द्विवारं अनेन मन्त्रेणालोड्य भूमौ निक्षिपेत्। (ततः पात्रं भूमौ निधाय) ॐ यन्मधुनो मधव्यं परमर्ठ० रूपमन्नाद्यम्। तेनाहं मधुनो मधव्येन परमेण रूपेणान्नाद्येन परमो मधव्योन्नादोसानि॥ इति मन्त्रेणानामिकांगुष्ठाभ्यां त्रिः प्राश्य प्रतिप्राशने चैतन्मन्त्र-पाठः॥ शेषमसञ्चरदेशे धारयेत्॥ तत आचम्याङ्गानि स्पृशेत्॥ ॐ वाङ्मऽआस्येऽस्तु॥ इति कराग्रेण मुखालम्भनम्॥ ॐ नसोर्मे प्राणोऽस्तु॥ इति दक्षिणवामनासारन्ध्रद्वये॥ ॐ अक्ष्णोर्मे चक्षुरस्तु इति

दक्षिणवामचक्षुषी॥ ॐ कर्णयोर्मे श्रोत्रमस्तु इति दक्षिणवामकर्णयोः॥ ॐ बाह्वोर्मे बलमस्तु इति दक्षिणवामजान्वोः॥ ॐ ऊर्वोर्मे ओजोस्तु इति युगपदूरू॥ ॐ अरिष्टानि मेऽङ्गानि तनुस्तन्वा मे सह सन्तु इति शिरःप्रभृति सर्वाङ्गाणि उभाभ्यां हस्ताभ्यामालभ्याचामेत्॥ ततो गावः गावः गावः इति यजमानेनोक्ते (ब्राह्मणाः) ॐ मातारुद्राणां दुहिता वसूनार्ठ० स्वसादित्यानाममृतस्य नाभिः। प्रनु वोचं चिषितुषे जनाय मागामनागामधितिं वधिष्ट मम चामुष्ययजमानस्योभयोः पाप्मा हतः॥ उत्सृजत्तृणान्यत्तु इत्युच्चैर्ब्रूयात्॥

गोदानसंकल्प—कृतस्य मधुपर्कादिपूजनकर्मणः साङ्गतासिद्ध्यर्थम् इमानि गोनिष्क्रयभूतानि द्रव्याणि नानानामगोत्रेभ्यो ब्राह्मणेभ्यो विभज्य दातुमहमुत्सृजे॥ पुनः सर्वान् प्रार्थयेत्—

ब्राह्मणप्रार्थना:

अस्य यागस्य निष्पत्तौ भवन्तोऽभ्यर्थिता मया।
सुप्रसन्नैः प्रकर्तव्यं कर्मेदं विधिपूर्वकम्॥ १॥
ब्राह्मणाः सन्तु शास्तारः पापात्पान्तु समाहिताः।
वेदानां चैव दातारः पातारः सर्वदेहिनाम्॥ २॥
जपयज्ञैस्तथा होमैर्दानैश्च विविधैः शुभैः।
देवानां च पितृणां च तृप्त्यर्थं याजकाः स्मृताः॥ ३॥
येषां देहे स्थिता वेदाः पावयन्ति जगत्त्रयम्।
रक्षन्तु सततं ते मां जपयज्ञे व्यवस्थिताः॥ ४॥
अक्रोधनाः शौचपराः सततं ब्रह्मचारिणः।
देवध्यानपरा नित्यं प्रसन्नमनसः सदा॥ ५॥
अदुष्टभाषणा सन्तु मा सन्तु परनिन्दकाः।
ममापि नियमा ह्येते भवन्तु भवतामपि॥ ६॥

मण्डपप्रवेशः

यजमान अपनी पत्नी, पुत्र, पौत्रादि तथा आचार्य और ब्राह्मणों के साथ मंगलघोष बाजे आदि द्वारा तथा आचार्य सहित सभी ब्राह्मण—'स्वस्तिवाचन' के वैदिक मन्त्रों का उच्चारण करें, घोष से युक्त हो और कलश हाथ में लेकर सुहागिन स्त्रियों को आगे कर गणेश-अम्बा, वरुण कलश, मातृ पीठादियों से युक्त हो महामण्डप की प्रदक्षिणा कर पश्चिमद्वार पर प्राङ्मुख खड़ा होकर निम्न श्लोकों का उच्चारण कर ध्यान करें—

ॐ चतुर्भुजां शुक्लवर्णां कूर्मपृष्ठोपरिस्थिताम्।
शङ्खपद्मधरां चक्रशूलहस्तां धरां भजे॥
आगच्छ देवि कल्याणि वसुधे लोकधारिणी।
पृथिवि ब्रह्मदत्तासि काश्यपेनाभिवन्दिता॥

'**ॐ भूम्यै नमः**' इस वाक्य का उच्चारण करने के उपरान्त यजमान निम्न श्लोक का उच्चारण कर प्रणाम करें—

उद्धृतासि वराहेण कृष्णेन शतबाहुना।
दंष्ट्राग्रैर्लीलया देवि यज्ञार्थं प्रणमाम्यहम्॥

आचार्य निम्न श्लोकों का उच्चारण करते हुए यजमान से अर्घ्य प्रदान करावें—

ब्रह्मणा निर्मिते देवि विष्णुना शङ्करेण च।
पार्वत्या चैव गायत्र्या स्कन्दवै-श्रवणेन च॥
यमेन पूजिते देवि धर्मस्य विजिगीषया।
सौभाग्यं देहि पुत्रांश्च धनं रूपं च पूजिता।
गृहाणार्घमिमं देवि सौभाग्यं च प्रयच्छ मे॥

ॐ भूम्यै नमः, अर्घं समर्पयामि। यजमान गन्ध, पुष्प, धूप, दीप और नैवेद्य से भूमि का पूजन करें—

ॐ उपचारानिमां तुभ्यं ददामि परमेश्वरि।
भक्त्या गृहाण देवेशि त्वामहं शरणं गतः॥

आचार्य निम्न श्लोकों का उच्चारण करते हुए यजमान से प्रार्थना करावें—

ॐ नन्दे नन्दस्य वसिष्ठे वसुभिः प्रजया सह।
जय भार्गवदायादे प्रजानां जयमावह॥
पूर्णे गिरिश दायादे पूर्णं कामं कुरुष्व मे।
भद्रे काश्यपदायादे कुरु भद्रां मतिं मम॥
सर्वबीजसमायुक्ते सर्वारत्नौषधीवृते।
रुचिरे नन्दने नन्दे वसिष्ठे रम्यतामिह॥
प्रजापतिसुते देवि चतुरस्त्रे महीयसि।
सुभगे सुव्रते देवि यज्ञे भार्गवि रम्यताम्॥
देशस्वामि पुरस्वामि गृहस्वामि परिग्रहे।
मनुष्यधनहस्त्यश्वपशुवृद्धिकरी भव॥

आचार्य और ऋत्विजों के साथ द्वारपालों से आज्ञा प्राप्त कर पञ्चांग देवताओं के साथ मण्डप के पश्चिमद्वार पर जाकर भूमिपूजन करके तथा सूर्यार्घ्य देकर मण्डप की प्रदक्षिणा कर शंखघोष के साथ यजमान पश्चिमद्वार से और उसकी धर्मपत्नी दक्षिणद्वार से मण्डप में प्रवेश करे। मण्डप में प्रवेश करने के उपरान्त अग्न्यायतन की प्रदक्षिणा कर अग्निकोण में गोधूम गेहूँ के ऊपर कुम्भ का स्थापन करके निम्न मन्त्र का उच्चारण करें—

ॐ स्वस्ति न इन्द्रो वृद्धश्रवाः स्वस्ति नः पूषा विश्ववेदाः।
स्वस्ति नस्तार्क्ष्यो अरिष्टनेमिः स्वस्ति नो बृहस्पतिर्दधातु॥

आचार्य निम्न वाक्य एवं मन्त्रों का उच्चारण यजमान से करावें—

ॐ देवा आयान्तु यातुधाना अपयान्तु विष्णो देवयजनं रक्षस्व।

आचार्य निम्न दो मन्त्रों का उच्चारण करें—

ॐ इयं वेदिः परोअन्तः पृथिव्याअयं यज्ञो भुवनस्य नाभिः। अयर्ठ० सोमो वृष्णो अश्वस्य रेतो ब्रह्मायं वाचः परमं व्योम॥ १॥ ॐ सुभूः स्वयंभूः प्रथमोन्तर्महत्यर्णवे। दधे हगर्भमृत्वियं यतो जातः प्रजापतिः॥ २॥

यजमान के बायें हाथ में आचार्य पीली सरसों और धान का लावा देकर निम्न मन्त्रों का उच्चारण करें—

ॐ रक्षोहणं वलगहनं वैष्णवीमिदमहं तं वलगमुत्किरामि यं मे निष्ट्यो यममात्यो निचखानेदमहं तं वलगमुत्किरामि यं मे समानो यमसमानो निचखानेदमहं तं वलगमुत्किरामि यं मे सबन्धुर्यमसबन्धुर्निचखानेदमहं तं वलगमुत्किरामि यं मे सजातो यमसजातो निचखानोत्त्कृत्यां किरामि॥ १॥

रक्षोहणो वो वलगहनः प्रोक्षामि वैष्णवान्रक्षोहणो वो वलगहनो-ऽवनयामि वैष्णवान्रक्षोहणो वो वलगहनोऽवस्तृणामि वैष्णवान्रक्षोहणौ वां वलगहना ऽउपदधामि वैष्णवी रक्षोहणौ वां वलगहनौ पर्यूहामि वैष्णवी वैष्णवमसि वैष्णवाः स्थ॥ २॥

रक्षसां भागोऽसि निरस्तर्ठ० रक्ष ऽइदमहर्ठ० रक्षोऽभितिष्ठामीद-महर्ठ० रक्षोऽवबाध इदमहर्ठ० रक्षोऽधमं तमो नयामि। घृतेन द्यावापृथिवी प्रोर्णुवाथां वायो वे स्तोकानामग्निराज्यस्य वेतु स्वाहा स्वाहाकृते ऽऊर्ध्वनभसं मारुतं गच्छतम्॥ ३॥

रक्षोहा विश्वचर्षणिरभि योनिमयोहते। द्रोणे सधस्थमासदत्॥ ४॥

दिग्रक्षणम्

आचार्य और ब्राह्मण निम्न पौराणिक श्लोकों का उच्चारण करते हुए यजमान से सभी दिशाओं में सरसों को छिड़कवायें—

यदत्र संस्थितं भूतं स्थानमाश्रित्य सर्वदा।
स्थानं त्यक्त्वा तु तत्सर्वं यत्रस्थं तत्र गच्छतु॥ १॥

अपसर्पन्तु ते भूता ये भूता भूमिसंस्थिताः।
ये भूता विघ्नकर्तारस्ते नश्यन्तु शिवाज्ञया॥ २॥

अपक्रामन्तु भूतानि पिशाचाः सर्वतोदिशम्।
सर्वेषामविरोधेन प्रतिष्ठाकर्म समारभे॥ ३॥

भूतप्रेतपिशाचाद्या अपक्रामन्तु राक्षसाः।
स्थानादस्माद् व्रजन्त्वन्यत् स्वीकरोमि भुवम् त्विमाम्॥ ४॥
भूतानि राक्षसा वाऽपि यत्र तिष्ठन्ति केचन।
ते सर्वेऽप्यपगच्छन्तु प्रतिष्ठां च करोम्यहम्॥ ५॥

पञ्चगव्यकरणम्

आचार्य निम्न मंत्रों का उच्चारण करते हुए पंचगव्य बनावें—

ताम्रपात्रे—ॐ भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि। धियो यो नः प्रचोदयात्॥ इति गोमूत्रम्॥ ॐ मा नस्तोके तनये मा न आयुषि मा नो गोषु मा नो अश्वेषु रीरिषः। मा नो वीरान् रुद्र भामिनो वधीर्हविष्मन्तः सदमित्वा हवामहे॥ इति गोमयम्॥ ॐ पयः पृथिव्यां पय ओषधीषु पयो दिव्यन्तरिक्षे पयो धाः। पयस्वतीः प्रदिशः सन्तु मह्यम्॥ इति पयः॥ ॐ दधिक्राव्णो अकारिषं जिष्णोरश्वस्य वाजिनः। सुरभि नो मुखा करत्प्र ण आयूठंषि तारिषत्॥ इति दधि॥ ॐ तेजोसि शुक्रमस्यमृतमसिधामनामासि। प्रियंदेवानामनाधृष्टन्देवयजन्मसि॥ इति आज्यम्॥ ॐ देवस्य त्वा सवितुः प्रसवेश्विनोर्बाहुभ्यां पूष्णो हस्ताभ्याम्॥ इति कुशोदकम्॥ इति आलोडनं तेनैवाभिमन्त्रणञ्च॥ एवं पञ्चगव्य सम्पाद्य।

मण्डपप्रोक्षणम्

आचार्य निम्न मंत्रों का उच्चारण करते हुए प्रतिष्ठा मण्डप का प्रोक्षण यजमान से करावें—

ॐ देवस्य त्वा सवितुः प्रसवेश्विनोर्बाहुभ्यां पूष्णो हस्ताभ्याम्॥ १॥
ॐ आपो हि ष्ठा मयोभुवस्ता न ऊर्जे दधातन। महे रणाय चक्षसे॥ २॥
ॐ यो वः शिवतमोरसस्तस्य भाजयतेह नः। उशतीरिव मातरः॥ ३॥
ॐ तस्मा अरं गमाम वो यस्य क्षयाय जिन्वथ। आपो जनयथा च नः॥ ४॥

मण्डपाङ्गवास्तुपूजनम्

यजमान अपनी धर्मपत्नी के साथ गुरु मण्डप के नैर्ऋत्यकोण में हस्त मात्र की वेदी के समीप आकर अपने आसन पर पूर्वाभिमुख बैठकर आचमन एवं प्राणायाम कर निम्न संकल्प करें—

देशकालौ सङ्कीर्त्य, अस्मिन् कर्मणि कुण्डमण्डपादिषु हीनाधिकाङ्गतादिवास्तुदोषसूचितसर्वारिष्टनिवर्हणार्थं धूमावतीप्रतिष्ठाङ्गभूतं मण्डपाङ्गवास्तुपूजनं करिष्ये।

पुनः मन्त्रावृत्त्या आग्नेयादितश्चतुरः शङ्कून् संरोप्य ततः—

ॐ विशन्तु भूतले नागा लोकपालाश्च सर्वतः।
मण्डपेऽत्रावतिष्ठन्तु आयुर्बलकराः सदा॥

आचार्य निम्न श्लोकों का क्रम से उच्चारण करते हुए यजमान से अपने पार्श्व में माषभक्तिबलि प्रदान करें।

ॐ अग्निभ्योप्यथ सर्पेभ्यो ये चान्ये तान् समाश्रिताः।
बलिं तेभ्यः प्रयच्छामि पुण्यमोदनमुत्तमम्॥ १॥
ॐ नैर्ऋत्याधिपतिश्चैव नैर्ऋत्यां तान् समाश्रिताः।
बलिं तेभ्यः प्रयच्छामि पुण्यमोदनमुत्तमम्॥ २॥
ॐ वायव्याधिपतिश्चैव वायव्यां ये च राक्षसाः।
बलिं तेभ्यः प्रयच्छामि पुण्यमोदनमुत्तमम्॥ ३॥
ॐ रुद्रेभ्यश्चैव सर्पेभ्यो ये चानन्ये तान् समाश्रिताः।
बलिं तेभ्यः प्रयच्छामि पुण्यमोदनमुत्तमम्॥ ४॥

तदुपरान्त वेदी के ऊपर बिछे हुए वस्त्र पर स्वर्ण की शलाका से पूर्व अग्रभाग वाली दो–दो अंगुल की नौ रेखा का निर्माण आचार्य करके निम्न नाम मन्त्रों से उनका पूजन यजमान से करावें—**१. ॐ लक्ष्म्यै नमः, २. ॐ**

यशोवत्यै नमः, ३. ॐ कान्तायै नमः, ४. ॐ सुप्रियायै नमः, ५. ॐ विमलायै नमः, ६. ॐ शिवायै नमः, ७. ॐ सुभगायै नमः, ८. ॐ सुमत्यै नमः, ९. ॐ इडायै नमः।

तत उदगग्राः प्राक्संस्था नवरेखाकार्याः—**१. ॐ धान्यायै नमः, २. ॐ प्राणायै नमः, ३. ॐ विशालायै नमः, ४. ॐ स्थिरायै नमः, ५. ॐ भद्रायै नमः, ६. ॐ जयायै नमः, ७. ॐ निशायै नमः, ८. ॐ विरजायै नमः, ९. ॐ विभवायै नमः।**

'**ॐ रेखादिभ्यो नमः**' इति पंचोपचारैः पूजयेदिति प्रतिष्ठासरणौ विशेषः। मध्य के चार पदों को एक-एक करके उनके कोणों में रेखा देकर वर्णित किये गये रंगों से पद भरें। फिर उनके देवताओं का आवाहन निम्न क्रम से करें।

वास्तुस्थापनमन्त्राः

आचार्य निम्न मन्त्रों का उच्चारण करते हुए वास्तुदेवता की स्थापना यजमान से करावें—

ॐ तमीशानं जगतस्तस्थषुस्पतिं धियं जिन्वमवसे हूमहे वयम्। पूषा नो यथा वेदसामसद्वृधेरक्षिता पायुरब्धः स्वस्तये॥ ॐ शिखिने नमः, शिखिनमावाहयामि स्थापयामि।। १॥

ॐ शन्नो वातः पवतार्ठ० शं नस्तपतु सूर्यः। शं नः कनिक्रद्देवः पर्जन्यो अभिवर्षतु॥ ॐ पर्जन्याय नमः, पर्जन्यमावाहयामि स्थापयामि॥ २॥

ॐ मर्माणि ते वर्मणा छादयामि सोमस्त्वा राजा मृतेनानुवस्ताम्। उरोर्वरीयो वरुणस्ते कृणोतु जयन्तं त्वानु देवा मदन्तु॥ ॐ जयन्ताय नमः, जयन्तमावाहयामि स्थापयामि॥ ३॥

ॐ सजोषा इन्द्र सगणो मरुद्भिः सोमं पिब वृत्रहा शूर विद्वान्। जहि शत्रूँर्ठ० २॥ रप मृधो नुदस्वाथाभयं कृणुहि विश्वतो नः॥ ॐ कुलिशायुधाय नमः, कुलशायुधमावाहयामि स्थापयामि॥ ४॥

ॐ बण्महाँ२ ॥ असि सूर्य बडादित्य महाँ२ ॥ असि। महस्ते सतो महिमा पनस्यतेऽद्धा देव महाँ२॥ असि॥ ॐ सूर्याय नमः, सूर्यमावाहयामि स्थापयामि॥ ५॥

ॐ व्रतेन दीक्षामाप्नोति दीक्षयाप्नोति दक्षिणाम्। दक्षिणा श्रद्धामाप्नोति श्रद्धया सत्यमाप्यते॥ ॐ सत्याय नमः, सत्यमावाहयामि स्थापयामि॥ ६॥

ॐ आ त्वाहार्षमन्तरभूर्ध्रुवस्तिष्ठाविचाचलिः। विशस्त्वा सर्वा वाञ्छन्तु मा त्वद्राष्ट्रमधिभ्रशत्॥ ॐ भृशाय नमः, भृशमावाहयामि स्थापयामि॥ ७॥

ॐ या वां कशा मधुमत्यश्विना सूनृतावती। तया यज्ञं मिमिक्षतम्॥ ॐ आकाशाय नमः, आकाशमावाहयामि स्थापयामि॥ ८॥

ॐ वायो ये ते सहस्रिणो रथासस्तेभिरागहि। नियुत्वान्‌सोमपीतये॥ ॐ वायवे नमः, वायुमावाहयामि स्थापयामि॥ ९॥

ॐ पूषन तव व्रते वयं न रिष्येम कदाचन। स्तोतारस्त इह स्मसि॥ ॐ पूष्णे नमः, पूषणमावाहयामि स्थापयामि॥ १०॥

ॐ तत्सूर्यस्य देवत्वं तन्महित्वं मध्या कर्तोर्विततठं० संजभार। यदेदयुक्त हरितः सधस्थादाद्रात्री वासस्तनुते सिमस्मै॥ ॐ वितथाय नमः, वितथमावाहयामि स्थापयामि॥ ११॥

ॐ अक्षन्नमीमदन्त ह्यव प्रिया अधूषत। अस्तोषत स्वभा नवो विप्रा नविष्ठया मती योजान्विन्द्रते हरी॥ ॐ गृहक्षताय नमः, गृहक्षतमावाहयामि स्थापयामि॥ १२॥

ॐ यमाय त्वाङ्गिरस्वते पितृमते स्वाहा। स्वाहा घर्माय स्वाहा घर्मः पित्र॥ ॐ यमाय नमः, यममावाहयामि स्थापयामि॥ १३॥

ॐ गन्धर्वस्त्वा विश्वावसुः परिदधातु विश्वस्यारिष्ट्यै यजमानस्य परिधिरस्यग्निरिड ईडितः। इन्द्रस्य बाहुरसि दक्षिणो विश्वस्यारिष्ट्यै

यजमानस्य परिधिरस्यग्निरिड ईडित:। मित्रावरुणौ त्वोत्तरत: परिधतां ध्रुवेण धर्मणा विश्वस्यारिष्ट्यै यजमानस्य परिधिरस्यग्निरिड ईडित:॥ ॐ गन्धर्वाय नम:, गन्धर्वमावाहयामि स्थापयामि॥ १४॥

ॐ सौरी बलाका शार्ग: सृजय: शयाण्डकस्ते मैत्रा: सरस्वत्यै शारि: पुरुषवाक् श्वाविद्भौमी शार्दूलो वृक: पृदाकुस्ते मन्यवे सरस्वते शुक: पुरुषवाक्॥ ॐ भृङ्गराजाय नम:, भृङ्गराजमावाहयामि स्थापयामि॥ १५॥

ॐ मृगो न भीम: कुचरो गिरिष्ठा: परावतआजगथा परस्या:। सृकर्ठ० सर्ठ० शाय पविमिन्द्र तिग्मं वि शत्रून् ताढि वि मृधो नुदस्व॥ ॐ मृगाय नम:, मृगमावाहयामि स्थापयामि॥ १६॥

ॐ उशन्तस्त्वा निधीमह्युशन्त: समिधीमहि। उशन्नुशत आवह पितृन्हविषे अत्तवे॥ ॐ पितृगणेभ्यो नम:, पितृगणान् आवाहयामि स्थापयामि॥ १७॥

ॐ द्वे विरूपे चरत: स्वर्थे अन्यान्या वत्समुपधापयेते। हरिरन्यस्यां भवति स्वधावाञ्छुक्रो अन्यस्यां ददृशे सुवर्चा:॥ ॐ दौवारिकाय नम:, दौवारिकमावाहयामि स्थापयामि॥ १८॥

ॐ नीलग्रीवा: शितिकण्ठा दिवर्ठ० रुद्रा उपश्रिता:। तेषार्ठ० सहस्त्रयोजनेव धन्वानि तन्नमसि॥ ॐ सुग्रीवाय नम:, सुग्रीवमावाहयामि स्थापयामि॥ १९॥

ॐ नमो गणेभ्यो गणपतिभ्यश्च वो नमो नमो व्रातेभ्यो व्रातपति-भ्यश्च वो नमो नमो गृत्सेभ्यो गृत्सपतिभ्यश्च वो नमो नमो विरूपेभ्यो विश्वरूपेभ्यश्च वो नम:॥ ॐ पुष्पदन्ताय नम:, पुष्पदन्तमावाहयामि स्थापयामि॥ २०॥

ॐ इमं मे वरुण श्रुधी हवमद्या च मृडय। त्वामवस्युराचके ॥ ॐ वरुणाय नम:, वरुणमावाहयामि स्थापयामि॥ २१॥

ॐ यमश्विना नमुचेरासुरादधि सरस्वत्यसुनोदिन्द्रियाय। इमं तर्ठ० शुक्रं मधुमन्तमिन्दुर्ठ० सोमर्ठ० राजानमिह भक्षयामि॥ ॐ असुराय नमः, असुरमावाहयामि स्थापयामि॥ २२॥

ॐ शं नो देवीरभिष्टय आपो भवन्तु पीतये। शं योरभिस्त्रवन्तु नः॥ ॐ शेषाय नमः शेषमावाहयामि स्थापयामि॥ २३॥

ॐ एतत्ते रुद्राऽवसं तेन परो मूजवतोऽतीहि। अवततधन्वा पिनाकावसः कृत्तिवासा अहिर्ठ० सन्नः शिवोतीहि॥ ॐ पापाय नमः, पापमावाहयामि स्थापयामि॥ २४॥

ॐ द्रापे अन्धसस्पते दरिद्रं नीललोहित। आसां प्रजानामेषां पशूनां मा भेर्मा रोङ्मो च नः किञ्चनाममत्॥ ॐ रोगाय नमः, रोगमावाहयामि स्थापयामि॥ २५॥

ॐ अहिरिव भोगैः पर्येति बाहुं ज्याया॥ हेतिं परिबाधमानः। हस्तघ्नो विश्वा वयुनानि विद्वान्पुमान्पुमार्ठ० सं परिपातु विश्वतः॥ ॐ अहये नमः, अहयेमावाहयामि स्थापयामि॥ २६॥

ॐ अवतत्य धनुष्ट्वर्ठ० सहस्राक्ष शतेषुधे। निशीर्यशल्यानां मुखा शिवो नः सुमना भव॥ ॐ मुख्याय नमः, मुख्यमावाहयामि स्थापयामि॥ २७॥

ॐ इमा रुद्राय तवसे कपर्दिने क्षयद्वीराय प्रभरामहे मतीः। यथा शमसद्विपदे चतुष्पदे विश्वं पुष्टं ग्रामे अस्मिन्ननातुरम्॥ ॐ भल्लाटाय नमः भल्लाटमावाहयामि स्थापयामि॥ २८॥

ॐ सोमो धेनुर्ठ० सोमो अर्वन्तमाशुर्ठ० सोमो वीरं कर्मण्यं ददाति। सादन्यं विदथ्यर्ठ० सभेयं पितृश्रवणं यो ददाशदस्मै॥ ॐ सोमाय नमः, सोममावाहयामि स्थापयामि॥ २९॥

ॐ नमोऽस्तु सर्पेभ्यो ये के च पृथिवीमनु। ये अन्तरिक्षे ये दिवि तेभ्यः सर्पेभ्यो नमः॥ ॐ सर्पेभ्यो नमः, सर्पान्मावाहयामि स्थापयामि॥ ३०॥

ॐ अदितिर्द्यौरदितिरन्तरिक्षमदितिर्माता स पिता स पुत्रः। विश्वे देवा अदितिः पञ्चजना अदितिर्जातमदितिर्जनित्वम्॥ ॐ अदित्यै नमः, अदितिमावाहयामि स्थापयामि॥ ३१॥

ॐ इड एह्यदित एहि काम्या एत। मयि वः कामधरणं भूयात्॥ ॐ दित्यै नमः, दितिमावाहयामि स्थापयामि॥ ३२॥

ॐ आपो हि ष्ठा मयोभुवस्ता न ऊर्जे दधातन। महे रणाय चक्षसे॥ ॐ अद्भ्यो नमः, अपः आवाहयामि स्थापयामि ॥ ३३॥

ॐ हस्त आधाय सविता बिभ्रदभ्रिꣳ हिरण्ययीम्। अग्नेर्ज्योतिर्निचाय्य पृथिव्या अध्याभरदानुष्टुभेन छन्दसाङ्गिरस्वत्॥ ॐ सावित्राय नमः, सावित्रमावाहयामि स्थापयामि॥ ३४॥

ॐ अषाढं युत्सु पृतनासु पप्रिꣳ स्वर्षामप्सां वृजनस्य गोपाम्। भरेषुजाꣳ सुक्षितिꣳ सुश्रवसं जयन्तं त्वामनुमदेम सोम॥ ॐ जयाय नमः, जयमावाहयामि स्थापयामि॥ ३५॥

ॐ नमस्ते रुद्र मन्यव उतो त इषवे नमः। बाहुभ्यामुत ते नमः॥ ॐ रुद्राय नमः, रुद्रमावाहयामि स्थापयामि॥ ३६॥

ॐ यदद्य सूर उदितेऽनागा मित्रो अर्यमा। सुवाति सविता भगः॥ ॐ अर्यम्णे नमः, अर्यमणमावाहयामि स्थापयामि॥ ३७॥

ॐ विश्वानि देव सवितर्दुरितानि परासुव। यद् भद्रं तन्न आसुव॥ ॐ सवित्रे नमः, सवितारमावाहयामि स्थापयामि॥ ३८॥

ॐ विवस्वन्नादित्यैष ते सोमपीथस्तस्मिनमत्स्व। श्रदस्मै नरो वचसे दधातन यदाशीर्दा दम्पती वाममश्नुतः। पुमान्पुत्रो जायते विन्दते वस्वधा विश्वाहारप एधते गृहे॥ ॐ विवस्वते नमः, विवस्वतमावाहयामि स्थापयामि॥ ३९॥

ॐ सबोधि सूरिर्मघवा वसुपते वसुदावन्। युयोध्यस्मद्द्वेषाꣳसि विश्वकर्मणे स्वाहा॥ ॐ विबुधाधिपाय नमः, विबुधाधिमावाहयामि स्थापयामि॥ ४०॥

ॐ मित्रस्य चर्षणीधृतो वो देवस्य सानसि। द्युम्नं चित्रश्रवस्तमम्॥ ॐ मित्राय नमः, मित्रमावाहयामि स्थापयामि॥ ४१॥

ॐ नाशयित्री बलासस्यार्शस उपचितामसि। अथो शतस्य यक्ष्माणां पाकारोरसि नाशनी॥ ॐ राजयक्ष्मणे नमः, राजयक्ष्मण-मावाहयामि स्थापयामि॥ ४२॥

ॐ स्योना पृथिवी नो भवानृक्षरा निवेशनी। यच्छा नः शर्म सप्रथाः॥ ॐ पृथ्वीधराय नमः, पृथ्वीधरमावाहयामि स्थापयामि॥ ४३॥

ॐ आ ते वत्सो मनो यमत्परमाच्चित्सधस्थात्। अग्ने त्वां कामया गिरा॥ ॐ आपवत्साय नमः, आपवत्समावाहयामि स्थापयामि॥ ४४॥

ॐ ब्रह्म जज्ञानं प्रथमं पुरस्ताद्वि सीमतः सुरुचो वेन आवः। स बुध्न्याउपमा अस्य विष्ठाः सतश्च योनिमसतश्च विवः॥ ॐ ब्रह्मणे नमः, ब्रह्माणमावाहयामि स्थापयामि॥ ४५॥

ॐ यं ते देवी निर्ऋतिराबबन्ध पाशं ग्रीवास्वविचृत्यम्। तं ते विष्याम्यायुषो न मध्यादथैतं पितुमद्धि प्रसूतः॥ नमो भूत्यै येदं चकार॥ ॐ चरक्यै नमः, चरकीमावाहयामि स्थापयामि॥ ४६॥

ॐ अक्षराजाय कितवं कृतायादिनवदर्शं त्रेतायै कल्पिनं द्वापरायाधि-कल्पिनमास्कन्दाय सभास्थाणुं मृत्यवे गोव्यच्छमन्तकाय गोघातं क्षुधे यो गां विकृन्तन्तं भिक्षमाण उपतिष्ठति दुष्कृताय चरकाचार्यं पाप्मने सैलगम्॥ ॐ विदार्यै नमः, विदारीमावाहयामि स्थापयामि॥ ४७॥

ॐ इन्द्रस्य क्रोडोऽदित्यै पाजस्य दिशां जत्रवोऽदित्यै भसज्जी-मूतान्हृदयौपशेनान्तरिक्षं पुरीतता नभ उदर्येण चक्रवाकौ मतस्नाभ्यां दिवं वृकाभ्यां गिरीन्प्लाशिभिरुपलान्प्लीह्ना वल्मीकान्क्लोमभि-र्ग्लौभिर्गुल्मान्हिराभिः स्रवन्ती ह्रदान्कुक्षिभ्यार्ठ० समुद्रमुदरेण वैश्वानरं भस्मना॥ ॐ पूतनायै नमः, पूतनामावाहयामि स्थापयामि॥ ४८॥

ॐ यस्यास्ते घोरऽ आसन्जुहोम्येषां बन्धानामवसर्जनाय। यां त्वा जनो भूमिरिति प्रमन्दते निर्ऋतिं त्वाहं परिवेद विश्वतः॥ ॐ पापराक्षस्यै नमः, पापराक्षसीमावाहयामि स्थापयामि॥ ४९॥

ॐ यदक्रन्दः प्रथमं जायमान उद्यन्त्समुद्रादुत वा पुरीषात्। श्येनस्य पक्षा हरिणस्य बाहू उपस्तुत्यं महि जातं ते अर्वन्॥ ॐ स्कन्दाय नमः, स्कन्दमावाहयामि स्थापयामि॥ ५०॥

ॐ यदद्य सूर उदितेऽनागा मित्रो अर्यमा। सुवाति सविता भगः॥ ॐ अर्यम्णे नमः, अर्यमणमावाहयामि स्थापयामि॥ ५१॥

ॐ हिङ्काराय स्वाहा हिङ्कृताय स्वाहा क्रन्दते स्वाहाऽवक्रन्दाय स्वाहा प्रोथते स्वाहा प्रप्रोथाय स्वाहा गन्धाय स्वाहा घ्राताय स्वाहा निविष्टाय स्वाहोपविष्टाय स्वाहा संदिताय स्वाहा वल्गते स्वाहासीनाय स्वाहा शयानाय स्वाहा स्वपते स्वाहा जाग्रते स्वाहा कूजते स्वाहा प्रबुद्धाय स्वाहा विजृम्भमाणाय स्वाहा विचृत्ताय स्वाहा सर्ठ० हानाय स्वाहोपस्थिताय स्वाहायनाय स्वाहा प्रायणाय स्वाहा॥ ॐ जृम्भकाय नमः, जृम्भकमावाहयामि स्थापयामि॥ ५२॥

ॐ का स्विदासीत्पूर्वचित्तिः किर्ठ० स्विदासीद् बृहद्वयः। का स्विदासीत्पिलिप्पिला का स्विदासीत्पिशङ्गिला॥ ॐ पिलिपिच्छाय नमः, पिलिपिच्छमावाहयामि स्थापयामि॥ ५३॥

ॐ त्रातारमिन्द्रमवितारमिन्द्रर्ठ० हवे हवे सुहवर्ठ० शूरमिन्द्रम्। ह्वयामि शक्रं पुरुहूतमिन्द्रर्ठ० स्वस्ति नो मघवा धात्विन्द्रः॥ ॐ इन्द्राय नमः, इन्द्रमावाहयामि स्थापयामि॥ ५४॥

ॐ त्वन्नो अग्ने वरुणस्य विद्वान्देवस्य हेडो अवयासिसीष्ठाः। यजिष्ठो वह्नितमः शोशुचानो विश्वा द्वेषार्ठ०सि प्रमुमुग्ध्यस्मत्॥ ॐ अग्नये नमः, अग्निमावाहयामि स्थापयामि॥ ५५॥

ॐ यमाय त्वाङ्गिरस्वते पितृमते स्वाहा। स्वाहा घर्माय स्वाहा घर्मः पित्रे॥ ॐ यमाय नमः, यममावाहयामि स्थापयामि॥ ५६॥

ॐ असुन्वन्तमयजमानमिच्छ स्तेनस्येत्यामन्विहि तस्करस्य। अन्यमस्मदिच्छ सा त इत्या नमो देवि निर्ऋते तुभ्यमस्तु॥ ॐ निर्ऋतये नमः, निर्ऋतिमावाहयामि स्थापयामि॥ ५७॥

ॐ तत्त्वा यामि ब्रह्मणा वन्दमानस्तदाशास्ते यजमानो हविर्भिः। अहेडमानो वरुणेह बोध्युरुशꣳस मा न आयुः प्रमोषीः॥ ॐ वरुणाय नमः, वरुणमावाहयामि स्थापयामि॥ ५८॥

ॐ आ नो नियुद्भिः शतिनीभिरध्वरꣳ सहस्रिणीभिरुपयाहि यज्ञम्। वायोऽ अस्मिन्सवने मादयस्व यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः॥ ॐ वायवे नमः, वायुमावाहयामि स्थापयामि॥ ५९॥

ॐ वयꣳसोम व्रते तव मनस्तनूषु बिभ्रतः। प्रजावन्तः सचेमहि॥ ॐ सोमाय नमः, सोममावाहयामि स्थापयामि॥ ६०॥

ॐ तमीशानं जगतस्तस्थुषस्पतिं धियं जिन्वमवसे हूमहे वयम्। पूषा नो यथा वेदसामसद्वृधे रक्षिता पायुरदब्धः स्वस्तये॥ ॐ ईशानाय नमः, ईशानमावाहयामि स्थापयामि॥ ६१॥

ॐ अस्मे रुद्रा मेहना पर्वतासो वृत्रहत्ये भरहूतौ सजोषाः। यः शꣳसते स्तुवते धायि पज्र इन्द्रज्येष्ठा अस्माँ२॥ अवन्तु देवाः॥ ॐ ब्रह्मणे नमः, ब्रह्माणमावाहयामि स्थापयामि॥ ६२॥

ॐ स्योना पृथिवि नो भवानृक्षरा निवेशनि। यच्छा नः शर्म सप्रथाः॥ ॐ अनन्ताय नमः, अनन्तमावाहयामि स्थापयामि॥ ६३॥

आचार्य निम्न वैदिक मन्त्र और पौराणिक श्लोक का उच्चारण करके प्राणप्रतिष्ठा करावें—ॐ मनो जूतिर्जुषतामाज्यस्य बृहस्पतिर्यज्ञमिमं तनोत्वरिष्टं यज्ञꣳ समिमं दधातु। विश्वेदेवास इह मादयन्तामों ३ँप्रतिष्ठ॥

अस्यै प्राणाः प्रतिष्ठन्तु अस्यै प्राणाः क्षरन्तु च।
अस्यै देवत्वमर्चायै मामहेति च कश्चन॥

अग्न्युत्तारणम्

ताम्रकलश का पूर्वोक्त स्थापनविधि द्वारा स्थापन और पूजन यजमान से करवाने के उपरान्त उस कलश के ऊपर सुवर्ण की वास्तुप्रतिमा का अग्न्युत्तारण निम्न संकल्प यजमान से करवाकर आचार्य करावें—

देशकालौ सङ्कीर्त्य, अमुकगोत्रोऽमुकशर्माऽहं (वर्माऽहम्, गुप्तोऽहम्, दासोऽहम्) अस्यां वास्तुमूर्तौ अवघातादिदोषपरिहारार्थमग्न्युत्तारणं देवतासान्निध्यार्थं च प्राणप्रतिष्ठा करिष्ये।

वास्तुदेवता की मूर्ति को किसी शुद्ध पात्र में आचार्य रखकर घृत से उनका अंजन कर उस मूर्ति के ऊपर निरन्तर पंचामृत की धारा निम्न मन्त्रों का उच्चारण करके यजमान से प्रदान करावें—

ॐ समुद्रस्य त्त्वावकयाग्ने परिव्ययामसि। पावको ऽअस्मब्भ्यर्ठ० शिवो भव॥ १॥ हिमस्य त्त्वा जरायुणाग्ने परिव्ययामसि। पावको ऽअस्मब्भ्यर्ठ० शिवो भव॥ २॥ उप ज्मन्नुप वेतसेऽवतर नदीष्वा। अग्ने पित्तमपामसि मण्डूकि ताभिरागहि। सेमं नो यज्ञं पावकवर्णर्ठ० शिवं कृधि॥ ३॥ अपामिदं न्ययनर्ठ० समुद्रस्य निवेशनम्। अन्याँस्ते ऽअस्मत्त-पन्तु हेतयः पावको अस्मब्भ्यर्ठ० शिवो भव ॥ ४॥ अग्ने पावक रोचिषा मन्द्रया देव जिह्वया। आ देवान्वक्षि यक्षि च ॥ ५॥ स नः पावक दीदिवोऽग्ने देवाँ२॥ इहावह उप यज्ञर्ठ० हविश्च नः॥ ६॥ पावकया यश्चितयन्त्या कृपा क्षामन् रुरुच ऽउषसो न भानुना। तूर्वन्न यामन्नेतशस्य नू रण आ यो घृणे न ततृषाणो ऽअजरः॥ ७॥ नमस्ते हरसे शोचिषे नमस्ते ऽअस्त्वर्चिषे। अन्याँस्ते ऽअस्मत्तपन्तु हेतयः पावको अस्मब्भ्यर्ठ० शिवो भव॥ ८॥ नृषदे वेडप्सुषदे व्वेड् वर्हिषदे वेड्वनसदे वेट् स्वर्विदेवेट्॥ ९॥ ये देवा देवानां यज्ञिया यज्ञियानार्ठ० संवत्सरीणमु पभागमासते। अहुतादो हविषो यज्ञे ऽअस्मिन्त्स्वयं पिबन्तु मधुनो घृतस्य॥ १०॥ ये देवा देवेष्वधि देवत्त्वमायन्ये ब्ब्रह्मणः पुर ऽएतारो

ऽअस्य। येब्भ्यो न ऋते पवते धाम किञ्चन न ते दिवो न पृथिव्या ऽअधि स्नुषु॥ ११॥ प्प्राणदा ऽअपानदा व्यानदा वर्चोदा वरिवोदाः। अन्याँस्ते अस्मत्तपन्तु हेतयः पावको अस्मभ्यर्ठ० शिवो भव॥ १२॥

आचार्य वास्तुप्रतिमा को यजमान के बाएँ हाथ में रखवाकर उसके दायें हाथ से प्रतिमा का आच्छादन करवावें। तदुपरान्त निम्न प्राणसंचार मन्त्रों का उच्चारण कर प्राणप्रतिष्ठा करावें—**ॐ आँ ह्रीं क्रौं यँ रँ लँ वँ शँ षँ सँ हँ क्षँ हँ सः सोऽहं अस्याः वास्तुमूर्तेः प्राणा इह प्राणाः। ॐ आँ ह्रीं क्रौं यँ रँ लँ वँ शँ षँ सँ हँ क्षँ हँ सः सोऽहं अस्याः वास्तुमूर्तेः जीव इह स्थितः। ॐ आँ ह्रीं क्रौं यँ रँ लँ वँ शँ षँ सँ हँ क्षँ हँ सः सोऽहं अस्याः वास्तुमूर्तेः वाङ्मन-स्त्वक्चक्षुःश्रोत्र-जिह्वाघ्राणपाणिपायूपस्थानि इहैवागत्य सुखं चिरं तिष्ठन्तु स्वाहा।**

आचार्य प्राणप्रतिष्ठा के लिए—**ॐ मनो जूतिर्जुषतामाज्यस्य बृहस्पति-र्यज्ञमिमं तनोत्वरिष्टं यज्ञर्ठ० समिमं दधातु। विश्वेदेवास इह मादयन्तामों३ँप्रतिष्ठ॥** मंत्र और निम्न पौराणिक श्लोक का उच्चारण करें-

अस्यै प्राणाः प्रतिष्ठन्तु अस्यै प्राणाः क्षरन्तु च।
अस्यै देवत्वमर्चायै मामहेति च कश्चन॥

वास्तुदेवता की सुवर्ण प्रतिमा को यजमान से कलश के ऊपर स्थापित करवाके आचार्य निम्न क्रमानुसार यजमान से पूजन करावें—

आवाहनम्

ॐ वास्तोष्पते प्रतिजानीह्यस्मान्स्वावेशो अनमी वो भवा नः। यत्वेमहे प्रति तन्नो जुषस्व शन्नो भव द्विपदे शं चतुष्पदे॥

समस्तप्रत्यूहसमुच्चयस्य विनाशकाः श्रीप्रदवास्तुदेवाः।
आवाहनं वो वितनोमि भक्त्या शिख्यादिका भव्यकरा भवन्तु॥
ॐ वास्तुदेवतायै नमः, वास्तुमावाहयामि स्थापयामि।

आसनम्

चित्रप्रभाभासुरमच्छशोभं मयार्पितं शोभितमासनं च।
शिख्यादिका भव्यकरा भजन्तु भवन्तु मेऽभीष्टकराः सहाङ्गैः॥
ॐ वास्तुदेवतायै नमः, आसनं समर्पयामि।

पाद्यम्

कस्तुरिकासुरभिचन्दनयुक्तमेलाचम्पालवङ्गघनसारसुवासितं च।
पाद्यं ददामि जगदेकनिवासवास्तुदेवाः सदा सुखकराः प्रतिमानयन्तु॥
ॐ वास्तुदेवतायै नमः, पाद्यं समर्पयामि।

अर्घ्यम्

सौजन्यसौख्यजननीजननीजनानां येषां कृपैव वसुधा वसुधारिणी मे।
ते सर्वदेवगुणपूरितवास्तुदेवा अर्घं सुखेन विमलं मम धारयन्तु॥
ॐ वास्तुदेवतायै नमः, अर्घ्यं समर्पयामि।

आचमनीयम्

कङ्कोलपत्रहरिचन्दनपुष्पयुक्त मेलालवङ्गलवलीघनसारसारम्।
दत्तं सदैव हृदये कुरुणाशयेऽस्मिन् देवा भजन्तु शुभमाचनीयमम्भः॥
ॐ वास्तुदेवतायै नमः, आचमनीयं समर्पयामि।

स्नानम्

ॐ तस्माद्यज्ञात्सर्वहुतः संभृतं पृषदाज्यम्।
पशूंस्तांश्चक्रे वायव्यानारण्या ग्राम्याश्च ये॥
ॐ वास्तुदेवतायै नमः, स्नानं समर्पयामि।

पञ्चामृतस्नानम्

विमलगाङ्गजलेन युतं पयो घृतसितादधिसर्पिरूपान्वितम्।
प्रियतरं भवतां परिगृह्णत यदि कृपा भवतां मयि सेवके॥
ॐ वास्तुदेवतायै नमः, पञ्चामृतस्नानं समर्पयामि।

शुद्धोदकस्नानम्

जले समादाय विचित्र पुष्पाण्यच्छानि नव्यानि निपातितानि।
स्नानं विधेयं विवुधाः समन्तादागत्य युष्माभिरिहाङ्गणे मे॥
ॐ वास्तुदेवतायै नमः, शुद्धोदकस्नानं समर्पयामि।

वस्त्रम्

अनर्घ्यरत्नैरतिभासितानि चेतोहराण्यद्भूतचिन्तितानि।
शुभानि वस्त्राणि निवेदितानि गृह्णन्तु हार्देन च वास्तुदेवाः॥
ॐ वास्तुदेवतायै नमः, वस्त्रं समर्पयामि।

यज्ञोपवीतम्

कोशेयसूत्रविहितं विमलं सुचारुवेदोक्तरीतिविहितं परिपावनं च।
साङ्गा निवेदितमिदं लघुवास्तुदेवा यज्ञोपवीतमुररीक्रियतां प्रसन्नाः॥
ॐ वास्तुदेवतायै नमः, यज्ञोपवीतं समर्पयामि।

उपवस्त्रम्

त्रिविधतापविनाशविचक्षणाः परमभक्तियुतेन निवेदितम्।
सुरनुता उपवस्त्रमिदं नवं सुरभितं परिगृह्णत मेऽधुना॥
ॐ वास्तुदेवतायै नमः, उपवस्त्रं समर्पयामि।

गन्धम्

शिख्यादयो मलयजातसुगन्धराशिं सप्रेम गृह्णत सुशीतलम्छशोभम्।
सन्तापविस्ततिहरं परमं पवित्रं द्रागर्पितं मम मनोरथपूरकाः स्युः॥
ॐ वास्तुदेवतायै नमः, गन्धं समर्पयामि।

अक्षतान्

शिख्यादयः केसरकुंकुमाक्तान् भक्तया मया स्नेहसमर्पितांश्च।
गृह्णन्तु देवा द्रुतमक्षतान्मे सर्वान्तरायान् विनिवर्तयध्वम्॥
ॐ वास्तुदेवतायै नमः, अक्षतान् समर्पयामि।

पुष्पम्

बहुविधं परितो हि समाहृतं समुचितं मकरन्दसमन्वितम्।
विकसितं कुसुमं विनिवेदितं कुरुत मे सफलं नयनाञ्चनैः॥
ॐ वास्तुदेवतायै नमः, पुष्पं समर्पयामि।

रक्तसूत्रम्

सौभाग्यसौन्दर्यविवर्द्धनानि शोणश्रियाऽऽनन्दविवर्धनानि।
श्रीरक्तचूर्णानि मयाऽर्पितानि शिख्यादयोगृह्णत वास्तुदेवाः॥
ॐ वास्तुदेवतायै नमः, रक्तसूत्रं समर्पयामि।

धूपम्

लवङ्गपाटीरसुगन्धपूर्णं नरासुराणामपि सौख्यदं च।
लोकत्रये गन्धमयं मनोज्ञं गृह्णन्तु धूपं मम वास्तुदेवाः॥
ॐ वास्तुदेवतायै नमः, धूपं माघ्रापयामि।

दीपम्

सद्वर्तिको घोरतमोपहन्ता दीपो मया सत्वरमर्पितो वः।
प्रज्वालितो वह्निशिखासमेतः शिख्यादयो वेदविधानयुक्तः॥
ॐ वास्तुदेवतायै नमः, दीपं दर्शयामि।

नैवेद्यम्

सिद्धान्तकर्पूरविराजमानं सौरभ्यसान्द्रेण सुशोभमानम्।
नैवेद्यमेतस्सरसं पवित्रं स्वीकृत्य मामत्र कृतार्थयन्तु॥
ॐ वास्तुदेवतायै नमः, नैवेद्यं सम०। (नैवेद्यान्ते आचमनीयजलं सम०

ताम्बूलम् (एला लवंगसहितम्)

शिख्यादिकाः खलु समेत्य गृहं मदीयं भक्त्यार्पितं परमगन्धयुतं सुरम्यम
एलालवङ्गबहुलं क्रमुकादियुक्तं ताम्बूलकं भजत मंडपवास्तुदेवाः
ॐ वास्तुदेवतायै नमः, ताम्बूलं समर्पयामि।

दक्षिणा:

दैवासुरैर्नित्यमशेषकाले प्रगीयगानाः प्रभवः पुराणाः।
गृह्णन्तु सद्यः खलु दक्षिणां मे ध्यानेन भक्ते मयि वर्तितव्यम्॥
ॐ वास्तुदेवतायै नमः, दक्षिणां समर्पयामि।

आर्तिक्यम्

नीराजना सौख्यमयी सदैव गाढान्धकारानपि दूरकर्ती।
अशेषपापैः परिपूरितस्य शुद्धिं करोति प्रियमानवस्य॥
ॐ वास्तुदेवतायै नमः, आर्तिक्यं समर्पयामि।

प्रदक्षिणाम्

प्रदक्षिणाः सन्ति प्रदक्षिणास्तथा पदे-पदे दुखविनाशिका अपि।
जन्मान्तरस्यापि विनाशकारिकाः पापस्य याश्चित्तविवर्धितस्य॥
ॐ वास्तुदेवतायै नमः, प्रदक्षिणां समर्पयामि।

पुष्पाञ्जलिम्

शिख्यादिका मे खलु वास्तुदेवा गृह्णन्तु पुष्पांजलिमव शीघम्।
पीडाहरा भव्यकरा विशाला भवन्तु भूपालनतत्पराश्च॥
ॐ वास्तुदेवतायै नमः, पुष्पाञ्जलिं समर्पयामि।

प्रार्थना

जानामि नोऽर्चनविधिं परमं क्षमध्वं
लोकार्तिपुञ्जमतुलं क्षपयन्तु नित्यम्।
शिख्यादिकाः सुविमलाः सुखमाकिरन्तु
कुर्वन्तु दूरमनिशं दुरितान् समन्तात्॥

पायसबलिदानम्

आचार्य 'शिखने एष०' से 'अनन्ताय एष०' तक के तिरसठ वाक्यों का उच्चारण करते हुए यजमान से पायसबलि प्रदान करावें—

१. ॐ शिखिने एष पायस बलिर्न मम।
२. ॐ पर्जन्याय एष पायस बलिर्न मम।
३. ॐ जयन्ताय एष पायस बलिर्न मम।
४. ॐ कुलिशायुधाय एष पायस बलिर्न मम।
५. ॐ सूर्याय एष पायस बलिर्न मम।
६. ॐ सत्याय एष पायस बलिर्न मम।
७. ॐ भृशाय एष पायस बलिर्न मम।
८. ॐ आकाशाय एष पायस बलिर्न मम।
९. ॐ वायवे एष पायस बलिर्न मम।
१०. ॐ पूषणे एष पायस बलिर्न मम।
११. ॐ वितथाय एष पायस बलिर्न मम।
१२. ॐ गृहक्षताय एष पायस बलिर्न मम।
१३. ॐ यमाय एष पायस बलिर्न मम।
१४. ॐ गन्धर्वाय एष पायस बलिर्न मम।
१५. ॐ भृङ्गराजाय एष पायस बलिर्न मम।
१६. ॐ मृगाय एष पायस बलिर्न मम।
१७. ॐ पितृभ्यो एष पायस बलिर्न मम।
१८. ॐ दौवारिकाय एष पायस बलिर्न मम।
१९. ॐ सुग्रीवाय एष पायस बलिर्न मम।
२०. ॐ पुष्पदन्ताय एष पायस बलिर्न मम।
२१. ॐ वरुणाय एष पायस बलिर्न मम।
२२. ॐ असुराय एष पायस बलिर्न मम।
२३. ॐ शेषाय एष पायस बलिर्न मम।
२४. ॐ पापाय एष पायस बलिर्न मम।
२५. ॐ रोगाय एष पायस बलिर्न मम।
२६. ॐ अहिर्बुध्न्याय एष पायस बलिर्न मम।
२७. ॐ मुख्याय एष पायस बलिर्नमम।
२८. ॐ भल्लाटाय एष पायस बलिर्न मम।
२९. ॐ सोमाय एष पायस बलिर्न मम।
३०. ॐ सर्पेभ्यो एष पायस बलिर्न मम।
३१. ॐ अदितये एष पायस बलिर्न मम।
३२. ॐ दितये एष पायस बलिर्न मम।
३३. ॐ अद्भ्यो एष पायस बलिर्न मम।
३४. ॐ आपवत्साय एष पायस बलिर्न मम।
३५. ॐ अर्य्यम्णे एष पायस बलिर्न मम।
३६. ॐ सावित्राय एष पायस बलिर्न मम।
३७. ॐ सवित्रे एष पायस बलिर्न मम।
३८. ॐ विवस्वते एष पायस बलिर्न मम।
३९. ॐ विबुधाधिपाय एष पायस बलिर्नमम।
४०. ॐ जयन्ताय एष पायस बलिर्न मम।
४१. ॐ मित्राय एष पायस बलिर्न मम।
४२. ॐ राजयक्ष्मणे एष पायस बलिर्न मम।
४३. ॐ रुद्राय एष पायस बलिर्न मम।
४४. ॐ पृथ्वीधराय एष पायस बलिर्न मम।
४५. ॐ ब्रह्मणे एष पायस बलिर्न मम।
४६. ॐ चरक्यै एष पायस बलिर्न मम।
४७. ॐ विदार्य्यै एष पायस बलिर्न मम।
४८. ॐ पूतनायै एष पायस बलिर्न मम।

४९. ॐ पापराक्षस्यै एष पायस बलिर्न मम।
५०. ॐ स्कन्दाय एष पायस बलिर्न मम।
५१. ॐ अर्य्यम्णे एष पायस बलिर्न मम।
५२. ॐ जृम्भकाय एष पायस बलिर्न मम।
५३. ॐ पिलिपिच्छाय एष पायस बलिर्न मम।
५४. ॐ इन्द्राय एष पायस बलिर्न मम।
५५. ॐ अग्नये एष पायस बलिर्न मम।
५६. ॐ यमाय एष पायस बलिर्न मम।
५७. ॐ निर्ऋतये एष पायस बलिर्न मम।
५८. ॐ वरुणाय एष पायस बलिर्न मम।
५९. ॐ वायवे एष पायस बलिर्न मम।
६०. ॐ सोमाय एष पायस बलिर्न मम।
६१. ॐ ईशानाय एष पायस बलिर्न मम।
६२. ॐ ब्रह्मणे एष पायस बलिर्न मम।
६३. ॐ अनन्ताय एष पायस बलिर्न मम।

आचार्य वास्तुदेवता को निम्न श्लोक का उच्चारण करके यजमान से बलि प्रदान करावें—

नानापक्वान्नसंयुक्तं नानागन्धसमन्वितम्।
बलिं गृहाण देवेश वास्तुदोषप्रणाशक॥
ॐ वास्तुपुरुषाय एष बलिर्न मम।

आचार्य निम्न पौराणिक श्लोक का उच्चारण करके नारिकेल व सुवर्ण वास्तुदेवता की प्रतिमा के ऊपर यजमान से अर्पित करावें—

नमस्ते वास्तुदेवेश सर्वदोषहरो भव।
शान्तिं कुरु सुखं देहि सर्वान्कामान्प्रयच्छ मे॥

आचार्य निम्न श्लोक का उच्चारण करके वास्तुदेवता को यजमान से प्रणाम करवायें—

मन्त्रहीनं क्रियाहीनं भक्तिश्रद्धाविवर्जितम्।
यत्पूजितं मया देव परिपूर्णं तदस्तु मे॥

रक्षोघ्नसूक्तम्

ॐ कृणुष्व पाजः प्रसितिं न पृथ्वीं याहि राजे वामवाँ२॥ ऽइभेन। तृष्वीमनु प्रसितिं द्रूणानोऽस्तासि विध्य रक्षसस्तपिष्ठैः॥ १॥

तव भ्रमासआशुया पतन्त्यनुस्पृश धृषता शोशुचानः। तपूंठ०ष्यग्ने जुह्वा पतङ्गानसन्दितो विसृज विष्वागुल्क्काः॥ २॥

प्रति स्पशो विसृज तूर्णितमो भवा पायुर्विशो अस्या अदब्धः। यो नो दूरेअघशर्ठ०सो यो अन्त्यग्ने मा किष्टे व्यथिरादधर्षीत्॥ ३॥

उदग्ने तिष्ठ प्रत्यातनुष्व न्यऽँमित्राओषतात्तिग्महेते। यो नो अरातिर्ठ० समिधान चक्रे नीचा तं धक्ष्यतसं न शुष्कम्॥ ४॥

ऊर्ध्वो भव प्रतिविध्याध्यस्मदाविष्कृणुष्व दैव्यान्यग्ने। अव स्थिरा तनुहि यातुजूनां जामिमजामिं प्रमृणीहि शत्रून् अग्नेष्ट्वा तेजसा सादयामि॥ ५॥

पवमानसूक्तम्

ॐ पुनन्तु मा पितरः सोम्यासः पुनन्तु मा पितामहाः पुनन्तु प्रपितामहाः पवित्रेण शतायुषा। पुनन्तु मा पितामहाः पुनन्तु प्रपितामहाः पवित्रेण शतायुषा विश्वमायुर्व्यश्नवै ॥ १॥

अग्न आयुर्ठ०षि पवस आसुवोर्जमिषं च नः। आरे बाधस्व दुच्छुनाम्॥ २॥

पुनन्तु मा देवजनाः पुनन्तु मनसा धियः। पुनन्तु विश्वा भूतानि जातवेदः पुनीहि मा॥ ३॥

पवित्रेण पुनीहि मा शुक्रेण देव दीद्यत्। अग्ने क्रत्वा क्रतुँ२॥ रनु ॥ ४॥

यत्ते पवित्रमर्चिष्यग्ने विततमन्तरा। ब्रह्म तेन पुनातु मा॥ ५॥

पवमानः सो अद्य नः पवित्रेण विचर्षणिः। यः पोता स पुनातु मा॥ ६॥

उभाभ्यां देव सवितः पवित्रेण सवेन च। मां पुनीहि विश्वतः॥ ७॥

वैश्वदेवी पुनती देव्यागाद्यस्यामिमा बह्वयस्तन्वो वीतपृष्ठाः। तया मदन्तः सधमादेषु वयर्ठ० स्याम पतयो रयीणाम्॥ ८॥

मण्डपपूजनम्

संकल्पः—देशकालौ संकीर्त्य, अमुकगोत्रोऽमुकशर्माहम् (वर्माऽहम्, गुप्तोऽहम्, दासोऽहम्) करिष्यमाण-धूमावतीप्रतिष्ठाङ्गभूतं मण्डपदेवानां स्थापनं पूजनं करिष्ये।

प्रथम-ब्रह्मा—ॐ ब्रह्म यज्ञानं प्रथमं पुरस्ताद्वि सीमतः सुरुचो वेन आवः। स बुध्न्या उपमा अस्य विष्ठाः सतश्च योनिमसतश्च विवः॥ ॐ ऊद्ध्‍र्व ऽऊषुण ऽऊतये तिष्ठा देवो न सविता। ऊद्ध्‍र्वो व्वाजस्य सनिता यदञ्जिभिर्व्वाघद्भिर्व्विह्वयामहे॥ ॐ आयङ्गौः पृश्निरक्रमीदसदन्मातरं पुरः। पितरञ्च प्रयन्त्स्वः॥ ॐ यतो यतः समीहसे ततो नो ऽअभयं कुरु। शन्नः कुरु प्रजाब्भ्योऽभयं नः पशुब्भ्यः॥

द्वितीय-विष्णु—ॐ इदं विष्णुर्विचक्रमे त्रेधा निदधे पदम्। समूढमस्य पाठं०सुरे स्वाहा॥ ॐ ऊद्ध्‍र्व ऽऊषु ण०॥ ॐ आयङ्गौः०॥ ॐ यतोयतः०॥

तृतीय-रुद्र—ॐ नमस्ते रुद्र मन्यव उतो त इषवे नमः। बाहुभ्यामुत ते नमः॥ ॐ ऊद्ध्‍र्व ऽऊषु ण०॥ ॐ आयङ्गौः०॥ ॐ यतोयतः०॥

चतुर्थ-इन्द्र—ॐ त्रातारमिन्द्रमवितारमिन्द्रर्ठ० हवे हवे सुहवर्ठ० शूरमिन्द्रम्। ह्वयामि शक्रं पुरुहूतमिन्द्रर्ठ० स्वस्ति नो मघवा धात्विन्द्रः॥ ॐ ऊद्ध्‍र्व ऽऊषु ण०॥ ॐ आयङ्गौः०॥ ॐ यतोयतः०॥

पञ्चम्-सूर्य—ॐ आ कृष्णेन रजसा वर्तमानो निवेशयन्नमृतं मर्त्यं च। हिरण्ययेन सविता रथेनादेवो याति भुवनानि पश्यन्॥ ॐ ऊद्ध्‍र्व ऽऊषु ण०॥ ॐ आयङ्गौः०॥ ॐ यतोयतः०॥

षष्ठम्-गणेश—ॐ गणानां त्वा गणपतिर्ठ० हवामहे प्रियाणां त्वा प्रियपतिर्ठ० हवामहे निधीनां त्वा निधिपतिर्ठ० हवामहे वसो मम। आहमजानि गर्भधमा त्वमजासि गर्भधम्॥ ॐ ऊद्ध्‍र्व ऽऊषु ण०॥ ॐ आयङ्गौः०॥ ॐ यतोयतः०॥

सप्तम्-यम—ॐ यमाय त्वा मखाय त्वा सूर्यस्य त्वा तपसे। देवस्त्वा सविता मध्वानक्तु। पृथिव्याः सर्ठ० स्पृशस्पाहि। अर्चिरसि शोचिरसि तपोऽसि॥ ॐ ऊद्ध्वं ऽऊषु ण०॥ ॐ आयङ्गौः०॥ ॐ यतोयतः०॥

अष्टम्-सर्प—नमोऽस्तु सर्पेभ्यो ये के च पृथिवीमनु। ये अन्तरिक्षे ये दिवि तेभ्यः सर्पेभ्यो नमः॥ ॐ ऊद्ध्वं ऽऊषु ण०॥ ॐ आयङ्गौः०॥ ॐ यतोयतः०॥

नवम्-स्कन्द—ॐ यदक्रन्दः प्रथमं जायमान उद्यन्त्समुद्रादुत वा पुरीषात्। श्येनस्य पक्षा हरिणस्य बाहू उपस्तुत्यं महि जातं ते अर्वन्॥ ॐ ऊद्ध्वं ऽऊषु ण०॥ ॐ आयङ्गौः०॥ ॐ यतोयतः०॥

दशम-वायु—ॐ वायो ये ते सहस्त्रिणो रथासस्तेभिरागहि। नियुत्वान्सोमपीतये॥ ॐ ऊद्ध्वं ऽऊषु ण०॥ ॐ आयङ्गौः०॥ ॐ यतोयतः०॥

एकादश-चन्द्र—ॐ आप्यायस्व समेतु ते विश्वतः सोम वृष्ण्यम्। भवा वाजस्य सङ्गथे॥ ॐ ऊद्ध्वं ऽऊषु ण०॥ ॐ आयङ्गौः०॥ ॐ यतोयतः०॥

द्वादश-वरुण—ॐ इमं मे वरुण श्रुधी हवमद्या च मृडय। त्वामवस्युराचके॥ ॐ ऊद्ध्वं ऽऊषु ण०॥ ॐ आयङ्गौः०॥ ॐ यतोयतः०॥

त्रयोदश-अष्टवसु—ॐ वसुभ्यस्त्वा रुद्रेभ्यस्त्वाऽऽदित्येभ्यस्त्वा सञ्जानाथां द्यावापृथिवी मित्रावरुणौ त्वा वृष्ट्यावताम्। वयन्तु वयोऽक्तर्ठ० रिहाणा मरुतां पृषतीर्गच्छ वशापृश्निर्भूत्वा दिवं गच्छ ततो नो वृष्टिमावह। चक्षुष्पा अग्नेऽसि चक्षुर्मे पाहि॥ ॐ ऊद्ध्वं ऽऊषु ण०॥ ॐ आयङ्गौः०॥ ॐ यतोयतः०॥

चतुर्दश-कुबेर—ॐ सोमो धेनुर्ठ० सोमो अर्वन्तमाशुर्ठ० सोमो वीरं कर्मण्यं ददाति। सादन्यं विदथ्यर्ठ० सभेयं पितृश्रवणं यो ददाशदस्मै॥ ॐ ऊद्ध्व ऽऊषु ण०॥ ॐ आयङ्गौः०॥ ॐ यतोयतः०॥

पञ्चदश-बृहस्पति—ॐ बृहस्पते अति यदर्यो अर्हाद्द्युमद्विभाति क्रतुमज्जनेषु। यद्दीदयच्छवस ऋतप्रजात तदस्मासु द्रविणं धेहि चित्रम्॥ ॐ ऊद्ध्व ऽऊषु ण०॥ ॐ आयङ्गौः०॥ ॐ यतोयतः०॥

षोडश-विश्वकर्मा—ॐ विश्वकर्मन् हविषा वर्धनेन त्रातारमिन्द्रम-कृणोरवध्यम्। तस्मै विशः समनमन्त पूर्वीरयमुग्रो विहव्यो यथासत्॥ ॐ ऊद्ध्व ऽऊषु ण०॥ ॐ आयङ्गौः०॥ ॐ यतोयतः०॥

सर्वासु वलिकासु—ॐ नमोऽस्तु सर्पेभ्यो ये के च पृथिवी मनु। ये अन्तरिक्षे ये दिवि तेभ्यः सर्पेभ्यो नमः॥

प्रार्थना

शेषादिनागराजानः समस्ता मम मण्डपे।
पूजां गृह्णन्तु सततं प्रसीदन्तु ममोपरि॥

ततो भूमिस्पर्शः—ॐ भूरसि भूमिरस्यदितिरसि विश्वधाया विश्वस्य भुवनस्य धर्त्री। पृथिवीं यच्छ पृथिवीं दृर्ठ० ह पृथिवीं मा हिर्ठ० सीः॥

भूमिभूमिमवगान्माता यथा मातरमप्यगात्।
भूयास्म पुत्रैः पशुभिर्यो नो द्वेष्टि स भिद्यताम्॥

सपत्नीक यजमान दोनों हाथों में रक्तवर्ण के पुष्पों को लेकर निम्न श्लोक का उच्चारण कर पुष्पाञ्जलि प्रदान करें-

नमस्ते पुण्डरीकाक्ष नमस्ते विश्वभावन।
नमस्तेऽस्तु हृषीकेश महापुरुषपूर्वज॥

ॐ नृसिंह उग्ररूप ज्वल ज्वल प्रज्वल प्रज्वल स्वाहा। ॐ नमः शिवाय—इन नामों का यजमान उच्चारण करके पुष्पाञ्जलि को मण्डप की भूमि में छोड़े।

तोरणपूजनम्

संकल्पः—देशकालौ सङ्कीर्त्य, अमुकगोत्रोऽमुकशर्माहम् (वर्माऽहम्, गुप्तोऽहम्, दासोऽहम्) अस्मिन् धूमावतीप्रतिष्ठाकर्मणि पूर्वादितोरणादि-पूजां करिष्ये।

आचार्य निम्न श्लोक का उच्चारण करके यजमान से मौलीबन्धन करावें—

सुदृढं तोरण पूर्वे अश्वत्थं काञ्चनप्रभम्।
रक्षार्थं चैव बध्नामि कर्मण्यस्मिन्सुशोभितम्॥
ॐ अग्निमीले पुरोहितं यज्ञस्य देवमृत्विजम्। होतारं रत्नधातमम्॥
ॐ भूर्भुवः स्वः ऋग्वेदाधिष्ठिताय सुदृढतोरणाय नमः।

उपरोक्त मन्त्र और वाक्य का आचार्य उच्चारण करके गन्धादि के द्वारा यजमान से पूजा करवाके महात्रिशूल के शृंगों (नोंक) पर प्रदक्षिणा क्रम से निम्न नाममन्त्रों द्वारा पूजन करावें—

ॐ इन्द्रराहुभ्यां नमः। ॐ धात्रे नमः। ॐ भगबृहस्पतिभ्यां नमः।

आचार्य निम्न श्लोक का उच्चारण करके यजमान से प्रार्थना करावें—

यथा मेरुगिरेः शृङ्गं देवानामालयः सदा।
तथा त्वं मम यज्ञेऽस्मिन्देवाधिष्ठानको भव॥

वहाँ कलशस्थापनविधि से कलश की प्रतिष्ठा करवाके आचार्य कलश के ऊपर निम्न नाममन्त्रों का उच्चारण यजमान से करवाके पूजन करावें—

ॐ ध्रुवाय नमः। ॐ अध्वराय नमः। ॐ मध्ये-मेधापतये नमः।

यजमान को दक्षिण की ओर ले जाकर आचमन करवाके निम्न श्लोक का उच्चारण करके आचार्य मौलीबन्धन करावें—

औदुम्बरं च विकटं याम्ये तोरणमुत्तमम्।
रक्षार्थञ्चैव बध्नामि कर्मण्यस्मिन्सुखाय नः॥

ॐ इषे त्वोर्ज्जे त्वा वायव स्थ देवो वः सविता प्रार्पयतु श्रेष्ठ तमाय कर्मण आप्यायध्वमघ्न्या इन्द्राय भागं प्रजावतीरनमीवा अयक्ष्मा मा

वस्तेन ईशत माघशर्ठ० सो ध्रुवा अस्मिन्गोपतौ स्यात बह्विर्यजमानस्य पशून्याहि॥

ॐ भूर्भुवः स्वः सुभद्रतोरणाय नमः, सुभद्रतोरणमावाहयामि स्थापयामि। ॐ भूर्भुवः स्वः विकटतोरणाय नमः, विकटतोरण-मावाहयामि स्थापयामि।

यहाँ भी त्रिशूल के शृंगों (नोंक) पर प्रदक्षिण क्रम से आचार्य निम्न नाममन्त्रों का उच्चारण करके यजमान से पूजन करावें—

ॐ सूर्यपूषाभ्यां, सूर्यपूषाणौ। मध्येमित्राय०। ॐ वरुणाङ्गारकाभ्यां०।

आचार्य निम्न श्लोक का उच्चारण करके यजमान से प्रार्थना करावें—

यथा मेरुगिरेः शृङ्गं देवानामालयः सदा।
तथा त्वं मम यज्ञेऽस्मिन्देवाधिष्ठानको भव॥

वहाँ पर भी पूर्वविधि से कलश स्थापित करवाके कलश के ऊपर निम्न नाममन्त्रों का उच्चारण यजमान से करवाते हुए आचार्य पूजन करावें—

ॐ पर्जन्याय नमः। ॐ अशोकाय नमः। मध्ये—ॐ धरायै नमः।

यजमान को पश्चिम दिशा की ओर ले जाकर आचमन करवाके निम्न श्लोक का उच्चारण करके आचार्य उससे मौलीबन्धन करावें—

प्लाक्षं च पश्चिमे भीमं तोरणं स्वर्णसन्निभं।
रक्षार्थञ्चैव बध्नामि कर्मण्यस्मिन्सुखाय नः॥

ॐ अग्न आयाहि वीतये गृणानो हव्यदातये। निहोता सत्सि बर्हिषि॥

ॐ सुभीमतोरणाय नमः। ॐ सुकर्मतोरणाय नमः।

इस प्रकार से पूजन करवाके वहाँ भी त्रिशूल के शृङ्गों (नोंक) पर प्रदक्षिण क्रम से आचार्य निम्न नाममन्त्रों का उच्चारण करते हुए यजमान से पूजन करावें—ॐ अर्यमशुक्राभ्यां नमः। अर्यमशुक्रौ०। मध्ये—ॐ अंशवे नमः। अंशुम्०। ॐ विवस्वद्बुधाभ्यां नमः। विवस्वद्बुधौ०।

निम्न श्लोक का उच्चारण करके यजमान से प्रार्थना करावें—

यथा मेरुगिरेः शृङ्गं देवानामालयः सदा।
तथा त्वं मम यज्ञेऽस्मिन्देवाधिष्ठानको भव॥

आचार्य वहाँ भी एक कलश यजमान से स्थापित करवाके कलश के ऊपर निम्न नाममन्त्रों का उच्चारण करवाके पूजन करावें—

ॐ अनिलाय नमः। ॐ अनलाय नमः। मध्ये—ॐ वाक्पतये नमः।

यजमान को उत्तर दिशा की ओर ले जाकर आचमन करवाके निम्न श्लोक का उच्चारण करके आचार्य उससे मौलीबन्धन करावें—

न्यग्रोधतोरणमिव उत्तरे च शशिप्रभम्।
रक्षार्थं चैव बध्नामिं कर्मण्यस्मिन्सुशोभितम्॥
ॐ शन्नो देवीरभिष्टय आपो भवन्तु पीतये। शं योरभिस्त्रवन्तु नः॥
ॐ सुहोत्रतोरणाय नमः। ॐ सुप्रभतोरणाय नमः।

इस प्रकार से पूजन करवाके आचार्य वहाँ भी त्रिशूल के शृंगों (नोक) पर प्रदक्षिण क्रम से निम्न नाममन्त्रों का उच्चारण करवाके यजमान से पूजन करावें—**ॐ त्वष्ट्रसोमाभ्यां नमः। ॐ सवितृकेतुभ्यां नमः। ॐ विष्णुशनिभ्यां नमः।**

निम्न श्लोक का उच्चारण करके यजमान से प्रार्थना करावें—

यथा मेरुगिरेः शृङ्गं देवानामालयः सदा।
तथा त्वं मम यज्ञेऽस्मिन्देवाधिष्ठानको भव॥

आचार्य वहाँ भी एक कलश यजमान से स्थापित करवाके कलश के ऊपर निम्न नाममन्त्रों का उच्चारण करवाके उससे पूजन करवावें—

ॐ प्रत्यूषाय नमः। ॐ प्रभासाय नमः। मध्ये—ॐ विघ्नेशाय नमः।

आचार्य निम्न श्लोक का उच्चारण करके यजमान से प्रार्थना करावें—

तोरणाधिष्ठिता देवाः पूजिता भक्तिमार्गतः।
ते सर्वे मम यज्ञेऽस्मिन् रक्षां कुर्वन्तु वः सदा॥

द्वारपूजनम्

संकल्पः—देशकालौ सङ्कीर्त्य, अमुकगोत्रोऽमुकशर्माहम् (वर्माऽहम्, गुप्तोऽहम्, दासोऽहम्) अस्मिन् धूमावतीप्रतिष्ठाकर्मणि पूर्वादिद्वारपूजां करिष्ये।

आयाहि वज्रसङ्घातपूर्वद्वारकृपाधिप।
ऋग्वेदाधिपते तुभ्यं सुशोभन नमोऽस्तु ते॥

आचार्य दो कलशों को समीप में ही यजमान से स्थापित करवाके, पहले दक्षिण कलश के ऊपर-'**ॐ प्रशान्ताय नमः**' दूसरे वामकलश के ऊपर-'**ॐ शिशिराय नमः**' उसके बाद मध्य में तीसरे कलश के ऊपर-'**ॐ ऐरावताय नमः**' का उच्चारण करवाके गन्धादि से पूजन करावें। तदुपरान्त निम्न श्लोक का उच्चारण करके यजमान से प्रार्थना करावें—

सवस्त्रं सजलं गन्धं पुष्पपल्लवसंयुतम्।
सरत्नं स्थापयाम्येव द्वारेऽस्मिन्कलशद्वयम्॥

तदुपरान्त आचार्य निम्न नाममन्त्रों का उच्चारण करके यजमान से पूजा करावें—**ॐ द्वारश्रियै नमः॥ १॥ इति ऊर्ध्वं अधःदेहल्यै नमः॥ २॥ दक्षिणशाखायाम्—ॐ गणेशाय नमः॥ ३॥ वामशाखायाम्—ॐ स्कन्दाय नमः॥ ४॥ द्वारकलशयोः—ॐ गंगायै नमः॥ १॥ ॐ यमुनायै नमः॥ २॥** पुनः दोनों ऋग्वेदियों की पूजा इस मन्त्र से करें—

ॐ अग्निमीले पुरोहितं यज्ञस्य देवमृत्विजम्। होतारं रत्नधातमम्॥

ॐ कर्मनिष्ठा तपोयुक्ता ब्राह्मणाः वेदपारगाः।
जपार्थं चैव सूक्तानां यज्ञे भवत ऋत्विजः॥

मध्य कलश के ऊपर—

एह्येहि सर्वामरसिद्धिसाध्यैरभिष्टुतो वज्रधरामरेश।
संवीज्यमानोऽप्सरसां गणेन रक्षाध्वरन्नो भगवन्नमस्ते॥

ॐ त्रातारमिन्द्रमवितारमिन्द्रꣳ हवेहवे सुहवꣳ शूरमिन्द्रम्। ह्वयामि शक्रं पुरुहूतमिन्द्रꣳ स्वस्ति नो मघवा धात्विन्द्रः॥

ॐ भूर्भुवः स्वः इन्द्राय नमः, इन्द्रमावाहयामि स्थापयामि॥ १॥

आचार्य निम्न मन्त्र और श्लोक का उच्चारण करते हुए यजमान से पीतध्वज एवं पताका का स्पर्श करवावें—

ॐ आशुः शिशानो वृषभो न भीमो घनाघनः क्षोभणश्चर्षणीनाम्। सङ्क्रन्दनो निमिषऽ एकवीरः शतठं० सेना अजयत्साकमिन्द्रः॥

इमां पताकां पीतां च ध्वजं पीतं सुशोभम्।
आलभामिसुरेशाय शचीपत्ये नमो नमः॥

आचार्य ध्वजपताका के मध्य में निम्न नाममन्त्रों का उच्चारण करके यजमान से पूजन करावें—**ॐ हेतुकराय नमः। ॐ क्षेत्रपालाय नमः।**

आचार्य निम्न श्लोक का उच्चारण करके यजमान से प्रार्थना करावें—

इन्द्रः सुरपतिः श्रेष्ठो वज्रहस्तो महाबलः।
शतयज्ञाधिपो देवस्तस्मै नित्यं नमो नमः॥

बलिदानम्

माषभक्तबलिं देव गृहाणेन्द्र शचीपते।
यज्ञसंरक्षणार्थाय प्रसन्नो वरदो भव॥

ॐ नमो भगवते इन्द्राय सकलसुराणामधिपतये सवाहनाय सपरिवाराय सशक्तिकाय तत्पार्षदेभ्यः सर्वेभ्यो भूतेभ्यः इमं सदीपदधिमाषभक्तबलिं समर्पयामि।

भो इन्द्र स्वां दिशं रक्ष बलिं भक्ष मम सकुटुम्बस्य सपरिवारस्य गृहे आयुः कर्ता शान्तिकर्ता पुष्टिकर्ता तुष्टिकर्ता क्षेमकर्ता आरोग्यकर्ता वरदो भव। अनेन बलिदानेन इन्द्रः प्रीयतां न मम।

आचार्य अग्निकोण में यजमान को लाकर पहले की तरह स्थापन करवाके तथा आचमन करवाके कलश के ऊपर निम्न वाक्यों का उच्चारण करके पूजन करावें—**ॐ पुण्डरीकाय नमः। ॐ अमृताय नमः।**

आचार्य निम्न श्लोक का उच्चारण करके उससे नमस्कार करावें—

एह्येहि सर्वामरहव्यवाह मुनिप्रवर्य्यैरभितोऽभिजुष्टः।
तेजोवता लोकगणेन सार्द्धं ममाध्वरं पाहि कवे नमस्ते॥

आचार्य निम्न श्लोक का उच्चारण करके यजमान से प्रार्थना करावें—

सप्तार्चिषं च विभ्राणमक्षमालां कमण्डलुं।
ज्वालमालाकुलं रक्तं शक्तिहस्तमजासनम्॥

ॐ त्वन्नो अग्ने तव देवपायुभिर्म्मघोनो रक्ष तन्वश्च वन्द्य। त्राता तो कस्य तनये गवामस्य निमेषर्ठ० रक्षमाणस्तव व्रते॥

ॐ भूर्भुवः स्वः अग्ने नमः, अग्निमावाहयामि स्थापयामि।

उपरोक्त मन्त्र और वाक्य से पूजा करवाके ध्वजपताका का स्पर्श यजमान से करवाके निम्न श्लोक और मन्त्र का उच्चारण आचार्य करें—

पताकामग्नये रक्तां गन्धमाल्यादिभूषिताम्।
स्वाहायुक्ताय देवाय ह्यालभामि हविर्भुजे॥

ॐ अग्निं दूतं पुरो दधे हव्यवाहमुपब्रुवे॥ देवाँ२॥ आसादयादिह॥

आचार्य ध्वज और पताका की निम्न नाममन्त्रों का उच्चारण करवाके यजमान से पूजा करावें—**ॐ कुमुदाय नमः। ॐ क्षेत्रपालाय नमः।**

आचार्य निम्न श्लोक का उच्चारण करके यजमान से नमस्कार करावें—

आग्नेयपुरुषो रक्तः सर्वदेवमयोऽव्ययः।
धूम्रकेतुरजोऽध्यक्षस्तस्मै नित्यं नमो नमः॥

बलिदानम्

इमं माषबलिं देव गृहाणाग्ने हुताशन।
यज्ञसरक्षाणार्थाय प्रसन्नो वरदो भव॥

अग्नये साङ्गाय सपरिवाराय सशक्तिकाय इमं सदीपदधिमाष-भक्तबलिं समर्पयामि।

भो अग्ने स्वां दिशं रक्ष बलिं भक्ष मम सकुटुम्बस्य सपिरवारस्य गृहे आयुःकर्ता शान्तिकर्ता पुष्टिकर्ता तुष्टिकर्ता क्षेमकर्ता आरोग्यकर्ता वरदो भव। अनेन बलिदानेन अग्निः साङ्गः सपरिवारः सशक्तिकः प्रीयतां न मम।

आचार्य यजमान को दक्षिण की ओर ले जाकर आचमन करावें और उसी से द्वारकलशों को स्थापित करावें तथा पूजा करवाके निम्न श्लोक का उच्चारण करके उससे नमस्कार करावें—

नमस्ते धर्मराजाय त्रेतायुगाधिपाय च।
यजुर्वेदादिदेवाय सुभद्रं द्वारदक्षिणे॥

आचार्य कलश के ऊपर निम्न नाम वाक्यों का उच्चारण करके यजमान से पूजा करावें—**ॐ पर्जन्याय नमः। ॐ अशोकाय नमः।** मध्य कलश पर—**ॐ वामनाख्यदिग्गजाय नमः।**

आचार्य निम्न श्लोक का उच्चारण करके यजमान से प्रार्थना करावें—

सवस्त्रं सजलं गन्धं पुष्पपल्वसंयुतम्।
सरत्नं स्थापयाम्येव द्वारेऽस्मिन्कलशद्वयम्॥

ततो द्वारोर्ध्वे—ॐ द्वारश्रियै नमः। अधः—ॐ देहल्यै नमः। द्वारशाखयोः—ॐ पुष्पदन्ताय नमः। ॐ कपर्दिने नमः। द्वार-कलशयोः—ॐ गोदावर्य्यै नमः। ॐ कृष्णायै नमः।

उपरोक्त नाममन्त्रों से पूजा करवावें। पुनः आचार्य निम्न श्लोक का उच्चारण करके यजमान से प्रार्थना करावें—

वैवस्वत महादेव नमस्ते धर्मसाक्षिक।
शिवाज्ञयाऽपि हितो देवः दिशः रक्ष भवानिह॥

आचार्य निम्न मन्त्र का उच्चारण करके दोनों यजुर्वेदियों की पूजा यजमान से करावें—

ॐ इषे त्वोर्ज्जे त्वा वायव स्थ देवो वः सविता प्रार्पयतु श्रेष्ठतमाय कर्मण आप्यायध्वमघ्न्या इन्द्राय भागं प्रजावतीरनमीवा अयक्ष्मा मा वस्तेन ईशत माघशर्ठं० सो ध्रुवा अस्मिन्गोपतौ स्यात बह्विर्यजमानस्य पशून्पाहि॥

उसके बाद मध्यकलश के ऊपर—

एह्येहि वैवस्वत धर्मराज सर्वामरैरर्चित धर्ममूर्ते।
शुभाशुभानन्दशुचामधीश शिवाय नः पाहि मखं नमस्ते॥

ॐ यमाय त्वाङ्गिरस्वते पितृमते स्वाहा। स्वाहा घर्माय स्वाहा घर्मः पित्रे॥ ॐ भूर्भुवः स्वः यमं साङ्गं सपरिवारमावाहयामि।

आचार्य उपरोक्त मन्त्र और वाक्य का उच्चारण करके ध्वजपताका का स्पर्श यजमान से करवाके निम्न श्लोक और मन्त्र का उच्चारण करें—

कृष्णवर्णां पताकाञ्च कृष्णवर्णध्वजं तथा।
अंतकायालभामीह क्रतुकर्मणि साक्षिणे॥

ॐ यमाय त्वाङ्गिरस्वते पितृमते स्वाहा। स्वाहा घर्माय स्वाहा घर्मः पित्रे॥

इमां पताकां रम्यां च ध्वजं माल्यादिभूषितम्।
यमदेव गृहाण त्वं प्रसीद करुणाकर॥

आचार्य निम्न श्लोक का उच्चारण करके यजमान से प्रार्थना करावें—

यमस्तु महिषारूढो दण्डहस्तो महाबलः।
धर्मसाक्षी विशुद्धात्मा तस्मै नित्यं नमो नमः॥

बलिदानम्

इमं माषबलिं देव गृहाणान्तक वै यम।
यज्ञ सरक्षणार्थाय प्रसन्नो वरदो भव॥

ॐ यमाय साङ्गाय सपरिवाराय सायुधाय सशक्तिकाय इमं दधिमाषभक्तबलिं समर्पयामि।

भो यम बलिं गृहाण मम सकुटुम्बस्य सपिरवारस्य गृहे आयुःकर्ता शान्तिकर्ता पुष्टिकर्ता तुष्टिकर्ता क्षेमकर्ता आरोग्यकर्ता वरदो भव। अनेन बलिदानेन यमः साङ्गः सपरिवारः सायुधः सशक्तिकः प्रीयतां न मम।

नैर्ऋत्यकोण में यजमान को ले जाकर आचमन करवाके कलश की स्थापना करवाके उसके ऊपर निर्ऋति का आवाहन निम्न मन्त्र का उच्चारण करके करावें—

निर्ऋत्तिं खड्गहस्तं च सर्वलोकैकपावनम्।
आवाहयामि यज्ञेऽस्मिन्पूजयेम् प्रतिगृह्यताम्॥

आचार्य कलश के ऊपर निम्न नाममन्त्रों का उच्चारण करके यजमान से पूजा करावें—**ॐ कुमुदाय नमः। ॐ दुर्जयाय नमः।**

कलश की पूजा करके—

एह्येहि रक्षोगणनायकस्त्वं विशालवेतालपिशाचसङ्घैः।
ममाध्वं पाहि पिशाचनाथ लोकेश्वर त्वं भगवन्नमस्ते॥

ॐ असुन्वन्तमयजमानमिच्छ स्तेनस्येत्यामन्विहि तस्करस्य। अन्यमस्मदिच्छ सा त इत्या नमो देवि निर्ऋते तुभ्यमस्तु॥

ॐ भूर्भुवः स्वः निर्ऋतिं साङ्गं सपरिवारं सा० आवाहयामि।

आचार्य उपरोक्त मन्त्र का उच्चारण करके यजमान से पूजा करवाके ध्वजपताका का स्पर्श निम्न श्लोक और मन्त्र का उच्चारण करके करावें—

पताकानिर्ऋतिश्चैव नीलवर्णं ध्वजं तथा।
पिशाचगणनाथाय आलभामि ममाध्वरे॥

ॐ असुन्वन्तमयजमानमिच्छ स्तेनस्येत्यामन्विहि तस्करस्य। अन्यमस्मदिच्छ सा त इत्या नमो देवि निर्ऋते तुभ्यमस्तु॥

आचार्य निम्न नाममन्त्रों का उच्चारण करके यजमान से ध्वजपताका की पूजा करावें—**ॐ कुमुदाय नमः। ॐ क्षेत्रपालाय नमः।**

आचार्य निम्न श्लोक का उच्चारण करके उससे प्रार्थना करावें—

सर्वप्रेताधिपो देवो निर्ऋतिर्नीलविग्रहः।
करे खड्गधरौ नित्यं निर्ऋतये नमो नमः॥

बलिदानम्

इमं माषबलिं यक्षो गृहाण निर्ऋतिप्रभो।
यज्ञसंरक्षणार्थाय प्रसन्नो वरदो भव॥

ॐ निर्ऋतये साङ्गाय सपरिवाराय सायुधाय सशक्तिकाय इमं दधिमाषभक्तबलिं समर्पयामि।

भो निर्ऋते बलिं गृहाण मम सकुटुम्बस्य सपिरवारस्य गृहे आयुःकर्ता शान्तिकर्ता पुष्टिकर्ता तुष्टिकर्ता क्षेमकर्ता आरोग्यकर्ता वरदो

भव। अनेन बलिदानेन निर्ऋतिः साङ्गः सपरिवारः सायुधः सशक्तिकः प्रीयतां न मम।

पश्चिम दिशा में यजमान को ले जाकर आचमन करवाके पुनः कलश की स्थापना व पूजा करवाके निम्न श्लोक का उच्चारण करके प्रार्थना करावें–

नमोऽस्तु कामरूपाय पश्चिमद्वारश्रिताय च।
सामवेदाधिपस्त्वं हि नाम्ना कल्याणकारक॥

आचार्य कलश के ऊपर निम्न नाममन्त्रों का उच्चारण करके यजमान से पूजा करावें–**ॐ भूतसञ्जीवनाय नमः। ॐ अमृताय नमः। मध्यकलशे—ॐ अनन्ताख्य दिग्गजाय नमः। द्वारोर्ध्वं—द्वारश्रियै नमः। अधः—देहल्यै नमः। द्वारशाखयोः—ॐ नन्दिन्यै नमः। ॐ चण्डायै नमः। द्वारकलशयोः—ॐ रेवायै नमः। ॐ ताप्यै नमः।**

आचार्य दो सामवेदियों की पूजा निम्न मन्त्र का उच्चारण करके यजमान से करावें–**ॐ अग्न आयाहि वीतये गृणानो हव्यदातये। निहोता सत्सि बर्हिषि॥**

इस प्रकार पूजा करके मध्य कलश में–

एह्येहि यादोगणवारिधीनां गणेन पर्जन्य सहाप्सरोभिः।
विद्याधरेन्द्रामरगीयमान पाहि त्वमस्मान्भगवन्नमस्ते॥

ॐ तत्त्वा यामि ब्रह्मणा वन्दमानस्तदाशास्ते यजमानो हविर्भिः। अहेडमानो वरुणेह बोध्युरुशर्ठ० स मा न आयुः प्रमोषीः॥

ॐ भूर्भुवः स्वः वरुणं साङ्गं सपरिवारं आवाहयामि ॐ वरुणाय साङ्गाय सपरिवाराय नमः।

आचार्य ध्वजपताका का स्पर्श यजमान से करवाके निम्न श्लोक और मन्त्र का उच्चारण करें–

श्वेतवर्णां पताकां च ध्वजं श्वेतमयं शुभम्।
वरुणाय जलेशाय ह्यालभामि सुखाप्तये॥

ॐ उदुत्तमं वरुण पाशमस्मदवाधमं वि मध्यमर्ठ० श्रथाय। अथा वयमादित्य व्रते तवानागसो अदितये स्याम॥

आचार्य निम्न श्लोक का उच्चारण करके यजमान से प्रार्थना करावें—

पाशहस्तस्तु वरुणः साम्भसाम्पतिरीश्वरः।
शमन्नयाप्सु विघ्नानि नमस्ते पाशपाणये॥

बलिदानम्

इमं माषबलिं देवः गृहाण जलधीश्वर।
यज्ञसंरक्षणार्थाय प्रसन्नो वरदो भव॥

ॐ वरुणाय साङ्गाय सपरिवाराय सायुधाय सशक्तिकाय इमं दधिमाषभक्तबलिं समर्पयामि।

भो वरुण बलिं गृहाण मम सकुटुम्बस्य सपिरवारस्य गृहे आयुःकर्ता शान्तिकर्ता पुष्टिकर्ता तुष्टिकर्ता क्षेमकर्ता आरोग्यकर्ता वरदो भव। अनेन बलिदानेन नमो भगवते सकलजनानामधिपतये न मम।

वायव्यकोण में यजमान को ले जाकर आचमन करवाके कलश की स्थापना करवाके आचार्य निम्न नाममन्त्रों का उच्चारण करके गन्धादि से पूजन करावें—**ॐ पुष्पदन्ताय नमः। ॐ सिद्धार्थाय नमः।**

कलश के ऊपर—

एह्येहि यज्ञे मम रक्षणाय मृगाधिरूढः सह सिद्धसङ्घैः।
प्राणाधिपः कालकवेः सहाय गृहाण पूजां भगवन्नमस्ते॥

ॐ आ नो नियुद्भिः शतिनीभिरध्वरꣳ सहस्त्रिणीभिरुपयाहि यज्ञम्। वायो अस्मिन्सवने मादयस्व यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः॥

ॐ भूर्भुवः स्वः वायवे नमः। वायुम् आवाहयामि स्थापयामि।

आचार्य ध्वजपताका का स्पर्श यजमान से निम्न श्लोक और मन्त्र का उच्चारण करके करावें—

पताकां वायवे धूम्रां धूम्रवर्णध्वजं तथा।
आलभाम्यनुरूपाय प्राणदाय हिताय च॥

ॐ वायो ये ते सहस्त्रिणो रथासस्तेभिरागहि। नियुत्वान् सोमपीतये॥

आचार्य निम्न श्लोक का उच्चारण करके यजमान से प्रार्थना करावें—

अनाकारो महौजाश्च सर्वगन्धवः प्रभु।
तस्मै पूज्याय जगतो वायवेऽहं नमामि च॥

बलिदानम्

माषभक्तबलिं वायो मया दत्तं गृहाण भो।
यज्ञसंरक्षणार्थाय प्रसन्नो वरदो भव॥

ॐ वायवे साङ्गाय सपरिवाराय सायुधाय सशक्तिकाय इमं दधिमाषभक्तबलिं समर्पयामि।

भो वायो बलिं गृहाण मम सकुटुम्बस्य सपिरवारस्य गृहे आयुः-कर्ता शान्तिकर्ता पुष्टिकर्ता तुष्टिकर्ता क्षेमकर्ता आरोग्यकर्ता वरदो भव। अनेन बलिदानेन नमो भगवते वायवे सकलप्राणानामधिपतये प्रीयतां न मम।

आचार्य उत्तर दिशा में यजमान को ले जाकर आचमन करावें और दोनों द्वारकलशों की स्थापना व पूजा करवाकर निम्न श्लोक का उच्चारण करके नमस्कार करावें—

नमस्ते दिव्यरूप त्वमथर्वाधिपते प्रभो।
कलावधिपतिर्नाम्ना मङ्गलश्चोत्तराननन॥

आचार्य कलश के ऊपर निम्न नाममन्त्रों का उच्चारण करके यजमान से पूजा करावें—**ॐ धनदाय नमः। ॐ श्रीप्रदाय नमः। मध्यकलशे सार्वभौमदिग्गजाय नमः। इति सम्पूज्य द्वारोद्र्ध्वं—ॐ द्वारश्रियै नमः। अधः—ॐ देहल्यै नमः। द्वारशाखयोः—ॐ महाकालाय नमः। ॐ भृङ्गिणे नमः। द्वारकलशयोः—ॐ नर्मदायै नमः। ॐ ताप्यै नमः।**

आचार्य निम्न मन्त्र का उच्चारण करके यजमान से दोनों अथर्ववेदियों की पूजा करावें—**ॐ शं नो देवीरभिष्टय आपो भवन्तु पीतये। शं योरभिस्त्रवन्तु नः॥**

मध्य कलश में—

एह्येहि यज्ञेश्वर यज्ञरक्षां विधत्स्वा नक्षत्रगणेन सार्धम्।
सर्वौषधि:भि: पितृभि: सहैव गृहाण पूजां भगवन्नमस्ते॥
ॐ वयर्ठ० सोम व्रते तव मनस्तनू षु बिभ्रतः। प्रजावन्तः सचेमहि॥
ॐ भूर्भुवः स्वः सोमाय नमः। सोममावाहयामि स्थापयामि।

आचार्य यजमान से ध्वजपताका का स्पर्श निम्न श्लोक और मन्त्र का उच्चारण करके करावें—

हरितवर्णां पताकां च हरिद्वर्णमयं ध्वजम्।
कुबेराय लभाम्येव पूजये च सदार्थिना॥
ॐ आप्यायस्व समेतु ते विश्वतः सोम वृष्ण्यम्। भवा वाजस्य सङ्गथे॥

आचार्य निम्न श्लोक का उच्चारण करके यजमान से प्रार्थना करावें—

गौरोपमपुमान्स्थूलः सर्वौषधिरसादयः।
नक्षत्राधिपतिः सोमस्तस्मै नित्यं नमो नमः॥

बलिदानम्

इमं माषभक्तबलिं देव गृहाण त्वं धनप्रदः।
यज्ञसंरक्षणार्थाय प्रसन्नो वरदो भव॥

ॐ सोमाय साङ्गाय सपरिवाराय सायुधाय सशक्तिकाय इमं दधिमाषभक्तबलिं समर्पयामि।

भो सोम बलिं गृहाण मम सकुटुम्बस्य सपिरवारस्य गृहे आयुःकर्ता शान्तिकर्ता पुष्टिकर्ता तुष्टिकर्ता क्षेमकर्ता आरोग्यकर्ता वरदो भव। अनेन बलिदानेन नमो भगवते सोमाय सकलकोशाधिपतये प्रीयतां न मम।

आचार्य ईशानकोण में यजमान को ले जाकर आचमन करवाके कलश स्थापित करावें—**ॐ सुप्रतीकाय नमः। ॐ मङ्गलाय नमः।**

पूजन करवाके कलश के ऊपर—

एह्येहि विश्वेश्वर नत्रिशूलकपालखट्वाङ्गधरेण सार्धम्।
लोकेश भूतेश्वर यज्ञसिध्यै गृहाण पूजां भगवन्नमस्ते॥

ॐ तमीशानं जगतस्तस्थुषस्पतिं धियं जिन्वमवसे हूमहे वयम्। पूषा नो यथा वेदसामसद्वृधे रक्षिता पायुरदब्धः स्वस्तये॥

ॐ ईशानाय नमः। ईशानमावाहयामि स्थापयामि।

आचार्य यजमान से ध्वजपताका का स्पर्श निम्न श्लोक और मन्त्र का उच्चारण करके करावें—

ईशानाय ध्वजं श्वेतं पताकां गन्धभूषिताम्।
आलभामि महेशाय वृषारूढाय शूलिने॥

ॐ तमीशानं जगतस्तस्थुषस्पतिं धियं जिन्वमवसे हूमहे वयम्। पूषा नो यथा वेदसामसद्वृधे रक्षिता पायुरदब्धः स्वस्तये॥

आचार्य निम्न श्लोक का उच्चारण करके यजमान से प्रार्थना करावें—

सर्वाधिपो महादेव ईशानः शुक्ल ईश्वरः।
शूलपाणिर्विरूपाक्षः तस्मै नित्यं नमो नमः॥

बलिदानम्

इमं माषबलिं देव गृहाणेशानशङ्करः।
यज्ञसंरक्षणार्थाय प्रसन्नो वरदो भव॥

ॐ ईशानाय साङ्गाय सपरिवाराय सायुधाय सशक्तिकाय इमं दधिमाषभक्तबलिं समर्पयामि।

भो ईशान बलिं गृहाण मम सकुटुम्बस्य सपिरवारस्य गृहे आयुःकर्ता शान्तिकर्ता पुष्टिकर्ता तुष्टिकर्ता क्षेमकर्ता आरोग्यकर्ता वरदो भव। अनेन बलिदानेन ईशानः साङ्गः सपरिवारः सायुधः सशक्तिकः प्रीयतां न मम।

ईशानकोण और पूर्व दिशा के मध्य में यजमान को ले जाकर आचमन करवाके उससे कलश को स्थापित करवाके कलश के ऊपर—

एह्येहि विष्ण्वाधिपते सुरेन्द्रलोकेन सार्द्धं पितृदेवताभिः।
सर्वस्य धातास्यमितप्रभावो विशाध्वरन्नः सततं शिवाय॥

ॐ अस्मे रुद्रा मेहना पर्वतासो वृत्रहत्ये भरहूतौ सजोषाः। यः शर्ठ०सते स्तुवते धायि पज्र इन्द्रज्येष्ठा अस्माँ२॥ अवन्तु देवाः॥

ॐ भूर्भुवः स्वः ब्रह्मणे नमः। ब्रह्माणमावाहयामि स्थापयामि।

आचार्य यजमान से ध्वजपताका का स्पर्श निम्न श्लोक और मन्त्र का उच्चारण करके करावें—

पद्मवर्णां पताकां च पद्मवर्णध्वजं तथा।
आलभामि सुरेशाय ब्रह्मणेनन्तशक्तये॥

ॐ ब्रह्म यज्ञानं प्रथमं पुरस्ताद्वि सीमतः सुरुचो वेन आवः। स बुध्न्या उपमा अस्य विष्ठाः सतश्च योनिमसतश्च विवः॥

आचार्य निम्न श्लोक का उच्चारण करके यजमान से प्रार्थना करावें—

पद्मयोनिश्चतुर्मूर्त्ति वेदव्यासपितामहः।
यज्ञाध्यक्षश्चतुर्वक्रस्तस्मै नित्यं नमो नमः॥

बलिदानम्

इमं माषबलिं ब्रह्मन् गृहाण कमलासन।
यज्ञसंरक्षणार्थाय प्रसन्नो वरदो भव॥

ॐ ब्रह्मणे साङ्गाय सपरिवाराय सायुधाय सशक्तिकाय इमं दधिमाषभक्तबलिं समर्पयामि।

भो ब्रह्मन् बलिं गृहाण मम सकुटुम्बस्य सपिरवारस्यायुः कर्ता शान्तिकर्ता पुष्टिकर्ता तुष्टिकर्ता क्षेमकर्ता आरोग्यकर्ता वरदो भव। अनेन बलिदानेन नमो भगवते ब्रह्मणे सकलवेदशास्त्रतत्वज्ञानाधिपतये प्रीयतां न मम।

आचार्य नैर्ॠत्यकोण और पश्चिम दिशा के मध्य में यजमान को ले जाकर आचमन करवाके कलश की स्थापना करावें तथा इस नाममन्त्र से वरुण की पूजा करावें—**ॐ वरुणाय नमः**। इस प्रकार से पूजा करवाके पुनः कलश के ऊपर—

एह्येहि पातालधरामरेन्द्रनागाङ्गनाकिन्नरगीयमान।
यक्षोरगेन्द्रामरलोकसङ्घैरनन्त रक्षाध्वरमस्मदीयम्॥

ॐ स्योना पृथिवि नो भवानृक्षरा निवेशनि। यच्छानः शर्म सप्रथाः॥
ॐ भूर्भुवः स्वः अनन्ताय नमः। अनन्तमावाहयामि स्थापयामि।

आचार्य यजमान से ध्वजपताका का स्पर्श निम्न श्लोक और मन्त्र का उच्चारण करके करावें—

मेघवर्णां पताकां च मेघवर्णां ध्वजन्तथा।
आलभामि ह्यनन्ताय धरणीधारिणे नमः॥

ॐ नमोऽस्तु सर्पेभ्यो ये के च पृथिवीमनु। ये अन्तरिक्षे ये दिवि तेभ्यः सर्पेभ्यो नमः॥

आचार्य निम्न श्लोक का उच्चारण करके यजमान से प्रार्थना करावें—

घनवर्णां पताकेमां ध्वजं गन्धविभूषितम्।
स्थापयामि प्रसन्नाय अनन्ताय नमो नमः॥

बलिदानम्

इमं माषबलिं शेष गृहाणानन्तपन्नग।
यज्ञसंरक्षणार्थाय प्रसन्नो वरदो भव॥

ॐ अनन्ताय साङ्गाय सपरिवाराय सायुधाय सशक्तिकाय इमं दधिमाषभक्तबलिं समर्पयामि।

भो अनन्त बलिं गृहाण मम सकुटुम्बस्य सपरिवारस्यायुः कर्ता शान्तिकर्ता पुष्टिकर्ता तुष्टिकर्ता क्षेमकर्ता आरोग्यकर्ता वरदो भव। अनेन बलिदानेन अनन्तः प्रीयतां न मम।

आचार्य ईशानकोण में यजमान को ले जाकर आचमन करवावें और उससे महाध्वज का पूजन इस प्रकार से करावें। अत्यन्त ऊँचा दण्ड हो दस हाथ या सोलह हाथ लम्बा महाध्वज हो, विचित्र वर्ण हो, किनारे पर छोटे-छोटे घुँघरू लगे हों, तीन हाथ चौड़ा, सात हाथ लम्बा अथवा पाँच हाथ चौड़ा, दस हाथ लम्बा महाध्वज बनावें।

ॐ आ ब्रह्मन्ब्राह्मणो ब्रह्मवर्चसी जायतामा राष्ट्रे राजन्यः शूर इषव्योऽतिव्याधी महारथो जायतां दोग्ध्री धेनुर्वोढानड्वानाशुः सप्तिः पुरन्धिर्योषा जिष्णू रथेष्ठाः सभेयो युवास्य यजमानस्य वीरो जायतां

निकामे निकामे नः पर्जन्यो वर्षतु फलवत्यो न ओषधयः पच्यन्तां योगक्षेमो नः कल्पताम्॥

ततो मण्डपषोडशवलिकासु—ॐ सर्वेभ्यो देवेभ्यो नमः। वंशे—ॐ किन्नरेभ्यो नमः। मण्डपपृष्ठदेशे—ॐ पन्नगेभ्यो नमः।

उपरोक्त मन्त्र व नाममन्त्रों से पूजा करवाके आचार्य निम्न श्लोक और मन्त्र का उच्चारण करके यजमान से उसका स्पर्श करावें—

इमं विचित्रवर्णन्तु महाध्वजविनिर्मितम्।
महाध्वजञ्चालभामि महेन्द्राय सुप्रीतये॥

ॐ ब्रह्म जज्ञानं प्रथमं पुरस्ताद्वि सीमतः सुरुचो वेन आवः। स बुध्न्या उपमा अस्य विष्ठाः सतश्च योनिमसतश्च विवः॥

अमुं महाध्वजं चित्रं सर्वविघ्नविनाशकम्।
महामण्डपमध्ये तु स्थापयामि सुरार्चने॥

ॐ इन्द्रस्य वृष्णो वरुणस्य राज्ञ आदित्यानां मरुतार्ठ० शर्ध उग्रम्। महामनसां भुवनच्यवानां धोषो देवानां जयतामुदस्थात्॥

अनया पूजया इन्द्रः प्रीयताम्।

इसके पश्चात् सोलह वल्लियों पर—**ॐ सर्वेभ्यो देवेभ्यो नमः**। बाँसों पर—**ॐ किन्नरेभ्यो नमः**। मण्डप पृष्ठ पर—**ॐ पन्नगेभ्यो नमः**। (सम्पूज्य आलभेत्) का उच्चारण करवाके पूजा करवाके पुनः उसके पश्चात् मण्डप से बाहर पूर्व में लेप करवाके भूमि पर यजमान को बैठाकर आचार्य वहाँ अष्टदल बनावें। इन्हीं आठों दलों पर आचार्य निम्न मन्त्र का उच्चारण करके यजमान से पूजा करावें—**ॐ नमो गणेभ्यो गणपतिभ्यश्च वो नमो नमो व्रातेभ्यो व्रातपतिभ्यश्च वो नमो नमो गृत्सेभ्यो गृत्सपतिभ्यश्च वो नमो नमो विरूपेभ्यो विश्वरूपेभ्यश्च वो नमः॥**

आचार्य निम्न श्लोक का उच्चारण करते हुए यजमान से प्रार्थना करावें—

त्रैलोक्ये यानि भूतानि स्थावराणि चराणि च।
ब्रह्मविष्णुशिवैः सार्द्धं रक्षां कुर्वन्तु तानि वै॥ १॥

देवदानवगन्धर्वा यक्ष-राक्षस-पन्नगाः।
ऋषयो मुनयो गावो देवमातर एव च॥ २॥
सर्वे ममाध्वरे रक्षां प्रकुर्वन्तु मुदान्विताः।
ब्रह्मा विष्णुश्च रुद्रश्च क्षेत्रपालौ गणैः सह।
रक्षन्तु मण्डपं सर्वे घ्नन्तु रक्षांसि सर्वतः॥ ३॥

आचार्य अक्षत पुञ्जों पर पूर्व आदि क्रम से निम्न वाक्यों का उच्चारण करके यजमान से आवाहन करावें—

ॐ त्रैलोक्यस्थेभ्यः स्थावरेभ्यो नमः त्रैलोक्यस्थावरानावाहयामि। ॐ त्रैलोक्यस्थभ्यश्चरेभ्यो नमः त्रैलोक्यस्थभ्यश्चरानावाहयामि। ॐ ब्रह्मणे नमः ब्रह्माणमावाहयामि। ॐ विष्णवे नमः विष्णु-मावाहयामि। ॐ शिवाय नमः शिवमावाहयामि। ॐ देवेभ्यो नमः देवानावाहयामि। ॐ दानवेभ्यो नमः दानवानावाहयामि। ॐ गन्धर्वेभ्यो नमः गन्धर्वानावाहयामि। ॐ यक्षेभ्यो नमः यक्षनावाहयामि। ॐ राक्षसेभ्यो नमः राक्षसानावाहयामि। ॐ पन्नगेभ्यो नमः पन्नगाना-वाहयामि। ॐ ऋषिभ्यो नमः ऋषीनावाहयामि। ॐ मुनिभ्यो नमः मुनिनावाहयामि। ॐ गोभ्यो नमः गावः आवाहयामि। ॐ देवमातृभ्यो नमः देवमातृः आवाहयामि।

तदुपरान्त आचार्य इन्द्रादि लोकपालों के लिए घृत व भात की बलि निम्न वाक्य का उच्चारण करके उससे प्रदान करें—

ॐ नमो भगवते इन्द्राय पूर्वदिग्वासिभ्यः इन्द्रपार्षदेभ्योदिगीश-मातृगणक्षेत्रपालादिभ्योबलिरयमुपतिष्ठतु स्वाहा।

यजमान अपने दोनों हाथों में लाल पुष्पों को लेवें और आचार्य निम्न श्लोकों का उच्चारण करते हुए उससे पुष्पाञ्जलि प्रदान करावें—

**नन्दे नन्दय वासिष्ठे वसुभिः प्रजया सह।
जय भार्गवदायादे प्रजानां विजयावह॥ १॥**

पूर्णे गिरिशदायादे पूर्णकर्म कुरुष्व माम्।
भद्रे काश्यपिदायादे कुरु भद्रां मतिं मम॥ २॥
सर्वबीजौषधीयुक्ते सर्वरत्नौषधिवृते।
रुचिरे नन्दने नन्दे वासिष्ठे नन्दतामिह॥ ३॥
प्रजापतिसुते देवि चतुरस्त्रे महीयसि।
सुव्रते सुभगे देवि गृहे काश्यपि रम्यताम्।
पूजिते परमाचार्यैर्गन्धमाल्यैरलङ्कृते॥ ४॥
भवभूतिकरे देवि गृहे भार्गवि रम्यताम्।
अव्यये चाक्षते पूर्णे मुनेरङ्गिरसः सुते।
मनुष्यधेनुहस्त्यश्वपशुवृद्धिकरी भव॥ ५॥

आचार्य आग्नेयादि लोकपालों का बलिदान करावें। इसके पश्चात् बाँस के पात्र पर सभी भूतों के लिए निम्न संकल्प का उच्चारण करके यजमान से बलि प्रदत्त करावें—

देशकालौ संकीर्त्य, अमुकगोत्रः अमुकशर्माऽहं (वर्माऽहं, गुप्तोऽहं, दासोऽहं) अस्मिन् धूमावतीप्रतिष्ठाकर्मणि मण्डपपूजाङ्गविहितं मातृगणक्षेत्रपालप्रीतये भूत-प्रेत-पिशाचादिनिवृत्त्यर्थं सार्वभौतिक-बलिदानं करिष्ये।

नवीन बाँस के सूप में अधिक मात्रा में उड़द और भात की बलि रक्खें और निम्न मन्त्र से सभी भूतों की गन्धादि से पूजा यजमान से करावें—

ॐ नमोऽस्तु रुद्रेभ्यो ये दिवि येषां वर्षमिषवस्तेभ्यो दश प्राचीर्दश दक्षिणा दश प्रतीचीर्दशोदीचीर्दशोर्ध्वास्तेभ्यो नमो अस्तु ते नोऽवन्तु तेनो मृडयन्तु ते यं द्विष्मो यश्च नो द्वेष्टि तमेषां जम्भे दध्मः॥

आचार्य निम्न श्लोक का उच्चारण करके यजमान से प्रार्थना करावें—

अधश्चैव तु ये लोका असुराश्चैव पन्नगाः।
सपत्नीपरिवाराश्च प्रतिगृह्णन्त्विमं बलिम्॥ १॥

नक्षत्राधिपतिश्चैव नक्षत्रैः परिवारितः।
स्थानं चैव पितृणां तु सर्वे गृह्णन्त्विमं बलिम्॥ २॥
ये केचित्त्विह लोकेषु आगता बलिकाङ्क्षिणः।
तेभ्यो बलिं प्रयच्छामि नमस्कृत्य पुनः पुनः॥ ३॥
बलिं गृहणन्त्विमे देवा आदित्या वसवस्तथा।
मरुतश्चाश्विनौ रुद्राः सुपर्णाः पन्नगा ग्रहाः॥ ४॥
असुरा यातुधानाश्च पिशाचा मातरोगणाः।
शाकिन्यो यक्षवेताला योगिन्यः पूतनाः शिवाः॥ ५॥
जृम्भकाः सिद्धगन्धर्वा नागा विद्याधरा नगाः।
दिक्पाला लोकपालाश्च ये च विघ्नविनायकाः॥ ६॥
जगतां शान्तिकर्तारो ब्रह्माद्याश्च महर्षयः।
मा विघ्ना मा च ये पापं मा सन्तु परिपन्थिनः॥ ७॥
सौम्या भवन्तु तृप्ताश्च देवा भूतगणास्तथा।
ते गृह्णन्तु मया दत्तं बलिं वै सार्वभौतिकम्॥ ८॥

(अनेन सार्वभौतिकबलिदानेन सार्वभौतिकाधिपती रुद्रः प्रीयतां न मम।)

तदुपरान्त प्रक्षालित हाथ-पैर धोकर पूर्व द्वार से मण्डप में प्रवेश करके यजमान दक्षिण दिशा की ओर आसन पर बैठकर यथाविहित कर्म करें।

सर्वतोभद्रदेवतास्थापनं पूजनं च

यजमानः स्वदक्षिणहस्ते जलाऽक्षत-द्रव्यं चादाय, सङ्कल्पं कुर्यात्—देशकालौ संकीर्त्य, अमुकगोत्रः अमुकशर्माऽहम् (वर्माऽहम्, गुप्तोऽहम्, दासोऽहम्) करिष्यमाण-धूमावतीप्रतिष्ठाकर्मणि महावेद्यां सर्वतोभद्रमण्डले (भद्रमण्डले) वा ब्रह्मादिदेवतानां स्थापनं पूजनं च करिष्ये।

तद्यथा—

ॐ ब्रह्म जज्ञानं प्रथमं पुरस्ताद्वि सीमतः सुरुचो वेन आवः। स बुध्न्या उपमा अस्य विष्ठाः सतश्च योनिमसतश्च विवः॥ मध्ये कर्णिकायाम्—**ॐ भूर्भुवः स्वः ब्रह्मणे नमः, ब्रह्माणमावाहयामि स्थापयामि॥ १॥ ॐ वयर्ठ० सोमव्रतेतवमनस्तनूषुबिब्भ्रतः। प्रजावन्तः सचेमहि॥** उत्तरे वाप्याम्-**ॐ भूर्भुवः स्वः सोमाय नमः, सोममावाहयामि स्थापयामि॥ २॥ ॐ तमीशानं जगतस्तस्थुषस्पतिं धियञ्जिन्वमवसे हूमहे व्यम्। पूषानो यथा वेदसामसद्वृधे रक्षितापायुरदब्धः स्वस्तये॥** ईशान्यां खण्डेन्दौ-**ॐ भूर्भुवः स्वः ईशानाय नमः, ईशानमावाहयामि स्थापयामि॥ ३॥ ॐ त्रातारमिन्द्रमवितारमिन्द्रर्ठ० हवे हवे सुहवर्ठ० शूरमिन्द्रम्। ह्वयामि शक्रं पुरुहूतमिन्द्रर्ठ० स्वस्ति नो मघवा धात्विन्द्रः॥** पूर्वे वाप्याम्-**ॐ भूर्भुवः स्वः इन्द्राय नमः, इन्द्रमावाहयामि स्थापयामि॥ ४॥**

आचार्य 'ॐ ब्रह्मयज्ञानं०' से 'ब्रह्माणमावाहयामि स्थापयामि' तक का उच्चारण करके सर्वतोभद्र के मध्यकर्णिका पर ब्रह्मा का, 'ॐ वयर्ठ० सोम०' से 'सोममा० स्था०' तक का उच्चारण करके उत्तर दिशा की वापी में सोम का, 'ॐ तमीशान जगतः०' से लेकर 'ईशानमा० स्था०' तक कहकर ईशान कोणस्थित खण्डेन्दु पर ईशान का, 'ॐ त्रातारमिन्द्रमवितारमिन्द्र०' से 'इन्द्रमावाहयामि स्थाप०' तक कहकर पूर्व दिशा की वापी में इन्द्र का आवाहन एवं स्थापन करें।

ॐ त्वं नो अग्ने तव देव पायुभिर्मघोनो रक्ष तन्वश्च वन्द्य। त्राता तोकस्य तनये गवामस्यनिमेषर्ठ० रक्षमाणस्तव व्रते॥ आग्नेयां खण्डेन्दौ—ॐ भूर्भुवः स्वः अग्नये नमः, अग्निमावाहयामि स्थापयामि॥ ५॥ ॐ यमाय त्वाङ्गिरस्वते पितृमते स्वाहा। स्वाहा घर्माय स्वाहा घर्मः पित्रे॥ दक्षिणे वाप्याम्—ॐ भूर्भुवः स्वः यमाय नमः, यममावाहयामि स्थापयामि॥ ६॥ ॐ असुन्वन्तमयजमानमिच्छ स्तेनस्येत्यामन्विहि तस्करस्य। अन्यमस्मदिच्छ सा त इत्या नमो देवि निर्ऋते तुभ्यमस्तु॥ नैर्ऋत्यां खण्डेन्दौ—ॐ भूर्भुवः स्वः निर्ऋतये नमः, निर्ऋतिमावाहयामि स्थापयामि॥ ७॥ ॐ तत्त्वा यामि ब्रह्मणा वन्दमानस्तदाशास्ते यजमानो हविर्भिः। अहेडमानो वरुणेह बोध्युरुशर्ठ०स मा न आयुः प्रमोषीः॥ पश्चिमे वाप्याम्-ॐ भूर्भुवः स्वः वरुणाय नमः, वरुणमावाहयामि स्थापयामि॥ ८॥ ॐ आ नो नियुद्भिः शतिनीभिरध्वर्ठ० सहस्त्रिणीभिरुपयाहि यज्ञम्। वायो अस्मिन्त्सवने मादयस्व यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः॥ वायव्यां खण्डेन्दौ-ॐ भूर्भुवः स्वः वायवे नमः, वायुमावाहयामि स्थापयामि॥ ९॥

'ॐ त्वन्नोऽअग्ने०' से 'अग्निमावाहयामि स्थापयामि' तक पढ़कर अग्निकोण के खण्डेन्दु में अग्नि का, 'ॐ यमाय त्वाङ्गिरस्वते०' से आरम्भ कर 'यममावाहयामि स्थापयामि' पर्यन्त उच्चारण कर दक्षिण वापी में यम का आवाहन एवं स्थापन करे। इसी प्रकार—'असुन्वतमयजमानमिच्छ०' से 'निर्ऋतिमावाहयामि स्थापयामि' तक कहकर नैर्ऋत्यकोणस्थित खण्डेन्दु पर निर्ऋति का, 'ॐ तत्त्वा यामि ब्रह्मणा०' से 'वरुणमावाहयामि स्थापयामि' तक का उच्चारण कर पश्चिम दिशा की वापी में वरुण का, 'ॐ आ नो नियुद्भिः शतिनीभिरध्वर्ठ०' से 'वायुमावाहयामि स्थापयामि' तक कहकर वायव्य दिशा स्थित खण्डेन्दु में वायु का आवाहन एवं स्थापन करें।

ॐ सुगा वो देवाः सदना अकर्म य आजग्मेर्ठ० सवनं जुषाणाः। भरमाणा वहमाना हवीर्ठ०ष्यस्मे धत्त वसवो वसूनि स्वाहा॥ वायुसोम-योर्मध्ये भद्रे-**ॐ भूर्भुवः स्वः अष्टवसुभ्यो नमः, अष्टवसुनामावाहयामि स्थापयामि॥ १०॥ ॐ रुद्राः सर्ठ० सृज्य पृथिवीं बृहज्योतिः समीधिरे। तेषां भानुरजस्त्रऽइच्छुक्रो देवेषुरोचते॥** सोमेशानयोर्मध्ये भद्रे-**ॐ भूर्भुवः स्वः एकादशरुद्रेभ्यो नमः, एकादशरुद्रानावाहयामि स्थापयामि॥ ११॥ ॐ यज्ञो देवानां प्रत्येतिसुम्नमादित्यासोभवतामृडयन्तः। आवोर्वाची-सुमतिर्ववृत्त्यादर्ठ० होश्चिद्यावरिवोवित्तरासदादित्येभ्यस्त्वा॥** ईशानेन्द्रमध्ये भद्रे-**ॐ भूर्भुवः स्वः द्वादशादित्येभ्यो नमः, द्वादशादित्यानावाहयामि स्थापयामि॥ १२॥ ॐ अश्विनातेजसाचक्षुः प्राणेन सरस्वती वीर्यम्। वाचेन्द्रो बलेनेन्द्राय दधुरिन्द्रियम्॥** इन्द्राग्निमध्ये भद्रे-**ॐ भूर्भुवः स्वः अश्विभ्यां नमः, अश्विनौमावाहयामि स्थापयामि॥ १३॥ ॐ विश्वेदेवास-ऽआगतश्रृणुतामऽइमर्ठ०हवम्। एदं बर्हिनिषीदत। उपयामगृहीतोऽसि-विश्वेभ्यस्त्वा देवेभ्यऽएषते यो निर्विश्वेभ्यस्त्वा देवेभ्यः॥** अग्नियममध्ये भद्रे-**ॐ भूर्भुवः स्वः सपैतृकविश्वेभ्यो देवेभ्यो नमः, सपैतृकविश्वान् देवानावावाहयामि स्थापयामि॥ १४॥**

'ॐ सुगा वो देवाः०' से 'अष्टवसून् आवाहयामि स्थापयामि' पर्यन्त कहकर वायुकोण एवं उत्तर दिशा के मध्य रक्तभद्र में अष्टवसु का, 'ॐ रुद्रा सर्ठ०'—'एकादशरुद्रानावाहयामि स्थापयामि' पर्यन्त पढ़कर उत्तर और ईशान के मध्य (रक्तवर्ण) भद्र में एकादश रुद्रों का, 'ॐ यज्ञो देवानां०'—'द्वादशादित्याना-वाहयामि स्थापयामि' से ईशानकोण एवं पूर्वदिशा के मध्य भद्र में द्वादशादित्यों का, 'ॐ अश्विना तेजसा०'—'अश्विनौ आवाहयामि स्थापयामि' तक कहकर पूर्व एवं अग्निकोण के मध्य रक्त वर्ण के भद्र में अश्विनी का, 'ॐ विश्वेदेवास ऽआगत०'—'स-पैतृक-विश्वान् देवानावाहयामि स्थापयामि' तक कहकर अग्निकोण एवं (यम) दक्षिण दिशा के बीच रक्तवर्ण स्थित भद्र में स-पैतृक विश्वेदेव का आवाहन एवं स्थापन करें।

ॐ अभित्यन्देवर्ठ० सवितारमोण्योः कविक्रतुमर्चामि सत्यसवर्ठ० रत्नधामभि प्रियं मतिं कविम्। ऊर्ध्वायस्याऽमतिर्भाऽअदिद्युतत्सवीमनि- हिरण्य पाणिरमिमीतसुक्रतुः कृपास्वः। प्रजाभ्यसत्वाप्रजास्त्वानुप्राणन्तु प्रजास्त्वमनु प्राणिहि॥ यमनिर्ऋतिमध्ये भद्रे–**ॐ भूर्भुवः स्वः सप्तयक्षेभ्यो नमः, सप्तयक्षानावाहयामि स्थापयामि॥ १५॥ ॐ नमोऽस्तु सर्पेभ्यो ये के च पृथिवीमनु। ये अन्तरिक्षे ये दिवि तेभ्यः सर्पेभ्यो नमः॥** निर्ऋतिवरुणमध्ये भद्रे—**ॐ भूर्भुवः स्वः अष्टकुलनागेभ्यो नमः, अष्टकुल- नागानावाहयामि स्थापयामि॥ १६॥ ॐ ऋताषाड् ऋतधामाग्निर्गन्धर्व स्तस्यौषधयोप्सरसोमुदो नाम। स नऽइदं ब्रह्मक्षत्रंपातुतस्मै स्वाहा वाट् ताभ्यः स्वाहा॥** वरुणवायुमध्ये भद्रे-**ॐ भूर्भुवः स्वः गन्धर्वाप्सरोभ्यो नमः, गन्धर्वाप्सरसः आवाहयामि स्थापयामि॥ १७॥ ॐ यदक्रन्दः प्रथमं जायमान उद्यन्त्समुद्रादुतवापुरीषात्। श्येनस्य पक्षाहरिणस्यबाहूऽउपस्त्युत्यम्महि- जातन्तेऽअर्वन्॥** ब्रह्मसोममध्ये वाप्यां लिङ्गे वा-**ॐ भूर्भुवः स्वः स्कन्दाय नमः, स्कन्दमावाहयामि स्थापयामि॥ १८॥**

'ॐ अभित्यन्देवर्ठ० सविता रमोण्यो०' से लेकर 'सप्तयक्षान् आवाहयामि स्थापयामि' पर्यन्त उच्चारण कर दक्षिण और नैर्ऋत्यकोण के मध्य रक्त भद्र पर सप्त यक्षों का, 'ॐ नमोऽस्तु सर्पेभ्यो ये के च०' से 'अष्टकुल- नागानावाहयामि स्थापयामि' तक पढ़कर नैर्ऋत्यकोण तथा वरुण (पश्चिम) दिशा स्थित भद्र पर अष्टकुलनागों का, 'ॐ ऋताषाड् ऋतधामाग्नि०' से 'गन्धर्वाऽप्सरसः आवाहयामि स्थापयामि' पर्यन्त पढ़कर वरुण (पश्चिम) और वायुकोण स्थित रक्तभद्र से गन्धर्वाप्सरसः का आवाहन एवं स्थापन करे। इसी क्रम से 'ॐ यदक्रन्दः प्रथमं जायमान०' मन्त्र से 'स्कन्दमावाहयामि स्थापयामि' वाक्य पर्यन्त पढ़कर ब्रह्मा तथा उत्तर दिशा के मध्य स्थित वापी में स्कन्द का आवाहन एवं स्थापन करें।

ॐ आशुः शिशानो वृषभो न भीमो घनाघनः क्षोभणश्चर्षणीनाम्। संक्रन्दनोऽनिमिष एकवीरः शतꣳ सेना अजयत्साकमिन्द्रः ॥ तदुत्तरे— ॐ भूर्भुवः स्वः वृषभाय नमः, वृषभमावाहयामि स्थापयामि ॥ १९ ॥ ॐ कार्षिरसि समुद्रस्य त्वाक्षित्त्या उन्नयामि। समापो अद्भिरग्मत समोषधी- भिरोषधीः ॥ तदुत्तरे-ॐ भूर्भुवः स्वः शूलाय नमः, शूलमावाहयामि स्थापयामि ॥ २० ॥ ॐ कार्षिरसि समुद्रस्य त्वाक्षित्त्या उन्नयामि। समापो अद्भिरग्मत समोषधीभिरोषधीः ॥ तदुत्तरे-ॐ भूर्भुवः स्वः महाकालाय नमः महाकालमावाहयामि स्थापयामि ॥ २१ ॥ ॐ शुक्रज्योतिश्च चित्रज्योतिश्च सत्यज्योतिश्च ज्योतिष्माँश्च। शुक्रश्च ऋतपाश्चात्यꣳहाः ॥ ब्रह्मेशानमध्ये शृङ्खलायाम्-ॐ भूर्भुवः स्वः दक्षादिभ्यो नमः, दक्षादिमावाह- यामि स्थापयामि ॥ २२ ॥ ॐ अम्बे ऽअम्बिकेऽम्बालिके न मा नयति कश्चन। ससस्त्यश्वकः सुभद्रिकां काम्पीलवासिनीम् ॥ ब्रह्मेन्द्रमध्ये वाप्याम्- ॐ भूर्भुवः स्वः दुर्गायै नमः, दुर्गामावाहयामि स्थापयामि ॥ २३ ॥ ॐ इदं विष्णुर्विचक्रमे त्रेधा निदधे पदम्। समूढमस्य पाꣳसुरे स्वाहा ॥ तत्पूर्वे- ॐ भूर्भुवः स्वः विष्णवे नमः, विष्णुमावाहयामि स्थापयामि ॥ २४ ॥

'ॐ आशुः शिशानो०' से लेकर 'वृषभमावाहयामि स्थापयामि' तक पढ़कर वहीं पर, उसके आगे वृषभ का, 'ॐ कार्षिरसि समुद्रस्य०' मन्त्र से 'ॐ भू० शूलाय नमः, शूलमावाहयामि स्थापयामि' तक पढ़कर, उसके आगे शूल का, 'ॐ कार्षिरसि समुद्रस्य०' मन्त्र और 'ॐ भू० महाकालाय नमः, महाकालमावाहयामि स्थापयामि' तक पढ़कर उसके उत्तर की ओर महाकाल का, 'ॐ शुक्रज्योतिश्च चित्रज्योतिश्च०' से 'दक्षादिसप्तगणानावाहयामि स्थापयामि' कहकर ब्रह्मा और ईशानकोण के मध्य कृष्ण शृंखला पर दक्षादि- सप्तगण का, 'ॐ अम्बेऽम्बिके०' मन्त्र और 'दुर्गामावाहयामि स्थापयामि' उच्चारण कर ब्रह्मा तथा इन्द्र के मध्य स्थित वापी पर दुर्गा का, 'ॐ इदं विष्णुर्विचक्रमे०' तथा 'ॐ भू० विष्णवे नमः, विष्णुमावाहयामि स्थापयामि' कहकर, वहीं पर, उसके आगे विष्णु का आवाहन एवं स्थापन करें।

ॐ पितृभ्यः स्वधायिभ्यः स्वधानमः पितामहेभ्यः स्वधायिभ्यः स्वधानमः प्रपितामहेभ्यः स्वधायिभ्यः स्वधा नमः। अक्षन्पितरो-मीमदन्तपितरोऽतीतृपन्त पितरः पितरः शुन्धध्वम्॥ ब्रह्माग्निमध्ये शृङ्खलायाम्-ॐ भूर्भुवः स्वः स्वधायै नमः, स्वधामावाहयामि स्थापयामि॥ २५॥ ॐ परं मृत्यो अनुपरेहिपन्थां यस्ते अन्यऽइतरो देवयानात्। चक्षुष्मते शृण्वत ते ब्रवीमि मा नः प्रजाठं० रीरिषो मोत वीरान्॥ ब्रह्मयममध्ये वाप्याम्-ॐ भूर्भुवः स्वः मृत्युरोगेभ्यो नमः, मृत्युरोगानावाहयामि स्थापयामि॥ २६॥ ॐ गणानान्त्वा गणपतिठं० हवामहे प्रियाणान्त्वा प्रियपतिठं० हवामहे निधीनान्त्वा निधिपतिठं० हवामहे वसो मम आहमजानि गर्भधमा त्वमजासि गर्भधम्॥ ब्रह्मनिर्ऋतिमध्ये शृङ्खलायाम्-ॐ भूर्भुवः स्वः गणपतये नमः, गणपतिमावाहयामि स्थापयामि॥ २७॥ ॐ अप्स्वग्ने सधिष्टव सौषधीरनु रुध्यसे। गर्भे सन् जायसे पुनः॥ ब्रह्मवरुण-मध्ये वाप्याम्-ॐ भूर्भुवः स्वः अद्भ्यो नमः, अपः आवाहयामि स्थापयामि॥ २८॥ ॐ मरुतो यस्य हि क्षये पाथा दिवोविमहसः। स सुगोपातमो जनः॥ ब्रह्मवायुमध्ये शृङ्खलायाम्-ॐ भूर्भुवः स्वः मरुद्भ्यो नमः, मरुतः आवाहयामि स्थापयामि॥ २९॥

'ॐ पितृभ्यः स्वधायिभ्यः' से '—स्वधामावाहयामि स्थापयामि' पर्यन्त कहकर ब्रह्मा और अग्निकोण के मध्य कृष्ण शृंखला में स्वधा का, 'ॐ परं मृत्योऽअनु परेहि०' से 'मृत्युरोगानावाहयामि स्थापयामि' तक का उच्चारण कर ब्रह्मा और दक्षिण दिशा के मध्य वापी पर मृत्युरोग का, 'ॐ गणानां त्वा०' से लेकर 'गणपतिमावाहयामि स्थापयामि' तक पढ़कर ब्रह्मा एवं नैर्ऋत्य कोण के मध्य शृंखला में गणपति का आवाहन-स्थापन करें। 'ॐ अप्स्वग्ने सधिष्टव०' से '—अपः आवाहयामि स्थापयामि' तक कहकर ब्रह्मा और पश्चिम दिशा के मध्य स्थित वापी पर अप् का, 'ॐ मरुतो यस्य०' से 'मरुतः आवाहयामि स्थापयामि' तक पढ़कर ब्रह्मा और वायुकोण की मध्य शृंखला पर मरुत् देवता का आवाहन एवं स्थापन करें।

ॐ स्योना पृथिवि नो भवानृक्षरा निवेशनि। यच्छा नः शर्म सप्रथाः॥ ब्रह्मणपादमूले–**ॐ भूर्भुवः स्वः पृथिव्यै नमः, पृथ्वीमावाहयामि स्थापयामि॥ ३०॥ ॐ पंचनद्यः सरस्वती मपियन्ति सस्त्रोतसः। सरस्वती तु पंचधा सो देशे भवत्सरित्॥** तदुत्तरे–**ॐ भूर्भुवः स्वः गङ्गादिनदीभ्यो नमः, गङ्गादिनदीः आवाहयामि स्थापयामि॥ ३१॥ ॐ समुद्रोऽसि नभस्वानार्द्रदानुः शंभूर्मयोभूरभि मा वाहि स्वाहा। मारुतोऽसि मरुतां गणः शंभूर्मयोभूरभि मा वाहि स्वाहा अवस्यूरसि दुवस्वाञ्छुंभूर्मयो भूरभि मा वाहि स्वाहा॥** तदुत्तरे–**ॐ भूर्भुवः स्वः सप्तसागरेभ्यो नमः, सप्तसागरानावाहयामि स्थापयामि॥ ३२॥ ॐ परि त्वा गिर्वणो गिर इमा भवन्तु विश्वतः। वृद्धायुमनु वृद्धयो जुष्टा भवन्तु जुष्टयः॥** कर्णिकापरिधौ–**ॐ भूर्भुवः स्वः मेरवे नमः, मेरुमावाहयामि स्थापयामि॥ ३३॥ ॐ गणानान्त्वा गणपतिर्ठ० हवामहे प्रियाणान्त्वा प्रियपतिर्ठ० हवामहे निधीनान्त्वा निधिपतिर्ठ० हवामहे वसो मम आहमजानि गर्धमात्वमजासि गर्भधम्॥** सोमादिक्रमेण सत्त्वबाह्यपरिधौ–**ॐ भूर्भुवः स्वः गदायै नमः, गदामावाहयामि स्थापयामि॥ ३४॥**

इसी प्रकार 'ॐ स्योना पृथिवी नो०' मन्त्र तथा 'ॐ भू० पृथिव्यै नमः, पृथ्वीमावाहयामि स्थापयामि' वाक्य का उच्चारण कर ब्रह्मा के पाद मूल स्थित कर्णिका के नीचे पृथ्वी का, 'ॐ पञ्च नद्यः सरस्वतीमपियन्ति०'— 'ॐ भू० गङ्गादिनदीभ्यो नमः, गङ्गादिनदीः आवाहयामि स्थापयामि' से ब्रह्मा के पादमूल स्थिथ कर्णिका के आगे गंगा आदि नदियों का, 'ॐ समुद्रोऽसि नभस्वाना०' से '—सप्तसागरान्मावाहयामि स्थापयामि' तक कहकर वहीं पर, ब्रह्मा के पाद मूल स्थित कर्णिका के उत्तर भाग में सप्त सागरों का, 'ॐ परि त्वा०' से लेकर 'ॐ भू० मेरवे नमः, मेरुमावाहयामि स्थापयामि' पर्यन्त पढ़कर कर्णिकास्थित परिधि के ऊपर मेरु का आवाहन एवं स्थापन करे। तत्पश्चात् सर्वतोभद्रमण्डलस्थित सत्त्वपरिधि के बाहर उत्तर आदि दिशाओं के क्रम से आयुधों का आवाहन और स्थापन करे। जैसे—'ॐ गणानां त्वां०' मन्त्र तथा 'ॐ भू० गदायै नमः, गदामावाहयामि स्थापयामि' से उत्तर दिशा में गदा का आवाहन एवं स्थापन करें।

ॐ त्रिꣳ शद्धाम विराजति वाक् पतङ्गाय धीयते। प्रतिवस्तो-रहद्युभिः ॥ ईशान्याम्-ॐ भूर्भुवः स्वः त्रिशूलाय नमः, त्रिशूलमावाहयामि स्थापयामि ॥ ३५ ॥ ॐ महाँ२ ॥ इन्द्रो वज्रहस्तः षोडशी शर्म यच्छतु। हन्तु पाप्मानं योऽस्मान्द्वेष्टि। उपयामगृहीतोऽसि महेन्द्राय त्वैष ते योनिर्महेन्द्राय त्वा ॥ पूर्वे-ॐ भूर्भुवः स्वः वज्राय नमः, वज्रमावाहयामि स्थापयामि ॥ ३६ ॥ ॐ वसु च मे वसतिश्च मे कर्म च मे शक्तिश्च मेऽर्थश्चम एमश्च म इत्या च मे गतिश्च मे यज्ञेन कल्पन्ताम् ॥ आग्नेय्याम्-ॐ भूर्भुवः स्वः शक्तये नमः, शक्तिमावाहयामि स्थापयामि ॥ ३७ ॥ ॐ इडऽएह्यदितऽएहि काम्याऽएत। मयि वः काम धरणं भूयात् ॥ दक्षिणे-ॐ भूर्भुवः स्वः दण्डाय नमः, दण्डमावाहयामि स्थापयामि ॥ ३८ ॥ ॐ खड्गो वैश्वदेवः श्वा कृष्णः कर्णो गर्दभस्तरक्षुस्ते रक्षसामिन्द्राय सूकरः सिꣳहो मारुतः कृकलासः पिप्पका शकुनिस्ते शरव्यायै विश्वेषां देवानां पृषतः ॥ नैर्ऋत्याम्-ॐ भूर्भुवः स्वः खड्गाय नमः, खड्गमावाहयामि स्थापयामि ॥ ३९ ॥ ॐ उदुत्तमं वरुण पाशमस्मदवाधमं वि मध्यं श्रथाय। अथा वयमादित्य व्रते तवानागसो अदितये स्याम ॥ पश्चिमे-ॐ भूर्भुवः स्वः पाशाय नमः, पाशमावाहयामि स्थापयामि ॥ ४० ॥

'ॐ त्रिꣳ शद्धाम विराजति॰' से 'भू॰ त्रिशूलाय नमः, त्रिशूलमावाहयामि स्थापयामि' तक पढ़कर ईशान कोण में त्रिशूल का, 'ॐ महाँ२ ॥ इन्द्रो वज्रहस्तः॰' से 'ॐ भू॰ वज्राय नमः, वज्रमावाहयामि स्थापयामि' तक पढ़कर पूर्व दिशा में वज्र का, 'ॐ वसु च मे॰' से 'ॐ भू॰ शक्तये नमः, शक्तिमावाहयामि स्थापयामि' पर्यन्त कहकर अग्निकोण में शक्ति का, 'ॐ इड ऽएह्यदित॰' से 'ॐ भू॰ दण्डाय नमः, दण्डमावाहयामि स्थापयामि' तक पढ़कर दक्षिण दिशा में दण्ड का, 'ॐ खड्गो वैश्वदेवः श्वा कृष्ण॰'—'ॐ भू॰ खड्गाय नमः, खड्गमावाहयामि स्थापयामि' से नैर्ऋत्यकोण में खड्ग का, 'ॐ उदुत्तमं वरुण पाशमस्मदवाधमं॰' से 'ॐ पाशाय नमः, पाशमावाहयामि स्थापयामि' तक कहकर पश्चिम में पाश का आवाहन एवं स्थापन करें।

ॐ अर्ठ० शुश्च मे रश्मिश्च मेऽदाभ्यश्च मेऽधिपतिश्च म उपार्ठ० शुश्च मेऽन्तर्यामश्च म ऐन्द्रवायवश्च मे मैत्रावरुणश्च म आश्विनश्च मे प्रतिप्रस्थानश्च मे शुक्रश्च मे मन्थी च मे यज्ञेन कल्पन्ताम्॥ वायव्याम्-ॐ भूर्भुवः स्वः अङ्कुशाय नमः, अङ्कुशमावाहयामि स्थापयामि॥ ४१॥ ॐ आयङ्गौः पृश्निरक्रमीदसदन्मातरं पुरः। पितरं च प्रयन्त्स्वः॥ तदबाह्ये उत्तरे रक्तपरिधौ सोमादिक्रमेण-ॐ भूर्भुवः स्वः गौतमाय नमः, गौतममावाहयामि स्थापयामि॥ ४२॥ ॐ अयं दक्षिणा विश्वकर्मा तस्य मनो वैश्वकर्मणं ग्रीष्मो मानसस्त्रिष्टुब्ग्रैष्मी त्रिष्टुभः स्वारर्ठ० स्वारादन्तर्यामोन्तर्यामात्पंचदशः पञ्चदशाद् बृहद् भरद्वाज ऋषिः प्रजापतिगृहीतया त्वया मनो गृह्णामि प्रजाभ्यः॥ ईशान्याम्-ॐ भूर्भुवः स्वः भरद्वाजाय नमः, भरद्वाजमावाहयामि स्थापयामि॥ ४३॥ ॐ इदमुत्तरात्स्वस्तस्य श्रोत्रर्ठ० सौवर्ठ० शरच्छौत्र्यनुष्टुप् शारद्यनुष्टुभ ऐडमैडान्मन्थी मन्थिन एकविर्ठ०श एकविर्ठ०शाद्वैराजं विश्वामित्र ऋषिः प्रजापतिगृहीतया त्वया श्रोत्रं गृह्णामि प्रजाभ्यः॥ पूर्वे-ॐ भूर्भुवः स्वः विश्वामित्राय नमः, विश्वामित्रमावाहयामि स्थापयामि॥ ४४॥

'ॐ अर्ठ० शुश्च मे रश्मिश्च०'—'ॐ भू० अङ्कुशाय नमः, अङ्कुशमावाहयामि स्थापयामि' से वायव्य कोण में अंकुश का आवाहन और स्थापन करें। पुनः सर्वतोभद्रमण्डल के बाहर उत्तर में रक्तवर्णवाली परिधि पर गौतमादि ऋषियों का आवाहन एवं स्थापन इस प्रकार करें—'ॐ आयं गौः०' से 'ॐ भू० गौतमाय नमः, गौतममावाहयामि स्थापयामि' तक उच्चारण कर उत्तर में गौतम, 'ॐ अयं दक्षिणा विश्वकर्मा०' से 'ॐ भू० भरद्वाजाय नमः, भरद्वाजमावाहयामि स्थापयामि' तक पढ़कर ईशान कोण में भरद्वाज का, 'ॐ इदमुत्तरात्स्वस्तस्य०'—'ॐ भू० विश्वामित्राय नमः, विश्वामित्रमावाहयामि स्थापयामि' से पूर्वदिशा में विश्वामित्र का आवाहन एवं स्थापन करें।

ॐ त्र्यायुषं जमदग्नेः कश्यपस्य त्र्यायुषम्। यद्देवेषु त्र्यायुषं तन्नो ऽअस्तु त्र्यायुषम्॥ आग्नेय्याम्-ॐ भूर्भुवः स्वः कश्यपाय नमः, कश्यपमावा० स्थापयामि॥ ४५॥ ॐ अयं पश्चाद्विश्वव्यचास्तस्य चक्षुर्वैश्वव्यचसं वर्षाश्चाक्षुष्यो जगती वार्षी जगत्या ऋक्सममृक्समाच्छुक्रः शुक्रात्सप्तदशः सप्तदशाद्वैरूपं जमदग्निर्ऋषिः प्रजापतिगृहीतया त्वया चक्षुर्गृह्णामि प्रजाभ्यः॥ दक्षिणे-ॐ भूर्भुवः स्वः जमदग्नये नमः, जमदग्निमावाहयामि स्थापयामि॥ ४६॥ ॐ अयं पुरो भुवस्तस्य प्राणो भौवायनो वसन्तः प्राणायनो गायत्री वासन्ती गायत्र्यै गायत्रम् गायत्रादु-पार्ठ०शुरुपार्ठ० शोस्त्रिवृत्त्रिवृतो रथन्तरं वसिष्ठ ऋषिः प्रजापति-गृहीतया त्वया प्राणं गृह्णामि प्रजाभ्यः॥ नैर्ऋत्याम्-ॐ भूर्भुवः स्वः वसिष्ठाय नमः, वसिष्ठमावाहयामि स्थापयामि॥ ४७॥ ॐ अत्र पितरो मादयध्वं यथाभागमावृषायध्वम्। अमीमदन्त पितरो यथाभागमा-वृषायिषत॥ पश्चिमे-ॐ भूर्भुवः स्वः अत्रये नमः, अत्रिमावाहयामि स्थापयामि॥ ४८॥ ॐ तं पत्नीभिरनुगच्छेमदेवाः पुत्रैर्भ्रातृभिरुत वा हिरण्यैः। नाकं गृभ्णानाः सुकृतस्य लोके तृतीये पृष्ठे अधि रोचने दिवः॥

'ॐ त्र्यायुषं जमदग्नेः०' से '-ॐ भू० कश्यपाय नमः, कश्यप-मावाहयामि स्थापयामि' तक कहकर अग्निकोण में कश्यप का, 'ॐ अयं पश्चाद्विश्वव्यचास्तस्य०'—'ॐ भू० जमदग्नये नमः, जमदग्निमावाहयामि स्थापयामि' से दक्षिण में जमदग्नि का, 'ॐ अयं पुरो भुवस्तस्य प्राणो०' से 'ॐ भू० वसिष्ठाय नमः, वसिष्ठमावाहयामि स्थापयामि' से नैर्ऋत्य-कोण में वसिष्ठ का आवाहन और स्थापन करे। 'ॐ अत्र पितरो मादय-ध्वम्०' से 'ॐ भू० अत्रये नमः, अत्रिमावाहयामि स्थापयामि' पर्यन्त पढ़कर पश्चिम में अत्रि और 'ॐ तं पत्नीभिरनुगच्छेम देवाः०' से लेकर 'ॐ भू० अरुन्धत्यै नमः, अरुन्धतीमावाहयामि स्थापयामि' तक पढ़कर

वायव्याम्-ॐ **भूर्भुवः स्वः अरुन्धत्यै नमः, अरुन्धतीमावाहयामि स्थापयामि ॥ ४९ ॥** तद्बाह्ये कृष्णपरिधौ पूर्वादिक्रमेणऐन्द्र्यादीनां स्थापनम्— **ॐ अदित्यै रास्नासीन्द्राण्या उष्णीषः। पूषासि घर्माय दीष्व॥** पूर्वे-**ॐ भूर्भुवः स्वः ऐन्द्र्यै नमः, ऐन्द्रीमावाहयामि स्थापयामि ॥ ५० ॥ ॐ अम्बेऽअम्बिकेऽम्बालिके न मा नयति कश्चन। ससस्त्यश्श्वकः सुभद्रिकां काम्पीलवासिनीम् ॥** आग्नेय्याम्-**ॐ भूर्भुवः स्वः कौमार्य्यै नमः, कौमारीमावाहयामि स्थापयामि ॥ ५१ ॥ ॐ इन्द्रायाहि धियेषितो विप्रजूतः सुतावतः। उप ब्रह्माणि वाघतः ॥** दक्षिणे-**ॐ भूर्भुवः स्वः ब्राह्म्यै नमः, ब्राह्मीमावाहयामि स्थापयामि ॥ ५२ ॥ ॐ इन्द्रस्य क्रोडोऽदित्यै पाजस्यं दिशां जत्रवोऽदित्यै भसज्जीमूतान्हृदयौपशेनान्तरिक्षं पुरीतता नभ उदर्येण चक्रवाकौ मतस्नाभ्यां दिवं वृक्काभ्यां गिरीन्प्लाशिभिरुपलान्प्लीहा वल्मीकान्क्लोमभिर्ग्लौभिर्गुल्मान्हिराभिः स्रवन्तीर्ह्रदान्कुक्षिभ्यार्ठ० समुद्रमुदरेण वैश्वानरं भस्मना॥** नैर्ऋत्याम्-**ॐ भूर्भुवः स्वः वाराह्यै नमः, वाराहीमावाहयामि स्थापयामि ॥ ५३ ॥**

वायव्यकोण में अरुन्धती का आवाहन एवं स्थापन आचार्य करें। तदनन्तर, उसके बाहर तृतीय कृष्ण परिधि पर, पूर्व आदि दिशा के क्रम से ऐन्द्र्यादि देवियों को आवाहन और स्थापन करे। जैसे—'ॐ आदित्यै रास्ना०' से 'ॐ भू० ऐन्द्र्यै नमः, ऐन्द्रीमावाहयामि स्थापयामि' तक कहकर पूर्व में ऐन्द्री का, 'ॐ अम्बेऽम्बिके०'– 'ॐ भू० कौमार्यै नमः, कौमारीमावाहयामि स्थापयामि' तक कहकर अग्निकोण में कौमारी का, 'ॐ इन्द्रायाहि धियेषितो०' मन्त्र और 'ॐ भू० ब्राह्मयै नमः, ब्राह्मीमावाहयामि स्थापयामि' वाक्य का उच्चारण कर दक्षिण में ब्राह्मी का, 'ॐ इन्द्रस्य क्रोडोऽदित्यै०' से 'ॐ भू० वाराह्यै नमः, वाराहीमावाहयामि स्थापयामि' तक कहकर नैर्ऋत्यकोण में वाराही का आवाहन और स्थापन करें।

ॐ अम्बेऽअम्बिकेऽम्बालिके न मा नयति कश्चन। ससस्त्यश्वकः सुभद्रिकां काम्पीलवासिनीम्॥ पश्चिमे-ॐ भूर्भुवः स्वः चामुण्डायै नमः, चामुण्डामावाहयामि स्थापयामि॥ ५४॥ ॐ आप्यायस्व समेतु ते विश्वतः सोम वृष्ण्यम्। भवा वाजस्य सङ्गथे॥ वायव्ये-ॐ भूर्भुवः स्वः वैष्णव्यै नमः, वैष्णवीमावाहयामि स्थापयामि॥ ५५॥ ॐ या ते रुद्र शिवा तनूरघोराऽपापकाशिनी। तया नस्तन्वा शन्तमया गिरिशन्ताभिचाकशीहि॥ उत्तरे-ॐ भूर्भुवः स्वः माहेश्वर्यै नमः, माहेश्वरीमावाहयामि स्थापयामि॥ ५६॥ ॐ समख्ये देव्या धिया सन्दक्षिणयोरुचक्षसा। मा म आयुः प्रमीषीर्मो अहं तव वीरं विदेय तव देवि संदृशि॥ ईशान्याम्-ॐ भूर्भुवः स्वः वैनायक्यै नमः, वैनायकीमावाहयामि स्थापयामि॥ ५७॥

प्रतिष्ठा सर्वदेवानां मित्रावरुणनिर्मिता।
प्रतिष्ठां ते करोम्यत्र मण्डले दैवतैः सह॥

'ब्रह्माद्यावाहितदेवाः सुप्रतिष्ठिता वरदा भवत'।

'ॐ ब्रह्मादिदेवेभ्यो नमः'।

'ॐ अम्बेऽअम्बिके०' से 'ॐ भू० चामुण्डायै नमः, चामुण्डामा० स्थाप०' तक कहकर पश्चिम दिशा में चामुण्डा का, 'ॐ आप्यायस्व०' से 'ॐ भू० वैष्णव्यै नमः, वैष्णवीमा० स्थाप०' से वायव्यकोण में वैष्णवी का, 'ॐ या ते रुद्र शिवा०' से 'ॐ माहेश्वर्यै नमः, माहेश्वरीमा० स्थाप०' पर्यन्त उत्तर दिशा में माहेश्वरी तथा 'ॐ समख्ये देव्या०' से लेकर 'ॐ भू० वैनायकीमा० स्थाप०' तक उच्चारण कर ईशानकोण में वैनायकी का आवाहन और स्थापन करे।

इस प्रकार आवाहन कर 'प्रतिष्ठा सर्वदेवानां०' से 'वरदा भवत' तक कहकर प्रतिष्ठा एवं 'ॐ ब्रह्मादिदेवेभ्यो नमः' से पूजन करें।

प्रधानकलशस्थापनम्

ततः कुङ्कुमादिना भूमौ पद्मं कृत्वा—**ॐ मही द्यौः पृथिवी च न ऽइमं यज्ञं मिमिक्षताम्। पिपृतान्नो भरीमभिः॥** इति भूमिं स्पृष्ट्वा। **ॐ ओषधयः समवदन्त सोमेन सह राज्ञा। यस्मै कृणोति ब्राह्मणस्तꣳ राजन् पारयामसि॥** इति सप्तधान्यं विकिरेत्। **ॐ आजिघ्र कलशं मह्या त्वा विशन्त्विन्दवः। पुनरूर्जा निवर्तस्व सा नः सहस्रं धुक्ष्वोरुधारा पयस्वती पुनर्माविशताद्द्रयिः॥** इति सप्तधान्योपरि कलशं स्थापयेत्। **ॐ वरुणस्योत्तम्भनमसि वरुणस्य स्कम्भसर्ज्जनी स्थो वरुणस्य ऽऋत-सदन्यसि वरुणस्य ऽऋतसदनमसि वरुणस्य ऽऋतसदनमासीद॥** इति कलशे जलं पूरयेत्। **ॐ त्वां गन्धर्वाऽअखनँस्त्वामिन्द्रस्त्वां बृहस्पतिः। त्वामोषधे सोमो राजा विद्वान्यक्ष्मादमुच्यत॥** इति कलशे गन्धं क्षिपेत्। **ॐ या ओषधीः पूर्वा जाता देवेभ्यस्त्रियुगं पुरा। मनै नु बभ्रूणामहꣳ शतं धामानि सप्त च॥** इति मन्त्रेण कलशे सर्वौषधी प्रक्षिपेत्। **ॐ काण्डात् काण्डात् प्ररोहन्ती परुषः परुषस्परि। एवा नो दूर्वे प्रतनु सहस्रेण शतेन च॥** इति कलशे दूर्वाङ्कुरान् क्षिपेत्। **ॐ अश्वत्थे वो निषदनं पर्णे वो वसतिष्कृता। गोभाज ऽइत्किलासथयत्सनवथ पूरुषम्॥** इति पञ्चपल्लवान्। **ॐ पवित्रे स्थो वैष्णव्यौ सवितुर्वः प्रसव उत्पुनाम्यच्छिद्रेण पवित्रेण सूर्यस्य रश्मिभिः॥ तस्य ते पवित्रपते पवित्र पूतस्य यत्कामः पुने तच्छकेयम्॥** इति मन्त्रेण कलशे पवित्रं क्षिपेत्। **ॐ स्योना पृथिवि नो भवान्नृक्षरा निवेशनी। यच्छा नः शर्म्म सप्रथाः॥** इति सप्तमृदः क्षिपेत्। **ॐ याः फलिनीर्या अफला अपुष्पा याश्च पुष्पिणीः बृहस्पतिप्रसूतास्ता नो मुञ्चन्त्वꣳ हसः॥** इति कलशे पूगीफलं प्रक्षिपेत्। **ॐ परि वाजपतिः कविरग्निर्हव्यान्यक्रमीत्। दधद्रत्नानि दाशुषे॥** इति पञ्चरत्नानि। **ॐ हिरण्यगर्भः समवर्त्त ताग्ग्रे भूतस्य जातः पतिरेक ऽआसीत्। स दाधार**

पृथिवीं द्यामुतेमां कस्मै देवाय हविषा विधेम॥ इति कलशे हिरण्यं क्षिपेत्। ॐ सुजातो ज्योतिषा सह शर्म वरूथमासदत्स्वः। वासो अग्ने विश्वरूपर्ठ० संव्ययस्व विभावसो॥ इति युग्मवस्त्रेण कलशं वेष्टयेत्। ॐ पूर्णा दर्वि परापत सुपूर्णा पुनरापत। वस्नेव विक्रीणावहा इषमूर्जर्ठ० शतक्रतो॥ इति कलशोपरि पूर्णपात्रं न्यसेत्। ॐ याः फलिनीर्या अफला अपुष्पा याश्च पुष्पिणीः। बृहस्पतिप्रसूतास्तानो मुञ्चन्त्वर्ठ०हसः॥ इति मन्त्रेण कलशोपरि नारिकेलफलं संस्थाप्य। ॐ तत्त्वा यामि ब्रह्मणा वन्दमानस्तदाशास्ते यजमानो हविर्भिः। अहेडमानो वरुणेह बोध्युरु-शर्ठ०स मा न आयुः प्रमोषीः॥ अस्मिन् कलशे वरुणं साङ्गं सपरिवारं सायुधं सशक्तिकमावाहयामि स्थापयामि। 'ॐ अप्पतये वरुणाय नमः। इति पञ्चोपचारैर्वरुणदेवता सम्पूज्य।

पीठपूजा

कर्णिकायाम्—ॐ मण्डूकाय नमः। ॐ कालाग्निरुद्राय नमः। ॐ मूलप्रकृत्यै नमः। ॐ आधारशक्तये नमः। ॐ कूर्माय नमः। ॐ शेषाय नमः। ॐ वाराहाय नमः। ॐ पृथिव्यै नमः। ॐ सुधाम्बुधये नमः। ॐ रत्नदीपाय नमः। ॐ मेरवे नमः। ॐ नन्दनवनाय नमः। ॐ कल्पवृक्षाय नमः। कर्णिकामूले—ॐ विचित्रानन्दभूम्यै नमः। कर्णिकोपरि—ॐ श्री रत्नमन्दिराय नमः। ॐ रत्नवेदिकायै नमः। ॐ धर्मवारणाय नमः। ॐ रत्नसिंहासनाय नमः। चतसृषु दिक्षु—ॐ धर्माय नमः। ॐ ज्ञानाय नमः। ॐ वैराग्याय नमः। ॐ ऐश्वर्याय नमः। ॐ अधर्माय नमः। ॐ अज्ञानाय नमः। ॐ अवैराग्याय नमः। ॐ अनैश्वर्याय नमः। पुनः मध्ये—ॐ आनन्दकन्दाय नमः। ॐ संविन्नालाय नमः। ॐ सर्वतत्त्वात्मक पद्माय नमः। ॐ प्रकृतिमय पत्रेभ्यो नमः। ॐ विकारमय केसरेभ्यो नमः। ॐ पञ्चाशद्बीजाढ्य कर्णिकायै नमः। ॐ अं द्वादश कलात्मने

सूर्यमण्डलाय नमः। ॐ उं षोडशकलात्मने सोममण्डलाय नमः। ॐ मं दशकलात्मने वह्निमण्डलाय नमः। ॐ सं सत्त्वाय नमः। ॐ रं रजसे नमः। ॐ तं तमसे नमः। ॐ अं आत्मने नमः। ॐ उं अन्तरात्मने नमः। ॐ मं परमात्मने नमः। ॐ ह्रीं ज्ञानात्मने नमः। तत्रैव—ॐ मां मायातत्त्वाय नमः। ॐ कं कलत्त्वाय नमः। ॐ विं विद्यातत्त्वाय नमः। ॐ णं परतत्त्वाय नमः। तत्रैव—ॐ बं ब्रह्मप्रेताय नमः। ॐ विं विष्णु प्रेताय नमः। ॐ रुं रुद्र प्रेताय नमः। ॐ इं ईश्वर प्रेताय नमः। ॐ सं सदाशिव प्रेताय नमः। तत्रैव—ॐ सुधार्णवासनाय नमः। ॐ प्रेताम्बुजासनाय नमः। ॐ दिव्यासनाय नमः। ॐ चक्रासनाय नमः। ॐ सर्वयन्त्रासनाय नमः। ॐ साध्यसिद्धासनाय नमः। इति संपूज्य नव पीठशक्ती पूजयेत्। तद्यथा—

पूर्वाद्यष्टसु दिक्षु—ॐ कामदायै नमः। ॐ मानदायै नमः। ॐ नक्तायै नमः। ॐ मधुरायै नमः। ॐ मधुराननायै नमः। ॐ नर्मदायै नमः। ॐ भोगदायै नमः। ॐ नन्दायै नमः। मध्ये ॐ प्राणदायै नमः। ॐ धूमावतीयोगपीठाय नमः।

तदुपरान्त आचार्य—ॐ मनो जूतिर्जुषतामाज्यस्य बृहस्पतिर्यज्ञमिमं तनोत्वरिष्टं यज्ञꣳ समिमं दधातु। विश्वेदेवास इह मादयन्तामों३ꣳप्रतिष्ठ॥ इस मन्त्र का उच्चारण करें तथा यजमान से 'पीठदेवता सुप्रतिष्ठिता वरदा भवन्तु।' 'आवाहित पीठदेवताभ्यो नमः' इसका उच्चारण करावें।

अग्न्युत्तारणम्

सङ्कल्पः—देशकालौ सङ्कीर्त्य, अमुकगोत्रः अमुकशर्माऽहं अस्याः सुवर्णमयधूमावतीप्रतिमायाः अवघातादिदोषपरिहारार्थं देवतासान्निध्यर्थं च अग्न्युत्तारणं करिष्ये। इति सङ्कल्प्य, सुवर्णमयधूमावतीप्रतिमायाः रजतादिपात्रे निधाय घृतेनाऽभ्युक्ष्य तदुपरि दुग्धयुतां जलधारां दद्यात्।

अग्न्युत्तारणमन्त्राः

ॐ समुद्रस्य त्त्वावकयाग्ने परिव्ययामसि।
पावको ऽअस्मब्भ्यर्ठ० शिवो भव॥ १॥
हिमस्य त्त्वा जरायुणाग्ने परिव्ययामसि।
पावको ऽअस्मब्भ्यर्ठ० शिवो भव॥ २॥
उप ज्मन्नुप वेतसेऽवतर नदीष्वा।
अग्ने पित्तमपामसि मण्डूकि ताभिरागहि।
सेमं नो यज्ञं पावकवर्णर्ठ० शिवं कृधि॥ ३॥
अपामिदं न्ययनर्ठ० समुद्रस्य निवेशनम्।
अन्याँस्ते ऽअस्मत्तपन्तु हेतयः पावको अस्मब्भ्यर्ठ० शिवो भव ॥ ४॥
अग्ने पावक रोचिषा मन्द्रया देव जिह्वया। आ देवान्वक्षि यक्षि च ॥ ५॥
स नः पावक दीदिवोऽग्ने देवाँ२॥ इहावह उप यज्ञर्ठ० हविश्च नः॥ ६॥
पावकया यश्चितयन्त्या कृपा क्षामन् रुरुच ऽउषसो न भानुना।
तूर्वन्न यामन्नेतशस्य नू रण आ यो घृणे न ततृषाणो ऽअजरः॥ ७॥
नमस्ते हरसे शोचिषे नमस्ते ऽअस्त्वर्चिषे।
अन्याँस्ते ऽअस्मत्तपन्तु हेतयः पावको अस्मब्भ्यर्ठ० शिवो भव॥ ८॥
नृषदे वेडप्सुषदे व्वेड् वर्हिषदे वेड्वनसदे वेट् स्वर्विदेवेट्॥ ९॥
ये देवा देवानां यज्ञिया यज्ञियानार्ठ० संवत्सरीणमु पभागमासते।
अहुतादो हविषो यज्ञे ऽअस्मिन्त्स्वयं पिबन्तु मधुनो घृतस्य॥ १०॥
ये देवा देवेष्वधि देवत्वमायन्न्ये ब्ब्रह्मणः पुर ऽएतारो ऽअस्य।
येब्भ्यो न ऋते पवते धाम किञ्चन न ते दिवो न पृथिव्या ऽअधि स्नुषु॥ ११॥
प्राणदा ऽअपानदा व्यानदा वर्चोदा वरिवोदाः।
अन्याँस्ते अस्मत्तपन्तु हेतयः पावको अस्मभ्यर्ठ० शिवो भव॥ १२॥

धूमावतीसुवर्णप्रतिमां करेण संस्पृश्य—ॐ आँ ह्रीं क्रौं यं रं लं वं शं षं सं हं लं क्षं हं सः अस्यां मूर्तौ प्राणा इह प्राणाः। ॐ आँ ह्रीं क्रौं यं रं लं वं शं षं सं हं सः अस्यां मूर्तौ जीव इह स्थितः। ॐ आँ ह्रीं क्रौं यं रं लं वं शं षं सं हं लं क्षं हं सः अस्यां मूर्तौ सर्वेन्द्रियाणि वाङ्-मनस्त्वक्-चक्षुः श्रोत्र-जिह्वा-घ्राण-पाणि-पादपायूपस्थानि इहैवागत्य सुखं चिरं तिष्ठन्तु स्वाहा। ततस्तां प्रतिमां रजतादिसिंहासनोपरि संस्थाप्य अर्चयेत्।

पञ्चभूसंस्कारपूर्वकम् अग्निस्थापनम्

ततः कुण्डे उपरि मेखलायां श्वेतवर्णालङ्कृतायां विष्णुं पूजयेत्। तद्यथा—ॐ इदं विष्णुर्विचक्रमे त्रेधा निदधे पदम्। समूढमस्यपार्ठ० सुरे स्वाहा॥ ॐ भूर्भुवः स्वः विष्णवे नमः, विष्णुमावाहयामि स्थापयामि॥

ततो मध्यमेखलायां रक्तवर्णालङ्कृतायां ब्रह्माणं पूजयेत्। ॐ ब्रह्म यज्ञानं प्रथमं पुरस्ताद्वि सीमतः सुरुचो वेन आवः। स बुध्न्या उपमा अस्य विष्ठाः सतश्च योनिमसतश्च विवः॥ ॐ भूर्भुवः स्वः ब्रह्मणे नमः, ब्रह्माणमावाहयामि स्थापयामि॥

ततः अधोमेखलायां कृष्णवर्णालङ्कृतायां रुद्रं पूजयेत्। ॐ नमस्ते रुद्र मन्यव उतोत इषवे नमः। बाहुभ्यामुत ते नमः॥ ॐ भूर्भुवः स्वः रुद्राय नमः, रुद्रमावाहयामि स्थापयामि॥

ततो योन्यां रक्तवर्णालङ्कृतायां गौरीं पूजयेत्। ॐ अम्बेऽअम्बिके-ऽम्बालिके न मा नयति कश्चन। ससस्त्यश्वकः सुभद्रिकां काम्पीलवासिनीम्॥ ॐ भूर्भुवः स्वः गौर्य्यै नमः गौरीमावाहयामि स्थापयामि॥

कण्ठे—ॐ नीलग्रीवाः शितिकण्ठा दिवर्ठ० रुद्रा उपश्रिताः। तेषार्ठ० सहस्त्रयोजनेऽव धन्वानि तन्मसि॥ ॐ कण्ठे नमः कण्ठ-मावाहयामि स्थापयामि॥

नाभिम्—ॐ नाभिर्मे चित्तं विज्ञानं पायुर्मेऽपचितिर्भसत्। आनन्द-नन्दावाण्डौ मे भगः सौभाग्यं पसः। जङ्घाभ्यां पद्भ्यां धर्म्मोऽस्मि विशि राजा प्रतिष्ठितः॥ ॐ नाभ्यै नमः नाभिमावाहयामि स्थापयामि॥

ॐ विश्वकर्मन्हविषा वर्धनेन त्रातारमिन्द्रमकृणोरवध्यम्। तस्मै विशः समनमन्त पूर्वीरयमुग्रो विहव्यो यथासत्॥ ॐ भूर्भुवः स्वः विश्वकर्मणे नमः, विश्वकर्माणमावाहयामि स्थापयामि॥

ततः आचार्यः अग्न्यायतनस्य पश्चात्प्राङ्मुखोपविश्याचम्य प्राणानायम्य देशकालौ सङ्कीर्त्य अमुकगोत्रः अमुकशर्माऽहं (वर्माऽहम्, गुप्तोऽहम्, दासोऽहम्) सपत्नीकोऽहं अस्मिन् सनवग्रहमखसप्रासाद धूमावतीप्रतिष्ठाकर्मणि पञ्चभूसंस्कारपूर्वकं शतमङ्गलनामाग्निस्थापनं करिष्ये।

पञ्चभूसंस्कार—कुशों से परिसमूहन करके उन कुशाओं को ईशानकोण में छोड़कर गोमय और उदक (जल) से लेपित कर स्फय अथवा स्रुव के मूल से लिखकर उल्लेखन क्रम से अनामिका और अंगुष्ठ से मिट्टी को निकालकर बाहर फेंक दे। फिर जल से प्रोक्षण करके, उसके बाद कुण्ड में सुवर्ण खण्ड छोड़कर वस्त्र से ढँककर तदुपरान्त अरणी प्रदान करें।

तद्यथा—स्मार्त्ताग्निसाधनभूते योनिरूपे इमे अरणी युवाभ्यां प्रतिगृह्यताम्। इयमधरा। इयमुत्तरा। ततः यजमानः तौ स्मार्ताग्नि-साधनभूते इमे अरणी आवाभ्यां परिगृहाण। ततः ब्रह्मा। इदं चात्र। इदमोवलीं इदं नेत्रम्। इमानि स्त्रुवादीनि पात्राणि प्रतिगृहाण। ततः यजमानः। इमानि स्त्रुवादीनि पात्राणि प्रतिगृह्णामि। पत्नी तु यजमानहस्तादधरारणिमंके निदधाति। यजमानोऽप्यंके उत्तरारणिं निदधाति। उभावप्यरण्योः पूजां कुरुतः।

तद्यथा—प्राग्ग्रीवामुत्तरलोम कृष्णाजिनं कम्बलोपरि आस्तीर्य तस्योपरि उदगग्रामधरारणिं निधाय। तत्पूर्वं उत्तरारणिं च निधाय ॐ युवाभ्यामरणीभ्यां नमः इति संपूज्य। ततो अधरारण्यामुक्तप्रदेशे प्रमंथमूलं निधान चात्राग्रे चोवलिमुदगग्रां च नेत्रेण चात्रं त्रिर्वेष्टयित्वा गाढं धृत्वा पश्चिमाभिमुखोपविष्टया पत्न्या मन्थयेत्। यावदग्नेरुत्पत्तिः। पत्न्या मन्थनासामर्थ्ये अन्ये ब्राह्मणाः शुचयो मध्नन्ति। एवं यजमानासामर्थ्ये अन्यो यन्त्रं धारयति। ततो यातमग्निं मृण्मयपात्रे शुष्कगोमयचूर्णं नारिकेलजटां च स्थापयित्वा तस्मिन्पात्रे अग्निमाहृत्य वेणुनलिकया प्रज्वालयेत्। ततोऽग्निं कांस्यपात्रे घृत्वा कांस्यपात्रेणाच्छाद्य कुण्डाद्बहिराग्नेय्यां संस्थाप्य आचार्यस्तमग्निं गृहीत्वा आग्नेयकोणमार्गेण कुंडमध्ये नीत्वा। ॐ अग्निं दूतं पुरोदधे हव्यवाहमुप ब्रुवे॥ देवाँ२॥ आसादयादिह। इति मन्त्रान्ते शतमङ्गल नामाग्निमुपसमादधे इत्यग्निं स्वाभिमुखं निधाय।

इसके बाद आचार्य निम्न मन्त्र का उच्चारण करके यजमान से अग्नि का आवाहन करावें—

ॐ चत्वारि शृङ्गा त्रयोऽअस्य पादाद्वेशीर्षे सप्तहस्तासोऽअस्य।
त्रिधा बद्धो वृषभोरोरवीतिमहोदेवो मर्त्यांऽआविवेश॥

आचार्य निम्न मन्त्र का उच्चारण करके अग्नि की प्रतिष्ठा करावें—

ॐ मनो जूतिर्जुषतामाज्यस्य बृहस्पतिर्यज्ञमिमं तनोत्वरिष्टं यज्ञठं० समिमं दधातु। विश्वेदेवास इह मादयन्तामों ३ँप्रतिष्ठ॥

निम्न श्लोकों का उच्चारण कर अग्निदेवता का ध्यान करें—

सप्तहस्तश्चतुःशृङ्गः सप्तजिह्वो द्विशीर्षकः।
त्रिपात्प्रसन्नवदनः सुखासीनः शुचिस्मितः॥
मेषारूढो जटाबद्धो गौरवर्णो महौजसः।
धूम्रध्वजो लोहिताक्षः सप्तार्चिः सर्वकामदः॥

शिखाभिर्दीप्यमानाभिरूर्ध्वगाभिस्तु संयुतः।
स्वाहां तु दक्षिणे पार्श्वे देवीं वामे स्वधां तथा॥
विभ्रद्दक्षिणहस्तैस्तु शक्तिमन्नं स्रुचं स्रुवम्।
तोमरं व्यजनं वामे घृतपात्रं च धारयन्॥
आत्माभिमुखमासीन एवंरूपो हुताशनः॥

भावार्थ—अग्नि के सात हाथ, चार सींग, सात जिह्वायें, दो सिर और तीन पैर हैं। वे प्रसन्न मुख और मन्दहास्ययुक्त सुखपूर्वक आसन पर विराजमान रहते हैं। वे मेष (भेड़ा) पर आरूढ़ जटाबद्ध, गौरवर्ण, महा-तेजस्वी, धूम्रध्वज, लाल नेत्रवाले, सात ज्वाला वाले, सब कामनाओं को पूर्ण करनेवाले, देदीप्यमान, ऊर्ध्वगामी, ज्वालाओं से युक्त हैं। उनके दक्षिण भाग में स्वाहा और वामभाग में स्वधा देवी विराजमान हैं और वे अपने दाहिने हाथों में शक्ति, अन्न, स्रुक्, स्रुव, तोमर, पंखा और बाएँ हाथ में घृतपात्र धारण किए हुए हैं। अपने सम्मुख उपस्थित ऐसे रूप वाले अग्निदेव का ध्यान करना चाहिए।

तदुपरान्त कुण्ड में अग्नि स्थापित कर यजमान संक्षिप्त पुण्याहवाचन एवं गोदानपूर्वक ब्राह्मणों को दक्षिणा प्रदान करें।

ग्रहादिस्थापनं पूजनं च

ततः पूर्वनिर्मितहस्तमात्रं चतुरस्त्रं ग्रहवेद्यां श्वेतवस्त्रं प्रसार्य, नवग्रहमण्डलं विलिख्य मध्यादिकोष्ठेषु उक्तदिक्षु विदिक्षु सूर्यादिग्रहाणां स्थापनं पूजनं च कुर्यात्। तद्यथा—

नवग्रहस्थापनम्

ॐ आ कृष्णेन रजसा वर्तमानो निवेशयन्नमृतं मर्त्यं च। हिरण्ययेन सविता रथेनादेवो याति भुवनानि पश्यन्॥

जपाकुसुमसङ्काशं काश्यपेयं महाद्युतिम्।
तमोऽरिं सर्वपापघ्नं सूर्यमावाहयाम्यहम्॥

ॐ भूर्भुवः स्वः कलिङ्गदेशोद्भव काश्यपगोत्र रक्तवर्ण भो सूर्य ! इहागच्छ इह तिष्ठ ॐ सूर्याय नमः, सूर्यमावाहयामि स्थापयामि॥ १॥

ॐ इमं देवा असपत्नꣳसुवध्वं महते क्षत्राय महते ज्यैष्ठ्याय महते जानराज्यायेन्द्रस्येन्द्रियाय। इमममुष्य पुत्रममुष्यै पुत्रमस्यै विश ऽएष वोऽमी राजा सोमोऽस्माकं ब्राह्मणानाꣳ राजा॥

दधिशङ्खतुषाराभं क्षीरोदार्णवसम्भवम्।
ज्योत्स्नापतिं निशानाथं सोममावहयाम्यहम्॥

ॐ भूर्भुवः स्वः यमुनातीरोद्भव आत्रेयगोत्र शुक्लवर्ण भो सोम ! इहागच्छ इह तिष्ठ ॐ सोमाय नमः, सोमममावाहयामि स्थापयामि॥ २॥

तत्पश्चात् चौकोर एक हाथ भर की बनी ग्रहवेदी पर श्वेत वस्त्र बिछावें और उसपर नवग्रह मण्डल का निर्माण कर मध्य आदि कोष्ठों में कथित आठों दिशाओं में सूर्यादि ग्रहों का स्थापन और पूजन करें।

सूर्याद्यावाहन—तदनन्तर 'ॐ आ कृष्णेन०' से 'सूर्यमावाहयामि स्थापयामि' तक पढ़कर सूर्य का, 'ॐ इमं देवा०' से 'सोममावाहयामि स्थापयामि' पर्यन्त कहकर सोम का आवाहन-स्थापन करें।

ॐ अग्निर्मूर्धा दिवः ककुत्पतिः पृथिव्या अयम्। अपाꣳ रेताꣳसि जिन्वति॥

धरणीगर्भसम्भूतं विद्युत्तेज:समप्रभम्।
कुमारं शक्तिहस्तं च भौममावाहयाम्यहम्॥

ॐ भूर्भुवः स्वः अवन्तिकापुरोद्भव भरद्वाजगोत्र रक्तवर्ण भो भौम! इहागच्छ इह तिष्ठ ॐ भौमाय नमः, भौममावाहयामि स्थापयामि॥ ३॥

ॐ उद्बुध्यस्वाग्ने प्रतिजागृहि त्वमिष्टापूर्तेसꣳ सृजेथामयं च। अस्मिन्त्सधस्थे अध्युत्तरस्मिन् विश्वेदेवा यजमानश्च सीदत॥

प्रियङ्गुकलिकाभासं रूपेणाऽप्रतिमं बुधम्।
सौम्यं सौम्यगुणोपेतं बुधमावाहयाम्यहम्॥

ॐ भूर्भुवः स्वः मगधदेशोद्भव आत्रेयगोत्र हरितवर्ण भो बुध! इहागच्छेह तिष्ठ ॐ बुधाय नमः, बुधमावाहयामि स्थापयामि॥ ४॥

ॐ बृहस्पते अति यदर्यो अर्हाद्युमद्विभाति क्रतुमज्जनेषु। यद्दीदयच्छवस ऋतप्रजात तदस्मासु द्रविणं धेहि चित्रम्॥

देवानां च मुनीनां च गुरुं काञ्चनसन्निभम्।
वन्द्यभूतं त्रिलोकानां गुरुमावाहयाम्यहम्॥

ॐ भूर्भुवः स्वः सिन्धुदेशोद्भव आङ्गिरसगोत्र पीतवर्ण भो बृहस्पते! इहागच्छ इह तिष्ठ ॐ बृहस्पतये नमः, बृहस्पतिमावाहयामि स्थापयामि॥ ५॥

'ॐ अग्निर्मूर्धा०' से 'भौममावाहयामि स्थापयामि' तक कहकर भौम का। 'ॐ उद्बुध्यस्वाग्ने०' से लेकर 'बुधमावाहयामि स्थापयामि' से बुध का आवाहन और स्थापन करे। इसी प्रकार 'ॐ बृहस्पते अति०' से लेकर 'बृहस्पति-मावाहयामि स्थापयामि' तक पढ़कर बृहस्पति का आवाहन-स्थापन करें।

ॐ अन्नात्परिस्रुतो रसं ब्रह्मणा व्यपिबत्क्षत्रं पयः सोमं प्रजापतिः। ऋतेन सत्यमिन्द्रियं विपानꣳ शुक्रमन्धस इन्द्रस्येन्द्रियमिदं पयो मृतं मधु॥

हिमकुन्दमृणालाभं दैत्यानां परमं गुरुम्।
सर्वशास्त्रप्रवक्तारं शुक्रमावाहयाम्यहम्॥

ॐ भूर्भुवः स्वः भोजकटदेशोद्भव भार्गवगोत्र शुक्लवर्ण भो शुक्र! इहागच्छ इह तिष्ठ ॐ शुक्राय नमः, शुक्रमावाहयामि स्थापयामि॥ ६॥

ॐ शं नो देवीरभिष्टय आपो भवन्तु पीतये। शं योरभिस्रवन्तु नः॥

नीलाम्बुजसमाभासं रविपुत्रं यमाग्रजम्।
छायामार्तण्डसम्भूतं शनिमावाहयाम्यहम्॥

ॐ भूर्भुवः स्वः सौराष्ट्रदेशोद्भव काश्यपगोत्र कृष्णवर्ण भो शनैश्चर! इहागच्छ इह तिष्ठ ॐ शनैश्चराय नमः, शनिश्चरमावाहयामि स्थापयामि॥ ७॥

ॐ कया नश्चित्र आभुवदूती सदावृधः सखा। कया शचिष्ठया वृता॥

अर्द्धकायं महावीर्यं चन्द्रादित्यविमर्दनम्।
सिंहिकागर्भसम्भूतं राहुमावाहयाम्यहम्॥

ॐ भूर्भुवः स्वः वैराठिनपुरोद्भव पैठीनसिगोत्र कृष्णवर्ण भो राहो! इहागच्छ इह तिष्ठ ॐ राहवे नमः, राहुमावाहयामि स्थापयामि॥ ८॥

ॐ केतुं कृण्वन्नकेतवे पेशो मर्या अपेशसे समुषद्भिरजायथाः॥

पालाशधूम्रसङ्काशं तारकाग्रहमस्तकम्।
रौद्रं रौद्रात्मकं घोरं केतुमावाहयाम्यहम्॥

ॐ भूर्भुवः स्वः अन्तर्वेदिसमुद्भव जैमिनिगोत्रे धूम्रवर्ण भो केतो! इहागच्छ इह तिष्ठ ॐ केतवे नमः, केतुमावाहयामि स्थापयामि॥ ९॥

'ॐ अन्नात्परिस्रुतो०' से 'शुक्रमा० स्था०' तक कहकर शुक्र का, 'ॐ शं नो देवीरभिष्टय०' से 'शनैश्चराय नमः, शनैश्चरमा० स्था०' पर्यन्त कहकर शनि का। 'ॐ कया नश्चित्र०' से 'राहवे नमः, राहुमा० स्था०' तक पढ़कर राहु का और 'ॐ केतुं कृण्वन्न०' से 'केतुमा० स्था०' तक पढ़कर केतु का आवाहन और स्थापन करें।

अधिदेवतास्थापनम्

ततो ग्रहदक्षिणपार्श्वेऽधिदेवतास्थापनं कुर्यात्—

ॐ त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम्। उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय मा ऽमृतात्॥

पञ्चवक्त्रं वृषारूढमुमेशं च त्रिलोचनम्।
आवाहयामीश्वरं तं खट्वाङ्गवरधारिणम्॥

ॐ भूर्भुवः स्वः ईश्वर इहागच्छ इह तिष्ठ ॐ ईश्वराय नमः, ईश्वरमावाहयामि स्थापयामि॥ १॥

ॐ श्रीश्च ते लक्ष्मीश्च पत्न्यावहोरात्रे पार्श्वे नक्षत्राणि रूपमश्विनौ व्यात्तम्। इष्णन्निषाणामुं म इषाण सर्वलोकं म इषाण॥

हेमाद्रितनयां देवीं वरदां शङ्करप्रियाम्।
लम्बोदरस्य जननीमुमामावाहयाम्यहम्॥

ॐ भूर्भुवः स्वः उमे इहागच्छ इह तिष्ठ ॐ उमायै नमः, उमामावाहयामि स्थापयामि॥ २॥

ॐ यदक्रन्दः प्रथमं जायमान उद्यन्त्समुद्रादुत वा पुरीषात्। श्येनस्य पक्षा हरिणस्य बाहू उपस्तुत्यं महि जातं ते अर्वन्॥

रुद्रतेजःसमुत्पन्नं देवसेनाग्रजं विभुम्।
षण्मुखं कृत्तिकासूनुं स्कन्दमावाहयाम्यहम्॥

ॐ भूर्भुवः स्वः स्कन्द इहागच्छ इह तिष्ठ ॐ स्कन्दाय नमः, स्कन्दमावाहयामि स्थापयामि॥ ३॥

अधिदेवता स्थापन—तत्पश्चात् सूर्यादि ग्रहों के दाहिनी ओर अधिदेवता का स्थापन करें। यथा—'ॐ त्र्यम्बकं यजामहे०' से लेकर 'ईश्वरमावाहयामि स्थापयामि' तक कहकर ईश्वर, 'ॐ श्रीश्च ते लक्ष्मीश्च०'-'उमामावाहयामि स्थापयामि' से उमा का। 'ॐ यदक्रन्दः०'-'स्कन्दाय नमः, स्कन्दमावाहयामि स्थापयामि' से स्कन्द का आवाहन-स्थापन करें।

ॐ विष्णोर राटमसि विष्णोः श्नप्त्रे स्थो विष्णोः स्यूरसि विष्णोर्ध्रुवोऽसि वैष्णवमसि विष्णवे त्वा॥

देवदेवं जगन्नाथं भक्तानुग्रहकारकम्।
चतुर्भुजं रमानाथं विष्णुमावाहयाम्यहम्॥

ॐ भूर्भुवः स्वः विष्णो इहागच्छ इह तिष्ठ ॐ विष्णवे नमः, विष्णुमावाहयामि स्थापयामि॥ ४॥

ॐ आ ब्रह्मन्ब्राह्मणो ब्रह्मवर्चसी जायतामा राष्ट्रे राजन्यः शूर इषव्योऽतिव्याधी महारथो जायतां दोग्ध्री धेनुर्वोढानड्वानाशुः सप्तिः पुरन्धिर्योषा जिष्णु रथेष्ठाः सभेयो युवास्य यजमानस्य वीरो जायतां निकामे निकामे नः पर्जन्यो वर्षतु फलवत्यो न ओषधयः पच्यन्तां योगक्षेमो नः कल्पताम्॥

कृष्णाजिनाऽम्बरधरं पद्मसंस्थं चतुर्मुखम्।
वेदाधारं निरालम्बं विधिमावाहयाम्यहम्॥

ॐ भूर्भुवः स्वः ब्रह्मन् इहागच्छ इह तिष्ठ ॐ ब्रह्मणे नमः, ब्रह्माणमावाहयामि स्थापयामि॥ ५॥

ॐ सजोषा इन्द्र सगणो मरुद्भिः सोमं पिब वृत्रहा शूर विद्वान्। जहि शत्रूँ०२॥ रप मृधो नुदस्वाथाभयं कृणुहि विश्वतो नः॥

देवराजं गजारूढं शुनासीरं शतक्रतुम्।
वज्रहस्तं महाबाहुमिन्द्रमावाहयाम्यहम्॥

ॐ भूर्भुवः स्वः इन्द्र इहागच्छ इह तिष्ठ ॐ इन्द्राय नमः, इन्द्रमावाहयामि स्थापयामि॥ ६॥

'ॐ विष्णोर राटमसि०'-'विष्णुमावाहयामि स्थापयामि' पर्यन्त श्लोक तथा मन्त्र-वाक्य पढ़कर विंष्णु का आवाहन एवं स्थापन करें। इसी तरह 'ॐ आ ब्रह्मन्ब्राह्मणो ०' से 'ब्रह्माणमावाहयामि स्थापयामि' तक से ब्रह्मा, 'ॐ सजोषा इन्द्र०' से 'इन्द्रमावाहयामि स्थापयामि' तक इन्द्र का।

ॐ यमाय त्वाङ्गिरस्वते पितृमते स्वाहा। स्वाहा घर्माय स्वाहा घर्मः पित्रे॥

धर्मराजं महावीर्यं दक्षिणादिक्पतिं प्रभुम्।
रक्तेक्षणं महाबाहुं यममावाहयाम्यहम्॥

ॐ भूर्भुवः स्वः यम इहागच्छ इह तिष्ठ ॐ यमाय नमः, यममावाहयामि स्थापयामि॥ ७॥

ॐ कार्षिरसि समुद्रस्य त्वाक्षित्या उन्नयामि। समापो अद्भिरग्मत समोषधीभिरोषधीः॥

अनाकारमनन्ताख्यं वर्तमानं दिने दिने।
कलाकाष्ठादिरूपेण कालमावाहयाम्यहम्॥

ॐ भूर्भुवः स्वः काल इहागच्छ इह तिष्ठ ॐ कालाय नमः, कालमावाहयामि स्थापयामि॥ ८॥

ॐ चित्रावसो स्वस्ति ते पारमशीय॥

धर्मराजसभासंस्थं कृताऽकृतविवेकिनम्।
आवाहयेच्चित्रगुप्तं लेखनीपत्रहस्तकम्॥

ॐ भूर्भुवः स्वः चित्रगुप्त इहागच्छ इह तिष्ठ ॐ चित्रगुप्ताय नमः चित्रगुप्तमावाहयामि स्थापयामि॥ ९॥

'ॐ यमाय त्वाङ्गि०'-'यममावाहयामि स्थापयामि' तक का उच्चारण करते हुए यम देवता का, 'ॐ कार्षिरसि०' से आरम्भ कर 'कालाय नमः, कालमावाहयामि स्थापयामि' तक का उच्चारण करके काल का आवाहन व स्थापन करें। इसके उपरान्त 'ॐ चित्रावसो०' से आरम्भ कर 'चित्रगुप्ताय नमः, चित्रगुप्तमावाहयामि स्थापयामि' तक पढ़कर चित्रगुप्त का आवाहन एवं स्थापन करें।

प्रत्यधिदेवतास्थापनम्

ततो ग्रहवामपार्श्वेप्रत्यधिदेवतास्थापनं कुर्यात्—

ॐ अग्निं दूतं पुरो दधे हव्यवाहमुप ब्रुवे। देवाँ२ ॥ आसादयादिह ॥

रक्तमाल्याम्बरधरं रक्तपद्मासनस्थितम्।
वरदाभयदं देवमग्निमावाहयाम्यहम् ॥

ॐ भूर्भुवः स्वः अग्ने इहागच्छ इह तिष्ठ ॐ अग्नये नमः, अग्निमावाहयामि स्थापयामि ॥ १ ॥

ॐ आपो हि ष्ठा मयोभुवस्ता न ऊर्जे दधातन। महेरणाय चक्षसे ॥

आदिदेवसमुद्भूता जगच्छुद्धिकरा शुभाः।
औषध्याप्यायनकरा अपामावाहयाम्यहम् ॥

ॐ भूर्भुवः स्वः आपः इहागच्छत इह तिष्ठत ॐ अद्भ्यो नमः, अपआवाहयामि स्थापयामि ॥ २ ॥

ॐ स्योना पृथिवी नो भवानृक्षरा निवेशनी। यच्छा नः शर्म सप्रथाः ॥

शुक्लवर्णां विशालाक्षीं कूर्मपृष्ठोपरिस्थिताम्।
सर्वशस्याश्रयां देवीं धरामावाहयाम्यहम् ॥

ॐ भूर्भुवः स्वः पृथिवि इहागच्छ इह तिष्ठ ॐ पृथिव्यै नमः, पृथिवीमावाहयामि स्थापयामि ॥ ३ ॥

ॐ इदं विष्णुर्विचक्रमे त्रेधा निदधे पदम्। समूढमस्यपार्ठ० सुरे स्वाहा ॥

प्रत्यधिदेवता स्थापन—तदनन्तर ग्रहों के बायीं ओर प्रत्यधिदेवता का आवाहन पूर्वक स्थापन करें। 'ॐ अग्निं दूतं०' से 'अग्निमावाहयामि स्थापयामि' तक से अग्नि का। 'ॐ आपो हि ०'-'अपआवाहयामि स्थापयामि' से अप, 'ॐ स्योना पृथिवी०'-'पृथिवीमावाहयामि स्थापयामि' तक से पृथिवी, 'ॐ इदं विष्णु०'-'विष्णवे नमः,

शङ्खचक्रगदापद्महस्तं गरुडवाहनम्।
किरीटकुण्डलधरं विष्णुमावाहयाम्यहम्॥

ॐ भूर्भुवः स्वः विष्णो इहागच्छ इह तिष्ठ ॐ विष्णवे नमः, विष्णुमावाहयामि स्थापयामि॥ ४॥

ॐ इन्द्र आसां नेता बृहस्पतिर्दक्षिणा यज्ञःपुर एतु सोमः। देवसेनानामभिभञ्जतीनां जयन्तीनां मरुतो यन्त्वग्रम्॥

ऐरावतगजारूढं सहस्राक्षं शचीपतिम्।
वज्रहस्तं सुराधीशमिन्द्रमावाहयाम्यहम्॥

ॐ भूर्भुवः स्वः इन्द्र इहागच्छ इह तिष्ठ ॐ इन्द्राय नमः, इन्द्रमावाहयामि स्थापयामि॥ ५॥

ॐ अदित्यै रास्नासीन्द्राण्या उष्णीषः। पूषासि घर्माय दीष्व॥

प्रसन्नवदनां देवीं देवराजस्य वल्लभाम्।
नानाऽलङ्कारसंयुक्तां शचीमावाहयाम्यहम्॥

ॐ भूर्भुवः स्वः इन्द्राणि इहागच्छ इह तिष्ठ ॐ इन्द्राण्यै नमः, इन्द्राणीमावाहयामि स्थापयामि॥ ६॥

ॐ प्रजापते न त्वदेतान्यन्यो विश्वा रूपाणि परि ता बभूव। यत्कामास्ते जुहुमस्तन्नो अस्त्वयममुष्य पितासावस्य पिता वयठं० स्याम पतयो रयीणाम्॥

आवाहयाम्यहं देवदेवेशं च प्रजापतिम्।
अनेकव्रतकर्तारं सर्वेषां च पितामहम्॥

ॐ भूर्भुवः स्वः प्रजापते इहागच्छ इह तिष्ठ ॐ प्रजापतये नमः, प्रजापतिमावाहयामि स्थापयामि॥ ७॥

विष्णुमावाहयामि स्थापयामि' से विष्णु, 'ॐ इन्द्र आसां०' से 'इन्द्राय नमः, इन्द्रमावाहयामि स्थापयामि' तक इन्द्र का, 'ॐ अदित्यै०'–'इन्द्राण्यै नमः, इन्द्राणीमावाहयामि स्थापयामि' कर कहकर इन्द्राणी का। 'ॐ प्रजापते न०' से 'प्रजापतये नमः, प्रजापतिमावाहयामि स्थापयामि' तक से प्रजापति का,

ॐ नमोऽस्तु सर्पेभ्यो ये के च पृथिवीमनु। ये अन्तरिक्षे ये दिवि तेभ्यः सर्पेभ्यो नमः॥

अनन्ताद्यान् महाकायान् नानामणिविराजितान्।
आवाहयाम्यहं सर्पान् फणासप्तकमण्डितान्॥

ॐ भूर्भुवः स्वः सर्पा इहागच्छत इह तिष्ठ ॐ सर्पेभ्यो नमः, सर्पानामावाहयामि स्थापयामि॥ ८॥

ॐ ब्रह्म यज्ञानं प्रथमं पुरस्ताद्वि सीमतः सुरुचो वेन आवः। स बुध्न्या उपमा अस्य विष्ठाः सतश्च योनिमसतश्च विवः॥

हंसपृष्ठसमारूढं देवतागणपूजितम्।
आवाहयाम्यहं देवं ब्रह्माणं कमलासनम्॥

ॐ भूर्भुवः स्वः ब्रह्मन् इहागच्छ इह तिष्ठ ॐ ब्रह्मणे नमः, ब्रह्माण-मावाहयामि स्थापयामि॥ ९॥

पंचलोकपालादिस्थापनम्

ततो विनायकादिपञ्चलोकपालदेवता वास्तोष्पतिं क्षेत्रपालं चाऽऽवाहयेत्—

ॐ गणानां त्वा गणपतिꣳ हवामहे प्रियाणां त्वा प्रियपतिꣳ हवामहे निधीनां त्वा निधिपतिꣳ हवामहे वसो मम। आहमजानि गर्भधमा त्वमजासि गर्भधम्॥

लम्बोदरं महाकायं गजवक्त्रं चतुर्भुजम्।
आवाहयाम्यहं देवं गणेशं सिद्धिदायकम्॥

ॐ भूर्भुवः स्वः गणपते इहागच्छ इह तिष्ठ ॐ गणपतये नमः, गणपतिमावाहयामि स्थापयामि॥ १॥

'ॐ नमोऽस्तु सर्पेभ्यो०' से 'सर्पेभ्यो नमः, सर्पानावाहयामि स्थापयामि' तक बोलकर सर्प, 'ॐ ब्रह्म जज्ञानं०' से 'ब्रह्मणे नमः, ब्रह्माणमावाहयामि स्थापयामि' तक पढ़कर ब्रह्मा का आवाहन और स्थापन करें।

पंचलोकपाल स्थापन—इसके बाद विनायक आदि पंचलोकपाल, वास्तोष्पति एवं क्षेत्रपाल का आवाहनपूर्वक स्थापन करे। 'ॐ गणानां त्वा०' से 'गणपतये नमः, गणपतिमावाहयामि स्थापयामि' तक से गणपति का।

ॐ अम्बे अम्बिकेऽम्बालिके न मा नयति कश्चन। ससस्त्यश्वकः सुभद्रिकां काम्पीलवासिनीम्॥

पत्तने नगरे ग्रामे विपिने पर्वते गृहे।
नानाजातिकुलेशानीं दुर्गामावाहयाम्यहम्॥

ॐ भूर्भुवः स्वः दुर्गे इहागच्छ इह तिष्ठ ॐ दुर्गायै नमः, दुर्गामावाहयामि स्थापयामि॥ २॥

ॐ वायो ये ते सहस्त्रिणो रथासस्तेभिरागहि। नियुत्वान्सोमपीतये॥

आवाहयाम्यहं वायुं भूतानां देहधारिणम्।
सर्वाधारं महावेगं मृगवाहनमीश्वरम्॥

ॐ भूर्भुवः स्वः वायो इहागच्छ इह तिष्ठ ॐ वायवे नमः, वायुमावाहयामि स्थापयामि॥ ३॥

ॐ घृतं घृतपावनः पिबत वसां वसापावानः पिबतान्तरिक्षस्य हविरसि स्वाहा। दिशः प्रदिश आदिशो विदिश उद्दिशो दिग्भ्यः स्वाहा॥

अनाकारं शब्दगुणं द्यावाभूम्यन्तरस्थितम्।
आवाहयाम्यहं देवमाकाशं सर्वगं शुभम्॥

ॐ भूर्भुवः स्वः आकाश इहागच्छ इह तिष्ठ ॐ आकाशाय नमः, आकाशमावाहयामि स्थापयामि॥ ४॥

ॐ या वां कशा मधुमत्यश्विना सूनृतावती। तया यज्ञं मिमिक्षतम्॥

देवतानां च भैषज्ये सुकुमारौ भिषग्वरौ।
आवाहयाम्यहं देवावश्विनौ पुष्टिवर्द्धनौ॥

ॐ भूर्भुवः स्वः अश्विनौ इहागच्छताम् इह तिष्ठताम् ॐ अश्विभ्यां नमः, अश्विनौ आवाहयामि स्थापयामि॥ ५॥

'ॐ अम्बे अम्बिकेऽ०' से लेकर 'दुर्गामा० स्थाप०' तक से दुर्गा, 'ॐ वायो ये ते०' से 'वायुमा० स्थाप०' तक पढ़कर वायु, 'ॐ घृतं घृतपावनः०' से 'आकाशमा० स्थाप०' तक कहकर आकाश और 'ॐ या वां कशा०' से 'अश्विनौ आवाह० स्थाप०' तक पढ़कर अश्विनी का आवाहन और स्थापन करें।

ॐ वास्तोष्पते प्रतिजानीह्यस्मान्स्वावेशो ऽअनमीवा भवो नः। यत्वेमहे प्रति तन्नो जुषस्व शन्नो भव द्विपदे शं चतुष्पदे॥

वास्तोष्पतिं विदिक्कार्यं भूशय्याभिरतं प्रभुम्।
आवाहयाम्यहं देवं सर्वकर्मफलप्रदम्॥

ॐ भूर्भुवः स्वः वास्तोष्पते इहागच्छ इह तिष्ठ ॐ वास्तोष्पतये नमः, वास्तोष्पतिमावाहयामि स्थापयामि॥ ६॥

ॐ नहि स्पशमविदन्नन्यमस्माद्वैश्वानरात्पुर एतारमग्नेः। ऐमेनमवृधन्नमृता अमर्त्यं वैश्वानर क्षैत्रजित्याय देवाः॥

भूत-प्रेत-पिशाचाद्यैरावृतं शूलपाणिनम्।
आवाहये क्षेत्रपालं कर्मण्यस्मिन् सुखाय नः॥

ॐ भूर्भुवः स्वः क्षेत्राधिपतये इहागच्छ इह तिष्ठ ॐ क्षेत्राधिपतये नमः, क्षेत्राधिपतिमावाहयामि स्थापयामि॥ ७॥

दशदिक्पालस्थापनम्

ततो मण्डलाद् बहिःदशदिक्पालानामावाहनं कुर्यात्—

ॐ त्रातारमिन्द्रमवितारमिन्द्रर्ठ० हवे हवे सुहवर्ठ० शूरमिन्द्रम्। ह्वयामि शक्रं पुरुहूतमिन्द्रर्ठ० स्वस्ति नो मघवा धात्विन्द्रः॥

इन्द्रं सुरपतिश्रेष्ठं वज्रहस्तं महाबलम्।
आवाहये यज्ञसिद्ध्यै शतयज्ञाधिपं प्रभुम्॥

ॐ भूर्भुवः स्वः इन्द्रेहागच्छ इह तिष्ठ ॐ इन्द्राय नमः, इन्द्रमावाहयामि स्थापयामि॥ १॥

'ॐ वास्तोष्पते०' से 'वास्तोष्पतिमावाहयामि स्थापयामि' तक कहकर वास्तोष्पति, 'ॐ नहि स्पशमविदन्नं०'-'क्षेत्राधिपतिमावाहयामि स्थापयामि' तक से क्षेत्राधिपति का आवाहनपूवक स्थापन करें।

दशदिक्पाल स्थापन—तत्पश्चात् ग्रहमण्डल के बाहर पूर्व दिशा से प्रदक्षिण क्रम से दशदिक्पालों का आवाहनपूर्वक स्थापन करें। यथा—'ॐ त्रातारमि०' -'इन्द्रमावाहयामि स्थापयामि' तक इन्द्र का आवाहन-स्थापन करें।

ॐ त्वं नो अग्ने तव देव पायुभिर्मघोनो रक्ष तन्वश्च वन्द्य। त्राता तोकस्य तनये गवामस्य निमेषर्ठ० रक्षमाणस्तव व्रते॥

त्रिपादं सप्तहस्तं च द्विमूर्द्धानं द्विनासिकम्।
षण्नेत्रं च चतुःश्रोत्रमग्निमावाहयाम्यहम्॥

ॐ भूर्भुवः स्वः अग्ने इहागच्छह इह तिष्ठ ॐ अग्नये नमः, अग्निमावाहयामि स्थापयामि॥ २॥

ॐ यमाय त्वाङ्गिरस्वते पितृमते स्वाहा। घर्माय स्वाहा घर्मः पित्रे॥

महामहिषमारूढं दण्डहस्तं महाबलम्।
यज्ञसंरक्षणार्थाय यममावाहयाम्यहम्॥

ॐ भूर्भुवः स्वः यमेहागच्छ इह तिष्ठ ॐ यमाय नमः, यममावाहयामि स्थापयामि॥ ३॥

ॐ असुन्वन्तमयजमानमिच्छ स्तेनस्येत्यामन्विहि तस्करस्य। अन्यमस्मदिच्छ सा त इत्या नमो देवि निर्ऋते तुभ्यमस्तु॥

सर्वप्रेताधिपं देवं निर्ऋतिं नीलविग्रहम्।
आवाहये यज्ञसिद्ध्यै नरारूढं वरप्रदम्॥

ॐ भूर्भुवः स्वः निर्ऋते इहागच्छ इह तिष्ठ ॐ निर्ऋतये नमः, निर्ऋतिमावाहयामि स्थापयामि॥ ४॥

ॐ तत्त्वा यामि ब्रह्मणा वन्दमानस्तदाशास्ते यजमानो हविर्भिः। अहेडमानो वरुणेह बोध्युरुशर्ठ० स मा न आयुः प्रमोषीः॥

'ॐ त्वं नो अग्ने०'-'अग्निमावाहयामि स्थापयामि' से अग्नि का। 'ॐ यमाय त्वाङ्गि०' से लेकर 'यममावाहयामि स्थापयामि' तक से यम, 'ॐ असुन्वन्तमय०' से लेकर 'निर्ऋतिमावाहयामि स्थापयामि' से निर्ऋति, 'ॐ तत्त्वा यामि०' से आरम्भ कर

शुद्धस्फटिकसङ्काशं जलेशं यादशां पतिम्।
आवाहये प्रतीचीशं वरुणं सर्वकामदम्॥

ॐ भूर्भुवः स्वः वरुण इहागच्छ इह तिष्ठ ॐ वरुणाय नमः, वरुणमावाहयामि स्थापयामि॥ ५॥

ॐ आ नो नियुद्भिः शतिनीभिरध्वरꣳ सहस्रिणीभिरुपयाहि यज्ञम्। वायो अस्मिन्सवने मादयस्व यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः॥

मनोजवं महातेजं सर्वतश्चारिणं शुभम्।
यज्ञसंरक्षणार्थाय वायुमावाहयाम्यहम्॥

ॐ भूर्भुवः स्वः वायो इहागच्छ इह तिष्ठ ॐ वायवे नमः, वायुमावाहयामि स्थापयामि॥ ६॥

ॐ वयꣳ सोम व्रते तव मनस्तनूषु बिभ्रतः। प्रजावन्तः सचेमहि॥

आवाहयामि देवेशं धनदं यक्षपूजितम्।
महाबलं दिव्यदेहं नरयानगतिं विभुम्॥

ॐ भूर्भुवः स्वः सोमेहागच्छ इह तिष्ठ ॐ सोमाय नमः, सोममावाहयामि स्थापयामि॥ ७॥

ॐ तमीशानं जगतस्तस्थुषस्पतिं धियं जिन्वमवसे हूमहे वयम्। पूषा नो यथा वेदसामसद्वृधे रक्षिता पायुरदब्धः स्वस्त्ये॥

सर्वाधिपं महादेवं भूतानां पतिमव्ययम्।
आवाहये तमीशानं लोकानामभयप्रदम्॥

ॐ भूर्भुवः स्वः इशानेहागच्छ इह तिष्ठ ॐ ईशानाय नमः, ईशानमावाहयामि स्थापयामि॥ ८॥

'वरुणमावाहयामि स्थापयामि' तक पढ़कर वरुण का आवाहन एवं स्थापन करें। इसी तरह 'ॐ आ नो नियुद्भिः०' से 'वायुमावाहयामि स्थापयामि' तक से वायु का। 'ॐ वयꣳ सोम०' से लेकर 'सोममावाहयामि स्थापयामि' से सोम, 'ॐ तमीशानं०' 'ईशानमावाहयामि स्थापयामि' से ईशान का,

ॐ अस्मे रुद्रा मे हना पर्वतासो वृत्रहत्ये भरहूतौ सजोषाः। यः शर्ठं० सते स्तुवते धायि पज्र इन्द्र ज्येष्ठा अस्माँ२॥ अवन्तु देवाः॥

पद्मयोनिं चतुर्मूर्तिं वेदगर्भं पितामहम्।
आवाहयामि ब्रह्माणं यज्ञसंसिद्धिहेतवे॥

पूर्वेशानयोर्मध्ये—ॐ भूर्भुवः स्वः ब्रह्मन् इहागच्छ इह तिष्ठ ॐ ब्रह्मणे नमः, ब्रह्माणमावाहयामि स्थापयामि॥ ९॥

ॐ स्योना पृथिवी नो भवानृक्षरा निवेशनि। यच्छा नः शर्म सप्रथाः॥

अनन्तं सर्वनागानामधिपं विश्वरूपिणम्।
जगतां शान्तिकर्तारं मण्डले स्थापयाम्यहम्॥

निर्ऋति-पश्चिमयोर्मध्ये—ॐ भूर्भुवः स्वः अनन्तेहागच्छ इह तिष्ठ ॐ अनन्ताय नमः, अनन्तमावाहयामि स्थापयामि॥ १०॥

ॐ मनो जूतिर्जुषतामाज्यस्य बृहस्पतिर्यज्ञमिमं तनोत्वरिष्टं यज्ञठं० समिमं दधातु। विश्वेदेवास इह मादयन्तामों३प्रतिष्ठ॥

सूर्याद्यनन्तान्तदेवताः सुप्रतिष्ठताः वरदाः भवन्तु। 'सूर्याद्यनन्तान्त-देवताभ्यो नमः' इति मन्त्रेण आसनादि षोडशोपचारैः प्रत्येकमेकत्र वा सम्पूज्य प्रार्थयेत्।॥

'ॐ अस्मे रुद्रा०' से लेकर 'ब्रह्माणमावाहयामि स्थापयामि' से पूर्व और ईशान के ठीक मध्य में ब्रह्मा और 'ॐ स्योना पृथिवी०' से लेकर 'अनन्तमावाहयामि स्थापयामि' तक पढ़कर निर्ऋति एवं पश्चिम दिशा के ठीक बीच में अनन्त का आवाहन एवं स्थापन करें। तत्पश्चात् 'ॐ मनो जूतिर्जुषता०' से आरम्भ कर 'सूर्याद्यनन्तान्तदेवताभ्यो नमः' तक श्लोक एवं मन्त्र वाक्य पढ़कर आसनादिषोडशोपचार द्वारा सूर्यादि प्रत्येक नाम अथवा एक तन्त्र से ही सूर्यादिअनन्तान्त देवताओं का पूजन कर प्रार्थना करें।

ब्रह्मा मुरारिस्त्रिपुरान्तकारी भानुः शशि भूमिसुतो बुधश्च।
गुरुश्च शुक्रः शनि-राहु-केतवः सर्वे ग्रहाः शान्तिकरा भवन्तु॥

ॐ ग्रहा ऽऊर्जाहुतयो व्यन्तो विप्राय मतिम्। तेषां विशिप्रियाणां वोऽहमिषमूर्ज्जर्ठ० समग्रभमुपयामगृहीतोऽसीन्द्राय त्त्वा जुष्टं गृह्णाम्येष ते योनिरिन्द्राय त्त्वा जुष्टतमम्॥

अनया पूजया सूर्याद्यनन्तान्तदेवताः प्रीयन्ताम्।

असङ्ख्यात रुद्रकलश स्थापनं पूजनं च

तदनन्तरं ग्रहस्येशानदिग्भागे कलशस्थापनविधिना रुद्रकलशं संस्थाप्य, कलशे वरुणमसंख्यातरुद्रांश्चाऽऽवाह्य पूजयेत्। तद्यथा—

ॐ असङ्ख्याता सहस्राणि ये रुद्रा ऽअधि भूम्याम्। तेषार्ठ० सहस्रयोजनेऽव धन्वानि तन्मसि॥ ॐ भूर्भुवः स्व असङ्ख्यातरुद्रेभ्यो नमः असङ्ख्यातरुद्रानामावाहयामि स्थापयामि। ॐ मनो जूतिर्जुषता-माज्यस्य बृहस्पतिर्यज्ञमिमं तनोत्वरिष्टं यज्ञर्ठ० समिमं दधातु। विश्वेदेवास इह मादयन्तामों ३ँप्रतिष्ठ॥ इति मन्त्रेण प्रतिष्ठाप्य 'ॐ असङ्ख्यातरुद्रेभ्यो नमः' इति लब्धोपचारेण सम्पूजयेत्।

तदनन्तर 'ब्रह्मा मुरारि०' श्लोक और 'ॐ ग्रहा ऽऊर्जाहुतयो०' मन्त्र का उच्चारण कर सूर्यादि ग्रहों की प्रार्थना करें और 'अनया पूजया०' पढ़कर जल छोड़ दें।

असङ्ख्यातरुद्रकलश स्थापन और पूजन—तदनन्तर ग्रहमण्डल के ईशानकोण में पहले बताई गई कलशस्थापनविधि के द्वारा असङ्ख्यात रुद्र के कलश की स्थापना करवाकर उसमें वरुण और असङ्ख्यात रुद्र का 'ॐ असङ्ख्याता सहस्राणि०' से लेकर 'ॐ असङ्ख्यातरुद्रेभ्यो नमः' तक का उच्चारण कर पूजन सामग्री द्वारा यजमान से पूजन करावें।

चतुःषष्टियोगिनीस्थापनम्

आचार्य एक हाथ चौड़ी वेदी पर परिखायुक्त वेदी पर लालवस्त्र से वेदी को ढककर उस पर नौ-नौ रेखाएँ पूर्व से पश्चिम, उत्तर से दक्षिण की ओर देवें। पुनः चौसठ खानों में चतुष्ठीपद योगिनी के बनेंगे, जिनमें रंगीन अक्षत भर कर योगिनी का आवाहन होगा, इनमें कुछ लोग त्रिकोण आकृति का भी निर्माण करते हैं। स्वस्तिवाचन मंत्रों की आवृति से मध्य में तीन कलश स्थापित कर महाकाली, महालक्ष्मी, महासरस्वती का आवाहन कर पूजन करें, योगिनीवेदी के समीप यजमान को बैठाकर निम्न संकल्प करावें—

सङ्कल्पः—देशकालौ सङ्कीर्त्य, अमुकगोत्रः अमुकशर्माऽहं (वर्माऽहम्, गुप्तोऽहम्, दासोऽहम्) सपत्नीकोऽहं अस्मिन् सप्रासादधूमावतीप्रतिष्ठा-कर्मणि महाकाली-महालक्ष्मी-महासरस्वतीपूजनपूर्वकदिव्यादि चतुःषष्टि-योगिनीनां स्थापनं करिष्ये।

उपरोक्त संकल्प के पश्चात् महाकाली की प्रतिमा योगिनी की प्रतिमा में '**ॐ अश्मन्नूर्जम्०**' इस वाक्य के द्वारा अग्नयुत्तारण करके प्रतिमा को यथास्थान स्थापित कर आवाहनादि करें—

ॐ अम्बेअम्बिकेऽम्बालिके नमानयति कश्चन। ससस्त्यश्वकः सुभद्रिकां काम्पीलवासिनीम्॥ १॥ ॐ श्रीश्चते लक्ष्मीश्च पत्न्यावहोरात्रे पार्श्वे नक्षत्राणि रूपमश्विनौ व्यात्तम्। इष्णन्निषाणामुं म इषाण सर्वलोकं म इषाण॥ २॥ ॐ पावका नः सरस्वती वाजेभिर्वाजिनीवती। यज्ञं वष्टु धियावसुः॥ ३॥ इति मन्त्रावावर्तनीयौ।

प्रथमाष्टकपंक्तिः

ॐ तमीशानं जगतस्तस्थुषस्पतिं धियं जिन्वमवसे हूमहे वयम्। पूषा नो यथा वेदसामसद्वृधे रक्षिता पायुरदब्धः स्वस्तये॥ ॐ गजाननायै नमः। गजाननामावाहयामि स्थापयामि॥ १॥

आ ब्रह्मन्ब्राह्मणो ब्रह्मवर्चसी जायतामा राष्ट्रे राजन्यः शूर इषव्योऽतिव्याधी महारथो जायतां दोग्ध्री धेनुर्वोढानड्वानाशुः सप्तिः पुरन्धिर्योषा जिष्णू रथेष्ठाः सभेयो युवास्य यजमानस्य वीरो जायतां निकामे निकामे नः पर्जन्यो वर्षतु फलवत्यो न ओषधयः पच्यन्तां योगक्षेमो नः कल्पताम्॥ ॐ सिंहमुख्यै नमः। सिंहमुखीमावाहयामि स्थापयामि॥ २॥

महाँ२॥ इन्द्रो वज्रहस्तः षोडशी शर्म यच्छतु। हन्तु पाप्मानं योऽस्मान्द्वेष्टि। उपयामगृहीतोऽसि महेन्द्राय त्वैष ते योनिर्महेन्द्राय त्वा॥ ॐ गृध्रास्यायै नमः। गृध्रास्यामावाहयामि स्थापयामि॥ ३॥

सद्योजातो व्यमिमीत यज्ञमग्निर्देवानामभवत्पुरोगाः। अस्य होतुः प्रदिश्यृतस्य वाचि स्वाहा कृतऌ० हविरदन्तु देवाः॥ काकतुण्डिकायै नमः। काकतुण्डिकामावाहयामि स्थापयामि॥ ४॥

आदित्यं गर्भं पयसा समङ्ग्धि सहस्रस्य प्रतिमां विश्वरूपम्। परिवृङ्ग्धि हरसा माभिमऌ०स्थाः शतायुषं कृणुहि चीयमानः॥ ॐ उष्ट्रग्रीवायै नमः। उष्ट्रग्रीवामावाहयामि स्थापयामि॥ ५॥

स्वर्ण घर्मः स्वाहा स्वर्णार्कः स्वाहा स्वर्ण शुक्रः स्वाहा स्वर्ण ज्योतिः स्वाहा स्वर्ण सूर्यः स्वाहा॥ ॐ हयग्रीवायै नमः। हयग्रीवा-मावाहयामि स्थापयामि॥ ६॥

सत्यं च मे श्रद्धा च मे जगच्च मे धनं च मे विश्वं च मे महश्च मे क्रीडा च मे मोदश्च मे जातं च मे जनिष्यमाणं च मे सूक्तं च मे सुकृतं च मे यज्ञेन कल्पन्ताम्॥ ॐ वाराह्यै नमः। वाराहीमावाहयामि स्थापयामि॥ ७॥

भायै दार्वाहारं प्रभाया अग्न्येधं ब्रध्नस्य विष्टप्रायाभिषेक्तारं वर्षिष्ठाय नाकाय परिवेष्टारं देवलोकाय पेशितारं मनुष्यलोकाय प्रकरितारऌ० सर्वेभ्यो लोकेभ्य उपसेक्तारमवऋत्यै वधायोपमन्थितारं मेधाय वासः पल्पूलीं प्रकामाय रजयित्रीम्॥ ॐ शरभाननायै नमः। शरभाननामावाहयामि स्थापयामि॥ ८॥

द्वितीयाष्टकपंक्तिः

ॐ जिह्वा मे भद्रं वाङ्महो मनो मन्युः स्वराड्भामः ॥ मोदाः प्रमोदा अङ्गुलीरङ्गानि मित्रं मे सहः ॥ ॐ उलूकिकायै नमः। उलूकिका-मावाहयामि स्थापयामि ॥ १ ॥

हिङ्काराय स्वाहा हिङ्कृताय स्वाहा क्रन्दते स्वाहाऽवक्रन्दाय स्वाहा प्रोथते स्वाहा प्रप्रोथाय स्वाहा गन्धाय स्वाहा घ्राताय स्वाहा निविष्टाय स्वाहोपविष्टाय स्वाहा संदिताय स्वाहा वल्गते स्वाहासीनाय स्वाहा शयानाय स्वाहा स्वपते स्वाहा जाग्रते स्वाहा कूजते स्वाहा प्रबुद्धाय स्वाहा विजृम्भमाणाय स्वाहा विचृताय स्वाहा सर्ठ०हानाय स्वाहोपस्थिताय स्वाहायनाय स्वाहा प्रायाणाय स्वाहा ॥ ॐ शिवारावायै नमः। शिवारावामावाहयामि स्थापयामि ॥ २ ॥

अग्निश्च मे घर्मश्च मेऽर्कश्च मे सूर्यश्च मे प्राणश्च मेऽश्वमेधश्च मे पृथिवी च मेऽदितिश्च मे दितिश्च मे द्यौश्च मेऽङ्गुलयः शक्वरयो दिशश्च मे यज्ञेन कल्पन्ताम् ॥ ॐ मयूरायै नमः। मयूरामावाहयामि स्थापयामि ॥ ३ ॥

पूषन् तव व्रते वयं न रिष्येम कदाचन। स्तोतारस्त इह स्मसि ॥ ॐ विकटाननायै नमः। विकटाननामावाहयामि स्थापयामि ॥ ४ ॥

वेद्या वेदिः समाप्यते बर्हिषा बर्हिरिन्द्रियम्। यूपेन यूप आप्यते प्रणीतो अग्निरग्निना ॥ ॐ अष्टवक्त्रायै नमः। अष्टवक्त्रामावाहयामि स्थापयामि ॥ ५ ॥

अयमग्निः सहस्त्रिणो वाजस्य शतिनस्पतिः। मूर्धा कवी रयीणाम् ॥ ॐ कोटराक्ष्यै नमः। कोटराक्षीमावाहयामि स्थापयामि ॥ ६ ॥

इमं मे वरुण श्रुधी हवमद्या च मृडय। त्वामवस्युराचके ॥ ॐ कुब्जायै नमः। कुब्जामावाहयामि स्थापयामि ॥ ७ ॥

यमाय त्वा मखाय त्वा सूर्यस्य त्वा तपसे। देवस्त्वा सविता मध्वानक्तु। पृथिव्याः सर्ठ० स्पृशस्पाहि। अर्चिरसि शोचिरसि तपोऽसि ॥ ॐ विकटलोचनायै नमः। विकटलोचनामावाहयामि स्थापयामि ॥ ८ ॥

तृतीयाष्टकपंक्तिः

ॐ यमेन दत्तं त्रित एनमायुनगिन्द्र एणं प्रथमो अध्यतिष्ठत्। गन्धर्वो अस्य रशनामगृभ्णात्सूरादश्वं वसवो निरतष्ट॥ ॐ शुष्कोदर्यै नमः। शुष्कोदरीमावाहयामि स्थापयामि॥ १॥

मित्रस्य चर्षणीधृतोऽवो देवस्य सानसि। द्युम्नं चित्रश्रवस्तमम्॥ ॐ ललजिह्वायै नमः। ललजिह्वामावाहयामि स्थापयामि॥ २॥

अग्ने ब्रह्म गृभ्णीष्व धरुणमस्यन्तरिक्षं दृर्ठ०ह ब्रह्मवनि त्वा क्षत्रवनि सजातवन्युपदधामि भ्रातृव्यस्य वधाय। धर्त्रमसि दिवं दृर्ठ०ह ब्रह्मवनि त्वा क्षत्रवनि सजातवन्युपदधामि भ्रातृव्यस्य वधाय। विश्वाभ्यस्त्वाशाभ्य उपदधामि चितः स्थोर्ध्वचितो भृगूणामङ्गिरसां तपसा तप्यध्वम्॥ ॐ श्वदंष्ट्रायै नमः। श्वदंष्ट्रामावाहयामि स्थापयामि॥ ३॥

भग प्रणेतर्भग सत्यराधो भगेमां धियमुदवा ददन्नः। भग प्र नो जनय गोभिरश्वैर्भग प्र नृभिर्नृवन्तः स्याम॥ ॐ वानराननायै नमः। वानराननामावाहयामि स्थापयामि॥ ४॥

सुपर्णोऽसि गरुत्मांस्त्रिवृत्ते शिरो गायत्रं चक्षुर्बृहद्रथन्तरे पक्षौ। स्तोम आत्मा छन्दार्ठ०स्यङ्गानि यजूर्ठ०षि नाम। साम ते तनूर्वामदेव्यं यज्ञायज्ञियं पुच्छं धिष्ण्याः शफाः। सुपर्णोसि गरुत्मान्दिवं गच्छ स्वः पत॥ ॐ ऋक्षाक्ष्यै नमः। ऋक्षाक्षीमावाहयामि स्थापयामि॥ ५॥

पितृभ्यः स्वधायिभ्यः स्वधा नमः पितामहेभ्यः स्वधायिभ्यः स्वधा नमः प्रपितामहेभ्यः स्वधायिभ्यः स्वधा नमः। अक्षन्पितरोऽमीमदन्त पितरोऽतीतृपन्त पितरः पितरः शुन्धध्वम्॥ ॐ केकराक्ष्यै नमः। केकराक्षीमावाहयामि स्थापयामि॥ ६॥

या ते रुद्र शिवा तनूरघोराऽपापकाशिनी। तया नस्तन्वा शन्तमया गिरिशन्ताभिचाकशीहि॥ ॐ बृहत्तुण्डायै नमः। बृहत्तुण्डामावाहयामि स्थापयामि॥ ७॥

ॐ वरुणः प्राविता भुवन्मित्रो विश्वाभिरूतिभिः। करतां नः सुराधंसः॥ ॐ सुरप्रियायै नमः। सुरप्रियामावाहयामि स्थापयामि॥ ८॥

चतुर्थाष्टकपंक्तिः

ॐ हर्ठ०सः शुचिषद्वसुरन्तरिक्षसद्धोता वेदिषदतिर्दुरोणसत्। नृषद्वरसदृतसद्व्योमसदब्जा गोजा ऋतजा अद्रिजा ऋतं बृहत्॥ ॐ कपालहस्तायै नमः। कपालहस्तामावाहयामि स्थापयामि॥ १॥

सुसंदृशं त्वा वयं मघवन्वन्दिषीमहि। प्र नूनं पूर्णबन्धुरः स्तुतो यासि वशाँ अनु योजा न्विन्द्र ते हरी॥ ॐ रक्ताक्ष्यै नमः। रक्ताक्षीमावाहयामि स्थापयामि॥ २॥

प्रतिपदसि प्रतिपदे त्वानुपदस्यनुपदे त्वा सम्पदसि सम्पदे त्वा तेजोऽसि तेजसे त्वा॥ ॐ शुष्क्यै नमः। शुष्कीमावाहयामि स्थापयामि॥ ३॥

देवीरापो अपां न पाद्यो व ऊर्मिर्हविष्य इन्द्रिया वान्मदिन्तमः। तं देवेभ्यो देवत्रा दत्त शुक्रपेभ्यो येषां भाग स्थ स्वाहा॥ ॐ श्येन्यै नमः। शेनीमावाहयामि स्थापयामि॥ ४॥

हविष्मतीरिमा आपो हविष्माँ २ आ विवासति। हविष्यमान्देवो अध्वरो हविषमाँ २॥ अस्तु सूर्यः॥ ॐ कपोतिकायै नमः। कपोतिका-मावाहयामि स्थापयामि॥ ५॥

श्रीश्च ते लक्ष्मीश्च पत्न्यावहोरात्रे पार्श्वे नक्षत्राणि रूपमश्विनौ व्यात्तम्। इष्णन्निषाणामुं म इषाण सर्वलोकं म इषाण॥ ॐ पाशहस्तायै नमः। पाशहस्तामावाहयामि स्थापयामि॥ ६॥

भुवो यज्ञस्य रजसश्च नेता यत्रा नियुद्भिः सचसे शिवाभिः। दिवि मूर्धानं दधिषे स्वर्षां जिह्वामग्ने चकृषे हव्यवाहम्॥ ॐ दण्डहस्तायै नमः। दण्डहस्तामावाहयामि स्थापयामि॥ ७॥

कदाचनः स्तरीरसि नेन्द्र सश्चसि दाशुषे। उपोपेन्नु मघवन्भूय इन्नु ते दानं देवस्य पृच्यत आदित्येभ्यस्त्वा॥ ॐ प्रचण्डायै नमः। प्रचण्डा-मावाहयामि स्थापयामि॥ ८॥

पञ्चमाष्टकपंक्तिः

ॐ भद्रं कर्णेभिः शृणुयाम देवा भद्रं पश्येमाक्षभिर्यजत्राः। स्थिरैरङ्गैस्तुष्टुवाꣳसस्तनूभिर्व्यशेमहि देवहितं यदायुः॥ ॐ चण्डविक्रमायै नमः। चण्डविक्रमावाहयामि स्थापयामि॥ १॥

इषे त्वोर्ज्जे त्वा वायव स्थ देवो वः सविता प्रार्पयतु श्रेष्ठतमाय कर्मण आप्यायध्वमघ्न्या इन्द्राय भागं प्रजावतीरनमीवा अयक्ष्मा मा वस्तेन ईशत माघशꣳसो ध्रुवा अस्मिगोपतौ स्यात बह्वीर्यजमानस्य पशून्पाहि॥ ॐ शिशुघ्न्यै नमः। शिशुघ्नीमावाहयामि स्थापयामि॥ २॥

देवी द्यावापृथिवी मखस्य वामद्य शिरो राध्यासं देवयजने पृथिव्याः। मखाय त्वा मखस्य त्वा शीर्ष्णे॥ ॐ पापहन्त्र्यै नमः। पाहन्त्रीमावाहयामि स्थापयामि॥ ३॥

विश्वानि देव सवितर्दुरितानि परासुव। यद्भद्रं तन्न आसुव॥ ॐ काल्यै नमः। कालीमावाहयामि स्थापयामि॥ ४॥

असुन्वन्तमयजमानमिच्छ स्तेनस्येत्यामन्विहि तस्करस्य। अन्यमस्मदिच्छ सा त इत्या नमो देवि निर्ऋते तुभ्यमस्तु॥ ॐ रुधिरपायिन्यै नमः। रुधिरपायिनीमावाहयामि स्थापयामि॥ ५॥

अग्निश्च म आपश्च मे वीरुधश्च म ओषधयश्च मे कृष्टपच्याश्च मेऽकृष्टपच्याश्च मे ग्राम्याश्च मे पशव आरण्याश्च मे वित्तं च मे वित्तिश्च मे भूतं च मे भूतिश्च मे यज्ञेन कल्पन्ताम्॥ ॐ वसाधयायै नमः। वसाधयामावाहयामि स्थापयामि॥ ६॥

बह्वीनां पिता बहुरस्य पुत्रश्चिश्चाकृणोति समनावगत्य। इषुधिः संकाः पृतनाश्च सर्वाः पृष्ठे निनद्धो जयति प्रसूतः॥ ॐ गर्भभक्षायै नमः। गर्भभक्षामावाहयामि स्थापयामि॥ ७॥

नमस्ते रुद्र मन्यव उतो त इषवे नमः। बाहुभ्यामुत ते नमः॥ ॐ शवहस्तायै नमः। शवहस्तामावाहयामि स्थापयामि॥ ८॥

षष्ठाष्टकपंक्तिः

ॐ ऋतं च मेऽमृतं च मेऽयक्ष्मं च मेऽनामयच्च मे जीवातुश्च मे दीर्घायुत्वं च मेऽनमित्रं च मेऽभयं च मे सुखं च मे शयनं च सूषाश्च मे सुदिनं च मे यज्ञेन कल्पन्ताम्॥ ॐ आन्त्रमालिन्यै नमः। आन्त्रमालिनी-मावाहयामि स्थापयामि॥ १॥

ते आचरन्ती समनेव योषा मातेव पुत्रं बिभृतामुपस्थे। अप शत्रून्विध्यतार्ठ० संविदाने आर्त्नी इमे विष्फुरन्ती अमित्रान्॥ ॐ स्थूल-केश्यै नमः। स्थूलकेशीमावाहयामि स्थापयामि॥ २॥

वेद्या वेदिः समाप्यते बर्हिषा बर्हिरिन्द्रियम्। यूपेन यूप आप्यते प्रणीतो अग्निरग्निना॥ ॐ बृहत्कुक्ष्यै नमः। बृहत्कुक्षीमावाहयामि स्थापयामि॥ ३॥

पावका नः सरस्वती वाजेभिर्वाजिनीवति। यज्ञं वष्टु धियावसुः॥ ॐ सर्पास्यायै नमः। सर्पास्यामावाहयामि स्थापयामि॥ ४॥

अस्कन्नमद्य देवेभ्य आज्यर्ठ०संभ्रियासमङ्घ्रिणा विष्णो मा त्वावक्रमिषं वसुमतीमग्ने ते च्छायामुपस्थेषं विष्णोः स्थानमसीत इन्द्रो वीर्यमकृणोदूर्ध्वोध्वर आस्थात्॥ ॐ प्रेतवाहिन्यै नमः। प्रेतवाहिनी-मावाहयामि स्थापयामि॥ ५॥

तीव्रान्घोषान्कृण्वते वृषपाणयोऽश्वा रथेभिः सहवाजयन्तः। अवक्रामन्तः प्रपदैरमित्रान्क्षिणन्तिशत्रूं१। रनपव्ययन्तः॥ ॐ दन्तशूक-करायै नमः। दन्तशूककरामावाहयामि स्थापयामि॥ ६॥

मही द्यौः पृथिवी च न इमं यज्ञं मिमिक्षताम्। पिपृतां नो भरीमभिः॥ ॐ क्रौञ्च्यै नमः। क्रौञ्चीमावाहयामि स्थापयामि॥ ७॥

उपयामगृहीतोऽसि सावित्रोऽसि चनोधाश्चनोधा असि चनो मयि धेहि। जिन्व यज्ञं जिन्व यज्ञपतिं भगाय देवाय त्वा सवित्रे॥ ॐ मृगशीर्षायै नमः। मृगशीर्षामावाहयामि स्थापयामि॥ ८॥

सप्तमाष्टकपंक्तिः

ॐ आप्यायस्व समेतु ते विश्वतः सोम वृष्ण्यम्। भवा वाजस्य संगथे॥ ॐ वृषाननायै नमः। वृषानामावाहयामि स्थापयामि॥ १॥

कार्षिरसि समुद्रस्य त्वाक्षित्या उन्नयामि। समापो अद्भिरग्मत समोषधीभिरोषधीः॥ ॐ व्यात्तास्यायै नमः। व्यात्तास्यामावाहयामि स्थापयामि॥ २॥

त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम्। उर्वारुकमिव बन्धनान्-मृत्योर्मुक्षीय माऽमृतात्। त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिं पतिवेदनम्। उर्वारुकमिव बन्धनादितो मुक्षीय मामुतः॥ ॐ धूमनिःश्वासायै नमः। धूमनिःश्वासामावाहयामि स्थापयामि॥ ३॥

अम्बेअम्बिकेऽम्बालिके न मा नयति कश्चन। ससस्त्यश्वकः सुभद्रिकाम्काम्पीलवासिनीम्॥ ॐ व्योमैकचरणोर्ध्वदृशे नमः। व्योमैक-चरणोर्ध्वदृशमावाहयामि स्थापयामि॥ ४॥

विष्णो रराटमसि विष्णोः श्नप्त्रे स्थो विष्णोः स्यूरसि विष्णोर्ध्रुवोऽसि। वैष्णवमसि विष्णवे त्वा॥ ॐ तापिन्यै नमः। तापिनी-मावाहयामि स्थापयामि॥ ५॥

ब्राह्मणमद्य विदेयं पितृमन्तं पैतृमत्यमृषिमार्षेयर्ठ० सुधातु-दक्षिणम्। अस्मद्राता देवता गच्छत प्रदातारमाविशत॥ ॐ शोषणीदृष्ट्यै नमः। शोषणीदृष्टिमावाहयामि स्थापयामि॥ ६॥

आ नो भद्राः क्रतवो यन्तु विश्वतोऽदब्धासो अपरीतास उद्भिदः। देवा नो यथा सदमिद्वृधे असन्नप्रायुवो रक्षितारो दिवेदिवे॥ ॐ कोटर्यै नमः। कोटरीमावाहयामि स्थापयामि॥ ७॥

एका च मे तिस्रश्च मे तिस्रश्च मे पञ्च च मे पञ्च मे सप्त च मे सप्त च मे नव च मे नव च म एकादश च म एकादश च मे त्रयोदश च मे

त्रयोदश च मे पञ्चदश च मे पञ्चदश च मे सप्तदश च मे सप्तदश च मे नवदश च मे नवदश च म एकविर्ठ०शतिश्च म एकविर्ठ०शतिश्च मे त्रयोविर्ठ०शतिश्च मे त्रयोविर्ठ०शतिश्च मे पञ्चविर्ठ०शतिश्च मे पञ्चविर्ठ० शतिश्च मे सप्तविर्ठ०शतिश्च मे सप्तविर्ठ०शतिश्च मे नवविर्ठ०शतिश्च मे नवविर्ठ०शतिश्च म एकत्रिर्ठ०शच्च म एकत्रिर्ठ०शच्च मे त्रयस्त्रिर्ठ० शच्च मे यज्ञेन कल्पन्ताम्॥ ॐ स्थूलनासिकायै नमः। स्थूलनासिका-मावाहयामि स्थापयामि॥ ८॥

अष्टमाष्टकपंक्तिः

ॐ ब्रह्माणि मे मतयः शर्ठ० सुतासः शुष्म इयर्ति प्रभृतो मे अद्रिः। आशासते प्रतिहर्यन्त्युक्थेमा हरी वहतस्ता नो अच्छ॥ ॐ विद्युत्प्रभायै नमः। विद्युतप्रभामावाहयामि स्थापयामि॥ १॥

असंख्याता सहस्राणि ये रुद्रा अधि भूम्याम्। तेषार्ठ० सहस्रयोजनेऽव धन्वानि तन्मसि॥ ॐ बलाकास्यायै नमः। बलाकास्या-मावाहयामि स्थापयामि॥ २॥

अहिरिव भोगैः पर्येति बाहुं ज्याया हेतिं परिबाधमानः। हस्तघ्नो विश्वा वयुनानि विद्वान्पुमान्पुमार्ठ०सं परिपातु विश्वतः॥ ॐ मार्जार्यै नमः। मार्जारीमावाहयामि स्थापयामि॥ ३॥

तिस्त्रस्त्रेधा सरस्वत्यश्विना भारतीडा। तीव्रं परिस्रुता सोममिन्द्राय सुषुवुर्मदम्॥ ॐ कटपूतनायै नमः। कटपूतनामावाहयामि स्थापयामि॥ ४॥

सरस्वती योन्यां गर्भमन्तरश्विभ्यां पत्नी सुकृतं बिभर्ति। अपार्ठ० रसेन वरुणो न साम्नेन्द्रर्ठ० श्रियै जनयन्नप्सु राजा॥ ॐ अट्टाट्टहासायै नमः। अट्टाट्टहासामावाहयामि स्थापयामि॥ ५॥

इदं विष्णुर्विचक्रमे त्रेधा निदधे पदम्। समूढमस्यपार्ठ० सुरे स्वाहा॥ ॐ कामाक्ष्यै नमः। कामाक्षीमावाहयामि स्थापयामि॥ ६॥

वृष्ण ऊर्मिरसि राष्ट्रदा राष्ट्रं मे देहि स्वाहा वृष्ण ऊर्मिरसि राष्ट्रदा राष्ट्रममुष्मै देहि वृषसेनोऽसिराष्ट्रदा राष्ट्रं मे देहि स्वाहा वृषसेनोऽसि राष्ट्रदा राष्ट्रममुष्मै देहि॥ ॐ मृगाक्ष्यै नमः। मृगाक्षीमावाहयामि स्थापयामि॥ ७॥

मृगो न भीमः कुचरो गिरिष्ठाः परावत आजगन्था परस्याः। सृकर्ठ०सर्ठ०शाय पविमिन्द्र तिग्मं वि शत्रून् ताढि वि मृधो नुदस्व॥ ॐ मृगलोचनायै नमः। मृगलोचनामावाहयामि स्थापयामि॥ ८॥

ईशाने—ॐ जयायै नमः, जयामावाहयामि स्थापयामि॥ पूर्वे—ॐ विजयायै नमः, विजयामावाहयामि स्थापयामि॥ आग्नेये—ॐ अजितायै नमः, अजितामावाहयामि स्थापयामि॥ दक्षिणे—ॐ अपराजितायै नमः, अपराजितामावाहयामि स्थापयामि॥ नैर्ऋत्ये—ॐ क्षेमकर्त्र्यै नमः, क्षेमकर्त्रीमावाहयामि स्थापयामि॥ पश्चिमे—ॐ लक्ष्म्यै नमः, लक्ष्मीमावाहयामि स्थापयामि॥ वायव्ये—ॐ वैष्णव्यै नमः, वैष्णवीमावाहयामि स्थापयामि॥ उत्तरे—ॐ पार्वत्यै नमः, पार्वतीमावाहयामि स्थापयामि॥

ॐ मनो जूतिर्जुषतामाज्यस्य बृहस्पतिर्यज्ञमिमं तनोत्वरिष्टं यज्ञर्ठ० समिमं द धातु। विश्वेदेवास इह मादयन्तामों ३ँप्रतिष्ठ॥

आचार्य निम्न श्लोक द्वारा यजमान से प्रार्थना करावें—

ॐ सम्पूजिता मयादेव्यो योगिन्यः सगणाः शुभा।
मम यज्ञन्तु निर्विघ्नं कुर्वन्तु गणक्षेत्रपैः॥

ततः साङ्गाः सपरिवाराः सायुधाः सशक्तिकाः सवाहनाः दिव्यादि-चतुः षष्टियोगिन्यः सुप्रतिष्ठिताः वरदा भवन्तु। ततः षोडशोपचारैः पूजयेत्।

योगिनीपूजनम्

ध्यानम्

स्मरामि चित्ते सततं सुरम्याः सुयोगिनीर्वोऽत्र गजाननाद्याः।
देवीश्चतुः षष्टिसुधांशुशुभ्राः स्वच्छं धरामण्डलमाशुकार्यम्॥

ॐ योगिनीदेवताभ्यो नमः, ध्यानं समर्पयामि।

आवाहनम्

समस्तप्रत्यूहसमुच्चयस्य विनाशने प्राप्तगुणाः सुभव्याः।
गजाननाद्या वितनोमि देव्य आवाहनं वोऽत्र समागताः स्युः॥

ॐ योगिनीदेवताभ्यो नमः, आवाहनं समर्पयामि।

आसनम्

दत्तं चतुष्षष्टि गजाननाद्या योगिन्य आरादिदमासनं च।
शुभप्रदाः सौख्यकरा भजन्तु भवन्तु मेऽभीष्टकराः सुवेषाः॥

ॐ योगिनीदेवताभ्यो नमः, आसनं समर्पयामि।

पाद्यम्

योगिन्य आशुपरमानिगमप्रसिद्धाः प्रक्षालनायपदपङ्कजयोरुदारम्।
स्वच्छं सुशीतलमिदं भयकाहृतं च गृह्णन्त्वशेषमिदमिष्टकरं च वारि॥

ॐ योगिनीदेवताभ्यो नमः, पाद्यं समर्पयामि।

अर्घ्यम्

सौजन्यसौख्यजननीजननीजनानां यासां कृपैव वसुधा वसुधारिणी मे।
ताः सर्वदैवगुरुगौरवधारिदेहा अर्घ्यं च गृह्णतमुदाऽऽशु गजाननाद्याः॥

ॐ योगिनीदेवताभ्यो नमः, अर्घ्यं समर्पयामि।

आचमनीयम्

कङ्कोलपत्रहरिचन्दन - पुष्पयुक्तमेलालवङ्गलवली - घनसारसारम्।
दत्तं सदैव हृदये करुणाशयेस्मिन्देव्यो भजन्तु शुभमाचमनीयमम्भः॥

ॐ योगिनीदेवताभ्यो नमः, आचमनीयजलं समर्पयामि।

पञ्चामृतस्नानम्

गङ्गाजलेन सहितेन पयःसिताज्यैर्दध्नाऽमलेन मधुना तुलसीदलैश्च।
पञ्चामृतेन वरवेशगजाननाद्याः स्नानं मुदा कुरुत योगरतावरेण्याः॥

ॐ योगिनीदेवताभ्यो नमः, पञ्चामृतस्नानं समर्पयामि।

शुद्धोदकम्

जलेऽमलेमञ्जुविचित्र पुष्पाण्यच्छानि चानीय निपातितानि।
स्नानं विधेयं हि गजाननाद्या आगत्य युष्माभिरिहाङ्गणे ते॥

ॐ योगिनीदेवताभ्यो नमः, शुद्धोदकजलं समर्पयामि।

वस्त्रम्

अनर्घरत्नैरतिशोभमानं शुभं प्रियं मङ्गलकारकं च।
मयार्पितं वस्त्रमिदं विचित्रं कृते भवेद् वै वरयोगिनीनाम्॥

ॐ योगिनीदेवताभ्यो नमः, वस्त्रं समर्पयामि।

उपवस्त्रम्

त्रिविधतापविनाशविचक्षणाः परमभक्तियुतेन निवेदितम्।
सुरनुता उपवस्त्रमिदं नवं सुरभितं परिगृह्णत मेऽधुना॥

ॐ योगिनीदेवताभ्यो नमः, उपवस्त्रं समर्पयामि।

गन्धम्

योगिन्य आशु वनजातसुगन्धराशिं सप्रेम गृह्णत सुशीतलमच्छशोभम्।
सन्तापविस्तृतिहरं परमं पवित्रं द्रागर्पितं मम मनोरथदा भवेयुः॥

ॐ योगिनीदेवताभ्यो नमः, गन्धं समर्पयामि।

अक्षतान्

योगिन्य एतात्र सुगन्धितांश्च भक्त्या मया मोदसमर्पितांश्च।
गृह्णन्तु देव्यो द्रुतमक्षतान्मे समग्रविघ्नान् विनिवारयन्तु॥

ॐ योगिनीदेवताभ्यो नमः, अक्षतं समर्पयामि।

पुष्पम्

बहुविधं परितो हि समाहृतं समुचितं मकरन्दसमन्वितम्।
विकसितं कुसुमं विनिवेदितं कुरुत मे सफलं नयनाञ्जलैः॥
ॐ योगिनीदेवताभ्यो नमः, पुष्पं समर्पयामि।

रक्तचूर्णम्

धूपादिकेनातिसुवासितानि शोणश्रियानन्दविवर्धितानि।
श्रीरक्तचूर्णानि मनोहराणि गजाननाद्या मनसाऽर्पयामि॥
ॐ योगिनीदेवताभ्यो नमः, रक्तचूर्णं समर्पयामि।

धूपम्

लवङ्गपाटीरकचूर्णवर्धितं नरासुराणामपि सौख्यदायकम्।
गजाननाद्याः सुरभिप्रसारकं गृह्णन्तु धूपं सुखदं सुदेव्यः॥
ॐ योगिनीदेवताभ्यो नमः, धूपमाघ्रापयामि समर्पयामि।

दीपम्

सद्वर्तिकां ज्ञानविवर्धिकामिमां निपात्यदीयं विनिवेदितं मया।
प्रज्वालितं ध्वान्तविनाशकं च गृह्णन्तु देव्यं सततं शिवाय॥
ॐ योगिनीदेवताभ्यो नमः, दीपं दर्शयामि। (हस्तप्रक्षाल्यं)

नैवेद्यम्

सिद्धान्नकर्पूरविराजितं द्राक्सौरभ्यसान्द्रेण विभूषितं च।
नैवेद्यमेतद्रुचिरं सुगन्धि स्वीकृत्य मामत्र कृतार्थयन्तु॥
ॐ योगिनीदेवताभ्यो नमः, नैवेद्यं समर्पयामि।
(हस्तप्रक्षालनार्थे मुखप्रक्षालनार्थे च जलं समर्पयामि।)

ताम्बूलम्

योगिन्य आशु गृहमेत्य शुभं मदीयं भक्त्यार्पितं परमगन्धयुतं सुरम्यम्।
एलालवङ्गबहुलं क्रमकादियुक्तं ताम्बूलमद्य मम गृह्णत मञ्जुहासाः॥
ॐ योगिनीदेवताभ्यो नमः मुखवासार्थं ताम्बूलं समर्पयामि।

दक्षिणाम्

देवासुरैर्नित्यमशेषकाले प्रगीयमानाः सततं सहासाः।
गृह्णन्तु सद्यः खलु दक्षिणां च गजाननाद्याः सुखदाभवन्तु॥

ॐ योगिनीदेवताभ्यो नमः, दक्षिणां समर्पयामि।

आर्तिक्यम्

नीराजना सौख्यमयी सदैव गाढान्धकारानपि दूरयन्ती।
अशेषपापैः परिपूरितस्य शुद्धिं करोति प्रियमानवस्य॥

ॐ योगिनीदेवताभ्यो नमः, आर्तिक्यं समर्पयामि।

प्रदक्षिणाम्

प्रदक्षिणाः सन्ति गजाननाद्याः पदे पदे दुःखविनाशिका अपि।
जन्मान्तरस्यापि विनाशकारिकाः पापस्य याश्चित्तविवर्धितस्य॥

ॐ योगिनीदेवताभ्यो नमः, प्रदक्षिणां समर्पयामि।

पुष्पाञ्जलिम्

गजाननाद्यारुचिरं मदीयं गृह्णन्तु पुष्पाञ्जलिमत्र देव्यः।
योगिन्य आशूद्भटशङ्कराश्च भवन्तु भूपालनतत्पराश्च॥

ॐ योगिनीदेवताभ्यो नमः, पुष्पाञ्जलिं समर्पयामि।

स्तुतिम्

जनामि नोऽर्चनविधिं परमं क्षमध्वं लोकार्तिपुञ्जमतुलं विनिपातयन्त्यः।
योगिन्य आशु मम मङ्गलमातनुध्वं कुर्वन्तु दूरमनिशं दुरितात्समस्तात्॥

ॐ योगिनीदेवताभ्यो नमः, स्तुतिं समर्पयामि।

इति सम्पूज्य 'अनया पूजया चतुःषष्टियोगिन्यः प्रीयन्ताम्।'

क्षेत्रपालस्थापनम्

वायव्यकोण में सफेद वस्त्र से ढकी हुई पीठ पर चारों ओर रेखाओं को लगाकर मध्य में पूर्वदिशा से पश्चिमदिशा, उत्तरदिशा से दक्षिण दिशा में दो-दो रेखाएं आचार्य बनावें, नवग्रह के तुल्य नौ कोष्ठकों का निर्माण करके पूर्वदिशा में छः षट्दल और उत्तरदिशा व ईशानकोण के मध्य के कोष्ठों में सप्तदल का निर्माण करें, तदुपरान्त यजमान अपनी पत्नी के साथ आसन पर बैठकर आचमन और प्राणायाम करके निम्न संकल्प करे—

सङ्कल्पः—देशकालौ स्मृत्वा, अस्मिन् सप्रासादधूमावतीप्रतिष्ठा-कर्मणि क्षेत्रपालस्थापनं करिष्ये।

संकल्प के पश्चात् आचार्य क्षेत्रपाल का स्थापन निम्न नाममन्त्रों का उच्चारण करते हुए यजमान से करावें-

ॐ इमौ ते पक्षावजरौ पतत्रिणौ याभ्यार्ठ० रक्षार्ठ०स्य पहर्ठ० स्यग्ने। ताभ्यां पतेम सुकृतामु लोकं यत्र ऋषयो जग्मुः प्रथमजाः पुराणाः॥ ॐ अजराय नमः। अजरमावाहयामि स्थापयामि॥ १॥

प्रथमा वार्ठ० सरथिना सुवर्णा देवौ पश्यन्तौ भुवनानि विश्वा। अपिप्रयं चोदना वां मिमाना होतारा ज्योतिः प्रदिशा दिशन्ता॥ ॐ व्यापकाय नमः। व्यापकमावाहयामि स्थापयामि॥ २॥

इन्द्रस्य वज्रो मरुतामनीकं मित्रस्य गर्भो वरुणस्य नाभिः। सेमां नो हव्यदातिं जुषाणो देव रथ प्रतिहव्या गृभाय॥ ॐ इन्द्रचौराय नमः। इन्द्रचौरमावाहयामि स्थापयामि॥ ३॥

एवेदिन्द्रं वृषणं वज्रबाहुं वसिष्ठासो अभ्यर्चन्त्यर्कैः। स नः स्तुतो वीरवद्धातु गोमद्यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः॥ ॐ इन्द्रमूर्तये नमः। इन्द्रमूर्तिमावाहयामि स्थापयामि॥ ४॥

उक्षा समुद्रो अरुणः सुपर्णः पूर्वस्य योनिं पितुराविवेश। मध्ये दिवो निहितः पृश्निरश्मा विचक्रमे रजसस्पात्यन्तौ॥ ॐ उक्ष्णे नमः। उक्षाणमावाहयामि स्थापयामि॥ ५॥

यद्देवा देवहेडनं देवासश्चकृमा वयम्। अग्निर्मा तस्मादेनसो विश्वान्मुञ्चत्वर्ठ०हसः॥ ॐ कूष्माण्डाय नमः। कूष्माण्डमावाहयामि स्थापयामि॥ ६॥

आग्नेयेषट्सुदलेषु

ॐ स न इन्द्राय यज्यवे वरुणाय मरुद्भ्यः। वरिवोवित्परिस्रव॥ ॐ वरुणाय नमः। वरुणमावाहयामि स्थापयामि॥ ७॥

बाहू मे बलमिन्द्रियर्ठ० हस्तौ मे कर्म वीर्यम्। आत्मा क्षत्रमुरो मम॥ ॐ वटुकाय नमः। वटुकमावाहयामि स्थापयामि॥ ८॥

मुञ्चन्तु मा शपथ्यादथो वरुण्यादुत। अथो यमस्य षड्वीशात्सर्वस्माद्देवकिल्बिषात्॥ ॐ विमुक्ताय नमः। विमुक्तमावाहयामि स्थापयामि॥ ९॥

कुर्वन्नेवेह कर्माणि जिजीविषेच्छतर्ठ० समाः। एवं त्वयि नान्यथेतोऽस्ति न कर्म लिप्यते नरे॥ ॐ लिप्तकाय नमः। लिप्तकमावाहयामि स्थापयामि॥ १०॥

सन्नः सिन्धुरवभृथायोद्यतः समुद्रोऽभ्यवह्रियमाणः सलिलः प्रप्लुतो ययोरोजसा स्कभिता रजोर्ठ०सि वीर्येभिर्वीरतमा शविष्ठा। या पत्येते अप्रतीता सहोभिर्विष्णू अगन्वरुणा पूर्वहूतौ॥ ॐ लीलालोकाय नमः। लीलालोकमावाहयामि स्थापयामि॥ ११॥

नमो गणेभ्यो गणपतिभ्यश्च वो नमो नमो व्रातेभ्यो व्रातपतिभ्यश्च वो नमो नमो गृत्सेभ्यो गृत्सपतिभ्यश्च वो नमो नमो विश्व-रूपेभ्यो विश्वरूपेभ्यश्च वो नमः॥ ॐ एकदंष्ट्राय नमः। एकादंष्ट्र-मावाहयामि स्थापयामि॥ १२॥

दक्षिणषट्के

ॐ अर्मेभ्यो हस्तिपं जवायाश्वपं पुष्ट्यै गोपालं वीर्यायाविपालं तेजसेऽजपालमिरायै कीनाशं कीलालाय सुराकारं भद्राय गृहपर्ठ०श्रेयसे

वित्तधमाध्यक्ष्यायानुक्षत्तारम्॥ ॐ ऐरावताय नमः। ऐरावतमावाहयामि स्थापयामि ॥ १३ ॥

या ओषधीः पूर्वा जाता देवभ्यस्त्रियुगं पुरा। मनैनु बभ्रूणा-महर्ठ०शतं धामानि सप्त च॥ ॐ ओषधीघ्नाय नमः। ओषधीघ्न-मावाहयामि स्थापयामि॥ १४॥

त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिं पतिवेदनम्। उर्वारुकमिव बन्धनादितो मुक्षीय मामुतः॥ ॐ बन्धनाय नमः। बन्धनमावाहयामि स्थापयामि॥ १५॥

देवसवितः प्रसुव यज्ञं प्रसुव यज्ञपतिं भगाय। दिव्यो गन्धर्वः केतपूः केतं नः पुनातु वाचस्पतिर्वाजं नः स्वदतु स्वाहा॥ ॐ दिव्यकरणाय नमः। दिव्यकरणमावाहयामि स्थापयामि॥ १६॥

सीसेन तन्त्रं मनसा मनीषिण ऊर्णासूत्रेण कवयो वयन्ति। अश्विना यज्ञर्ठ० सविता सरस्वतीन्द्रस्य रूपं वरुणो भिषजयन्॥ ॐ कम्बलाय नमः। कम्बलमावाहयामि स्थापयामि॥ १७॥

आशुः शिशानो वृषभो न भीमो घनाघनः क्षोभणश्चर्षणीनाम्। संक्रन्दनोऽनिमष एकवीरः शतर्ठ० सेना अजयत्साकमिन्द्रः॥ ॐ भीषणाय नमः। भीषणमावाहयामि स्थापयामि॥ १८॥

नैर्ऋत्यषट्के

ॐ इमर्ठ० साहस्त्रर्ठ० शतधारमुत्सं व्यच्यमानर्ठ० सरिरस्य मध्ये। घृतं दुहानामदितिं जनायाग्ने मा हिर्ठ०सीः परमे व्योमन्। गवयमारण्य-मनु ते दिशामि तेन चिन्वानस्तन्वो निषीद। गवयं ते शुगृच्छतु यं द्विष्मस्तं ते शुगृच्छतु॥ ॐ गवयाय नमः। गववमावाहयामि स्थापयामि॥ १९॥

कुम्भो वनिष्ठुर्जनिता शचीभिर्यस्मिन्नग्रे योन्यां गर्भो अन्तः। प्लाशिर्व्यक्तः शतधार उत्सो दुहे न कुम्भी स्वधां पितृभ्यः॥ ॐ घण्टाय नमः। घण्टामावाहयामि स्थापयामि॥ २०॥

आक्रन्दय बलमोजो न आधा निष्टनिहि दुरिताबाधमानः। अपप्रोथ दुन्दुभे दुच्छुना इत इन्द्रस्य मुष्टिरसि वीडयस्व॥ ॐ व्यालाय नमः। व्यालमावाहयामि स्थापयामि॥ २१॥

इन्द्रायाहि तूतुजान उप ब्रह्माणि हरिवः। सुते दधिष्व नश्चनः॥ ॐ अंशवे नमः। अंशुमावाहयामि स्थापयामि॥ २२॥

चन्द्रमा अप्स्वन्तरा सुपर्णो धावते दिवि। रयिं पिशङ्गं बहुलं पुरुस्पृहर्ठ० हरिरेति कनिक्रदत्॥ ॐ चन्द्रवारुणाय नमः। चन्द्रवारुण-मावाहयामि स्थापयामि ॥ २३॥

गणानां त्वा गणपतिर्ठ० हवामहे प्रियाणां त्वा प्रियपतिर्ठ० हवामहे निधीनां त्वा निधिपतिर्ठ० हवामहे वसो मम। आहमजानि गर्भधमा त्वमजासि गर्भधम्॥ ॐ घटाटोपाय नमः। घटाटोपमावाहयामि स्थापयामि॥ २४॥

पश्चिमेषट्सुदलेषु

ॐ उग्रं लोहितेन मित्रर्ठ० सौव्रत्येन रुद्रं दौर्व्रत्येनेन्द्रं प्रक्रीडेन मरुतो बलेन साध्यान्प्रमुदा। भवस्य कण्ठ्यर्ठ० रुद्रस्यान्तः पार्श्व्यं महादेवस्य यकृच्छर्वस्य वनिष्ठुः पशुपतेः पुरीतत्॥ ॐ जटिलाय नमः। जटिलमावाहयामि स्थापयामि॥ २५॥

पवित्रेण पुनीहि मा शुक्रेण देव दीद्यत्। अग्ने क्रत्वा क्रतूँ२नु॥ रनु॥ ॐ क्रतवे नमः। क्रतुमावाहयामि स्थापयामि॥ २६॥

आजिघ्र कलशं मह्या त्वा विशन्त्विन्दवः। पुनरूर्जा निवर्तस्व सा नः सहस्त्रं धुक्ष्वोरुधारा पयस्वती पुनर्माविशताद्रयिः॥ ॐ घण्टेश्वराय नमः। घण्टेश्वरमावाहयामि स्थापयामि॥ २७॥

वायो शुक्रो अयामि ते मध्वो अग्रं दिविष्टिषु। आयाहि सोमपीतये स्पार्हो देव नियुत्वता॥ ॐ विटकाय नमः। विटकमावाहयामि स्थापयामि॥ २८॥

दैव्या होतारा ऊर्ध्वमध्वरं नोऽग्नेर्जिह्वामभिगृणीतम्। कृणुतं नः स्विष्टिम्॥ ॐ मणिमानाय नमः। मणिमानमावाहयामि स्थापयामि॥ २९॥

त्रीणि त आहुर्दिवि बन्धनानि त्रीण्यप्सु त्रीण्यन्तःसमुद्रे। उतेव मे वरुणश्छन्त्स्यर्वन् यत्रा त आहुः परमं जनित्रम्॥ ॐ गणवन्धाय नमः। गणवन्धमावाहयामि स्थापयामि॥ ३०॥

वायव्यादिकोष्ठेषट्सुदलेषुक्रमेण

ॐ प्रतिश्रुत्काया अर्तनं घोषाय भषमन्ताय बहुवादिनमनन्ताय मूकठं० शब्दायाडम्बराघातं महसे वीणावादं क्रोशाय तूणवध्ममवरस्पराय शङ्खध्मं वनाय वनपमन्यतोऽरण्याय दावपम्॥ ॐ मुण्डाय नमः। मुण्डमावाहयामि स्थापयामि॥ ३१॥

शुद्धवालः सर्वशुद्धवालो मणिवालस्त आश्विनाः श्येतः श्येताक्षोऽरुणस्ते रुद्राय पशुपतये कर्णा यामा अवलिप्ता रौद्रा नभोरूपाः पार्जन्याः॥ ॐ बर्बूकराय नमः। बर्बूकरमावाहयामि स्थापयामि॥ ३२॥

वनस्पते वीड्वङ्गो हि भूया अस्मत्सखाप्रतरणः सुवीरः। गोभिः सन्नद्धो असिवीडय स्वास्थाता ते जयतु जेत्वानि॥ ॐ सुधापाय नमः। सुधापमावाहयामि स्थापयामि॥ ३३ ॥

सुपर्णां वस्ते मृगो अस्यादन्तो गोभिः संनद्धा पतति प्रसूता। यत्रा नरः सं च वि च द्रवन्ति तत्रास्मभ्यमिषवः शर्म यठं०सन्॥ ॐ वैनाय नमः। वैनमावाहयामि स्थापयामि॥ ३४॥

अग्ने अच्छा वदेह नः प्रति नः सुमना भव। प्र नो यच्छ सहस्त्रजित्त्वठं०हि धनदा असि स्वाहा॥ ॐ पवनाय नमः। पवनमावाहयामि स्थापयामि॥ ३५॥

भद्रं कर्णेभिःशृणुयाम देवा भद्रं पश्येमाक्षभिर्यजत्राः। स्थिरैरङ्गैस्तुष्टुवाठं० सस्तनुभिर्व्यशेमहि देव हितं यदायुः॥ ॐ ढुण्ढकरणाय नमः। ढुण्ढकरणमावाहयामि स्थापयामि॥ ३६॥

अपां फेनेन नमुचेः शिर इन्द्रोदवर्तयः। विश्वा यदजयः स्पृधः॥ ॐ स्थविराय नमः। स्थविरमावाहयामि स्थापयामि॥ ३७॥

वातं प्राणेनापानेन नासिके उपयाममधरेणौष्ठेन सदुत्तरेण प्रकाशेनान्तरमनूकाशेन बाह्यं निवेष्यं मूर्ध्ना स्तनयित्नुं निर्बाधेनाशनिं

मस्तिष्केण विद्युतं कनीनकाभ्यां कर्णाभ्यार्ठ० श्रोतर्ठ० श्रोत्राभ्यां कर्णौ तेदनीमधरकण्ठेनापः शुष्ककण्ठेन चित्तं मन्याभिरदितिर्ठ० शीर्ष्णा निर्ऋतिं निर्जल्पेन शीर्ष्णा संक्रोशैः प्राणान् रेष्माणर्ठ० स्तुपेन॥ ॐ दन्तुराय नमः। दन्तुरामावाहयामि स्थापयामि॥ ३८॥

उत्तरादिकोष्ठेसप्तसुदलेषु

ॐ इदर्ठ० हविः प्रजननं मे अस्तु दशवीरर्ठ० सर्वगणर्ठ० स्वस्तये। आत्मसनि प्रजासनि पशुसनि लोकसन्यभयसनि। अग्निः प्रजां बहुलां मे करोत्वन्नं पयो रेतो अस्मासु धत्त॥ ॐ धनदाय नमः। धनदमावाहयामि स्थापयामि॥ ३९॥

खड्गो वैश्वदेवः श्वा कृष्णः कर्णो गर्दभस्तरक्षुस्ते रक्षसामिन्द्राय सूकरः सिर्ठ०हो मारुतः कृकलासः पिप्पका शकुनिस्ते शरव्यायै विश्वेषां देवानां पृषतः॥ ॐ नागकर्णाय नमः। नागकर्णमावाहयामि स्थापयामि॥ ४०॥

मृगो न भीमः कुचरो गिरिष्ठाः परावत आजगन्था परस्याः। सृकर्ठ०सर्ठ०शाय पविमिन्द्र तिग्मं वि शत्रून् ताढि वि मृधो नुदस्व॥ ॐ महाबलाय नमः। महाबलमावाहयामि स्थापयामि॥ ४१॥

इन्दुर्दक्षः श्येन ऋतावा हिरण्यपक्षः शकुनो भुरण्युः। महान् सधस्थे ध्रुव आ निषत्तो नमस्ते अस्तु मा मा हिर्ठ०सीः॥ ॐ फेत्काराय नमः। फेत्कारमावाहयामि स्थापयामि॥ ४२॥

जीमूतस्येव भवति प्रतीकं यद्वर्मी याति समदामुपस्थे। अनाविद्धया तन्वा जय त्वर्ठ० स त्वा वर्मणो महिमा पिपर्तु॥ ॐ वीरकाय नमः। वीरकमावाहयामि स्थापयामि॥ ४३॥

ईशानादिकोष्ठेसप्तसुदलेषुक्रमेण

ॐ तीव्रान्घोषान्कृण्वते वृषपाणयोऽश्वा रथेभिः सह वाजयन्त। अवक्रामन्तः प्रपदैरमित्रान्क्षिणन्ति शत्रूं १॥ रनपव्ययन्तः॥ ॐ सिंहाय नमः। सिंहमावाहयामि स्थापयामि॥ ४४॥

अग्निं दूतं पुरो दधे हव्यवाहमुप ब्रुवे॥ देवाँ२॥ आसादयादिह॥ ॐ मृगाय नमः। मृगमावाहयामि स्थापयामि॥ ४५॥

अदित्यास्त्वा पृष्ठे सादयाम्यन्तरिक्षस्य धत्री विष्टम्भनीं दिशामधि-पत्नीं भुवनानाम्। ऊर्मिर्द्रप्सो अपामसि विश्वकर्मा त ऋषिरश्विनाध्वर्यू सादयतामिह त्वा॥ ॐ यक्षाय नमः। यक्षमावाहयामि स्थापयामि॥ ४६॥

द्यौस्ते पृथिव्यन्तरिक्षं वायुश्छिद्रं पृणातु ते। सूर्यस्ते नक्षत्रैः सह लोकं कृणोतु साधुया॥ ॐ मेघवाहनाय नमः। मेघवाहनमावाहयामि स्थापयामि॥ ४७॥

संबर्हिरङ्क्ताᳪ हविषा घृतेन समादित्यैर्वसुभिः संमरुद्भिः। समिन्द्रो विश्वदेवेभिरङ्क्ता दिव्यं नभो गच्छतु यत्स्वाहा॥ ॐ तीक्ष्णाय नमः। तीक्ष्णमावाहयामि स्थापयामि॥ ४८॥

पवमानः सो अद्य नः पवित्रेण विचर्षणिः। यः पोता स पुनातु मा॥ ॐ अमलाय नमः। अमलमावाहयामि स्थापयामि॥ ४९॥

अभ्यर्षत सुष्टुतिं गव्यमाजिमस्मासु भद्रा द्रविणानि धत्त। इमं यज्ञं नयत देवता नो घृतस्य धारा मधुमत्पवन्ते॥ ॐ शुक्राय नमः। शुक्रमावाहयामि स्थापयामि॥ ५०॥

ततः—ॐ मनो जूतिर्जुषतामाज्यस्य बृहस्पतिर्यज्ञमिमं तनोत्वरिष्टं यज्ञᳪ समिमं द धातु। विश्वेदेवास इह मादयन्तामों ३ँप्रतिष्ठ॥ इति अजरादि-क्षेत्रपालाः सुप्रतिष्ठिताः वरदाः भवन्तु। ततः षोडशोपचारैः पूजयेत्।

क्षेत्रपालपूजनम्

ध्यानम्

श्रीक्षेत्रपालान्सुरपुष्पमालान्सर्वान्तरायाशु विनाशकालान्।
दत्ताखिलाभीप्सितवर्गजालान्ध्यायेऽधुना चन्दनलिप्तभालान्॥

ॐ साङ्गेभ्यः सपरिवारेभ्यः सशक्तिकेभ्यः सवाहनेभ्यः सायुधेभ्यः क्षेत्रपालेभ्यो नमः, ध्यानं समर्पयामि।

आवाहनम्

समस्तप्रत्यूहसमुच्चयस्य विनाशने प्राप्तगुणाः सुभव्याः।
आवाहनं क्षेत्रसुपालका वः करोम्यहं भव्यकरा भवन्तु॥

ॐ सा० स० स० स० सा० क्षेत्रपालेभ्यो नमः, आवाहनं समर्पयामि।

आसनम्

चित्रप्रभाभासुरमच्छभक्त्यार्पितं मया साम्प्रतमासनं च।
श्रीक्षेत्रपालाः सुतरां भजन्तु भवन्तु मेऽभीष्टकराः सहाङ्गैः॥

ॐ सा० स० स० स० सा० क्षेत्रपालेभ्यो नमः, आसनं समर्पयामि।

पाद्यम्

विबुधा निगमप्रसिद्धाः प्रक्षालनाय पदपङ्कजयोरुदारम्।
स्वच्छं सुशीतलमिदं मयकाहृतं च गृह्णन्त्वशेषमिदमिष्टकरं च वारि॥

ॐ सा० स० स० स० सा० क्षेत्रपालेभ्यो नमः, पाद्यं समर्पयामि।

अर्घ्यम्

सौजन्यसौख्यजननी जननी जनानां येषां कृपैव वसुधा वसुधारिणी वै।
ते सर्वदेवगुरुगौरवधारिदेहा अर्घ्यं मुदा हि च सुरा मम धारयन्तु॥

ॐ सा० स० स० स० सा० क्षेत्रपालेभ्यो नमः, अर्घ्यं समर्पयामि।

आचमनीयम्

कङ्कोलपत्रहरिचन्दन - पुष्पयुक्तमेलालवङ्गलवलीघनसारसारम्।
दत्तं सदैव हृदये करुणाशयेऽस्मिन्देवा भजन्तु शुभमाचमनीयमम्भः॥

ॐ सा० स० स० स० सा० क्षेत्रपालेभ्यो नमः, आचमनीयं समर्पयामि।

पञ्चामृतस्नानम्

विमलगाङ्गजलेन युतं पयोघृतसितादधिसर्पिसमन्वितम्।
प्रियतरं भवतां परिगृह्णत यदि कृपाप्रभवो मयि सेवके॥
ॐ सा० स० स० स० सा० क्षेत्रपालेभ्यो नमः, पञ्चामृतस्नानं समर्पयामि।

शुद्धोदकस्नानम्

जले समादाय विचित्रपुष्पाण्यच्छानि चानीय निपातितानि।
स्नानं विधेयं विबुधाः समन्तादागत्य युष्माभिरिहाङ्गणे मे॥
ॐ सा० स० स० स० सा० क्षेत्रपालेभ्यो नमः, शुद्धोदकस्नानं समर्पयामि।

वस्त्रम्

अनर्घ्यरत्नैरतिभासितं शुभं सदा प्रियं मङ्गलकारकं वरम्।
स्वच्छं च वस्त्रं विनिवेदितं मया प्रमोददं वै भवतां कृते भवेत्॥
ॐ सा० स० स० स० सा० क्षेत्रपालेभ्यो नमः, वस्त्रं समर्पयामि।

यज्ञोपवीतम्

कौशेयसूत्रविहितं विमलां सुचारु वेदोक्तरीतिविहितं परिपावनञ्च।
क्षेत्राधिपाः सुमनसः सुनिवेदितं च यज्ञोपवीतमुररीक्रियतां सुदेवाः॥
ॐ सा० स० स० स० सा० क्षेत्रपालेभ्यो नमः, यज्ञोपवीतं समर्पयामि।

उपवस्त्रम्

विविधता पविनाशविचक्षणाः परमभक्तियुतेन निवेदितम्।
सुरनुता उपवस्त्रमिदं नवं सुरभितं परिगृह्णत मेऽधुना॥
ॐ सा० स० स० स० सा० क्षेत्रपालेभ्यो नमः, उपवस्त्रं समर्पयामि।

गन्धम्

क्षेत्राधिपा मलयजातसुगन्धराशिं सप्रेम गृह्णत सुशीतलमच्छशोभम्।
सन्तापसन्ततिहरं परमं पवित्रं द्रागर्पितं मम मनोरथपूरकाः स्युः॥
ॐ सा० स० स० स० सा० क्षेत्रपालेभ्यो नमः, गन्धं समर्पयामि।

अक्षतान्

विमलगाङ्गजलैः परिमार्जितं सुरभिकुङ्कुमरागसुरञ्जितम्।
सततमक्षतमादरचेतसा सकलसौम्यमयं शुभकारकम्॥
ॐ सा० स० स० स० सा० क्षेत्रपालेभ्यो नमः, अक्षतान् समर्पयामि।

पुष्पम्

बहुविधं परितो हि समाहृतं समुचितं मकरन्दसमन्वितम्।
विकसितं कुसुमं विनिवेदितं कुरुत मे सफलं नयनाञ्जलैः॥
ॐ सा० स० स० स० सा० क्षेत्रपालेभ्यो नमः, पुष्पं समर्पयामि।

धूपम्

लवङ्गपाटीवरचूर्णवर्द्धितं सर्वासुराणामपि सौख्यकारि।
लोकत्रये गन्धकरं प्रशस्तं क्षेत्राधिपा जिघ्रत धूपगन्धम्॥
ॐ सा० स० स० स० सा० क्षेत्रपालेभ्यो नमः, धूपमाघ्रापयामि समर्पयामि।

दीपम्

सद्वर्त्तिकां ज्ञानविवर्द्धिकां परां निर्वाण दीपं विनिवेदितं मुदा।
प्रज्वालितं ध्वान्तिविनाशकारकं गृह्णन्तु ज्ञानस्य विशालरूपम्॥
ॐ सा० स० स० स० सा० क्षेत्रपालेभ्यो नमः, दीपं दर्शयामि।

नैवेद्यम्

सिद्धान्नकर्पूरविराजितं पुरः सौरभ्यसान्द्रेण विवर्धितं तथा।
नैवेद्यमेतद्रुचिरं सुगन्धितं स्वीकृत्य मामत्र कृतार्थयन्तु॥
ॐ सा० स० स० स० सा० क्षेत्रपालेभ्यो नमः, नैवेद्यं समर्पयामि।
(हस्तप्रक्षालनार्थे, मुखप्रक्षालनार्थे च जलं सम०। पुनराचमनीयं जलं स०।)

ताम्बूलम्

श्रीक्षेत्रपालविबुधाः सदने मदीये भक्त्यार्पितं परमगन्धमयं मनोज्ञम्।
एलालवङ्गलसितं क्रमुकादिकान्तं ताम्बूलमद्य मम गृह्णत हे सुरेन्द्राः॥
ॐ सा० स० स० स० सा० क्षेत्रपालेभ्यो नमः, मुखवासार्थं ताम्बूलं समर्पयामि।

दक्षिणाम्

देवासुरैर्नित्यमशेषकाले प्रगीयमानाः प्रभवः पुराणाः।
गृह्णन्तु सद्यः खलु दक्षिणां मे ध्यायेन भक्ते लघु वर्तितव्यम्॥

ॐ सा० स० स० स० सा० क्षेत्रपालेभ्यो नमः, दक्षिणां समर्पयामि।

नीराजनम्

नीराजना सौख्यमयी सदैव गाढान्धकारादपि दूरकर्त्री।
अशेषपापैः परिपूरितस्य शुद्धिं करोति प्रियमानसत्य॥

ॐ सा० स० स० स० सा० क्षेत्रपालेभ्यो नमः, नीराजनं समर्पयामि।

प्रदक्षिणाम्

प्रदक्षिणाः सन्ति प्रदक्षिणा अपि पदे पदे दुःखविनाशिकास्तथा।
जन्मान्तरस्यापि विनाशकारिकाः पापस्य याश्चित्तविवर्धितस्य॥

ॐ सा० स० स० स० सा० क्षेत्रपालेभ्यो नमः, प्रदक्षिणां समर्पयामि।

पुष्पाञ्जलिम्

क्षेत्राधिपाविमलपुष्पवराञ्जलिं मे भक्त्यार्पितं सरसमच्छरसैःप्रपूर्णम्।
दीने विधाय करुणां मयि हेसुरेन्द्राः स्वीकृत्य दीनजनवत्सलतां किरन्तु॥

ॐ सा० स० स० स० सा० क्षेत्रपालेभ्यो नमः, पुष्पाञ्जलिं समर्पयामि।

स्तुतिम्

जानामि नोऽर्चनविधिं परमं क्षमध्वं लोकार्तिपुञ्जमतुलं हरतारमेव।
क्षेत्राधिपालविबुधाः सुखमाकिरन्तु कुर्वन्तु दूरमनिशं दुरितात्समस्तात्॥

ॐ सा० स० स० स० सा० क्षेत्रपालेभ्यो नमः, स्तुतिं समर्पयामि।

कुशकण्डिकाविधिः

अग्नेर्दक्षिणतो ब्रह्मासनम्। अग्नेरुत्तरतः प्रणीतासनद्वयम्। ब्रह्मासने ब्रह्मोपवेशनम्। यावत्कर्म समाप्यते तावत्त्व ब्रह्मा भव 'भवामि' इति। पठित्वा तत्रोपवेशनम्। 'भवामि' इति ब्रह्मणः प्रत्युक्तिः। ब्रह्मा वाग्यतश्च भवेत्। ततः प्रणीतापात्रं सव्यहस्ते धृत्वा दक्षिणहस्तगृहीतेनोदकपात्रेण तत्र जलं सम्पूर्य पश्चादास्तीर्णकुशैषु दक्षिणहस्तेन निधाय (कुशैराच्छाद्य तत्पात्रमालभ्य ब्रह्मणो मुखमवलोक्य ईक्षणमात्रेण ब्रह्मणाऽनुज्ञातः उत्तरत आस्तीर्णेषु कुशेषु निदध्यात्। ततो द्वादशानां परिस्तरण कुशानां चतुरो भागान् वामहस्ते कृत्वा एकैकभागेन आग्नेयादीशानान्तम्, ब्रह्मणोऽग्निपर्यन्तम्, नैर्ऋत्याद्वायव्यान्तं अग्नितः प्रणीतापर्यन्तम्। इतरथा वृत्तिः। तत उत्तरतः स्तीर्णकुशेषु द्विशः पात्राणि यथा सम्भवं न्युब्जानि उदक्संस्थानि प्राक्संस्थानि वा आसादयेत्। पवित्रे छेदन-कुशाः। प्रोक्षणीपात्रम्। आज्यस्थाली। चरुस्थाली। संमार्जनकुशाः

अग्निदेव के दक्षिणदिशा की ओर ब्रह्मा के लिए कुशासन रखे। अग्नि के उत्तर दिशा में 'प्रणीता पात्र' के लिये दो आसन रखे। ब्रह्मा के ही आसन पर ब्रह्मा को बैठा दे और कहे—हे ब्रह्मन्! जब तक कर्म की समाप्ति न हो तब तक आप ब्रह्म के पद पर आसीन हो। ब्रह्मा मैं होता हूँ—यो कह कर पूर्व स्थापित आसन पर बैठे, तदनन्तर ब्रह्मा मौन हो जाये, फिर प्रणीता पात्र को बायें हाथ में धारण कर दाहिने हाथ से ग्रहण किये हुए जलपात्र से उस प्रणीता पात्र में जल को भरकर पहले से बिछी हुई कुशाओं पर दाहिने हाथ से रखकर कुशों द्वारा आच्छादन कर उस पात्र को स्पर्श कर ब्रह्मदेव के मुख को देखकर ईक्षण मात्र से ब्रह्मा की आज्ञा लेकर उत्तर दिशा की तरफ बिछी कुशाओं पर रख दे, तदनन्तर बाहर परिस्तरण कुशाओं के चार भागों को बायें हाथ में रखे उसमें से एक-एक भाग से परिस्तरण अग्निकोण से ईशानादि में ही करें। तदनन्तर-पश्चिम दिशा से उत्तर दिशा की ओर बिछी कुशाओं पर दो-दो पात्रों को यथासम्भव न्युब्ज-उदक् संस्थ या प्राक्संस्थ आसादन करे। दो पवित्र छेदन करने के लिए कुशा, प्रोक्षणीपात्र, आज्यस्थाली, चरुस्थाली, संमार्जनकुशा

पञ्च। उपयमनकुशाः सप्त। समिधस्तिस्त्रः। स्त्रुवः। आज्यम्। तण्डुला। पूर्णपात्रम्। उपकल्पनीयानिद्रव्याणि निधाय तत्तद्ग्रहवस्त्राणि। अधि-देवताद्यर्थं श्वेतानि। तत्तद्ग्रहवर्णाः। तत्तद्ग्रहपुष्पाणि। तत्तद्ग्रहधूपाः तत्तदग्रहनैवेद्यानि। फलानि। दक्षिणाः वितानम्। अर्कादिसमिधः। सयवतिलाः पूर्णाहुत्यर्थं नारिकेलवस्त्रादि। ततः पवित्रकरणम्। आसादितकुशपत्रद्वयं स्थौल्येन समं मध्यशल्यरहितं वामहस्ते कृत्वा अग्रतः प्रादेशमात्रं परिमाय मूले तयोरुपरि कुशत्रयमुदग्रं निधाय तत्कुशत्रयं तयोर्मूलभागेन प्रादक्षिण्येन परिवेष्ट्य तयोः प्रादेश-परिमणामग्रभागं वामस्ते कृत्वा अवशिष्टं मूलभागं कुशत्रयं च दक्षिणहस्ते धृत्वा दक्षिणहस्तेन त्रोटयेत् परित्यजेच्च। शिष्टं पत्रद्वयं पवित्रम्। तस्मिन्पत्रद्वयेऽविश्लेषाय ग्रथिं कुर्यात्। ततः प्रागग्रं प्रोक्षणीपात्रं प्रणीतासन्निधौ निधाय तत्र सपवित्रेण पात्रान्तरेण हस्तेन वा

पाँच, उपयनकुशा सात, तीनसमीधा, स्रुव-घृत-चावल पूर्णपात्र आदि रखें, सूर्यादि ग्रहों के अनेक वर्ण के वस्त्र, अधिदेवता, देवता आदि के लिये सफेद वस्त्र, सूर्यादि ग्रहों के लिए अनेक प्रकार के चन्दन, तत्-तत् वर्ण के ग्रहों की धूप, ग्रहों के नैवेद्य-फल-दक्षिणा वितान सूर्यादि की समिधा यव और तिल, पूर्णाहुत्यर्थ नारिकेल और वस्त्र का आसादन करे। तदन्तर पवित्र बनाये जैसे-स्थापित मध्य (बीच कुशा से रहित) शल्यरहित दो कुशपत्र-द्वय को आगे से बराबर नापकर बायें हाथ में कर कुशा के अग्रभाग से प्रादेश-मात्र नापकर उसके मूल पर उन दोनों कुशा के ऊपर तीन कुशाओं को उद्ग्र रखकर उन कुशाओं को उस दो कुशा के मूल भाग से प्रादक्षिण्यक्रम से वेष्टन कर उन दो कुशपत्रों को प्रादेशमात्र परिमाण के अग्रभाग को बायें हाथ में कर बचे हुए मूल भाग को और तीन कुशाओं को दाहिने हाथ से तोड़ दें फिर उसका त्याग कर दें, शिष्ट पत्रद्वय ही पवित्र है। उस पत्रद्वय में अविश्लेषण के लिए गाँठ दे। तदनन्तर प्रागग्र प्रोक्षणीपात्र को प्रणीता के समीप रख दे

प्रणीतोदकं त्रिरासिच्य प्रोक्षणीपात्रं सव्ये कृत्वा दक्षिणेन वामहस्तधृतमेव कर्णसमुत्थाय नीचैः कृत्वा प्रणीतोदकेनं पवित्रानोतेनोत्तानहस्तेन प्रोक्षणीः प्रोक्षयेत्। ततः प्रोक्षणीजलेन आज्यस्थालीं प्रोक्षणम्। चरुस्थालीं प्रोक्षणम्। समार्जनकुशानां प्रोक्षणम्। उपयमनकुशानां प्रोक्षणम्। समिधां प्रोक्षणम्। स्रुवस्य प्रोक्षणम्। आज्यस्य प्रोक्षणम्। पूर्णपात्रस्य प्रोक्षणम्। ततस्ते पवित्रे प्रोक्षणीपात्रे संस्थाप्य प्रोक्षणीपात्रमग्निप्रणतयोर्मध्ये निदध्यात्। ततोऽग्नेः पश्चादाज्यस्थालीं निधाय तत्राज्यं प्रक्षिपेत्। एवं चरुस्थालीमग्नेः पश्चिमतो निधाय तत्र सपवित्रायां त्रिः प्रक्षालितान् तण्डुलान् प्रक्षिप्य प्रणीतोदकमासिच्योपयुक्तं जलं तत्र निनीय ब्रह्मदक्षिणत आज्यं आचार्य उत्तरतश्चरुमदग्धमस्त्रावितमण्डमन्तरूष्मपक्वं सुशृतं पचेत्। (केवलाज्ये तु उत्तराश्रितामाज्य स्थालीमग्नावारोपयेत्।) ततोऽग्नेर्ज्वलदुल्मुकमादाय ईशानादिप्रदक्षिणमीशान पर्यन्तमग्निमाज्यचर्वोः परितं भ्रामयित्वोल्मुकमग्नौ

वहाँ से सपवित्र पात्रान्तर हाथ से प्रणीता पात्र से जल को तीन बार आसेचन कर प्रोक्षणी पात्र को बायें हाथ में कर दाहिने से बायें हाथ से धारण किये हुए ही कान की तरफ उठाकर नीचे की तरफ कर प्रणीतापात्र के जल से पवित्र द्वारा ग्रहण किये हुए, उत्तानहाथ से प्रोक्षणीपात्र का प्रोक्षण करें। प्रोक्षणी जल से आज्य-स्थाली का प्रोक्षण करे। चरुस्थाली का प्रोक्षण करे। संमार्जन कुशाओं का प्रोक्षण करे। उपयमन कुशाओं का, समिधा का, स्रुवका आज्यका और पूर्णपात्रका प्रोक्षण करे। तदन्तर उन दोनों पवित्रों को प्रोक्षणी पात्र में स्थापन कर उस प्रोक्षणी पात्र को अग्नि और प्रणीतापात्र के मध्य में रख दे। फिर अग्नि के पीछे आज्यस्थाली रख उसमें आज्य का प्रक्षेप करे। इसी प्रकार अग्नि के पश्चिम में चरुस्थाली रख सपवित्र वाली उसमें तीन बार धोये हुए चावलों को छोड़ प्रणीता पात्र के जल से आसेचन कर उपयुक्त जल को उसमें छोड़कर ब्रह्मा के दक्षिण तरफ घी को आचार्य उत्तरदिशा से अदग्ध अश्रावित पक्वचरु को पका दे। तदन्तर अग्निकुंड या स्थण्डिल से जलते हुए, उल्मुक को लेकर ईशान कोण आदि से प्रदक्षिण कर ईशानकोण पर्यन्त

प्रक्षिप्य अप्रदक्षिणं हस्तमीशानकोणपर्यन्तं पर्यावर्तयेत्। अर्द्धश्रिते चरौ स्रुवं गृहीत्वाऽधोबिलं सकृत् प्रतप्य संमार्जनकुशानामग्रैरन्तरतः उपरि मूलादारभ्याग्रपर्यन्तं प्राञ्चं संमृज्य कुशमूलैर्बहिरधः प्रदेशे अग्रादारभ्य प्रत्यञ्चं समृज्य संमार्जन कुशानग्नौ प्रक्षिप्य प्रणीतोदकेन स्रुवमभ्युक्ष्य पुनःस्रुवं प्रयप्य दक्षिणस्यां दिशि तं तस्थापयेत्। तत् शृतं चरुं स्रुवेण गृहीतेनाज्येनाभिघार्य आज्यस्थालीं चरोः पूर्वेणानीयोत्तरत उद्वास्याग्रेः पश्चिमतः स्थापयेत्। ततश्चरुमादाय उत्तरत उद्वास्य आज्यस्य पूर्वेणानीय आज्यस्योत्तरतः स्थापयेत्। ततो दक्षिणहस्तस्याङ्गुष्ठा-नामिकाभ्यां पवित्रयोर्मूलं सङ्गृह्य वामहस्तस्याङ्गुष्ठानामिकाभ्यां पवित्रयोर्मूलं संङ्गृह्य वामहस्तस्याङ्गुष्ठा नामिकाभ्यां तयोरग्रं संङ्गृह्य ऊर्ध्वाग्रेऽनम्रीकृत्य धारयन्नेवाज्ये प्रक्षिप्याज्यस्यात्पवनं कुर्यादुच्छालयेत्। तत आज्यमवेक्ष्य सत्यपद्रव्ये तन्निरस्येत्।

अग्नि स्थित आज्य और चरु के चारों ओर घुमकर उस उल्मुक को अग्नि में छोड़ दे। फिर अप्रदक्षिण क्रम से अपने हाथ को ईशान कोण पर्यन्त घुमा दे। चरु के आधे पक जाने पर स्रुव को हाथ में ग्रहण कर उस स्रुव के बिल को नीचे की ओर कर एक बार अग्नि में तपाकर समार्जन कुशाओं के अग्रभाग से भीतर की ओर से मूल भाग से आरम्भ कर अग्रभाग पर्यन्त पूर्व की तरफ संमार्जन कर कुश मूलों से बाहर और नीचे के हिस्से में अग्रभाग से आरम्भ कर शुद्ध कर सर्माजन कुशाओं को अग्नि में फेककर प्रणीत जल से स्रुव का अभ्युक्षण तथा स्रुव का प्रतपन कर दक्षिण दिशा की ओर उस स्रुव को रख दे। तदनन्तर पके हुए चरु में स्रुव के द्वारा घी को छोड़ आज्यस्थाली को चरु के पूर्व से लेकर उत्तरदिशा की ओर रख फिर अग्नि के पश्चिम दिशा की तरफ स्थापन करे। फिर चरु को लेकर उत्तर दिशा से उतारे हुए घृत के पूर्व से ले आकर घृत के उत्तर की ओर स्थापना करे। तदनन्तर-दाहिने हाथ के अंगूठे और अनामिका से उस दोनों कुशाओं (पवित्र) के अग्रभाग को पकड़कर ऊपर के अग्रभाग को नम्र बनाकर धारण करते हुए ही घृत में प्रक्षेप कर आज्य को उत्पवन करे। फिर घृत को देख कर उसमें जो अपद्रव्य हो उसे निकाल दे।

ततः पूर्ववत् पवित्रे गृहीत्वाप्रोक्षणीनामपामुत्पवनं कुर्यात्। ततो वामहस्ते उपयमनमादाय दक्षिणेन प्रादेशमात्रीः पालाशीस्तिस्त्रः समिधो घृताक्ता द्व्यङ्गुलादूर्ध्वं मध्यमानामिकांगुष्ठैर्मूलभागे धृतास्तर्जन्यग्रवत्स्थूलास्तन्त्रेणाग्नौतूष्णीं प्रक्षिप्य सपवित्रेण प्रोक्षण्युदकेन चुलुकगृहीतेन ईशानादि—प्रदक्षिणमीशानकोणपर्यन्तं पर्युक्ष्य अप्रदक्षिणमीशानकोणपर्यन्तं हस्तं पर्यावर्तयेत्। ततः पवित्रे प्रणीतासु निधाय दक्षिणं जान्वाच्य ब्रह्मणा कुशैरन्वारब्ध उपयमनकुशसहितं प्रसारिताङ्गुलि हस्तं हृदि निधाय दक्षिणहस्तेन मूले चतुरङ्गुल त्यक्त्वा शङ्खसन्निभमुद्रया स्त्रुवं गृहीत्वा समिद्धतमेऽग्नौ वायव्य कोणादारभ्याग्निकोणपर्यन्तं प्राञ्चं वा सन्तघृतधारया मनसा प्रजापतिं ध्यायन् स्त्रुवेण तुष्णीं सशेषं मौनी जुहुयात्। नात्र स्वाहाकारः। इदं प्रजापतये न मम इति यजमानेन त्यागः कर्तव्यः। होमत्यागानन्तरं स्त्रुवावशिष्टस्याज्यस्य सर्वत्र प्रोक्षणीपात्रे प्रक्षेपः कार्यः।

तदनन्तर फिर पवित्रों को ग्रहण कर प्रोक्षणी स्थित जल का उत्पवन करे फिर बायें हाँथ में उपयमन कुशा को लेकर दाहिने हाथ में प्रादेश प्रमाण की तीन समिधाओं को घी में भिगोकर दो अंगुल ऊपर मध्यमा अनामिका अँगूठे के मूलभाग में धारण की हुई, तर्जनी की तरह मोटी समिधा को एक साथ चुपचाप अग्नि में प्रक्षेप कर सपवित्र वाली प्रोक्षणी पात्र के जल से चुल्लु द्वारा ग्रहण कर ईशान कोण से प्रक्षेप कर फिर ईशान पर्यन्त प्रदक्षिण क्रम से पर्युक्षण कर अप्रदक्षिण क्रम से ईशान कोण पर्यन्त अपने दाहिने हाथ को केवल घुमा दे। तदनन्तर उन पवित्र को प्रणीता पात्र में रख अपने दाहिने जानु को मोड़कर ब्रह्मा से कुशों द्वार अन्वारब्ध (स्पर्श) कर उपयमन कुशा के सहित अपने हाथ की अँगुलियों को फैलाकर उस हाथ को हृदय में लगा दाहिने हाथ से स्त्रुव के मूल से चार अंगुल छोड़कर शंखमुद्रा से स्त्रुव को ग्रहण कर प्रदीप्त अग्नि में वायव्यकोण से प्रारम्भ कर अग्निकोण पर्यन्त या पूर्व दिशा की ओर निरन्तर घृत की धारा द्वारा प्रजापति का मन से ध्यान कर स्त्रुव से चुपचाप शेष के सहित हवन करे, इसमें स्वाहाकार नहीं है। 'इदं प्रजापतये न मम' इस वाक्य का यजमान त्याग करे। होम त्याग के बाद स्त्रुव स्थित आज्य का सर्वत प्रोक्षणी पात्र में प्रक्षेप करे।

ततो निर्ऋतिकोणादारभ्येशानकोणपर्यन्तं प्राञ्चं वा—ॐ इन्द्राय स्वाहा इति जुहुयात्। 'इदमिन्द्राय न मम' इति त्यजेत्। तत उत्तरपूर्वार्द्धे-ॐ अग्नये स्वाहा इदमग्नये न मम इति हुत्वा दक्षिण-पूर्वार्द्धे-ॐ सोमाय स्वाहा-इदं सोमाय न मम इति जुहुयात्।

संकल्प—अस्मिन् सप्रासादधूमावतीप्रतिष्ठाकर्मणि इमानि उपकल्पितानि हवनीयद्रव्याणि या या यक्ष्यमाणदेवतास्ताभ्यस्ताभ्यो मया परित्यक्तानि न मम। यथा दैवतानि सन्तु॥

वराहुतिः

आचार्यः—ॐ गणानां त्वा गणपतिर्ठ० हवामहे प्रियाणां त्वा प्रियपतिर्ठ० हवामहे निधीनां त्वा निधीपतिर्ठ० हवामहे वसो मम। आहमजानि गर्भधमात्वमजासि गर्भधम् स्वाहा॥

ॐ अम्बेऽअम्बिकेऽम्बालिके न मा नयति कश्चन। ससस्त्यश्वकः सुभद्रिकां काम्पीलवासिनीम् स्वाहा॥

तदनन्तर-निर्ऋतिकोण से आरम्भ कर ईशान कोण पर्यन्त या पूर्व की तरफ 'इन्द्राय स्वाहा' इससे हवन करे। इद्रमिन्द्राय न मम, इससे त्याग करे फिर उत्तर पूर्वार्ध में 'अग्नये स्वाहा' से हवन करें। दक्षिण पूर्वार्ध में 'सोमाय स्वाहा' से हवन करे।

संकल्प—पुनः यजमान दाहिने हाथ में जल लेकर 'अस्मिन् सप्रासाद-धूमावतीप्रतिष्ठाकर्मणि' से 'परित्यक्तानि न मम' तक का उच्चारण करके जल को भूमि में छोड़ दें, फिर 'यथा दैवतानि सन्तु' इस वाक्य का भी उच्चारण करे।

वराहुति—आचार्य 'ॐ गणानां त्वा०' से गणेश और 'ॐ अम्बे-ऽअम्बिके०' से अम्बा के लिए एक-एक घृताहुति हवनकुण्ड में यजमान से प्रदान करावें।

ग्रहादिहवनम्

आचार्य 'ॐ आ कृष्णेन०' से 'ॐ स्योना पृथिवि०' पर्यन्त एक-एक मन्त्र का उच्चारण करते हुए यजमान से हवनकुण्ड में हवन करावें—

ॐ आ कृष्णेन रजसा वर्तमानो निवेशयन्नमृतं मर्त्यं च। हिरण्ययेन सविता रथेना देवो याति भुवनानि पश्यन् स्वाहा॥ १॥

इमं देवाऽअसपत्नर्ठ० सुवद्ध्वं महते क्षत्राय महते ज्यैष्ठ्याय महते जानराज्यायेन्द्रस्येन्द्रियाय। इममपुष्य पुत्रममुष्यै पुत्रमस्यै विशऽएष वोऽमी राजा सोमोऽस्माकं ब्राह्मणानार्ठ० राजा स्वाहा॥ २॥

अग्निर्मूर्द्धा दिवः ककुत्पतिः पृथिव्या अयम्। अपार्ठ० रेतार्ठ०सि जिन्वति स्वाहा॥ ३॥

उद्बुध्यस्वाग्ने प्रतिजागृहि त्वमिष्टापूर्तेसर्ठ० सृजेथामयं च। अस्मिन्त्सधस्थेऽअध्युत्तरस्मिन् विश्वेदेवा कर्ताश्च सीदत स्वाहा॥ ४॥

बृहस्पते अति यदर्यो अर्हाद्युमद्विभातिक्रतुमज्जनेषु। यद्दीद-यच्छवस ऽऋतप्रजात तदस्मासु द्रविणं धेहि चित्रम् स्वाहा॥ ५॥

अन्नात्परिस्रुतो रसं ब्रह्मणा व्यपिबत्क्षत्रं पयः सोमं प्रजापतिः। ऋतेन सत्त्यमिन्द्रियं विपानर्ठ० शुक्रमन्धस ऽइन्द्रस्येन्द्रियमिदं पयोऽमृतं मधु स्वाहा॥ ६॥

शं नो देवीरभिष्ट्य आपो भवन्तु पीतये शंयोरभिस्रवन्तु नः स्वाहा॥ ७॥

कयानश्चित्रऽआभुवदूती सदावृधः सखा। कया शचिष्ठया वृता स्वाहा॥ ८॥

केतुं कृण्वन्नकेतवे पेशो मर्या अपेशसे समुषद्भिरजायथाः स्वाहा॥ ९॥

त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्द्धनम्। उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय मा ऽमृतात् स्वाहा॥ १०॥

श्रीश्च ते लक्ष्मीश्च पत्न्यावहोरात्रे पार्श्वे नक्षत्राणि रूपमश्विनौ व्यात्तम्। इष्णन्निषाणामुं म ऽइषाण सर्वलोकं म इषाण स्वाहा॥ ११॥

यदक्रन्दः प्रथमं जायमान ऽद्यन्त्समुद्रादुत वा पुरीषात्। श्ये नस्य पक्षा हरिणस्य बाहू उपस्तुयं महि जातं ते ऽअर्वन् स्वाहा॥ १२॥

विष्णोर राटमसि विष्णोः श्नप्त्रे स्थो विष्णोः स्यूरसि विष्णोर्ध्रुवोऽसि वैष्णवमसि विष्णवे त्वा स्वाहा॥ १३॥

आ ब्रह्मन्ब्राह्मणो ब्रह्मवर्चसी जायतामा राष्ट्रे राजन्यः शूर इषव्योऽतिव्याधी महारथो जायतां दोग्ध्री धेनुर्वोढानड्वानाशुः सप्तिः पुरन्धिर्योषा जिष्णु रथेष्ठाः सभेयो युवास्य यजमानस्य वीरो जायतां निकामे निकामे नः पर्जन्यो वर्षतु फलवत्यो न ओषधयः पच्यन्तां योगक्षेमो नः कल्पताम् स्वाहा॥ १४॥

सजोषा इन्द्र सगणो मरुद्भिः सोमं पिब वृत्रहा शूर विद्वान्। जहि शत्रूंर्ठ०२॥ रप मृधो नुदस्वाथाभयं कृणुहि विश्वतो नः स्वाहा॥ १५॥

यमाय त्वाङ्गिरस्वते पितृमते स्वाहा। स्वाहा घर्माय स्वाहा घर्मः पित्रे स्वाहा॥ १६॥

कार्षिरसि समुद्रस्य त्वाक्षित्या उन्नयामि। समापो अद्भिरग्मत समोषधीभिरोषधीः स्वाहा॥ १७॥

चित्रावसो स्वस्ति ते पारमशीय स्वाहा॥ १८॥

अग्निं दूतं पुरो दधे हव्यवाहमुप ब्रुवे। देवाँ२॥ आसादयादिह स्वाहा॥ १९॥

आपो हि ष्ठा मयोभुवस्ता न ऊर्जे दधातन। महेरणाय चक्षसे स्वाहा॥ २०॥

स्योना पृथिवी नो भवानृक्षरा निवेशनी। यच्छा नः शर्म सप्रथाः स्वाहा॥ २१॥

तद्विष्णोः परमं पदर्ठ० सदा पश्यन्ति सूरयः। दिवीव चक्षुराततम् स्वाहा॥ २२॥

इन्द्र आसां नेता बृहस्पतिर्दक्षिणा यज्ञः पुर एतु सोमः। देवसेना-नामभिभञ्जतीनां जयन्तीनां मरुतो यन्त्वग्रम् स्वाहा॥ २३॥

अदित्यै रास्नासीन्द्राण्या उष्णीषः। पूषासि घर्माय दीष्व स्वाहा॥ २४॥

प्रजापते न त्वदेतान्यन्यो विश्वा रूपाणि परि ता बभूव। यत्कामास्ते जुहुमस्तन्नो अस्त्वयममुष्य पितासावस्य पिता वयर्ठ० स्याम पतयो रयीणाम् स्वाहा॥ २५॥

नमोऽस्तु सर्पेभ्यो ये के च पृथिवी मनु। ये अन्तरिक्षे ये दिवि तेभ्यः सर्पेभ्यो नमः स्वाहा॥ २६॥

ब्रह्म जज्ञानं प्रथमं पुरस्ताद्वि सीमतः सुरुचो वेन आवः। स बुध्न्या उपमा अस्य विष्ठाः सतश्च योनिमसतश्च विवः स्वाहा॥ २७॥

गणानां त्वा गणपतिर्ठ० हवामहे प्रियाणां त्वा प्रियपतिर्ठ० हवामहे निधीनां त्वा निधिपतिर्ठ० हवामहे वसो मम। आहमजानि गर्भधमा त्वमजासि गर्भधम् स्वाहा॥ २८॥

अम्बे अम्बिकेऽम्बालिके न मा नयति कश्चन। ससस्त्यश्वकः सुभद्रिकां काम्पीलवासिनीम् स्वाहा॥ २९॥

वायो ये ते सहस्त्रिणो रथासस्तेभिरागहि। नियुत्वान् सोमपीतये स्वाहा॥ ३०॥

घृतं घृतपावनः पिबत वसां वसापावानः पिबतान्तरिक्षस्य हविरसि स्वाहा। दिशः प्रदिश आदिशो विदिश उद्दिशो दिग्भ्यः स्वाहा॥ ३१॥

या वां कशा मधुमत्यश्विना सूनृतावती। तया यज्ञं मिमिक्षतम् स्वाहा॥ ३२॥

वास्तोष्पते प्रतिजानीह्यस्मान्स्वावेशो ऽअनमीवा भवो नः। यत्वेमहे प्रति तन्नो जुषस्व शन्नो भव द्विपदे शं चतुष्पदे स्वाहा॥ ३३॥

नहि स्पशमविदन्नन्यमस्माद्वैश्वानरात्पुरएतारमग्नेः। एमेनमवृधन्न-मृता अमर्त्यं वैश्वानर क्षैत्रजित्याय देवाः स्वाहा॥ ३४॥

त्रातारमिन्द्रमवितारमिन्द्रर्ठ० हवे हवे सुहवर्ठ० शूरमिन्द्रम्। ह्वयामि शक्रं पुरुहूतमिन्द्रर्ठ० स्वस्ति नो मघवा धात्विन्द्रः स्वाहा॥ ३५॥

त्वं नो अग्ने तव देव पायुभिर्मघोनो रक्ष तन्वश्च वन्द्य। त्राता तोकस्य तनये गवामस्य निमेषर्ठ० रक्षमाणस्तव व्रते स्वाहा॥ ३६॥

यमाय त्वाङ्गिरस्वते पितृमते स्वाहा। स्वाहा घर्माय स्वाहा घर्मः पित्रे स्वाहा॥ ३७॥

असुन्वन्तमयजमानमिच्छ स्तेनस्येत्यामन्विहि तस्करस्य। अन्यमस्मदिच्छ सा त इत्या नमो देवि निर्ऋते तुभ्यमस्तु स्वाहा॥ ३८॥

तत्त्वा यामि ब्रह्मणा वन्दमानस्तदाशास्ते यजमानो हविर्भिः। अहेडमानो वरुणेह बोध्युरुशर्ठ०स मा न आयुः प्रमोषीः स्वाहा॥ ३९॥

आ नो नियुद्भिः शतिनीभिरध्वर्ठ० सहस्त्रिणीभिरुपयाहि यज्ञम्। वायो अस्मिन्सवने मादयस्व यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः स्वाहा॥ ४०॥

वयर्ठ० सोम व्रते तव मनस्तनूषु बिभ्रत। प्रजावन्तः सचेमाहि स्वाहा॥ ४१॥

तमीशानं जगतस्तस्थुषस्पतिं धियं जिन्वमवसे हूमहे वयम्। पूषा नो यथा वेदसामसद्वृधे रक्षिता पायुरदब्धः स्वस्तये स्वाहा॥ ४२॥

अस्मे रुद्रा मेहना पर्वतासो वृत्रहत्ये भरहूतौ सजोषाः। यः शर्ठ०सते स्तुवते धायि पज्र इन्द्रज्येष्ठा अस्माँ२॥ अवन्तु देवाः स्वाहा॥ ४३॥

स्योना पृथिवि नो भवानृक्षरा निवेशनि। यच्छा नः शर्म स प्रथाः स्वाहा॥ ४४॥

अथवा

केवलं नामाऽनुक्रमेण ग्रहादिहवनम्

ॐ सूर्याय स्वाहा, सोमाय स्वाहा, भौमाय स्वाहा, बुधाय स्वाहा, बृहस्पतये स्वाहा, शुक्राय स्वाहा, शनैश्चराय स्वाहा, राहवे स्वाहा, केतवे स्वाहा, ईश्वराय स्वाहा, उमायै स्वाहा, स्कन्दाय स्वाहा, विष्णवे

स्वाहा, ब्रह्मणे स्वाहा, इन्द्राय स्वाहा, यमाय स्वाहा, कालाय स्वाहा, चित्रगुप्ताय स्वाहा, अग्नये स्वाहा, अद्भ्यो स्वाहा, पृथिव्यै स्वाहा, विष्णवे स्वाहा, इन्द्राय स्वाहा, इन्द्राण्यै स्वाहा, प्रजापतये स्वाहा, सर्पेभ्यो स्वाहा, ब्रह्मणे स्वाहा, गणपतये स्वाहा, दुर्गायै स्वाहा, वायवे स्वाहा, आकाशाय स्वाहा, अश्विनौ स्वाहा, वास्तोष्पतये स्वाहा, क्षेत्राधिपतये स्वाहा, इन्द्राय स्वाहा, अग्नये स्वाहा, यमाय स्वाहा, निर्ऋतये स्वाहा, वरुणाय स्वाहा, वायवे स्वाहा, सोमाय स्वाहा, ईशानाय स्वाहा, ब्रह्मणे स्वाहा, अनन्ताय स्वाहा।

आचार्य गणपति-गौरी-वरुण गणेश के साथ षोडशमातृका, वसोर्धारा का, वास्तुपीठदेवता, सर्वतोभद्रदेवता, चतुःषष्टियोगिनी, क्षेत्रपालादि देवताओं के लिए यजमान से एक-एक आहुति घृत के द्वारा प्रदान करावें। पुनः तिल और घृत से १०, ११८ अथवा ८ आहुतियाँ कुण्ड में यजमान से प्रदान करावें।

तद्यथा—ॐ गणपतये स्वाहा। ॐ अम्बिकायै स्वाहा। ॐ वरुणाय स्वाहा। ॐ गणपतये स्वाहा। ॐ गौर्यै स्वाहा। ॐ पद्मायै स्वाहा। ॐ शच्यै स्वाहा। ॐ मेधायै स्वाहा। ॐ सावित्र्यै स्वाहा। ॐ विजयायै स्वाहा। ॐ जयायै स्वाहा। ॐ देवसेनायै स्वाहा। ॐ स्वधायै स्वाहा। ॐ स्वाहायै स्वाहा। ॐ मातृभ्यः स्वाहा। ॐ लोकमातृभ्यः स्वाहा। ॐ धृत्यै स्वाहा। ॐ पुष्ट्यै स्वाहा। ॐ तुष्ट्यै स्वाहा। ॐ आत्मनः कुलदेवतायै स्वाहा। ॐ श्रियै स्वाहा। ॐ लक्ष्म्यै स्वाहा। ॐ धृत्यै स्वाहा। ॐ मेधायै स्वाहा। ॐ स्वाहायै स्वाहा। ॐ प्रज्ञायै स्वाहा। ॐ सरस्वत्यै स्वाहा।

केवलं नामाऽनुक्रमेण वास्तुमण्डलहोमः

आचार्य शिख्यादि देवताओं के निम्न नाममन्त्रों का उच्चारण करते हुए कुण्ड में यजमान से होम करावें—

ॐ शिखिने स्वाहा। ॐ पर्जन्याय स्वाहा। ॐ जयन्ताय स्वाहा। ॐ कुलिशायुधाय स्वाहा। ॐ सूर्याय स्वाहा। ॐ सत्याय स्वाहा।

ॐ भृशाय स्वाहा। ॐ आकाशाय स्वाहा। ॐ वायवे स्वाहा। ॐ पूष्णे स्वाहा। ॐ वितथाय स्वाहा। ॐ गृहक्षताय स्वाहा। ॐ यमाय स्वाहा। ॐ गन्धर्वाय स्वाहा। ॐ भृङ्गराजाय स्वाहा। ॐ मृगाय स्वाहा। ॐ पितृभ्यः स्वाहा। ॐ दौवारिकाय स्वाहा। ॐ सुग्रीवाय स्वाहा। ॐ पुष्पदन्ताय स्वाहा। ॐ वरुणाय स्वाहा। ॐ असुराय स्वाहा। ॐ शेषाय स्वाहा। ॐ पापाय स्वाहा। ॐ रोगाय स्वाहा। ॐ अहये स्वाहा। ॐ मुख्याय स्वाहा। ॐ भल्लाटाय स्वाहा। ॐ सोमाय स्वाहा। ॐ सर्प्पेभ्यः स्वाहा। ॐ अदित्यै स्वाहा। ॐ दित्यै स्वाहा। ॐ अद्भ्यः स्वाहा। ॐ सावित्राय स्वाहा। ॐ जयाय स्वाहा। ॐ रुद्राय स्वाहा। ॐ अर्यम्णे स्वाहा। ॐ सवित्रे स्वाहा। ॐ विवस्वते स्वाहा। ॐ विबुधाधिपाय स्वाहा। ॐ मित्राय स्वाहा। ॐ राजयक्ष्मणे स्वाहा। ॐ पृथ्वीधराय स्वाहा। ॐ आपवत्साय स्वाहा। ॐ ब्रह्मणे स्वाहा। ॐ चरक्यै स्वाहा। ॐ विदार्यै स्वाहा। ॐ पूतनायै स्वाहा। ॐ पापराक्षस्यै स्वाहा। ॐ स्कन्दाय स्वाहा। ॐ अर्यम्णे स्वाहा। ॐ जृम्भकाय स्वाहा। ॐ पिलिपिच्छाय स्वाहा। ॐ इन्द्राय स्वाहा। ॐ अग्नये स्वाहा। ॐ यमाय स्वाहा। ॐ निर्ऋतये स्वाहा। ॐ वरुणाय स्वाहा। ॐ वायवे स्वाहा। ॐ कुबेराय स्वाहा। ॐ ईशानाय स्वाहा। ॐ ब्रह्मणे स्वाहा। ॐ अनन्ताय स्वाहा।

आचार्य निम्न पाँच मन्त्रों का क्रम से उच्चारण करते हुए बिल्वादि पत्रों से कुण्ड में एक सौ आठ बार, एक-एक हवन करनेवाले ब्राह्मण से हवन करावें। यहाँ भी विभाग नहीं है। इस प्रकार एक सौ आठ आहुति कुण्ड में प्रदान करें—

ॐ वास्तोष्पते प्रति जानीह्यस्मान्त्स्वावेशो अनमीवो भवा नः। यत्त्वेमहे प्रति तन्नो जुषस्व शन्नो भव द्विपदे शं चतुष्पदे स्वाहा॥ १॥ ॐ वास्तोष्पते प्रतरणो न एधि गयस्फानो गोभिरश्वेभिरिन्दो। अजरासस्ते सख्ये स्याम पितेव पुत्रान्प्रति तन्नो जुषस्व स्वाहा॥ २॥ ॐ वास्तोष्पते शग्मया संसदा ते सक्षीमहि रण्वया गातुमत्या। पाहि क्षेम उत योगे वरं नो

यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः स्वाहा॥ ३॥ ॐ अमीवहा वास्तोष्पते विश्वा रूपाण्याविशन्। सखासुशेव एधि नः स्वाहा॥ ४॥ ॐ वास्तोष्पते ध्रुवा स्थूणांऽसत्रं सोम्यानाम्। द्रप्सो भेत्ता पुरां शश्वतीनामिन्द्रो मुनीनां सखा स्वाहा॥ ५॥

अघोरहोमः

आचार्य निम्न मन्त्र का उच्चारण करके सभी कुण्डों में एक सौ आठ, एक सौ आठ, आहुति हवन करनेवाले ब्राह्मण से प्रदान करावें। यहाँ भी विभाग नहीं है। अतः एक सौ आठ आहुति कुण्ड में प्रदान करें—

ॐ अघोरेभ्योऽथ घोरेभ्यो घोरघोरतरेभ्यः। सर्व्वेभ्यः सर्वशर्व्वेभ्यो नमस्ते ऽअस्तु रुद्ररूपेभ्यः स्वाहा॥

केवलं नामाऽनुक्रमेण सर्वतोभद्रदेवताहोमः

१. ॐ ब्रह्मणे स्वाहा। २. ॐ सोमाय स्वाहा। ३. ॐ ईशानाय स्वाहा। ४. ॐ इन्द्राय स्वाहा। ५. ॐ अग्नये स्वाहा। ६. ॐ यमाय स्वाहा। ७. ॐ निर्ऋतये स्वाहा। ८. ॐ वरुणाय स्वाहा। ९. ॐ वायवे स्वाहा। १०. ॐ अष्टवसुभ्यो स्वाहा। ११. ॐ एकादशरुद्रेभ्यः स्वाहा। १२. ॐ द्वादशादित्येभ्यः स्वाहा। १३. ॐ अश्विभ्यां स्वाहा। १४. ॐ सपैतृकविश्वेभ्यो देवेभ्यः स्वाहा। १५. ॐ सप्तयक्षेभ्यः स्वाहा। १६. ॐ नागेभ्यः स्वाहा। १७. ॐ गन्धर्वाप्सरोभ्यः स्वाहा। १८. ॐ स्कन्दाय स्वाहा। १९. ॐ नन्दीश्वराय स्वाहा। २०. ॐ शूलाय स्वाहा। २१. ॐ महाकालाय स्वाहा। २२. ॐ दक्षादिभ्यः स्वाहा। २३. ॐ दुर्गायै स्वाहा। २४. ॐ विष्णवे स्वाहा। २५. स्वधायै स्वाहा। २६. ॐ मृत्युरोगेभ्य स्वाहा। २७. ॐ गणपतये स्वाहा। २८. ॐ अद्‌भ्य स्वाहा। २९. ॐ मरुद्‌भ्यः स्वाहा। ३०. ॐ पृथिव्यै स्वाहा। ३१. ॐ गङ्गादिनदीभ्यः स्वाहा। ३२. ॐ सप्तसागरेभ्यः स्वाहा। ३३. ॐ मेरवे

स्वाहा। ३४. ॐ गदायै स्वाहा। ३५. ॐ त्रिशूलाय स्वाहा। ३६. ॐ व्रजाय स्वाहा। ३७. ॐ शक्तये स्वाहा। ३८. ॐ दण्डा स्वाहा। ३९. ॐ खड्गाय स्वाहा। ४०. ॐ पाशाय स्वाहा। ४१. ॐ अङ्कुशाय स्वाहा। ४२. ॐ गौतमाय स्वाहा। ४३. ॐ भरद्वाजाय स्वाहा। ४४. ॐ विश्वामित्राय स्वाहा। ४५. ॐ कश्यपाय स्वाहा। ४६. ॐ जमदग्नये स्वाहा। ४७. ॐ वसिष्ठाय स्वाहा। ४८. ॐ अत्रये स्वाहा। ४९. ॐ अरुन्धत्यै स्वाहा। ५०. ॐ ऐन्द्र्यै स्वाहा। ५१. ॐ कौमार्यै स्वाहा। ५२. ॐ ब्राह्म्यै स्वाहा। ५३. ॐ वाराह्यै स्वाहा। ५४. ॐ चामुण्डायै स्वाहा। ५५. ॐ वैष्णव्यै स्वाहा। ५६. ॐ माहेश्वर्यै स्वाहा। ५७. ॐ वैनायक्यै स्वाहा।

केवलं नामाऽनुक्रमेण योगिनीहोमः

ॐ गजाननायै स्वाहा, ॐ सिंहमुख्यै स्वाहा, ॐ गृध्रास्यायै स्वाहा, ॐ काकतुण्डिकायै स्वाहा, ॐ उष्ट्रग्रीवायै स्वाहा, ॐ हयग्रीवायै स्वाहा, ॐ वाराह्यै स्वाहा, ॐ शरभाननायै स्वाहा, ॐ उलूकिकायै स्वाहा, ॐ शिवारावायै स्वाहा, ॐ मयूरायै स्वाहा, ॐ विकटाननायै स्वाहा, ॐ अष्टवक्त्रायै स्वाहा, ॐ कोटराक्ष्यै स्वाहा, ॐ कुब्जायै स्वाहा, ॐ विकटलोचनायै स्वाहा, ॐ शुष्कोदर्यै स्वाहा, ॐ ललजिह्वायै स्वाहा, ॐ श्वदष्ट्रायै स्वाहा, ॐ वानराननायै स्वाहा, ॐ ऋक्षाभ्यै स्वाहा, ॐ केकराक्ष्यै स्वाहा, ॐ बृहत्तुण्डायै स्वाहा, ॐ सुराप्रियायै स्वाहा, ॐ कपालहस्तायै स्वाहा, ॐ रक्ताक्ष्यै स्वाहा, ॐ शुक्यै स्वाहा, ॐ श्येन्यै स्वाहा, ॐ कपोतिकायै स्वाहा, ॐ पाशहस्तायै स्वाहा, ॐ दण्डहस्तायै स्वाहा, ॐ प्रचण्डायै स्वाहा, ॐ चण्डविक्रमायै स्वाहा, ॐ शिशुघ्न्यै स्वाहा, ॐ पापहन्त्र्यै स्वाहा, ॐ काल्यै स्वाहा, ॐ रुधिरपायिन्यै स्वाहा, ॐ वसाधयायै स्वाहा, ॐ गर्भभक्षायै स्वाहा, ॐ शवहस्तायै स्वाहा, ॐ आन्त्रमालिन्यै स्वाहा, ॐ

स्थूलकेश्यै स्वाहा, ॐ बृहत्कुक्ष्यै स्वाहा, ॐ सर्पास्यायै स्वाहा, ॐ प्रेतवाहिन्यै स्वाहा, ॐ दन्दशूकरायै स्वाहा, ॐ क्रौञ्च्यै स्वाहा, ॐ मृगशीर्षायै स्वाहा, ॐ वृषाननायै स्वाहा, ॐ व्यात्तास्यायै स्वाहा, ॐ धूम्रनिश्वासायै स्वाहा, ॐ व्योमैकचरणोर्ध्वदृशे स्वाहा, ॐ तापिन्यै स्वाहा, ॐ शोषिणीदृष्ट्यै स्वाहा, ॐ कोटर्यै स्वाहा, ॐ स्थूल-नासिकायै स्वाहा, ॐ विद्युत्प्रभायै स्वाहा, ॐ बलाकास्यायै स्वाहा, ॐ मार्जायै स्वाहा, ॐ कटपूतनायै स्वाहा, ॐ अट्टाट्टहासायै स्वाहा, ॐ कामाक्ष्यै स्वाहा, ॐ मृगाक्ष्यै स्वाहा, ॐ मृगलोचनायै स्वाहा।

केवलं नामाऽनुक्रमेण क्षेत्रपालहोमः

ॐ अजराय स्वाहा, ॐ व्यापकाय स्वाहा, ॐ इन्द्रचौराय स्वाहा, ॐ इन्द्रमूर्तये स्वाहा, ॐ उक्ष्णे स्वाहा, ॐ कूष्माण्डाय स्वाहा, ॐ वरुणाय स्वाहा, ॐ वटुकाय स्वाहा, ॐ विमुक्ताय स्वाहा, ॐ लिप्तकाय स्वाहा, ॐ नीललोकाय स्वाहा, ॐ एकदंष्ट्राय स्वाहा, ॐ ऐरावताय स्वाहा, ॐ ओषधीघ्नाय स्वाहा, ॐ बन्धनाय स्वाहा, ॐ दिव्यकरणाय स्वाहा, ॐ कम्बलाय स्वाहा, ॐ भीषणाय स्वाहा, ॐ गवयाय स्वाहा, ॐ घंटाय स्वाहा, ॐ व्यालाय स्वाहा, ॐ अंशवे स्वाहा, ॐ चन्द्रवारुणाय स्वाहा, ॐ घटाटोपाय स्वाहा, ॐ जटिलाय स्वाहा, ॐ क्रतवे स्वाहा, ॐ घण्टेश्वराय स्वाहा, ॐ विकटाय स्वाहा, ॐ मणिमाणाय स्वाहा, ॐ गणबन्धाय स्वाहा, ॐ मुण्डाय स्वाहा, ॐ बर्बूकराय स्वाहा, ॐ सुधापाय स्वाहा, ॐ वैनाय स्वाहा, ॐ पवनाय स्वाहा, ॐ ढुण्ढकरणाय स्वाहा, ॐ स्थविराय स्वाहा, ॐ दन्तुराय स्वाहा, ॐ धनदाय स्वाहा, ॐ नागकर्णाय स्वाहा, ॐ महाबलाय स्वाहा, ॐ फेत्काराय स्वाहा, ॐ वीरकाय स्वाहा, ॐ सिंहाय स्वाहा, ॐ मृगाय स्वाहा, ॐ यक्षाय स्वाहा, ॐ मेघवाहनाय स्वाहा, ॐ तीक्ष्णाय स्वाहा, ॐ अमराय स्वाहा, ॐ शुक्राय स्वाहा।

प्रधानाहुतिः

आचार्य धूमावतीदेवी की प्रतिष्ठा में निम्न वैदिक मन्त्र का उच्चारण करते हुए एक सौ आठ बार हवन कुण्ड में आहुति यजमान से प्रदान करावें—

ॐ धूम्रा बभ्रुनीकाशा पितृणार्ठ० सोमवतां बभ्रवो धूम्रनीकाशाः पितृणां बर्हिषदां कृष्णा बभ्रुनीकाशाः पितृणामग्निष्वात्तानां कृष्णाः पृषन्तस्त्रैयम्बकाः स्वाहा॥ (शु०य०सं० २४/१८)

धूमावत्यष्टोत्तरशतनामावल्या हवनम्

आचार्य धूमावती के निम्न नामों का क्रमानुसार उच्चारण करते हुए यजमान से प्रत्येक नाममन्त्र के द्वारा कुण्ड में हवन करावें—

१. ॐ धूमावत्यै स्वाहा।
२. ॐ धूम्रवर्णायै स्वाहा।
३. ॐ धूम्रपानपरायणायै स्वाहा।
४. ॐ धूम्राक्षमथिन्यै स्वाहा।
५. ॐ धन्यायै स्वाहा।
६. ॐ धन्यस्थाननिवासिन्यै स्वाहा।
७. ॐ अघोराचारसन्तुष्टायै स्वाहा।
८. ॐ अघोराचारमण्डितायै स्वाहा।
९. ॐ अघोरमन्त्रसम्प्रीतायै स्वाहा।
१०. ॐ अघोरमन्त्रपूजितायै स्वाहा।
११. ॐ अट्टाट्टहासनिरतायै स्वाहा।
१२. ॐ मलिनाम्बरधारिण्यै स्वाहा।
१३. ॐ वृद्धायै स्वाहा।
१४. ॐ विरूपायै स्वाहा।
१५. ॐ विधवायै स्वाहा।
१६. ॐ विद्यायै स्वाहा।
१७. ॐ विरलद्विजायै स्वाहा।
१८. ॐ प्रवृद्धघोणायै स्वाहा।
१९. ॐ कुमुख्यै स्वाहा।
२०. ॐ कुटिलायै स्वाहा।
२१. ॐ कुटिलेक्षणायै स्वाहा।
२२. ॐ कराल्यै स्वाहा।
२३. ॐ करालास्यायै स्वाहा।
२४. ॐ कङ्काल्यै स्वाहा।
२५. ॐ शूर्पधारिण्यै स्वाहा।
२६. ॐ काकध्वजरथारूढायै स्वाहा।
२७. ॐ केवलायै स्वाहा।
२८. ॐ कठिनायै स्वाहा।
२९. ॐ कुह्वै स्वाहा।
३०. ॐ क्षुत्पिपासार्दितायै स्वाहा।
३१. ॐ नित्यायै स्वाहा।
३२. ॐ ललज्जिह्वायै स्वाहा।
३३. ॐ दिगम्बर्यै स्वाहा।
३४. ॐ दिर्घोदर्यै स्वाहा।
३५. ॐ दिर्घरवायै स्वाहा।
३६. ॐ दिर्घाङ्ग्यै स्वाहा।
३७. ॐ दीर्घमस्तकायै स्वाहा।
३८. ॐ विमुक्तकुन्तलायै स्वाहा।
३९. ॐ कीर्त्यायै स्वाहा।
४०. ॐ कैलासस्थानवासिन्यै स्वाहा।
४१. ॐ क्रूरायै स्वाहा।
४२. ॐ कालस्वरूपायै स्वाहा।

४३. ॐ कालचक्रप्रवर्तिन्यै स्वाहा।
४४. ॐ विवर्णायै स्वाहा।
४५. ॐ चञ्चलायै स्वाहा।
४६. ॐ दुष्टायै स्वाहा।
४७. ॐ दुष्टविध्वंसकारिण्यै स्वाहा।
४८. ॐ चण्ड्यै स्वाहा।
४९. ॐ चण्डस्वरूपायै स्वाहा।
५०. ॐ चामुण्डायै स्वाहा।
५१. ॐ चण्डनिःस्वनायै स्वाहा।
५२. ॐ चण्डवेगायै स्वाहा।
५३. ॐ चण्डगत्यै स्वाहा।
५४. ॐ चण्डविनाशिन्यै स्वाहा।
५५. ॐ मुण्डविनाशिन्यै स्वाहा।
५६. ॐ चाण्डालिन्यै स्वाहा।
५७. ॐ चित्ररेखायै स्वाहा।
५८. ॐ चित्राङ्ग्यै स्वाहा।
५९. ॐ चित्ररूपिण्यै स्वाहा।
६०. ॐ कृष्णायै स्वाहा।
६१. ॐ कपर्दिन्यै स्वाहा।
६२. ॐ कुल्लायै स्वाहा।
६३. ॐ कृष्णारूपायै स्वाहा।
६४. ॐ क्रियावत्यै स्वाहा।
६५. ॐ कुम्भस्तन्यै स्वाहा।
६६. ॐ महोन्मत्तायै स्वाहा।
६७. ॐ मदिरापानविह्वलायै स्वाहा।
६८. ॐ चतुर्भुजायै स्वाहा।
६९. ॐ ललज्जिह्वायै स्वाहा।
७०. ॐ शत्रुसंहारकारिण्यै स्वाहा।
७१. ॐ शवारूढायै स्वाहा।
७२. ॐ शवगतायै स्वाहा।
७३. ॐ श्मशानस्थानवासिन्यै स्वाहा।
७४. ॐ दुराराध्यायै स्वाहा।
७५. ॐ दुराचारायै स्वाहा।
७६. ॐ दुर्जनप्रीतिदायिन्यै स्वाहा।
७७. ॐ निर्मांसायै स्वाहा।
७८. ॐ निराकारायै स्वाहा।
७९. ॐ धूमहस्तायै स्वाहा।
८०. ॐ वरान्वितायै स्वाहा।
८१. ॐ कलहायै स्वाहा।
८२. ॐ कलिप्रीतायै स्वाहा।
८३. ॐ कलिकल्मषनाशिन्यै स्वाहा।
८४. ॐ महाकालस्वरूपायै स्वाहा।
८५. ॐ महाकालप्रपूजितायै स्वाहा।
८६. ॐ महादेवप्रियायै स्वाहा।
८७. ॐ मेधायै स्वाहा।
८८. ॐ महासङ्कटनाशिन्यै स्वाहा।
८९. ॐ भक्तप्रियायै स्वाहा।
९०. ॐ भक्तगत्यै स्वाहा।
९१. ॐ भक्तशत्रुविनाशिन्यै स्वाहा।
९२. ॐ भैरव्यै स्वाहा।
९३. ॐ भुवनायै स्वाहा।
९४. ॐ भीमायै स्वाहा।
९५. ॐ भारत्यै स्वाहा।
९६. ॐ भुवनात्मिकायै स्वाहा।
९७. ॐ भेरुण्डायै स्वाहा।
९८. ॐ भीमनयनायै स्वाहा।
९९. ॐ त्रिनेत्रायै स्वाहा।
१००. ॐ बहुरूपिण्यै स्वाहा।
१०१. ॐ त्रिलोकेश्यै स्वाहा।
१०२. ॐ त्रिकालज्ञायै स्वाहा।
१०३. ॐ त्रिस्वरूपायै स्वाहा।
१०४. ॐ त्रयीतनवे स्वाहा।
१०५. ॐ त्रिमूर्त्यै स्वाहा।
१०६. ॐ तन्व्यै स्वाहा।
१०७. ॐ त्रिशक्त्यै स्वाहा।
१०८. ॐ त्रिशूलिन्यै स्वाहा।

यजमान अपनी धर्मपत्नी, आचार्य और ब्राह्मणों के साथ वाद्यघोष से युक्त होकर शिल्पशाला में जाकर धूमावती देवी की मूर्ति के सम्मुख प्राणायामादि करके यह संकल्प करें—**धूमावतीप्रतिमानिर्माणे प्राणिदोष-निरासार्थं घृतेन तिलैर्वा होमं करिष्ये॥**

संकल्प के पश्चात् कलशस्थापनविधि कलश स्थापित कर 'ॐ मनोजूति०' इस मन्त्र द्वारा प्रतिष्ठा करके निम्न श्लोकों द्वारा तीर्थों का आवाहन करें—

काशी कुशस्थली मायाऽवन्त्योध्या मधोः पुरी।
शालिग्रामः सगोकर्णः नर्मदा च सरस्वती॥ १॥
गङ्गायाः सरितः सर्वाः समुद्राश्च सरांसि च।
वृषारूढा सरोजाक्षी पद्महस्ता शशिप्रभा॥ २॥
आगच्छन्तु सरिज्ज्येष्ठा गङ्गापापप्रणाशिनी।
नीलोत्पलदलश्यामा पद्महस्ताम्बुजेक्षणा॥ ३॥
आयातु यमुना देवी कूर्मयानस्थिता सदा।
प्राची सरस्वती पुण्या पयोष्णी गौतमी तथा॥ ४॥
उर्मिला चन्द्रभागा च सरयू गण्डकी तथा।
एता नद्याश्च तीर्थानि गुह्यक्षेत्राणि सर्वशः।
तानि सर्वाणि कुम्भेऽस्मिन् विशन्तु ब्रह्मशासनात्॥ ५॥

इति तीर्थान्यावाह्य सम्पूज्य कुम्भस्य चतुर्दिक्षु विदिक्षु च—ॐ इन्द्राय नमः। ॐ अग्नये नमः। ॐ यमाय नमः। ॐ निर्ऋतये नमः। ॐ वरुणाय नमः। ॐ कुबेराय नमः। ॐ ईशानाय नमः। इत्यष्ट-लोकपालान् गन्धादिभिः सम्पूज्य प्रतिमादिषु न्यूनातिरिक्तपाषाण-दोषोपशमनार्थं प्रतिमायोग्यं स्थण्डिलं कृत्वा पञ्चभूसंस्कारपूर्वक-मग्निस्थापनपूर्वककुशकण्डिकादिकं समाप्य धूमावतीम[1]न्त्रेण प्रत्येकं

१. ॐ धूम्रा बभ्रुनीकाशा पितृणाठं० सोमवतां बभ्रवो धूम्रनीकाशाः पितृणां बर्हिषदां कृष्णा बभ्रुनीकाशाः पितृणामग्निष्वात्तानां कृष्णाः पृषन्तस्त्रैयम्बकाः॥

शतसंख्यया हुत्वा पूर्णपात्रविमोकान्ते कर्मेश्वरार्पणं कृत्वा भूयसीं दद्यात्। शिल्पिनेऽपि रत्नादिकं च दद्यात्।

जलाधिवास:

यजमान अपनी पत्नी के साथ कारुशाला में जाकर कुशासन के आसन पर बैठकर आचमन और प्राणायाम करे। उस समय आचार्य सहित ब्राह्मण शान्तिपाठ का उच्चारण कर यजमान से इस संकल्प को करावें—**देशकालौ सङ्कीर्त्य—अमुकगोत्रोऽमुकशर्माहम् (वर्माऽहम्, गुप्तोऽहम्, दासोऽहम्) धूमावतीदेवतायोग्यताधिष्ठानसिद्ध्यर्थं जलाधिवासाख्यं कर्म करिष्ये॥**

यजमान के बायें हाथ में आचार्य पीली सरसों देकर निम्न श्लोक का उच्चारण करते हुए चारों दिशाओं में उससे छिड़कवाकर भूतादिकों को हटावें—

यदत्र संस्थितं भूतं स्थानमाश्रित्य सर्वदा।
स्थानं त्यक्त्वा तु तत्सर्वं यत्रस्थं तत्र गच्छतु॥ १॥
अपसर्पन्तु ते भूता ये भूता भूमिसंस्थिताः।
ये भूता विघ्नकर्तारस्ते नश्यन्तु शिवाज्ञया॥ २॥
अपक्रामन्तु भूतानि पिशाचाः सर्वतो दिशम्।
सर्वेषामविरोधेन प्रतिष्ठेयं समारभे॥ ३॥
भूतप्रेतपिशाचाद्या अपक्रामन्तु राक्षसाः।
स्थानादस्माद् व्रजन्त्वन्यत् स्वीकरोमि भुवम् त्विमाम्॥ ४॥
भूतानि राक्षसा वाऽपि यत्र तिष्ठन्ति केचन।
ते सर्वेऽप्यपगच्छन्तु प्रतिष्ठां च करोम्यहम्॥ ५॥

पूर्वाभिमुख या उत्तराभिमुख धूमावतीदेवी का स्थापन कर सप्त-मृत्तिकादि से स्नान करवाकर ही उनका व्रणभंग करें। फिर अग्न्युत्तारण करवाकर पुरुषसूक्त के सोलह मन्त्रों का उच्चारण करते हुए यजमान से प्रार्थना करावें। तदुपरान्त जलद्रोणी में धूमावतीदेवी का अधिवासन करें, यह अधिवासन स्नानमण्डप में भी हो सकता है।

धान्याधिवासः

यजमान अपनी पत्नी के साथ आसन पर बैठकर देशकाल का स्मरण करते हुए यह संकल्प करे—'**मम गृहे प्रचुरधान्यपुत्रपौत्रादिसुख-सम्पत्त्यादिनिवासार्थं धान्याधिवासं करिष्ये**'। इस संकल्प का उच्चारण करके पवित्र भूमि में धान्य को गिराकर धूमावतीदेवी की मूर्ति को शयन कराकर, मूर्ति के ऊपर प्रचुर धान्य परिवार के सभी लोग प्रक्षेप करें। इसके उपरान्त ही षोडशोपचार से अथवा पञ्चोपचार से पूजा करें।

घृताधिवासः

घृतं गव्यं तेजो बलिमतिकरं सत्त्वगुणदं
पवित्रं चायुष्यं त्रिदशदयितं मङ्गलकरम्।
घृतानां सर्वेषां सुखदमधिवासो श्रुतिमतं
सदा देवा हृष्ट्या विपुलवरदा याज्ञिकजने॥ १॥
रसेषु सर्वेषु प्रधानरूपं गुणं सुराणां मधुरं मखाङ्गम्।
घृताधिवासात्सुरतामुपेता भवन्ति देवा बहुमोदमानाः॥ २॥

भावार्थ—घृत अत्यन्त तेज और बल को देनेवाला है, सत्त्वगुण देनेवाला है, पवित्र है और आयुष्य है, देवताओं को प्रिय है। मंगल करनेवाला है। सभी घी का अधिवास सुखद होता है और श्रुति से समर्पित है। (इस अधिवास से) देवता लोग प्रसन्न हो करके यज्ञ करनेवाले को सदैव वर देते हैं॥ १॥ घी सभी रसों में प्रधान है, देवताओं के लिए गुण (प्रसन्नता) देनेवाला है, मधुर है और यज्ञ का अंग है। घृताधिवास से सुख प्राप्त करके देवता लोग अत्यन्त प्रसन्न होते हैं॥ २॥

गन्धाधिवासः

अगरतगरपूर्णमष्टगन्धं कपूरं बहुकुसुमसुगन्धी अत्तरं केशरं च।
नृपतिधनिकलोकैः सप्ततन्तौ सुयोज्यं सकलसुरहितार्थं धर्मकामार्थमूलम्॥

भावार्थ—सभी देवताओं की प्रसन्नता के लिए तथा धर्म, काम एवं अर्थ को देनेवाला अगर-तगर से पूर्ण अष्टगंध, कपूर, अनेक प्रकार के सुगन्धित पुष्प, अतर और केसर को राजा एवं धनिकों के द्वारा सात डोरे में ठीक से गूंथना चाहिए।

पुष्पाधिवासः

चम्पाचमेलीकमलानि जूहीगुलाबवेलारजनीसुगन्धा
दुर्वाशमीजीवकगन्धराजं गेन्दाधतूरागुलमेहदीं च।
अगस्तिकां सूर्यमुखीकनेरं शेफालिकानामकपारिजातं
तिलस्य पुष्पं हरशृङ्गहारं मालारपत्रं तुलसीमदारम्॥

भावार्थ—चम्पा, चमेली, कमल, जूही, गुलाब, बेला, रजनीगन्धा, दूर्वा, शमी, जीवक, गन्धराज, अगस्तिका, सूर्यमुखी, कनेर, शैफालिका और पारिजात, तिल का फूल, हरशृंगार, मालार का पत्ता, तुलसी और मदार।

धूपाधिवासः

दशाङ्गयुग्गुग्गुललोहवानं ज्वालामुखी धूपवती सुवत्ती।
सुगन्धबालाखसदेवदारु धूपाधिवासे विहितं च वेदे॥

भावार्थ—दशाङ्ग, दोनों गुग्गुल, लोहबान, ज्वालामुखी, सुबत्ती, सुगन्धबाला, खस, देवदार ये वेद में धूपाधिवास में लिखे गये हैं।

फलाधिवासम्

सुपक्वमङ्गरं कटहरपपीता अमरुतमनारं जम्बूरमरुणसदृशं सतततराम्।
अनानासं केला सरसहकारं सहतुतं विजोरामोसमीवरदवदरीसेवमुरई॥
सिघाडाजामूनं प्रचुरनसपातिं सिरफलम्।
सुराणां वासार्थं फलवरमिदं वेदलिखितम्॥

यथा सुसाध्यं सुखतः सदैव स्वदेशकालोद्भवजं सुवस्तु।
संगृह्यतां भूपतिभिः सुयज्ञे फलाधिवासे कथितं सुरेष्टम्॥
वादामं छोहाडाकिसमिसचिरौञ्जी अखरूटं
मखाना खर्जूरं हरितपिसता सद्मुमफली।
मुनक्का आवजोसं शुभचिरगुजा सक्करयुतं
सुराणां सन्मेवादयितमधिवासे च कथितम्॥

भावार्थ—पका हुआ अंगूर, कटहर, पपीता, अमरूद, अनार, नींबू, संतरा, अनानास, केला, आम, शहतूत, बिजौरा, मुसम्मी, बेर, मूली, सिघाड़ा, जामुन, नाशपाती, श्रीफल ये श्रेष्ठ फल देवताओं के अधिवास के लिये वेद में लिखे गये हैं। उस देश और उस काल में होनेवाले आसानी से सुखपूर्वक संग्रहीत होनेवाले फलों का संग्रह देवताओं की प्रसन्नता के लिए फलाधिवास में राजाओं के द्वारा किया जाना चाहिए। बादाम, छुहारा, किशमिश, चिरौंजी, अखरोट, मखाना, खजूर, पिस्ता, मूँगफली, मुनक्का, चिलगोजा आदि मेवा देवताओं की प्रसन्नता के लिये अधिवास में कहे गये हैं।

मिष्ठान्नाधिवासम्

बालस्याहीजलेवीचमचमवरफीमोहनंलप्सिमुख्यं
कुष्माण्डैः पाकपेडासरसरगुलासोहनं पापडीकम्।
खोवापूडी इमर्तीबहुलगुणगुलाजामुनं खीरमोहम्
लड्डूबुन्दीमिठाईसुरगणप्रियदं यज्ञकार्ये सुयोज्यम्॥
पूआ पूडी कचौडी उरदजवटकं गन्धितं हिङ्गजीरैः
नानाप्रकारपूर्णमगणितरसभृद् व्यञ्जनं चारुलेह्यम्।
सन्तोषप्रेमकारी शिखरनदधि युग्वासहेतोः सुराणां
श्रेष्ठे यज्ञे कवीन्द्रैर्बहुविधकथितं यत्नतो योजनीयम्॥

भावार्थ—बालू स्याही, जलेबी, चमचम, बरफी, मोहनभोग ये प्रधान हैं। इनके साथ भतुआपाक (पेठा), पेड़ा, रसगुल्ला, सोहनहलुआ, पपड़ी, खोवापूड़ी (मालपूआ), इमरती, गुलाबजामुन, खीरमोहन, लड्डू, बूंदी आदि मिठाई देवताओं की प्रसन्नता के लिए मिष्ठान्नाधिवास में संग्रह करनी चाहिए। पूआ, पूड़ी, कचौड़ी, उड़द का बाड़ा, हींग और जीरा से सुवासित नाना प्रकार के रस से भरे हुए व्यंजन और चटनी, सिखरन दही आदि देवताओं के प्रेम एवं प्रसन्नता के लिये श्रेष्ठ यज्ञ (प्रतिष्ठा) में अधिवास के लिये बहुविध प्रयत्न से जुटाना चाहिए। ऐसा विद्वानों का कथन है।

मिष्ठानाधिवास के उपरान्त आचार्य औषध्याधिवास भी करावें।

देवस्नपनम्

स्नान मण्डप में आचार्य प्रधानस्थापन मन्त्र द्वारा पञ्चगव्य को अभिमन्त्रित करके उससे स्नान मण्डप का प्रोक्षण कर बालू की तीन वेदियों पर अक्षत द्वारा 'स्वस्तिक' बनाकर उसमें तीन महापीठ को रखकर निम्न श्लोक का उच्चारण करके विश्वकर्माजी का ध्यान यजमान से करावे—

ॐ विश्वकर्मा तु कर्तव्यः श्मश्रुलोमांशलाधरः।
स्नदंशपाणिर्द्विभुजस्तेजोमूर्तिः प्रतापवान्॥

इति ध्यात्वा ततः—सप्तधान्येषु त्रिसूत्रीवेष्टितसपल्लववारिपूर्णकलशानामाजिघ्रेति स्थापनम्। तत्र दक्षिणवेद्याः पश्चाद् द्वादशकलशा उदक्संस्थाः प्राक्संस्था वा अत्रान्यो द्वादशः स्थापतिसंज्ञकः कलशः। तत्र क्रमेण पञ्चसु कलशेषु—१. मृत्तिका, २. पञ्चपल्लव वृक्षीयकषाय, ३. गोमूत्र, ४. गोबर, ५. भस्म। इति प्रक्षिप्य शेषेषु सप्तसु गन्धोदकं प्रक्षिपेत्। एवं मध्यवेदेः पश्चादेकादश कलशाः पूर्वोक्तद्रव्ययुताः स्थाप्या। नात्र स्थापितकलशो द्वादशः। उत्तरवेदेः पश्चात्—प्रथमपङ्क्तौ—पञ्च शुद्धोदककलशाः। द्वितीयपङ्क्तौ-विंशतिकलशाः। तत्र विषमेषु अष्टपलमृत्तिका—१. सप्तपलगोमयम्,

२. द्वादशपलं गोमूत्रम्, ३. मुष्टिमितं भस्म, ४. त्रिपल्लवपञ्चगव्यम्, ५. षोडशपलं क्षीरम्, ६. विंशतिपलं दधि, ७. सप्तपलं घृतम्, ८. त्रिपलं मधु, ९. त्रिपलं शर्करा, १०. इति क्षिपेत्। समेषु शुद्धोदकमेव। तृतीयपङ्क्तौ—द्वौ शुद्धोदकयुतौ। चतुर्थपङ्क्तौ—षट् तत्राद्ये पञ्चामृतम्, अन्येषु शुद्धोदकम्। पञ्चमपङ्क्तौ—द्वौ चतुर्दशकलशाः—तेषु क्रमेण—गन्धः १, पञ्चपल्लवकषायः २, सर्वौषध्यः ३, सितपुष्पाणि ४, शान्त्युदकम् ५, अष्टौ फलानि ६, सुवर्णम् ७, गोश्रृङ्गोदकम् ८, सप्तधान्यानि ९, सहस्त्रछिद्रकलशः तत्सहायार्थोऽप्येकः १०, पुनः दिव्यौसर्वौषध्यः ११, पञ्चपल्लवाः १२, रक्षानि नव १३, तीर्थोदकम् १४, इति प्रक्षिपेत्। वेदिकोऽष्टौ पूर्वाद्यष्टदिक्षु समुद्रसंज्ञकाः कलशाः। एतान् कलशान्—ॐ हिरण्यगर्भः समवर्त्तताग्रे भूतस्य जातः पतिरेक ऽआसीत्। स दाधार पृथिवीं द्यामुतेमां कस्मै देवाय हविषा विधेम॥ १॥ यः प्राणतो निमिषतो महित्वैक इद्राजा जगतो बभूव। य ईशे अस्य द्विपदश्चतुष्पद कस्मै देवाय हविषा विधेम॥ २॥ यस्येमे हिमवन्तो महित्वा यस्य समुद्रं रसया सहाहुः। यस्येमाः प्रदिशो यस्य बाहु कस्मै देवाय हविषा विधेम॥ ३॥ य आत्मदा वलदा यस्य विश्व उपासते प्रशिषं यस्य देवाः। यस्य छायामृत्तं यस्य मृत्युः कस्मै देवाय हविषा विधेम॥ ४॥ आपो ह यद्वृहतीविश्वमायन् गर्भं दधाना जनयन्ती-रग्निम्। ततो देवानां समवर्ततासुरे कः कस्मै देवाय हविषा विधेम॥ ५॥ यश्चिदापो महिना पर्यपश्यद् दक्षं दधानां जनयन्तीर्यज्ञम्। यो देवेष्वधि देव एक आसीत् कस्मै देवाय हविषा विधेम॥ ६॥ येन द्यौरुग्रा पृथिवी च हडहा येन स्वः स्तभितं येन नाकः। यो अन्तरिक्षे रजसो विमानः कस्मै देवाय हविषा विधेम॥ ७॥ वेनस्तत्पश्यन्निहितं गुहा सद्यत्र विश्वं भवत्येकनीडम्। तस्मिन्निदर्ठ०सं च वि चैति सर्वर्ठ० स ओतः प्रोतश्च विभूः प्रजासु॥ ८॥ इति मन्त्रैः विन्यस्य ततः—तेषु क्षारोदकम् १, क्षीरम् २, दधि ३, घृतम् ४, इक्षुरसः ५, सुरोदकम् ६, स्वादूदकम् ७,

गर्भोदकम् ८, इति प्रक्षिपेत्। षष्ठपङ्क्तौ—दश, तेषु—कदम्ब १, शाल्मली २, जम्बू ३, अशोक ४, प्लक्ष ५, चूत ६, वट ७, विल्व ८, नाग ९, पलाश १० पत्राणि निक्षिपेत्। एषु दशसु क्रमेण लोकपालानप्यावाहयेत्। सप्तमपङ्क्तौ—चत्वारौ बृहत्कलशाः। एको वा सूक्ष्मसितवस्त्रं—सुगन्धतैलं—यव—शालि—गोधूम मसूरिका—बिल्व—आमलक-चूर्णमुद्वर्तनार्थम्। अन्यत्सुगन्धितवस्तु च—

कस्तूरिकाया द्वौ भागौ द्वौ भागौ कुङ्कुमस्य च।
चन्दनस्य त्रयो भागाः शशिनस्त्वेक एव हि॥

इति लक्षणकं यक्षकर्दमं जटामासीं चासादयेत्। ततः पञ्चम-पङ्क्तिस्थते अन्तिमे चतुर्दशे तीर्थोदककलशे—

सर्वे समुद्राः सरितस्तीर्थानि जलदानदाः।
आयान्तु यजमानस्य दुरितक्षयकारिकाः॥

जल से धूमावतीदेवी की मूर्ति को बाहर निकालकर निम्न श्लोकों का उच्चारण करके प्रार्थना करें—

कल्पादौ या कालिकाद्याऽचीकलन्मधुकैटभौ।
कल्पान्ते त्रिजगत्सर्वं धूमावतीं भजामि ताम्॥ १॥
गुणागाराऽगम्यगुणा या गुणागुणवर्धिनी।
गीता वेदार्थतत्त्वज्ञैर्धूमावतीं भजामि ताम्॥ २॥
खट्वाङ्गधारिणी खर्वाखण्डिनी खलरक्षसाम्।
धारिणी खेटकस्यापि धूमावतीं भजामि ताम्॥ ३॥
घूर्णघूर्णकरा घोरा घूर्णिताक्षी घनस्वना।
घातिनी घातकानां या धूमावतीं भजामि ताम्॥ ४॥
चर्वन्तीमस्थिखण्डानां चण्ड-मुण्डविदारिणीम्।
चण्डाट्टहासिनीं देवीं भजे धूमावतीमहम्॥ ५॥
छिन्नग्रीवां क्षताच्छन्नां छिन्नमस्तस्वरूपिणीम्।
छेदिनीं दुष्टसङ्घानां भजे धूमावतीमहम्॥ ६॥

जाता या याचिता देवैरसुराणां विघातिनी।
जल्पन्ती बहु गर्जन्ती भजे तां धूम्ररूपिणीम्॥ ७॥

ॐ उत्तिष्ठ ब्रह्मणस्पते देवयन्तस्त्वेमहे। उप प्रयन्तु मरुतः सुदानव इन्द्र प्राशूर्भवा सचा॥ इति मन्त्रेण उत्थाप्य अग्न्युत्तारणं च कृत्वा धूमावतीप्रतिमां कुशैः संमार्ज्य मधुघृताभ्यङ्गेन व्रणभङ्गं कृत्वा सम्पूज्य पञ्चगव्येन पृथक् पृथक् जलान्तरितेन स्नापयित्वा पुनः सम्पूज्य शङ्खादिनादेन रथादिना महामण्डपप्रादक्षिण्येन स्नानमण्डपमानयेत्। गुरुर्दक्षिणवेद्यां कुशास्तृते—ॐ स्तीर्णं बर्हिः सुष्टरीमा जुषाणोरु पृथु प्रथमानं पृथिव्याम्। देवेभिर्युक्तमदितिः सजोषाः स्योनं कृण्वाना सुविते दधातु॥ १॥ भद्रं कर्णेभिः शृणुयाम देवा भद्रं पश्येमाक्षभिर्यजत्राः। स्थिरैरङ्गैस्तुष्टुवाꣳसस्तनूभिर्व्यशेमहि देवहितं यदायुः॥ २॥ इति मन्त्राभ्यां प्राङ्मुखं धूमावतीं देवीं निवेश्य स्थपतिसंज्ञं कलशं हिरण्य-वस्त्ररत्नादिकसहितं धूमावतीदेविसमीपे निधाय तत्र तीर्थान्यावाहयेत्। तद्यथा—

ॐ काशी कुशस्थली मायाऽवन्त्ययोध्या मधोः पुरी।
शालग्रामं सगोकर्णं नर्मदा च सरस्वती॥ १॥
तीर्थान्येतानि कुम्भेऽस्मिन्विशन्तु ब्रह्मशासनात्।
झषारूढा सरोजाक्षी पद्महस्ता शशिप्रभा॥ २॥
आगच्छतु सरिज्ज्येष्ठा गङ्गापापप्रणाशिनी।
नीलोत्पलदलश्यामा पद्महस्ताऽम्बुजेक्षणा॥ ३॥
आयातु यमुनादेवी कूर्मयानस्थिता सदा।
प्राची सरस्वती पुण्या पयोष्णी गौतमी तथा॥ ४॥
ऊर्मिला चन्द्रभागा च सरयूर्गण्डकी तथा।
जम्बुका च शतद्रूश्च कलिङ्गा सुप्रभा तथा॥ ५॥
वितस्ता च विपाशा च शर्मदा च पुनः पुनः।
गोदावरी महावर्ता शर्करावर्त्तमार्जनी॥ ६॥

कावेरी कौशिकी चैव तृतीया च महानदी।
विटङ्गा प्रतिकूला च सोमनन्दा च विश्रुता॥ ७ ॥
करतोया वेत्रवती देविका वेणुका च या।
आत्रेयगङ्गा वैतरणी काश्मीरी ह्लादिनी च या॥ ८ ॥
प्लाविनी च शवित्रा सा कल्माषा संशिनी तथा।
वसिष्ठा च अपापा च सिन्धुवत्यारुणी तथा॥ ९ ॥
ताम्रा चैव त्रिसन्ध्या च तथा मन्दाकिनी परा।
तैलकाह्नी च पारा च दुन्दुभीर्नकुली तथा॥ १० ॥
नीलगन्धा च बोधा च पूर्णचन्द्रा शशिप्रभा।
अमरेशं प्रभासं च नैमिषं पुष्करं तथा॥ ११ ॥
आषाढीं डिण्डिभारत्नं भारभूतं बलाकुलम्।
हरिश्चन्द्रं परं गुह्यं मध्यं मध्यमकेश्वरम्॥ १२ ॥
श्रीपर्वतं समाख्यातं जलेश्वरमतः परम्।
आम्नातकेश्वरं चैव महाकालं तथैव च॥ १३ ॥
केदारमुत्तमं गुह्यं, महाभैरवमेव च।
गयां चैव कुरुक्षेत्रं गुह्यं कनखलं तथा॥ १४ ॥
विमलं चन्द्रहासं च माहेन्द्रं भीममष्टकम्।
वस्त्रापदं रुद्रकोटिमविमुक्तं महाबलम्॥ १५ ॥
गोकर्णं भद्रकर्णं च महेशस्थानमुत्तमम्।
छागलाह्वं द्विरण्डं च कर्कोटं मण्डलेश्वरम्॥ १६ ॥
कालञ्जरवनं चैव देवदारुवनं तथा।
शङ्कुकर्णं तथैवेह स्थलेश्वरमतः परम्॥ १७ ॥
एता नद्यश्च तीर्थानि गुह्यक्षेत्राणि सर्वशः।
तानि सर्वाणि कुम्भेऽस्मिन्विशन्तु ब्रह्मशासनात्॥ १८ ॥

इति मन्त्रेण तीर्थान्यावाह्य तेन धूमावतीदेवीं स्नपयेत्। यजमानश्च शिल्पिवर्गं यथाशक्ति पूजयेत्। ततो गुरुर्बहिर्निर्गत्य—करिष्यमाण—

धूमावतीदेविस्नपनाङ्गभूतं सिद्धार्थघृतपायसैः रुद्राय बलिदानं करिष्ये। इति सङ्कल्प्य स्नानमण्डपस्य प्रागादि दिक्षु—ॐ त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम्। ऊर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय माऽमृतात्॥ इति मन्त्रावृत्या रुद्राय एष सिद्धार्थघृतपायसबलिर्नमः। इति प्रयोगेण सर्वत्र रुद्राय बलि दत्त्वाऽऽचम्य स्नानमण्डपमागत्य उपविश्य—ॐ त्रातार-मिन्द्रमवितारमिन्द्रर्ठ० हवे हवे सुहवर्ठ० शूरमिन्द्रम्। ह्वयामिशक्रं पुरुहूतमिन्द्रर्ठ० स्वस्ति नो मघवा धात्विन्द्रः॥ १॥ त्वं नो अग्ने तव देव पायुभिर्मघोनो रक्ष तन्वश्च वन्द्य। त्राता तोकस्य तनये गवामस्यनिमेषर्ठ० रक्षमाणस्तव व्रते॥ २॥ यमाय त्वाङ्गिरस्वते पितृमते स्वाहा। स्वाहा घर्माय स्वाहा घर्मः पित्रे॥ ३॥ असुन्वन्तमयजमानमिच्छ स्तेनस्येत्या-मन्विहि तस्करस्य। अन्यमस्मदिच्छ सा त इत्या नमो देवि निर्ऋते तुभ्यमस्तु॥ ४॥ तत्त्वा यामि ब्रह्मणा वन्दमानस्तदाशास्ते यजमानो हविर्भिः। अहेडमानो वरुणेह बोध्युरुशर्ठ० स मा न आयुः प्रमोषीः॥ ५॥ आ नो नियुद्भिः शतिनीभिरध्वरर्ठ० सहस्रिणीभिरुपयाहि यज्ञम्। वायो अस्मिन्सवने मादयस्व यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः॥ ६॥ वयर्ठ० सोम व्रते तव मनस्तनूषु बिभ्रत। प्रजावन्तः सचेमहि॥ ७॥ तमीशानं जगतस्तस्थुषस्पतिं धियं जिन्वमवसे हूमहे वयम्। पूषा नो यथा वेदसामसद्वृधे रक्षिता पायुरदब्धः स्वस्त्ये॥ ८॥ नमोऽस्तु सर्पेभ्यो ये के च पृथिवी मनु। ये अन्तरिक्षे ये दिवि तेभ्यः सर्पेभ्यो नमः॥ ९॥ ब्रह्म जज्ञानं प्रथमं पुरस्ताद्वि सीमतः सुरुचो वेन आवः। स बुध्न्या उपमा अस्य विष्ठाः सतश्च योनिमसतश्च विवः॥ १०॥ इति दशमन्त्रैर्दशदिक्षु—"भो इन्द्र प्राचो रक्ष" "भो आग्नेयो रक्ष" इत्यादि प्रयोगेण रक्षा कुर्यात्। ततो धूमावतीदेव्यग्रे चतुरो ब्राह्मणानुपवेश्य स्वस्तिवाचनं कार्यम्। तद्यथा—भो ब्राह्मणाः धूमावतीदेव्यर्चाशुद्धिस्नपननेत्रोन्मीलनकर्मणः पुण्याहं भवन्तो ब्रुवन्तु। 'ॐ पुण्याहम्३' ॐ पुनन्तु मा देवजनाः पुनन्तु मनसाधियः। पुनन्तु विश्वाभूतानि जातवेदः पुनीहि मा॥ १॥

भो ब्राह्मणाः धूमावतीदेव्यर्चाशुद्धिस्नपननेत्रोन्मीलनकर्मणः कल्याणं भवन्तो ब्रुवन्तु। ॐ कल्याणं कल्याणं कल्याणम्, ॐ यथेमां वाचं कल्याणीमावदानि जनेभ्यः। ब्रह्म राजन्याभ्यार्ठ० शूद्राय चार्याय च स्वाय चारणाय च। प्रियो देवानां दक्षिणायै दातुरिह भूयासमयं मे कामः समृद्ध्यतामुपमादो नमतु॥ २॥ भो ब्राह्मणाः धूमावतीदेव्यर्चा-शुद्धिस्नपननेत्रोन्मीलनकर्मणः ऋद्धिं भवन्तो ब्रुवन्तु। 'ॐ कर्म ऋध्यताम्३' इति ब्राह्मणाः। ॐ सत्रस्य ऋद्धिरस्यगन्म ज्योतिरमृता अभूम। दिवं पृथिव्या अध्यारुहामाविदाम देवान्त्स्वर्ज्योतिः॥ ३॥ भो ब्राह्मणाः धूमावतीप्रतिष्ठाकर्मणे स्वस्ति भवन्तो ब्रुवन्तु। ते च-धूमावतीदेव्यर्चाशुद्धिस्नपनाय नेत्रोन्मीलनकर्मणे च स्वस्ति इति वदेयुः। ॐ स्वस्ति न इन्द्रो वृद्धश्रवाः स्वस्ति नः पूषा विश्ववेदाः। स्वस्ति नस्तार्क्ष्यो अरिष्टनेमिः स्वस्ति नो बृहस्पतिर्दधातु॥ ४॥

सङ्कल्पः—कृतस्य पुण्याहवाचनकर्मणः साङ्गतासिद्ध्यर्थं दक्षिणा-द्रव्यं नानानामगोत्रेभ्यो ब्राह्मणेभ्यो विभज्य दातुमहमुत्सृजे। इति सङ्कल्पं कृत्वा यजमानः उपविष्टब्राह्मणेभ्यो चन्दनादिना पूजनपूर्वकं दक्षिणां दत्त्वाऽशिषो गृह्णीयात्। ततः—ॐ अग्निर्मूर्धा दिवः ककुत्पतिः पृथिव्या अयम्। अपार्ठ० रेतार्ठ०सि जिन्वति॥ इति मृत्तिकाकलशेन॥ १॥ ॐ यज्ञा यज्ञा वो अग्नये गिरा गिरा च दक्षसे। प्र प्र वयममृतं जातवेदसं प्रियं मित्रं न शर्ठ०सिषम्॥ इति कषायोदकेन॥ २॥ ॐ तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि। धियो यो नः प्रचोदयात्॥ गोमूत्रेण॥ ३॥ ॐ गन्धद्वारां दुराधर्षां नित्यपुष्टां करीषिणीम्। ईश्वरीं सर्वभूतानां तामिहोपह्वये श्रियम्॥ इति गोमयोदकेन॥ ४॥ ॐ मा नस्तोके तनये मा न आयुषि मा नो गोषु मा नो अश्वेषु रीरिषः। मा नो वीरान् रुद्र भामिनो वधीर्हविष्मन्तः सदमित्त्वा हवामहे॥ इति भस्मोदकेन॥ ५॥ ॐ तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि। धियो यो नः प्रचोदयात्॥ इति गन्धोदकेन॥ ६॥ ॐ नमः शंभवाय च मयोभवाय च नमः शङ्कराय च मयस्कराय च नमः

शिवाय च शिवतराय च॥ इति गन्धोदकेन॥ ७॥ ॐ हर्ठ०सः शुचिषद्वसुरन्तरिक्षसद्धोता वेदिषदतिथिर्दुरोणसत्। नृषद्वरसदृतसद्व्योमसदब्जा गोजा ऋतजा अद्रिजा ऋतं बृहत्॥ इति गन्धोदकेन॥ ८॥ ॐ या ते रुद्र शिवा तनूरघोराऽपापकाशिनी। तया नस्तन्वा शन्तमया गिरिशन्ताभिचाकशीहि॥ इति गन्धोदकेन॥ ९॥ ॐ विष्णोर राटमसि विष्णोः श्नप्त्रे स्थो विष्णोः स्यूरसि विष्णोर्ध्रुवोऽसि वैष्णवमसि विष्णवे त्वा॥ इति गन्धोदकेन॥ १०॥ ॐ ब्रह्म जज्ञानं प्रथमं पुरस्ताद्वि सीमतः सुरुचो वेन आवः। स बुध्न्या उपमा अस्य विष्ठाः सतश्च योनिमसतश्च विवः॥ इति गन्धोदकेन॥ ११॥ ततः—ॐ शतं वो अम्ब धामानि सहस्रमुत वो रुहः। अधा शतक्रत्वो यूयमिमं मे अगदं कृत॥ इति दूर्वाक्षतपुष्पैः सम्पूज्य—ॐ सुजातो ज्योतिषा सह शर्म वरूथमासदत्स्वः। वासो अग्ने विश्वरूपर्ठ० संव्ययस्व विभावसो॥ इति प्रथमवेदिनस्नपनम्॥ एवं संस्नाप्य ततः—ॐ ततो मध्यवेद्याम्—ॐ भद्रं कर्णेभिः शृणुयाम देवा भद्रं पश्येमाक्षभिर्यजत्राः। स्थिरैरङ्गैस्तुष्टुवार्ठ०सस्तनूभिर्व्यशेमहि देवहितं यदायुः॥ १॥ ॐ स्तीर्णं बर्हिः सुष्टरीमा जुषाणोरु पृथु प्रथमानं पृथिव्याम्। देवेभिर्युक्तमदितिः सजोषाः स्योनं कृण्वाना सुविते दधातु॥ २॥ इति प्रागग्रास्तृतकुशे पीठे भगवतीं धूमावतीदेवीं प्राङ्मुखं निधाय स्वयमुदङ्मुखो भूत्वा कुङ्कुमाक्तेन सूत्रेण मूर्तिमावेष्ट्य मूर्ते मध्यभागे मुखं कल्पयित्वा प्रतिमायां मुखं नेत्राणि सुवर्णशलाकया मध्वाज्याक्तया—ॐ चित्रं देवानामुदगादनीकं चक्षुर्मित्रस्य वरुणस्याग्नेः॥ इत्यर्द्धर्चेन कल्पयेत्। शलाकया ऊर्ध्वाधः पृथग्भूतं पक्ष्मपुटद्वयं च—ॐ आ कृष्णेन रजसा वर्तमानो निवेशयन्नमृतं मर्त्यं च। हिरण्ययेन सविता रथेनादेवो याति भुवनानि पश्यन्॥ इति मन्त्रेण कल्पयेत् नेत्र मध्यभागे त्रिभागेन कनीनिकामपि कल्पयेत्। तदा न कश्चित्पुरतस्तिष्ठेत्। ततः सुवर्णं पायसं भक्ष्यं भोज्यं आदर्शं च शीघ्रं दर्शयेत्। शिल्पी च लोहेनोल्लिखेत्। ततो गुरुर्मधुसर्पिर्भ्याममभ्यज्य—ॐ

इमं मे वरुण श्रुधी हवमद्या च मृडय। त्वामवस्युराचके॥ इति मन्त्रेण शुद्धोदकेन लौकिकेनाभ्युक्ष्य स्थापितैकादशकलशैः स्नापयेत्पूर्ववत्— ॐ अग्निर्मूर्धा दिवः ककुत्पतिः पृथिव्या अयम्। अपाꣳ० रेताꣳ०सि जिन्वति। इति मृत्तिकाकलशेन॥ १॥ ॐ यज्ञा यज्ञा वो अग्नये गिरा गिरा च दक्षसे। प्र प्र वयममृतं जातवेदसं प्रियं मित्रं न शꣳ०सिषम्॥ इति कषायोदकेन॥ २॥ ॐ तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि। धियो यो नः प्रचोदयात्॥ गोमूत्रेण॥ ३॥ ॐ गन्धद्वारां दुराधर्षां नित्यपुष्टां करिषिणीम्। ईश्वरीं सर्वभूतानां तामिहोप ह्वये श्रियम्॥ इति गोमयोदकेन॥ ४॥ ॐ मा नस्तोके तनये मा न आयुषि मा नो गोषु मा नो अश्वेषु रीरिषः। मा नो वीरान् रुद्र भामिनो वधीर्हविष्मन्तः सदमित्त्वा हवामहे॥ इति भस्मोदकेन॥ ५॥ ॐ गन्धद्वारां दुराधर्षां नित्यपुष्टां करिषिणीम्। ईश्वरीं सर्वभूतानां तामिहोप ह्वये श्रियम्॥ इति गन्धोदकेन॥ ६॥ ॐ नमः शंभवाय च मयो भवाय च नमः शङ्कराय च मयस्कराय च नमः शिवाय च शिवतराय च॥ ७॥ ॐ हꣳ०सः शुचिषद्वसुरन्तरिक्षसद्धोता वेदिषदतिथिर्दुरोणसत्। नृषद्वरसदृतसद्व्योम-सदब्जा गोजा ऋतजा अद्रिजा ऋतं बृहत्॥ ८॥ ॐ या ते रुद्र शिवा तनूरघोराऽपापकाशिनी। तया नस्तन्वा शन्तमया गिरिशन्ताभि-चाकशीहि॥ ९॥ ॐ विष्णोर राटमसि विष्णोः श्नप्त्रे स्थो विष्णोः स्यूरसि विष्णोर्ध्रुवोऽसि वैष्णवमसि विष्णवे त्वा॥ १०॥ ॐ ब्रह्म जज्ञानं प्रथमं पुरस्ताद्वि सीमतः सुरुचो वेन आवः। स बुध्न्या उपमा अस्य विष्ठाः सतश्च योनिमसतश्च विवः॥ ११॥ इत्यादि मन्त्रेण पृथक् पृथक् गन्धोदकेन संस्नाप्य—ॐ शतं वो अम्ब धामानि सहस्रमुत वो रुहः। अधा शतक्रत्वो यूयमिमं मे अगदं कृत॥ इति मन्त्रेण दूर्वाक्षतपुष्पैः सम्पूज्य—ॐ सुजातो ज्योतिषा सह शर्म वरूथमासदत्स्वः। वासो अग्ने विश्वरूपꣳ० संव्ययस्व विभावसो॥ इति मन्त्रेण वस्त्रेण धूमावतीदेवतामाच्छाद्यसुवर्णशलाकादिकं प्रतिमाघटकाय दद्यात्—इदं

सहिरण्यं गोनिष्क्रयद्रव्यमाचार्याय तुभ्यमहं सम्प्रददे। इति च आचार्याय दद्यात्। इति द्वितीयवेदिस्नपनम्॥

अथ गुरोरुत्तरवेद्यां पूर्ववद् धूमावतीदेवीं स्नापयित्वा आद्यपङ्क्तिस्थाद्यकलशेन—ॐ समुद्राय त्वा वाताय स्वाहा सरिराय त्वा वाताय स्वाहा। अनाधृष्याय त्वा वाताय स्वाहा प्रतिधृष्याय त्वा वाताय स्वाहा। अवस्यवे त्वा वाताय स्वाहाऽशिमिदाय त्वा वाताय स्वाहा। इति मन्त्रेण संस्नाप्य—ॐ शतं वो अम्ब धामानि सहस्त्रमुत वो रुहः। अधा शतक्रत्वो यूयमिमं मे अगदं कृत॥ इति दूर्वाक्षतान्मूर्ध्नि दत्त्वा धूमावतीं प्रार्थयेत्—

घूर्णघूर्णकरा घोरा घूर्णिताक्षी घनस्वना।
घातिनी घातकानां या धूमावतीं भजामि ताम्॥ १॥
चर्वन्तीमस्थिखण्डानां चण्ड-मुण्डविदारिणीम्।
चण्डाट्टहासिनीं देवीं भजे धूमावतीमहम्॥ २॥
छिन्नग्रीवां क्षताच्छन्नां छिन्नमस्तस्वरूपिणीम्।
छेदिनीं दुष्टसङ्घानां भजे धूमावतीमहम्॥ ३॥
जाता या याचिता देवैरसुराणां विघातिनी।
जल्पन्ती बहु गर्जन्ती भजे तां धूम्ररूपिणीम्॥ ४॥

ततो धूमावतीदेव्या दक्षिणहस्ते प्रतिमावितस्तिमात्रमूर्णासूत्रं इति मन्त्रेण बध्नीयात्—ॐ यदाबध्नन्दाक्षायणा हिरण्यठं० शतानीकाय सुमनस्यमानाः। तन्म आबध्नामि शतशारदायायुष्मान्जरदष्टिर्यथासम्॥ ततः प्रार्थयेत्—

बलिपूज्यां बलाराध्यां बगलारूपिणीं वराम्।
ब्रह्मादिवंदिताम् विद्यां वन्दे धूमावतीमहम्॥

ततोऽवशिष्टैः चतुर्भिः शुद्धोदककलशैः स्नपयेदेभिर्मन्त्रैराद्यङ्क्तिस्थैः—ॐ इदमापः प्रवहतावद्यं च मलं च यत्।

यच्चाभिदुद्रोहानृतं यच्च शेपे अभीरुणम्। आपो मा तस्मादेनसः पवमानश्च मुञ्चतु॥ इति शुद्धोदकेन॥ १॥ ॐ आपो देवीः प्रतिगृभ्णीत भस्मैतत्स्योने कृणुध्वठं० सुरभा उ लोके। तस्मै नमन्तां जनयः सुपत्नीर्मातेव पुत्रं बिभृताप्स्वेनत्॥ इति शुद्धोदकेन॥ २॥ ॐ इमं मे वरुण श्रुधी हवमद्या च मृडय। त्वामवस्युराचके॥ इति शुद्धोदकेन॥ ३॥ ॐ तत्त्वा यामि ब्रह्मणा वन्दमानस्तदाशास्ते यजमानो हविर्भिः। अहेडमानो वरुणेह बोध्युरुशठं०स मा न आयुः प्रमोषीः॥ इति शुद्धोदकेन॥ ४॥ इति क्रमेण स्नायात्।

ततो द्वितीयपङ्क्तिस्थविंशतिकलशैः क्रमेण—ॐ अग्निर्मूर्धा दिवः ककुत्पतिः पृथिव्या अयम्। अपाठं० रेताठं०सि जिन्वति॥ इति मृत्तिकाकलशेन॥ १॥ ॐ वरुणस्योत्तम्भनमसि वरुणस्य स्कम्भ-सर्जनी स्थो वरुणस्य ऋतसदन्यसि वरुणस्य ऋतसदनमसि वरुणस्य ऋतसदनमासीद॥ इति शुद्धोदकेन॥ २॥ ॐ गन्धद्वारां दुराधर्षां नित्यपुष्टां करीषिणीम्। ईश्वरीं सर्वभूतानां तामिहोपह्वये श्रियम्॥ इति गोमयेन॥ ३॥ ॐ देवीरापो अपां नपाद्यो व ऊर्मिर्हविष्य इन्द्रियावान्मदिन्तमः। तं देवेभ्यो देवत्रा दत्त शुक्रपेभ्यो येषां भाग स्थ स्वाहा॥ इति शुद्धोदकेन॥ ४॥ ॐ तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि। धियो यो नः प्रचोदयात्॥ इति गोमूत्रेण॥ ५॥ ॐ आपो हि ष्ठा मयोभुवस्ता न ऊर्जे दधातन। महे रणाय चक्षसे॥ इति शुद्धोदकेन॥ ६॥ ॐ प्रसद्य भस्मना योनिमपश्च पृथिवीमग्ने। सठं०सृज्य मातृभिष्टं ज्योतिष्मान्पुनरासदः॥ इति भस्मोदकेन॥ ७॥ ॐ शं नो देवीरभिष्टय आपो भवन्तु पीतये। शं योरभिस्त्रवन्तुः नः॥ इति शुद्धोदकेन॥ ८॥ ॐ पयः पृथिव्यां पय ओषधीषु पयो दिव्यन्तरिक्षे पयो धाः। पयस्वतीः प्रदिशः सन्तु मह्यम्॥ इति पञ्चगव्येन॥ ९॥ ॐ यो वः शिवतमो रसस्तस्य भाजयतेह नः। उशतीरिव मातरः॥ इति शुद्धोदकेन॥ १०॥ ॐ आप्यायस्व समेतु ते विश्वतः सोम वृष्ण्यम्। भवा वाजस्य संगथे॥

इति क्षीरजलेन॥ ११ ॥ ॐ तस्मा अरं गमाम वो यस्य क्षयाय जिन्वथ। आपो जनयथा च नः॥ इति शुद्धोदकेन॥ १२॥ ॐ दधिक्राव्णो अकारिषं जिष्णोरश्वस्य वाजिनः। सुरभि नो मुखा करत्प्र ण आयूर्ठ०षि तारिषत्॥ इति दधिजलेन॥ १३॥ ॐ युञ्जानः प्रथमं मनस्तत्वाय सविता धियः। अग्नेर्ज्योतिर्निचाय्य पृथिव्या अध्याभरत्॥ इति शुद्धोदकेन॥ १४॥ ॐ घृतवती भुवनानामभिश्रियोर्वी पृथ्वी मधुदुघे सुपेशसा। द्यावापृथिवी वरुणस्य धर्मणा विष्कभिते अजरे भूरिरेतसा॥ इति घृतेन॥ १५॥ ॐ देवस्य त्वा सवितुः प्रसवेऽश्विनोर्बाहुभ्यां पूष्णो हस्ताभ्याम्। सरस्वत्यै वाचो यन्तुर्यन्त्रिये दधामि बृहस्पतेष्ट्वा साम्राज्येनाभिषिञ्चाम्यसौ॥ इति शुद्धोदकेन॥ १६॥ ॐ मधु वाता ऋतायते मधु क्षरन्ति सिन्धवः। माध्वीर्नः सन्त्वोषधीः। मधु नक्तमुतोषसो मधुमत्पार्थिवर्ठ०रजः। मधु द्यौरस्तु नः पिता। मधुमान्नो वनस्पति-र्मधुमाँऽअस्तु सूर्यः। माध्वीर्गावो भवन्तु नः॥ इति मधुना॥ १७॥ ॐ आपो अस्मान्मातरः शुन्धयन्तु घृतेन नो घृतप्वः पुनन्तु। विश्वर्ठ०हि रिप्रं प्रवहन्ति देवीरुदिदाभ्यः शुचिरा पूत एमि॥ इति शुद्धोदकेन॥ १८॥ ॐ आयं गौः पृश्निरक्रमीदसदन्मातरं पुरः। पितरं च प्रयन्त्स्वः॥ इति शर्करया॥ १९॥ ॐ आपो ह यद्बृहतीर्विश्वमायन्गर्भं दधाना जनयन्ती-रग्निम्। ततो देवानार्ठ० समवर्ततासुरेकः कस्मै देवाय हविषा विधेम॥ इति शुद्धोदकेन॥ २०॥ पुनः निम्न मन्त्रेण वस्त्रेण संमार्ज्य तेनैव सुगन्धितैलेनाभ्यज्य—ॐ यज्ञा यज्ञा वो अग्नये गिरा गिरा च दक्षसे। प्र प्र वयममृतं जातवेदसं प्रियं मित्रं न शर्ठ०सिषम्॥ ततः—ॐ द्रुपदादिव मुमुचानः स्विन्नः स्नातो मलादिव। पूतं पवित्रेणेवाज्यमापः शुन्धन्तु मैनसः॥ इति मन्त्रेण यवशालिगोधूममसूरिकाद्यामलकचूर्णैरुद्धर्त्य ततः—ॐ या ते रुद्र शिवा तनूरघोराऽपापकाशिनी। तया नस्तन्वा शन्तमया गिरिशन्ताभिचाक-शीहि॥ इति मन्त्रेण यक्ष्मकर्दमेनजटा-मास्यानुनिम्पेत्—ततस्तृतीयपङ्क्तिस्थकलशद्वयेन—ॐ मा नस्तोके

तनये मा न आयुषि मा नो गोषु मा नो अश्वेषु रीरिषः। मा नो वीरान् रुद्र भामिनो वधीर्हविष्मन्तः सदमित्त्वा हवामहे॥ १॥ ॐ प्र तद्विष्णुः स्तवते वीर्येण मृगो न भीमः कुचरो गिरिष्ठाः। यस्योरुषु त्रिषु विक्रमणेश्वधिक्षियन्ति भुवनानि विश्वा॥ २॥ इति मन्त्र द्वयेन क्रमेण स्नपयेत्।

चतुर्थपङ्क्तिस्थैः षड्भिः क्रमेण—ॐ आप्यायस्व समेतु ते विश्वतः सोम वृष्ण्यम्। भवा वाजस्य संगथे॥ इति पञ्चामृतेन॥ १॥ ॐ उरुर्ठ०हि राजा वरुणश्चकार सूर्याय पन्थामन्वेतवा उ। अपदे पादा प्रतिधातवेऽकरुतापवक्ता हृदयाविधश्चित्। नमो वरुणायाधिष्ठितो वरुणस्य पाशः॥ २॥ ॐ सं ते पयार्ठ०सि समु यन्तु वाजाः सं वृष्ण्या न्यभितातिषाहः। आप्यायमानो अमृताय सोम दिवि श्रवार्ठ० स्युत्तमानिधिष्व॥ इति शुद्धोदकेन॥ ३॥ ॐ आप्यायस्व मदिन्तम सोम विश्वेभिरर्ठ० शुभिः। भवा नः सप्रथस्तमः सखा वृधे॥ इति शुद्धोदकेन॥ ४॥ ॐ अप्स्वग्ने सधिष्टव सौषधीरनु रुध्यसे। गर्भे सन् जायसे पुनः॥ इति शुद्धोदकेन॥ ५॥ ॐ अपार्ठ० रसमुद्वयसर्ठ०सूर्ये सन्तर्ठ० समाहितम्। अपार्ठ० रसस्य यो रसस्तं वो गृह्णाम्युत्तममुपयामगृहीतोऽसीन्द्राय त्वा जुष्टं गृह्णाम्येष ते योनिरिन्द्राय त्वा जुष्टतमम्॥ इति शुद्धोदकेन॥ ६॥ अथ पञ्चमपङ्क्तिस्थैश्चतुर्दशभिः क्रमेण—ॐ गन्धद्वारां दुराधर्षां नित्यपुष्टां करिषिणीम्। ईश्वरीं सर्वभूतानां तामिहोप ह्वये श्रियम्॥ इति गन्धोदकेन॥ १॥ ॐ यज्ञा यज्ञा वो अग्नये गिरा गिरा च दक्षसे। प्र प्र वयममृतं जातवेदसं प्रियं मित्रं न शर्ठ०सिषम्॥ इति कषायोदकेन॥ २॥ ॐ या ओषधीः पूर्वा जाता देवेभ्यस्त्रियुगं पुरा। मनैनु बभ्रूणामहर्ठ०शतं धामानि सप्त च॥ इति सर्वौषधिजलेन॥ ३॥ ॐ ओषधीः प्रतिमोदध्वं पुष्पवतीः प्रसूवरीः। अश्वा इव सजित्वरीर्वीरुधः पारयिष्णवः॥ इति पुष्पोदकेन॥ ४॥ ॐ द्यौः शान्तिरन्तरिक्षर्ठ० शान्तिः पृथिवी शान्तिरापः शान्तिरोषधयः शान्तिः। वनस्पतयः शान्तिर्विश्वे देवाः शान्तिर्ब्रह्म शान्तिः सर्वर्ठ० शान्तिः शान्तिरेव शान्तिः सा मा शान्तिरेधि॥

इति शान्त्युदकेन॥ ५॥ ॐ याः फलिनीर्या अफला अपुष्पा याश्च पुष्पिणीः। बृहस्पतिप्रसूतास्ता नो मुञ्चन्त्वर्ठ०हसः॥ इति फलोद-केन॥ ६॥ ॐ हिरण्यगर्भः समवर्त्तताग्रे भूतस्य जातः पतिरेक आसीत्। स दाधार पृथिवीं द्यामुतेमां कस्मै देवाय हविषा विधेम॥ इति सुवर्णोदकेन॥ ७॥ ॐ हविष्मतीरिमा आपो हविष्माँ२ आ विवासति। हविष्मान्देवो अध्वरो हविष्माँ२॥ अस्तु सूर्यः॥ इति गोशृङ्गोदकेन॥ ८॥ ॐ धान्यमसि धिनुहि देवान्प्राणाय त्वोदानाय त्वा व्यानाय त्वा। दीर्घामनु प्रसितिमायुषे धां देवो वः सविता हिरण्यपाणिः प्रतिगृभ्णात्वच्छिद्रेण पाणिनाचक्षुषे त्वामहीनां पयोऽसि॥ इति सप्तधान्योदकेन॥ ९॥ ॐ अग्ने सहस्व पृतना अभिमातीरपास्य। दुष्टरस्तरन्नरातीर्वर्चोधा यज्ञ वाहसि॥ इति सहस्रच्छिद्रकलशेन॥ १०॥ ॐ या ओषधीः सोमराज्ञीर्विष्ठिताः पृथिवीमनु। बृहस्पतिप्रसूता अस्यै संदत्त वीर्यम्॥ इति पुनः सर्वौषधिकलशेन॥ ११॥ ॐ नमोऽस्तु सर्पेभ्यो ये के च पृथिवीमनु। ये अन्तरिक्षे ये दिवि तेभ्यः सर्पेभ्यो नमः॥ इति पञ्चपल्लवोदकेन॥ १२॥ ॐ अष्टौ व्यख्यत्ककुभः पृथिव्यास्त्रीधन्व योजना सप्त सिन्धून्। हिरण्याक्षः सविता देव आगाद्दधद्रत्ना दाशुषे वार्याणि॥ इति नवरत्नोदकेन॥ १३॥ ॐ इमं मे वरुण श्रुधी हवमद्या च मृडय। त्वामस्युराचके॥ इति तीर्थोदकजलेन॥ १४॥

तीर्थोदकजलेन चतुर्दश वेदिपरितो अष्टभिः समुद्रसंज्ञिवः क्रमेणतत्र—ॐ कया नश्चित्र आभुवदूती सदावृधः सखा। कया शचिष्ठयाऽवृता॥ इति क्षारोदधिकलशेन॥ १॥ ॐ आप्यायस्व समेतु ते विश्वतः सोम वृष्ण्यम्। भवा वाजस्य संगथे॥ इति क्षीरोदधिकलशेन॥ २॥ ॐ दधिक्राव्णो अकारिषं जिष्णोरश्वस्य वाजिनः। सुरभि नो मुखा करत्प्रण आयूर्ठ०षि तारिषत्॥ इति दध्युदधिकलशेन॥ ३॥ ॐ घृतवती भुवनानामभिश्रियोर्वी पृथ्वी मधुदुघे सुपेशसा। द्यावा पृथिवी वरुणस्य धर्मणा विष्कभिते अजरे भूरिरेतसा॥ इति घृतोदधिकलशेन॥ ४॥ ॐ

पयः पृथिव्यां पयः ओषधीषु पयो दिव्यन्तरिक्षे पयो धाः। पयस्वतीः प्रदिशः सन्तु मह्यम्॥ इति इक्षुरसोदकेन॥५॥ ॐ देवं बर्हिर्वारितीनामध्वरे स्तीर्णमश्विभ्यामूर्णम्रदाः सरस्वत्या स्योनमिन्द्र ते सदः। ईशायै मन्युठं० राजानं बर्हिषा दधुरिन्द्रियं वसुवने वसुधेयस्य व्यन्तु यज॥ इति सुरोदधिकलशेन॥६॥ ॐ स्वादिष्ठया मदिष्ठया पवस्व सोम धारया। इन्द्राय पातवे सुतः॥ इति स्वादूदधिकलशस्थितजलेन॥७॥ ॐ सरस्वती योन्यां गर्भमन्तरश्विभ्यां पत्नी सुकृतं बिभर्ति। अपाठं० रसेन-वरुणो न साम्नेन्द्रठं० श्रियै जनयन्नप्सु राजा॥ इति गर्भोदधिजलेन॥८॥

अथ षष्ठपङ्क्तिस्थैर्दशभिः क्रमेण स्नापयेत्—ॐ त्रातारमिन्द्र-मवितारमिन्द्रठं० हवे हवे सुहवठं० शूरमिन्द्रम्। ह्वयामिशक्रं पुरुहूत-मिन्द्रठं० स्वस्ति नो मघवा धात्विन्द्रः॥ इति कदम्बजलेन॥१॥ ॐ त्वं नो अग्ने तव देव पायुभिर्मघोनो रक्ष तन्वश्च वन्द्य। त्राता तोकस्य तनये गवामस्यनिमेषठं० रक्षमाणस्तव व्रते॥ इति शाल्मलिजलेन॥२॥ ॐ यमाय त्वाङ्गिरस्वते पितृमते स्वाहा। स्वाहा घर्माय स्वाहा घर्मः पित्रे॥ इति जम्बूजलेन॥३॥ ॐ असुन्वन्तमयजमानमिच्छ स्तेनस्येत्यामन्विहि तस्करस्य। अन्यमस्मदिच्छ सा त इत्या नमो देवि निर्ऋते तुभ्यमस्तु॥ इति अशोकजलेन॥४॥ ॐ तत्त्वा यामि ब्रह्मणा वन्दमानस्तदाशास्ते यजमानो हविर्भिः। अहेडमानो वरुणेह बोध्युरुशठं० स मा न आयुः प्रमोषीः॥ इति प्लक्षजलेन॥५॥ ॐ आ नो नियुद्भिः शतिनीभिरध्वरठं० सहस्रिणीभिरुपयाहि यज्ञम्। वायो अस्मिन्सवने मादयस्व यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः॥ इति चूतजलेन॥६॥ ॐ वयठं० सोम व्रते तव मनस्तनूषु बिभ्रत। प्रजावन्तः सचेमहि॥ इति वटजलेन॥७॥ ॐ तमीशानं जगतस्तस्थुषस्पतिं धियं जिन्वमवसे हूमहे वयम्। पूषा नो यथा वेदसामसद्वृधे रक्षिता पायुरदब्धः स्वस्त्ये॥ इति बिल्वजलेन॥८॥ ॐ नमोऽस्तु सर्पेभ्यो ये के च पृथिवी मनु। ये अन्तरिक्षे ये दिवि तेभ्यः सर्पेभ्यो नमः॥ इति नागवल्लीजलेन॥९॥ ॐ ब्रह्म जज्ञानं प्रथमं

पुरस्ताद्वि सीमतः सुरुचो वेन आवः। स बुध्न्या उपमा अस्य विष्ठाः सतश्च योनिमसतश्च विवः॥ इति पलाशजलेन॥ १०॥

अथ सप्तमपङ्क्तिस्थैश्चतुर्भिरेकेन वा—ॐ आ नो भद्राः क्रतवो यन्तु विश्वतोऽदब्धासो अपरीतास उद्भिदः। देवा नो यथा सदमिद्‌वृधे असन्नप्रायुवो रक्षितारो दिवेदिवे॥ इत्यनुवाकेन।

तदुपरान्त सूक्ष्म वस्त्र से धूमावती देवी की मूर्ति को पोछकर आचार्य पुरुषसूक्त का उच्चारण करें। पुनः निम्न मंत्र का उच्चारण तीर्थोदक के द्वारा धूमावती देवी की मूर्ति को स्नान कराकर सुगन्धित श्वेत वस्त्र से पोंछे—ॐ विश्वतश्चक्षुरुत विश्वतो मुखो विश्वतो बाहुरुत विश्वतस्पात्। सं बाहुभ्यां धमति सं पतत्रैर्द्यावाभूमी जनयन्देव एकः। इति मन्त्रेण सकलीकृत्य देवीमावाहयेत्—

आवाहनम्—ॐ धूम्रा बभ्रुनीकाशा पितॄणार्ठ० सोमवतां बभ्रवो धूम्रनीकाशाः पितॄणां बर्हिषदां कृष्णा बभ्रुनीकाशाः पितॄणामग्निष्वा-त्तानां कृष्णाः पृषन्तस्त्रैयम्बकाः॥ अथवा ॐ धूम्रान्वसन्तायालभते श्वेतान् ग्रीष्माय कृष्णान्वर्षाभ्योऽरुणाञ्छरदे पृषतो हेमन्ताय पिशङ्गाञ्छिशिराय॥ ॐ धूमावत्यै नमः, आवाहनं समर्पयामि। आवाहनार्थे पुष्पं समर्पयामि।

आसनम्—ॐ पुरुष एवेदर्ठ० सर्वं यद्भूतं यच्च भाव्यम्। उतामृतत्वस्येशानो यदन्नेनातिरोहति॥ ॐ धूमावत्यै नमः, आसनं समर्पयामि।

पाद्यम्—ॐ एतावानस्य महिमातो ज्यायांश्च पूरुषः। पादो ऽस्य विश्वा भूतानि त्रिपादस्यामृतं दिवि॥ ॐ धूमावत्यै नमः, पाद्यं समर्पयामि।

अर्घ्यम्—ॐ त्रिपादूर्ध्व उदैत्पुरुषः पादोऽस्येहा भवत्पुनः। ततो विष्वङ् व्यक्रामत्साशनानशने अभि॥ ॐ धूमावत्यै नमः, अर्घ्यं समर्पयामि।

स्नानम्—ॐ तस्माद्यज्ञात्सर्वहुतः संभृतं पृषदाज्यम्। पशूंस्तांश्चक्रे वायव्यानारण्या ग्राम्याश्च ये॥ ॐ धूमावत्यै नमः, स्नानीयं जलं समर्पयामि।

पञ्चामृतस्नानम्—ॐ पञ्च नद्यः सरस्वतीमपियन्ति सस्रोतसः। सरस्वती तु पञ्चधा सो देशेऽभवत्सरित्॥ ॐ धूमावत्यै नमः, पञ्चामृतस्नानं समर्पयामि। शुद्धोदकस्नानं समर्पयामि। आचमनीयं जलं समर्पयामि।

शुद्धोदकस्नानम्—ॐ शुद्धवालः सर्वशुद्धवालो मणिवालस्त ऽआश्विनाः। श्येतः श्येताक्षोऽरुणस्ते रुद्राय पशुपतये कर्णा यामा ऽअवलिप्ता रौद्रा नभोरूपाः पार्जन्याः॥ ॐ धूमावत्यै नमः, शुद्धोदकस्नानं समर्पयामि। शुद्धोदकस्नानान्ते आचमनीयं जलं समर्पयामि।

वस्त्रम्—ॐ तस्माद्यज्ञात्सर्वहुत ऋचः सामानि जज्ञिरे। छन्दाꣳसि जज्ञिरे तस्माद्यजुस्तस्मादजायत॥ ॐ धूमावत्यै नमः, वस्त्रद्वयं समर्पयामि। आचमनीयं जलं समर्पयामि।

यज्ञोपवीतम्—ॐ तस्मादश्वा अजायन्त ये के चोभयादतः। गावो ह जज्ञिरे तस्मात्तस्माज्जाता अजावयः॥ ॐ धूमावत्यै नमः, यज्ञोपवीतं समर्पयामि। यज्ञोपवीतान्ते आचमनीयं जलं समर्पयामि।

चन्दनम्—ॐ तं यज्ञं बर्हिषि प्रौक्षन्पुरुषं जातमग्रतः। तेन देवा अयजन्त साध्या ऋषयश्च ये॥ ॐ धूमावत्यै नमः, चन्दनं समर्पयामि।

अक्षतान्—ॐ अक्षन्नमीमदन्त ह्यव प्रिया अधूषत। अस्तोषत स्वभानवो विप्रा नविष्ठया मती योजान्विन्द्रते हरी॥ ॐ धूमावत्यै नमः, अक्षतान् समर्पयामि।

रक्तपुष्पमालाम्—ॐ श्रीश्च ते लक्ष्मीश्च पत्न्यावहोरात्रे पार्श्वे नक्षत्राणि रूपमश्विनौ व्यात्तम्। इष्णन्निषाणामुम्म इषाण सर्वलोकं म इषाण॥ ॐ धूमावत्यै नमः, रक्तपुष्पमालां समर्पयामि।

दूर्वाङ्कुरान्—ॐ काण्डात्काण्डात् प्ररोहन्ती परुषः परुषस्परि। एवा नो दूर्वे प्रतनु सहस्रेण शतेन च॥ ॐ धूमावत्यै नमः, दूर्वाङ्कुरान् समर्पयामि।

सुगन्धिद्रव्यम्—ॐ त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्द्धनम्। उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीयमाऽमृतात्॥ ॐ धूमावत्यै नमः, सुगन्धिद्रव्यं समर्पयामि।

धूपम्—ॐ धूरसि धूर्व धूर्वन्तं धूर्व तं योऽस्मान् धूर्वति तं धूर्व यं वयं धूर्वामः। देवानामसि वह्नितमर्ठ० सस्नितमं पप्रितमं जुष्टतमं देवहूतमम्॥ ॐ धूमावत्यै नमः, धूपमाघ्रापयामि।

दीपम्—ॐ चन्द्रमा मनसो जातश्चक्षोः सूर्यो अजायत। श्रोत्राद्वायुश्च प्राणश्च मुखादग्निरजायत॥ ॐ धूमावत्यै नमः, दीपं दर्शयामि। (हस्तप्रक्षालनम्)

नैवेद्यम्—ॐ नाभ्या आसीदन्तरिक्षर्ठ० शीर्ष्णो द्यौः समवर्त्तत। पद्भ्यां भूमिर्दिशः श्रोत्रात्तथा लोकाँ२॥ अकल्पयन्॥ ॐ धूमावत्यै नमः, नैवेद्यं निवेदयामि। मध्ये आचमनीयं जलं समर्पयामि। उत्तरापोशनार्थे पुनर्नैवेद्य निवेदयामि। हस्तप्रक्षालनार्थे मुखप्रक्षालनार्थे च जलं समर्पयामि। पुनराचमनीयं जलं समर्पयामि।

ताम्बूलम्—ॐ उत स्मास्य द्रवतस्तुरण्यतः पर्णं न वेरनुवाति प्रगर्धिनः। श्येनस्येव ध्रजतो अङ्कसं परि दधिक्राब्णः सहोर्जा तरित्रतः स्वाहा॥ ॐ धूमावत्यै नमः, मुखवासार्थं ताम्बूलं (पूगफल-एला-लवङ्गसहितम्) समर्पयामि।

दक्षिणाम्—ॐ हिरण्यगर्भः समवर्त्तताग्रे भूतस्य जातः पतिरेक आसीत्। स दाधार पृथिवीं द्यामुतेमां कस्मै देवाय हविषा विधेम्॥ ॐ धूमावत्यै नमः, दक्षिणां समर्पयामि।

नीराजनम्—ॐ इदर्ठ० हविः प्रजननं मे अस्तु दशवीरर्ठ० सर्वगणर्ठ० स्वस्तये। आत्मसनि प्रजासनि पशुसनि लोकसन्यभयसनि।

अग्निः प्रजां बहुलां मे करोत्वन्नं पयो रेतो अस्मासु धत्त ॥ ॐ धूमावत्यै नमः, नीराजनं समर्पयामि।

मन्त्रपुष्पाञ्जलिम्—**ॐ यज्ञेन यज्ञमयजन्त देवास्तानि धर्माणि प्रथमान्यासन्। ते ह नाकं महिमानः सचन्त यत्र पूर्वे साध्याः सन्ति देवाः॥ ॐ धूमावत्यै नमः, मन्त्रपुष्पाजलिं समर्पयामि।**

प्रदक्षिणाम्—**ॐ ये तीर्थानि प्रचरन्ति सृकाहस्ता निषङ्गिणः। तेषाᳫं सहस्रयोजनेऽव धन्वानि तन्मसि॥ ॐ धूमावत्यै नमः, प्रदक्षिणां समर्पयामि।** इस प्रकार से पूजा समाप्त करवाके यजमान से स्नान वस्त्र, नैवेद्यादि व सभी वस्तुएँ आचार्य शिल्पी को प्रदान करवाके रथयात्रा कर्म करावें।

शय्यायामर्चाधिवासः

आचार्य और ब्राह्मण स्नान मण्डप में स्थित धूमावती देवी की प्रार्थना निम्न पुरुषसूक्त के सोलह मन्त्रों का उच्चारण करके यजमान से करावें—

ॐ सहस्रशीर्षा पुरुषः सहस्राक्षः सहस्रपात्।
स भूमिᳫं सर्वत स्पृत्वात्यतिष्ठद्दशाङ्गुलम्॥
पुरुष एवेदᳫं सर्वं यद्भूतं यच्च भाव्यम्।
उतामृतत्वस्येशानो यदन्नेनातिरोहति॥
एतावानस्य महिमातो ज्यायांश्च पूरुषः।
पादो ऽस्य विश्वा भूतानि त्रिपादस्यामृतं दिवि॥
त्रिपादूर्ध्व उदैत्पुरुषः पादोऽस्येहाभवत्पुनः।
ततो विष्वङ् व्यक्रामत्साशनानशने अभि॥
ततो विराडजायत विराजो अधि पूरुषः।
स जातो अत्यरिच्यत पश्चाद्भूमिमथो पुरः॥
तस्माद्यज्ञात्सर्वहुतः संभृतं पृषदाज्यम्।
पशूंस्तांश्चक्रे वायव्यानारण्या ग्राम्याश्च ये॥

तस्माद्यज्ञात्सर्वहुत ऋचः सामानि जज्ञिरे।
छन्दार्ठ०सि जज्ञिरे तस्माद्यजुस्तस्मादजायत॥
तस्मादश्वा अजायन्त ये के चोभयादतः।
गावो ह जज्ञिरे तस्मात्तस्माज्जाता अजावयः॥
तं यज्ञं बर्हिषि प्रौक्षन्पुरुषं जातमग्रतः।
तेन देवा अयजन्त साध्या ऋषयश्च ये॥
यत्पुरुषं व्यदधुः कतिधा व्यकल्पयन्।
मुखं किमस्यासीत्किं बाहू किमूरू पादा उच्येते॥
ब्राह्मणोऽस्य मुखमासीद्बाहू राजन्यः कृतः।
ऊरू तदस्य यद्वैश्यः पद्भ्यार्ठ० शूद्रोऽ अजायत॥
चन्द्रमा मनसो जातश्चक्षोः सूर्यो अजायत।
श्रोत्राद्वायुश्च प्राणश्च मुखादग्निरजायत॥
नाभ्या आसीदन्तरिक्षर्ठ० शीर्ष्णो द्यौः समवर्तत।
पद्भ्यां भूमिर्दिशः श्रोत्रात्तथा लोकाँ २॥ अकल्पयन्॥
यत्पुरुषेण हविषा देवा यज्ञमतन्वत।
वसन्तोऽस्यासीदाज्यं ग्रीष्म इध्मः शरद्धविः॥
सप्तास्यासन्परिधयस्त्रिःसप्त समिधः कृताः।
देवा यद्यज्ञं तन्वाना अबध्नन्पुरुषं पशुम्॥
यज्ञेन यज्ञमयजन्त देवास्तानि धर्म्माणि प्रथमान्यासन्।
ते ह नाकं महिमानः सचन्त यत्र पूर्वे साध्याः सन्ति देवाः॥

प्रार्थना के पश्चात् आचार्य धूमावती देवी को निद्रा से जगाने के लिए निम्न श्लोक का उच्चारण करें—

ॐ उत्तिष्ठोत्तिष्ठ भो! देवि! त्यज निद्रां जगन्मयि।
त्वयि सुप्ते जगत्सुप्तमुत्थिते चोत्थितं जगत्॥

इन दो मन्त्रों से धूमावती की मूर्ति को उठावें—ॐ उत्तिष्ठ ब्रह्मणस्पते देवयन्तस्त्वेमहे। उप प्रयन्तु मरुतः सुदानव इन्द्र प्राशूर्भवा सचा॥ १॥ आमूरज प्रत्यावर्तयेमाः केतुमद्दुन्दुभिर्वावदीति। समश्वपर्णाश्चरन्ति नो नरोऽस्माकमिन्द्र रथिनो जयन्तु॥ २॥ इस मन्त्र से धूमावती की मूर्ति को रथ के ऊपर रखें—ॐ रथे तिष्ठन्नयति वाजिनः पुरो यत्र यत्र कामयते सुषारथिः। अभीशूनां महिमानं पनायत मनः पश्चादनुयच्छन्ति रश्मयः॥

ॐ आ नो भद्राः क्रतवो यन्तु विश्वतोऽदब्धासो अपरीतास उद्भिदः।
देवा नो यथा सदमिद्वृधे असन्नप्रायुवो रक्षितारो दिवे दिवे॥ १ ॥
देवानां भद्रा सुमतिर्ऋजूयतां देवानाꣳ रातिरभि नो निवर्तताम्।
देवानाꣳ सख्यमुपसेदिमा वयं देवा न आयुः प्रतिरन्तु जीवसे॥ २ ॥
तान्पूर्वया निविदा हूमहे वयं भगं मित्रमदितिन्दक्षमस्त्रिधम्।
अर्यमणं वरुणꣳ सोममश्विना सरस्वती नः सुभगा मयस्करत्॥ ३ ॥
तन्नो वातो मयो भुव्वातु भेषजन्तन्माता पृथिवी तत्पिता द्यौः।
तद्ग्रावाणः सोमसुतो मयोभुवस्तदश्विना शृणु तन्धिष्ण्या युवम्॥ ४ ॥
तमीशानं जगतस्तस्थुषस्पतिं धियं जिन्वमवसे हूमहे वयम्।
पूषा नो यथा वेदसामसद्वृधे रक्षिता पायुरदब्धः स्वस्तये॥ ५ ॥
स्वस्ति न इन्द्रो वृद्धश्रवाः स्वस्ति नः पूषा विश्ववेदाः।
स्वस्ति नस्तार्क्ष्यो अरिष्टनेमिः स्वस्ति नो बृहस्पतिर्दधातु॥ ६ ॥
पृषदश्वा मरुतः पृश्निमातरः शुभं यावानो विदथे षु जग्मयः।
अग्निजिह्वा मनवः सूरचक्षसो विश्वे नो देवा अवसागमन्निह॥ ७ ॥
भद्रं कर्णेभिः शृणुयाम देवा भद्रं पश्येमाक्षभिर्यजत्राः।
स्थिरैरङ्गैस्तुष्टुवाꣳसस्तनूभिर्व्यशेमहि देवहितं यदायुः॥ ८ ॥
शतमिन्नु शरदो अन्ति देवा यत्रा नश्चक्रा जरसं तनूनाम्।
पुत्रासो यत्र पितरो भवन्ति मा नो मध्या रीरिषतायुर्गन्तोः॥ ९ ॥
अदितिर्द्यौरदितिरन्तरिक्षमदितिर्माता स पिता स पुत्रः।
विश्वे देवा अदितिः पञ्चजना अदितिर्जातमदितिर्जनित्वम्॥ १०॥

द्यौः शान्तिरन्तरिक्षर्ठ० शान्तिः पृथिवी
शान्तिरापः शान्तिरोषधयः शान्तिः।
वनस्पतयः शान्तिर्विश्वे देवाः शान्तिर्ब्रह्म शान्तिः
सर्वर्ठ० शान्तिः शान्तिरेव शान्तिः सा मा शान्तिरेधि ॥ ११ ॥
यतो यतः समीहसे ततो नो अभयं कुरु।
शं नः कुरु प्रजाभ्योऽभयं नः पशुभ्यः ॥ १२ ॥

इति सूक्तेन मङ्गलतूर्यघोषेण च सह मण्डप-प्रासादग्रामप्रादक्षिण्येन आनीय प्रतिष्ठामण्डपपश्चिमद्वारे रथादवतार्य तेनैव द्वारेण—ॐ आ कृष्णेन रजसा वर्तमानो निवेशयन्नमृतं मर्त्यं च। हिरण्ययेन सविता रथेनादेवो याति भुवनानि पश्यन्॥ इति मन्त्रेण मध्ये प्रवेश्य वेद्याः पश्चिमभागे सर्वतोभद्रपीठे प्राङ्मुख धूमावतीदेवीमुपवेश्य स्वयमुदङ्मुखः यजमानः स्वशाखोक्तवधिना मधुपर्कं कुर्यात्। कमलाकरस्तु—ॐ अन्नपतेऽन्नस्य नो देह्यनमीवस्य शुष्मिणः। प्रप्र दातारं तारिष ऊर्जं नो धेहि द्विपदे चतुष्पदे॥

सङ्कल्पः—देशकालौ स्मृत्वा, धूमावतीप्रतिष्ठाकर्मणि अर्चाधिवासनं करिष्ये। इति सङ्कल्प्य वेद्यां कुशानास्तीर्य तदुपरि प्राक्शिरस्कां याम्यशिरस्कां वा शय्यायां स्थाप्य धूमावतीलिङ्गकमन्त्रेण निदध्यात्।

ततः स्थाप्यधूमावतीलिङ्गकमन्त्रेण शय्यायां धूमावतीदेवीं निवेश्य स्वापयित्वा त्रिभिर्वस्त्रैर्देवीमाच्छाद्य देव्याः शिरोदेशे भूमौ खण्डखाद्ययुतं सहिरण्यं निद्राकलशं—ॐ आपो देवीः प्रतिगृभ्णीत भस्मैतत्स्योने कृणुध्वर्ठ० सुरभा उ लोके। तस्मै नमन्तां जनयः सुपत्नीर्मातेव पुत्रं बिभृताप्स्वेनत्॥ इति मन्त्रेण प्रतिष्ठाप्य—ॐ आप्यायस्व समेतु ते विश्वतः सोम वृष्ण्यम्। भवा वाजस्य संगथे॥ इति मन्त्रेण मधुसर्पिर्भ्यां धूमावतीमभ्यर्च्य—ॐ या ते रुद्र शिवा तनूरघोराऽपापकाशिनी। तया नस्तन्वा शन्तमया गिरिशन्ताभिचाकशीहि॥ इति मन्त्रेण तैलसर्षपकल्कै

रुपलिप्य गन्धादिना तत्तद् धूमावतीं पञ्चोपचारैरभ्यर्च्य—ॐ बृहस्पते परिदीया रथेन रक्षोहामित्राँअपबाधमानः। प्रभञ्जन्सेनाः प्रमृणो युधा जयन्नस्माकमेध्यविता रथानाम्॥ इति मन्त्रेण परिसरं दद्यात्। ॐ विश्वतश्चक्षुरुत विश्वतोमुखो विश्वतोबाहुरुत विश्वतस्पात्। सं बाहुभ्यां धमति सं पतत्रैर्द्यावाभूमी जनयन्देव एकः॥ इति मन्त्रेण धूमावतीदेव्याः पाद—नाभि—वक्षः—शिरांसि आलम्भेत्। प्रत्यालम्भनं मन्त्रावृत्तिः। ॐ बृहस्पते परिदीया रथेन रक्षोहामित्राँअपबाधमानः। प्रभञ्जन्सेनाः प्रमृणो युधा जयन्नस्माकमेध्यविता रथानाम्॥ इति मन्त्रेण दक्षिणपार्श्वे छत्रम्। ॐ वातो वा मनो वा गन्धर्वाः सप्तविर्ठ०शतिः। अग्रेऽश्वमयुञ्जस्ते अस्मिञ्जवमादधुः॥इति मन्त्रेण वामपार्श्वे व्यञ्जनं चामरं च। ॐ त्रिणि पदा विचक्रमे विष्णुर्गोपा अदाभ्यः। अतो धर्माणि धारयन्॥ इति मन्त्रेण चरणदेशे पादुके। ॐ आजिघ्र कलशं मह्या त्वा विशन्त्विन्दवः। पुनरूर्जा निवर्तस्व सा नः सहस्त्रं धुक्ष्वोरुधारा पयस्वती पुनर्माविशताद्रयिः॥ इति मन्त्रेण पार्श्वयोः शान्तिकुम्भौ। ॐ अभि त्वा शूर नोनुमोऽदुग्धाः इव धेनवः। ईशानमस्य जगतः स्वर्दृशमीशानमिन्द्र तस्थुषः॥ इति मन्त्रेण धूमावतीदेवस्य पुरतः भाजन–आसन–दर्पण–घण्टा–भक्ष्य–भोजान्नपयो–दधि–मधु–घृतादिकं गृहोपस्करजातं जलपात्रं भोजनपात्रं–वस्त्रभूषणादिकं–ताम्बूल-सामग्रीञ्च परिकल्पयेत्।

सङ्कल्पः—देशकालौ संकीर्त्य, धूमावतीदेव्यर्चाधिवासनाङ्गभूत-मिन्द्रादिदशलोकपालेभ्यः भूतेभ्यश्च बलिदानमहङ्करिष्ये। इति सङ्कल्प्य प्रतिष्ठामण्डपाद्बहिर्गत्वा—ॐ त्रातारमिन्द्रमवितारमिन्द्रर्ठ० हवे हवे सुहवर्ठ० शूरमिद्रम्। ह्वयामि शक्रं पुरुहूतमिन्द्रर्ठ० स्वस्तिनो मघवा धात्विन्द्रः॥ १॥ त्वं नो अग्ने तव देव पायुभिर्मघोनो रक्ष तन्वश्च वन्द्य। त्राता तोकस्य तनये गवामस्य निमेषर्ठ० रक्षमाणस्तव व्रते॥ २॥ यमाय त्वाङ्गिरस्वते पितृमते स्वाहा। घर्माय स्वाहा घर्मः पित्रे॥ ३॥

असुन्वन्तमयजमानमिच्छ स्तेनस्येत्यामन्विहि तस्करस्य। अन्यमस्मदिच्छ सा त इत्या नमो देवि निर्ऋते तुभ्यमस्तु॥ ४॥ तत्त्वा यामि ब्रह्मणा वन्दमानस्तदाशास्ते यजमानो हविर्भिः। अहेडमानो वरुणेह बोध्युरुशर्ठ० स मा न आयुः प्रमोषी॥ ५॥ आ नो नियुद्भिः शतिनीभिरध्वरर्ठ० सहस्त्रिणीभिरुपयाहि यज्ञम्। वायो अस्मिन्सवने मादयस्व यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः॥ ६॥ वयर्ठ० सोम व्रते तव मनस्तनूषु बिभ्रतः। प्रजावन्तः सचेमहि॥ ७॥ तमीशानं जगतस्तस्थुषस्पतिं धियं जिन्वमवसे हूमहे वयम्। पूषा नो यथा वेदसामसद्वृधे रक्षिता पायुरदब्धः स्वस्त्ये॥ ८॥ अस्मे रुद्रा मेहना पर्वतासो वृत्रहत्ये भरहूतौ सजोषाः। यः शर्ठ०सते स्तुवते धायि पज्र इन्द्र ज्येष्ठा अस्माँ२॥ अवन्तु देवाः॥ ९॥ स्योना पृथिवी नो भवानृक्षरा निवेशनि। यच्छा नः शर्म सप्रथाः॥ १०॥ इत्यादि दशमन्त्रैः गन्धादिभिः पञ्चोपचारैरिन्द्रादीन् सम्पूज्य तत्तन्मन्त्रेण माषभक्तबलीन्दद्यात्। पुनः प्रतिदिक्षु दशसु—ॐ त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम्। ऊर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय माऽमृतात्॥ इति मन्त्रान्ते 'ॐ भूतेभ्यो बलिरयमुपतिष्ठतु' इत्युक्त्वा सर्वभूतेभ्यो बलिं दद्यात्। पुनः आचमनं कुर्यात्। तद्यथा—ॐ नमः पूर्वादिग्वासिभ्योदिक्पति–दिग्भूताधिपति–दिग्गणपति-दिग्-रुद्र-दिङ्मातृ-दिक्क्षेत्रपालेभ्यो नमः। एवं प्रतिदिशं बलिं दत्त्वाऽऽचामेत्। तत आचार्यः—ॐ पराय धूमावत्यात्मने स्वाहा।

आचार्य धूमावती देवी के लिए एक हजार आठ अथवा एक सौ आठ या अट्ठाइस अथवा आठ बार तिल या यव द्वारा यजमान से कुण्ड में हवन करावें।

धूमावतीप्रतिष्ठायां विहितन्यासाः

यजमान वेदी पर पूर्वाभिमुख धूमावतीदेवी की मूर्ति के सामने बैठकर निम्न संकल्प करे—

संकल्पः—देशकालौ सङ्कीर्त्य, अमुकगोत्रोऽमुकशर्माहम् (वर्माऽहम्, गुप्तोऽहम्, दासोऽहम्) अस्मिन् धूमावतीदेव्यर्चाधिवासन-कर्मणि देविकलासान्निध्यर्थं प्रणवादिन्यासान् करिष्ये।

यजमान अपने दायें हाथ में लाल पुष्प लेकर निम्न क्रम से न्यास कार्य करे—

प्रणवन्यासः

१. ॐ अं नमः पादयोर्न्यसामि। २. ॐ उं नमः हृदये न्यसामि। ३. ॐ मं नमः ललाटे न्यसामि।

व्याहृतिन्यासः

१. ॐ भूः नमः पादयोः न्यसामि। २. ॐ भुवः नमः हृदये न्यसामि। ३. ॐ स्वः नमः ललाटे न्यसामि।

मातृकान्यासः

१. ॐ अं नमः शिरसि न्यसामि २. ॐ आं नमः मुखे न्यसामि ३. ॐ इं नम : दक्षिणनेत्रे न्यसामि। ४. ॐ ईं नमः वामनेत्रे न्यसामि ५. ॐ उं नमः दक्षिणश्रवणे न्यसामि ६. ॐ ऊं नमः वामश्रवणे न्यसामि ७. ॐ ऋं नमः दक्षिणगण्डे न्यसामि ८. ॐ ॠं वामगण्डे न्यसामि ९. ॐ लृं नमः दक्षिणनासापुटे न्यसामि १०. ॐ लॄं नमः वामनासापुटे न्यसामि ११. ॐ एं नमः ऊर्ध्वदंशनेषु न्यसामि १२. ॐ ऐं अधोदंशनेषु न्यसामि १३. ॐ नमः ऊर्ध्वोष्ठे न्यसामि १४. औं नमः अधोरोष्ठे न्यसामि १५. ॐ अं नमः ललाटे न्यसामि १६. ॐ अः नमः जिह्वायां न्यसामि १७. ॐ यं

नमः त्वचि न्यसामि १८. ॐ रं नमः चक्षुषोर्न्यसामि १९. ॐ लं नमः नासिकायां न्यसामि २०. ॐ वं नमः दशनेषु न्यसामि २१. ॐ शं नमः श्रोत्रयोर्न्यसामि २२. ॐ षं नमः उदरे न्यसामि २३. ॐ सं नमः कटिदेशे न्यसामि २४. ॐ हं नमः हृदये न्यसामि २५. ॐ क्षं नमः नाभौ न्यसामि २६. ॐ लं लिङ्गे न्यसामि २७. ॐ पं फं बं भं मं दक्षिणबाहौ न्यसामि २८. ॐ तं थं दं धं नं वामबाहौ न्यसामि २९. ॐ टं ठं डं ढं णं दक्षिणजङ्घायां न्यसामि ३०. ॐ चं छं जं झं ञं वामजङ्घाया न्यामि ३१. ॐ कं खं गं घं ङं सर्वाङ्गुलिषु न्यसामि।

ऋक्षन्यासः

१. ॐ रविचन्द्राभ्यां नमः नेत्र न्यसामि २. ॐ भौमाय नमः हृदये न्यसामि ३. ॐ बुधाय नमः स्कन्धे न्यसामि ४. ॐ बृहस्पतये नमः जिह्वायां न्यसामि ५. ॐ शुक्राय नमः लिङ्गे न्यसामि ६. ॐ शनैश्चराय नमः ललाटे न्यसामि ७. ॐ राहवे नमः पादयो न्यसामि ८. ॐ केतुभ्यो नमः केशेषु न्यसमि ९. ॐ रोहिणोभ्यो नमः हृदये न्यसामि १०. ॐ मृगशिरसे नमः शिरसि न्यसामि ११. ॐ आर्द्रायै नमः केशेषु न्यसामि १२. पुनर्वसुभ्यां नमः ललाटे न्यसामि १३. ॐ पुष्याय नमः मुखे न्यसामि १४. ॐ आश्लेषाभ्यो नमः नासिकायां न्यसामि १५. ॐ मघाभ्यो नमः दन्तेषु न्यसामि १६. ॐ पूर्वाफाल्गुनोभ्यो नमः दक्षिणश्रवणे न्यसामि १७. ॐ उत्तराफाल्गुनीभ्यो नमः वामश्रवणे न्यसामि १८. ॐ हस्ताय नमः हस्तयो न्यसामि १९. ॐ चित्रायै नमः दक्षिणभुजे न्यसामि २०. ॐ स्वात्यै नमः वामभुजे न्यसामि २१. ॐ विशाखाभ्यां नमः हृदि न्यसामि २२. ॐ अनुराधाभ्यो नमः स्तनयो न्यसामि २३. जेष्ठाभ्यो नमः दक्षिण-कुक्षौ न्यसामि २४. ॐ मूलाय नमः वामकुक्षौ न्यसामि २५. ॐ पूर्वा-षाढाभ्यो नमः कटिपार्श्व न्यसामि २६. ॐ उत्तराषाढाभ्यो नमः लिङ्गे न्यसामि २७. ॐ श्रवणधनिष्ठाभ्यो नमः वृषणयो न्यसामि २८. ॐ शत-

भिषाभ्यो नमः नेत्रे न्यसामि २९. ॐ पूर्वाभाद्रपदाभ्यो नमः दक्षिणोरौ न्यसामि ३०. ॐ उत्तराभाद्रपदाभ्यो नमः वामोरौ न्यसामि ३१. ॐ रेवतीभ्यो दक्षिणजङ्घाया न्यसामि ३२. ॐ अश्विनीभ्यां नमः वामजङ्घाया न्यसामि ३३. ॐ भरणीभ्यो नमः दक्षिणपादे न्यसामि ३४. ॐ कृत्तिकाभ्यो नमः वामपादे न्यसामि ३५. ॐ ध्रुवाय नमः नाभ्यां न्यसामि ३६. ॐ सप्तर्षिभ्यो नमः कण्ठे न्यसामि ३७. ॐ मातृमण्डलाय नमः कटिदेशे न्यसामि ३८. ॐ विष्णुपदेभ्यो नमः पादयो न्यसामि ३९. ॐ नागवीथ्यै नमः, ॐ अङ्गवीथ्यै नमः, वनमालादेशे न्यसामि ४०. ॐ ताराभ्यो नमः रोमकूपेषू न्यसामि ४१. ॐ अगस्त्याय नमः कौस्तुभदेशे न्यसामि।

कालन्यासः

१. ॐ चैत्राय नमः शिरसि न्यसामि २. ॐ वैशाखाय नमः मुखे न्यसामि ३. ॐ ज्येष्ठाय नमः हृदये न्यसामि ४. ॐ आषाढाय नमः दक्षिणस्तने न्यसामि ५. ॐ श्रवणाय नमः वामस्तने न्यसामि ६. ॐ भाद्रपदाय नमः उदरे न्यसमि ७. ॐ आश्विनाय नमः कट्यां न्यसामि ८. ॐ कार्तिकाय नमः दक्षिणोरौ न्यसामि ९. ॐ मार्गशीर्षाय नमः वामोरौ न्यसामि १०. ॐ पौषाय नमः दक्षिणजङ्घायां न्यसामि ११. ॐ माघाय नमः वामजङ्घायां न्यसामि १२. ॐ फाल्गुनाय नमः पादयो न्यसामि १३. ॐ सम्वत्सराय नमः दक्षिणोर्ध्वबाहौ न्यसामि १४. ॐ परिवत्वसराय नमः दक्षिणाधोबाहौ न्यसामि १५. ॐ इद्वत्सराय नमः वामोधोबाहौ न्यसामि १६. ॐ अनुवत्सराय नमः वामोर्ध्वबाहौ न्यसामि १७. ॐ पर्वतेभ्यो नमः सन्धिषु न्यसामि १८. ॐ ऋतुभ्यो नमः लिङ्गे न्यसामि १९. ॐ अहोरात्रेभ्यो नमः अस्थिुष न्यसामि २०. ॐ क्षणाय नमः, ॐ लवाय नमः, ॐ कामायै नमः, ॐ काष्ठायै नमः रोमसु न्यसामि २१. ॐ कृतयुगाय नमः मुखे न्यसमि २२. ॐ त्रेतायुगाय नमः हृदये न्यसामि २३. ॐ द्वापराय नमः नितम्बे नमः न्यसामि २४. ॐ

कलियुगाय नमः पादयो न्यसामि २५. ॐ चतुर्दशमन्वन्तरेभ्यो नमः बाह्वो न्यसामि २६. ॐ पराय नमः, ॐ परार्द्धाय नमः, ॐ जङ्घयो न्यसामि २७. ॐ महाकलपाय नमः शरीरे न्यसामि २८. ॐ उदगाय नमः ॐ दक्षिणायनाय नमः पादयो न्यसामि २९. ॐ विषुवद्भ्यो नमः सर्वाङ्गुलिषु न्यसामि।

सर्वदेवसाधारणन्यासः

१. ॐ ब्राह्मणाय नमः मुखे न्यसामि २. ॐ क्षत्रियाय नमः बाह्वो न्यसामि ३. ॐ वैश्याय नमः ऊर्वो न्यसमि ४. ॐ शूद्राय नमः पादयो न्यसमि ५. शङ्करजेभ्यो नमः पादाग्रे न्यसामि ६. ॐ अनुलोमजेभ्यो नमः सर्वाङ्गसन्धिषु न्यसामि ७. ॐ गोभ्यो नमः मुखे न्यसामि ८. ॐ अजाभ्यो नमः, ॐ आविकाभ्यो नमः हस्तयो न्यसामि ९. ॐ ग्रामपशुभ्यो नमः, आरण्यपशुभ्यो नमः ऊर्वो न्यसामि।

स्तोय न्यासः

१. ॐ मेघेभ्यो नमः केशेषु न्यसामि २. ॐ अभ्रेभ्यो नमः रोमसु न्यसामि ३. ॐ नदीभ्यो नमः सर्वगात्रेषु न्यसामि ४. ॐ समुद्रेभ्यो नमः कुक्षिदेशे न्यसामि।

वेदन्यासः

१. ॐ ऋग्वेदाय नमः शिरसि न्यसामि २. ॐ यजुर्वेदाय नमः दक्षिणभुजे न्यसामि ३. ॐ सामवेदाय नमः वामभुजे न्यसामि ४. ॐ सर्वोपनिषद्भ्यो नमः हृदये न्यसामि ५. ॐ इतिहासपुराणेभ्यो नमः जङ्घयो न्यसामि ६. ॐ अर्थर्वाङ्गिरसेभ्यो नमः नाभौ न्यसामि ७. ॐ कल्पसूत्रेभ्यो नमः ॐ व्याकरणेभ्यो नमः वक्त्रे न्यसामि ८. ॐ तर्केभ्यो नमः कण्ठे न्यसामि ९. मीमांसायै नमः, ॐ निरुक्ताय नमः हृदये न्यसामि १०. ॐ छन्दःशास्त्रेभ्यो नमः, ॐ ज्योतिः शास्त्रेभ्यो नमः

नेत्रयोर्न्य न्यसामि ११. ॐ गीताशास्त्रेभ्यो नमः, ॐ भूतशास्त्रेभ्यो नमः श्रोत्रयोर्न्य न्यसामि १२. ॐ आयुर्वेदाय नमः दक्षिणभुजे न्यसामि १३. ॐ धननुर्वेदाय नमः वामभुजे न्यसामि १४. ॐ योगशास्त्रेभ्यो नमः हृदये न्यसामि १५. ॐ नीतिशास्त्रेभ्यो नमः पादयोर्न्य न्यसामि १६. ॐ वश्यतन्त्राय नमः ओष्ठयोर्न्य न्यसामि।

वैराजन्यासः

१. ॐ दिवे नमः मूर्ध्नि न्यसामि २. ॐ सूर्यलोकाय नमः, चन्द्रालोकाय नमः नेत्रयोर्न्य न्यसामि ३. ॐ वायु लोकाय नमः घ्राणे न्यसामि ४. ॐ व्योम्ने नमः नाभौ न्यसामि ५. ॐ समुद्रेभ्यो नमः वस्तिदेशे न्यसामि ६. ॐ पृथिव्यै नमः पादयोर्न्य न्यसामि।

मूर्तिन्यासः

१. ॐ हिरण्यगर्भाय नमः शिरसि न्यसामि २. ॐ कृष्णाय नमः केशेषु न्यसामि ३. ॐ रुद्राय नमः ललाटे न्यसामि ४. ॐ यमाय नमः भ्रुवो न्यसामि ५. ॐ अश्विभ्यां नमः कर्णयो न्यसामि ६. ॐ वैश्वानराय नमः मुखे न्यसामि ७. ॐ मरुद्भ्यो नमः घ्राणे न्यसामि ८. ॐ वसुभ्यो नमः कण्ठे न्यसामि ९. ॐ रुद्रेभ्यो नमः दन्तेषु न्यसामि १०. ॐ सरस्वत्यै नमः जिह्वायां न्यसामि ११. ॐ इन्द्राय नमः दक्षिणभुजे न्यसामि १२. ॐ वलये नमः वामभुजे न्यसामि १३. ॐ प्रह्लादाय नमः दक्षिणस्तने न्यसामि १४. ॐ विश्वकर्मणे नमः वामस्तने न्यसामि १५. ॐ नारदाय नमः दक्षिणकुक्षौ न्यसामि १६. ॐ अनन्तादिभ्यो वामकुक्षौ न्यसामि १७. ॐ वरुणाय नमः हस्तयो न्यसामि १८. ॐ मित्राय नमः पादयो न्यसामि १९. ॐ विश्वेभ्यो देवेभ्यो नमः ऊर्वो न्यसामि २०. ॐ पितृभ्यो नमः जान्वो न्यसामि २१. ॐ यक्षेभ्यो नमः जङ्घयो न्यसामि २२. ॐ राक्षसेभ्यो नमः गुल्फयो न्यसामि २३. ॐ

पिशाचेभ्यो नमः पादयो न्यसामि २४. ॐ असुरेभ्यो नमः पादाङ्गुलिषु न्यसामि २५. ॐ विद्याधरेभ्यो नमः पार्ष्ण्यो न्यसामि २६. ॐ ग्रहेभ्यो नमः पादतलयो न्यसामि २७. ॐ गुह्यकेभ्यो नमः गुह्ये न्यसामि २८. ॐ पूतनादिभ्यो नमः नखेषु न्यसामि २९. ॐ गन्धर्वेभ्यो नमः ओष्ठयो न्यसामि ३०. ॐ कार्तिकेताय नमः दक्षिणपार्श्वे न्यसामि ३१. ॐ गणेशाय नमः वामपार्श्वे न्यसामि ३२. ॐ मत्स्याय नमः मूर्ध्नि न्यसामि ३३. ॐ कूर्माय नमः पादयो न्यसामि ३४. ॐ नृसिंहाय नमः ललाटे न्यसामि ३५. ॐ वराहाय नमः जङ्घयो न्यसामि ३६. ॐ वामनाय नमः मुखे न्यसामि ३७. ॐ परशुरामाय नमः हृदये न्यसामि ३८. ॐ रामाय नमः वाहुषु न्यसामि ३९. ॐ कृष्णाय नमः नाभ्यां न्यसामि ४०. ॐ बुधाय नमः बुद्धौ न्यसामि ४१. ॐ कलङ्किने नमः जानुदेशे न्यसामि ४२. ॐ केशवाय नमः शिरसि न्यसामि ४३. ॐ नारायणाय नम : मुखे न्यसामि ४४. ॐ माधवाय नमः ग्रीवायां न्यसामि ४५. ॐ गोविन्दाय नमः बाह्वो न्यसामि ४६. ॐ विष्णावे नमः हृदये न्यसामि ४७. ॐ मधुसूदनाय नमः पृष्ठे न्यसामि ४८. ॐ त्रिविक्रमाय नमः कट्यट्यो न्यसामि ४९. ॐ वामाय नमः जठरे न्यसामि ५०. ॐ श्रीधराय नमः, ॐ हृषीकेशाय नमः जङ्घयो न्यसामि ५१. ॐ पद्मनाभाय नमः गुल्फयो न्यसामि ५२. ॐ दामोदराय नमः पादयो न्यसामि।

क्रतुन्यासः

१. ॐ अश्वमेधाय नमः मूर्ध्नि न्यसामि २. ॐ नरमेघाय नमः ललाटे न्यसामि ३. ॐ राजसूयाय नमः मुखे न्यसामि ४. ॐ गोसवाय नमः कण्ठे न्यसामि ५. ॐ द्वादशाहाया नमः हृदि न्यसामि ६. ॐ अहीनेभ्यो नमः नाभौ न्यसामि ७. ॐ सर्वजिद्भ्यो नमः न्यसामि ८. ॐ सर्वजिद्भ्यो नमः दक्षिणकट्यां न्यसामि ९. ॐ सर्वमेघाय नमः वामकट्यां न्यसामि १०. ॐ अग्निष्टोमाय नमः लिङ्गे न्यसामि ११. ॐ

आप्तोर्यामाय नमः ऊर्वो न्यसामि १२. ॐ षोडशिने नमः जान्वो न्यसामि १३. ॐ उक्थ्याय नमः दक्षिणजङ्घाया न्यसामि १४. ॐ वाजपेयाय नमः वामजङ्घायां न्यसामि १५. ॐ अत्यग्निष्टोमाय नमः दक्षिबाहौ न्यसामि १६. ॐ चातुर्मास्याय नमः वामबाहौ न्यसामि १७. ॐ सौत्रामणये नमः हस्तेषु न्यसामि १८. ॐ पश्विष्टिभ्यो नमः अङ्गुलीषु न्यसामि १९. ॐ दर्शपूर्णमासाभ्यां नमः नेत्रयो न्यसामि २०. ॐ सर्वेष्टिभ्यो नमः रोमकूपेषु न्यसामि २१. ॐ स्वाहाकाराय नमः, ॐ वषट्काराय नमः स्तनयो न्यसामि २२. ॐ पञ्चमहायज्ञेभ्यो नमः पादाङ्गुलीषु न्यसामि २३. ॐ आहवनीयाय नमः मुखे न्यसामि २४. ॐ दक्षिणाग्नये नमः हृदये न्यसामि २५. ॐ गार्हपात्याय नमः नाभौ न्यसामि २६. ॐ वेद्यै नमः उदरे न्यसामि २७. ॐ प्रवर्ग्याय नमः भूषणे न्यसामि २८. ॐ सवनेभ्यो नमः पादयो न्यसामि २९. ॐ इध्मेभ्यो नमः बाहुषु न्यसामि ३०. ॐ दर्भेभ्यो नमः केशेषु न्यसामि।

गुणन्यासः

१. ॐ धर्माय नमः मूर्ध्नि न्यसामि २. ॐ ज्ञानाय नमः हृदि न्यसामि ३. ॐ वैराग्याय नमः गुह्ये न्यसामि ४. ॐ ऐश्वर्याय नमः पादयो न्यसामि।

धूमावत्यायुधन्यासः

१. ॐ वज्राय नमः शिरसि न्यसामि, २. ॐ शक्तये नमः मस्तके न्यसामि, ३. ॐ दण्डाय नमः दक्षिणभुजे न्यसामि, ४. ॐ खड्गाय नमः वामभुजे न्यसामि, ५. ॐ पाशाय नमः जठरपृष्ठदेशेषु न्यसामि, ६. ॐ अङ्कुशाय नमः लिङ्गे वृषणयोश्च न्यसामि, ७. ॐ गदायै नमः दक्षिणजान्वो न्यसामि, ८. ॐ शूलाय नमः वामजान्वोन्यसामि, ९. ॐ खेटाय नमः गुल्फयो न्यसामि, १०. ॐ चक्राय नमः जङ्घयो न्यसामि।

धूमावतीशक्तिन्यासः

ॐ कामदायै नमः ललाटे न्यसामि ॥ १ ॥ ॐ मानदायै नमः मुखे न्यसामि ॥ २ ॥ ॐ नक्तायै नमः गुह्ये न्यसामि ॥ ३ ॥ ॐ मधुरायै नमः कण्ठे न्यसामि ॥ ४ ॥ ॐ मधुराननायै नमः दिक्षु न्यसामि ॥ ५ ॥ ॐ नर्मदायै नमः हृदि न्यसामि ॥ ६ ॥ ॐ भोगदायै नमः जठरे न्यसामि ॥ ७ ॥ ॐ नन्दायै नमः नेत्रे न्यसामि ॥ ८ ॥ ॐ प्राणदायै सर्वाङ्गे न्यसामि ॥ ९ ॥

विशिष्टन्यासाः

मातृकान्यासः

विनियोगः—तत्र ओमस्य मातृकामन्त्रस्य ब्रह्मा ऋषिर्गायत्री छन्दो मातृकासरस्वतीदेवता हलो बीजानि स्वराश्शक्तयस्तदुभयङ्कीलक-मभीष्टसिद्ध्यर्थे विनियोगः ।

शिरसि ब्रह्मणे ऋषये नमः। मुखे गायत्रीछन्दसे नमः। हृदि मातृकासरस्वत्यै देवतायै नमः। लिङ्गे हल्भ्यो बीजेभ्यो नमः। पादयोस्स्वरेभ्यश्शक्तिभ्यो नमः सर्व्वाङ्गे तदुभयकीलकाय नमः ॥

षडङ्गन्यासः

ॐ अँकँखँगँघँङँआँ हृदयाय नमः। इँचँछँजँझँञँईँ शिरसे स्वाहा। उँटँठँडँढँणँऊँ शिखायै वषट्। एँतँथँदँधँनँऐँ कवचाय हुम्। ओंपँफँबँभँमँऔँ नेत्रत्रयाय वौषट्, अँयँरँलँवँशँषँहँक्षँअः अस्त्राय फट् ॥

करन्यासः

ॐ अँकँखँगँघँङँआँ अङ्गुष्ठाभ्यां नमः। इँचँछँजँझँञँईँ तर्जनीभ्यां स्वाहा। उँटँठँडँढँणँऊँ मध्यमाभ्यां वषट्। एँतँथँदँधँनँऐँ अनामिकाभ्यां हुम्। ओंपँफँबँभँमँऔँ कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्। अँयँरँलँवँशँषँसँहँक्षँअः करतलकरपृष्ठाभ्यां फट् ॥

बहिर्म्मातृकान्यासः

ॐ ललाटे अँ नमः। मुखवृत्ते आँ नमः। दक्षनेत्रे इं नमः। वामनेत्रे ईं नमः। दक्षकर्ण्णे उँ नमः। वामकर्णे ऊँ नमः। दक्षनासायाम् ऋँ नमः। वामनासायाम् ॠँ नमः। दक्षगण्डे लृँ नमः। वामगण्डे लॄँ नमः। ऊर्ध्वोष्ठे एँ नमः। अधरोष्ठे ऐं नमः। ऊर्ध्वदन्तपङ्क्तौ ओं नमः। अधोदन्तपङ्क्तौ औं नमः। शिरसि अँ नमः। मुखे अः नमः। दक्षिणबाहुमूले कँ नमः। कूर्प्परे खँ नमः। मणिबन्धे गँ नमः। अङ्गुलीमूले घँ नमः। अङ्गुलग्रे ङँ नमः। वामबाहुमूले चँ नमः, कूर्प्परे छँ नमः। मणिबन्धे जँ नमः। अङ्गुलीमूले झँ नमः, अङ्गुल्यग्रे ञँ नमः। दक्षिणोरुमूले टँ नमः। जानुनि ठँ नमः। गुल्फे डँ नमः, अङ्गुलीमूले ढँ नमः। अङ्गुल्यग्रे णँ नमः। वामोरुमूले तँ नमः। जानुनि थँ नमः। गुल्फे दँ नमः। अङ्गुलीमूले धँ नमः। अङ्गुल्यग्रे नँ नमः। दक्षपार्श्वे पँ नमः। वामपार्श्वे फँ नमः। पृष्ठे बँ नमः। नाभौ भँ नमः। उदरे मँ नमः। हृदये यँ त्वगात्मने नमः। दक्षांसे रँ असृगात्मने नमः, ककुदि लँ मांसात्ले नमः। वामांसे वँ मेदआत्मने नमः। हृदयाद्दक्षभुजाग्रान्तं शमस्थ्यात्मने नमः। हृदयाद्वामभुजाग्रान्तं षँमज्ञात्मने नमः। हृदयाद्दक्ष-पादाग्रान्तं सँ शुक्रात्मने नमः। हृदादिवामपादाग्रान्तं हँ आत्मने नमः। हृदयान्मस्तकान्तं क्षंपरमात्मने नमः॥

इन न्यासों को करने बाद पुनः निम्न न्यासों को करें—

ऋष्यादिन्यासः—ॐ पिप्पलाद ऋषये नमः शिरसि। निवृच्छन्दसे नमः मुखे। ज्येष्ठादेवतायै नमः हृदि। धूं बीजाय नमः गुह्ये। स्वाहा शक्तये नमः पादयोः। धूमावती कीलकाय नमः नाभौ। विनियोगाय नमः सर्वाङ्गे।

करन्यासः—ॐ धूं धूँ अङ्गुष्ठाभ्यां नमः। ॐ धूं तर्जनीभ्यां नमः। ॐ मां मध्यमाभ्यां नमः। ॐ वं अनामिकाभ्यां नमः। ॐ त्यैं कनिष्ठिकाभ्यां नमः। स्वाहा करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः।

हृदयादिषडङ्गन्यासः—ॐ धूं धूं हृदयाय नमः। ॐ धूं शिरसे स्वाहा। ॐ मां शिखायै वषट्। ॐ वं कवचाय हुम्। ॐ त्यैं नेत्रत्रयाय वौषट्। ॐ स्वाहा अस्त्राय फट्।

सर्वदेववैदिकमन्त्रन्यासः

१. ॐ अग्निमीले पुरोहितं यज्ञस्य देवमृत्विजम्॥ होतारं रत्नधातम्॥ पादयो न्यसामि॥ २. ॐ इषेत्वोर्ज्जेत्वाव्वायवस्थदेवोवः सविताप्प्रार्पयतु- श्रेष्ठतमा यकर्मणऽआप्प्यायध्वमघ्न्याऽइन्द्रायभागंप्रजावतीरनमीवाऽअ- यक्ष्मामावस्तेनइशतमाघसर्ठ०सो ध्रुवाऽअस्मिन्गोपतौस्यात बह्वीर्यज- मानस्यपशून्पाहि॥ गुल्फयो न्यसामि॥ ३. ॐ अग्नआयाहिवीतयेगृणानो- हव्यदातये॥ निहोतासत्सिबर्हिषि॥ जङ्घयो न्यसामि॥ ४. ॐ शन्नोदेवी रभिष्टय ऽआपो भवन्तु पीतये। शं य्योरभिस्त्रवन्तु नः॥ जान्वो न्यसामि॥ ५. ॐ एका च मे तिस्रश्च्च मे तिस्रश्च्च मे पञ्च च मे पञ्च च मे सप्त च मे सप्त च मे नव च मे नव च मऽ एकादश च मऽ एका दश च मे त्रयोदश च मे त्रयोदश च मे पञ्चदश च मे पञ्चदश च मे सप्तदश च मे सप्तदश च मे नवदश च मे नवदश च मऽ एकविर्ठ० शतिश्च्च मऽ एकविर्ठ० शतिश्च्च मे त्रयोविर्ठ० शतिश्च्च मे त्रयोविर्ठ० शतिश्च्च म पञ्चविर्ठ० शतिश्च्च मे पञ्चविर्ठ० शतिश्च्च मे सप्तविर्ठ० शतिश्च्च मे सप्तविर्ठ० शतिश्च्च मे नवविर्ठ० शतिश्च्च मे नवविर्ठ० शतिश्च्च मऽ एकत्रिर्ठ० शच्च मऽ एक त्रिर्ठ० शच्च मे त्रयस्त्रिर्ठ० शच्च मे यज्ञेन कल्प्यन्ताम्॥ ६. ॐ स्वस्तिनऽइन्द्रोवृद्धश्रवाः स्वस्तिनः पूषा विश्ववेदाः। स्वस्ति- नस्ताक्ष्यौऽअरिष्टनेमिः स्वस्तिनोबृहस्पतिर्द्दधातु॥ जठरे न्यसामि॥ ७. ॐ दीर्घायुस्तऽओषधेखनिता यस्मै च त्वा खनाम्यहम्। अथोत्वन्दीर्घायु- र्भूत्वाशतवल्शाविरोहतात्॥ हृदये न्यसामि॥ ८. ॐ विश्वतश्चक्षुरुत विश्वतोमुखो विश्वतोबाहुरुत विश्वतस्प्पात्। सं बाहुभ्यां धमति सम्पतत्रैर्द्यावाभूमी जनयन् देव ऽएकः॥ कण्ठे न्यसामि॥ ९. ॐ त्रातार- मिन्द्रमवितारमिन्द्रर्ठ० हवेहवे सुहवर्ठ० शूरमिन्द्रम्। ह्वयामि शक्क्रं पुरुहूतमिन्द्रर्ठ० स्वस्ति नो मघवा धात्त्विन्द्रः॥ वक्त्रे न्यसामि॥ १०. ॐ त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्द्धनम्। उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्यो-

र्मुक्षीय माऽमृतात्॥ स्तनयोर्नेत्रयोश्च न्यसामि॥ ११. ॐ मूर्द्धानन्दिवो-ऽअरतिं पृथिव्या वैश्वानरमृत ऽआ जातमग्निम्। कविर्ठ० सम्म्राजम-तिथिं जनानामासन्ना पात्रं जनयन्त देवाः॥ मूर्ध्नि न्यसामि॥

धूमावतीमूर्तौ षोडशन्यासान्तरं निवृत्तिन्यासः कार्यः

ॐ ह्रीं अं निवृत्त्यै नमः शिरसि न्यसामि॥ १॥ ॐ ह्रीं आँ प्रतिष्ठायै नमः मुखे न्यसामि॥ २॥ ॐ ह्रीं इं विद्यायै नमः दक्षिणनेत्रे न्यसामि॥ ३॥ ॐ ह्रीं ईं शान्त्यै नमः वामनेत्रे न्यसामि॥ ४॥ ॐ ह्रीं उं धुन्धिकायै नमः दक्षिणश्रोत्रे न्यसामि॥ ५॥ ॐ ह्रीं ऊं दीपिकायै नमः वामश्रोत्रे न्यसामि॥ ६॥ ॐ ह्रीं ऋं रेचिकायै नमः दक्षिणनासापुटे न्यसामि॥ ७॥ ॐ ह्रीं ॠं मोचिकायै नमः वामनासापुटे न्यसामि॥ ८॥ ॐ ह्रीं ऌं परायै नमः दक्षकपोले न्यसामि॥ ९॥ ॐ ह्रीं ॡं सूक्ष्मायै नमः वामकपोले न्यसामि॥ १०॥ ॐ ह्रीं एं सूक्ष्मामृतायै नमः ऊर्ध्व-दन्तपङ्क्तौ न्यसामि॥ ११॥ ॐ ह्रीं ऐं ज्ञानामृतायै नमः अधोदन्तपङ्क्तौ न्यसामि॥ १२॥ ॐ ह्रीं ओं सावित्र्यै नमः ऊर्ध्वोष्ठे न्यसामि॥ १३॥ ॐ ह्रीं औं व्यापिन्यै नमः अधरोष्ठे न्यसामि॥ १४॥ ॐ ह्रीं अं सुरूपायै नमः जिह्वायां न्यसामि॥ १५॥ ॐ ह्रीं अः अनन्तायै नमः कण्ठे न्यसामि॥ १६॥ ॐ ह्रीं कं सृष्ट्यै नमः दक्षबाहुमूले न्यसामि॥ १७॥ ॐ ह्रीं खं ऋध्यै नमः दक्षकूर्परे न्यसामि॥ १८॥ ॐ ह्रीं गं स्मृत्यै नमः दक्षमणिबन्धे न्यसामि॥ १९॥ ॐ ह्रीं घं मेधायै नमः दशकराङ्गुलिमूलेषु न्यसामि॥ २०॥ ॐ ह्रीं ङं कान्त्यै नमः दशाङ्गुल्यग्रेषु न्यसामि॥ २१॥ ॐ ह्रीं चं लक्ष्म्यै नमः वामबाहुमूले न्यसामि॥ २२॥ ॐ ह्रीं छं द्युत्यै नमः वामकूर्परे न्यसामि॥ २३॥ ॐ ह्रीं जं स्थिरायै नमः वाममणिबन्धे न्यसामि॥ २४॥ ॐ ह्रीं झं स्थिरायै नमः वामाङ्गुलिमूले न्यसामि॥ २५॥ ॐ ह्रीं ञं सिध्यै नमः वामाङ्गुल्यग्रेषु न्यसामि॥ २६॥ ॐ ह्रीं टं जरायै नमः दक्षपादमूले न्यसामि॥ २७॥ ॐ ह्रीं ठं पालिन्यै नमः दक्षजानुनि न्यसामि॥ २८॥ ॐ

ह्रीं डं शान्त्यै नमः दक्षगुल्फे न्यसामि॥ २९॥ ॐ ह्रीं ढं ऐश्वर्यै नमः दक्षपादाङ्गुलीषु न्यसामि॥ ३०॥ ॐ ह्रीं णं रत्यै नमः वामपादमूले न्यसामि॥ ३१॥ ॐ ह्रीं तं कामिन्यै नमः दशपादमूले न्यसामि॥ ३२॥ ॐ ह्रीं थं रदायै नमः वामजानुनि न्यसामि॥ ३३॥ ॐ ह्रीं दं ह्लादिन्यै नमः वामगुल्फे न्यसामि॥ ३४॥ ॐ ह्रीं धं प्रीत्यै नमः वामपादाङ्गुलिमूले न्यसामि॥ ३५॥ ॐ ह्रीं नं दीर्घायै नमः वामपादाङ्गुल्यग्रेषु न्यसामि॥ ३६॥ ॐ ह्रीं पं तीक्ष्णायै नमः दक्षिणकुक्षौ न्यसामि॥ ३७॥ ॐ ह्रीं फं सुप्त्यै नमः वामकुक्षौ न्यसामि॥ ३८॥ ॐ ह्रीं बं अभयायै नमः पृष्ठे न्यसामि॥ ३९॥ ॐ ह्रीं भं निद्रायै नमः नाभौ न्यसामि॥ ४०॥ ॐ ह्रीं मं मात्रे नमः उदरे न्यसामि॥ ४१॥ ॐ ह्रीं यं शुद्धायै नमः हृदि न्यसामि॥ ४२॥ ॐ ह्रीं रं क्रोधिन्यै नमः कण्ठे न्यसामि॥ ४३॥ ॐ ह्रीं लं कृपायै नमः ककुदि न्यसामि॥ ४४॥ ॐ ह्रीं वं उत्कायै नमः स्कन्धयोर्न्यसामि॥ ४५॥ ॐ ह्रीं शं मृत्यवे नमः दक्षिणकरे न्यसामि॥ ४६॥ ॐ ह्रीं षं पीतायै नमः वामकरे न्यसामि॥ ४७॥ ॐ ह्रीं सं श्वेतायै नमः दक्षिणपादे न्यसामि॥ ४८॥ ॐ ह्रीं हं अरुणायै नमः वामपादे न्यसामि॥ ४९॥ ॐ ह्रीं त्रं असितायै नमः मूर्द्धादिपादान्तं न्यसामि॥ ५०॥ ॐ ह्रीं क्षं सर्वसिद्धिगौर्यै नमः पादादिमूर्द्धान्ते न्यसामि॥ ५१॥

इति तृतीयो निवृत्तिन्यासो देवीमूर्तौ। निवृत्तिन्यासान्तरं वशिन्यादि-न्यासो देवीमूर्त्तौ कार्यः। तद्यथा— ॐ अं आं इं ईं उं ऊं ऋं ॠं लृं लॄं एं ऐं ओं औं अं अः क्लृं वसिनीवाग्देवतायै नमः ब्रह्मरन्ध्रे न्यसामि॥ १॥ ॐ कं खं गं घं ङं क्लीं ह्रीं कामेश्वरीवाग्देवतायैश्वर्यै नमः ललाटे न्यसामि॥ २॥ ॐ चं छं जं झं ञं क्लीं मोदिनीवाग्देवतायै नमः भ्रूमध्ये न्यसामि॥ ३॥ ॐ टं ठं डं ढं णं ब्ल्यूं विमलावाग्देवतायै नमः कण्ठे न्यसामि॥ ४॥ ॐ तं थं दं धं नं ज्म्रीं अरुणावाग्देवतायै नमः हृदि न्यसामि॥ ५॥ ॐ पं फं बं भं मं ह्स्लब्ल्यूं जयनीवाग्देवतायै नमः नाभौ

न्यसामि॥ ६॥ ॐ यं रं लं वं हस्ल्व्यूं सर्वेश्वरीवाग्देवतायै नमः आधारे न्यसामि॥ ७॥ ॐ शं षं सं हं क्षं क्ष्म्रीं कौलिनीवाग्देवतायै नमः सर्वाङ्गे न्यसामि॥ ८॥

स यथा—स्वहृत्पद्मात् ऐश्वर्यं तेजःपुञ्जं वामनाड्या निःसार्य ब्रह्मरन्ध्रेण प्रतिमाया बुद्धिः कर्मेन्द्रियाणि मनःसहितानि यथास्थानं हृत्पद्मे प्रणवेन पुरुषं न्यसेत्। ॐ मं जीवात्मने नमः ॐ भं प्राणात्मने नमः देवीशरीरे व्यापकं न्यसामि ॥ १॥ ॐ बं बुद्ध्यात्मने ॐ फं अहङ्कारात्मने० ॐ पं मन आत्मने नमः हृदि न्यसामि॥ २॥ ॐ नं शब्दतन्मात्रात्मने नमः शिरसि न्यसामि॥ ३॥ ॐ धं स्पर्शतन्मात्रात्मने नमः मुखे न्यसामि॥ ४॥ ॐ दं रूपतन्मात्रात्मने नमः हृदये न्यसामि॥ ५॥ ॐ थं रसतन्मात्रात्मने नमः हस्तयोर्न्यसामि॥ ६॥ ॐ तं गन्धतन्मात्रात्मने नमः पादयोर्न्यसामि॥ ७॥ ॐ णं श्रोत्रात्मने नमः श्रोत्रयोर्न्यसामि ॥ ८॥ ॐ ढं त्वगात्मने नमः त्वचि न्यसामि॥ ९॥ ॐ डं चक्षुरात्मने नमः नेत्रयोर्न्यसामि॥ १०॥ ॐ ठं जिह्वात्मने नमः जिह्वायां न्यसामि॥ ११॥ ॐ टं घ्राणात्मने नमः घ्राणे न्यसामि॥ १२॥ ॐ ञं वागात्मने नमः वाचि न्यसामि॥ १३॥ ॐ झं पाण्यात्मने नमः पाण्योर्न्यसामि॥ १४॥ ॐ जं पदात्मने नमः पादयोर्न्यसामि॥ १५॥ ॐ छं पांय्वात्मने नमः पायौ न्यसामि॥ १६॥ ॐ चं उपस्थात्मने नमः उपस्थे न्यसामि॥ १७॥ ॐ ङं पृथिव्यात्मने नमः पादयोर्न्यसामि॥ १८॥ ॐ घं अवात्मने नमः वस्तौ न्यसामि॥ १९॥ ॐ गं तेजात्मने नमः हृदि न्यसामि॥ २०॥ ॐ खं प्राणात्मने नमः घ्राणे न्यसामि॥ २१॥ ॐ कं आकाशात्मने नमः शिरसि न्यसामि॥ २२॥ ॐ षं सूर्यात्मने नमः हृत्पुण्डरीकमध्ये न्यसामि॥ २३॥ ॐ सं हृत्पुण्डरीकमध्ये न्यसामि॥ २४॥ ॐ वं वह्न्यात्मने नमः सामात्मने नमः हृत्पुण्डरीकमध्ये न्यसामि॥ २५॥ ततः अर्चाबीजं स्वाभिमतं मूर्त्यास्वमन्त्रेण संयोज्य,

''विशेषबीजाद्यनुपलब्धौ तु देवतानाम्नः आद्यमक्षरं रसानुस्वारं चतुर्थ्यन्तं तत्तद्देवतानाम्ना संयोज्य'' तद्यथा—

ॐ शिं शिवात्मने नमः ॥ १ ॥ ॐ विं विष्ण्वात्मने नमः ॥ २ ॥ ॐ रां रामात्मने नमः ॥ ३ ॥ इत्यादिप्रकारेण देवं भावयित्वा ॥२६ ॥ ॐ यं सर्वात्मने नमः—इति सर्वसाक्षिणं भावयित्वा ॥ २७ ॥ ॐ गं सर्वात्मने नमः इति देवं सर्वतोमुख भावयित्वा ॥ २८ ॥ ॐ वः अनुग्राहकात्मने नमः इति अनुग्राहकं भावयित्वा ॥ २९ ॥ ॐ यं सर्वभूतात्मने नमः इति सर्वभूतकारणं ध्यात्वा ॥ ३० ॥ ॐ लं सर्वसंहारात्मने नमः इति सर्वसंहारात्मकं भावयित्वा ॥ ३१ ॥ ॐ कोषात्मने नमः इति सर्वक्षयकारं ध्यात्वा— ॥ ३२ ॥ तत्त्वत्रयं न्यसेत्—ॐ आत्मतत्वाय नमः ॥ १ ॥ ॐ आत्मतत्वाधिपतये ब्रह्मणे नमः ॥ २ ॥ ॐ पादयोर्न्यसामि ॥ ३३ ॥ ॐ विद्यातत्वाय नमः ॥ १ ॥ ॐ विद्यातत्वाधिपतये विष्णवे नमः ॥ २ ॥ हृदये न्यसामि ॥ ३४ ॥ ॐ शिवतत्वाय नमः ॥ १ ॥ ॐ शिवतत्वाधिपतये रुद्राय नमः ॥ २ ॥ शिरसि न्यसामि ॥ ३५ ॥ इति जीवन्यासः षोडशः सर्वदेवसाधारणः । एते षोडश न्यासाः सर्वदेवसाधारणाः ।

एककुण्डीयपक्षे होमः

तत्रादौ आचार्यः कुण्डस्येशान्यां दक्षिणोत्तरक्रमेण सम्पातोदकार्थं मूर्ति-मूर्तिप-लोकेश स्थापनार्थं च कलशद्वयं महीद्यौरित्यादिना मन्त्रेण संस्थाप्य कलशे पूर्णपात्रोपरि—ॐ स्योना पृथिवी नो भवानृक्षरा निवेशनी। यच्छा नः शर्म सप्रथाः ॥ ॐ पृथिवीमूर्तये नमः। पृथिवी-मूर्तिमावाहयामि ॥ १ ॥ ॐ अघोरेभ्योऽथ घोरेभ्यो घोर घोरतरेभ्यः। शर्वेभ्यः सर्वशर्वेभ्यो नमस्ते अस्तु रुद्ररूपेभ्यः स्वाहा ॥ ॐ पृथिवी-मूर्त्यधिपतये शर्वाय नमः । पृथिवीमूर्त्यधिपतिं शर्वमावाहयामि ॥ २ ॥ ॐ त्रातारमिन्द्रमवितारमिन्द्रꣳ हवे हवे सुहवꣳ शूरमिन्द्रम्। ह्वयामि शक्रं पुरुहूतमिन्द्रꣳ स्वस्तिनो मघवा धात्विन्द्रः ॥ ॐ इन्द्राय नमः। इन्द्रमावाहयामि ॥ ३ ॥ ॐ अग्निं दूतं पुरोदधे हव्यवाहमुप ब्रुवे ॥ देवाँ२ ॥

आसादयादिह॥ ॐ अग्निमूर्तये नमः। अग्निमूर्तिमावाहयामि॥ ४॥ ॐ तेजः पशूनार्ठ० हविरिन्द्रियावत्परिस्त्रुता पयसा सारधं मधु। अश्विभ्यां दुग्धं भिषजा सरस्वत्या सुतासुताभ्याममृतः सोम इन्दुः॥ ॐ अग्निमूर्त्यधिपतये पशुपतये नमः। अग्निमूर्त्यधिपति पशुपतिमावाहयामि॥ ५॥ ॐ त्वं नो अग्ने तव देव पायुभिर्मघोनो रक्ष तन्वश्च वन्द्य। त्राता तोकस्य तनये गवामस्य निमेषर्ठ० रक्षमाणस्तव व्रते॥ ॐ अग्नये नमः। अग्निमावाहयामि॥ ६॥ ॐ सुवीरो वीरान्प्रजनयन्परीह्यभिरायस्पोषेण यजमानम्। संजग्मानो दिवा पृथिव्या शुक्रः शुक्रशोचिषा निरस्तः शण्डः शुक्रस्याधिष्ठानमसि॥ ॐ यजमानमूर्तये नमः। यजमानमूर्तिमावाहयामि॥ ७॥ ॐ उग्रश्च भीमश्च ध्वान्तश्च धुनिश्च। सासह्वाँश्चाभियुग्वा च विक्षिपः स्वाहा॥ ॐ यजमानमूर्त्यधिपतये उग्राय नमः। यजमानमूर्त्यधिपतिमुग्रमावाहयामि॥ ८॥ ॐ यमाय त्वाङ्गिरस्वते पितृमते स्वाहा। घर्माय स्वाहा घर्मः पित्रे॥ ॐ यमाय नमः। यममावाहयामि॥ ९॥ ॐ उदु त्यं जातवेदसं देवं वहन्ति केतवः। दृशे विश्वाय सूर्यर्ठ० स्वाहा॥ ॐ सूर्यमूर्तये नमः। सूर्यमूर्तिमावाहयामि॥ १०॥ ॐ इमा रुद्राय तवसे कपर्दिने क्षयद्वीराय प्रभरामहे मतीः। यथा शमसद्द्विपदे चतुष्पदे विश्वं पुष्टं ग्रामे अस्मिन्ननातुरम्॥ ॐ सूर्यमूर्त्यधिपतये रुद्राय नमः। सूर्यमूर्त्यधिपतिं रुद्रमावाहयामि॥ ११॥ ॐ असुन्वन्तमयजमानमिच्छ स्तेनस्येत्यामन्विहि तस्करस्य। अन्यमस्मदिच्छ सा त इत्या नमो देवि निर्ऋते तुभ्यमस्तु॥ ॐ निर्ऋतये नमः। निर्ऋतिमावाहयामि॥ १२॥ ॐ आपो हि ष्ठा मयोभुवस्ता न ऊर्जे दधातन। महे रणाय चक्षसे॥ ॐ जलमूर्तये नमः। जलमूर्तिमावाहयामि॥ १३॥ ॐ नमो बभ्लुशाय व्याधिनेऽन्नानां पतये नमो नमो भवस्य हेत्यै जगतां पतये नमो नमो रुद्रायाततायिने क्षेत्राणां पतये नमो नमः सूतायाहन्त्यै वनानां पतये नमः॥ ॐ जलमूर्त्यधिपतये भवाय नमः। जलमूर्त्यधिपतिं भवमावाहयामि॥ १४॥ ॐ इमं मे वरुण श्रुधी हवमद्या च मृडय। त्वाम-

वस्युराचके॥ ॐ वरुणाय नमः। वरुणमावाहयामि॥ १५॥ ॐ तव वायवृतस्पते त्वष्टुर्जामातरद्भुत। अवाꣳसि स्यावृणीमहे॥ ॐ वायुमूर्तये नमः। वायुमूर्तिमावाहयामि॥ १६॥ ॐ तमीशानं जगतस्तस्थुषस्पतिं धियं जिन्वमवसे हूमहे वयम्। पूषा नो यथा वेदसामसद्वृधे रक्षिता पायुरदब्धः स्वस्तये॥ ॐ वायुमूर्त्यधिपतये ईशानाय नमः। वायु-मूर्त्यधिपतिमीशानमावाहयामि॥ १७॥ ॐ आ नो नियुद्भिः शतिनीभि-रध्वरꣳ सहस्रिणीभिरुपयाहि यज्ञम्। वायो अस्मिन्सवने मादयस्व यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः॥ ॐ वायवे नमः। वायुमावाहयामि॥ १८॥ ॐ वयꣳ सोम व्रते तव मनस्तनूषु बिभ्रतः। प्रजावन्तः सचेमहि॥ ॐ सोममूर्तये नमः। सोममूर्तिमावाहयामि॥ १९॥ ॐ उग्रं लोहितेन मित्रꣳ सौव्रत्येन रुद्रं दौर्व्रत्येनेन्द्रं प्रक्रीडेन मरुतो बलेन साध्यान्प्रमुदा। भवस्य कण्ठ्यꣳ रुद्रस्यान्तःपार्श्व्यं महादेवस्य यकृच्छर्वस्य वनिष्ठुः पशुपतेः पुरीतत्॥ ॐ सोममूर्त्यधिपतये महादेवाय नमः। सोममूर्त्यधिपतिं महादेव-मावाहयामि॥ २०॥ ॐ अभि त्यं देवꣳसवितारमोण्योः कविक्रतु-मर्चामि सत्यसवꣳरत्नधामभि प्रियं मतिं कविम्। ऊर्ध्वा यस्याऽमतिर्भा अदिद्युतत्सवीमनि हिरण्यपाणिरमिमीत सुक्रतुः कृपा स्वः। प्रजाभ्यस्त्वा प्रजास्त्वानुप्राणन्तु प्रजात्वमनुप्राणिहि॥ ॐ कुबेराय नमः। कुबेर-मावाहयामि॥ २१॥ ॐ आदित्यं गर्भं पयसा समङ्ग्धि सहस्रस्य प्रतिमां विश्वरूपम्। परिवृङ्ग्धि हरसा माभिमꣳस्थाः शतायुषं कृणुहि चीयमानाः॥ ॐ आकाशमूर्तये नमः। आकाशमूर्तिमावाहयामि॥ २२॥ ॐ मृगो न भीमः कुचरो गिरिष्ठाः परावत आजगन्था परस्याः। सृकꣳसꣳशाय पविमिन्द्र तिग्मं वि शत्रून् ताढि वि मृधो नदस्व॥ ॐ आकाशमूर्त्यधिपतये भीमाय नमः। आकाशमूर्त्यधिपतिं भीम-मावाहयामि॥ २३॥ ॐ अभि त्वा शूर नोनुमोऽदुग्धा इव धेनवः। ईशानमस्य जगतः स्वर्दृशमीशानमिन्द्र तस्थुषः॥ ॐ ईशानाय नमः। ईशानमावाहयामि॥ २४॥ एता देवता आवाह्य सम्पूजयेत्।

शान्तिकपौष्टिकहोमः

ततः आचार्यः द्वादशसहस्त्र-त्रिसहस्त्र-अष्टोत्तरसहस्त्र-अष्टोत्तर-शतान्यतमसङ्ख्यया क्रमेण पलाश-उदुम्बर-अश्वत्थ-अपामार्ग-शमीसमिधः—ॐ हिरण्यगर्भः समवर्त्तताग्रे भूतस्य जातः पतिरेक आसीत्। स दाधार पृथिवीं द्यामुतेमां कस्मै देवाय हविषा विधेम॥

इति मन्त्रेण कुण्डसमीपे संस्थाप्य घृताक्ताः कृत्वा—ॐ शन्नोवातः पवतार्ठ० शन्नस्तपतुसूर्यः। शन्नः कनिक्रद्देवः पर्जन्यो अभिवर्षतु॥ १॥ अहानिशं भवन्तुनः शर्ठ० रात्री प्रतिधीयताम्। शन्नऽइन्द्राग्नीभवता-मवोभिः शन्नऽइन्द्रा वरुणारातहव्या॥ २॥ शं नो देवीरभिष्टय आपो भवन्तु पीतये! शं य्योरभिस्त्रवन्तु नः॥ ३॥ इति शान्तिकैः॥

ॐ अयमग्निः पुरीष्योरयिमान्पुष्टिवर्द्धनः। अग्ने पुरीष्याभिद्युम्नमभि-सहऽआयच्छस्व॥ १॥ त्वष्टातुरीपोऽअद्‌भुतऽइन्द्राग्नी पुष्टि वर्द्धना। द्विपदाच्छन्द ऽइन्द्रियमुक्षा गौर्न्नवयोदधुः॥ २॥ त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्द्धनम्। उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीयमामृतात्॥ ३॥ इति पौष्टिकैश्च (षड्भिः) वैदिकमन्त्रैः प्रतिमन्त्रं प्रतिद्रव्यं द्विसहस्त्र-एकसहस्त्र-पञ्चशत-अष्टषष्ट्युत्तरशताष्टादशान्यतमसङ्ख्यया जुहुयात्।

वेदादिहोमः

आचार्यः पलाशसमित्-तिल-घृतान्यतमद्रव्येण—१. ॐ अग्निमीडे पुरोहितं यज्ञस्य देवमृत्विजम्। होतारं रत्नधातमम् स्वाहा॥ २. ॐ वौषट् स्वाहा॥ ३. ॐ इषे त्वोर्जे त्वा वायव स्थ देवो वः सविताप्रार्पयतु श्रेष्ठतमाय कर्मण आप्यायध्वमघ्न्या इन्द्राय भागं प्रजावतीरनमीवा अयक्ष्मा मा वस्तेन ईशत माघशर्ठ०सो ध्रुवा अस्मिन्गोपतौ स्यात बह्वीर्यजमानस्य पशून्पाहि स्वाहा॥ ४. ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ तत्सवितु वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि। धियो यो नः प्रचोदयात् स्वाहा॥ ५. ॐ अग्न आ याहि वीतये गृणानो हव्यदातये। नि होता सत्सि बर्हिषि स्वाहा॥

६. ॐ जातवेदसे सुनवाम सोममरातीयतोऽग्नि दहाति वेदः। स नः पर्षदति दुर्गाणि विश्वा नावेव सिन्धुं दुरितात्यग्निः स्वाहा॥ ७. ॐ शन्नो देवी रभिष्टय आपो भवन्तु पीतये। शंय्योरभि स्रवन्तु नः स्वाहा॥ ८. ॐ ब्रह्म जज्ञानं प्रथमं पुरस्ताद्वि सीमतः सुरुचो वेन आवः। स बुध्न्या उपमा अस्य विष्ठाः सतश्च योनिमसतश्च विवः स्वाहा॥ इत्याद्यष्टभिर्मन्त्रैः प्रतिमन्त्रमष्टोत्तरसहस्त्रं, अष्टोत्तरशतं वा जुहुयात्।

मूर्त्यादिहोमः

आचार्यः पलाशसमित्-तिल-घृतान्यतमद्रव्येण मूर्ति-मूर्तिप-लोकपालानां प्रत्येकमष्टोत्तरसहस्त्रमष्टोत्तरशतं वा तत्तदुक्त मन्त्रैर्जुहुयात्।

महाव्याहृतिहोमः

आचार्यः तिल-यव-व्रीहि-चरु-आज्यद्रव्यैः क्रमेण प्रतिद्रव्य-मष्टोत्तरसहस्त्रमष्टोत्तरशतमष्टाविंशति अष्टौ वा—'ॐ भूर्भुवः स्वाहा' इति जुहुयात्।

स्थाप्यधूमावतीलिङ्गकमन्त्रहोमः

एक हजार आठ या एक सौ आठ या अट्ठाईस अथवा आठ बार तिल अथवा घृत से आचार्य हवन करके '**होमकृत**' इस मन्त्र द्वारा धूमावती देवी के दायें कान में होम निवेदित कर उनके '**ॐ धूं धूमावत्यै स्वाहा**' इस मूलमन्त्र का उच्चारण करके आठ आहुति घृत के द्वारा यजमान से प्रदान करावें। पुनः इसी क्रम द्वारा इनके दोनों चरणों का स्पर्श कर उसी मन्त्र से आठ बार दाहिने हाथ से दधि द्वारा हवन करे। तदुपरान्त धूमावती देवी के नाभि में क्षीर से हवन कर, हृदय में मधु से हवन कर आचार्य—**ॐ मूर्धानं दिवो अरतिं पृथिव्या वैश्वानरमृत आ जातमग्निम्। कविर्ठ० सम्राजम-तिथिं जनानामासन्ना पात्रं जनयन्त देवाः स्वाहा॥** इस वैदिक मन्त्र से

घृतादि चतुष्ट्य द्रव्य मिश्रित द्वारा हवन करके धूमावती देवी की मूर्ति के सभी अंगों का स्पर्श यजमान से करावें। इसके उपरान्त ही आचार्य—**ॐ धूम्रा बभ्रुनीकाशा पितृणार्ठ० सोमवतां बभ्रवो धूम्रनीकाशाः पितृणां बर्हिषदां कृष्णा बभ्रुनीकाशाः पितृणामग्निष्वात्तानां कृष्णाः पृषन्तस्त्रैयम्बकाः स्वाहा॥** इस मन्त्र के द्वारा और निम्न पुरुषसूक्त के सोलह मन्त्रों के द्वारा आचार्य धूमावती देवी का हवन यजमान से करावें—

ॐ सहस्त्रशीर्षा पुरुषः सहस्त्राक्षः सहस्त्रपात्।
स भूमिर्ठ० सर्वतः स्पृत्वाऽत्यतिष्ठद्दशाङ्गुलम् स्वाहा॥१॥
पुरुष एवेदर्ठ० सर्वं यद्भूतं यच्च भाव्यम्।
उतामृतत्वस्येशानो यदन्नेनातिरोहति स्वाहा॥२॥
एतावानस्य महिमातो ज्यायांश्च पूरुषः।
पादो ऽस्य विश्वा भूतानि त्रिपादस्यामृतं दिवि स्वाहा॥३॥
त्रिपादूर्ध्व उदैत्पुरुषः पादोऽस्येहाभवत्पुनः।
ततो विष्वङ् व्यक्रामत्साशनानशने अभि स्वाहा॥४॥
ततो विराडजायत विराजो अधि पूरुषः।
स जातो अत्यरिच्यत पश्चाद्भूमिमथो पुरः स्वाहा॥५॥
तस्माद्यज्ञात्सर्वहुतः संभृतं पृषदाज्यम्।
पशूंस्तांश्चक्रे वायव्यानारण्या ग्राम्याश्च ये स्वाहा॥६॥
तस्माद्यज्ञात्सर्वहुत ऋचः सामानि जज्ञिरे।
छन्दार्ठ०सि जज्ञिरे तस्माद्यजुस्तस्मादजायत स्वाहा॥७॥
तस्मादश्वा अजायन्त ये के चोभयादतः।
गावो ह जज्ञिरे तस्मात्तस्माज्जाता अजावयः स्वाहा॥८॥
तं यज्ञं बर्हिषि प्रौक्षन्पुरुषं जातमग्रतः।
तेन देवा अयजन्त साध्या ऋषयश्च ये स्वाहा॥९॥

यत्पुरुषं व्यदधुः कतिधा व्यकल्पयन्।
मुखं किमस्यासीत्किं बाहू किमूरू पादा उच्येते स्वाहा॥ १०॥
ब्राह्मणोऽस्य मुखमासीद् बाहू राजन्यः कृतः।
ऊरू तदस्य यद्वैश्यः पद्भ्यार्ठ० शूद्रोऽ अजायत स्वाहा॥ ११॥
चन्द्रमा मनसो जातश्चक्षोः सूर्यो अजायत।
श्रोत्राद्वायुश्च प्राणश्च मुखादग्निरजायत स्वाहा॥ १२॥
नाभ्या आसीदन्तरिक्षर्ठ० शीर्ष्णो द्यौः समवर्तत।
पद्भ्यां भूमिर्दिशः श्रोत्रात्तथा लोकाँ २॥ अकल्पयन् स्वाहा॥ १३॥
यत्पुरुषेण हविषा देवा यज्ञमतन्वत।
वसन्तोऽस्यासीदाज्यं ग्रीष्म इध्मः शरद्धविः स्वाहा॥ १४॥
सप्तास्यासन् परिधयस्त्रिःसप्त समिधः कृताः।
देवा यद्यज्ञं तन्वाना अबध्नन्पुरुषं पशुम् स्वाहा॥ १५॥
यज्ञेन यज्ञमयजन्त देवास्तानि धर्म्माणि प्रथमान्यासन्।
ते ह नाकं महिमानः सचन्त यत्र पूर्वे साध्याः सन्ति देवाः स्वाहा॥ १६॥

कूर्मशिलादिस्थापनम्

ततः कूर्मशिलाब्रह्मशिलापिण्डिकावाहनपरिवारदेवान् अन्यत्प्रतिमाजातमपि वैदिकैर्नाममन्त्रैर्वा सम्पूज्य प्रतिमावामपार्श्वे सर्वाणि वस्त्राच्छादिनान्यान्यधिवासयेत्तत्र—ॐ यस्य कुर्मो गृहे हविस्तमग्ने वर्धया त्वम्। तस्मै देवा अधिब्रवन्नयं च ब्रह्मणस्पतिः॥ ॐ कूर्मशिलायै नमः, कूर्मशिलामावाहयामि पूजयामि॥ १॥

ॐ ब्रह्मणे ब्राह्मणं क्षत्राय राजन्यं मरुभ्द्यो वैश्यं तपसे शूद्रं तमसे तस्करं नारकाय वीरहणं पाप्मने क्लीबमाक्रयाया अयोगूं कामाय पुँश्चलूमतिक्रुष्टाय मागधम्॥ ॐ ब्रह्मशिलायै नमः, ब्रह्मशिलामावाहयामि पूजयामि॥ २॥

धूमावतीपिण्डिका—ॐ धूम्रा बभ्रुनीकाशा पितृणार्ठ० सोमवतां बभ्रवो धूम्रनीकाशाः पितृणां बर्हिषदां कृष्णा बभ्रुनीकाशाः पितृणामग्निष्वात्तानां कृष्णाः पृषन्तस्त्रैयम्बकाः॥ ॐ धूमावती-पिण्डिकायै नमः। धूमावतीपिण्डिकाम् आवाहयामि स्थापयामि पूजयामि।

स्थापन देश में पूर्व ही मन्त्रों के द्वारा संस्कार करे। तदुपरान्त प्रधान पिण्डिका (धूमावती देवी) के लिए पुरुषसूक्त से न्यास करें। इसी क्रम द्वारा मन्त्रों से पूजन कर अधिवासन करें। तदुपरान्त आचार्य निम्न वाक्यों का उच्चारण करके भगवती धूमावती की पिण्डिका में न्यास करें—ॐ आत्मतत्वाय नमः आत्मतत्वाधिपतये ब्रह्मणे नमः॥१॥ ॐ विद्यातत्वाय नमः विद्यातत्वाधिपतये विष्णवे नमः॥२॥ ॐ शिवतत्वाय नमः शिवतत्वाधिपतये विष्णवे नमः॥३॥ इति तत्वत्रयं पिण्डिकायां न्यसेत्।

ततः—ॐ पृथिवीमूर्तये नमः पृथिवीमूर्तिधिपतिं शर्वाय नमः॥१॥ ॐ अग्निमूर्तये नमः अग्निमूर्त्यधिपतिं पशुपतये नमः॥२॥ ॐ यजमानमूर्तये नमः यजमानमूर्त्यधिपतिमुग्राय नमः॥३॥ ॐ अर्कमूर्तये नमः अर्कमूर्त्यधिपतिं रुद्राय नमः॥४॥ ॐ जलमूर्तये नमः जल-मूर्त्यधिपतिं भवाय नमः॥५॥ ॐ वायुमूर्तये नमः वायुमूर्त्यधिपतिं ईशानाय नमः॥६॥ ॐ इन्द्रमूर्तये नमः इन्द्रमूर्त्यधिपतिं महादेवाय नमः॥७॥ ॐ खमूर्तये नमः खमूर्त्यधिपतिं भीमाय नमः॥८॥ इति विन्यस्य। ॐ ह्रीं श्रीं ह्रां क्षः परब्रह्मणे सर्वाधाराय नमः॥१॥ ॐ ह्रीं श्रीं ह्रां दिव्यतेजो धारिणी शुभगे नमः। इति मन्त्राभ्यां कूर्मादिशिला अधिवासयेदित्यधिवासनम्।

प्रासादाधिवासन कलशस्थापनम्

(प्रथम वेदी)

स्वपनवेदी के दक्षिण वाली वेदी के पीछे बाहर कलश गंगा आदि जल से भरे उदक्संस्थ या प्राक्संस्थ पंक्तिरूप से रख जाते हैं। उनमें बारहवाँ 'स्थपतिसंज्ञक' कलश रखा जाता है। उनमें क्रम से द्रव्यों के प्रक्षेप का विधान मिलता है—

१. मृत्तिका	अग्निर्मूर्धा १५/२०
२. पञ्चपल्लववृक्षीयकषाय	यज्ञा यज्ञाव: २७/४२
३. गोमूत्र	तत्सवितु: ३०/२
४. गोमय	गन्धद्वाराम् (ऋ० प० ११/९)
५. भस्म (प्रसद्य भस्मना)	मा नस्तोके १६/१६
६. गन्धोदक	तत्सवितु: ३०/२
७. गन्धोदक	नम: शंभवाय १६/४१
८. गन्धोदक	हँस: शुचिषत् १०/२४
९. गन्धोदक	या ते रुद्र शिवा तनू: १६/२
१०. गन्धोदक	विष्णो रराटम् ५/२१
११. गन्धोदक	ब्रह्म यज्ञानम् १३/३
१२. गन्धोदक	शतं वोऽ अम्ब १२/७६

(अन्तिम कलश स्थपतिसंज्ञक)

(दूसरी वेदी)

पूर्वोक्त बारहवें कलश को छोड़कर मध्यवेदी के पीछे (पश्चिम भाग में) ग्यारह कलशों के स्थापन का विधान निम्न प्रकार से है—

१. मृत्तिका	मृत्तिका
२. पञ्चपल्लववृक्षीयकषाय	अग्निर्मूर्धा १५/२०

३. गोमूत्र	यज्ञा यज्ञाव: २७/४२
४. गोमय	तत्सवितु: ३/३५
५. भस्म	गन्धद्वारां दुरा (ऋ० प० ११/९)
६. गन्धोदक	मानस्तोके १६/१६
७. गन्धोदक	नम: शंभवाय १६/४१
८. गन्धोदक	हर्ठ० स: शुचिपत् १०/२४
९. गन्धोदक	या ते रुद्र शिवातनु: १६/२
१०. गन्धोदक	विष्णोरराटम् ५/२९
११. गन्धोदक	ब्रह्मज्ञानम् १३/३

(उत्तर वेदी के पीछे स्थापित कलशों में द्रव्य विधान)

प्रथम पंक्ति में कलशों की संख्या ५

१. शुद्धोदक	समुदायत्वा वाताय ३८/७
२. शुद्धोदक	इदमाप: ६/१७
३. शुद्धोदक	आपो देवी: प्रति गृभ्णीत १२/३५
४. शुद्धोदक	इमं मे वरुण २१/१
५. शुद्धोदक	तत्त्वा यामि २१/२

(द्वितीय पंक्ति में कलशों की संख्या २०)

१. अष्टपलमृत्तिका	अग्निर्मूर्धा १५/२०
२. सप्तपलगोवर	वरुणस्योत्तंभनम् ५/३६
३. द्वादशपल गोमूत्र	गन्धद्वारां दुराधर्षाम्
४. मुष्टिपरिमित भस्म	देवीरापो अपात्र पाद्यो ६/२०
५. त्रिपल पञ्चगव्य	तत्सवितु: ३/३५
६. षोडशपल दूध	आपो हि ११/५०
७. बीसपल दधि	प्रसद्य भस्मना १२/३८

८. सातपल घृत	शन्नो देवीः ३६/१२
९. तीनपल सहत	पयः पृथिव्याम् १८/१२
१०. तीनपल शर्करा	यो वः शिवतमः ११/५९
११. शुद्धोदक (केवल)	आप्यायस्व स मे १२/११२
१२. शुद्धोदक ,,	तस्माऽ अरङ्गमा ३६/१६
१३. शुद्धोदक ,,	दधिक्राब्णः २३/३२
१४. शुद्धोदक ,,	युञ्जानः प्रथमम् ११/१
१५. शुद्धोदक ,,	घृतवती भुवनानाम् ३४/४५
१६. शुद्धोदक ,,	देवस्य त्वा
१७. शुद्धोदक ,,	मधुवाताऽ ऋतायते १३/३७
१८. शुद्धोदक ,,	आपोऽअस्मान् ४/२
१९. शुद्धोदक ,,	आयंगौः ३/६
२०. शुद्धोदक ,,	आपो हयद् २७/२५

(तृतीय पंक्ति के कलशों की संख्या २)

१. शुद्धोदक	मा नस्तोके १६/१६
२. शुद्धोदक	प्रतद्विष्णुस्तवते ५/२०

(चतुर्थ पंक्ति के कलशों की संख्या ६)

१. पञ्चामृत	आप्यायस्व समेतु ते १२/११२
२. शुद्धोदक	उरुर्ठ० हि राजा ८/२३
३. शुद्धोदक	सन्ते पयार्ठ० सि ११३
४. शुद्धोदक	आप्यायस्व मन्दितम् १२/१४४
५. शुद्धोदक	अप्स्वग्ने सधि १२/३६
६. शुद्धोदक	अपार्ठ० रसमुद्वयसम् ९/३

(पञ्चम पंक्ति में कलशों की संख्या १४)

१. गन्ध	गन्धद्वारां दुराधर्षाम्
२. पञ्चपल्लवकषाय	यज्ञा यज्ञाव २७/४२
३. सर्वौषधि	याऽओषधीः पूर्वा जाता १२/७५
४. सफेद पुष्प	ओषधीः प्रतिमो १२/७७
५. शान्तिजल	द्यौः शान्तिरन्तरिक्ष ३६/१७
६. आठ फल	याः फलिनीः १२/८९
७. सुवर्ण	हिरण्यगर्भः सम २५/१०
८. गोश्रृंगोदक	हविष्मतीरिमाः ६/२३
९. सप्तधान्य	धान्यमसि ९/२०
१०. सहस्त्रछिद्रकलश (उसके सहायतार्थ एक कलश)	अग्ने सहस्व पृतनाः ९/३७
११. दिव्यसर्वौषधि	याऽ ओषधीः सोमराज्ञीः ३१२/६३
१२. पञ्चपल्लव	नमोऽस्तु सर्पेभ्यः १२/६
१३. नवरत्न	अष्टौ व्यख्यत्यकुम्भः ३४/२४
१४. तीर्थोदक	इमं मे वरुण २१/१

(वेदी के पूर्वादि दिशा और विदिशाओं में समुद्रसंज्ञक अष्ट कलशों की संख्या का कथन)

१. आक्षोदक	कयानश्चित्र ३६/४९
२. दूध	आप्यायस्व १२/११२
३. दधि	दधिक्राब्णः २३/३२
४. घृत	घृतवती भुवनानाम् ३४/४५
५. ईखरस	पयः पृथिव्याम् १८/३६
६. सुरोदक	देवं बर्हिर्वारितीनां दैवम् २४/५७

७. ग्वादुदक	स्वादिष्ठया मदिष्ठया २६/२५
८. गर्भोदक (दर्भोदक या नारी केलोदल)	सरस्वती योन्याम् १९/९

(षष्ठ पंक्ति के कलशों की संख्या १०)

१. कदम्ब	त्रातरमिन्द्रम् २०/५०
२. आल्मली	त्वन्नो अग्ने ३४/१३
३. जंब	यमाय त्वाङ्गिरस्वते ३८/९
४. अशोक	असुन्वन्तम् १२/६२
५. प्लक्ष	तत्त्वा यामि २१/२
६. चूत	आ नो नियुद्धि: २७/२८
७. वट	वयर्ठ० सोम ३/५६
८. विल्व	तमीशानम् २५/१८
९. नागपल्लव	नमोऽस्तु सर्पेभ्य: १३/६
१०. पलाश	ब्रह्म यज्ञानम् १३/३

(सप्तम पंक्ति के कलशों की संख्या ४)

(१) बड़े-बड़े चार कलश अथवा एक कलश जल से भरे होंगे।

१., २., ३., ४. } आ नो भद्रा:— (यजु० अ० २५/१४-२३) इस अनुवाक से।

प्रासादाधिवासनम्

यजमान अपनी पत्नी के साथ प्रतिष्ठामण्डप में जाकर अपने आसन पर बैठे, इस समय यजमान की धर्मपत्नी को पति के दाहिनी ओर बैठना चाहिए। तदुपरान्त यजमान आचमन और प्राणायाम करे और ब्राह्मण शान्तिपाठ करके उससे देशकाल का स्मरण करवाते हुए निम्न संकल्प करावें—

सङ्कल्पः—अस्मिन् प्रासादे धूमावतीदेवताधिष्ठानयोग्यतासिद्ध्यर्थं स्नपनपूर्वकं प्रासादाधिवासनं करिष्ये।

ततः प्रासादे तदग्रे वा दशरेखाभिः पूर्वोत्तराग्राभिरेकाशीतिपदं मण्डलमक्षतैः कृत्वा तेषु सप्तधान्यपुञ्जान् कृत्वा तत्र नवनवकानां मध्यमं कोष्ठं ज्ञात्वा तेषु नवकुम्भानि मध्ये पूर्वादिक्रमेण च—'ॐ महीद्यौ'रित्यादिना विन्यस्य मध्यकुम्भे शमी-उदुम्बर-अश्वत्थ-चम्पक - अशोक - पलाश - प्लक्ष - न्यग्रोध - कदम्ब - आम्र-बिल्व-अर्जुन- इति पल्लवान् 'ॐ सोमाय वनस्यत्यन्तर्गताय नमः' इति मन्त्रेण क्षिपेत्। पूर्वमध्यकुम्भे—पद्मकाष्ठ - गोरोचनदूर्वाङ्कुर - दर्भपिञ्जल - श्वेतसर्षप (पीतसर्षप) श्वेतचन्दन-रक्तचन्दन-जाती (चमेली) पुष्प-नद्यावर्तक (सेवार) मिति 'ॐ सोमाय वनस्यत्यन्तर्गताय नमः' उक्तमन्त्रेण क्षिपेत्। आग्नेयमध्यकुम्भे—यव - व्रीहि - तिल - सुवर्ण-रजत-समुद्रगामिनदी- कूलमृत्तिका - भूम्यसंस्पृष्टगोमयमिति 'ॐ सोमाय वनस्यत्यन्तर्गताय नमः' इति मन्त्रेण क्षिपेत्। याम्ये—सहदेवी-विष्णुक्रान्ता-भृङ्गराज- महौषधी-शमी-शतावरी-श्यामाकमिति 'ॐ सोमाय वनस्यत्यन्तर्गताय नमः' इति मन्त्रेण क्षिपेत्। नैऋत्यकोणे—कदली-पूगीफल-नारिकेल - बिल्व - नारिंग - मातुलिङ्ग - बदरी - आमलकमिति। पश्चिमे—मन्त्र- साधितं पञ्चगव्यम्। वायव्ये—शमी - उदुम्बर - अश्वत्थ - न्यग्रोधपलाश- त्वक्कषायपञ्चकम्। उत्तरे—सहदेवी - शतावरी - शंख - पुष्पीवला - कुमारी - गुडूची- वचा - व्याघ्रीति। ईशाने—अश्वस्थानादिसप्तमृदः।

ततः—हिरण्यवर्णामित्यादि षोडशमन्त्रैः मध्यकुम्भानभिमन्त्र्य शेषान् गन्धोदकपूरितान् त्रिशूत्रावेष्टितान् मध्यमादिकलशानां समन्तान् पूर्वादिक्रमेण अष्टौ-अष्टौ कलशान् विन्यस्य सर्वान्ते एकाशीतिकलशान् संस्थाप्य धूमावती 'ॐ धूं धूमावत्यै नमः' इति मूलमन्त्रेणाभिमन्त्र्य—अन्तर्बहिरधस्तादूर्ध्वे च प्रासादं पञ्चगव्येनाभ्युक्ष्य ॐ मूर्धानं दिवो अरतिं पृथिव्या वैश्वानरमृत आ जातमग्निम्। कविर्ठ० सम्राजमतिथिं जनानामासन्ना पात्रं जनयन्त देवाः ॥ इति वल्मीकमृदाप्रासादं विलिप्य।

तदुपरान्त आचार्य ईशानादि वाले कुम्भ से निम्न मन्त्र का उच्चारण करके स्नान करावें—**ॐ समुद्राय त्वा वाताय स्वाहा सरिराय त्वा वाताय स्वाहा। अनाधृष्याय त्वा वाताय स्वाहा प्रतिधृष्याय त्वा वाताय स्वाहा। अवस्यवे त्वा वाताय स्वाहाऽशिमिदाय त्वा वाताय स्वाहा॥** इसी प्रकार सभी कलशों से स्नान करावें।

पुनः इस मन्त्र का उच्चारण करके वायव्यकोणस्थ कषाय कुम्भ से—**ॐ यज्ञा यज्ञा वो अग्नये गिरा गिरा च दक्षसे। प्र प्र वयममृतं जातवेदसं प्रियं मित्रं न शर्ठ०सिषम्॥**

पुनः इस मन्त्र का उच्चारण करके वारुणसंज्ञक पञ्चगव्य से—**ॐ पयः पृथिव्यां पय ओषधीषु पयो दिव्यन्तरिक्षे पयो धाः। पयस्वतीः प्रदिशः सन्तु मह्यम्॥** निम्न मन्त्र का उच्चारण करके नैर्ऋत्यकोणस्थ कुम्भ से—**ॐ याः फलिनीर्या अफला अपुष्पा याश्च पुष्पिणीः। वृहस्पतिप्रसूतास्ता नो मुञ्चन्त्वर्ठ०हसः॥** पुनः निम्न मन्त्र का उच्चारण करके उत्तर दिशा की ओर स्थित कुम्भ से—**ॐ हर्ठ०सः शुचिषद्वसुरन्तरिक्षसद्धोता वेदिषदतिथि-र्दुरोणसत्। नृषद्वरसदृतसद्व्योमसदब्जा गोजा ऋतजा अद्रिजा ऋतं बृहत्॥** पुनः निम्न मन्त्र का उच्चारण करके पहले वाले कलश से—**ॐ विष्णोरराटमसिविष्णोः श्नप्त्रे स्थोविष्णोः स्यूरसिविष्णोर्ध्रुवोसि।**

वैष्णवमसिविष्णवेत्त्वा॥ पुनः इस मन्त्र का उच्चारण करके अग्निकोण कुम्भ से—**ॐ सोमर्ठ०राजानमवसेऽग्निमन्वारभामहे। आदित्यान्विष्णुर्ठ० सूर्य ब्रह्माणं च बृहस्पतिर्ठ० स्वाहा॥** पुनः निम्न मन्त्र का उच्चारण करके याम्य कुम्भ से—**ॐ विश्वतश्चक्षुरुत विश्वतोमुखो विश्वतोबाहुरुत विश्वतस्पात्। सं बाहुभ्यां धमति सं पतत्रैर्द्यावाभूमी जनयन् देव ऽएकः॥** पुनः इस मन्त्र का उच्चारण करके मध्य कुम्भ से—**ॐ नमोऽस्तु सर्पेभ्यो ये के च पृथिवी मनु। ये अन्तरिक्षे ये दिवि तेभ्यः सर्पेभ्यो नमः॥** तदुपरान्त निम्न मन्त्र का उच्चारण करके प्रागादि क्रम से आठ-आठ प्रतिकोष्ठकलशों के जल से शिखर के सहित प्रासाद को स्नान करावें—**ॐ इदमापः प्रवहतावद्यं च मलं च यत्। यच्चाभिदुद्रोहानृतं यच्च शेपे अभीरुणम्। आपो मा तस्मादेनसः पवमानश्च मुञ्चतु॥**

अब प्रासाद को लाल सूत्र से वेष्टित कर स्नान करावें। तदुपरान्त आचार्य ध्वजा और पताकाओं से चारो ओर आच्छादित करवाके गन्धादि द्वारा यजमान से पूजन करवाकर निम्न श्लोक का उच्चारण करके अधिवासन करावें—

ॐ ह्रीं सर्वदेवमयाचिन्त्य सर्वरत्नोज्वलाकृते।
यावच्चन्द्रश्च सूर्यश्च तावदत्र स्थिरो भव॥

इति मन्त्रेणाधिवासेत्। ततः—धूमावतीवैदिकमन्त्रः—ॐ धूम्रा बभ्रुनीकाशा पितृणार्ठ० सोमवतां बभ्रवो धूम्रनीकाशाः पितृणां बर्हिषदां कृष्णा बभ्रुनीकाशाः पितृणामग्निष्वात्तानां कृष्णाः पृषन्तस्त्रैयम्बकाः॥ इति पिण्डिकावाहनप्रतिमन्त्रमष्टाविंशतिसंख्याकं होमं तिलैराचार्यः कुण्डे एव हुत्वा चतस्रो गा (मण्डपदक्षिणतः स्थिता इति कमलाकरः) ॐ धूमावत्यै च विद्महे संहारिण्यै च धीमहि। तन्नो धूमा प्रचोदयात्। इति धूमावतीगायत्र्या चरुं श्रपयित्वा (धूमावतीगायत्र्यैव श्रपणं निवेदनं चोक्तम्) देव्यै निवेद्य (धूमावतीप्रीत्यर्थं ब्राह्मणान् भोजयित्वा धूमावती मे प्रीयतामिति वदेत्।)

इसके पश्चात् यजमान आचार्य को गाय प्रदान करे और ब्राह्मणों को दक्षिणा देवें। फिर प्रतिष्ठा मण्डप से बाहर निकलकर प्रासाद की ओर मुख करके देवी के रूप का ध्यान करते हुए निम्न श्लोकों का उच्चारण करें—

ॐ पादौ पादशिलास्तस्य जंघापादोर्ध्वमुच्यते।
गर्भश्चैवोदरं ज्ञेयं कटिश्च कटिमेखला॥ १ ॥
स्तम्भाश्च बाहवो ज्ञेया घण्टाजिह्वाप्रकीर्तिता।
दीपः प्राणोऽस्य विज्ञेयो ह्यपानो जलनिर्गमः॥ २ ॥
ब्रह्मस्थान यदेतच्च तन्नाभिः परिकीर्तिता।
हृत्पद्मपिण्डिका ज्ञेया प्रतिमा पुरुषः स्मृताः॥ ३ ॥
पादचारस्त्वहङ्कारो ज्योतिस्तच्चक्षुरुच्यते।
तदूर्ध्वं प्रकृतिस्तस्य प्रतिमात्मा स्मृतो बुधैः॥ ४ ॥
तलकुम्भादधोद्वार तस्य प्रजननं स्मृतम्।
शुकनासा भवेन्नासा गवाक्षः कर्ण उच्यते॥ ५ ॥
कायपालो स्मृतः स्कन्धो ग्रीवाचामलसारिका।
कलशस्तु शिरो ज्ञेयं मज्जादिप्रसरं हितम्॥ ६ ॥
मेदश्चैव सुधां विद्यात्प्रलेपो मांस उच्यते।
अस्थीनि च शिलास्तस्य स्नायुः कीलादयः स्मृता॥ ७ ॥
चक्षुषीशिखरास्तस्य ध्वजाः केशाः प्रकीर्तिताः।
एव पुरुषरूपं ते ध्यात्वा च मनसा सुधीः॥ ८ ॥
जगत्या सह प्रासाद सन्ध्यायां स्थापयेत्ततः।
प्रासादं पूजयेत्पश्चाद् गन्धपुष्पध्वजादिभिः॥ ९ ॥
सूत्रेण वेष्टयेद्देवे वासस्तत्परिकल्पयेत्।
प्रसादमेवमभ्यर्च्य वाहनं चाग्रमण्डपे॥ १०॥

तत आचार्यः स्वकुण्डे—ॐ वास्तोष्पते प्रति जानीह्यस्मान् स्वावेशो अनमीवोभवा नः। यत्वे महे प्रति तं नो जुषस्व शं नो भव द्विपदे शं चतुष्पदे॥ इति मन्त्रेणाष्टोत्तरशतमाज्यतिलान्यतरद्रव्येण हुत्वा जुहुयात्। (पञ्चकुण्ड्यादिपक्षेऽप्ययं होम आचार्यकुण्डे एव) ततः—ॐ त्रातारमिन्द्रमवितारमिन्द्रर्ठ० हवे हवे सुहवर्ठ० शूरमिन्द्रम्। ह्वयामि शक्रं पुरुहूतमिन्दर्ठ० स्वस्ति मघवा धात्विन्द्रः॥ १॥ त्वं नो अग्ने तव देव पायुभिर्मघोनो रक्ष तन्वश्च वन्द्य। त्राता तोकस्य तनये गवामस्य निमेषर्ठ० रक्षमाणस्तव व्रते॥ २॥ यमाय त्वाङ्गिरस्वते पितृमते स्वाहा। घर्माय स्वाहा घर्मः पित्रे॥ ३॥ असुन्वन्तमयजमानमिच्छ स्तेनस्येत्यामन्विहि तस्करस्य। अन्यमस्मदिच्छ सा त इत्या नमो देवि निर्ऋते तुभ्यमस्तु॥ ४॥ तत्त्वा यामि ब्रह्मणा वन्दमानस्तदाशास्ते यजमानो हविर्भिः। अहेडमानो वरुणेह बोध्युरुशर्ठ० समान आयुः प्रमोषीः॥ ५॥ आ नो नियुद्भिः शतिनीभिरध्वरर्ठ० सहस्रिणीभिरुपयाहि यज्ञम्। वायो अस्मिन्सवने मादयस्व यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः॥ ६॥ वयर्ठ० सोम व्रते तव मनस्तनुषु बिभ्रतः। प्रजावन्तः सचेमहि॥ ७॥ तमीशानं जगतस्तस्थुषस्पतिं धियं जिन्वमवसे हूमहे वयम्। पूषा नो यथा वेदसामसद्वृधे रक्षितापायुरदब्धः स्वस्तये॥ ८॥ अस्मे रुद्रा मेहना पर्वतासो वृत्रहत्ये भरहूतौ सजोषाः। यः शर्ठ० सते स्तुवते धायि पज्र इन्द्रज्येष्ठा अस्माँ२॥ अवन्तु देवाः॥ ९॥ स्योना पृथिवि नो भवानृक्षरा निवेशनी। यच्छानः शर्म सप्रथाः॥ १०॥ इत्यादिदशमन्त्रैरिन्द्रादिभ्यो प्रतिष्ठामण्डपाद्बहिरागत्य दिग्बलीन् दत्वा धूमावतीदेविसमीपमागत्य यथासम्भवं सुवर्णादिकं दत्वा देव्यै आत्मानं निवेद्य प्रणमेत्। अथ मण्डपादुत्तरतस्तण्डुलाष्टकदलोपरिस्थभद्रासनोपविष्टं सपरिवारं यजमानं सम्पात कलशजलैरभिषिञ्चेयुः। ततो यजमानः आचार्यमूर्तिपब्राह्मणस्थपत्यादीन्परितोषयेत्।

प्रासादवास्तुपूजनम्

गुरुप्रासाद के ईशानकोण में हस्तमात्र की तीन वप्र या बिना वप्र के चौसठपद के वास्तुपीठ का निर्माण कर आचार्य यजमान से वास्तुपूजन के लिए निम्न संकल्प करावें—

सङ्कल्पः—देशकालौ सङ्कीर्त्य, अस्य वास्तोः शुभतासिद्ध्यर्थं धूमावतीप्रतिष्ठाङ्गभूतं वास्तुदेवतास्थापनं पूजनं च करिष्ये।

आचार्य निम्न श्लोक का उच्चारण करें—

ॐ विशन्तु भूतले नागा लोकपालाश्च सर्वतः।
मण्डपेऽत्रावतिष्ठन्तु आयुर्बलकराः सदा॥

इत्यारभ्य पायसबलिदानान्तं मण्डपवास्तुवत्कुर्यात्। सर्वेभ्यः काञ्चनं दद्याद् ब्रह्मणे गां पयस्विनीम्। तदुपरान्त **'ॐ शिखिने इदं सुवर्णं न मम'। इत्यादि प्रकारेण सुवर्णबलिं आपवत्सातेभ्यो दत्वा—ब्रह्मणे एषा पयस्विनी गोर्न मम। इति ब्रह्मणे गां दत्वा चरक्यादिभ्योऽपि सुवर्णंदद्यादिति। ततः स्वस्वकुण्डे वायव्ये उत्तरे ईशान्यां वा संपातकलशस्थापनं विधिना कुर्यात्। ततो ब्रह्मोपवेशनाद्याज्यभागान्तं कृत्वा यजमानो दक्षिणद्वारपश्चिमे उदङ्मुख उपविश्य द्रव्यत्यागं कुर्यात्। अस्मिन् प्रासादवास्तुपूजनकर्मणि इमानि उपकल्पितानि हवनीयद्रव्याणि या या यक्ष्यमाण देवतास्ताभ्यस्ताभ्यो मया परित्यक्तानि न मम। यथा दैवतानि सन्तु। ततो गणपत्याहुतिः। ततः ''पठध्वम्'' इति द्वारपाल ''यजध्वम्'' इति होतॄन्, ''उत्कृष्टमन्त्रजाप्येन तिष्ठध्वम्'' इति जापकान् प्रेषयेत्। जापकैर्द्वारपालयैश्च स्वस्वजपे क्रियमाणे होमः कार्यः। आदौ गणपत्याहुतिः ततो वास्तुदेवताहोमः ततो ग्रहस्थापनम् ग्रहहोमः कुर्यात्।**

रक्षोघ्नसूक्तम्—**ॐ कृणुष्व पाजः प्रसितिं न पृथ्वीं याहि राजे वामवाँ२॥ ऽइभेन। तृष्वीमनु प्रसितिं द्रूणानोस्तासि विद्ध्य रक्षसस्त-पिष्ठैः॥ १॥ तव भ्रमासऽआशुया पतन्त्यनु स्पृश धृषता शोशुचानः।**

तपूर्ठ०ष्यग्ने जुह्वा पतङ्गानसन्दितो विसृज विष्वगुल्क्का: ॥ २॥ प्रतिस्पशो विसृज तूर्णितमो भवा पायुर्विशो ऽअस्या ऽअदब्धः। यो नो दूरेऽअघशर्ठ०सो यो ऽअन्त्यग्ने मा किष्टे व्यथिरादधर्षीत्॥ ३॥ उदग्ने तिष्ठ प्रत्यातनुष्वन्यमित्राँ२॥ ओषतात्तिग्महेते। यो नो अरातिर्ठ० समिधान चक्रे नीचा तं धक्ष्यतसं न शुष्कम् ॥४॥ ऊर्ध्वो भव प्रतिविध्याध्यस्मदाविष्कृणुष्व दैव्यान्यग्ने। अव स्थिरा तनुहि यातुजूनां जामिमजामिं प्रमृणीहि शत्रूनग्नेष्ट्वा तेजसा सादयामि॥५॥ इति पञ्चमन्त्रात्मकेन रक्षोघ्नसूक्तेन।

पवमानसूक्तम्—ॐ पुनन्तु मा पितरः सोम्यासः पुनन्तु मा पितामहाः पुनन्तु प्रपितामहाः पवित्रेण शतायुषा। पुनन्तु मा पितामहाः पुनन्तु प्रपितामहाः पवित्रेण शतायुषा विश्वमायुर्व्यश्नवै ॥ १॥ अग्न आयुर्ठ०षि पवस आसुवोर्जमिषं च नः। आरे बाधस्व दुच्छुनाम्॥ २॥ पुनन्तु मा देवजनाः पुनन्तु मनसा धियः। पुनन्तु विश्वा भूतानि जातवेदः पुनीहि मा॥ ३॥ पवित्रेण पुनीहि मा शुक्रेण देव दीद्यत्। अग्ने क्रत्वा क्रतुँ२॥ रनु ॥४॥ यत्ते पवित्रमर्चिष्यग्ने विततमन्तरा। ब्रह्म तेन पुनातु मा॥५॥ पवमानः सो अद्य नः पवित्रेण विचर्षणिः। यः पोता स पुनातु मा॥ ६॥ उभाभ्यां देव सवितः पवित्रेण सवेन च। मां पुनीहि विश्वतः॥७॥ वैश्वदेवी पुनती देव्यागाद्यस्यामिमा बह्व्यस्तन्वो वीतपृष्ठाः। तया मदन्तः सधमादेषु वयर्ठ० स्याम पतयो रयीणाम्॥ ८॥ इति पवमानेन च सूक्तेन त्रिसूत्र्या प्रासादं संवेष्ट्य जलदुग्धयोः पृथग् विच्छिन्नधाराद्वयं स्तनकुम्भीभ्यां दत्वा मण्डलमध्यमपदचतुष्टये सुरूपां पृथिव्यां ध्यात्वा—

समुद्रवसने देवि पर्वतस्तनमण्डले।
विष्णुपत्नि नमस्तुभ्यं भूमिदेवि नमोस्तु ते॥

ॐ पृथिव्यै नमः इति सम्पूज्य—ॐ सर्वदेवमयं वास्तु सर्वदेवमयं परम्। इति पठित्वा मात्स्यादौ वास्तु निक्षेपस्यानुक्तत्वाद्विकल्पेन

करणपक्षे पीठे पूजितां सौवर्णीं वृषवास्तुप्रतिमां दधि-दूर्वा-सप्तधान्य-शैवाल-गन्धाक्षतयुतेऽपक्वमृद्-भाण्डे संस्थाप्य तत्पिधाय प्रासाद-स्याग्रये ईशानकोणादष्टमे आकाशपदे जानुमात्रं गर्तं खनित्वा 'ॐ नमो वरुणाय नमः' इति नाम मन्त्रेणा जलमापूर्य गन्धपुष्पाणि प्रक्षिप्य मृद्भाण्डं तत्र निधाय पठेत्—

पूजितोऽसि मया वास्तो होमाद्यैरर्चनैः शुभैः।
प्रसीद पाहि विश्वेश देहि प्रासादजं सुखम्॥ १॥
वास्तुपुरुष नमस्तेऽस्तु भूशय्याभिरत प्रभो।
मृद्गृहं धनधान्यादिसमृद्धं कुरु सर्वदा॥ २॥
यथा मेरुगिरेः शृङ्गं देवानामालयः सदा।
तथा ब्रह्मादिदेवानां मम यज्ञे स्थिरो भव॥ ३॥
भगवन्देवदेवेश ब्रह्मादिदेवात्मक।
तवार्चनं कृतं वास्तो प्रासादं कुरु मे प्रभो॥ ४॥
प्रार्थयामित्यहं देवं प्रासादस्याधिपस्तु यः।
प्रायश्चित्तं प्रसङ्गेन प्रासादार्थे तु यत्कृतम्॥ ५॥
मूलच्छेद - तृणच्छेदः - कृमि - कीटनिपातनं।
हवनं जलजीवानां भूमौ शत्रेण घातनम्॥ ६॥
अनृतं भूषितं यच्च किञ्चिद्वृक्षस्य पातनम्।
एतत्सर्वं क्षमस्वैनो यन्मया दुष्कृतं कृतम्॥ ७॥
प्रासादार्थे कृतं पापमज्ञानेनाप्य चेतसां।
तत्सर्वं क्षम्यतां देवः प्रासादं च शुभं कुरु॥ ८॥
सशैलसागरां पृथ्वीं यथा वहसि मूर्द्धनि।
तथा मां वः कल्याणसम्पत्सन्ततिभिः सह॥ ९॥

मिट्टी के उस खोदे हुए गड्ढे को यजमान भरकर गोबर के द्वारा लेपित करे। तदुपरान्त आचार्य पूजनादि करावें।

प्रासादोत्सर्ग

यजमान अपनी पत्नी के साथ आसन पर बैठकर आचमनादि करे। आचार्य सहित ब्राह्मण शान्तिपाठ का उच्चारण कर निम्न संकल्प यजमान से करावें—**देशकालौ सङ्कीर्त्य, इमं शिलेष्टकदार्वादिनिर्मितं बलभी-जगतीप्राकारगोपुरपरिवारदेवतालयादिसंयुतं धूमावतीलोकावाप्तिकामः धूमावतीप्रीतयेहमुत्सृजामि॥** संकल्प के पश्चात् अपने हाथ में लिए हुए कुश, यव और जल को पृथ्वी में छोड़ दें और धूमावतीदेवी का नमन करते हुए निम्न श्लोक का उच्चारण करें—

ॐ उत्सृष्टः कामदः श्रेष्ठः प्रासादोऽयं मयार्जितः।
देवी धूमावती साक्षादत्र वासं करोतु हि॥

इसके बाद ब्राह्मणों को भोजन करवाकर, सायंकालीन बलिदान करके, वेदघोष व पुराण आदि पढ़कर, यजमान अपनी पत्नी, परिवार के लोगों एवं आचार्य और ब्राह्मणों के साथ रात्रि में जागरण करें और धूमावती देवी के प्रासाद का अधिवासन करें।

स्थापनादिवसकृत्यम्

आचार्य भगवती धूमावतीदेवी के 'ॐ धूं धूमावत्यै स्वाहा' इस मूलमन्त्र से एक हजार आठ या एक सौ आठ या अट्ठाईस अथवा आठ बार यजमान से घृत द्वारा हवन करवाके पुनः मूर्तिप, लोकपालों के लिए पूर्वोक्त मन्त्रों द्वारा समिधा, तिल और घृत में से किसी भी द्रव्य से आचार्य कुण्ड में हवन करावें। हवन के मन्त्र निम्न हैं—

ॐ स्योना पृथिवि नो भवानृक्षरा निवेशनि। यच्छा नः शर्म सप्रथाः स्वाहा॥ १॥ अघोरेभ्योऽथ घोरेभ्यो घोरघोरतरेभ्यः। सर्वेभ्यः सर्वसर्वेभ्यो नमस्ते अस्तु रुद्ररूपेभ्यः स्वाहा॥ २॥ त्रातारमिन्द्रमवितार मिन्द्रर्ठ० हवे हवे सुहवर्ठ० शूरमिन्द्रम्। ह्वयामि शक्रं पुरुहूतमिन्द्रर्ठ० स्वस्ति नो मघवा धात्विन्द्रः स्वाहा॥ ३॥ अग्निं दूतं पुरोदधे हव्यवाहमुप ब्रुवे॥ देवाँ२॥ आसादयादिह स्वाहा॥ ४॥ तेजःपशूनार्ठ०

हविरिन्द्रियावत्परिस्त्रुता पयसा सारघं मधु। अश्विभ्यां दुग्धं भिषजा सरस्वत्या सुतासुताभ्याममृतः सोम इन्दुः स्वाहा॥ ५॥ त्वं नो अग्ने तव देव पायुभिर्मघोनो रक्ष तन्वश्च वन्द्य। त्राता तोकस्य तनये गवामस्य निमेषर्ठ० रक्षमाणस्तव व्रते स्वाहा॥ ६॥ सुवीरो वीरान्प्रजनयन्परीह्यभिरायस्पोषेण यजमानम्। संजग्मानो दिवा पृथिव्या शुक्रः शुक्रशोचिषा निरस्तः शण्डः शुक्रस्याधिष्ठानमसि स्वाहा॥ ७॥ उग्रश्च भीमश्च ध्वान्तश्च धुनिश्च। सासह्वाँश्चाभियुग्वा च विक्षपः स्वाहा॥ ८॥ यमाय त्वाङ्गिरस्वते पितृमते स्वाहा। घर्माय स्वाहा घर्मः पित्रे स्वाहा॥ ९॥ उदु त्यं जातवेदसं देवं वहन्ति केतवः। दृषे विश्वाय सूर्यर्ठ० स्वाहा॥ १०॥ इमा रुद्राय तवसे कपर्दिने क्षयद्वीराय प्रभरामहे मतीः। यथा समसद् द्विपदे चतुष्पदे विश्वं पुष्टं ग्रामे अस्मिन्ननातुरम् स्वाहा॥ ११॥ असुन्वन्तमयजमानमिच्छ स्तेनस्येत्यामन्विहि तस्करस्य। अन्यमस्मदिच्छ सा त इत्या नमो देवि निर्ऋते तुभ्यमस्तु स्वाहा॥ १२॥ आपो हि ष्ठा मयोभुवस्ता न ऊर्जे दधातन। महेरणाय चक्षसे स्वाहा॥ १३॥ नमो बभ्लुशाय व्याधिनेऽन्नानां पतये नमो नमो भुवस्य हेत्यै जगतां पतये नमो नमो रुद्रायाततायिने क्षेत्राणां पतये नमो नमः सूतावाहन्त्यै वनानां पतये नमः स्वाहा॥ १४॥ इमं मे वरुण श्रुधी हवमद्या च मृडय। त्वामवस्युराचके स्वाहा॥ १५॥ तववायवतस्पतेत्वष्टुर्जामातरद्भुत। अवार्ठ०स्या वृणीमहे स्वाहा॥ १६॥ तमीशानं जगतस्तस्थुषस्पतिं धियं जिन्वमवसे हूमहे वयम्। पूषा नो यथा वेदसामसद्वृधे रक्षिता पायुरदब्धः स्वस्तये स्वाहा॥ १७॥ आ नो नियुद्भिः शतिनीभिरध्वरर्ठ० सहस्त्रिणीभिरुपयाहि यज्ञम्। वायो अस्मिन्सवने मादयस्व यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः स्वाहा॥ १८॥ वयर्ठ०सोम व्रते तव मनस्तनूषु बिभ्रतः। प्रजावन्तः सचमेहि स्वाहा॥ १९॥ उग्रं लोहितेन मित्रर्ठ० सौव्रत्येन रुद्रं दौर्व्रत्येनेन्द्रं प्रक्रीडेन मरुतो बलेन साध्यान् प्रमुदा। भवस्य कण्ठ्यर्ठ० रुद्रस्यान्तः पार्श्व्यं

महादेवस्य यकृच्छर्वस्य वनिष्ठुः पशुपतेः पुरीतत् स्वाहा ॥ २० ॥ अभि त्यं देवर्ठ० सवितारमोण्योः कविक्रतुमर्चामि सत्यसवर्ठ० रत्नधाममभि प्रियं मतिं कविम्। ऊर्ध्वा यस्याऽमतिर्भा अदिद्युतत्सवीमनि हिरण्यपाणिरमिमीत सुक्रतुः कृपा स्वः। प्रजाभ्यस्त्वा प्रजास्त्वानुप्राणन्तु प्रजात्वमनुप्राणिहि स्वाहा ॥ २१ ॥ आदित्यं गर्भं पयसा समङ्ग्धिसहस्त्रस्य प्रतिमां विश्वरूपम्। परिवृङ्ग्धि हरसा माभिमर्ठ०स्थाः शतायुषं कृणुहि चीयमानः स्वाहा ॥ २२ ॥ मृगो न भीमः कुचरो गिरिष्ठाः परावत आजगन्था परस्याः। सृकर्ठ०सर्ठ०शाय पविमिन्द्र तिग्मं वि शत्रून् ताढि वि मृधो नुदस्व स्वाहा ॥ २३ ॥ अभि त्वा शूर नोनुमोऽदुग्धा इव धेनवः। ईशानमस्य जगतः स्वर्दृशमीशानमिन्द्र तस्थुषः स्वाहा ॥ २४ ॥

ततोऽधिवासितां कूर्मशिलां ब्रह्मशिलां पिण्डिकां च—ॐ त्रातारमिन्द्रमवितारमिन्द्रर्ठ० हवे हवे सुहवर्ठ० शूरमिन्द्रम्। ह्वयामि शक्रं पुरुहूतमिन्द्रर्ठ० स्वस्ति नो मघवा धात्विन्द्रः ॥

तदुपरान्त विघ्नों को हटाने के लिए आचार्य—'**ॐ अस्त्राय फट्।**' इस अस्त्र मन्त्र का उच्चारण करके पुष्पोदक धारा से प्रासादगर्भ का अभ्युक्षण करे।

ततः—ॐ महाँ २ ॥ इन्द्रो य ओजसा पर्जन्यो वृष्टिमाँ २ ॥ इव। स्तोमैर्वत्सस्य वावृधे। उपयामगृहीतोऽसि महेन्द्राय त्वैष ते योनिर्महेन्द्राय त्वा ॥ इस मन्त्र का उच्चारण करके प्रासादगर्भ में अस्त्र से लिखें।

पुनः—**ॐ अस्त्राय फट्।** इस मन्त्र का उच्चारण करके अभिमन्त्रित जल से पुनः प्रासादद्वार गर्भ का (कूर्म) शिला का प्रोक्षण करके निम्न श्लोक का उच्चारण करते हुए प्रार्थना करे—

ॐ त्वमेव परमाशक्तिस्त्वमेवासनधारिका।
शिवाज्ञया त्वया देवि स्थातव्यमिह सर्वदा ॥

तदुपरान्त आचार्य—**१. ॐ वर्णाध्वने नमः। २. ॐ पादाध्वने नमः। ३. ॐ मन्त्राध्वने नमः। ४. ॐ भुवनाध्वने नमः। ५. ॐ तत्त्वाध्वने नमः। ६. ॐ सकलाध्वने नमः।**

पूर्व में दिए गए वाक्यों का क्रम से उच्चारण कर यजमान से नमस्कार करवाकर ब्रह्मशिला का ध्यान करवाते हुए ब्राह्मण पुण्याहवाचन करें।

तद्यथा—अस्याः धूमावतीदेवतायाः पिण्डिकास्थापनाख्यस्य कर्मणः पुण्याहं० कल्याणं० ऋद्धिं०। स्वस्ति भ०।

इसके उपरान्त ही प्रतिष्ठामण्डप में आकर आचार्य कुण्ड में एक हजार आठ या एक सौ आठ या अट्ठाईस बार घृत के द्वारा स्थापित देवता का हवन उन्हीं के मन्त्रों के द्वारा यजमान से करावें।

अथ सश्वभ्रब्रह्मशिलापक्षे ब्रह्मशिलायां सहेम्ना हस्तेन रत्नन्यासं कुर्यात्। तद्यथा हस्तेन शिलां स्पृष्टां मध्ये—ॐ नमः। तद्बाह्ये—ॐ अँ नमः। ॐ आं नमः। ॐ इं नमः। ॐ ईं नमः। ॐ उं नमः। ॐ ऊं नमः। ॐ ऋं नमः। ॐ ॠं नमः। ॐ ऌं नमः। ॐ ॡं नमः। ॐ एं नमः। ॐ ऐं नमः। ॐ ओं नमः। ॐ औं नमः। ॐ अं नमः। ॐ अः नमः। इति षोडशस्वरान्विन्यसेत्।

पुनः पूर्वादिछिद्रों में यवादि औषधियों का प्रक्षेप कर यवपिष्ट से पूर्ण करें, फिर देवमन्त्रों द्वारा धूमावती की पिण्डिका का अभिमन्त्रण करे।

तेषां परितो व्यञ्जनानि विन्यसेत्—ॐ कं नमः। ॐ खं नमः। ॐ गं नमः। ॐ घं नमः। ॐ ङं नमः। ॐ चं नमः। ॐ छं नमः। ॐ जं नमः। ॐ झं नमः। ॐ ञं नमः। ॐ टं नमः। ॐ ठं नमः। ॐ डं नमः। ॐ ढं नमः। ॐ णं नमः। ॐ तं नमः। ॐ थं नमः। ॐ दं नमः। ॐ धं नमः। ॐ नं नमः। ॐ पं नमः। ॐ फं नमः। ॐ बं नमः। ॐ भं नमः। ॐ मं नमः। ॐ यं नमः। ॐ रं नमः। ॐ लं नमः। ॐ वं नमः। ॐ शं नमः। ॐ षं नमः। ॐ सं नमः। ॐ हं नमः। ॐ क्षं नमः।

आचार्य उसके बाहर बाह्य परिधि पर और उसके अन्दर चारो परिधियों पर पूर्व आदि से आठो दिशाओं में पूर्व से ईशान के मध्य में क्रमशः नौ छिद्रों

में इस कर्म को यजमान से करावें—पूर्व में—**यव, वज्र, मनःशिला, सुवर्ण, श्वेतचन्दन**। अग्निकोण में—**ब्रीहि, मौक्तिक, हरिताल, रौप्य, रक्तचन्दन**। दक्षिण दिशा में—**निष्पाव, वैडूर्य, अञ्जन, ताम्र, अगरु**। नैर्ऋत्यकोण में—**प्रियङ्गु, शङ्ख, श्यामाञ्जन, आयस, अर्जुन**। पश्चिम दिशा में—**तिल, स्फटिक, कौसीस, त्रपु, उशीर**। वायव्यकोण में—**माष, पुष्पराग, सौराष्ट्री, सीस, वैष्णवी**। उत्तर दिशा में—**नीवार, चन्द्रकान्त, गोरोचना, कांस्य, सहदेवी**। ईशानकोण में—**शालि, इन्द्रनील, गैरिक, आरकूट, लक्ष्मणा**। पूर्व ईशान के मध्य में—**सिद्धार्थकान्, पद्मरागान्, पारदान्, तीक्ष्णलोहानि (अत्र बीजानामभावे यवान्, रत्नानामभावे—वज्रं, धातूनामभावे हरितालम्, ताम्राद्यभावे सुवर्णम्, ओषधीनामभावे सहदेवीं न्यसेत्**।

आचार्य पूर्व में कहे गये दशदिक्पालों के दस मन्त्रों का पुनः क्रम से उच्चारण करते हुए यजमान से आलम्भन करावें। आलम्भन के उपरान्त उन छिद्रों को यजमान से यव के आटे द्वारा बन्द करवा दें। तदुपरान्त ब्रह्मशिला के ऊपर अथवा कूर्मशिला के ऊपर ही पूर्व-पश्चिम मुख के प्रासाद में उत्तर प्रणाली तथा दक्षिण-उत्तर मुख के प्रासाद में पूर्व प्रणाली को स्वीकार करे पुनः निम्न वैदिक मन्त्र का आचार्य उच्चारण करें—

ॐ ध्रुवासि ध्रुवोऽयं यजमनोऽस्मिन्नायतने प्रजया पशुभिर्भूयात्। घृतेन द्यावापृथिवी पूर्येथामिन्द्रस्य छदिरसि विश्वजनस्य छाया॥

धूमावती पिण्डिका के लिए आचार्य भगवती धूमावती देवी के निम्न वैदिक मन्त्र का उच्चारण करें—**ॐ धूम्रा बभ्रुनीकाशा पितृणाᳬ० सोमवतां बभ्रवो धूम्रनीकाशाः पितृणां बर्हिषदां कृष्णा बभ्रुनीकाशाः पितृणामग्निष्वात्तानां कृष्णाः पृषन्तस्त्रैयम्बकाः ॥**

पिण्डिकायां तत्त्वन्यासः

ॐ आत्मतत्त्वाय नमः। ॐ आत्मतत्त्वाधिपतये क्रियाशक्त्यै नमः। ॐ शिवतत्त्वाय नमः। शिवतत्त्वाधिपतये इच्छाशक्त्यै नमः। ॐ विद्यातत्त्वाय नमः। विद्यातत्त्वाधिपतये ज्ञानशक्त्यै नमः।

पिण्डिकायां मूर्तिप-लोकेशन्यासः

ॐ पृथिवीमूर्त्तये नमः। ॐ इन्द्राय नमः। ॐ अग्निमूर्त्तये नमः। ॐ अग्निमूर्त्यधिपतये पशुपतये नमः। ॐ अग्नये नमः। ॐ यजमानमूर्तये नमः। ॐ यजमानमूर्त्यधिपतये उग्राय नमः। ॐ यमाय नमः। ॐ सूर्यमूर्तये नमः। ॐ सूर्यमूर्त्यधिपतये रुद्राय नमः। ॐ निर्ऋतये नमः। ॐ जलमूर्तये नमः। ॐ जलमूर्त्यधिपतये भवाय नमः। ॐ वरुणाय नमः। ॐ वायुमूर्तये नमः। ॐ वायुमूर्त्यधिपतये ईशानाय नमः। ॐ वायवे नमः। ॐ सोममूर्तये नमः। ॐ सोममूर्त्यधिपतये महादेवाय नमः। ॐ कुबेराय नमः। ॐ आकाशमूर्तये नमः। ॐ आकाशमूर्त्यधिपतये भीमाय नमः। ॐ ईशानाय नमः।

पिण्डिकास्थापनम्

आचार्य–ॐ आधारशक्त्यै नमः। ॐ अनन्तासनतत्त्वेभ्यो नमः। ॐ आसनशक्तिभ्यो नमः। इन नाममन्त्रों का यजमान से उच्चारण करवाते हुए गन्ध-अक्षत और पुष्प से पूजा करवाके निम्न श्लोकों का उच्चारण करवाते हुए प्रार्थना करावें—

ॐ सर्वदेवमयीशाने त्रैलोक्याह्लादकारिणि।
त्वां प्रतिष्ठापयाम्यत्र मन्दिरे विश्वनिर्मिते॥
यावच्चन्द्रश्च सूर्यश्च यावदेषा वसुन्धरा।
तावत्त्वं देव-देवेशि मन्दिरेऽस्मिन्स्थिरा भव॥

पुत्रानायुष्मतो लक्ष्मीमचलामजरामृताम्।
अभयं सर्वभूतेभ्यः कर्तुर्नित्यं विधेहि भो॥
विजयं नृपतेः सर्वलोकानां क्षेममेव च।
सुभिक्षं सर्ववस्तूनां कुरु देवि नमो नमः॥

आचार्य पिण्डिकागर्त में पञ्चरत्न और नवरत्न और पारद यजमान से छोड़वाकर पुनः गुग्गुल रस आदि से रत्नों को स्थिर कर शहद व पायस से अनुलेपन कर—'**ॐ कवचाय हुम्।**' इस वाक्य का यजमान से उच्चारण करवाके अवगुण्ठन करावें। पुनः '**ॐ अस्त्राय फट्।**' इस वाक्य का यजमान से उच्चारण करवाके संरक्षण करावें।

आचार्य—**ॐ मनो जूतिर्जुषतामाज्यस्य बृहस्पतिर्यज्ञमिमं तनोत्वरिष्टं यज्ञठ० समिमं दधातु। विश्वेदेवास इह मादयन्तामों ३ँप्रतिष्ठ॥** इस मन्त्र का उच्चारण करते हुए प्राणप्रतिष्ठा करावें।

तदुपरान्त कुशाओं के द्वारा पञ्चगव्य से प्रासाद का अभ्युक्षण कर प्रासाद के बाहर पूर्वादि क्रम से इन्द्रादिलोकपालों के लिए आचार्य यजमान से बलि उन्हीं के मन्त्रों से प्रदान करवाकर आचमन करावें।

प्रासादबहिरष्टदिक्षु स्थण्डिलादिकृत्यम्

आचार्य प्रासाद के बाहर आठो दिशाओं में एक-एक हाथ के आठ स्थण्डिलों का निर्माण कर ईशानादि भागों में आठ कलशों को स्थापित कर पञ्चभूसंस्कारपूर्वक अग्नियों का प्रणयनादिक करके प्रत्येक स्थण्डिल में पलाश-समिधा द्वारा अष्टोत्तरसहस्रादि किसी पक्ष से धूमावतीदेवी के 'ॐ धूं धूमावत्यै स्वाहा' इस मूलमन्त्र से हवन करने के उपरान्त इन्हीं की गायत्री—**ॐ धूमावत्यै च विद्महे संहारिण्यै च धीमहि। तन्नो धूमा प्रचोदयात् स्वाहा।** द्वारा गौघृत एक सौ आठ या अट्ठाईस अथवा आठ बार हवन कर आचार्य स्थापित आठ कलशों के जल को एक पात्र में लेकर पुनः उपरोक्त मूलमन्त्र से सौ बार अभिमन्त्रण कर धूमावती देवी की मूर्ति के पास जाकर—

'ॐ सर्वतीर्थमयमिदं जलम्' इति ध्यायन् धूमावतीदेव्याः मूर्द्धिन अभिषिञ्चेत्। ततः—जल-क्षीर-कुशाग्र-तिल-तण्डुल-यव-सिद्धार्थक-पुष्पाणि शङ्खे कृत्वा शङ्खमुद्रया शङ्खेनार्घ्यं दत्वा—ॐ रथे तिष्ठन्नयति वाजिनः पुरो यत्र यत्र कामयते सुषारथिः। अभीशूनां महिमानं पनायत मनः पश्चादनुयच्छन्ति रश्मयः॥ इति मन्त्रेण रथे उपवेश्य पुरतो गुरुः पृष्ठतो यजमानः पार्श्वतो मूर्तिपाः—'ॐ आ नो भद्राः०' इति शान्तिपाठेन परिभ्राम्य प्रदक्षिणीकृत्य रथादवतार्य प्रासादद्वारि प्रासाद-द्वारसंमुखे पीठे धूमावतीदेवीं संस्थाप्य अर्घ्यं दत्वा प्रासादं प्रवेश्य पिण्डिकासमीपे निधाय स यजमानो देशिको धूमावतीपिण्डिकायां स्थापयेत्। पायसादिना पिण्डिकां परिमार्ज्य सौवर्णं पद्मं श्वभ्रे निधाय सुमुहूर्तसमये सन्निहितो आगते ईश्वरं विचिन्तयन् यवं यवार्द्धं वोत्तराश्रितं वा सुवर्णादिशलाकान्तरितां पिण्डिकायां स्थिरी कुर्यात्। वज्रलेपादिना दृढां कुर्यात्।

ततः—ॐ मनो जूतिर्जुषतामाज्यस्य बृहस्पतिर्यज्ञमिमं तनोत्वरिष्टं यज्ञठं० समिमं दधातु। विश्वेदेवास इह मादयन्तामों ३ँप्रतिष्ठ॥ इति मन्त्रं पठित्वा—

ॐ लोकानुग्रहहेत्वर्थं स्थिरा भव सुखाय नः।
सान्निध्यं कुरु देवेशि प्रत्यक्षं परिपालय॥
प्रधानपुरुषो यावद्यावच्चन्द्रदिवाकरौ।
तावत्त्वमनया शक्त्या युक्ताऽत्रैव स्थिरा भव॥

यह कहें—ॐ ध्रुवासि ध्रुवोऽयं यजमनोऽस्मिन्नायतने प्रजया पशुभिर्भूयात्। घृतेन द्यावापृथिवी पूर्येथामिन्द्रस्य छदिरसि विश्वजनस्य छाया॥ १॥ आ त्वाहार्षमन्तरभूर्ध्रुवस्तिष्ठाविचाचलिः। विशस्त्वा सर्वा वाञ्छन्तु मा त्वद्राष्ट्रमधिभ्रशत्॥ २॥ इति मन्त्रौ पठित्वा—'ॐ स्थिरां भव शाश्वती भव।' इति वदेत्।

पुनः पिण्डिका को व्रज लेपादि से दृढ़ कर दें और अब चालन कदापि न करे।

प्राणप्रतिष्ठापनम्

विनियोगः—अस्य प्राणप्रतिष्ठामन्त्रस्य ब्रह्म-विष्णु-रुद्रा ऋषयः, ऋग्यजुः सामानि छन्दांसि, क्रियामयवपुः प्राणाख्या देवता, आं बीजं, ह्रीं शक्तिः, क्रौं कीलकं श्रीधूमावतीदेव्याः प्राणप्रतिष्ठापने विनियोगः।

तदनन्तर ऋष्यादियों का क्रम से शिर, मुख, हृदय, नाभि, गुह्य और पैरों में न्यास करे।

ॐ ब्रह्मविष्णुरुद्रऋषिभ्यो नमः शिरसि। ॐ ऋग्यजुः सामच्छन्दोभ्यो नमः मुखे। ॐ प्राणाख्यदेवतायै नमः हृदये। ॐ आं बीजाय नमः गुह्ये। ॐ ह्रीं शक्त्यै नमः पादयोः। ॐ क्रौं कीलकाय नमः सर्वाङ्गेषु।

करन्यासः—ॐ अं कं खं गं घं ङंआं पृथिव्यप्तेजोवाय्वाकाशात्मने आं अङ्गुष्ठाभ्यां नमः। ॐ इं चं छं जं झं ञं शब्दस्पर्शरूपरसगन्धात्मने ईं तर्जनीभ्यां नमः। ॐ उं टं ठं डं ढं णं श्रोत्र-त्वक्-चक्षुर्जिह्वाघ्राणात्मने ॐ मध्यमाभ्यां नमः। ॐ एं तं थं दं धं नं वाक्-पाणि-पाद-पायूपस्थात्मने ऐं अनामिकाभ्यां नमः। ॐ ओं पं फं बं भं मं वचनादान विहरणोत्सर्गानन्दाऽत्मने औं कनिष्ठिकाभ्यां नमः। ॐ अं यं रं लं वं शं षं सं हं लं ठं क्षं मनोबुद्ध्यहङ्कारचित्तात्मने अः करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः।

हृदयादिन्यासः—ॐ अं कं खं गं घं ङं पृथिव्यप्तेजोवाय्वाकाशात्मने आं हृदयाय नमः। ॐ इं चं छं जं झं ञं शब्दस्पर्शरूपरसगन्धात्मने ईं शिरसे स्वाहा। ॐ उं टं ठं डं ढं णं श्रोत्रत्वक्-चक्षुर्जिह्वाघ्राणात्मने ॐ शिखायै वषट्। ॐ एं तं थं दं धं नं वाक्-पाणिपादपायूपस्थात्मने ऐं कवचाय हुम्। ॐ ओं पं फं बं भं मं वचनादानविहरणोत्सर्गानन्दात्मने औं नेत्रत्रयाय वौषट्। ॐ अं यं रं लं वं शं षं सं हं लं क्षं मनोबुद्ध्यहङ्कारचित्तात्मने अः अस्त्राय फट्। एवमात्मनि मूर्तौ (देवे) च न्यासं कुर्यात्।

आचार्य धूमावती देवी की मूर्ति का स्पर्श कर जप करें तथा शिर और हृदय का हाथ से स्पर्श कर निम्न प्राणप्रतिष्ठा के मंत्रों का उच्चारण करें—

ॐ आं, ह्रीं, क्रौं, यं, रं, लं, वं, शं, षं, सं, हं, लं, क्षं, हं, सः धूमावतीदेव्याः प्राणा इह प्राणाः। ॐ आं, ह्रीं, क्रौं, यं, रं, लं, वं, शं, षं, सं, हं, लं, क्षं, हं, सः धूमावतीदेव्याः जीव इह स्थितः। ॐ आं, ह्रीं, क्रौं, यं, रं, लं, वं, शं, षं, सं, हं, लं, क्षं, हं, सः धूमावतीदेव्याः सर्वेन्द्रियाणि। ॐ आं, ह्रीं, क्रौं, यं, रं, लं, वं, शं, षं, सं, हं, लं, क्षं, हं, सः धूमावतीदेव्याः वाङ्मनश्चक्षुःश्रोत्रजिह्वाघ्राणपाणिपादपायूपस्थानि इहैवागत्य स्वस्तये सुस्थिरं सुचिरं तिष्ठन्तु स्वाहा।

आचार्य निम्न श्लोक का उच्चारण करते हुए यजमान से हाथ जोड़वाकर धूमावती का ध्यान करावें—

ध्यानम्

धूम्राभां धूम्रवस्त्रां प्रकटितदशनां मुक्तबालाम्बराढ्यां
काकाङ्कस्यन्दनस्थां धवलकरयुगां शूर्पहस्तातिरूक्षाम्।
नित्यं क्षुत्क्षान्तदेहां मुहुरतिकुटिलां वारिवाञ्छाविचित्तां
ध्यायेद् धूमावतीं वामनयनयुगलां भीतिदां भीषणास्याम्॥

भावार्थ—धूम्र आभा से युक्त, धूमिल वस्त्र (अपनी देहयष्टि पर) धारण करनेवाली, बाहर दिखाई देनेवाले दाँतों से युक्त, बिखरे हुए केशों और वस्त्रों से युक्त, काक (कौआ) के चिह्न से युक्त ध्वजावाले रथ पर विराजित, धवल वर्ण के दोनों हाथों वाली, हाथों में सूप धारण करनेवाली, रुक्ष शरीरवाली, नित्य (सदैव) भूख-प्यास से आकुल विग्रहवाली अत्यन्त कुटिल, जल की इच्छा से व्यग्र चित्तवाली, रोषयुक्त नेत्रयुगल वाली, भय देनेवाली और भयंकर मुखमण्डलवाली देवी धूमावती का (इस प्रकार) ध्यान करना चाहिए।

वैदिकमन्त्राः

ध्यानोपरान्त आचार्य और ब्राह्मण निम्न वैदिक मन्त्रों का उच्चारण करें—

ॐ मनो मे तर्पयत वाचं मे तर्पयत प्राणं मे तर्पयत चक्षुर्मे तर्पयत श्रोत्रं मे तर्पयतात्मानं मे तर्पयत प्रजां मे तर्पयत पशून्मे तर्पयत गणान्मे तर्पयत गणा मे मा वितृषन्॥ १॥ ऐन्द्रः प्राणो अङ्गे अङ्गे निदीध्यदैन्द्र उदानो अङ्गे अङ्गे निधीतः। देवत्वष्टर्भूरि ते सर्ठ० समेतु सलक्ष्मा यद्विपुरूषं भवाति। देवत्रा यन्तमवसे सखायोऽनु त्वा माता पितरो मदन्तु॥ २॥ वाचं ते शुन्धामि प्राणं ते शुन्धामि चक्षुस्ते शुन्धामि श्रोत्रं ते शुन्धामि नाभिं ते शुन्धामि मेढ्रं ते शुन्धामि पायुं ते शुन्धामि चरित्रार्ठ०स्ते शुन्धामि॥ ३॥

भावार्थ—हे जलों! तुम मेरे मन को तर्पित करो, मेरी वाणी को तर्पित करो, मेरे प्राणों को तर्पित करो, मेरे चक्षुद्वय को तर्पित करो, मेरे श्रोतद्वय को तर्पित करो, मेरी आत्मा को तर्पित करो, मेरी सन्तान को तर्पित करो, मेरे पशुओं को तर्पित करो और मेरे सहयोगियों को तर्पित करो। हे जलों! तुम्हारी कृपा से मेरे सहयोगी मुझसे विगततृष्णा न होवें॥ १॥ आत्मा सम्बन्धी प्राण इस पशु के अंग-अंग में निहित किया गया है और आत्मा सम्बन्धी उदान वायु भी इसके अंग-अंग में धरा गया है। हे त्वष्टादेव! तुम्हारे द्वारा सँवारे गये इस पशु का अंग-अंग यथापूर्व सन्धित हो उठे—जो संतुलितावयव भी काटने आदि के द्वारा विशृङ्खल हो गया है। हे पशो! इस प्रकार मन्त्र के द्वारा पुनः संधितांग तुम्हें, हमारी रक्षा के लिए, देवों में सम्प्राप्त होते हुए तुम्हारे मित्र और माता-पिता अनुमोदित करें॥ २॥ हे पशो! मैं तुम्हारी जिह्वा को शुद्ध करती हूँ। हे पशो! मैं तुम्हारे प्राणों को शुद्ध करती हूँ। हे पशो! मैं तुम्हारी आँखों को शुद्ध करती हूँ। हे पशो! मैं तुम्हारे कानों को पवित्र करती हूँ। हे पशो! मैं तुम्हारे शिश्न को शुद्ध करती हूँ। हे पशो! मैं तुम्हारी गुदा को शुद्ध करती हूँ। हे पशो! मैं तुम्हारे चरणों को शुद्ध करती हूँ॥ ३॥

मनस्त आप्यायतां वाक्त आप्यायतां प्राणस्त आप्यायतां चक्षुस्त आप्यायतांꣳ श्रोत्रं त आप्यायताम्। यत्ते क्रूरं यदास्थितं तत्त आप्यायतां निष्ट्यायतां तत्ते शुध्यतु शमहोभ्यः। ओषधे त्रायस्व स्वधिते मैनꣳ हिꣳसीः ॥ ४ ॥ अपां पेरुरस्यापो देवीः स्वदन्तु स्वात्तं चित्सद्देवहविः। सं ते प्राणो वातेन गच्छताꣳ समङ्गानि यजत्रैः सं यज्ञपति राशिषा ॥ ५ ॥ सं ते मनो मनसा सं प्राणः प्राणेन गच्छताम्। रेडस्यग्निष्ट्वा श्रीणात्वापस्त्वा समरिणन्वातस्य त्वा ध्राज्यै पूष्णो रꣳह्या ऊष्मणो व्यथिषत्प्रयुतं द्वेषः ॥ ६ ॥

भावार्थ—हे पशो! तुम्हारा मन आप्यायित होवे। तुम्हारी जिह्वा प्रसन्न होवे। तुम्हारा प्राण प्रफुल्ल होवे। तुम्हारी चक्षुरिन्द्रिय आप्यायित होवे। तुम्हारी श्रवणशक्ति परिवर्धित होवे। हे पशो! बन्धनादि जो तुम्हारे संग क्रूरता आचरित है और वधादि जो कृत्य विहित किया गया है—वह सब तुम्हें विगतखेद बनावे। तुम्हारा विशृङ्खलित अंगप्रत्यंगादि संगत होवे। तुम्हारा वह होमीय सर्वाङ्ग, हे पशो! शुद्ध होवे। दिन-रात्रि प्रभृति सर्वकाल के लिए हे पशो! तुम्हारे निमित्त कल्याण होवे। हे औषधे! इस पशु की रक्षा करो। अहो! इस पशु की आत्मा को दुःखित मत करना ॥ ४ ॥ हे पशो! तुम जलों को पीने वाले हो। हे पशो! तुम्हें देवी आस्वाद्य बनावे—क्योंकि पवित्रीकृत हो स्वादिष्ट पशु मांस ही देवहविः होता है। हे पशो! तुम्हारा प्राण बाह्य प्राण से संगत होवे और तुम्हारे विविध अंग-प्रत्यंग यथाविधान उस-उस यजनीदेव से संगत होवे और यह यज्ञ का स्वामी यजमान अभीष्ट स्वर्गादि आशी से संगत होवे ॥ ५ ॥ हे पशु हृदय तुम्हारा मन देवों के मन से संगत होवे और तुम्हारा प्राण देवों के मन से संगत होवे। हे वसे! तुम अत्यन्त अल्प हो। तुम्हें अग्नि पकाकर विस्तार को प्राप्त करावे। जल तुम्हें मांस से पृथक करे। वायु की गति के लिए और पूषा की गति के लिए वसा को पीकर अन्तरिक्षस्थ राक्षसादि व्यथित होवें। वसा होम के द्वारा इस प्रकार दुर्भाग्य दूर हुआ ॥ ६ ॥

प्राणपा मे अपानपाश्चक्षुष्पाः श्रोत्रपाश्च मे। वाचो मे विश्वभेषजो मनसोऽसि विलायकः ॥ ७॥ प्राणश्च मेऽपानश्च मे व्यानश्च मेऽसुश्च मे चित्तं च म आधीतं च मे वाक् च मे मनश्च मे चक्षुश्च मे श्रोत्रं च मे दक्षश्च मे बलं च मे यज्ञेन कल्पनन्ताम् ॥ ८ ॥ प्राणं मे पाह्यपानं मे पाहिव्यानं मे पाहिचक्षुर्म उर्व्या विभाहि श्रोत्रं मे श्लोकय। अपः पिन्वौषधीर्जिन्व द्विपादव चतुष्पात्पाहि दिवो वृष्टिमेरय ॥ ९ ॥ प्राणाय मे वर्चोदा वर्चसे पवस्व व्यानाय मे वर्चोंदा वर्चसे पवस्वोदानाय मे वर्चोंदा वर्चसे पवस्व वाचे मे वर्चोंदा वर्चसे पवस्व क्रतूदक्षाभ्यां मे वर्चोंदा वर्चसे पवस्व

भावार्थ—हे ग्रह! तुम मेरे प्राण के पालक हो, अपान के पालक हो, चक्षु के पालक हो और श्रोत्र के पालक हो। तुम मेरी वाणी के सर्वभैषज्य हो। उसे अनृत से हटाकर शङ्कर में लगाने वाले हो। तुम मेरे मन के सत्प्रेरक हो ॥ ७ ॥ प्राण, अपान, व्यान, प्रवृत्तिमान् वायु, चित्त, बाह्यविषयज्ञान, वाक्, मन, चक्षु, श्रोत, ज्ञानेन्द्रिय कौशल और कर्मेन्द्रिय कौशल मुझे यज्ञ के द्वारा सिद्ध होवें ॥ ८ ॥ हे प्राणभृत्तसंज्ञक इष्टके! तुम मेरे प्राण की रक्षा करो, तुम मेरे अपान की रक्षा करो, तुम मेरे व्यान की रक्षा करो, मेरे चक्षु को दूर तक देखने वाला बनाओ, मेरे श्रोत को शब्द के सुनने में समर्थ बनाओ, जलों को बढ़ाओ, औषधियों में प्राण या बल डालो। दो पैरों वाले मनुष्यादि की रक्षा करो, चार पैरों वाले गवादि पशुओं की रक्षा करो और द्युलोक से वृष्टि को बरसाओ ॥ ९ ॥ हे हे उपांशुग्रह! तुम ब्रह्मवर्चस् को देने वाले हो, अतः तुम मुझे ब्रह्मवर्चस् तथा प्राण देने के लिए स्वकर्म में प्रवर्तित होओ। हे उपांशु सवन! ब्रह्मवर्चस् के दाता तुम मुझे ब्रह्मवर्चस् देने तथा मेरे ध्यान की पुष्टि के लिए स्वधर्म में प्रवर्तित होओ। हे अन्तर्यामग्रह! ब्रह्मवर्चस् के प्रदाता तुम मुझे ब्रह्मवर्चस् देने तथा मेरे उदान की पुष्टि के लिए स्वकर्म में प्रवर्तित होओ और हे ऐन्द्रवायवग्रह! ब्रह्मवर्चस् के देने वालो तुम मुझे ब्रह्मवर्चस् देने तथा मेरी वाणी की पुष्टि के लिए स्वकर्म में प्रवृत्त होओ।

श्रोत्राय मे वर्चोदा वर्चसे पवस्व चक्षुर्भ्यां मे वर्चोदसौ वर्चसे पवेथाम्॥ १०॥ प्राणाय स्वाहा पानाय स्वाहा व्यानाय स्वाहा चक्षुषे स्वाहा श्रोत्राय स्वाहा वाचे स्वाहा मनसे स्वाहा॥ ११॥ अयं पुरो भुवस्तस्य प्राणो भौवायनो वसन्तः प्राणायनो गायत्री वासन्ती गायत्र्यै

हे मैत्रावरुणग्रह! ब्रह्मवर्चस् के देने वाले तुम मेरे यज्ञ, बल तथा ब्रह्मवर्चस् को देने के लिए स्वकर्म में प्रवर्तित होओ। हे आश्विनग्रह! ब्रह्मवर्चस् के देने वाले तुम मुझे ब्रह्मवर्चस् देने तथा मेरे श्रोत की पुष्टि के निमित्त स्वकर्म में प्रवर्तित होओ। हे शुक्र-मन्थिनग्रहो! ब्रह्मवर्चस् को देने वाले तुम दोनों मुझे ब्रह्मवर्चस् देने तथा मेरी चक्षुओं की शक्ति के पुष्टि के निमित्त स्वकर्म में प्रवृत्त होओ॥ १०॥ प्राण-अपान-व्यान-चक्षु-श्रोत्र-वाक् और मन के लिए यह आहुति दी गई है॥ ११॥ हे प्राणभृत् इष्टके! यह जो सम्मुखभुव संज्ञक अग्नि विद्यमान है, तुम इसी के स्वरूप वाली हो। तुम इस अग्नि स्वरूपा को मैं चिति में धरता हूँ। भुवसंज्ञक अग्नि की सन्तान भौवायन यह प्राण है। हे प्राणभृत् इष्टके! तुम उस प्राण के स्वरूप वाली हो। उस प्राणस्वरूपिणी को मैं चिति में स्थापित करता हूँ। प्राण की सन्तान प्राणायन यह वसन्त ऋतु है। हे प्राणभृत् इष्टके! तुम वसन्तऋतुरूपा हो। उस वसन्तऋतुरुपिणी तुम्हें मैं चिति में धरता हूँ। वसन्त की सन्तान वासन्ती यह गायत्री है। हे प्राणभृत् इष्टके! तुम वासन्ती गायत्रीस्वरूपा हो। उस गायत्री स्वरूपा तुम्हें मैं चिति में स्थापित करता हूँ। गायत्री के सम्बन्ध से गायत्रसाम उत्पन्न हुआ। हे प्राणभृत् इष्टके! तुम गायत्रसामस्वरूपा हो। उस गायत्रसाम-स्वरूपिणी तुम्हें मैं चिति में धरता हूँ। गायत्रसाम से उपांशुग्रह सम्भूत हुआ है। हे प्राणभृत् इष्टके! तुम उपांशुग्रह के स्वरूप वाली हो। उस उपांशुग्रह-स्वरूपा तुम्हें मैं चिति में धरता हूँ। उपांशुग्रह से त्रिवृत्स्तोम बना है। हे प्राणभृत् इष्टके! तुम त्रिवृत्स्तोमरूपा हो। उस त्रिवृत्स्तोमरूपा तुम्हें मैं चिति में स्थापित करता हूँ। त्रिवृत्स्तोम से रथन्तर-पृष्ठसाम की उत्पत्ति हुई है। हे प्राणभृत् इष्टके! तुम रथन्तरपृष्ठसाम के स्वरूप वाली हो।

गायत्रम् गायत्रादुपार्ठ०शुरुपार्ठ० शोस्त्रिवृत्रिवृतो रथन्तरं वसिष्ठ ऋषिः प्रजापतिगृहीतया त्वया प्राणं गृह्णामि प्रजाभ्यः ॥ १२॥ अयं पश्चाद्विश्वव्यचास्तस्य चक्षुर्वैश्वव्यचसं वर्षाश्चाक्षुष्यो जगती वार्षी जगत्या

उस रथन्तरपृष्ठसाम के स्वरूपवाली तुम्हें मैं चिति में धरता हूँ। रथन्तरपृष्ठसाम से सर्वाधार प्राण वसिष्ठ की उत्पत्ति हुई है। हे प्राणभृत् इष्टके! तुम वसिष्ठप्राणस्वरूपिणी हो। उस वसिष्ठप्राण-स्वरूपिणी तुम इष्टका को मैं चिति में लगाता हूँ। प्रजापति के द्वारा बनायी गई तुम इष्टका के द्वारा सर्व प्रजा के प्राणों को मैं ग्रहण करता हूँ॥ १२॥ पश्चिम की ओर जाने वाला यह सूर्य विश्व के पदार्थों को अपने उदय के द्वारा सावकाश बनाने वाला है। हे इष्टके! तुम उस विश्वव्यच सूर्य के स्वरूप वाली हो। तुम उस विश्वव्यचसूर्यस्वरूपा ईट को मैं चिति में धरता हूँ। उस विश्वव्यचसूर्य का अपत्य यह चक्षु है। हे इष्टके! तुम उस चक्षु के स्वरूप वाली हो। तुम उस चक्षुस्वरूपिणी ईट को मैं चिति में धरता हूँ। चक्षु से वर्षा उत्पन्न हुई है। हे इष्टके! तुम वर्षारूपिणी हो। तुम उस वर्षारुपिणी ईट को मैं चिति में धरता हूँ। वर्षा से जगती छन्द उत्पन्न हुआ। हे इष्टके! तुम ऐडसंज्ञकसाम के स्वरूपवाली हो। उस तुम ऐडसंज्ञक-साम के हे इष्टके! तुम जगतीस्वरूपा हो। उस जगतीस्वरूपा ईट को मैं चिति में धरता हूँ। उस जगती से ऋक् समसाम उत्पन्न हुआ। हे इष्टके! तुम ऋक्सम-साम के स्वरूप वाली हो। उस तुम ऋक्समसाम के स्वरूपवाली ईट को मैं चिति में धरता हूँ। ऋक्समसाम से शुक्र ग्रह उत्पन्न हुआ। हे इष्टके! तुम शुक्र ग्रह के स्वरूप वाली हो। उस तुम शुक्रग्रह के स्वरूपवाली ईट को मैं चिति में धरता हूँ। प्रजापति ने शुक्रग्रह से सप्तदशस्तोम को बनाया। हे इष्टके! तुम सप्तदशस्तोम के स्वरूप वाली हो। उस तुम सप्तदश-स्तोम के स्वरूपवाली ईट को मैं चिति में धरता हूँ। सप्तदशस्तोम से वैरूपपृष्ठ-साम उत्पन्न हुआ। हे इष्टके! तुम वैरूपपृष्ठसाम के स्वरूप वाली हो।

ऋक्सममृक्समाच्छुक्रः शुक्रात्सप्तदशः सप्तदशाद्वैरूपं जमदग्निर्ऋषिः प्रजापतिगृहीतया त्वया चक्षुर्गृह्णामि प्रजाभ्यः ॥ १३ ॥ इदमुत्तरात्स्वस्तस्य श्रोत्रꣳ सौवꣳ शरच्छ्रौत्र्यनुष्टुप् शारद्यनुष्टुभ ऐडमैडान्मथी मन्थिन एकविꣳशः एकविꣳ शाद्वैराजं विश्वामित्र ऋषिः प्रजापतिगृहीतया

उस वैरूपपृष्ठसाम के स्वरूप वाली ईट को मैं चिति में धरता हूँ। वैरूपपृष्ठसाम से संसार को जाकर देखने और मनन करने वाले जमदग्नि ऋषि उत्पन्न हुए। हे इष्टके! तुम जमदग्नि ऋषि के स्वरूपवाली हो। उस तुम जमदग्नि ऋषि के स्वरूप वाली इष्टका को मैं चिति में धरता हूँ। प्रजापति के द्वारा बनाई तुम एक ईट को मैं चिति में धरकर मैं प्रजा के लिए चक्षुओं को ही ग्रहण करता हूँ॥ १३ ॥ उत्तर दिशा में आद्योपान्त यह स्वर्ग विद्यमान है। हे इष्टके! तुम उस स्वर्ग के स्वरूप वाली हो। उस तुम स्वर्ग के स्वरूप वाली ईट को मैं चिति में धरता हूँ। उस स्वर्ग का अपत्य यह श्रोत है। हे इष्टके! तुम श्रोत-स्वरूपा हो। उस तुम श्रोतस्वरूपिणी ईट को मैं चिति में धरता हूँ। उस श्रोत की सन्तति यह शरद् ऋतु है। हे इष्टके! तुम शरदृतुरूपा हो। उस शरदृतु-स्वरूपा ईट को मैं चिति में धरता हूँ। शरद् ऋतु का अपत्य अनुष्टप् छन्द है। हे इष्टके! तुम अनुष्टप छन्दस्वरूपा हो। उस तुम अनुष्टपछन्द-स्वरूपिणी ईट को मैं चिति में धरता हूँ। अनुष्टपछन्द से ऐडसंज्ञकसाम उत्पन्न हुआ। स्वरूपवाली ईट को मैं चिति में धरता हूँ। उस ऐडसाम से मन्थीसंज्ञक ग्रह उत्पन्न हुआ। हे इष्टके! तुम उस मन्थीग्रह के स्वरूपवाली हो। उस तुम मन्थीग्रह के स्वरूपवाली इष्टका को मैं चिति में धरता हूँ। मन्थीग्रह से एकविंशस्तोम उत्पन्न हुआ। हे इष्टके! तुम एकविंशस्तोम के स्वरूपवाली हो। उस तुम एकविंशस्तोम के स्वरूपवाली ईट को मैं चिति में धरता हूँ। एकविंशस्तोम से वैराजसाम उत्पन्न हुआ। हे इष्टके! तुम वैराजसाम के स्वरूप वाली हो। उस तुम वैराजसाम के स्वरूपवाली ईट को मैं चिति में धरता हूँ। वैराजसाम से सर्वजगत् के मित्र विश्वामित्र ऋषि उत्पन्न हुए। हे इष्टके! तुम उन विश्वामित्र ऋषि के स्वरूप वाली हो। उस तुम विश्वामित्र ऋषि के स्वरूपवाली ईट को मैं चिति धरता हूँ। तुम इस प्रकार की एक प्रजापति के

त्वया श्रोत्रं गृह्णामि प्रजाभ्यः॥ १४॥ इयमुपरि मतिस्तस्यै वाङ्मात्या हेमन्तोवाच्यः पङ्क्तिर्हैमन्ती पङ्क्त्यै निधनवन्निधनवत आग्रयणऽआग्रयणात्रिणवत्रयस्त्रिंर्ठ० शौ त्रिणवत्रयस्त्रिंर्ठ० शाभ्यार्ठ० शाक्वररैवते विश्वकर्म ऋषिः प्रजापतिगृहीतया त्वया वाचं गृह्णामि प्रजाभ्यो लोकं ता इन्द्रम्॥ १५॥

भावार्थ—द्वारा बनाई गई ईट को चिति में धरने के द्वारा मैं प्रजाओं के लिए श्रोत को ही ग्रहण करता हूँ॥ १४॥ यह ऊपर जो चन्द्रस्वरूपा मति स्थित है। हे इष्टके! तुम मति के स्वरूपवाली हो। उस तुम वाक्स्वरूपा को मैं चिति में धरता हूँ। वाणी से हेमन्तऋतु उत्पन्न हुई। हे इष्टके! तुम हेमन्तऋतुस्वरूपा हो। उस तुम हेमन्तऋतुस्वरूपा ईट को मैं चिति में धरता हूँ। हेमन्तऋतु से पंक्तिछन्द उत्पन्न हुआ। हे इष्टके! तुम पंक्तिछन्दस्वरूपा हो। उस तुम पंक्तिछन्द-स्वरूपिणी को मैं चिति में धरता हूँ। पंक्तिछन्द से निधनवत्साम बना। हे इष्टके! तुम निधनवत्साम के स्वरूपवाली हो। उस तुम निधनवत्साम के स्वरूपवाली ईट को मैं चिति में धरता हूँ। निधनवत्साम से आग्रायणग्रह उत्पन्न हुआ। हे इष्टके! तुम आग्रायणग्रह के स्वरूपवाली हो। उस तुम आग्रायणग्रह के स्वरूपवाली ईट को मैं चिति में धरता हूँ। आग्रायणग्रह से त्रिणव और त्रयस्त्रिंशस्तोम उत्पन्न हुए। हे इष्टके! तुम त्रिणव और त्रयस्त्रिंशसंज्ञक दोनों स्तोमों के स्वरूपवाली हो। उस तुम तत्स्वरूपा को मैं चिति में धरता हूँ। उन दोनों स्तोमों से क्रमशः शाक्वर-रैवत्साम उत्पन्न हुए। हे इष्टके! तुम उन शाक्वर-रैवत्सामों के स्वरूपवाली हो। उस तुम उन दो सामों के स्वरूपवाली ईट को मैं चिति में धरता हूँ। उन दोनों सामों से विश्वकर्मा ऋषि उत्पन्न हुए। हे इष्टके! तुम वाग्रूपा हो। तुम्हें मैं चिति में धरता हूँ। उस तुम प्रजापतिसृष्ट को चिति में धरकर मैं प्रजार्थ वाणी को ही पकड़ता हूँ॥ १५॥

आचार्य भगवती धूमावती देवी के इस मन्त्र का उच्चारण करें—**ॐ धूम्रा बभ्रुनीकाशा पितृणार्ठ० सोमवतां बभ्रवो धूम्रनीकाशाः पितृणां बर्हिषदां कृष्णा बभ्रुनीकाशाः पितृणामग्निष्वात्तानां कृष्णाः पृषन्तस्त्रैयम्बकाः ॥**

आचार्य निम्न मन्त्र और श्लोक का उच्चारण करें—**ॐ मनो जूतिर्जुषता-माज्यस्य बृहस्पतिर्यज्ञमिमं तनोत्वरिष्टं यज्ञर्ठ० समिमं दधातु। विश्वेदेवास इह मादयन्तामों ३ँप्रतिष्ठ ॥**

अस्यै प्राणाः प्रतिष्ठन्तु अस्यै प्राणाः क्षरन्तु च।
अस्यै देवत्वमर्चायै मामहेति च कश्चन॥

पिण्डिकामन्त्रहोमः

आचार्य पूर्व में दिए गए पिण्डिका मन्त्रों से प्रत्येक के लिए अट्ठाईस बार तिलों से कुण्ड में हवन करावें। इसके उपरान्त ही धूमावती देवी के **ॐ धूम्रा बभ्रुनीकाशा पितृणार्ठ० सोमवतां बभ्रवो धूम्रनीकाशाः पितृणां बर्हिषदां कृष्णा बभ्रुनीकाशाः पितृणामग्निष्वात्तानां कृष्णाः पृषन्तस्त्रैयम्बकाः ॥** इस मन्त्र से आचार्य एक सौ आठ बार चरु द्वारा कुण्ड में यजमान से हवन करावें।

धूमावत्यायुधहोमः

१. ॐ वज्राय स्वाहा, २. ॐ शक्तये स्वाहा, ३. ॐ दण्डाय स्वाहा, ४. ॐ खड्गाय स्वाहा, ५. ॐ पाशाय स्वाहा, ६. ॐ अङ्कुशाय स्वाहा, ७. ॐ गदाय स्वाहा, ८. ॐ शूलाय स्वाहा, ९. ॐ खेटाय स्वाहा, १०. ॐ चक्राय स्वाहा।

धूमावतीदेवताया: पादनाभिवक्ष:स्थलादिस्पर्शने अष्टौ मन्त्रा:

१. यज्जाग्रतो दूरमुदैति दैवं यदु सुप्तस्य तथैवेति। दूरगमं ज्योतिषां ज्योतिरेकं तन्मे मन: शिवसङ्कल्पमस्तु॥ २. तस्माद्विराडजायत विराजो अधि पूरुष:। स जातो अत्यरिच्यत पश्चाद् भूमिमथो पुर:॥ ३. सहस्रशीर्षा पुरुष: सहस्राक्ष: सहस्रपात्। स भूमिं विश्वतो वृत्वा ऽत्यतिष्ठद्दशाङ्गुलम्॥ ४. अभित्वा शूर नोनुमो ऽदुग्धा इव धेनव:। ईशानमस्य जगत: स्वर्दृशमीशानमिन्द्र तस्थुष:॥ ५. पुरुष एवेदं सर्वं यद्भूतं यच्च भाव्यम्। उतामृतत्वस्येशानो यदन्नेनातिरोहति॥ ६. त्रिपादूर्ध्व उदैत्पुरुष: पादोऽस्येहाभवत् पुन:। ततो विष्वङ् व्यक्रामत् साशनानशने अभि॥ ७. ये नेदं भूतं भवनं भविष्यत्परि गृहीतममृतेन सर्वम्। येन यज्ञस्तायते सप्तहोता तन्मे मन: शिवसङ्कल्पमस्तु॥ ये नेदं सर्व जगतो बभूव यद्देवा अपि महतो जातवेदा:। यदेवाग्यं तपसो ज्योतिरेकं तन्मे मन: शिवसङ्कल्पमस्तु। ८. न त्वावाँ अन्यो दिव्यो न पार्थिवो न जातो न जनिष्यते। अश्वायन्तो मघवन्निन्द्र वाजिनो गव्यन्तस्त्वा हवामहे॥

उपरोक्त आठ मन्त्रों का आचार्य उच्चारण करके जल से भगवती धूमावती के चरणों का स्पर्श यजमान से करावें। यह पहला पर्याय है। पुन: इन्हीं आठ मन्त्रों का उच्चारण करके भगवती धूमावती की नाभि का जल द्वारा यजमान से स्पर्श करावें। यह दूसरा पर्याय है। तीसरी बार इन्हीं आठ मन्त्रों उच्चारण करके भगवती धूमावती के वक्ष:स्थल का जल द्वारा यजमान से स्पर्श करावें। यह तीसरा पर्याय है और चौथी बार फिर इन्हीं आठ मन्त्रों का उच्चारण करके भगवती धूमावती के सिर का स्पर्श जल द्वारा यजमान से करावें। यह चौथा पर्याय है। इस प्रकार चार बार इन आठों मन्त्रों का जप करें, कुल जप बत्तीस बार ही होता है।

(प्रधानपूजनम्)

श्रीधूमावतीपूजनम्

संकल्पः—देशकालौ संकीर्त्य, अमुकगोत्रोत्पन्नोऽहम् अमुक-शर्माऽहं (वर्माऽहं, गुप्तोऽहं, दासोऽहं) श्रुतिस्मृतिपुराणोक्तफलप्राप्त्यर्थं मम सकुटुम्बस्य सपरिवारस्य श्रीधूमावतीदेव्यनुग्रहतो देवकृत-ग्रहकृत-राजकृत-मनुष्यकृत-सर्वविधबाधानिवृत्तिपूर्वकं धन-धान्य-पुत्र-पौत्र-दीर्घायुरारोग्यैश्वर्यादिसमृद्ध्यर्थं, सर्वाभीष्टफलप्राप्तिपूर्वकधर्मार्थ-काम-मोक्षचतुर्विधपुरुषार्थसिद्धिद्वारा श्रीधूमावतीदेव्याः प्रीत्यर्थं यथोपचारैः धूमावतीपूजनमहं करिष्ये।

ध्यानम्

धूम्राभां धूम्रवस्त्रां प्रकटितदशनां मुक्तबालाम्बराढ्यां
काकाङ्कस्यन्दनस्थां धवलकरयुगां शूर्पहस्तातिरूक्षाम्।
नित्यं क्षुत्क्षान्तदेहां मुहुरतिकुटिलां वारिवाञ्छाविचित्तां
ध्यायेद् धूमावतीं वामनयनयुगलां भीतिदां भीषणास्याम्॥

श्रीधूमावत्यै नमः ध्यायामि।

आवाहनम्

ॐ धूम्रा बभ्रुनीकाशा पितृणार्ठ० सोमवतां बभ्रवो धूम्रनीकाशाः पितृणां बर्हिषदां कृष्णा बभ्रुनीकाशाः पितृणामग्निष्वात्तानां कृष्णाः पृषन्तस्त्रैयम्बकाः॥

ॐ सहस्रशीर्षा पुरुषः सहस्राक्षः सहस्रपात्।
स भूमिर्ठ० सर्वत स्पृत्वात्यतिष्ठद्दशाङ्गुलम्॥
देवेशि भक्ति सुलभे सर्वावरणसंयुते।
यावत्त्वां पूजयिष्मामि तावत् त्वं सुस्थिरा भव॥

श्रीधूमावत्यै नमः, आवाहनं समर्पयामि। आवाहनार्थे पुष्पं समर्पयामि।

आसनम्

ॐ पुरुष एवेदर्ठ० सर्वं यद्भूतं यच्च भाव्यम्।
उतामृतत्वस्येशानो यदन्नेनातिरोहति॥
अनेकरत्नसंयुक्तं नानामणिगणान्वितम्।
कार्तस्वरमयं दिव्यमासनं प्रतिगृह्यताम्॥
श्रीधूमावत्यै नमः, आसनं समर्पयामि। आसनार्थे अक्षतान् समर्पयामि।

पाद्यम्

ॐ एतावानस्य महिमातो ज्यायांश्च पूरुषः।
पादो ऽस्य विश्वा भूतानि त्रिपादस्यामृतं दिवि॥
गङ्गादिसर्वतीर्थेभ्यो मया प्रार्थनयाहृतम्।
तोयमेतत् सुखस्पर्शं पाद्यार्थं प्रतिगृह्यताम्॥
श्रीधूमावत्यै नमः, पाद्यं समर्पयामि।

अर्घ्यम्

ॐ त्रिपादूर्ध्व उदैत्पुरुषः पादोऽस्येहाभवत्पुनः।
ततो विष्वङ् व्यक्रामत्साशनानशने अभि॥
गन्धपुष्पाक्षतैर्युक्तमर्घ्यं सम्पादितं मया।
गृहाण त्वं महादेवि प्रसन्ना भव सर्वदा॥
श्रीधूमावत्यै नमः, अर्घ्यं समर्पयामि।

मधुपर्कम्

ॐ यन्मधुनो मधव्यं परमर्ठ० रूपमन्नाद्यम्। तेनाहं मधुनो मध परमेण रूपेणानाद्येन परमो मधव्योऽन्नादोऽसानि॥
आज्यं दधि मधु श्रेष्ठं पात्रयुग्मसमन्वितम्।
मधुपर्कं गृहाण त्वं शुभदा भव शोभने॥
श्रीधूमावत्यै नमः, मधुपर्कं समर्पयामि।

आचमनीयम्

ॐ ततो विराडजायत विराजो अधि पूरुषः।
स जातो अत्यरिच्यत पश्चाद्भूमिमथो पुरः॥
जातीलवङ्गकङ्कोल कर्पूरादिसुवासितम्।
गृहाण देवदेवेशि एतदाचमनीयकम्॥
श्रीधूमावत्यै नमः, आचमनीयं जलं समर्पयामि।

स्नानम्

ॐ तस्माद्यज्ञात्सर्वहुतः संभृतं पृषदाज्यम्।
पशूंस्तांश्चक्रे वायव्यानारण्या ग्राम्याश्च ये॥
मदाकिन्याः समानीतै हेमाम्भोरुहवासितैः।
स्नानं कुरुष्व देवेशि सलिलैश्च सुगन्धिभिः॥
श्रीधूमावत्यै नमः, स्नानीयं जलं समर्पयामि।

पुनराचमनीयम्

ॐ आच्या जानु दक्षिणतो निषद्येमं यज्ञमभिगृणीत विश्वे।
मा हिर्ठ०सिष्ट पितरः केनचिन्नो यद्व आगः पुरुषता कराम॥
उच्छिष्टोप्यशुचिर्वापि यस्याः स्मरणमात्रतः।
शुद्धिमाप्नोति तस्यै ते पुनराचमनीयकम्॥
श्रीधूमावत्यै नमः, पुनराचमनीयं जलं समर्पयामि।

पञ्चामृतस्नानम्

ॐ पञ्च नद्यः सरस्वतीमपियन्ति सस्त्रोतसः।
सरस्वती तु पञ्चधा सो देशेऽभवत्सरित्॥
पयो दधि घृतं चैव मधु च शर्करान्वितम्।
पञ्चामृतं मयाऽऽनीतं स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम्॥
श्रीधूमावत्यै नमः, पञ्चामृतस्नानं समर्पयामि। शुद्धोदकस्नानं समर्पयामि।
आचमनीयं जलं समर्पयामि।

शुद्धोदकस्नानम्

ॐ शुद्धवालः सर्वशुद्धवालो मणिवालस्त ऽआश्विनाः। श्येतः श्येताक्षो- ऽरुणस्ते रुद्राय पशुपतये कर्णा यामा ऽअवलिप्ता रौद्रा नभोरूपाः पार्जन्याः॥

शुद्धं यत्सलिलं दिव्यं गङ्गाजलसमं स्मृतम्।
समर्पितं मया भक्त्या स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम्॥

श्रीधूमावत्यै नमः, शुद्धोदकस्नानं समर्पयामि। शुद्धोदकस्नानान्ते आचमनीयं जलं समर्पयामि।

वस्त्रम्

ॐ तस्माद्यज्ञात्सर्वहुतऽ ऋचः सामानि जज्ञिरे।
छन्दार्ठ०सि जज्ञिरे तस्माद्यजुस्तस्मादजायत॥

वस्त्रञ्च सोमदैवत्यं लज्जायास्तु निवारणम्।
मया निवेदितं भक्त्या गृहाण परमेश्वरि॥

श्रीधूमावत्यै नमः, वस्त्रद्वयं समर्पयामि। आचमनीयं जलं समर्पयामि।

यज्ञोपवीतम्

ॐ तस्मादश्वा अजायन्त ये के चोभयादतः।
गावो ह जज्ञिरे तस्मात्तस्माज्जाता अजावयः॥

स्वर्णसूत्रमयं दिव्यं व्रह्मणा निर्मितं पुरा।
उपवीतं मया दत्तं गृहाण परमेश्वरि॥

श्रीधूमावत्यै नमः, यज्ञोपवीतं समर्पयामि। यज्ञोपवीतान्ते आचमनीयं जलं समर्पयामि।

चन्दनम्

ॐ तं यज्ञं बर्हिषि प्रौक्षन्पुरुषं जातमग्रतः।
तेन देवा अयजन्त साध्या ऋषयश्च ये॥

श्रीखण्डं चन्दनं दिव्यं गन्धाढ्यं सुमनोहरम्।
विलेपनं च देवेशि चन्दनं प्रतिगृह्यताम्॥

श्रीधूमावत्यै नमः, चन्दनं समर्पयामि।

अक्षतान्

ॐ अक्षन्नमीमदन्त ह्यव प्रिया अधूषत। अस्तोषत स्वभानवो विप्रा नविष्ठया मती योजान्विन्द्रते हरी॥

अक्षतान्निर्मलान् दिव्यान् कुङ्कुमाक्तान् सुशोभनान्।
गृहाणेमान् महादेवि प्रसीद परमेश्वरि॥

श्रीधूमावत्यै नमः, अक्षतान् समर्पयामि।

पुष्पमालाम्

ॐ यत्पुरुषं व्यदधुः कतिधा व्यकल्पयन्।
मुखं किमस्यासीत्किं बाहू किमूरू पादा उच्येते॥

पद्म - शङ्खज - पुष्पादिक्षतपत्रैर्विचित्रताम्।
पुष्पमालां प्रयच्छामि गृहाण त्वं परमेश्वरि॥

श्रीधूमावत्यै नमः, पुष्पमालां समर्पयामि।

बिल्वपत्राणि

ॐ नमो बिल्मिने च कवचिने च नमो वर्मिणे च वरूथिने च नमः। श्रुताय च श्रुतसेनाय च नमो दुन्दुभ्याय चाहनन्याय च॥

अमृतोद्भवः श्रीवृक्षो महादेवप्रियः सदा।
बिल्वपत्रं प्रयच्छामि पवित्रं ते परमेश्वरि॥

श्रीधूमावत्यै नमः, बिल्वपत्राणि समर्पयामि।

दूर्वाङ्कुरान्

ॐ काण्डात्काण्डात् प्ररोहन्ती परुषः परुषस्परि।
एवा नो दूर्वे प्रतनु सहस्रेण शतेन च॥

विष्ण्वादिसर्वदेवानां प्रियपत्रां सुशोभनीम्।
क्षीरसागरसम्भूतां दूर्वां स्वीकुरु सर्वदा॥

श्रीधूमावत्यै नमः, दूर्वाङ्कुरान् समर्पयामि।

तुलसीदलम्

ॐ इदं विष्णु विंचक्रमे त्रेधा निदधेपद्म।
समूढमस्य पाठ० सुरे स्वाहा॥
तुलसीं हेमरूपां च रत्नरूपां च मञ्जरीम्।
भवमोक्षप्रदां तुभ्यमर्पयामि हरिप्रियाम्॥
श्रीधूमावत्यै नमः, तुलसीदलं समर्पयामि।

नानाआभूषणम्

ॐ युवं तमिन्द्रापर्वता पुरोयुधा यो नः पृतन्यादपतन्तमिद्धतं वज्रेण तन्तमिद्धतम्। दूरे चत्ताय छन्त्सद् गहनं यदिनक्षत्॥
हार-कङ्कण-केयूर-मेखला-कुण्डलादिभिः ।
रत्नाढ्यं कुण्डलोपेतं भूषणं प्रतिगृह्यताम्॥
श्रीधूमावत्यै नमः, नानाआभूषणं समर्पयामि।

सुगन्धिद्रव्यम्

ॐ त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्द्धनम्।
उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीयमाऽमृतात्॥
चन्दनागुरुकर्पूरैः संयुतं कुङ्कुमं तथा।
कस्तूर्यादिसुगन्धांश्च सर्वाङ्गेषु विलेपनम्॥
श्रीधूमावत्यै नमः, सुगन्धिद्रव्यं समर्पयामि।

आवरणपूजनम्

ॐ संविन्मये परे देवि परामृतरसप्रिये।
अनुज्ञां देहि मातस्त्वं परिवारार्चनाय मे॥

इति पठित्वा पुष्पाञ्जलि दद्यात्। इत्याज्ञां गृहीत्वा षट्कोणकेसरेषु आग्नेय्यादिचतुर्दिक्षु मध्ये दिक्षु च षडङ्गानि पूजयेत्। तद्यथा—ॐ धूं धूं हृदयाय नमः। हृदयश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः। इति सर्वत्र॥ १॥
ॐ धूं शिरसे स्वाहा। शिरःश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः॥ २॥
ॐ मां शिखायै वषट्। शिखाश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः॥ ३॥

ॐ वं नमः कवचाय हुं। कवचश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ॥ ४॥
ॐ तिं नेत्रत्रयाय वषट्। नेत्रत्रयश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ॥ ५ ॥
ॐ स्वाहा अस्त्राय फट्। अस्त्रश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ॥ ६ ॥
इति षडङ्गानि पूजयेत्। ततः पुष्पाञ्जलिमादाय मूलमुच्चार्य-

ॐ अभीष्टसिद्धिं मे देहि शरणागतवत्सले।
भक्त्या समर्पये तुभ्यं प्रथमावरणार्चनम्॥

इति पठित्वा पुष्पांजलिं च दत्त्वा पूजितास्तर्पिताः सन्तु इति वदेत्॥
इति प्रथमावरणम्॥

द्वितीयावरणार्चनम्—ततोऽष्टदले पूज्यपूजकयोरन्तराले प्राचीं तदनुसारेण अन्याः दिशः प्रकल्प्य प्राचीक्रमेण ॐ क्षुधायै नमः। क्षुधाश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः॥ १॥ ॐ तृष्णायै नमः। तृष्णाश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः॥ २॥ ॐ रत्यै नमः। रतिश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ॥ ३ ॥ ॐ निद्रायै नमः। निद्राश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ॥ ४॥ ॐ निर्ऋत्यै नमः। निर्ऋतिश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः॥ ५॥ ॐ दुर्गत्यै नमः। दुर्गतिश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ॥ ६ ॥ ॐ रुषायै नमः। रुषश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ॥ ७॥ ॐ अक्षमायै नमः। अक्षमाश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ॥ ८॥ इत्यष्टौ शक्तिः पूजयित्वा पुष्पाञ्जलिं दद्यात्। इति पूजयेत्।

ॐ अभीष्टसिद्धिं मे देहि शरणागतवत्सले।
भक्त्या समर्पये तुभ्यं द्वितीयावरणार्चनम्॥

पूर्व दिशायाम्—ॐ लं इन्द्राय नमः। इन्द्र श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः। आग्नेय कोणेषु—ॐ रं अग्नये तेजोऽधिपतये नमः। अग्नि श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः। दक्षिण दिशायाम्—ॐ मं यमाय नमः। यम श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः। नैर्ऋत्य कोणेषु—ॐ क्षं निर्ऋतिये नमः। निर्ऋति श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः। पश्चिम

दिशायाम्—ॐ वं वरुणाय नमः। वरुण श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।वायव्य कोणेषु—ॐ यं वायवे नमः।वायु श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः। उत्तर दिशायाम्—ॐ सं सोमाय नमः। सोम श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः। ईशान कोणेषु—ॐ हं ईशान्ये नमः। ईशान श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः। इन्द्र च ईशान मध्यभागे—ॐ आं ब्रह्मणे नमः। ब्रह्म श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः। वरुण च निर्ऋति मध्यभागे—ॐ ह्रीं अनन्ताय नमः। अनन्त श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।

तदुपरान्त इन्द्रादि दिक्पालों के पास उनके आयुधों का पूजन और तर्पण निम्न नाममंत्रों द्वारा करें—

इन्द्र समीपे—ॐ वं व्रजाय नमः। वज्र श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः। अग्नि समीपे—ॐ शं शक्तये नमः। शक्ति श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।यम समीपे—ॐ दं दण्डाय नमः।दण्ड श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।निर्ऋति समीपे—ॐ खं खड्गाय नमः।खड्ग श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः। वरुण समीपे—ॐ पां पाशाय नमः। पाश श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।वायु समीपे—ॐ अं अंकुशाय नमः। अंकुश श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः। सोम समीपे—ॐ गं गदाय नमः। गदा श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः। ईशान समीपे—ॐ शूं शूलाय नमः।शूल श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः। ब्रह्मणे समीपे—ॐ पं पद्माय नमः।पद्म श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।अनन्त समीपे—ॐ चं चक्राय नमः।चक्र श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।इति पूजयेत्।

ॐ अभीष्टसिद्धिं मे देहि शरणागतवत्सले।
भक्त्या समर्पये तुभ्यं द्वितीयावरणार्चनम्।।

इति मन्त्रेण पुष्पाञ्जलिं दद्यात्।

द्वितीयावरणदेवताभ्यो नमः।(समस्तावरणदेवताभ्यो नमः)पुष्पाञ्जलिं समर्पयामि। अनया पूजया समस्तावरणदेवताः प्रीयन्तां न मम।

धूपम्

ॐ ब्राह्मणोऽस्य मुखमासीद्बाहू राजन्यः कृतः।
ऊरू तदस्य यद्वैश्यः पद्भ्याᳬ शूद्रोऽ अजायत॥
दशाङ्गगुग्गुलं धूपं चन्दनागुरुसंयुतम्।
समर्पितं मया भक्त्या महादेवि प्रगृह्यताम्॥
श्रीधूमावत्यै नमः, धूपमाघ्रापयामि।

दीपम्

ॐ चन्द्रमा मनसो जातश्चक्षोः सूर्यो अजायत।
श्रोत्राद्वायुश्च प्राणश्च मुखादग्निरजायत॥
घृतवर्तिसमायुक्तं महातेजो महोज्ज्वलम्।
दीपं दास्यामि देवेशि सुप्रीता भव सर्वदा॥
श्रीधूमावत्यै नमः, दीपं दर्शयामि। हस्त प्रक्षालनम्।

नैवेद्यम्

ॐ नाभ्या आसीदन्तरिक्षᳬ शीर्ष्णो द्यौः समवर्तत।
पद्भ्यां भूमिर्दिशः श्रोत्रात्तथा लोकाँ २॥ अकल्पयन्॥
अन्नं बहुविधं स्वादु रसैः षड्भिः समन्वितम्।
नैवेद्यं गृह्यतां देवि भक्तिं मे ह्यचलां कुरु॥
श्रीधूमावत्यै नमः, नैवेद्यं निवेदयामि। मध्ये आचमनीयं जलं समर्पयामि।
उत्तरापोशनार्थे पुनर्नैवेद्य निवेदयामि। हस्तप्रक्षालनार्थे मुखप्रक्षालनार्थे च जलं समर्पयामि। पुनराचमनीयं जलं समर्पयामि।

करोद्वर्त्तनम्

ॐ अᳬ शुनाते अᳬ शुः पृच्यतां परुषापरुः।
गन्धस्ते सोममवतु मदाय रसो अच्युतः॥

करोद्वर्त्तनकं देवि! सुगन्धैः परिवासितैः।
गृहीत्वा मे वरं देहि परत्र च परां गतिम्॥
श्रीधूमावत्यै नमः, करोद्वर्त्तनार्थे गन्धं समर्पयामि।
हस्तप्रक्षालनार्थं जलं समर्पयामि।

ऋतुफलम्

ॐ याः फलिनीर्या अफला अपुष्यायाश्च पुष्पिणीः।
बृहस्पतिप्रसूतास्तानो मुञ्चन्त्वठं० हसः॥
नारिकेलं च नारिङ्गं कलिङ्गं मञ्जिरं तथा।
उर्वारुकं च देवेशि फलान्येतानि गृह्यताम्॥
श्रीधूमावत्यै नमः, ऋतुफलं समर्पयामि।

ताम्बूलम्

ॐ यत्पुरुषेण हविषा देवा यज्ञमतन्वत।
वसन्तोऽस्यासीदाज्यं ग्रीष्म इध्मः शरद्धविः॥
एला-लवङ्ग-कस्तूरी-कर्पूरैः पुष्पवासिताम्।
वीटिकां मुखवासार्थमर्पयामि परमेश्वरि॥
श्रीधूमावत्यै नमः, मुखवासार्थं ताम्बूलं
(पूगफल-एला-लवङ्गसहितम्) समर्पयामि।

दक्षिणाम्

ॐ हिरण्यगर्भः समवर्त्तताग्रे भूतस्य जातः पतिरेक आसीत्।
स दाधार पृथिवीं द्यामुतेमां कस्मै देवाय हविषा विधेम॥
पूजाफलसमृद्ध्यर्थं तवाग्रे परमेश्वरि।
अर्पितं तेन मे प्रीता पूर्णान् कुरु मनोरथान्॥
श्रीधूमावत्यै नमः, दक्षिणां समर्पयामि।

नीराजनम्

ॐ इदर्ठ० हविः प्रजननं मे अस्तु दशवीरर्ठ० सर्वगणर्ठ० स्वस्तये। आत्मसनि प्रजासनि पशुसनि लोकसन्यभयसनि। अग्निः प्रजां बहुलां मे करोत्वन्नं पयो रेतो अस्मासु धत्त॥ १॥

ॐ आ रात्रि पार्थिवर्ठ० रजः पितुरप्रायि धामभिः। दिवः सदार्ठ०सि बृहती वितिष्ठस आ त्वेषं वर्तते तमः॥ २॥

कर्पूरगौरं करुणावतारं संसारसारं भुजगेन्द्रहारम्।
सदा वसन्तं हृदयारविन्दे भवं भवानीसहितं नमामि॥

श्रीधूमावत्यै नमः, नीराजनं समर्पयामि।

मन्त्रपुष्पाञ्जलिम्

ॐ यज्ञेन यज्ञमयजन्त देवास्तानि धर्माणि प्रथमान्यासन्।
ते ह नाकं महिमानः सचन्त यत्र पूर्वे साध्याः सन्ति देवाः॥

ॐ राजाधिराजाय प्रसह्य साहिने। नमो वयं वैश्रवणाय कुर्महे। स मे कामान् कामकामाय मह्यम्। कामेश्वरो वैश्रवणो ददातु। कुबेराय वैश्रवणाय महाराजाय नमः॥ ॐ स्वस्ति! साम्राज्यं भौज्यं स्वाराज्यं वैराज्यं पारमेष्ठ्यं राज्यं महाराज्यमाधिपत्यमयं समन्तपर्यायी स्यात्, सार्वभौमः सार्व्वायुष आन्तादापरार्धात्, पृथिव्यै समुद्रपर्यन्ताया एकराडिति॥ तदप्येष श्लोकोऽभिगीतो मरुतः परिवेष्टारो मरुत्तस्यावसन् गृहे। आविक्षितस्य कामप्रेर्विश्वेदेवाः सभासद इति॥

ॐ विश्वतश्चक्षुरुत विश्वतोमुखो विश्वतोबाहुरुत विश्वतस्पात्।
सं बाहुभ्यां धमति सम्पतत्रैर्द्यावाभूमी जनयन् देव एकः॥

नानासुगन्धिपुष्पाणि यथाकालोद्भवानि च।
पुष्पाञ्जलिर्मयादत्तो गृहाण परमेश्वरि!॥

ॐ धूमावत्यै च विद्महे संहारिण्यै च धीमहि। तन्नो धूमा प्रचोदयात्।

श्रीधूमावत्यै नमः, मन्त्रपुष्पाजलिं समर्पयामि।

प्रदक्षिणाम्

ॐ ये तीर्थानि प्रचरन्ति सृकाहस्ता निषङ्गिणः।
तेषाꣳ सहस्रयोजनेऽव धन्वानि तन्मसि॥

यानि कानि च पापानि जन्मान्तरकृतानि च।
तानि तानि प्रणश्यन्ति प्रदक्षिणपदे पदे॥

श्रीधूमावत्यै नमः, प्रदक्षिणां समर्पयामि।

स्तुतिः

कल्पादौ या कालिकाद्याऽचीकलन्मधुकैटभौ।
कल्पान्ते त्रिजगत्सर्वं धूमावतीं भजामि ताम्॥ १॥
गुणागाराऽगम्यगुणा या गुणागुणवर्धिनी।
गीता वेदार्थतत्त्वज्ञैर्धूमावतीं भजामि ताम्॥ २॥
खट्वाङ्गधारिणी खर्वाखण्डिनी खलरक्षसाम्।
धारिणी खेटकस्यापि धूमावतीं भजामि ताम्॥ ३॥
घूर्णघूर्णकरा घोरा घूर्णिताक्षी घनस्वना।
घातिनी घातकानां या धूमावतीं भजामि ताम्॥ ४॥
चर्वन्तीमस्थिखण्डानां चण्ड-मुण्डविदारिणीम्।
चण्डाट्टहासिनीं देवीं भजे धूमावतीमहम्॥ ५॥
छिन्नग्रीवां क्षताच्छन्नां छिन्नमस्तस्वरूपिणीम्।
छेदिनीं दुष्टसङ्घानां भजे धूमावतीमहम्॥ ६॥
जाता या याचिता देवैरसुराणां विघातिनी।
जल्पन्ती बहु गर्जन्ती भजे तां धूम्ररूपिणीम्॥ ७॥

श्रीधूमावत्यै नमः, स्तुतिं समर्पयामि।

॥ इति धूमावतीपूजनम्॥

पूजनसामग्रीदानम्

नामकरणसंस्कारोपरान्ते—ततः—धूमावतीदेवतायाः करिष्यमाण-नित्यपूजोपकरणानि वस्त्रम्, ताम्रकलशम्, शङ्खम्, धूप-दीप-नैवेद्य-पात्राणि, पुष्पपात्रम्, ताम्बूलपात्रम्, आसनम्, पादुके, ग्रैवेयकम्, करचरण-भूषणादिकम्, नित्यपूजोत्सवभोगरागाद्यर्थं ग्रामक्षेत्रद्रव्यादिकं, घण्टां, व्यजनं, उपधानादिसामग्रीसहितां शय्यां च देवोद्देशेनोत्सृजेत्।

शान्त्यादिहोमः

आचार्य और ब्राह्मण सर्वशान्ति के लिए निम्न मंत्र का उच्चारण करते हुए यजमान से एक सौ आठ बार कुण्ड में गौ-घृत से हवन करावें—**ॐ अघोरेभ्योऽथ घोरेभ्यो घोरघोरतरेभ्यः। सर्व्वेभ्यः सर्वशर्व्वेभ्यो नमस्ते ऽअस्तु रुद्ररूपेभ्यः स्वाहा॥**

अग्निपूजनम्

आचार्य और ब्राह्मण निम्न वैदिक मंत्र और वाक्य का उच्चारण करते हुए यजमान से अग्निदेवता का पूजन करावें—

ॐ अग्ने नय सुपथा राये अस्मान्विश्वानि देव वयुनानि विद्वान्। युधोध्यस्मज्जुहुराणमेनो भूयिष्ठां ते नमउक्तिं विधेम॥

वाक्य—**ॐ स्वाहा—स्वधायुताग्नये वैश्वानराय नमः। इत्यने-नाऽग्निं सम्पूजयेत्।**

स्विष्टकृद्धवनम्

यजमान और उसकी धर्मपत्नी को खड़ा करवाके आचार्य बचे हुए शाकल का हवन निम्न वाक्य का उच्चारण करवाके कुण्ड में करावें—**ॐ अग्नये स्विष्टकृते स्वाहा।**

यजमान निम्न वाक्य का उच्चारण करके स्रुव में बचे हुए घृत को प्रोक्षणीपात्र में छोड़ दे—**इदमग्नये स्विष्टकृते न मम।**

भूरादिनवाहुतिः

आचार्य और ब्राह्मण निम्न नाम मन्त्रों और मन्त्रों का उच्चारण करते हुए यजमान से कुण्ड में आहुति प्रदान करावें—

ॐ भूः स्वाहा— इदमग्नये न मम।

ॐ भुवः स्वाहा—इदं वायवे न मम।

ॐ स्वः स्वाहा—इदं सूर्याय न मम।

ॐ त्वं नो अग्ने वरुणस्य विद्वान्देवस्य हेडो अवयासिसीष्ठाः। यजिष्ठो वह्नितमः शोशुचानो विश्वा द्वेषाꣳसि प्रमुमुग्ध्यस्मत् स्वाहा॥ इदमग्नीवरुणाभ्यां न मम॥

ॐ स त्वं नो अग्नेऽवमो भवोती नेदिष्ठो अस्या उषसो व्युष्टौ। अवयक्ष्व नो वरुणꣳ रराणो वीहि मृडीकꣳ सुहवो न एधि स्वाहा॥ इदमग्नीवरुणाभ्यां न मम॥

ॐ अयाश्चाग्नेऽस्यनभिशस्तिपाश्च सत्यमित्वमया असि। अया नो यज्ञं वहास्यया नो धेहि भेषजꣳ स्वाहा॥ इदमग्नये अयसे न मम॥

ॐ ये ते शतं वरुण ये सहस्त्रं यज्ञियाः पाशा वितता महान्तः। ते भिर्नो अद्य सवितोत विष्णुर्विश्वे मुञ्चन्तु मरुतः स्वर्क्काः स्वाहा॥ इदं वरुणाय सवित्रे विष्णावे विश्वेभ्यो देवेभ्यो मरुद्भ्यः स्वर्केभ्यश्च न मम॥

ॐ उदुत्तमं वरुण पाशमस्मदवाधमं वि मध्यमं श्रथाय। अथा वयमादित्य व्रते तवानागसो अदितये स्याम स्वाहा॥ इदं वरुणायादित्यादितये न मम॥

ॐ प्रजापतये स्वाहा, इदं प्रजापतये न मम॥

बलिदानम्

यजमानः दक्षिणहस्ते जलाऽक्षत-द्रव्यं चादाय, सङ्कल्पं कुर्यात्— देशकालौ संकीर्त्य, अस्य कृतस्य सप्रासादधूमावतीप्रतिष्ठाकर्मणः साङ्गतासिद्ध्यर्थं सदीपमाषभक्तबलिदानं पायसबलिदानं वा करिष्ये।

वास्तुदेवानां पूर्वं बलिर्न कृतश्चेदत्र कुर्यात्। वस्तुतस्तु वास्तुदेवताभ्योऽत्रैव बलिदानं युक्तम्, पूर्वं मयूखादावनुक्तत्वात्। स चेत्थम्—'शिखिने एव पायसबलिर्नमः। इत्येवं तत्तन्नाम्ना बलिं दद्यात्। यद्वाशिरव्यादिवास्तुदेवताभ्यो नमः' अमुं पायसबलिं समर्पयामि। भो! वास्तुदेवता पायसबलिं गृह्णीत मम सकुटुम्बस्य सपरिवारस्य आयुः कर्त्र्यः क्षेमकर्त्र्यः शान्तिकर्त्र्यः पुष्टिकर्त्र्यः तुष्टिकर्त्र्यः वरदा भवत। अनेन बलिदानेन वास्तुदेवताः प्रीयन्ताम्। ततः—'वास्तोष्पत्यन्तेभ्यः सूर्यादिग्रहेभ्यो नमः' पायसबलिं समर्पयामि। भो! भो! वास्तोष्पत्यन्ताः सूर्यादिग्रहाः पायसबलिं गृह्णीत मम यजमानस्य अनेन बलिदानेन वास्तोष्पत्यन्ताः सूर्यादिग्रहाः प्रीयन्ताम्।

सतिसम्भवे—ॐ ब्रह्मादिमण्डलदेवताभ्यो नमः। ॐ योगिनीभ्यो नमः। ॐ क्षेत्रपालेभ्यो नमः माषभक्तबलिं समर्पयामि। भो! भो! ब्रह्मादिमं० भो! भो! योगिनीदेवताः भो! भो! क्षेत्रपालदेवताः मम सकुटुम्बस्य सपरिवारस्य आयुःकर्तारः, पुष्टिकर्तारः, तुष्टिकर्तार, वरदा भवत। अनेन बलिदानेन०।

क्षेत्रपालबलयः

संकल्पः—देशकालौ सङ्कीर्त्य, अमुकगोत्रोऽमुकशर्माहम् (वर्माऽहम्, गुप्तोऽहम्, दासोऽहम्) सपत्नीकोऽहं अस्य सप्रासादधूमावतीप्रतिष्ठाकर्मणः साङ्गतासिद्ध्यर्थं क्षेत्रपालादिप्रीत्यर्थं भूत-प्रेत-पिशाचादिनिवृत्यर्थं च सार्वभौतिकबलिप्रदानं करिष्ये।

एक बाँस आदि के पात्र में कुशों को बिछाकर उनके ऊपर मनुष्य के आहार के चौगुना अथवा दोगुना अथवा दही, उड़द और जलपात्र रखकर चतुर्मुख दीप जलाकर निम्न मन्त्र का उच्चारण करें—

ॐ नहि स्पशमविदन्नन्यमस्माद्वैश्वानरात्पुरएतारमग्नेः। एमेनमवृधन्नमृता अमर्त्यं वैश्वानरं क्षैत्रजित्याय देवाः॥

'ॐ क्षेत्रपालाय नमः' यह कहकर क्षेत्रपाल की षोडशोपचार अथवा पञ्चोपचार से पूजा करके निम्न श्लोकों का उच्चारण करके प्रार्थना करें—

नमो वै क्षेत्रपालस्त्वं भूतप्रेतगणैः सह।
पूजां बलिं गृहाणेमं सौम्यो भव च सर्वदा॥
पुत्रान् देहि धनं देहि सर्वान् कामांश्च देहि मे।
आयुरारोग्यं मे देहि निर्विघ्नं कुरु सर्वदा॥

यजमान अपने दाहिने हाथ में जल लेकर कहे—क्षेत्रपालाय साङ्गाय सपरिवाराय सायुधाय सशक्तिकाय मारीगण-भैरव-राक्षस-कूष्माण्ड-वेताल-भूत-प्रेत-पिशाच-डाकिनी-शाकिनी-पिशाचिनी-ब्रह्मराक्षस-गणसहिताय इमं कुङ्कुम-रक्तपुष्पादियुतं सदीपं सताम्बूलं सदक्षिणं दधि-माष-भक्तबलिं समर्पयामि। भोः क्षेत्रपाल! सर्वतो दिशं रक्ष बलिं भक्ष मम सकुटुम्बस्य सपरिवारस्य आयुः कर्ता क्षेमकर्ता शान्तिकर्ता पुष्टिकर्ता वरदो भव। अनेन बलिदानेन क्षेत्रपालः प्रीयताम्।

बलिं गृहणन्त्विमे देवा आदित्या वसवस्तथा।
मरुतश्चाश्विनौ रुद्राः सुपर्णाः पन्नगाः खगाः (नगाः)॥ १॥
असुरा यातुधानाश्च पिशाचोरगरक्षसाः।
डाकिन्यो यक्षवेताला योगिन्यः पूतनाः शिवाः॥ २॥
जृम्भकाः सिद्धगन्धर्वाः सौम्या विद्याधरानगाः।
दिक्पाला लोकपालाश्च ये च विघ्नविनायकाः॥ ३॥
जगतां शान्तिकर्तारो ब्रह्माद्याश्च महर्षयः।
मा विघ्नं मा च मे पापं मा सन्तु परिपन्थिनः॥
सौम्या भवन्तु तृप्ताश्च भूत-प्रेताः सुखावहाः॥ ४॥
भूतानि यानीह वसन्ति तानि बलिं गृहीत्वा विधिवत्प्रयुक्तम्।
अन्यत्र वासं परिकल्पयन्तु रक्षन्तु मां तानि सदैव चात्र॥ ५॥

इसके बाद नापित अपने दोनों हाथों में क्षेत्रपाल की बलि को लेकर यजमान के मस्तक पर से घुमाकर चौराहे पर रख दे और वापस आकर अपने हाथ-पैर जल से धो ले। तदुपरान्त आचार्य यजमान के मस्तक पर दूर्वा के द्वारा निम्न मंत्र का उच्चारण करते हुए जल छिड़कें—

ॐ हिङ्काराय स्वाहा हिङ्कृताय स्वाहा क्रन्दते स्वाहा वक्क्रन्दाय स्वाहा प्रोथते स्वाहा प्रप्रोथाय स्वाहा गन्धाय स्वाहा घ्राताय स्वाहा निविष्ट्राय स्वाहो पविष्ट्राय स्वाहा सन्दिताय स्वाहा वल्गते स्वाहासीनाय स्वाहा शयानाय स्वाहा स्वपते स्वाहा जाग्रते स्वाहा कूजते स्वाहा प्रबुद्धाय स्वाहा विजृम्भमाणाय स्वाहा विचृत्ताय स्वाहासर्ठ० हानायस्वाहोपस्स्थिताय स्वाहा ऽयनाय स्वाहा प्रायणाय स्वाहा॥

पूर्णाहुतिः

यजमान हाथ-पैर धोकर आचमन करके प्राणायाम करे और प्रज्वलित कुण्ड के पास आकर बैठे। उस समय आचार्य निम्न संकल्प यजमान से करावें—**देशकालौ सङ्कीर्त्य, अद्य पुण्यतिथौ सप्रासादधूमावती-प्रतिष्ठाकर्मणः साङ्गतासिद्ध्यर्थं मृडनामाग्नौ पूर्णाहुतिं होष्ये।**

ॐ समुद्रादूर्मिर्मधुमाँ२॥ उदारदुपार्ठ०शुना सममृतत्वमानट्। घृतस्य नाम गुह्यं य्यदस्ति जिह्वा देवानां मृतस्य नाभिः॥ १॥

वयं नाम प्रब्रवामा घृतस्यास्मिन् य्यज्ञे धारयामा नमोभिः। उप ब्रह्मा श्रृणवच्छस्यमानं चतुः श्रृङ्गोऽवमीद्गौर एतत्॥ २॥

चत्वारि श्रृङ्गा त्रयो ऽअस्य पादा द्वे शीर्षे सप्त हस्तासो ऽअस्य। त्रिधा बद्धो वृषभो रोरवीति महो देवो मर्त्त्याँ २॥ आविवेश॥ ३॥

त्रिधा हितं पणिभिर्गुह्यमानं गवि देवासो घृतमन्न्वविन्दन्। इन्द्र ऽएकर्ठ० सूर्य्य ऽएकं जजान वेनादेकर्ठ० स्वधया निष्टतक्षुः॥ ४॥

एता ऽअर्षन्ति हृद्यात्समुद्राच्छतव्रजा रिपुणा नावचक्षे। घृतस्य धारा ऽअभिचाकशीमि हिरण्ययो व्वेतसो मध्य ऽआसाम्॥ ५॥

सम्यक् स्त्रवन्ति सरितो न धेना ऽअन्तर्हृदा मनसा पूयमानाः। एते अर्षन्त्यूर्मयो घृतस्य मृगा ऽइव क्षिपणोरीषमाणाः॥ ६॥

सिन्धोरिव प्राद्ध्वने शूघनासो वातप्रमियः पतयन्ति यह्वाः। घृतस्य धारा अरुषो न वाजी काष्ठा भिन्दन्नूर्मिभिः पिन्वमानः॥ ७॥

अभिप्रवन्त समनेव योषाः कल्याण्यः स्मयमानासोऽअग्निम्। घृतस्य धाराः समिधो नसन्त ता जुषाणो हर्य्यति जातवेदाः॥ ८॥

कन्न्या इव वहतुमेतवा ऽउ ऽअञ्ज्यञ्जाना ऽअभिचाकशीमि। यत्र सोमः सूयते यत्र यज्ञो घृतस्य धारा ऽअभि तत्पवन्ते॥ ९॥

अभ्यर्षत सुष्टुतिं गव्यमाजिमस्मासु भद्रा द्रविणानि धत्त। इमं यज्ञं नयत देवता नो घृतस्य धारा मधुमत्पवन्ते॥ १०॥

धामं ते विश्श्वं भुवनमधि श्रितमन्तः समुद्रे हृद्यन्तरायुषि। अपामनीके समिथे य ऽआभृतस्तमश्याम मधुमन्तं त ऊर्मिम्॥ ११॥

पुनस्त्वाऽऽदित्या रुद्रा वसवः समिन्धतां पुनर्ब्रह्माणो वसुनीथ यज्ञैः। घृतेन त्वं तन्वं वर्द्धयस्व सत्त्याः सन्तु यजमानस्य कामाः॥ १२॥

मूर्धानं दिवो ऽअरतिं पृथिव्या वैश्वानरमृत ऽआ जातमग्निम्। कविर्ठ० सम्म्राजमतिथिं जनानामासन्ना पात्रं जनयन्त देवाः॥ १३॥

पूर्णा दर्वि परापत सुपूर्ण्णा पुनरापत। वस्नेव विक्रीणावहा ऽइषमूर्जर्ठ० शतक्रतो॥ १४॥

इदमग्नये वैश्वानराय वसुरुद्रादित्येभ्यः शतक्रतवे सप्तवते अग्नये अद्भ्यश्च न मम।

वसोर्द्धाराहवनम्

यजमानः स्वदक्षिणहस्ते जलाऽक्षत-द्रव्यं चादाय, सङ्कल्पं कुर्यात्—देशकालौ संकीर्त्य, अमुकगोत्रः अमुकशर्माऽहम् (वर्माऽहम्, गुप्तोऽहम्, दासोऽहम्) सपत्नीकोऽहं कृतस्य सप्रासादधूमावतीप्रतिष्ठा-कर्मणः साङ्गतासिद्ध्यर्थं तत्सम्पूर्णफलप्राप्त्यर्थं वसोर्द्धारां होष्यामि।

ॐ सप्त ते अग्ने समिधः सप्त जिह्वाः सप्त ऋषयः सप्त धाम प्रियाणि। सप्त होत्राः सप्तधा त्वा यजन्ति सप्त योनीरापृणस्व घृतेन स्वाहा॥ १॥

शुक्रज्योतिश्च चित्रज्योतिश्च सत्यज्योतिश्च ज्योतिष्माँश्चा शुक्रश्च ऋतपाश्चात्यर्ठ० हाः ॥ २ ॥

ईदृङ् चान्यादृङ् च सदृङ् च प्रतिसदृङ् च। मितश्च संमितश्च सभराः ॥ ३ ॥

ऋतश्च सत्यश्च ध्रुवश्च धरुणश्च। धर्त्ता च विधर्त्ता च विधारयः ॥ ४ ॥

ऋतजिच्च सत्यजिच्च सेनजिच्च सुषेणश्च। अन्तिमित्रश्च दूरे ऽअमित्रश्च गणः ॥ ५ ॥

ईदृक्षास ऽएतादृक्षासऽऊषणुः सदृक्षासः प्रतिसदृक्षास एतन। मितासश्च संमितासो नो ऽअद्य सभरसो मरुतो यज्ञे ऽअस्मिन् ॥ ६ ॥

स्वतवांश्च प्रघासी च सान्तपनश्च गृहमेधी च। क्रीडी च शाकी चोज्जेषी ॥ ७ ॥

इन्द्रं दैवीर्विशो मरुतोऽनुवर्त्मानोऽभवन्यथेन्द्रं दैवीर्विशो मरुतोऽनु-वर्त्मानोऽभवन्। एवमिमं यजमानं दैविश्च विशो मानुषीश्चानुवर्त्मानो भवन्तु ॥ ८ ॥

इमर्ठ० स्तनमूर्जस्वन्तं धयापां प्रपीनमग्ने सरिरस्य मद्ध्ये। उत्सं जुषस्व मधुमन्तमर्वन्समुद्रियर्ठ० सदनमाविशस्व ॥ ९ ॥

घृतं मिमिक्षे घृतमस्य योनिर्घृते श्रितो घृतम्वस्य धाम। अनुष्वधमावह मादयस्व स्वाहाकृतं वृषभ वक्षि हव्यम् ॥ १० ॥

व्वसोः पवित्रमसि शतधारं वसोः पवित्रमसि सहस्रधारम्। देवस्त्वा सविता पुनातु व्वसोः पवित्रेण शतधारेण सुप्वा कामधुक्षः स्वाहा ॥ ११ ॥

ॐ इदमग्नये वैश्वानराय न मम।

अग्नि प्रदक्षिणाः

आचार्य आगे दिए हुए मन्त्र का उच्चारण करते हुए यजमान से अग्निदेवता की प्रदक्षिणा करावें—

ॐ अग्ने नय सुपथा राये अस्मान्विश्वानि देव वयुनानि विद्वान्।
युयोध्यस्मज्जुहुराणमेनो भूयिष्ठां ते नम उक्तिं विधेम॥

आचार्य पश्चिम दिशा की ओर आसन पर बैठकर निम्न पौराणिक श्लोकों का उच्चारण करते हुए यजमान से अग्निदेवता की प्रार्थना करावें—

सप्तहस्तश्चतुःशृङ्गः सप्तजिह्वो द्विशीर्षकः।
त्रिपात्प्रसन्नवदनः सुखासीनः शुचिस्मितः॥
मेषारूढो जटाबद्धो गौरवर्णो महौजसः।
धूम्रध्वजो लोहिताक्षः सप्तार्चिः सर्वकामदः॥
शिखाभिर्दीप्यमानाभिरूर्ध्वगाभिस्तु संयुतः।
स्वाहां तु दक्षिणे पार्श्वे देवीं वामे स्वधां तथा॥
विभ्रद्दक्षिणहस्तैस्तु शक्तिमन्नं स्रुचं स्रुवम्।
तोमरं व्यजनं वामे घृतपात्रं च धारयन्॥
आत्माभिमुखमासीन एवंरूपो हुताशनः॥

हवनीयकुण्डभस्मधारणम्

तत आचार्यः हवनकुण्डस्य ईशानकोणात् श्रुवेण भस्मानीय प्रथमं स्वशरीरे ततो यजमानशरीरे च भस्मानुलेपनं कुर्यात्। 'ॐ त्र्यायुषं जमदग्नेः' इति ललाटे। 'कश्यपस्य त्र्यायुषम्' इति ग्रीवायाम्। 'यद्देवेषु त्र्यायुषम्' इति दक्षिणबाहुमूले। 'तन्नो ऽअस्तु त्र्यायुषम्' इति हृदि।

तदुपरान्त प्रोक्षणीपात्र में स्थित घृत को यजमान सूँघे और दो बार आचमन करके प्रणीतापात्र में रक्खी हुई पवित्री से प्रणीता जल को अपने मस्तक पर छिड़के और उन दोनो कुशाओं को अग्नि में परित्याग कर दे।

ब्रह्मणे पूर्णपात्रदानम्

यजमानः स्वदक्षिणहस्ते जलाऽक्षत-द्रव्यं चादाय, सङ्कल्पं कुर्यात्—देशकालौ संकीर्त्य, अमुकगोत्रः अमुकशर्माऽहम् (वर्माऽहम्, गुप्तोऽहम्,

दासोऽहम्) अस्य सप्रासादधूमावतीप्रतिष्ठाकर्मणः साङ्गतासिद्ध्यर्थं तत्सम्पूर्णफलप्राप्तये च इदं पूर्णपात्रं सदक्षिणं ब्रह्मणे तुभ्यमहं सम्प्रददे।

यजमान संकल्प करके ब्रह्मा को पूर्णपात्र प्रदान करे और ब्रह्मा इस वाक्य का उच्चारण करे—ॐ द्यौस्त्वा ददातु पृथिवी त्वा प्रतिगृह्णातु।

अवभृथस्नानम्

यजमानः पूर्णाहुत्यनन्तरं पूर्णपात्रादिदानानन्तरं प्रधानवेद्युपरि स्थापितं प्रधानकलशं, हवनकुण्डाद् बहिः पतितं हवनीयद्रव्यं स्रुक्स्रुवादियज्ञपात्रं पूजनसामग्रीं च गृहीत्वा वेदमन्त्रोच्चारण—भगवन्नामकीर्त्तन-वाद्यघोष-पुरस्सरं आचार्यादिऋत्विग्भिः नगरवासिभिश्च सह नदीं जलाशयं वा गच्छेत्। अर्धमार्गोपरि क्षेत्रपालं सम्पूज्य क्षेत्रपालाय बलिं दद्यात्। नदीं जलाशयं वा गत्वा आचार्यादय ऋत्विजः स्वस्तिवाचनं कुर्युः। पश्चाद् यजमानः सङ्कल्पं कुर्यात्। तद्यथा—मम सर्वेषां परिवाराणां तथाऽन्येषां समुपस्थितानां जनानाञ्च सर्वविध-कल्याणपूर्वकं धर्मार्थकाममोक्षचतुर्विधपुरुषार्थसिद्धिद्वारा श्रीपरमेश्वर-प्रीतिपूर्वकं च कृतस्य सप्रासादधूमावतीप्रतिष्ठाकर्मणः सांगतासिद्ध्यर्थं तत्सम्पूर्णफलप्राप्त्यर्थं च पुण्यकालेऽस्मिन् अस्यां नद्यां जलाशये वा मांगलिकावभृथस्नानं समस्तसमुपस्थितजनैः सहाहं करिष्ये।

अनन्तरं नद्यां जलाशये वा जलमातृणामावाहनं पूजनं च कुर्यात्। तद्यथा—ॐ भूर्भुवः स्वः मत्स्यै नमः, मत्सीमावाहयामि स्थापयामि। ॐ भूर्भुवः स्वः कूर्म्यै नमः, कूर्मीमावाहयामि स्थापयामि। ॐ भूर्भुवः स्वः वाराह्यै नमः, वाराहीमावाहयामि स्थापयामि। ॐ भूर्भुवः स्वः दर्दुर्यै नमः, दर्दुरीमावाहयामि स्थापयामि। ॐ भूर्भुवः स्वः मकर्यै नमः, मकरीमावाहयामि स्थापयामि। ॐ भूर्भुवः स्वः जलूक्यै नमः, जलूकीमावाहयामि स्थापयामि। ॐ भूर्भुवः स्वः तन्तुक्यै नमः, तन्तुकीमावाहयामि स्थापयामि। ततो वरुणदेवतामावाहयेत्—

आगच्छ जलदेवेश जलनाथ पयस्पते।
तव पूजां करिष्यामि कुम्भेऽस्मिन् सन्निधिं कुरु॥

इत्यावाह्य सम्पूज्य च—

श्वेताभ्र शिखिराकार सर्वभूतहिते रतः।
गृहाणार्घ्यमिमं देव जलनाथ नमोऽस्तु ते॥

इति विशेषार्घ्यं दद्यात्। ततः—

ॐ इमं मे वरुण श्रुधी हवमद्या च मृडय। त्वामस्युराचके॥१॥
तत्त्वा यामि ब्रह्मणा वन्दमानस्तदाशास्ते यजमानो हविर्भिः।
अहेडमानो वरुणेह बोध्युरुशर्ठ० समान आयुः प्रमोषीः॥२॥
त्वन्नो अग्ने वरुणस्य विद्वान् देवस्य हेडो अवयासिसीष्ठाः।
यजिष्ठो बह्नितमर्ठ० शोशुचानो विश्वा द्वेषार्ठ०सि प्रमुमुग्ध्यस्मत्॥३॥
सत्वन्नो अग्नेऽवमो भवोती नेदिष्ठो अस्या ऽउषसो व्युष्टौ।
अव यक्ष्वनो वरुणर्ठ० रराणो वीहि मृडीकर्ठ० सुहवो नऽएधि॥४॥
मापो मौषधीर्हिर्ठ० सीर्द्धाम्नो धाम्ना राजँस्ततो वरुण नो मुञ्च।
यदाहुरघ्न्या ऽइति वरुणओत शपामहे ततो वरुण नो मुञ्च॥५॥
उदुत्तमं वरुण पाशमस्मदवाधमं विमध्यमर्ठ० श्रथाय।
अथा वयमादित्य व्रते तवानागसो अदितये स्याम॥६॥
मुञ्चन्तु मा शपथ्यादथो वरुण्यादूत।
अथो यमस्य षड्वीशात् सर्वस्माद्देवकिल्विषात्॥७॥
अवभृथ निचुं पुण निचेरुरसि निचुं पुणः।
अव देवैर्देवकृतमेनो यासिषमवमर्त्त्यैमर्त्त्यकृतं पुरुराब्णो देवरिषस्पाहि॥८॥

इति मन्त्रैः सम्प्रार्थ्य स्रुवरेखया तीर्थप्रकल्पनं कुर्यात्—

ब्रह्माण्डोदरतीर्थानि चाकृष्याङ्कुशमुद्रया।
तेन सत्येन मे देव तीर्थं देहि दिवाकर॥

इति रज्वादिना परितश्चतुरस्त्रं स्नानार्थं व्यवस्थां प्रकल्पयेत्। ततः—

ॐ पञ्च नद्यः सरस्वतीमपियन्ति सस्रोतसः।
सरस्वती तु पञ्चधा सो देशेऽभवत्सरित्॥

इति मन्त्रेण गङ्गां नदीं जलाशयं वा सम्पूज्य ततो लाजादिना जीवमातृणां बलिं दद्यात् तद्यथा—ॐ भूर्भुवः स्वः कुमार्यै नमः। ॐ भूर्भुवः स्वः धनदायै नमः। ॐ भूर्भुवः स्वः नन्दायै नमः। ॐ भूर्भुवः स्वः विमलायै नमः। ॐ भूर्भुवः स्वः मङ्गलायै नमः। ॐ भूर्भुवः स्वः अचलायै नमः। ॐ भूर्भुवः स्वः पद्मायै नमः।

पश्चाद् धूमावतीप्रतिष्ठायागे पुरुषसूक्तेन च जले अभिषेकः कार्यः ततो होमावसरे हवनकुण्डाद् बहिः पतितं हवनीयद्रव्यं नद्यां जलाशये वा तूष्णीं प्रक्षिपेत्। ततो जले—'वडवाग्निरूपायाग्नये नमः' इतिमन्त्रेण षोडशोपचारैः पञ्चोपचारैर्वा सम्पूज्य द्वादश आज्याहुतीन् जुहुयात्। तद्यथा—

१. ॐ अद्भ्यः स्वाहा, इदमद्भ्यो न मम॥ २. ॐ वार्भ्यः स्वाहा, इदं वार्भ्यो न मम॥ ३. ॐ उदकाय स्वाहा, इदमुदाय न मम॥ ४. ॐ तिष्ठन्तीभ्यः स्वाहा, इदं तिष्ठन्तीभ्यो न मम॥ ५. ॐ स्रवन्तीभ्यः स्वाहा, इदं स्रवन्तीभ्यो न मम॥ ६. ॐ स्यन्दमानाभ्यः स्वाहा, इदं स्यन्दमानाभ्यो न मम॥ ७. ॐ कूप्याभ्यः स्वाहा, इदं कूप्याभ्यो न मम॥ ८. ॐ सूद्याभ्यः स्वाहा, इदं सूद्याभ्यो न मम॥ ९. ॐ धार्याभ्यः स्वाहा, इदं धार्याभ्यो न मम॥ १०. ॐ अर्णवाय स्वाहा, इदमर्णवाय न मम॥ ११. ॐ समुद्राय स्वाहा, इदं समुद्राय न मम॥ १२. ॐ सरिराय स्वाहा, इदं सरिराय न मम॥ ततो यजमानः सम्पूजितेन प्रधानकलशोदकेन—

ॐ इमं मे वरुण श्रुधी हवमद्या च मृडय। त्वामवस्युराचके॥ १॥
तत्त्वा यामि ब्रह्मणा वन्दमानस्तदाशास्ते यजमानो हविर्भिः।
अहेडमानो वरुणेह बोद्ध्युरुशर्ठ० स मा नऽआयुः प्रमोषीः स्वाहा॥ २॥
त्वन्नो ऽअग्ने वरुणस्य विद्वान्देवस्य हेडो अव यासिसीष्ठाः।
यजिष्ठो वह्नितमः शोशुचानो विश्श्वा द्वेषार्ठ०सि प्र मुमुग्ध्यस्मत्॥ ३॥

स त्वं नो अग्ने वमो भवोती नेदिष्ठो अस्या उषसो व्युष्टौ।
अवयक्ष्व नो वरुणर्ठ० रराणो वीहि मृडीकः सुहवो न ऽएधि॥४॥
उदुत्तमं वरुण पाशमस्मदवाधमं विमध्यमर्ठ० श्रथाय।
अथा वयमादित्य व्रते तवानागसो अदितये स्याम॥५॥
इति वारुणमन्त्रैः स्नानं कुर्यात्। प्रधानकलशोदकेन कुशैः दूवाङ्कुरैश्च अन्येषां जनानां सम्मार्जनं कारयेत्। पश्चाद् यजमानः प्रतिष्ठाकुण्डादानीतेन भस्मना स्रुचिस्थितेन आज्येन च स्वशरीरे अनुलेपनं कृत्वा नद्यां जलाशये वा स्नानं कुर्यात्। स्नानानन्तरं नूतनवस्त्राणि परिधाय तिलकाद्यलङ्करणं कुर्यात्। ततो यजमानः—

ॐ हर्ठ० सः शुचिषद् वसुरन्तरिक्षसद्धोता वेदिषदतिथिर्दुरोणसत्।
नृषद्वरसदृतसद्व्योमसदब्जा गोजा ऋतजा अद्रिजा ऋतं बृहत्॥

इति मन्त्रेण सूर्योपस्थानं कृत्वा तीर्थदेवतां सम्पूज्य प्रार्थयेत्—

ॐ हिरण्यशृङ्गोऽयो अस्य पादा मनोजवा अवर इन्द्र आसीत्।
देवा इदस्य हविरद्यमायन्यो अर्वन्तं प्रथमो अध्यतिष्ठत्॥१॥
ईर्मान्तासः सिलिकमध्यमासः सर्ठ०शूरणासो दिव्यासो अत्याः।
हर्ठ०सा इव श्रेणिशो यतन्ते यदाक्षिषुर्दिव्यमज्ममश्वाः॥२॥
तव शरीरं पतयिष्ण्वर्वन् तव चित्तं वात इव ध्रजीमान्।
तव शृङ्गाणि विष्ठिता पुरुत्रारण्येषु जर्भुराणा चरन्ति॥३॥

तदुपरान्त आचार्य और ब्राह्मणों को दक्षिणा देकर प्रधानकलश और पूजासामग्री को लेकर यजमान धूमावती देवी का कीर्तन करते हुए आचार्य और ब्राह्मणों के साथ प्रतिष्ठास्थल पर आकर हाथ और पैर धोकर प्रासाद की प्रदक्षिणा कर मण्डप के पूर्व द्वार से प्रवेश करे। प्रधान कलश को प्रधान वेदी पर स्थापित कर धूमावती देवी की प्रतिष्ठा के अवशिष्ट कर्म को करे।

श्रेयोदानम्

कृतस्य सप्रासादधूमावतीप्रतिष्ठाकर्मणः साङ्गतासिद्ध्यर्थं तत्-सम्पूर्णफलप्राप्त्यर्थं च यजमानाय श्रेयोदानं करिष्ये। इति सङ्कल्प्य 'शिवा आपः सन्तु' इति यजमानदक्षिणहस्ते जलं दद्यात्। सौमनस्यमस्तु इति पुष्पं दद्यात्। अक्षतं चारिष्टं चास्तु इति अक्षतान् दद्यात्।

ततो आचार्यः हस्ते जलाक्षतपूगीफलमादाय भवन्नियोगेन मया अस्मिन् सप्रासादधूमावतीप्रतिष्ठाकर्मणि यत्कृतम् आचार्य त्वं तथा च एभिर्ब्रह्मगाणपत्यसदस्योपद्रष्टजापकादिभिर्ब्राह्मणैः सह यत्कृतं हवनादिकं च तेनोत्पन्नं यच्छ्रेयस्तत् साक्षतेन सजलेन पूगीफलेन तुभ्यमहं सम्प्रददे, तेन श्रेयसा त्वं श्रेयस्वान् भव।

आचार्य यह कहकर यजमान को फल आदि दे और यजमान '**भवामि**' इस वाक्य का उच्चारण कर उसे ग्रहण करे।

दक्षिणासङ्कल्पः

संकल्पः—देशकालौ संकीर्त्य, अमुकगोत्रः अमुकशर्माऽहम् (वर्माऽहम्, गुप्तोऽहम्, दासोऽहम्) अस्य सप्रासादधूमावतीप्रतिष्ठा-कर्मणः साङ्गतासिद्ध्यर्थं तत्सम्पूर्णफलप्राप्त्यर्थं आचार्यादिभ्यो, महर्त्विग्भ्यः, सूक्तपाठकेभ्यो, मन्त्रजापकेभ्यो, हवनकर्तृभ्यो, अन्येभ्यो देवयजन-मागतेभ्यश्च दक्षिणां विभज्य दातुमहमुत्सृज्ये।

गोदानसङ्कल्पः

संकल्पः—देशकालौ संकीर्त्य, कृतस्य सप्रासादधूमावतीप्रतिष्ठा-कर्मणः साङ्गतासिद्धये तत्सम्पूर्णफलप्राप्त्यर्थं आचार्याय गोदानमहं करिष्ये।

भूयसीदक्षिणासंकल्पः

संकल्पः—देशकालौ संकीर्त्य, कृतस्य सप्रासादधूमावतीप्रतिष्ठा-कर्मणि न्यूनातिरिक्तदोषपरिहारार्थं नानानामगोत्रेभ्यो नानाशर्मभ्यो नट-नर्तक-गायकेभ्यो दीनानाथेभ्यश्च यथाशक्ति भूयसीं दक्षिणां विभज्य दातुमहमुत्सृज्ये।

ब्राह्मणभोजनसंकल्पः

संकल्पः—देशकालौ संकीर्त्य, कृतस्य सप्रासादधूमावतीप्रतिष्ठा-कर्मणः साङ्गतासिध्यर्थं तत्सम्पूर्णफलप्राप्त्यर्थं च यथासङ्ख्याकान् ब्राह्मणान् भोजयिष्ये।

उत्तरपूजनम्

ततः यजमानः प्रधानपीठादीनां विशेषतः श्रीधूमावत्याः षोडशोपचारैः पञ्चोपचारैर्वा पूजनं कुर्यात्।

मण्डपप्रधानपीठादिदानसंकल्पः

संकल्पः—देशकालौ संकीर्त्य, कृतस्य सप्रासादधूमावतीप्रतिष्ठा-कर्मणः साङ्गतासिद्ध्यर्थं तत्सम्पूर्णफलप्राप्त्यर्थमिमानि सोपस्कर-सहितानि प्रधानपीठादीनि आचार्याय तुभ्यमहं सम्प्रददे।

अभिषेकः

यजमान और उसकी पत्नी के अभिषेक के लिये भद्रासन बिछावें। उस आसन पर यजमान पूर्व की ओर मुख करके बैठे और उसकी पत्नी उसके वाम भाग में बैठे। उस समय आचार्य सहित सभी ब्राह्मण पूर्वस्थापित सभी कलशों के जल को शुद्ध ताँबे के चौड़े मुख के पात्र में थोड़ा-थोड़ा लेकर 'दूर्वा और पंचपल्लवादि' से निम्न वैदिक मंत्रों का उच्चारण करके अभिषेक करें—**ॐ देवस्य त्वा सवितुः प्रसवेऽश्विनोर्बाहुभ्यां पूष्णो**

हस्ताभ्याम्। सरस्वत्यै वाचो यन्तुर्यन्त्रिये दधामि बृहस्पतेष्ट्वा साम्राज्येनाभिषिञ्चाम्यसौ॥ १॥ आपो हि ष्ठा मयोभुवस्तान ऊर्जे दधातन। महे रणाय चक्षसे॥ २॥ यो वः शिवतमो रसस्तस्य भाजयतेह नः। उशतीरिव मातरः॥ ३॥ तस्मा अरं गमाम वो यस्य क्षयाय जिन्वथ। आपो जनयथा च नः॥ ४॥ पञ्चनद्यः सरस्वतीमपियन्ति सस्रोतसः। सरस्वती तु पञ्चधा सो देशेऽभवत्सरित्॥ ५॥ द्यौः शान्तिरन्तरिक्षꣳ शान्तिः पृथिवी शान्तिरापः शान्तिरोषधयः शान्तिः। वनस्पतयः शान्तिर्विश्वे देवाः शान्तिर्ब्रह्म शान्तिः सर्वꣳ शान्तिः शान्तिरेवशान्तिः सा मा शान्तिरेधि॥ ६॥ यतोयतः समीहसे ततो नो अभयं कुरु। शन्नः कुरु प्रजाभ्योऽभयं नः पशुभ्यः॥ ७॥

पुराणमन्त्रैरभिषेकः

सुरास्त्वामभिषिञ्चन्तु ब्रह्म-विष्णु-महेश्वराः।
वासुदेवो जगन्नाथस्तथा सङ्कर्षणो विभुः॥ १॥

प्रद्युम्नश्चानिरुद्धश्च भवन्तु विजयाय ते।
आखण्डलोऽग्निर्भगवान् यमो वै निर्ऋतिस्तथा॥ २॥

वरुणः पवनश्चैव धनाध्यक्षस्तथा शिवः।
ब्रह्मणा सहिताः सर्वे दिक्पालाः पान्तु ते सदा॥ ३॥

कीर्तिर्लक्ष्मीधृतिर्मेधा पुष्टिः श्रद्धा क्रिया मतिः।
बुद्धिर्लज्जा वपुः शान्तिः कान्तिस्तुष्टिश्च मातरः॥ ४॥

एतास्त्वामभिषिञ्चन्तु देवपत्न्यः समागताः।
आदित्यश्चन्द्रमा भौमो बुध-जीव-सितार्कजा॥ ५॥

ग्रहास्त्वामभिषिञ्चन्तु राहुः केतुश्च तर्पिताः।
देव-दानव-गन्धर्वा यक्ष-राक्षस-पन्नगाः॥ ६॥

ऋषयो मनवो गावो देवमातर एव च।
देवपत्न्यो द्रुमा नागा दैत्याश्चाप्सरसां गणाः ॥ ७॥
अस्त्राणि सर्वशस्त्राणि राजानो वाहनानि च।
औषधानि च रत्नानि कालस्याऽवयवाश्च ये ॥ ८॥
सरितः सागराः शैलास्तीर्थानि जलदा नदाः।
एते त्वामभिषिञ्चन्तु धर्मकामाऽर्थसिद्धये ॥ ९॥

घृतच्छायापात्रदानम्

यजमानः दक्षिणहस्ते जलाऽक्षत-द्रव्यं चादाय, सङ्कल्पं कुर्यात्— देशकालौ संकीर्त्य, गोत्रः शर्माऽहम् (वर्माऽहम्, गुप्तोऽहम्, दासोऽहम्) कृतस्य सप्रासादधूमावतीप्रतिष्ठाकर्मणः साङ्गतासिद्ध्यर्थं तत्सम्पूर्णफल-प्राप्त्यर्थं सर्वारिष्टविनाशार्थं चाज्यावेक्षणं करिष्ये।

यजमान एक कांसे के चौड़े मुख के पात्र में घृत भरकर उसमें दक्षिणा सहित सुवर्ण छोड़कर अपने मुख की छाया को देखकर ब्राह्मण को प्रदान करें।

आचार्य निम्न मंत्र का उच्चारण करे और यजमान उसमें अपने मुख की छाया देखे—**ॐ रूपेण वो रूपमभ्यागा तुथो वो विश्ववेदा विभजतु। ऋतस्य पथा प्रेत चन्द्रदक्षिणा विस्वः पश्य व्यन्तरिक्षं यत्तस्व सदस्यैः॥**

छायापात्र में मुख देखने के पश्चात् यजमान निम्न संकल्प का उच्चारण कर उस चौड़े मुख के पात्र को ब्राह्मण को दे—

देशकालौ संकीर्त्य, अमुकगोत्रः अमुकशर्माऽहम् (वर्माऽहम्, गुप्तोऽहम्, दासोऽहम्) ममैतच्छरीरावच्छिन्नसमस्तपापक्षयसर्वग्रहपीडा-शान्ति शरीरोत्थार्तिनाशाय प्रासादवाञ्छाऽऽयुरारोग्यादि सर्वसौभाग्य-प्राप्तये सर्वसौख्यप्राप्तये च इदं स्वमुखछायावीक्षिताज्यपूरितकांस्यपात्रं स-सुवर्णं सदक्षिणाकं श्रीरुद्रदैवतममुकगोत्राय अमुकशर्मणे सुपूजिताय ब्राह्मणाय तुभ्यमहं सम्प्रददे।'

प्रार्थना

याऽलक्ष्मीर्यच्च मे दौस्थ्यं सर्वाङ्गं समुपस्थितम्।
तत्सर्वं नाशयाऽऽज्य! त्वं श्रियमायुश्च वर्द्धय॥ १॥
आज्यं सुराणामहारः सर्वमाज्ये प्रतिष्ठितम्।
आज्यपात्रप्रदानेन शान्तिरस्तु सदा मम॥ २॥

क्षमाप्रार्थना

आवाहनं न जानामि न जानामि विसर्जनम्।
पूजां चैव न जानामि क्षमस्व परमेश्वरि॥
मन्त्रहीनं क्रियाहीनं भक्तिहीनं सुरेश्वरि।
यत्पूजितं मया देवि परिपूर्णं तदस्तु मे॥
अपराधसहस्राणि क्रियन्तेऽहर्निशं मया।
दासोऽयमिति मां मत्त्वा क्षमस्व परमेश्वरि॥
ज्ञानतोऽज्ञानतो वापि यन्न्यूनमधिकं कृतम्।
तत्सर्वं क्षम्यतां देवि प्रसीद परमेश्वरि॥
कर्मणा मनसा वाचा प्रतिष्ठा हि मया कृता।
तेन तुष्टिं समासाद्य प्रसीद परमेश्वरि॥

विसर्जनम्

सङ्कल्पः—देशकालौ सङ्कीर्त्य, अमुकगोत्रः अमुकशर्माऽहम् (वर्माऽहम्, गुप्तोऽहम्, दासोऽहम्) सप्रासादधूमावतीप्रतिष्ठाकर्माङ्गत्वेन देवविसर्जनं कर्म करिष्ये। इति सङ्कल्पय स्थापितदेवानग्निं च सानुनयं पुष्पाक्षतैर्विश्रीजेत्।

ॐ उत्तिष्ठ ब्रह्मणस्पते देवयन्तस्त्वेमहे। उप प्रयन्तु मरुतः सुदानव इन्द्र प्राशूर्भवा सचा॥ १॥ यज्ञ यज्ञं गच्छ यज्ञपतिं गच्छ स्वां योनिं गच्छ स्वाहा। एष ते यज्ञो यज्ञपते सहसूक्तवाकः सर्ववीरस्तं जुषस्व स्वाहा॥ २॥

यान्तु देवगणाः सर्वे पूजामादाय मामिकाम्।
इष्टकामसमृद्ध्यर्थं पुनरागमनाय च॥ १॥

गच्छ गच्छ सुरश्रेष्ठ स्वस्थाने परमेश्वरि।
यत्र ब्रह्मादयो देवा तत्र गच्छ हुताशन॥ २॥
प्रमादात्कुर्वतां कर्म प्रच्यवेताध्वरेषु यत्।
स्मरणादेव तद्विष्णोः सम्पूर्णं स्यादिति श्रुतिः॥ ३॥
यस्य स्मृत्या च नामोत्त्या तपोयज्ञक्रियादिषु।
न्यूनं सम्पूर्णतां याति सद्या वन्दे तमच्युतम्॥ ४॥
चतुर्भिश्च चतुर्भिश्च द्वाभ्यां पञ्चभिरेव च।
हूयते च पुनर्द्वाभ्यां स्मै यज्ञात्मने नमः॥ ५॥

आचार्य निम्न वाक्य का यजमान से उच्चारण करावें—**अनेन यथाशक्ति-कृतेन धूमावतीप्रतिष्ठाकर्मणा श्रीपापापहा महाविष्णुः प्रीयताम्।**

यजमानः—'ॐ विष्णवे नमः' इति त्रिर्वदेत्।

प्रासादे ध्वजारोपणम्

ध्वजा प्रासाद की लम्बाई या उससे अर्ध या उससे भी अर्ध लम्बी हो अथवा मूल विस्तार के सोहलवें भाग के सदृश या उससे अर्ध हो। ध्वजदण्ड चौदह हाथ या नौ हाथ का होगा, तथा इसका अधिवास भी देवताओं के साथ ही करना चाहिए। ध्वज की पञ्चोपचार से पूजा कर मन्दिर के पास लाकर उसमें निम्न श्लोकों से पाशुपतमहास्त्र का ध्यान करके स्थापित करें—

सूर्यकोटिसहस्राभं प्रलयाम्बुदनिस्वनम्।
प्रदीप्तदशनप्राणं प्रकाशं मुखकन्दरम्॥
त्र्यक्षं तडिल्लताजिह्वं प्रदीप्तश्मश्रुमूर्द्धजम्।
सर्वोपवीतं शूलासिशक्तिमुद्गरधारिणम्॥
चतुर्हस्तं चतुर्वक्त्रं सूर्यचन्द्रार्धशेखरम्।
देवदानवदैत्यानां दर्पितानां विनाशनम्॥

लालरंग की रेशमी ध्वजा को शिखर पर स्थापित करें। यह ध्वज प्रासाद के पीछे नैर्ऋत्य, वायव्य अथवा ईशान कोण में शिखर सहित प्रासाद को ऊँचाई के तृतीय, चतुर्थ अथवा पञ्चमांश ऊँचे ध्वज स्तम्भ का आधार बनाकर उसपर आरोपित कर आचार्य निम्न श्लोकों का उच्चारण करते हुए यजमान से ध्वज को अभिमंत्रित करवाने के लिए प्रार्थना करवायें—

शान्तिरस्तु शिवञ्चास्तु स्थानस्यास्य शुभं तथा।
प्राणिनः सुखिनः सन्तु राजा च विजयी भवेत्॥ १॥
यावच्चन्द्रश्च सूर्यश्च तावदत्र स्थिरो भव।
दुरितं यत्समस्तानां सत् क्रियायै धुनोतु सः॥ २॥
प्रजाहानिश्च दुर्भिक्षं माभूज्जगति सर्वदा।
त्वत्प्रसादाच्च तत्सर्वं शुभं भवतु वो नमः॥ ३॥

चतुर्थीकर्म

सङ्कल्पः—देशकालौ सङ्कीर्त्य, धूमावतीप्रतिष्ठाङ्गत्वेन विहित धूमावतीचतुर्थीकर्म करिष्ये।

निम्न लेपन द्रव्यों को गौ के घृत में मिलाकर धूमावती देवी की मूर्ति पर लगावें—

तदुपरान्त—**प्रथमेऽहनि—कुङ्कुमेन धूमावतीं लेपयित्वा पूजयेत्। द्वितीयदिने—हरिद्रासिद्धार्थचूर्णेन। तृतीयदिने—पिष्टसितचन्दनचूर्णेन। चतुर्थदिने—मनःशिलाप्रियङ्गुचूर्णेन। पञ्चमेदिने—कृष्णाञ्जनतिलचूर्णेन। षष्ठे दिने—रक्तचन्दन-पद्मकेशरचूर्णेन। सप्तमेदिने—गोरोचननाग-केसरचूर्णेन।**

उपरोक्त लेपन द्रव्यों को गाय के घृत में मिलावें। तदुपरान्त चन्दन, पुष्प, धूप, दीप, नैवेद्यादि से धूमावतीदेवी का पूजन करवाकर आचार्य कुण्ड में उन्हीं के निम्न मन्त्र के द्वारा अट्ठाईस बार घृत की आहुति यजमान से प्रदान करावें—

ॐ धूम्रा बभ्रुनीकाशा पितॄणाꣳ सोमवतां बभ्रवो धूम्रनीकाशाः पितॄणां बर्हिषदां कृष्णा बभ्रुनीकाशाः पितॄणामग्निष्वात्तानां कृष्णाः पृषन्तस्त्रैयम्बकाः स्वाहा॥

ॐ मुञ्चन्तु मा शपथ्यादथो वरुण्यादुत। अथो यमस्य पड्वीशात्सर्वस्माद्देवकिल्विषात्॥

जिस समय उपरोक्त मन्त्र का उच्चारण हो, उस समय आचार्य अपने दाहिने हाथ में और वरण किये हुए ब्राह्मणों के भी दायें हाथ में यजमान से मौली बँधवावें। तदुपरान्त यजमान अपनी पत्नी के साथ आचार्य सहित सभी ब्रह्मणों का पूजन कर उन्हें दक्षिणा प्रदान करे।

आशीर्वादः

ॐ स्वस्ति न इन्द्रो वृद्धश्रवाः स्वस्ति नः पूषा विश्ववेदाः।
स्वस्ति नस्ताक्ष्यों अरिष्टनेमिः स्वस्ति नो बृहस्पतिर्दधातु॥ १॥
दीर्घायुस्त ओषधे खनिता यस्मै च त्वा खनाम्यहम्।
अथो त्वं दीर्घायुर्भूत्वा शतवल्शा विरोहतात्॥ २॥
पुनस्त्वादित्या रुद्रा वसवः समिन्धतां पुनर्ब्रह्माणो वसुनीथ यज्ञैः।
घृतेन त्वं तन्वं वर्धयस्व सत्याः सन्तु यजमानस्य कामाः॥ ३॥
ॐ यावती द्यावापृथिवी यावच्च सप्त सिन्धवो वितस्थिरे।
तावन्तमिन्द्र ते ग्रहमूर्जा गृह्णाम्यक्षितं मयि गृह्णाम्यक्षितम्॥ १॥
श्रीश्च ते लक्ष्मीश्च पत्न्यावहोरात्रे पार्श्वे नक्षत्राणि रूपमश्विनौ व्यात्तम्।
इष्णन्निषाणामुं म इषाण सर्वलोकं म इषाण॥ २॥

श्रीर्वर्च्चस्वमायुष्यारोग्यमाविधात् पवमानं महीयते।
धान्यं धनं पशुं बहुपुत्रलाभं शतसंवत्सरं दीर्घमायुः॥ १॥
आयुष्कामो यशस्कामो पुत्र-पौत्रस्तथैव च।
आरोग्यं धनकामश्च सर्वे कामा भवन्तु ते॥ २॥
अपुत्राः पुत्रिणः सन्तु पुत्रिणः सन्तु पौत्रिणः।
निर्धनाः सधनाः सन्तु जीवन्तु शरदां शतम्॥ ३॥
मन्त्रार्थाः सफलाः सन्तु पूर्णाः सन्तु मनोरथाः।
शत्रूणां बुद्धिनाशोऽस्तु मित्राणामुदयस्तव॥ ४॥

ततो यजमानाय-प्रसादार्पणम्।

॥ इति धूमावतीप्रतिष्ठाविधिः॥

धूमावतीपूजाविधिः

यजमान और उसकी धर्मपत्नी को आसन पर पूर्वाभिमुख बैठाकर निम्न मंत्र और पौराणिक श्लोक का उच्चारण करते हुए यजमान के मस्तक पर आचार्य तिलक करें—

ॐ स्वस्ति न इन्द्रो वृद्धश्रवाः स्वस्ति नः पूषा विश्ववेदाः।
स्वस्ति नस्ताक्ष्यों अरिष्टनेमिः स्वस्ति नो बृहस्पतिर्दधातु॥
आदित्या वसवो रुद्रा विश्वेदेवा मरुद्गणाः।
तिलकं ते प्रयच्छन्तु कामधर्मार्थसिद्धये॥

आचार्य निम्न तीन नामों का उच्चारण करते हुए यजमान से आचमन करावें—**ॐ केशवाय नमः ॐ नारायणाय नमः ॐ माधवाय नमः।**

पुनः **ॐ ऋषिकेशाय नमः, ॐ गोविन्दाय नमः** का उच्चारण करके यजमान का हाथ जल से धुलवावें।

आचार्य निम्न मन्त्र का उच्चारण करके यजमान को कुशा की पवित्री धारण करवाके प्राणायाम करावें—**ॐ पवित्रे स्थो वैष्णव्यौ सवितुर्वः प्रसव उत्पुनाम्यच्छिद्रेण पवित्रेण सूर्यस्य रश्मिभिः॥ तस्य ते पवित्रपते पवित्र पूतस्य यत्कामः पुने तच्छकेयम्॥**

आचार्य निम्न श्लोक का उच्चारण करके यजमान के ऊपर और पूजा-सामग्री की पवित्रता हेतु दूर्वा के द्वारा जल छिड़कें—

ॐ अपवित्रः पवित्रो वा सर्वावस्थां गतोऽपि वा।
यः स्मरेत् पुण्डरीकाक्षं स बाह्याभ्यन्तरः शुचिः॥
ॐ पुण्डरीकाक्षः पुनातु, ॐ पुण्डरीकाक्षः पुनातु, ॐ पुण्डरीकाक्षः पुनातु।

आचार्य निम्न मंत्र और आगे दिए हुए श्लोक का उच्चारण करते हुए यजमान से भगवान विष्णु का ध्यान करावें—

ॐ इदं विष्णुर्विचक्रमे त्रेधा निदधे पदम्। समूढमस्य पाठं०सुरे स्वाहा॥

शान्ताकारं भुजगशयनं पद्मनाभं सुरेशं,
विश्वाधारं गगनसदृशं मेघवर्णं शुभाङ्गम्।
लक्ष्मीकान्तं कमलनयनं योगभिर्ध्यानगम्यं,
वन्दे विष्णुं भवभयहरं सर्वलोकैकनाथम्॥

सर्वप्रायश्चित्तसंकल्पः—श्रीमदनन्तवीर्यस्य आदित्यनारायणस्य अचिन्त्यापरिमितशक्त्या ध्रियमाणस्य महाजलौघमध्ये परिभ्रममाणानामनेककोटिब्रह्माण्डानामेकतमे अव्यक्तमहदहङ्कारपृथिव्यप्तेजोवाय्वाकाशाद्यावरणैरावृते अस्मिन् महति ब्रह्माण्डखण्डयोर्मध्ये आधारशक्तिवराहकूर्मानन्ताद्यष्टदिग्गजोपरि प्रतिष्ठिते सप्तपातालोपरिभागे सप्तान्तलोकषट्कस्याधोभागे महाकालायमानशेषस्य सहस्त्रफणामणिमण्डिते दिग्दन्तिदन्तशुण्डादण्डोत्तम्भिते लोकालोकाचलवलयिते लवणेक्षुसुरासर्पिदधिक्षीरोदकार्णवपरिवृते जम्बूप्लक्षशाल्मलिकुशक्रौञ्चशाकपुष्करसप्तद्वीपमण्डिते कांस्यताम्रगभस्तिनागगन्धर्वचारणभारतादिनवखण्ड-खण्डिते भारतवर्षे भरतखण्डे अयोध्या - मथुरा - माया - काशी - काञ्च्यवन्ती - द्वारावती - कुरुक्षेत्र - पुष्करादिनानातीर्थयुक्तकर्मभूमौ (मध्यरेखायाः पूर्वदिग्भागे भागीरथ्याः पश्चिमे तीरे) जगत्स्त्रष्टुः परार्द्धद्वयजीविनो ब्रह्मणो द्वितीये परार्द्धे तस्य प्रथमवर्षे प्रथममासे प्रथमपक्षे प्रथमदिवसे अह्नो द्वितीययामे तृतीयमुहूर्ते प्रथमघटिकायां सप्तमे वैवस्वतमन्वन्तरेऽष्टाविंशतितमे कलियुगे कलिप्रथमचरणे बौद्धावतारे विक्रमशके वर्तमानेऽमुकनाम्नि संवत्सरे अमुकऋतौ अमुकमासे अमुकपक्षे अमुकतिथौ अमुकवासरे अमुकनक्षत्रे अमुकयोगे अमुककरणे अमुकराशिस्थिते चन्द्रे अमुकराशिस्थिते सूर्ये अमुकराशिस्थिते देवगुरौ शेषेषु ग्रहेषु यथास्थानस्थितेषु सत्सु एवं गुणगणविशिष्टे देशे काले च अमुकशर्मणो मम जन्मप्रभृति अद्य दिनं यावत् ज्ञाताज्ञात-कामाकाम - सकृदसकृत्कृत - कायिक - वाचिक - मानसिक-सांसर्गिक - स्पृष्टास्पृष्ट -भुक्ताभुक्त -पीतापीत - सकल-

पातकाति - पातकोपपातक - लघुपातक -सङ्करीकरण - मलिनी-करणापात्रीकरण-जातिभ्रंशकरप्रकीर्णकपातकानां मध्ये संभावितानां पापानां क्षयद्वारा धूमावतीपूजाकर्माधिकारार्थं श्रीपरमेश्वरप्रीत्यर्थं गोमूल्यदानरूपप्रत्याम्नायद्वाराऽहमाचरिष्ये।

पञ्चगव्यनिर्माणम्

आचार्य एक चौड़े मुख के पात्र में पञ्चगव्य का निर्माण निम्न मन्त्रों का उच्चारण करते हुए करें—

गोमूत्रम्—**ॐ भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि। धियो यो नः प्रचोदयात्॥**

गोमयम्—**गन्धद्वारां दुराधर्षां नित्यपुष्टां करीषिणीम्। ईश्वरीं सर्वभूतानां तामिहोप ह्वये श्रियम्॥**

पयः—**ॐ पयः पृथिव्यां पय ओषधीषु पयो दिव्यन्तरिक्षे पयो धाः। पयस्वतीः प्रदिशः सन्तु मह्यम्॥**

दधिः—**ॐ दधिक्राव्णो अकारिषं जिष्णोरश्वस्य वाजिनः। सुरभि नो मुखा करत्प्र ण आयूꣳषि तारिषत्॥**

आज्यम्—**ॐ तेजोसि शुक्रमस्यमृतमसि धामनामासि। प्रियं देवानामनाधृष्टन्देवयजन्मसि॥**

कुशोदकम्—**ॐ देवस्य त्वा सवितुः प्रसवेश्विनोर्बाहुभ्यां पूष्णो हस्ताभ्याम् ॥ इति कुशोदकम्॥ इति आलोडनं तेनैवाभिमन्त्रणञ्च॥ एवं पञ्चगव्य सम्पाद्य।**

पञ्चगव्यप्राशनम्

आचार्य निम्न श्लोक का उच्चारण करते हुए यजमान से पञ्चगव्य का प्राशन करावें—

ॐ यत्त्वगस्थिगतं पापं देहे तिष्ठति मामके।
प्राशनात् पंचगव्यस्य दहत्यग्निरिवेन्धनम्॥

आचार्य निम्न विनियोग और श्लोक का उच्चारण करके यजमान से आसन शुद्धि कर्म करावें—

ॐ पृथ्वीतिमन्त्रस्य मेरुपृष्ठ ऋषिः, सुतलं छन्दः, कूर्मो देवता आसनपवित्र करणे विनियोगः।

ॐ पृथ्वि त्वया धृता लोका देवि त्वं विष्णुना धृता।
त्वं च धारय मां देवि! पवित्रं कुरु चासनम्॥

आचार्य निम्न श्लोक का उच्चारण करके यजमान से उसकी शिखा का बन्धन करावें—

ब्रह्मभावसहस्रस्य रुद्रभावशतस्य च।
विष्णोः संस्मरणार्थं हि शिखाबन्धं करोम्यहम्॥

यजमान से भूमि में अक्षत छोड़वाकर उसपर दीप स्थापित करवाकर प्रज्वलित करावें और निम्न श्लोक का उच्चारण करके उस दीप की प्रार्थना करावें—

भो दीप! देविरूपस्त्वं कर्मसाक्षी ह्यविघ्नकृत्।
यावत्कर्मसमाप्तिः स्यात् तावत्त्वं सुस्थिरो भव॥

तदुपरान्त आचार्य और ब्राह्मण 'ॐ आ नो भद्रा०' से आरम्भ कर 'सर्वकार्मार्थसिद्धये' तक पढ़कर स्वस्तिवाचन करें।

ॐ आ नो भद्राः क्रतवो यन्तु विश्वतोऽदब्धासो अपरीतास उद्भिदः।
देवा नो यथा सदमिद्वृधे असन्नप्रायुवो रक्षितारो दिवे दिवे॥ १॥
देवानां भद्रा सुमतिर्ऋजूयतां देवानाꣳ रातिरभि नो निवर्तताम्।
देवानाꣳ सख्यमुपसेदिमा वयं देवा न आयुः प्रतिरन्तु जीवसे॥ २॥
तान्पूर्वया निविदा हूमहे वयं भगं मित्रमदितिन्दक्षमस्त्रिधम्।
अर्यमणं वरुणꣳ सोममश्विना सरस्वती नः सुभगा मयस्करत्॥ ३॥
तन्नो वातो मयो भुव्वातु भेषजन्तन्माता पृथिवी तत्पिता द्यौः।
तद्ग्रावाणः सोमसुतो मयोभुवस्तदश्विना शृणु तन्धिष्ण्या युवम्॥ ४॥
तमीशानं जगतस्तस्थुषस्पतिं धियं जिन्वमवसे हूमहे वयम्।
पूषा नो यथा वेदसामसद्वृधे रक्षिता पायुरदब्धः स्वस्तये॥ ५॥

स्वस्ति न इन्द्रो वृद्धश्रवाः स्वस्ति नः पूषा विश्ववेदाः।
स्वस्ति नस्तार्क्ष्यो अरिष्टनेमिः स्वस्ति नो बृहस्पतिर्दधातु॥ ६ ॥
पृषदश्वा मरुतः पृश्निमातरः शुभं यावानो विदथे षु जग्मयः।
अग्निजिह्वा मनवः सूरचक्षसो विश्वे नो देवा अवसागमन्निह॥ ७ ॥
भद्रं कर्णेभिः शृणुयाम देवा भद्रं पश्येमाक्षभिर्यजत्राः।
स्थिरैरङ्गैस्तुष्टुवाऽँ॰ सस्तनूभिर्व्यशेमहि देवहितं यदायुः॥ ८ ॥
शतमिन्नु शरदो अन्ति देवा यत्रा नश्चक्रा जरसं तनूनाम्।
पुत्रासो यत्र पितरो भवन्ति मा नो मध्या रीरिषतायुर्गन्तोः॥ ९ ॥
अदितिर्द्यौरदितिरन्तरिक्षमदितिर्माता स पिता स पुत्रः।
विश्वे देवा अदितिः पञ्चजना अदितिर्जातमदितिर्जनित्वम्॥ १०॥
द्यौः शान्तिरन्तरिक्षऽँ॰ शान्तिः पृथिवी
शान्तिरापः शान्तिरोषधयः शान्तिः।
वनस्पतयः शान्तिर्विश्वे देवाः शान्तिर्ब्रह्म शान्तिः
सर्वऽँ॰ शान्तिः शान्तिरेव शान्तिः सा मा शान्तिरेधि॥ ११॥
यतो यतः समीहसे ततो नो अभयं कुरु।
शं नः कुरु प्रजाभ्योऽभयं नः पशुभ्यः॥ १२॥
सुशान्तिः सर्वारिष्टशान्तिर्भवतु॥

ॐ लक्ष्मीनारायणाभ्यां नमः। ॐ उमामहेश्वराभ्यां नमः। ॐ वाणीहिरण्यगर्भाभ्यां नमः। ॐ शचीपुरन्दराभ्यां नमः। ॐ मातापितृ-चरण कमलेभ्यो नमः। ॐ इष्टदेवताभ्यो नमः। ॐ ग्रामदेवताभ्यो नमः। ॐ कुल देवताभ्यो नमः। ॐ स्थानदेवताभ्यो नमः। ॐ वास्तुदेवताभ्यो नमः। ॐ एतत्कर्मप्रधानदेवताभ्यो नमः। ॐ गुरुचरणकमलेभ्यो नमः। ॐ सर्वेभ्यो देवेभ्यो नमः। ॐ सर्वेभ्यो ब्राह्मणेभ्यो नमः। ॐ भूर्भुवः स्वः श्रीसिद्धिबुद्धिसहिताय श्रीमन्महागणाधिपतये नमः।

ॐ सुमुखश्चैकदन्तश्च कपिलो गजकर्णकः।
लम्बोदरश्च विकटो विघ्ननाशो विनायकः॥ १ ॥

धूम्रकेतुर्गणाध्यक्षो भालचन्द्रो गजाननः।
द्वादशैतानि नामानि यः पठेच्छृणुयादपि॥ २ ॥
विद्यारम्भे विवाहे च प्रवेशे निर्गमे तथा।
संग्रामे संकटे चैव विघ्नस्तस्य न जायते॥ ३ ॥
शुक्लाम्बरधरं देवं शशिवर्णं चतुर्भुजम्।
प्रसन्नवदनं ध्यायेत् सर्वविघ्नोपशान्तये॥ ४ ॥
अभीप्सितार्थसिद्ध्यर्थं पूजितो यः सुरासुरैः।
सर्वविघ्नहरस्तस्मै गणाधिपतये नमः॥ ५ ॥
वक्रतुण्ड! महाकाय! कोटिसूर्य-समप्रभ!।
अविघ्नं कुरु मे देव! सर्वकार्येषु सर्वदा॥ ६ ॥
सर्वमङ्गलमङ्गल्ये शिवे सर्वार्थसाधिके!।
शरण्ये त्र्यम्बके गौरि नारायणि! नमोऽस्तु ते॥ ७ ॥
सर्वदा सर्वकार्येषु नास्ति तेषाममङ्गलम्।
येषां हृदिस्थो भगवान् मङ्गलायतनं हरिः॥ ८ ॥
तदेव लग्नं सुदिनं तदेव ताराबलं चन्द्रबलं तदेव।
विद्याबलं दैवबलं तदेव लक्ष्मीपते तेऽङ्घ्रियुगं स्मरामि॥ ९ ॥
लाभस्तेषां जयस्तेषां कुतस्तेषां पराजयः।
येषामिन्दीवरश्यामो हृदयस्थो जनार्दनः॥ १०॥
यत्र योगेश्वरः कृष्णो यत्र पार्थो धनुर्धरः।
तत्र श्रीर्विजयो भूतिर्ध्रुवा नीतिर्मतिर्मम॥ ११॥
सर्वेष्वारम्भकार्येषु त्रयस्त्रिभुवनेश्वराः।
देवा दिशन्तु नः सिद्धिं ब्रह्मेशानजनार्दनाः॥ १४॥
विश्वेशं माधवं ढुण्ढिं दण्डपाणिं च भैरवम्।
वन्दे काशीं गुहां गङ्गां भवानीं मणिकर्णिकाम्॥ १५॥
विनायकं गुरुं भानुं ब्रह्म-विष्णु-महेश्वरान्।
सरस्वतीं प्रणम्यादौ सर्वकामार्थसिद्धये॥ १६॥

सङ्कल्पः

ॐ विष्णुर्विष्णुर्विष्णुः श्रीमद्भगवतो महापुरुषस्य विष्णोराज्ञया प्रवर्तमानस्य अद्य श्रीब्रह्मणोऽह्नि द्वितीयपरार्द्धे श्रीश्वेतवाराहकल्पे वैवस्वतमन्वन्तरे अष्टाविंशतितमे कलियुगे कलिप्रथमचरणे जम्बूद्वीपे भरतखण्डे भारतवर्षे आर्यावर्तैकदेशे, अमुकक्षेत्रे अमुकनद्या अमुकतीरे विक्रमशके बौद्धावतारे अमुकनाम्नि संवत्सरे अमुकायने अमुकऋतौ महामाङ्गल्यप्रदमासोत्तमे मासे अमुकमासे अमुकपक्षे अमुकतिथौ अमुकवासरे अमुकनक्षत्रे अमुकयोगे अमुककरणे अमुकराशिस्थिते चन्द्रे अमुकराशिस्थिते सूर्ये अमुकराशिस्थिते देवगुरौ शेषेषु ग्रहेषु यथाराशिस्थानस्थितेषु सत्सु एवं गुणगणविशेषणविशिष्टायां शुभपुण्यतिथौ अमुकगोत्रोऽमुकशर्माहम् (वर्माऽहम्, गुप्तोऽहम्, दासोऽहम्) मम सकुटुम्बस्य सपरिवारस्य सर्वविधरोग-संकट-उपद्रव-राजभय - शत्रुभय - भूत - प्रेत-पिशाचादिभय-निवारणपूर्वकदीर्घायु-र्विपुलधन-धान्य-पुत्र-पौत्रादि-सन्ततिवृद्ध्यर्थं च आयुरारोग्यैश्वर्य-स्थिरलक्ष्मीसर्वसम्पदभिवृद्धिपूर्वकं निरतिशयानन्द-ब्रह्मपदप्राप्ति-श्रीसर्वफलाक्षय्यसुखकामः श्रुति-स्मृति-पुराणोक्तफलावाप्तिकामश्च धमार्थकाममोक्षचतुर्विधपुरुषार्थसिद्ध्यर्थं श्रीधूमावतीदेवीप्रीत्यर्थं च धूमावतीपूजनमहं करिष्ये।

तदङ्गत्वेन स्वस्तिपुण्याहवाचनं षोडशमातृकापूजनं वसोर्द्धारा-पूजनमायुष्यमन्त्रजपं नान्दीश्राद्धमाचार्यादिवरणानि च करिष्ये। तत्रादौ निर्विघ्नतासिद्ध्यर्थं गणेशाम्बिकयोः पूजनं करिष्ये।

विशेष—गणेशाम्बिका पूजन से नान्दीश्राद्ध तक के कर्मों को करवाने के लिए इस पुस्तक की पृष्ठ संख्या ४५ से ७३ को देखें।

एकतन्त्रेण वरणसंकल्पः

ॐ विष्णुर्विष्णुर्विष्णुः श्रीमद्भगवतो महापुरुषस्य विष्णोराज्ञया प्रवर्तमानस्य अद्य श्रीब्रह्मणोऽह्नि द्वितीयपरार्द्धे श्रीश्वेतवाराहकल्पे वैवस्वतमन्वन्तरे अष्टाविंशतितमे कलियुगे कलिप्रथमचरणे जम्बूद्वीपे भरतखण्डे भारतवर्षे आर्यावर्तैकदेशे, अमुकक्षेत्रे अमुकनद्या अमुकतीरे विक्रमशके बौद्धावतारे अमुकनाम्नि संवत्सरे अमुकायने अमुकऋतौ महामाङ्गल्यप्रदमासोत्तमे मासे अमुकमासे अमुकपक्षे अमुकतिथौ अमुकवासरे अमुकनक्षत्रे अमुकयोगे अमुककरणे अमुकराशिस्थिते चन्द्रे अमुकराशिस्थिते सूर्ये अमुकराशिस्थिते देवगुरौ शेषेषु ग्रहेषु यथास्थानस्थितेषु सत्सु एवं गुणगणविशेषणविशिष्टायां शुभपुण्यतिथौ अमुकगोत्रोऽमुकशर्माऽहम् (वर्माऽहम्, गुप्तोऽहम्, दासोऽहम्) अस्मिन् धूमावतीपूजनकर्मणि एभिर्वरणद्रव्यैः नानानामगोत्रान् नानानामधेयान् शर्मणः आचार्यादिब्राह्मणान् युष्मान् वृणे।

दिग्-रक्षणम्

ॐ रक्षोहणं वलगहनं वैष्णवीमिदमहं तं वलगमुत्किरामि यं मे निष्ट्यो यममात्यो निचखानेदमहं तं वलगमुत्किरामि यं मे समानो यमसमानो निचखानेदमहं तं वलगमुत्किरामि यं मे सबन्धुर्यमसबन्धुर्निचखानेदमहं तं वलगमुत्किरामि यं मे सजातो यमसजातो निचखानोत्कृत्यां किरामि॥ १॥

रक्षोहणो वो वलगहनः प्रोक्षामि वैष्णवान्रक्षोहणो वो वलगहनोऽवनयामि वैष्णवान्रक्षोहणो वो वलगहनोऽवस्तृणामि वैष्णवान्रक्षोहणौ वां वलगहना ऽउपदधामि वैष्णवी रक्षोहणौ वां वलगहनौ पर्यूहामि वैष्णवी वैष्णवमसि वैष्णवाः स्थ॥ २॥

रक्षसां भागोऽसि निरस्तर्ठ० रक्ष ऽइदमहर्ठ० रक्षोऽभितिष्ठामीदमहर्ठ० रक्षोऽवबाध इदमहर्ठ० रक्षोऽधमं तमो नयामि। घृतेन

द्यावापृथिवी प्रोर्णुवाथां वायो वे स्तोकानामग्निराज्यस्य वेतु स्वाहा स्वाहाकृते ऽऊर्ध्वनभसं मारुतं गच्छतम्॥ ३॥

रक्षोहा विश्वचर्षणिरभि योनिमयोहते। द्रोणे सधस्थमासदत्॥ ४॥

यजमान अथवा आचार्य आचमन और प्राणायाम करने के उपरान्त अपने दाहिने हाथ में जल, अक्षत लेकर निम्न संकल्प करें—

देशकालौ संकीर्त्य—अस्मिन् धूमावतीपूजनकर्मणि दिग्-रक्षणं करिष्ये।

संकल्प की समाप्ति के पश्चात् संकल्प के जल को पात्र में अथवा भूमि में छोड़ दें। तदुपरान्त यजमान अपने बायें हाथ में पीली सरसों लेकर पूर्वादि चारो दिशाओं में आचार्य और ब्राह्मणों के द्वारा निम्न पौराणिक श्लोकों का उच्चारण करने पर दायें हाथ से पीली सरसों छींटें—

यदत्र संस्थितं भूतः स्थानमाश्रित्य सर्वदा।
स्थानं त्यक्त्वा तु तत्सर्वं यत्रस्थं तत्र गच्छतु॥ १॥
अपसर्पन्तु ते भूता ये भूता भूमिसंस्थिताः।
ये भूता विघ्नकर्तारस्ते नश्यन्तु शिवाज्ञया॥ २॥
अपक्रामन्तु भूतानि पिशाचाः सर्वतो दिशम्।
सर्वेषामविरोधेन पूजाकर्म समारभे॥ ३॥
भूतानि राक्षसावापि येऽत्र तिष्ठन्ति केचन।
ते सर्वेऽप्यपगच्छन्तु शान्तिकं तु करोम्यहम्॥ ४॥

भावार्थ—जो भूत इस स्थान का आश्रय लेकर सर्वदा रहता है। वह इस स्थान को छोड़कर जहाँ चाहे वहाँ चला जाय॥ १॥ जो भूत (प्राणी) इस भूमि पर रहते हैं, वे भूत यहाँ से दूर चले जाएँ। जो भूत विघ्न करने वाले हैं, वे शिव की आज्ञा से विनष्ट हो जायें॥ २॥ सभी दिशाओं से भूत एवं पिशाच भाग जाएँ। सबके अनुरोध से (यहाँ) मैं पूजाकर्म आरम्भ कर रहा हूँ॥ ३॥ यहाँ जो कोई भूत अथवा पिशाच रहते हैं, वे सभी यहाँ से दूर चले जायें। (क्योंकि यहाँ मैं) शान्तिकर्म करने जा रहा हूँ॥ ४॥

केवलं नामाऽनुक्रमेण सर्वतोभद्रमण्डलदेवतास्थापनम्

सङ्कल्पः—देशकालौ सङ्कीर्त्य, अस्मिन् धूमावतीपूजनकर्मणि ब्रह्मादिदेवतानामावाहनं स्थापनं पूजनं च करिष्ये।

१. (मध्ये कर्णिकायाम्) ॐ भूर्भुवः स्वः ब्रह्मणे नमः, ब्रह्माणमावाहयामि स्थापयामि।

२. (उत्तरे वाप्याम्) ॐ भूर्भुवः स्वः सोमाय नमः, सोममावाहयामि स्थापयामि।

३. (ईशान्यां खण्डेन्दौ) ॐ भूर्भुवः स्वः ईशानाय नमः, ईशानमावाहयामि स्थापयामि।

४. (पूर्वे वाप्याम्) ॐ भूर्भुवः स्वः इन्द्राय नमः, इन्द्रमावाहयामि स्थापयामि।

५. (आग्नेय्यां खण्डेन्दौ) ॐ भूर्भुवः स्वः अग्नये नमः, अग्निमावाहयामि स्थापयामि।

६. (दक्षिणे वाप्याम्) ॐ भूर्भुवः स्वः यमाय नमः, यममावाहयामि स्थापयामि।

७. (नैर्ऋत्यां खण्डेन्दौ) ॐ भूर्भुवः स्वः निर्ऋतये नमः, निर्ऋतिमावाहयामि स्थापयामि।

८. (पश्चिमे वाप्याम्) ॐ भूर्भुवः स्वः वरुणाय नमः, वरुणमावाहयामि स्थापयामि।

९. (वायव्यां खण्डेन्दौ) ॐ भूर्भुवः स्वः वायवे नमः, वायुमावाहयामि स्थापयामि।

१०. (वायुसोमयोर्मध्ये भद्रे) ॐ भूर्भुवः स्वः एकादशरुद्रेभ्यो मावाहयामि स्थापयामि।

११. (सोमेशानयोर्मध्ये भद्रे) ॐ भूर्भुवः स्वः एकादशरुद्रेभ्यो नमः, एकादशरुद्रानावाहयामि स्थापयामि।

१२. (ईशानेन्द्रमध्ये भद्रे) ॐ भूर्भुवः स्वः द्वादशादित्येभ्यो नमः, द्वादशादित्यानावाहयामि स्थापयामि।

१३. (इन्द्राग्निमध्ये भद्रे) ॐ भूर्भुवः स्वः अश्विनीभ्यां नमः, अश्विनीआवाहयामि स्थापयामि।

१४. (अग्नि-यममध्ये भद्रे) ॐ भूर्भुवः स्वः स-पैतृक-विश्वेभ्यो देवेभ्यो नमः, सपैतृकविश्वान् देवानावाहयामि स्थापयामि।

१५. (यम-निर्ऋतिमध्ये भद्रे) ॐ भूर्भुवः स्वः सप्तयक्षेभ्यो नमः, सप्तयक्षानावाहयामि स्थापयामि।

१६. (निर्ऋति-वरुणमध्ये भद्रे) ॐ भूर्भुवः स्वः अष्टकुलनागेभ्यो नमः, अष्टकुलनागानावाहयामि स्थापयामि।

१७. (वरुण-वायुमध्ये भद्रे) ॐ भूर्भुवः स्वः गन्धर्वाऽप्सरोभ्यो नमः, गन्धर्वाऽप्सरसः आवाहयामि स्थापयामि।

१८. (ब्रह्म-सोममध्ये वाप्यां लिंगे वा) ॐ भूर्भुवः स्वः स्कन्दाय नमः, स्कन्दमावाहयामि स्थापयामि।

१९. (तत्रैव स्कन्दोत्तरतः) ॐ भूर्भुवः स्वः वृषभाय नमः, वृषभ-मावाहयामि स्थापयामि।

२०. (तदुत्तरे) ॐ भूर्भुवः स्वः शूलाय नमः, शूलमावाहयामि स्थापयामि।

२१. (अनेनैव मन्त्रेण तदुत्तरे) ॐ भूर्भुवः स्वः महाकालाय नमः, महाकालमावाहयामि स्थापयामि।

२२. (ब्रह्मेशानमध्ये शृङ्खलायाम्) ॐ भूर्भुवः स्वः दक्षादि-सप्तगणेभ्यो नमः, दक्षादिसप्तगणानावाहयामि स्थापयामि।

२३. (ब्रह्मेन्द्रमध्ये वाप्याम्) ॐ भूर्भुवः स्वः दुर्गायै नमः, दुर्गामावाहयामि स्थापयामि।

२४. (तत्पूर्वे) ॐ भूर्भुवः स्वः विष्णवे नमः, विष्णुमावाहयामि स्थापयामि।

२५. (ब्रह्माग्निमध्ये शृङ्खलायाम्) ॐ भूर्भुवः स्वः स्वधायै नमः, स्वधामावाहयामि स्थापयामि।

२६. (ब्रह्म-यममध्ये वाप्याम्) ॐ भूर्भुवः स्वः मृत्युरोगेभ्यो नमः, मृत्युरोगानावाहयामि स्थापयामि।

२७. (ब्रह्म-निर्ऋतिमध्ये शृङ्खलायाम्) ॐ भूर्भुवः स्वः गणपतये नमः, गणपभिावाहयामि स्थापयामि।

२८. (ब्रह्म-वरुणमध्ये वाप्याम्) ॐ भूर्भुवः स्वः अद्भ्यो नमः, अपः आवाहयामि स्थापयामि।

२९. (ब्रह्म-वायुमध्ये शृङ्खलायाम्) ॐ भूर्भुवः स्वः मरुद्भ्यो नमः, मरुतः आवाहयामि स्थापयामि।

३०. (ब्रह्मणः पादमूले) ॐ भूर्भुवः स्वः पृथिव्यै नमः, पृथ्वीमावाहयामि स्थापयामि।

३१. (तदुत्तरे) ॐ भूर्भुवः स्वः गङ्गादिनदीभ्यो नमः, गङ्गादिनदीः आवाहयामि स्थापयामि।

३२. (तदुत्तरे) ॐ भूर्भुवः स्वः सप्तसागरेभ्यो नमः, सप्तसागरानावाहयामि स्थापयामि।

३३. (कर्णिकापरिधौ) ॐ भूर्भुवः स्वः मेरवे नमः, मेरुमावाहयामि स्थापयामि।

३४. (ततः सत्त्वबाह्यपरिधौ सोमादिक्रमेण) ॐ भूर्भुवः स्वः गदाय नमः, गदामावाहयामि स्थापयामि।

३५. (ईशान्याम्) ॐ भूर्भुवः स्वः त्रिशूलाय नमः, त्रिशूल-मावाहयामि स्थापयामि।

३६. (पूर्वे) ॐ भूर्भुवः स्वः वज्राय नमः, वज्रमावाहयामि स्थापयामि।

३७. (आग्नेय्याम्) ॐ भूर्भुवः स्वः शक्तये नमः, शक्तिमावाह-यामि स्थापयामि।

३८. (दक्षिणे) ॐ भूर्भुवः स्वः दण्डाय नमः, दण्डमावाहयामि स्थापयामि।

३९. (नैर्ऋत्याम्) ॐ भूर्भुवः स्वः खड्गाय नमः, खड्गमावाह-यामि स्थापयामि।

४०. (पश्चिमे) ॐ भूर्भुवः स्वः पाशाय नमः, पाशमावाहयामि स्थापयामि।

४१. (वायव्याम्) ॐ भूर्भुवः स्वः अङ्कुशाय नमः, अङ्कुश-मावाहयामि स्थापयामि।

४२. (तद्बाह्ये उत्तरे रक्तपरिधौ सोमादिक्रमेण) ॐ भूर्भुवः स्वः गौतमाय नमः, गौतममावाहयामि स्थापयामि।

४३. (ईशान्याम्) ॐ भूर्भुवः स्वः भरद्वाजाय नमः, भरद्वाज-मावाहयामि स्थापयामि।

४४. (पूर्वे) ॐ भूर्भुवः स्वः विश्वामित्राय नमः, विश्वामित्र-मावाहयामि स्थापयामि।

४५. (आग्नेय्याम्) ॐ भूर्भुवः स्वः कश्यपाय नमः, कश्यप-मावाहयामि स्थापयामि।

४६. (दक्षिणे) ॐ भूर्भुवः स्वः जमदग्नये नमः, जमदग्नि-मावाहयामि स्थापयामि।

४७. (नैर्ऋत्याम्) ॐ भूर्भुवः स्वः वसिष्ठाय नमः, वसिष्ठ-मावाहयामि स्थापयामि।

४८. (पश्चिमे) ॐ भूर्भुवः स्वः अत्रये नमः, अत्रिमावाहयामि स्थापयामि।

४९. (वायव्याम्) ॐ भूर्भुवः स्वः अरुन्धत्यै नमः, अरुन्धती-मावाहयामि स्थापयामि।

५०. (पूर्वे) ॐ भूर्भुवः स्वः ऐन्द्र्यै नमः, ऐन्द्रीमावाहयामि स्थापयामि।

५१. (आग्नेय्याम्) ॐ भूर्भुवः स्वः कौमार्य्यै नमः, कौमारी-मावाहयामि स्थापयामि।

५२. (दक्षिणे) ॐ भूर्भुवः स्वः ब्राह्म्यै नमः, ब्राह्मीमावाहयामि स्थापयामि।

५३. (नैर्ऋत्याम्) ॐ भूर्भुवः स्वः वाराह्यै नमः, वाराहीमावाहयामि स्थापयामि।

५४. (पश्चिमे) ॐ भूर्भुवः स्वः चामुण्डायै नमः, चामुण्डा-मावाहयामि स्थापयामि।

५५. (वायव्ये) ॐ भूर्भुवः स्वः वैष्णव्यै नमः, वैष्णवीमावाहयामि स्थापयामि।

५६. (उत्तरे) ॐ भूर्भुवः स्वः माहेश्वर्यै नमः, माहेश्वरीमावाहयामि स्थापयामि।

५७. (ईशान्याम्) ॐ भूर्भुवः स्वः वैनायक्यै नमः, वैनायकी-मावाहयामि स्थापयामि।

एवमावाह्य,

प्रतिष्ठा सर्वदेवानां मित्रावरुणनिर्मिता।
प्रतिष्ठां ते करोम्यत्र मण्डले दैवतैः सह॥

'ब्रह्माद्यावाहितदेवाः सुप्रतिष्ठिता वरदा भवत' इति प्रतिष्ठाप्य, 'ब्रह्मादिदेवेभ्यो नमः' इति यथालब्धोपचारैः सम्पूजयेत्।

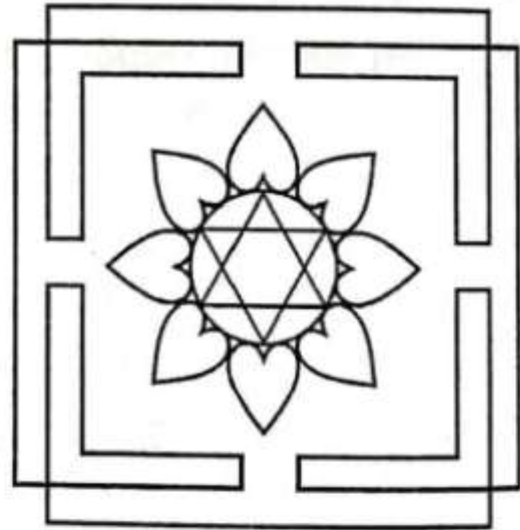
प्रधानकलशस्थापनम्

ततः कुङ्कुमादिना भूमौ पद्मं कृत्वा—**ॐ मही द्यौः पृथिवी च न ऽइमं यज्ञं मिमिक्षताम्। पिपृतान्नो भरीमभिः॥** इति भूमिं स्पृष्ट्वा। **ॐ ओषधयः समवदन्त सोमेन सह राज्ञा। यस्मै कृणोति ब्राह्मणस्तर्ठ० राजन्पारयामसि॥** इति सप्तधान्यं विकिरेत्। **ॐ आजिघ्र कलशं मह्या त्वा विशन्त्विन्दवः। पुनरूर्जा निवर्तस्व सा नः सहस्रं धुक्ष्वोरुधारा पयस्वती पुनर्माविशताद्रयिः॥** इति सप्तधान्योपरि कलशं स्थापयेत्। **ॐ वरुणस्योत्तम्भनमसि वरुणस्य स्कम्भसर्ज्जनी स्थो वरुणस्य ऽऋतसदन्यसि वरुणस्य ऽऋतसदनमसि वरुणस्य ऽऋतसदन-मासीद॥** इति कलशे जलं पूरयेत्। **ॐ त्वां गन्धर्वाऽअखनँस्त्वा-मिन्द्रस्त्वां बृहस्पतिः। त्वामोषधे सोमो राजा विद्वान्यक्ष्मादमुच्यत॥** इति कलशे गन्धं क्षिपेत्। **ॐ या ओषधीः पूर्वा जाता देवेभ्यस्त्रियुगं पुरा। मनै नु बभ्रूणामहर्ठ० शतं धामानि सप्त च॥** इति मन्त्रेण कलशे सर्वौषधी प्रक्षिपेत्। **ॐ काण्डात्काण्डात् प्ररोहन्ती परुषः परुषस्परि। एवा नो दूर्वे प्रतनु सहस्रेण शतेन च॥** इति कलशे दूर्वाङ्कुरान् क्षिपेत्। **ॐ अश्वत्थे वो निषदनं पर्णे वो वसतिष्कृता। गोभाज ऽइत्किलासथयत्सनवथ पूरुषम्॥** इति पञ्चपल्लवान्। **ॐ पवित्रे स्थो वैष्णव्यौ सवितुर्वः प्रसव उत्पुनाम्यच्छिद्रेण पवित्रेण सूर्यस्य रश्मिभिः॥ तस्य ते पवित्रपते पवित्र पूतस्य यत्कामः पुने तच्छकेयम्॥** इति मन्त्रेण कलशे पवित्रं क्षिपेत्। **ॐ स्योना पृथिवि नो भवान्नृक्षरा निवेशनी। यच्छा नः शर्म्म सप्रथाः॥** इति सप्तमृदः क्षिपेत्। **ॐ याः फलिनीर्या अफला अपुष्पा याश्च पुष्पिणीः बृहस्पतिप्रसूतास्ता नो मुञ्चन्त्वर्ठ० हसः॥** इति कलशे पूगीफलं प्रक्षिपेत्। **ॐ परि वाजपतिः कविरग्निर्हव्यान्यक्रमीत्। दधद्रत्नानि दाशुषे॥** इति पञ्चरत्नानि। **ॐ हिरण्यगर्भः समवर्त्त ताग्रे भूतस्य जातः पतिरेक ऽआसीत्। स दाधार पृथिवीं द्यामुतेमां कस्मै देवाय हविषा विधेम॥** इति

कलशे हिरण्यं क्षिपेत्। **ॐ सुजातो ज्योतिषा सह शर्म वरूथमासदत्स्वः। वासो अग्ने विश्वरूपर्ठ० संव्ययस्व विभावसो॥** इति युग्मवस्त्रेण कलशं वेष्टयेत्। **ॐ पूर्णा दर्वि परापत सुपूर्णा पुनरापत। वस्नेव विक्रीणावहा इषमूर्जर्ठ० शतक्रतो॥** इति कलशोपरि पूर्णपात्रं न्यसेत्। **ॐ याः फलिनीर्या अफला अपुष्पा याश्च पुष्पिणीः। बृहस्पतिप्रसूतास्तानो मुञ्चन्त्वर्ठ०हसः॥** इति मन्त्रेण कलशोपरि नारिकेलफलं संस्थाप्य। **ॐ तत्त्वा यामि ब्रह्मणा वन्दमानस्तदाशास्ते यजमानो हविर्भिः। अहेडमानो वरुणेह बोध्युरुशर्ठ०स मा न आयुः प्रमोषीः॥ अस्मिन् कलशे वरुणं साङ्गं सपरिवारं सायुधं सशक्तिकमावाहयामि स्थापयामि। 'ॐ अपांपतये वरुणाय नमः' इति षोडशोपचारैर्वरुणदेवता सम्पूज्य।**

धूमावतीयन्त्रनिर्माणम्

चौकोर स्वर्णपत्र अथवा रजत-पत्र पर अष्टगन्ध या चंदन से सोने की शलाका द्वारा सर्व-प्रथम अष्टदलात्मक लिखें। जिसमें महाषट्कोण कर्णिका हो तथा यह चार द्वारों से सुशोभित हो।



मातृकान्यासः

विनियोगः—**तत्र ओमस्य मातृकामन्त्रस्य ब्रह्मा ऋषिर्गायत्री छन्दो मातृकासरस्वतीदेवता हलो बीजानि स्वराश्शक्तयस्तदुभयङ्कीलक-मभीष्टसिद्ध्यर्थे विनियोगः।**

शिरसि ब्रह्मणे ऋषये नमः। मुखे गायत्रीछन्दसे नमः। हृदि मातृकासरस्वत्यै देवतायै नमः। लिङ्गे हल्भ्यो बीजेभ्यो नमः। पादयोस्स्वरेभ्यश्शक्तिभ्यो नमः सर्व्वाङ्गे तदुभयकीलकाय नमः॥

षडङ्गन्यासः

ॐ अँकँखँगँघँङँआँ हृदयाय नमः। इँचँछँजँझँञँईँ शिरसे स्वाहा। उँटँठँडँढँणँऊँ शिखायै वषट्। एँतँथँदँधँनँऐँ कवचाय हुम्। ओँपँफँबँभँमँऔँ नेत्रत्रयाय वौषट्, अँयँरँलँवँशँषँहँक्षँअः अस्त्राय फट्॥

करन्यासः

ॐ अँकँखँगँघँङँआँ अङ्गुष्ठाभ्यां नमः। इँचँछँजँझँञँईँ तर्जनीभ्यां स्वाहा। उँटँठँडँढँणँऊँ मध्यमाभ्यां वषट्। एँतँथँदँधँनँऐँ अनामिकाभ्यां हुम्। ओँपँफँबँभँमँऔँ कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्। अँयँरँलँवँशँषँसँहँक्षँअः करतलकरपृष्ठाभ्यां फट्॥

बहिर्म्मातृकान्यासः

ॐ ललाटे अँ नमः। मुखवृत्ते आँ नमः। दक्षनेत्रे इं नमः। वामनेत्रे ईं नमः। दक्षकर्ण्णे उँ नमः। वामकर्ण्णे ऊँ नमः। दक्षनासायाम् ऋँ नमः। वामनासायाम् ॠँ नमः। दक्षगण्डे लृँ नमः। वामगण्डे लॄँ नमः। ऊर्ध्वोष्ठे एँ नमः। अधरोष्ठे ऐँ नमः। ऊर्ध्वदन्तपङ्क्तौ ओं नमः। अधोदन्तपङ्क्तौ औँ नमः। शिरसि अँ नमः। मुखे अः नमः। दक्षिणबाहुमूले कँ नमः। कूर्प्परे खँ नमः। मणिबन्धे गँ नमः। अङ्गुलीमूले घँ नमः। अङ्गुलग्रे ङँ नमः। वामबाहुमूले चँ नमः, कूर्प्परे छँ नमः। मणिबन्धे जँ नमः। अङ्गुलीमूले झँ नमः, अङ्गुल्यग्रे ञँ नमः। दक्षिणोरुमूले टँ नमः। जानुनि ठँ नमः। गुल्फे डँ नमः, अङ्गुलीमूले ढँ नमः। अङ्गुल्यग्रे णँ नमः। वामोरुमूले तँ नमः। जानुनि थँ नमः। गुल्फे दँ नमः। अङ्गुलीमूले धँ नमः। अङ्गुल्यग्रे नँ नमः। दक्षपार्श्वे पँ नमः। वामपार्श्वे फँ नमः। पृष्ठे बँ नमः। नाभौ भँ नमः। उदरे मँ नमः। हृदये यँ त्वगात्मने नमः। दक्षांसे रँ असृगात्मने नमः, ककुदि लँ मांसात्ने नमः। वामांसे वँ मेदआत्मने नमः। हृदयाद्दक्षभुजाग्रान्तं शमस्थ्यात्मने नमः। हृदयाद्वामभुजाग्रान्तं षँमज्ञात्मने नमः। हृदयाद्दक्ष-

पादाग्रान्तं सँ शुक्रात्मने नमः। हृदादिवामपादाग्रान्तं हँ आत्मने नमः। हृदयान्मस्तकान्तं क्षंपरमात्मने नमः॥

इन न्यासों को करने बाद पुनः निम्न न्यासों को करें—

ऋष्यादिन्यासः

ॐ पिप्पलाद ऋषये नमः शिरसि। निवृच्छन्दसे नमः मुखे। ज्येष्ठादेवतायै नमः हृदि। धूं बीजाय नमः गुह्ये। स्वाहा शक्तये नमः पादयोः। धूमावती कीलकाय नमः नाभौ। विनियोगाय नमः सर्वाङ्गे।

करन्यासः

ॐ धूं धूँ अङ्गुष्ठाभ्यां नमः। ॐ धूं तर्जनीभ्यां नमः। ॐ मां मध्यमाभ्यां नमः। ॐ वं अनामिकाभ्यां नमः। ॐ त्यैं कनिष्ठिकाभ्यां नमः। स्वाहा करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः।

हृदयादिषडङ्गन्यासः

ॐ धूं धूं हृदयाय नमः। ॐ धूं शिरसे स्वाहा। ॐ मां शिखायै वषट्। ॐ वं कवचाय हुम्। ॐ त्यैं नेत्रत्रयाय वौषट्। ॐ स्वाहा अस्त्राय फट्।

ध्यानम्

धूम्राभां धूम्रवस्त्रां प्रकटितदशनां मुक्तबालाम्बराढ्यां
काकाङ्कस्यन्दनस्थां धवलकरयुगां शूर्पहस्तातिरूक्षाम्।
नित्यं क्षुत्क्षान्तदेहां मुहुरतिकुटिलां वारिवाञ्छाविचित्तां
ध्यायेद् धूमावतीं वामनयनयुगलां भीतिदां भीषणास्याम्॥ १॥

विवर्णा चञ्चला दुष्टा दीर्घा च मलिनाम्बरा।
विमुक्तकुन्तला रूक्षा विधवाविरलद्विजा॥
काकध्वजरथारूढा विलम्बितपयोधरा।
शूर्पहस्तातिरक्ताक्षीधृतहस्ता वरान्विता॥
प्रवृद्धघोणा तु भृशं कुटिला कुटिलेक्षणा।
क्षुत्पिपासार्दिता नित्यं भयदा कलहास्पदा॥ २॥

पीठपूजनम्

ॐ धूम्रा बभ्रुनीकाशा पितॄणार्ठ० सोमवतां बभ्रवो धूम्रनीकाशाः पितॄणां बर्हिषदां कृष्णा बभ्रुनीकाशाः पितॄणामग्निष्वात्तानां कृष्णाः पृषन्तस्त्रैयम्बकाः॥ (शु०य०सं० २४/१८) अथवा ॐ धूम्रान्वसन्तायालभते श्वेतान् ग्रीष्माय कृष्णान्वर्षाभ्योऽरुणाञ्छरदे पृषतो हेमन्ताय पिशङ्गाञ्छिशिराय॥ (शु०य०सं० २४/११)

कर्णिकायाम्—ॐ मण्डूकाय नमः। ॐ कालाग्निरुद्राय नमः। ॐ मूलप्रकृत्यै नमः। ॐ आधारशक्तये नमः। ॐ कूर्माय नमः। ॐ शेषाय नमः। ॐ वाराहाय नमः। ॐ पृथिव्यै नमः। ॐ सुधाम्बुधये नमः। ॐ रत्नदीपाय नमः। ॐ मेरवे नमः। ॐ नन्दनवनाय नमः। ॐ कल्पवृक्षाय नमः। कर्णिकामूले—ॐ विचित्रानन्दभूम्यै नमः। कर्णिकोपरि—ॐ श्री रत्नमन्दिराय नमः। ॐ रत्नवेदिकायै नमः। ॐ धर्मवारणाय नमः। ॐ रत्नसिंहासनाय नमः। चतसृषु दिक्षु—ॐ धर्माय नमः। ॐ ज्ञानाय नमः। ॐ वैराग्याय नमः। ॐ ऐश्वर्याय नमः। ॐ अधर्माय नमः। ॐ अज्ञानाय नमः। ॐ अवैराग्याय नमः। ॐ अनैश्वर्याय नमः। पुनः मध्ये—ॐ आनन्दकन्दाय नमः। ॐ संविन्नालाय नमः। ॐ सर्वतत्त्वात्मक पद्माय नमः। ॐ प्रकृतिमय पत्रेभ्यो नमः। ॐ विकारमय केसरेभ्यो नमः। ॐ पञ्चाशद्बीजाढ्य कर्णिकायै नमः। ॐ अं द्वादश कलात्मने सूर्यमण्डलाय नमः। ॐ उं षोडशकलात्मने सोममण्डलाय नमः। ॐ मं दशकलात्मने वह्निमण्डलाय नमः। ॐ सं सत्त्वाय नमः। ॐ रं रजसे नमः। ॐ तं तमसे नमः। ॐ अं आत्मने नमः। ॐ उं अन्तरात्मने नमः। ॐ मं परमात्मने नमः। ॐ ह्रीं ज्ञानात्मने नमः। तत्रैव—ॐ मां मायातत्त्वाय नमः। ॐ कं कलत्त्वाय नमः। ॐ विं विद्यातत्त्वाय नमः। ॐ पं परतत्त्वाय नमः। तत्रैव—ॐ बं ब्रह्मप्रेताय नमः। ॐ विं विष्णु प्रेताय नमः। ॐ रुं रुद्र प्रेताय नमः। ॐ इं ईश्वर प्रेताय नमः। ॐ सं

सदाशिव प्रेताय नमः। तत्रैव—**ॐ सुधार्णवासनाय नमः। ॐ प्रेताम्बुजासनाय नमः। ॐ दिव्यासनाय नमः। ॐ चक्रासनाय नमः। ॐ सर्वयन्त्रासनाय नमः। ॐ साध्यसिद्धासनाय नमः। इति संपूज्य नव पीठशक्ती पूजयेत्।** तद्यथा—

पूर्वाद्यष्टसु दिक्षु ॐ कामदायै नमः। ॐ मानदायै नमः। ॐ नक्तायै नमः। ॐ मधुरायै नमः। ॐ मधुराननायै नमः। ॐ नर्मदायै नमः। ॐ भोगदायै नमः। ॐ नन्दायै नमः। मध्ये ॐ प्राणदायै नमः। ॐ धूमावतीयोगपीठाय नमः।

तदुपरान्त आचार्य—**ॐ मनो जूतिर्जुषतामाज्यस्य बृहस्पतिर्यज्ञमिमं तनोत्वरिष्टं यज्ञठं० समिमं दधातु। विश्वेदेवास इह मादयन्तामों ३प्रतिष्ठ॥** इस मन्त्र का उच्चारण करें तथा यजमान से '**पीठदेवता सुप्रतिष्ठिता वरदा भवन्तु।**' '**आवाहित पीठदेवताभ्यो नमः**' इसका उच्चारण करावें।

अग्न्युत्तारणम्

आचार्यः—देशकालौ सङ्कीर्त्य, अमुकगोत्रः अमुकशर्माऽहम् अस्यां सुवर्णमय-धूमावतीप्रतिमायाः अवघातादि दोषपरिहारार्थं देवतासान्निध्यर्थं च अग्न्युत्तारणं करिष्ये।

इस प्रकार से संकल्प करके सुवर्ण की धूमावती देवी की प्रतिमा को चाँदी के चौड़े मुख के पात्र में रखकर उसपर घृत लगाकर दुग्धयुक्त जलधारा प्रदान करें।

अग्न्युत्तारणमन्त्राः

ॐ समुद्रस्य त्त्वावकयाग्ने परिव्ययामसि।
पावको ऽअस्मभ्यर्ठं० शिवो भव॥ १॥

भावार्थ—हे अग्निदेव! हम जल के शैवाल से आपको परिवेष्टित करते हैं। अब आप हमारे प्रति शोधक एवं शान्त हो जाओ॥ १॥

हिमस्य त्त्वा जरायुणाग्ने परिव्ययामसि।
पावको ऽअस्मभ्यर्ठ० शिवो भव॥ २॥
उप ज्मन्नुप वेतसेऽवतर नदीष्वा।
अग्ने पित्तमपामसि मण्डूकि ताभिरागहि।
सेमं नो यज्ञं पावकवर्णर्ठ० शिवं कृधि॥ ३॥
अपामिदं न्ययनर्ठ० समुद्रस्य निवेशनम्।
अन्याँस्ते ऽअस्मत्तपन्तु हेतयः पावको अस्मभ्यर्ठ० शिवो भव ॥ ४॥
अग्ने पावक रोचिषा मन्द्रया देव जिह्वया। आ देवान्वक्षि यक्षि च ॥ ५॥
स नः पावक दीदिवोऽग्ने देवाँ२॥ इहावह उप यज्ञर्ठ० हविश्च नः॥ ६॥
पावकया यश्चितयन्त्या कृपा क्षामन् रुरुच ऽउषसो न भानुना।
तूर्वन्न यामन्नेतशस्य नू रण आ यो घृणे न ततृषाणो ऽअजरः॥ ७॥

भावार्थ—हे अग्निदेव! हिम की झिल्ली सी इस शैवाल से हम आपको परिवेष्टित करते हैं, अतः आप हमारे लिए शान्त एवं शोधक बनो॥ २॥ हे अग्निदेव! आप पृथ्वी में, वेंत की शाखा में तथा नदी के शीतल शैवाल में प्रवेश करो। हे अग्निदेव! आप तो जलों का ही तेज हैं, हे मेढुकि! आप इन शैवाल वेंत के साथ हममें प्रविष्ट हो जाओ और आप हमारे इस यज्ञ को अग्नि तुल्य तेजस्वी एवं शान्त बनाओ॥ ३॥ हे अग्निदेव! आपकी ज्वालाएँ हमारे अतिरिक्त लोगों को तापित करें। आप हमारे लिए सदैव शान्त बने रहो। क्योंकि यह प्रयोग जलों का आपूर एवं समुद्र का बड़ा स्थल है॥ ४॥ हे शोधक अग्निदेव! आप अपनी धीमी गति ज्वाला जिह्वा के साथ हमें प्राप्त होओ। इस यज्ञ में देवों को लाओ और उनका यहाँ पूजन करो॥ ५॥ हे अग्निदेव! आप देवों को यहाँ लाओ और उन्हें हमारी हवि प्रदत्त कराओ॥ ६॥ जो अग्नि अपनी शोधक और चेतना प्रदत्त करने वाली दीप्ति के द्वारा इस पृथ्वी पर सदैव प्रकाशित होता है। जिस प्रकार से प्रातःकाल अपनी दीप्ति से स्वयं शोभित होते हैं। अश्वयुद्ध में शत्रु को हिंसित करते हुए जो अग्निदेव अत्यन्त तृषित व सदैव अजर बने रहते हैं। उस अग्निदेव को हम मेढुकी, शैवाल एवं वेंतस शाखा के द्वारा प्रशमित करते हैं॥ ७॥

नमस्ते हरसे शोचिषे नमस्ते ऽअस्त्वर्चिषे।
अन्याँस्ते ऽअस्मत्तपन्तु हेतयः पावको अस्मभ्यर्ठ० शिवो भव॥ ८॥
नृषदे वेडप्सुषदे व्वेड् वर्हिषदे वेड्वनसदे वेट् स्वर्विदेवेट्॥ ९॥
ये देवा देवानां यज्ञिया यज्ञियानार्ठ० संवत्सरीणमु पभागमासते।
अहुतादो हविषो यज्ञे ऽअस्मिन्त्स्वयं पिबन्तु मधुनो घृतस्य॥ १०॥
ये देवा देवेष्वधि देवत्वमायन्न्ये ब्ब्रह्मणः पुर ऽएतारो ऽअस्य।
येब्भ्यो न ऋते पवते धाम किञ्चन न ते दिवो न पृथिव्या ऽअधि स्नुषु॥ ११॥

भावार्थ—हे अग्निदेव! आपके रसहरणशील तेज को प्रणाम है, आपकी अर्चिष् को प्रणाम है, आपकी ज्वालायें हमसे अतिरिक्त लोगों को तपावें। हे अग्निदेव! आप हमारे लिए (निरन्तर) कल्याणकारी बने रहो॥ ८॥ जठराग्नि रूप से मानवों में रहने वाले अग्निदेव के लिए यह परोक्ष रूप से आहुति है। जलों में और्वाग्नि रूप से स्थित अग्नि के लिए यह परोक्ष है। आहवनीयादि भाव से कुशों में स्थित अग्निदेव के लिए यह परोक्षाहुति है। वृक्षों में दावाग्नि भाव से स्थित अग्नि के लिए यह परोक्ष आहुति है। स्वर्गलोक में आदित्य भाव से वर्तमान अग्निदेव के लिए यह परोक्षाहुति है॥ ९॥ देवताओं के बीच में जो देवता प्रार्थना के योग्य हैं, जो यजनीय देवताओं से भी वार्षिक कर के रूप में परिपक्व अन्नादि भाग को (सदैव) प्राप्त करते हैं, वे प्राणादि देवता हमारे इस यज्ञ में प्रत्यक्ष रूप से उपस्थित होकर घृतादि का स्वयं भक्षण करें॥ १०॥ जो प्राणादि देवता इन्द्रादि देवों के शरीर में निवास कर देवत्व को प्राप्त हुए हैं। जो इस जीव के संग अग्रगामी होते हैं तथा जिनके बिना कोई भी शरीर गति को प्राप्त नहीं कर सकता। इस प्रकार के प्राणदेवता न तो स्वर्गलोक में बसते हैं और न ही पृथ्वीलोक में ही रहते हैं। ऐसे देवता तो मात्र नासिका, चक्षुः आदि आयतनों में ही निवास करते हैं॥ ११॥

प्राणदा ऽअपानदा व्यानदा वर्चोदा वरिवोदाः। अन्याँस्ते अस्मत्तपन्तु हेतयः पावको अस्मभ्यर्ठ० शिवो भव॥ १२॥

इस प्रकार से अग्न्युत्तारण करके सुवर्णमयी धूमावती देवी की प्रतिमा को जलपात्र से बाहर निकालकर नये वस्त्र से पोंछकर यन्त्र के ऊपर रखकर प्राणप्रतिष्ठा करें।

प्राणप्रतिष्ठा

विनियोगः—अस्य प्राणप्रतिष्ठामन्त्रस्य ब्रह्म-विष्णु-रुद्रा ऋषयः, ऋग्यजुः सामानि छन्दांसि, क्रियामयवपुः प्राणाख्या देवता, आं बीजं, ह्रीं शक्तिः, क्रौं कीलकं श्रीधूमावतीदेव्याः प्राणप्रतिष्ठापने विनियोगः।

तदनन्तर ऋष्यादियों का क्रम से शिर, मुख, हृदय, नाभि, गुह्य और पैरों में न्यास करे।

ॐ ब्रह्मविष्णुरुद्रऋषिभ्यो नमः शिरसि। ॐ ऋग्यजुः सामच्छन्दोभ्यो नमः मुखे। ॐ प्राणाख्यदेवतायै नमः हृदये। ॐ आं बीजाय नमः गुह्ये। ॐ ह्रीं शक्त्यै नमः पादयोः। ॐ क्रौं कीलकाय नमः सर्वाङ्गेषु।

करन्यासः—**ॐ अं कं खं गं घं ङंआं पृथिव्यप्तेजोवाय्वाकाशात्मने आं अङ्गुष्ठाभ्यां नमः। ॐ इं चं छं जं झं ञं शब्दस्पर्शरूपरसगन्धात्मने ईं तर्जनीभ्यां नमः। ॐ उं टं ठं डं ढं णं श्रोत्र-त्वक्-चक्षुर्जिह्वाघ्राणात्मने ॐ मध्यमाभ्यां नमः। ॐ एं तं थं दं धं नं वाक्-पाणि-पाद-पायूप-स्थात्मने ऐं अनामिकाभ्यां नमः। ॐ ओं पं फं बं भं मं वचनादान विहरणोत्सर्गानन्दाऽत्मने औं कनिष्ठिकाभ्यां नमः। ॐ अं यं रं लं वं शं षं सं हं लं ठं क्षं मनोबुद्ध्यहङ्कारचित्तात्मने अः करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः।**

हे अग्निदेव! आपकी प्राणदात्री, अपानदात्री, ब्यानदात्री, ब्रह्मवर्चस् दात्री एवं धनदात्री ज्वालाएँ हमारे लिए कल्याणकारी अर्थात् मंगलमय होवें। वे हमारे अतिरिक्त (अन्य) शत्रुओं को तापित करें। हे शोधक अग्निदेव! आप हमारे लिए (निरन्तर) सदैव शान्त बने रहो॥ १२॥

हृदयादिन्यास:—ॐ अं कं खं गं घं ङं पृथिव्यप्तेजोवाय्वाकाशात्मने आं हृदयाय नमः। ॐ इं चं छं जं झं ञं शब्दस्पर्शरूपरसगन्धात्मने ईं शिरसे स्वाहा। ॐ उं टं ठं डं ढं णं श्रोत्रत्वक्चक्षुर्जिह्वाघ्राणात्मने ॐ शिखायै वषट्। ॐ एं तं थं दं धं नं वाक्पाणिपादपायूपस्थात्मने ऐं कवचाय हुम्। ॐ ओं पं फं बं भं मं वचनादानविहरणोत्सर्गानन्दात्मने औं नेत्रत्रयाय वौषट्। ॐ अं यं रं लं वं शं षं सं हं लं क्षं मनोबुद्ध्यहङ्कारचित्तात्मने अः अस्त्राय फट्। एवमात्मनि मूर्तौ (देवे) च न्यासं कुर्यात्।

आचार्य भगवती धूमावती की मूर्ति का स्पर्श कर जप करें तथा शिर और हृदय का हाथ से स्पर्श कर निम्न प्राणप्रतिष्ठा के मंत्रों का उच्चारण करें—

ॐ आं, ह्रीं, क्रौं, यं, रं, लं, वं, शं, षं, सं, हं, लं, क्षं, हं, सः धूमावतीदेव्याः प्राणा इह प्राणाः। ॐ आं, ह्रीं, क्रौं, यं, रं, लं, वं, शं, षं, सं, हं, लं, क्षं, हं, सः धूमावतीदेव्याः जीव इह स्थितः। ॐ आं, ह्रीं, क्रौं, यं, रं, लं, वं, शं, षं, सं, हं, लं, क्षं, हं, सः धूमावतीदेव्याः सर्वेन्द्रियाणि। ॐ आं, ह्रीं, क्रौं, यं, रं, लं, वं, शं, षं, सं, हं, लं, क्षं, हं, सः धूमावतीदेव्याः वाङ्मनश्चक्षुःश्रोत्रजिह्वाघ्राणपाणिपादपायूपस्थानि इहैवागत्य स्वस्तये सुस्थिरं सुचिरं तिष्ठन्तु स्वाहा।

आचार्य निम्न श्लोक का उच्चारण करते हुए यजमान से हाथ जोड़वाकर धूमावती का ध्यान करावें—

ध्यानम्

धूम्राभां धूम्रवस्त्रां प्रकटितदशनां मुक्तबालाम्बराढ्यां
काकाङ्कस्यन्दनस्थां धवलकरयुगां शूर्पहस्तातिरूक्षाम्।
नित्यं क्षुत्क्षान्तदेहां मुहुरतिकुटिलां वारिवाञ्छाविचित्तां
ध्यायेद् धूमावतीं वामनयनयुगलां भीतिदां भीषणास्याम्॥ १॥

विवर्णा चञ्चला दुष्टा दीर्घा च मलिनाम्बरा।
विमुक्तकुन्तला रूक्षा विधवाविरलद्विजा॥
काकध्वजरथारूढा विलम्बितपयोधरा।
शूर्पहस्तातिरक्ताक्षीधृतहस्ता वरान्विता॥
प्रवृद्धघोणा तु भृशं कुटिला कुटिलेक्षणा।
क्षुत्पिपासार्दिता नित्यं भयदा कलहास्पदा॥ २॥

भावार्थ—धूम्र आभा से युक्त, धूमिल वस्त्र (अपनी देहयष्टि पर) धारण करनेवाली, बाहर दिखाई देनेवाले दाँतों से युक्त, बिखरे हुए केशों और वस्त्रों से युक्त काक (कौआ) के चिह्न से युक्त ध्वजावाले रथ पर विराजित, धवल वर्ण के दोनों हाथों वाली, हाथों में सूप धारण करनेवाली, रुक्ष शरीर-वाली, नित्य (सदैव) भूख-प्यास से आकुल विग्रह वाली, अत्यन्त कुटिल, जल की इच्छा से व्यग्र चित्तवाली, रोषयुक्त नेत्रयुगल वाली, भय देनेवाली और भयंकर मुखमण्डलवाली देवी धूमावती का (इस प्रकार) ध्यान करना चाहिए॥ १॥ खुले मुख वाली चंचल, दुष्ट, लम्बी, मलीन वस्त्रों को धारण करने वाली, खुले केशों वाली, रूक्ष, विधवा, टेढ़े-मेढ़े दाँतों वाली, कौए का ध्वज जिस रथ पर लगा हो उस पर बैठी हुई, लम्बे-लम्बे स्तनों वाली, हाथ में सूप ली हुई, अत्यन्त लाल आँखों वाली, हाथ पकड़ी हुई, वरमुद्रा से युक्त, बहुत बड़ी नाक वाली, अत्यन्त टेढ़ी, टेढ़ा देखने वाली, भूख और प्यास से व्याकुल, सदा भय देने वाली, कलहप्रिय धूमादेवी हैं॥ २॥

वैदिकमन्त्राः

ॐ मनो मे तर्पयत वाचं मे तर्पयत प्राणं मे तर्पयत चक्षुर्मे तर्पयत श्रोत्रं मे तर्पयतात्मानं मे तर्पयत प्रजां मे तर्पयत पशून्मे तर्पयत गणान्मे तर्पयत गणा मे मा वितृषन्॥ १॥

ऐन्द्रः प्राणो अङ्गे अङ्गे निदीध्यदैन्द्र उदानो अङ्गे अङ्गे निधीतः। देवत्वष्टर्भूरि ते सꣳ समेतु सलक्ष्मा यद्विषुरूपं भवाति। देवत्रा यन्तमवसे सखायोऽनु त्वा माता पितरो मदन्तु॥ २॥

प्राणश्च मेऽपानश्च मे व्यानश्च मेऽसुश्च मे चित्तं च म आधीतं च मे वाक् च मे मनश्च मे चक्षुश्च मे श्रोत्रं च मे दक्षश्च मे बलं च मे यज्ञेन कल्पनन्ताम्॥ ३॥

प्राणं मे पाह्यपानं मे पाहिव्यानं मे पाहिचक्षुर्म उर्व्या विभाहि श्रोत्रं मे श्लोकय। अपः पिन्वौषधीर्जिन्व द्विपादव चतुष्पात्पाहि दिवो वृष्टिमेरय॥ ४॥

प्राणाय मे वर्चोदा वर्चसे पवस्व व्यानाय मे वर्चोदा वर्चसे पवस्वोदानाय मे वर्चोदा वर्चसे पवस्व वाचे मे वर्चोदा वर्चसे पवस्व क्रतूदक्षाभ्यां मे वर्चोदा वर्चसे पवस्व श्रोत्राय मे वर्चोदा वर्चसे पवस्व चक्षुर्भ्यां मे वर्चोदसौ वर्चसे पवेथाम्॥ ५॥

प्राणाय स्वाहा पानाय स्वाहा व्यानाय स्वाहा चक्षुषे स्वाहा श्रोत्राय स्वाहा वाचे स्वाहा मनसे स्वाहा॥ ६॥

आचार्य धूमावती देवी के इस मन्त्र का उच्चारण करें—**ॐ धूम्रा बभ्रुनीकाशा पितॄणाꣳ सोमवतां बभ्रवो धूम्रनीकाशाः पितॄणां बर्हिषदां कृष्णा बभ्रुनीकाशाः पितॄणामग्निष्वात्तानां कृष्णाः पृषन्तस्त्रैयम्बकाः॥**

आचार्य इस मन्त्र और नीचे दिए हुए श्लोक का उच्चारण करें—**ॐ मनो जूतिर्जुषतामाज्यस्य बृहस्पतिर्यज्ञमिमं तनोत्वरिष्टं यज्ञꣳ समिमं दधातु। विश्वेदेवास इह मादयन्तामों ३ँप्रतिष्ठ॥**

अस्यै प्राणाः प्रतिष्ठन्तु अस्यै प्राणाः क्षरन्तु च।
अस्यै देवत्वमर्चायै स्वाहेति यजुरीरयेत्॥

भावार्थ—इसके लिए प्राण प्रतिष्ठित हों, इसके लिए प्राण चलते रहें। इस पूजा के लिए देवत्व होता रहे। स्वाहा ऐसा यजुर्वेद से कहा है।

श्रीधूमावतीपूजनम्

ऋष्यादिन्यासः

ॐ पिप्पलादऋषये नमः शिरसि। निवृच्छन्दसे नमः मुखे। ज्येष्ठादेवतायै नमः हृदि। धूं बीजाय नमः गुह्ये। स्वाहाशक्तये नमः पादयोः। धूमावती कीलकाय नमः नाभौ। विनियोगाय नमः सर्वाङ्गे।

करन्यासः

ॐ धूं धूं अङ्गुष्ठाभ्यां नमः। ॐ धूं तर्जनीभ्यां नमः। ॐ मां मध्यमाभ्यां नमः। ॐ वं अनामिकाभ्यां नमः। ॐ त्यैं कनिष्ठिकाभ्यां नमः। स्वाहा करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः।

हृदयादिषडङ्गन्यासः

ॐ धूं धूँ हृदयाय नमः। ॐ धूं शिरसे स्वाहा। ॐ मां शिखायै वषट्। ॐ वं कवचाय हुम्। ॐ त्यैं नेत्रत्रयाय वौषट्। ॐ स्वाहा अस्त्राय फट्।

ध्यानम्

धूम्राभां धूम्रवस्त्रां प्रकटितदशनां मुक्तबालाम्बराढ्यां
काकाङ्कस्यन्दनस्थां धवलकरयुगां शूर्पहस्तातिरूक्षाम्।
नित्यं क्षुत्क्षान्तदेहां मुहुरतिकुटिलां वारिवाञ्छाविचित्तां
ध्यायेद् धूमावतीं वामनयनयुगलां भीतिदां भीषणास्याम्॥ १॥

विवर्णा चञ्चला दुष्टा दीर्घा च मलिनाम्बरा।
विमुक्तकुन्तला रूक्षा विधवाविरलद्विजा॥
काकध्वजरथारूढा विलम्बितपयोधरा।
शूर्पहस्तातिरक्ताक्षीधृतहस्ता वरान्विता॥
प्रवृद्धघोणा तु भृशं कुटिला कुटिलेक्षणा।
क्षुत्पिपासार्दिता नित्यं भयदा कलहास्पदा॥ २॥

सर्वशक्तियुक्तायै श्रीधूमावत्यै नमः ध्यायामि।

आवाहनम्

ॐ धूम्रा बभ्रुनीकाशा पितृणार्ठ० सोमवतां बभ्रवो धूम्रनीकाशाः पितृणां बर्हिषदां कृष्णा बभ्रुनीकाशाः पितृणामग्निष्वात्तानां कृष्णाः पृषन्तस्त्रैयम्बकाः ॥

ॐ सहस्त्रशीर्षा पुरुषः सहस्त्राक्षः सहस्त्रपात्।
स भूमिर्ठ० सर्वत स्पृत्वात्यतिष्ठद्दशाङ्गुलम्॥
देवेशि भक्ति सुलभे सर्वावरणसंयुते।
यावत्त्वां पूजयिष्मामि तावत् त्वं सुस्थिरा भव॥
सर्वशक्तियुक्तायै श्रीधूमावत्यै नमः, आवाहनं समर्पयामि।
आवाहनार्थे पुष्पं समर्पयामि।

आसनम्

ॐ पुरुष एवेदर्ठ० सर्वं यद्भूतं यच्च भाव्यम्।
उतामृतत्वस्येशानो यदन्नेनातिरोहति॥
अनेकरत्नसंयुक्तं नानामणिगणान्वितम्।
कार्तस्वरमयं दिव्यमासनं प्रतिगृह्यताम्॥
सर्वशक्तियुक्तायै श्रीधूमावत्यै नमः, आसनं समर्पयामि।
आसनार्थे अक्षतान् समर्पयामि।

पाद्यम्

ॐ एतावानस्य महिमातो ज्यायांश्च पूरुषः।
पादो ऽस्य विश्वा भूतानि त्रिपादस्यामृतं दिवि॥
गङ्गादिसर्वतीर्थेभ्यो मया प्रार्थनयाहृतम्।
तोयमेतत् सुखस्पर्शं पाद्यार्थं प्रतिगृह्यताम्॥
सर्वशक्तियुक्तायै श्रीधूमावत्यै नमः, पाद्यं समर्पयामि।

अर्घ्यम्

ॐ त्रिपादूर्ध्व उदैत्पुरुषः पादोऽस्येहाभवत्पुनः।
ततो विष्वङ् व्यक्रामत्साशनानशने अभि॥

गन्धपुष्पाक्षतैर्युक्तमर्घ्यं सम्पादितं मया।
गृहाण त्वं महादेवि प्रसन्ना भव सर्वदा॥

सर्वशक्तियुक्तायै श्रीधूमावत्यै नमः, अर्घ्यं समर्पयामि।

मधुपर्कम्

ॐ यन्मधुनो मधव्यं परमर्ठ० रूपमन्नाद्यम्। तेनाहं मधुनो मधव्येन परमेण रूपेणानाद्येन परमो मधव्योऽन्नादोऽसानि॥

आज्यं दधि मधु श्रेष्ठं पात्रयुग्मसमन्वितम्।
मधुपर्कं गृहाण त्वं शुभदा भव शोभने॥

सर्वशक्तियुक्तायै श्रीधूमावत्यै नमः, मधुपर्कं समर्पयामि।

आचमनीयम्

ॐ ततो विराडजायत विराजो अधि पूरुषः।
स जातो अत्यरिच्यत पश्चाद्भूमिमथो पुरः॥

जातीलवङ्गकङ्कोल कर्पूरादिसुवासितम्।
गृहाण देवदेवेशि एतदाचमनीयकम्॥

सर्वशक्तियुक्तायै श्रीधूमावत्यै नमः, आचमनीयं जलं समर्पयामि।

स्नानम्

ॐ तस्माद्यज्ञात्सर्वहुतः संभृतं पृषदाज्यम्।
पशूंस्तांश्चक्रे वायव्यानारण्या ग्राम्याश्च ये॥

मदाकिन्याः समानीतै हेमाम्भोरुहवासितैः।
स्नानं कुरुष्व देवेशि सलिलैश्च सुगन्धिभिः॥

सर्वशक्तियुक्तायै श्रीधूमावत्यै नमः, स्नानीयं जलं समर्पयामि।

पुनराचमनीयम्

ॐ आच्या जानु दक्षिणतो निषद्येमं यज्ञमभिगृणीत विश्वे।
मा हिर्ठ०सिष्ट पितरः केनचिन्नो यद्व आगः पुरुषता कराम॥
उच्चिष्टोप्यशुचिर्वापि यस्याः स्मरणमात्रतः।
शुद्धिमाप्नोति तस्यै ते पुनराचमनीयकम्॥
सर्वशक्तियुक्तायै श्रीधूमावत्यै नमः, पुनराचमनीयं जलं समर्पयामि।

पञ्चामृतस्नानम्

ॐ पञ्च नद्यः सरस्वतीमपियन्ति सस्रोतसः।
सरस्वती तु पञ्चधा सो देशेऽभवत्सरित्॥
पयो दधि घृतं चैव मधु च शर्करान्वितम्।
पञ्चामृतं मयाऽऽनीतं स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम्॥
सर्वशक्तियुक्तायै श्रीधूमावत्यै नमः, पञ्चामृतस्नानं समर्पयामि। शुद्धोदकस्नानं समर्पयामि। आचमनीयं जलं समर्पयामि।

गन्धोदकस्नानम्

ॐ त्वां गन्धर्वा अखनँस्त्वामिन्द्रस्त्वां बृहस्पतिः।
त्वामोषधे सोमो राजा विद्वान्यक्ष्मादमुच्यत॥
मलयाचलसम्भूतं चन्दनागुरुसम्भवम्।
चन्दनं देवि देवशि स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम्॥
सर्वशक्तियुक्तायै श्रीधूमावत्यै नमः, गन्धोदकस्नानं समर्पयामि।
शुद्धोदकस्नानं समर्पयामि। आचमनीयं जलं समर्पयामि।

उद्वर्तनस्नानम्

ॐ अर्ठ० शुनाते अर्ठ० शुः पृच्यतां परुषा परुः।
गन्धस्ते सोममवतु मदाय रसो अच्युतः॥

नानासुगन्धिद्रव्यं च चन्दनं रजनीयुतम्।
उद्वर्त्तनं मया दत्तं स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम्॥

सर्वशक्तियुक्तायै श्रीधूमावत्यै नमः, उद्वर्तनस्नानं समर्पयामि।
शुद्धोदकस्नानं समर्पयामि। आचमनीयं जलं समर्पयामि।

महाभिषेकस्नानम्

आचार्य धूमावती देवी के निम्न मन्त्र और पुरुषसूक्त के मन्त्रों का उच्चारण करते हुए शंख से जलधारा उनकी प्रतिमा के ऊपर गिरवाते हुए महाभिषेक स्नान करावें।

ॐ धूम्रा बभ्रुनीकाशा पितृणार्ठ० सोमवतां बभ्रवो धूम्रनीकाशाः पितृणां बर्हिषदां कृष्णा बभ्रुनीकाशाः पितृणामग्निष्वात्तानां कृष्णाः पृषन्तस्त्रैयम्बकाः॥ (शु०य०सं० २४/१८) अथवा **ॐ धूम्रान्वसन्ताया-लभते श्वेतान् ग्रीष्माय कृष्णान्वर्षाभ्योऽरुणाञ्छरदे पृषतो हेमन्ताय पिशङ्गाञ्छिशिराय॥** (शु०य०सं० २४/११)

ॐ सहस्त्रशीर्षा पुरुषः सहस्त्राक्षः सहस्त्रपात्।
स भूमिर्ठ० सर्वत स्पृत्वात्यतिष्ठद्दशाङ्गुलम्॥
पुरुष एवेदर्ठ० सर्वं यद्भूतं यच्च भाव्यम्।
उतामृतत्वस्येशानो यदन्नेनातिरोहति॥
एतावानस्य महिमातो ज्यायांश्च पूरुषः।
पादो ऽस्य विश्वा भूतानि त्रिपादस्यामृतं दिवि॥
त्रिपादूर्ध्व उदैत्पुरुषः पादोऽस्येहाभवत्पुनः।
ततो विष्वङ् व्यक्रामत्साशनानशने अभि॥
ततो विराडजायत विराजो अधि पूरुषः।
स जातो अत्यरिच्यत पश्चाद्भूमिमथो पुरः॥
तस्माद्यज्ञात्सर्वहुतः संभृतं पृषदाज्यम्।
पशूंस्तांश्चक्रे वायव्यानारण्या ग्राम्याश्च ये॥

तस्माद्यज्ञात्सर्वहुत ऋचः सामानि जज्ञिरे।
छन्दार्ठ०सि जज्ञिरे तस्माद्यजुस्तस्मादजायत॥
तस्मादश्वा अजायन्त ये के चोभयादतः।
गावो ह जज्ञिरे तस्मात्तस्माज्जाता अजावयः॥
तं यज्ञं बर्हिषि प्रौक्षन्पुरुषं जातमग्रतः।
तेन देवा अयजन्त साध्या ऋषयश्च ये॥
यत्पुरुषं व्यदधुः कतिधा व्यकल्पयन्।
मुखं किमस्यासीत्किं बाहू किमूरू पादा उच्येते॥
ब्राह्मणोऽस्य मुखमासीद्बाहू राजन्यः कृतः।
ऊरू तदस्य यद्वैश्यः पद्भ्यार्ठ० शूद्रोऽ अजायत॥
चन्द्रमा मनसो जातश्चक्षोः सूर्यो अजायत।
श्रोत्राद्वायुश्च प्राणश्च मुखादग्निरजायत॥
नाभ्या आसीदन्तरिक्षर्ठ० शीर्ष्णो द्यौः समवर्तत।
पद्भ्यां भूमिर्दिशः श्रोत्रात्तथा लोकाँ २॥ अकल्पयन्॥
यत्पुरुषेण हविषा देवा यज्ञमतन्वत।
वसन्तोऽस्यासीदाज्यं ग्रीष्म इध्मः शरद्धविः॥
सप्तास्यासन्परिधयस्त्रिःसप्त समिधः कृताः।
देवा यद्यज्ञं तन्वाना अबध्नन्पुरुषं पशुम्॥
यज्ञेन यज्ञमयजन्त देवास्तानि धर्माणि प्रथमान्यासन्।
ते ह नाकं महिमानः सचन्त यत्र पूर्वे साध्याः सन्ति देवाः॥

शुद्धोदकस्नानम्

ॐ शुद्धवालः सर्वशुद्धवालो मणिवालस्त ऽआश्विनाः।श्येतः श्येताक्षो-ऽरुणस्ते रुद्राय पशुपतये कर्णा यामा ऽअवलिप्ता रौद्रा नभोरूपाः पार्जन्याः॥

शुद्धं यत्सलिलं दिव्यं गङ्गाजलसमं स्मृतम्।
समर्पितं मया भक्त्या स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम्॥

सर्वशक्तियुक्तायै श्रीधूमावत्यै नमः, शुद्धोदकस्नानं समर्पयामि।
शुद्धोदकस्नानान्ते आचमनीयं जलं समर्पयामि।

वस्त्रम्

ॐ तस्माद्यज्ञात्सर्वहुतऽ ऋचः सामानि जज्ञिरे।
छन्दाꣳसि जज्ञिरे तस्माद्यजुस्तस्मादजायत॥
वस्त्रञ्च सोमदैवत्यं लज्जायास्तु निवारणम्।
मया निवेदितं भक्त्या गृहाण परमेश्वरि॥
सर्वशक्तियुक्तायै श्रीधूमावत्यै नमः, वस्त्रद्वयं समर्पयामि।
आचमनीयं जलं समर्पयामि।

यज्ञोपवीतम्

ॐ तस्मादश्वा अजायन्त ये के चोभयादतः।
गावो ह जज्ञिरे तस्मात्तस्माज्जाता अजावयः॥
स्वर्णसूत्रमयं दिव्यं ब्रह्मणा निर्मितं पुरा।
उपवीतं मया दत्तं गृहाण परमेश्वरि॥
सर्वशक्तियुक्तायै श्रीधूमावत्यै नमः, यज्ञोपवीतं समर्पयामि।
यज्ञोपवीतान्ते आचमनीयं जलं समर्पयामि।

चन्दनम्

ॐ तं यज्ञं बर्हिषि प्रौक्षन्पुरुषं जातमग्रतः।
तेन देवा अयजन्त साध्या ऋषयश्च ये॥
श्रीखण्डं चन्दनं दिव्यं गन्धाढ्यं सुमनोहरम्।
विलेपनं च देवेशि चन्दनं प्रतिगृह्यताम्॥
सर्वशक्तियुक्तायै श्रीधूमावत्यै नमः, चन्दनं समर्पयामि।

अक्षतान्

ॐ अक्षन्नमीमदन्त ह्यव प्रिया अधूषत। अस्तोषत स्वभानवो विप्रा नविष्ठया मती योजान्विन्द्रते हरी॥

अक्षतान् निमलान् दिव्यान् कुङ्कुमाक्तान् सुशोभनान्।
गृहाणेमान् महादेवि प्रसीद परमेश्वरि॥
सर्वशक्तियुक्तायै श्रीधूमावत्यै नमः, अक्षतान् समर्पयामि।

पुष्पमालाम्

ॐ यत्पुरुषं व्यदधुः कतिधा व्यकल्पयन्।
मुखं किमस्यासीत्किं बाहू किमूरू पादा उच्येते॥
पद्म - शङ्खज - पुष्पादिक्षतपत्रैर्विचित्रताम्।
पुष्पमालां प्रयच्छामि गृहाण त्वं परमेश्वरि॥
सर्वशक्तियुक्तायै श्रीधूमावत्यै नमः, पुष्पमालां समर्पयामि।

बिल्वपत्राणि

ॐ नमो बिल्मिने च कवचिने च नमो वर्मिणे च वरूथिने च नमः।
श्रुताय च श्रुतसेनाय च नमो दुन्दुभ्याय चाहनन्याय च॥
अमृतोद्भवः श्रीवृक्षो महादेवप्रियः सदा।
बिल्वपत्रं प्रयच्छामि पवित्रं ते परमेश्वरि॥
सर्वशक्तियुक्तायै श्रीधूमावत्यै नमः, बिल्वपत्राणि समर्पयामि।

दूर्वाङ्कुरान्

ॐ काण्डात्काण्डात् प्ररोहन्ती परुषः परुषस्परि।
एवा नो दूर्वे प्रतनु सहस्रेण शतेन च॥
विष्ण्वादिसर्वदेवानां प्रियपत्रां सुशोभनीम्।
क्षीरसागरसम्भूतां दूर्वां स्वीकुरु सर्वदा॥
सर्वशक्तियुक्तायै श्रीधूमावत्यै नमः, दूर्वाङ्कुरान् समर्पयामि।

तुलसीदलम्

ॐ इदं विष्णु र्विचक्रमे त्रेधा निदधेपद्म।
समूढमस्य पार्ठ० सुरे स्वाहा॥

तुलसीं हेमरूपां च रत्नरूपां च मञ्जरीम्।
भवमोक्षप्रदां तुभ्यमर्पयामि हरिप्रियाम्॥
सर्वशक्तियुक्तायै श्रीधूमावत्यै नमः, तुलसीदलं समर्पयामि।

नानाआभूषणम्

ॐ युवं तमिन्द्रापर्वता पुरोयुधा यो नः पृतन्यादपतन्तमिद्धतं वज्रेण तन्तमिद्धतम्। दूरे चत्ताय छन्त्सद् गहनं यदिनक्षत्॥
हार-कङ्कण-केयूर-मेखला-कुण्डलादिभिः ।
रत्नाढ्यं कुण्डलोपेतं भूषणं प्रतिगृह्यताम्॥
सर्वशक्तियुक्तायै श्रीधूमावत्यै नमः, नानाआभूषणं समर्पयामि।

सुगन्धिद्रव्यम्

ॐ त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्द्धनम्।
उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीयमाऽमृतात्॥
चन्दनागुरुकर्पूरैः संयुतं कुङ्कुमं तथा।
कस्तूर्यादिसुगन्धांश्च सर्वाङ्गेषु विलेपनम्॥
सर्वशक्तियुक्तायै श्रीधूमावत्यै नमः, सुगन्धिद्रव्यं समर्पयामि।

आवरणपूजनम्

ॐ संविन्मये परे देवि परामृतरसप्रिये।
अनुज्ञां देहि मातस्त्वं परिवारार्चनाय मे॥

इति पठित्वा पुष्पाञ्जलिं दद्यात्। इत्याज्ञां गृहीत्वा षट्कोणकेसरेषु आग्नेय्यादिचतुर्दिक्षु मध्ये दिक्षु च षडङ्गानि पूजयेत्। तद्यथा—ॐ धूं धूं हृदयाय नमः। हृदयश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः। इति सर्वत्र॥ १॥ ॐ धूं शिरसे स्वाहा। शिरःश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः॥ २॥ ॐ मां शिखायै वषट्। शिखाश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः॥ ३॥ ॐ वं नमः कवचाय हुं। कवचश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः॥ ४॥

ॐ तिं नेत्रत्रयाय वषट्। नेत्रत्रयश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ॥ ५ ॥
ॐ स्वाहा अस्त्राय फट्। अस्त्रश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ॥ ६ ॥
इति षडङ्गानि पूजयेत्। ततः पुष्पाञ्जलिमादाय मूलमुच्चार्य—

ॐ अभीष्टसिद्धिं मे देहि शरणागतवत्सले।
भक्त्या समर्पये तुभ्यं प्रथमावरणार्चनम्॥

इति पठित्वा पुष्पांजलिं च दत्त्वा पूजितास्तर्पिताः सन्तु इति वदेत्॥
इति प्रथमावरणम्॥

द्वितीयावरणार्चनम्—ततोऽष्टदले पूज्यपूजकयोरन्तराले प्राचीं तदनुसारेण अन्याः दिशः प्रकल्प्य प्राचीक्रमेण ॐ क्षुधायै नमः। क्षुधाश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ॥ १ ॥ ॐ तृष्णायै नमः। तृष्णाश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ॥ २ ॥ ॐ रत्यै नमः। रतिश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ॥ ३ ॥ ॐ निद्रायै नमः। निद्राश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ॥ ४ ॥ ॐ निर्ऋत्यै नमः। निर्ऋतिश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ॥ ५ ॥ ॐ दुर्गत्यै नमः। दुर्गतिश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ॥ ६ ॥ ॐ रुषायै नमः। रुषश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ॥ ७ ॥ ॐ अक्षमायै नमः। अक्षमाश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ॥ ८ ॥ इत्यष्टौ शक्तिः पूजयित्वा पुष्पाञ्जलिं दद्यात्। इति पूजयेत्।

ॐ अभीष्टसिद्धिं मे देहि शरणागतवत्सले।
भक्त्या समर्पये तुभ्यं द्वितीयावरणार्चनम्॥

पूर्व दिशायाम्—ॐ लं इन्द्राय नमः। इन्द्र श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः। आग्नेय कोणेषु—ॐ रं अग्नये तेजोऽधिपतये नमः। अग्नि श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः। दक्षिण दिशायाम्—ॐ मं यमाय नमः। यम श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः। नैर्ऋत्य कोणेषु—ॐ क्षं निर्ऋतिये नमः। निर्ऋति श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः। पश्चिम दिशायाम्—ॐ वं वरुणाय नमः। वरुण श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि

नमः ।वायव्य कोणेषु—ॐ यं वायवे नमः ।वायु श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः । उत्तर दिशायाम्—ॐ सं सोमाय नमः । सोम श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः । ईशान कोणेषु—ॐ हं ईशान्ये नमः । ईशान श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः । इन्द्र च ईशान मध्यभागे—ॐ आं ब्रह्मणे नमः । ब्रह्म श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः । वरुण च निर्ऋति मध्यभागे—ॐ ह्रीं अनन्ताय नमः । अनन्त श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।

तदुपरान्त इन्द्रादि दिक्पालों के पास उनके आयुधों का पूजन और तर्पण निम्न नाममंत्रों द्वारा करें—

इन्द्र समीपे—ॐ वं व्रजाय नमः । वज्र श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः । अग्नि समीपे—ॐ शं शक्तये नमः । शक्ति श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।यम समीपे—ॐ दं दण्डाय नमः ।दण्ड श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।निर्ऋति समीपे—ॐ खं खड्गाय नमः ।खड्ग श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः । वरुण समीपे—ॐ पां पाशाय नमः । पाश श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।वायु समीपे—ॐ अं अंकुशाय नमः । अंकुश श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः । सोम समीपे—ॐ गं गदाय नमः । गदा श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः । ईशान समीपे—ॐ शूं शूलाय नमः ।शूल श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः । ब्रह्मणे समीपे—ॐ पं पद्माय नमः ।पद्म श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।अनन्त समीपे—ॐ चं चक्राय नमः ।चक्र श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।इति पूजयेत्।

ॐ अभीष्टसिद्धिं मे देहि शरणागतवत्सले।
भक्त्या समर्पये तुभ्यं समस्तावरणार्चनम्।।

इति मन्त्रेण पुष्पाञ्जलिं दद्यात्।

द्वितीयावरणदेवताभ्यो नमः। (समस्तावरणदेवताभ्यो नमः) पुष्पाञ्जलिं समर्पयामि। अनया पूजया समस्तावरणदेवताः प्रीयन्तां न मम।

धूमावत्यष्टोत्तरशतनामभिस्तुलसी-दूर्वा-अक्षतादिभिः पूजयेत्

१. ॐ धूमावत्यै नमः।
२. ॐ धूम्रवर्णायै नमः।
३. ॐ धूम्रपानपरायणायै नमः।
४. ॐ धूम्राक्षमथिन्यै नमः।
५. ॐ धन्यायै नमः।
६. ॐ धन्यस्थाननिवासिन्यै नमः।
७. ॐ अघोराचारसन्तुष्टायै नमः।
८. ॐ अघोराचारमण्डितायै नमः।
९. ॐ अघोरमन्त्रसम्प्रीतायै नमः।
१०. ॐ अघोरमन्त्रपूजितायै नमः।
११. ॐ अट्टाट्टहासनिरतायै नमः।
१२. ॐ मलिनाम्बरधारिण्यै नमः।
१३. ॐ वृद्धायै नमः।
१४. ॐ विरूपायै नमः।
१५. ॐ विधवायै नमः।
१६. ॐ विद्यायै नमः।
१७. ॐ विरलद्विजायै नमः।
१८. ॐ प्रवृद्धघोणायै नमः।
१९. ॐ कुमुख्यै नमः।
२०. ॐ कुटिलायै नमः।
२१. ॐ कुटिलेक्षणायै नमः।
२२. ॐ कराल्यै नमः।
२३. ॐ करालास्यायै नमः।
२४. ॐ कङ्काल्यै नमः।
२५. ॐ शूर्पधारिण्यै नमः।
२६. ॐ काकध्वजरथारूढायै नमः।
२७. ॐ केवलायै नमः।
२८. ॐ कठिनायै नमः।
२९. ॐ कुह्वै नमः।
३०. ॐ क्षुत्पिपासार्दितायै नमः।
३१. ॐ नित्यायै नमः।
३२. ॐ ललज्जिह्वायै नमः।
३३. ॐ दिगम्बर्यै नमः।
३४. ॐ दिर्घोदर्यै नमः।
३५. ॐ दिर्घरवायै नमः।
३६. ॐ दिर्घाङ्ग्यै नमः।
३७. ॐ दीर्घमस्तकायै नमः।
३८. ॐ विमुक्तकुन्तलायै नमः।
३९. ॐ कीर्त्यायै नमः।
४०. ॐ कैलासस्थानवासिन्यै नमः।
४१. ॐ क्रूरायै नमः।
४२. ॐ कालस्वरूपायै नमः।
४३. ॐ कालचक्रप्रवर्तिन्यै नमः।
४४. ॐ विवर्णायै नमः।
४५. ॐ चञ्चलायै नमः।
४६. ॐ दुष्टायै नमः।
४७. ॐ दुष्टविध्वंसकारिण्यै नमः।
४८. ॐ चण्ड्यै नमः।
४९. ॐ चण्डस्वरूपायै नमः।
५०. ॐ चामुण्डायै नमः।
५१. ॐ चण्डनिःस्वनायै नमः।
५२. ॐ चण्डवेगायै नमः।

५३. ॐ चण्डगत्यै नमः।
५४. ॐ चण्डविनाशिन्यै नमः।
५५. ॐ मुण्डविनाशिन्यै नमः।
५६. ॐ चाण्डालिन्यै नमः।
५७. ॐ चित्ररेखायै नमः।
५८. ॐ चित्राङ्ग्यै नमः।
५९. ॐ चित्ररूपिण्यै नमः।
६०. ॐ कृष्णायै नमः।
६१. ॐ कपर्दिन्यै नमः।
६२. ॐ कुल्लायै नमः।
६३. ॐ कृष्णारूपायै नमः।
६४. ॐ क्रियावत्यै नमः।
६५. ॐ कुम्भस्तन्यै नमः।
६६. ॐ महोन्मत्तायै नमः।
६७. ॐ मदिरापानविह्वलायै नमः।
६८. ॐ चतुर्भुजायै नमः।
६९. ॐ ललज्जिह्वायै नमः।
७०. ॐ शत्रुसंहारकारिण्यै नमः।
७१. ॐ शवारूढायै नमः।
७२. ॐ शवगतायै नमः।
७३. ॐ श्मशानस्थानवासिन्यै नमः।
७४. ॐ दुराराध्यायै नमः।
७५. ॐ दुराचारायै नमः।
७६. ॐ दुर्जनप्रीतिदायिन्यै नमः।
७७. ॐ निर्मांसायै नमः।
७८. ॐ निराकारायै नमः।
७९. ॐ धूमहस्तायै नमः।
८०. ॐ वरान्वितायै नमः।
८१. ॐ कलहायै नमः।
८२. ॐ कलिप्रीतायै नमः।
८३. ॐ कलिकल्मषनाशिन्यै नमः।
८४. ॐ महाकालस्वरूपायै नमः।
८५. ॐ महाकालप्रपूजितायै नमः।
८६. ॐ महादेवप्रियायै नमः।
८७. ॐ मेधायै नमः।
८८. ॐ महासङ्कटनाशिन्यै नमः।
८९. ॐ भक्तप्रियायै नमः।
९०. ॐ भक्तगत्यै नमः।
९१. ॐ भक्तशत्रुविनाशिन्यै नमः।
९२. ॐ भैरव्यै नमः।
९३. ॐ भुवनायै नमः।
९४. ॐ भीमायै नमः।
९५. ॐ भारत्यै नमः।
९६. ॐ भुवनात्मिकायै नमः।
९७. ॐ भेरुण्डायै नमः।
९८. ॐ भीमनयनायै नमः।
९९. ॐ त्रिनेत्रायै नमः।
१००. ॐ बहुरूपिण्यै नमः।
१०१. ॐ त्रिलोकेश्यै नमः।
१०२. ॐ त्रिकालज्ञायै नमः।
१०३. ॐ त्रिस्वरूपायै नमः।
१०४. ॐ त्रयीतनवे नमः।
१०५. ॐ त्रिमूर्त्यै नमः।
१०६. ॐ तन्व्यै नमः।
१०७. ॐ त्रिशक्त्यै नमः।
१०८. ॐ त्रिशूलिन्यै नमः।

धूपम्

ॐ ब्राह्मणोऽस्य मुखमासीद् बाहू राजन्यः कृतः।
ऊरू तदस्य यद्वैश्यः पद्भ्यार्ठ० शूद्रोऽ अजायत॥
दशाङ्गगुग्गुलं धूपं चन्दनागुरुसंयुतम्।
समर्पितं मया भक्त्या महादेवि प्रगृह्यताम्॥
सर्वशक्तियुक्तायै श्रीधूमावत्यै नमः, धूपमाघ्रापयामि।

दीपम्

ॐ चन्द्रमा मनसो जातश्चक्षोः सूर्यो अजायत।
श्रोत्राद्वायुश्च प्राणश्च मुखादग्निरजायत॥
घृतवर्तिसमायुक्तं महातेजो महोज्ज्वलम्।
दीपं दास्यामि देवेशि सुप्रीता भव सर्वदा॥
सर्वशक्तियुक्तायै श्रीधूमावत्यै नमः, दीपं दर्शयामि। हस्त प्रक्षालनम्।

नैवेद्यम्

ॐ नाभ्या आसीदन्तरिक्षर्ठ० शीर्ष्णो द्यौः समवर्तत।
पद्भ्यां भूमिर्दिशः श्रोत्रात्तथा लोकाँ २॥ अकल्पयन्॥
अन्नं बहुविधं स्वादु रसैः षड्भिः समन्वितम्।
नैवेद्यं गृह्यतां देवि भक्तिं मे ह्यचलां कुरु॥
सर्वशक्तियुक्तायै श्रीधूमावत्यै नमः, नैवेद्यं निवेदयामि। मध्ये आचमनीयं जलं समर्पयामि। उत्तरापोशनार्थे पुनर्नैवेद्य निवेदयामि। हस्तप्रक्षालनार्थे मुखप्रक्षालनार्थे च जलं समर्पयामि। पुनराचमनीयं जलं समर्पयामि।

करोद्वर्त्तनम्

ॐ अर्ठ० शुनाते अर्ठ० शुः पृच्यतां परुषापरुः।
गन्धस्ते सोममवतु मदाय रसो अच्युतः॥

करोद्वर्त्तनकं देवि! सुगन्धैः परिवासितैः।
गृहीत्वा मे वरं देहि परत्र च परां गतिम्॥

सर्वशक्तियुक्तायै श्रीधूमावत्यै नमः, करोद्वर्त्तनार्थे गन्धं समर्पयामि।
हस्तप्रक्षालनार्थं जलं समर्पयामि।

ऋतुफलम्

ॐ याः फलिनीर्या अफला अपुष्पायाश्च पुष्पिणीः।
बृहस्पतिप्रसूतास्तानो मुञ्चन्त्वर्ठ० हसः॥
नारिकेलं च नारिङ्गं कलिङ्गं मञ्जिरं तथा।
उर्वारुकं च देवेशि फलान्येतानि गृह्यताम्॥

सर्वशक्तियुक्तायै श्रीधूमावत्यै नमः, ऋतुफलं समर्पयामि।

ताम्बूलम्

ॐ यत्पुरुषेण हविषा देवा यज्ञमतन्वत।
वसन्तोऽस्यासीदाज्यं ग्रीष्म इध्मः शरद्धविः॥
एला-लवङ्ग-कस्तूरी-कर्पूरैः पुष्पवासिताम्।
वीटिकां मुखवासार्थमर्पयामि परमेश्वरि॥

सर्वशक्तियुक्तायै श्रीधूमावत्यै नमः, मुखवासार्थं ताम्बूलं (पूगफल-एला-लवङ्गसहितम्) समर्पयामि।

दक्षिणाम्

ॐ हिरण्यगर्भः समवर्त्तताग्रे भूतस्य जातः पतिरेक आसीत्।
स दाधार पृथिवीं द्यामुतेमां कस्मै देवाय हविषा विधेम्॥
पूजाफलसमृद्ध्यर्थं तवाग्रे परमेश्वरि।
अर्पितं तेन मे प्रीता पूर्णान् कुरु मनोरथान्॥

सर्वशक्तियुक्तायै श्रीधूमावत्यै नमः, दक्षिणां समर्पयामि।

कर्पूरनीराजनम्

ॐ इदर्ठ० हविः प्रजननं मे अस्तु दशवीरर्ठ० सर्वगणर्ठ० स्वस्तये। आत्मसनि प्रजासनि पशुसनि लोकसन्यभयसनि। अग्निः प्रजां बहुलां मे करोत्वन्नं पयो रेतो अस्मासु धत्त॥

कर्पूरनिर्मितं दीपं स्वर्णपात्रे निवेशितम्।
नीराजनं मया दत्तं गृहाण परमेश्वरि॥
कर्पूरगौरं करुणावतारं संसारसारं भुजगेन्द्रहारम्।
सदा वसन्तं हृदयारविन्दे भवं भवानीसहितं नमामि॥

सर्वशक्तियुक्तायै श्रीधूमावत्यै नमः, कर्पूरनीराजनं समर्पयामि।

मन्त्रपुष्पाञ्जलिम्

ॐ यज्ञेन यज्ञमयजन्त देवास्तानि धर्माणि प्रथमान्यासन्।
ते ह नाकं महिमानः सचन्त यत्र पूर्वे साध्याः सन्ति देवाः॥

ॐ राजाधिराजाय प्रसह्य साहिने। नमो वयं वैश्रवणाय कुर्महे। स मे कामान् कामकामाय मह्यम्। कामेश्वरो वैश्रवणो ददातु। कुबेराय वैश्रवणाय महाराजाय नमः॥

ॐ स्वस्ति! साम्राज्यं भौज्यं स्वाराज्यं वैराज्यं पारमेष्ठ्यं राज्यं महाराज्यमाधिपत्यमयं समन्तपर्यायी स्यात्, सार्वभौमः सार्व्वायुष आन्तादापरार्धात्, पृथिव्यै समुद्रपर्यन्ताया एकराडिति॥

तदप्येष श्लोकोऽभिगीतो मरुतः परिवेष्टारो मरुत्तस्यावसन् गृहे। आविक्षितस्य कामप्रेर्विश्वेदेवाः सभासद इति॥

ॐ विश्वतश्चक्षुरुत विश्वतोमुखो विश्वतोबाहुरुत विश्वतस्पात्।
सं बाहुभ्यां धमति सम्पतत्रैर्द्यावाभूमी जनयन् देव एकः॥

नानासुगन्धयुक्तं च यथाकालोद्भवं तथा।
मया पुष्पाञ्जलिर्दत्ता गृहाण परमेश्वरि॥

ॐ धूमावत्यै च विद्महे संहारिण्यै च धीमहि। तन्नो धूमा प्रचोदयात्।

सर्वशक्तियुक्तायै श्रीधूमावत्यै नमः, मन्त्रपुष्पाजलिं समर्पयामि।

प्रदक्षिणाम्

ॐ ये तीर्थानि प्रचरन्ति सृकाहस्ता निषङ्गिणः।
तेषाꣳ सहस्रयोजनेऽव धन्वानि तन्मसि॥

कायवाङ्मानसं पापं यत्कृतं जन्मजन्मनि।
तन्मे नाशय देवि त्वं प्रदक्षिणविधानतः॥
यानि कानि च पापानि ज्ञाताज्ञातकृतानि च।
तानि सर्वाणि नश्यन्ति प्रदक्षिणापदे पदे॥

सर्वशक्तियुक्तायै श्रीधूमावत्यै नमः, प्रदक्षिणां समर्पयामि।

स्तुतिः

कल्पादौ या कालिकाद्याऽचीकलन्मधुकैटभौ।
कल्पान्ते त्रिजगत्सर्वं धूमावतीं भजामि ताम्॥ १॥
गुणागाराऽगम्यगुणा या गुणागुणवर्धिनी।
गीता वेदार्थतत्त्वज्ञैर्धूमावतीं भजामि ताम्॥ २॥
खट्वाङ्गधारिणी खर्वाखण्डिनी खलरक्षसाम्।
धारिणी खेटकस्यापि धूमावतीं भजामि ताम्॥ ३॥
घूर्णाघूर्णकरा घोरा घूर्णिताक्षी घनस्वना।
घातिनी घातकानां या धूमावतीं भजामि ताम्॥ ४॥
चर्वन्तीमस्थिखण्डानां चण्ड-मुण्डविदारिणीम्।
चण्डाट्टहासिनीं देवीं भजे धूमावतीमहम्॥ ५॥
छिन्नग्रीवां क्षताच्छन्नां छिन्नमस्तस्वरूपिणीम्।
छेदिनीं दुष्टसङ्घानां भजे धूमावतीमहम्॥ ६॥
जाता या याचिता देवैरसुराणां विघातिनी।
जल्पन्ती बहु गर्जन्ती भजे तां धूम्ररूपिणीम्॥ ७॥

सर्वशक्तियुक्तायै श्रीधूमावत्यै नमः, स्तुतिं समर्पयामि।

॥ इति धूमावतीपूजनम्॥

धूमावतीहवनविधिः

यजमान अपनी पत्नी के साथ हवनकुण्ड अथवा स्थण्डिल के पास आकर आसन पर पूर्वाभिमुख बैठे। निम्न मंत्र का उच्चारण करते हुए यजमान के मस्तक पर आचार्य तिलक करें—

ॐ स्वस्ति न इन्द्रो वृद्धश्रवाः स्वस्ति नः पूषा विश्ववेदाः।
स्वस्ति नस्तार्क्ष्यो अरिष्टनेमिः स्वस्ति नो बृहस्पतिर्दधातु॥

आचार्य निम्न तीन नामों का उच्चारण करते हुए यजमान से तीन बार आचमन करावें—**ॐ केशवाय नमः ॐ नारायणाय नमः ॐ माधवाय नमः।**

पुनः आचार्य **ॐ ऋषिकेशाय नमः, ॐ गोविन्दाय नमः।** का उच्चारण करके यजमान के दोनों हाथो को शुद्ध जल से धुलवायें।

आचार्य निम्न श्लोक का उच्चारण करके यजमान के ऊपर और हवन सामग्री की पवित्रता हेतु कुशा से जल छिड़कें—

ॐ अपवित्रः पवित्रो वा सर्वावस्थां गतोऽपि वा।
यः स्मरेत् पुण्डरीकाक्षं स बाह्याभ्यन्तरः शुचिः॥
ॐ पुण्डरीकाक्षः पुनातु, ॐ पुण्डरीकाक्षः पुनातु, ॐ पुण्डरीकाक्षः पुनातु।

आचार्य निम्न मंत्र का उच्चारण करके यजमान को कुशा की पवित्री धारण करवाके प्राणायाम करावें—**ॐ पवित्रे स्थो वैष्णव्यौ सवितुर्वः प्रसव उत्पुनाम्यच्छिद्रेण पवित्रेण सूर्यस्य रश्मिभिः॥ तस्य ते पवित्रपते पवित्र पूतस्य यत्कामः पुने तच्छकेयम्॥**

प्राणायाम के उपरान्त आचार्य और ब्राह्मण स्वस्तिवाचन के मंत्रों का उच्चारण करें।

हवनसङ्कल्पः

यजमानः स्वदक्षिणहस्ते जलाऽक्षत-द्रव्यं चादाय, सङ्कल्पं कुर्यात्—ॐ विष्णुर्विष्णुर्विष्णुः श्रीमद्भगवतो महापुरुषस्य विष्णोराज्ञया प्रवर्तमानस्य अद्य श्रीब्रह्मणोऽह्नि द्वितीयपरार्द्धे श्रीश्वेतवाराहकल्पे वैवस्वतमन्वन्तरे अष्टाविंशतितमे कलियुगे कलि-प्रथमचरणे जम्बूद्वीपे भरतखण्डे भारतवर्षे आर्यावर्तैकदेशे, अमुकक्षेत्रे अमुकनद्या अमुकतीरे विक्रमशके बौद्धावतारे अमुकनाम्नि संवत्सरे अमुकायने अमुकऋतौ महामाङ्गल्यप्रदमासोत्तमे मासे अमुकमासे अमुकपक्षे अमुकतिथौ अमुकवासरे अमुकनक्षत्रे अमुकयोगे अमुककरणे अमुकराशिस्थिते चन्द्रे अमुकराशिस्थिते सूर्ये अमुकराशिस्थिते देवगुरौ शेषेषु ग्रहेषु यथास्थानस्थितेषु सत्सु एवं गुणगणविशेषण-विशिष्टायां शुभपुण्यतिथौ अमुकगोत्रोऽमुकशर्माहं (वर्माऽहम्, गुप्तोऽहम्, दासोऽहम्) श्रीधूमावतीप्रीत्यर्थं मम इह जन्मनि जन्मान्तरे वा कृतानां कायिक-वाचिक-मानसिक-सांसर्गिक-सर्वविधपापानां निवृत्तिपूर्वकं दीर्घायु-रारोग्यप्राप्तिपूर्वकं पुत्रपौत्राद्यभिवृद्धिपूर्वकं धमार्थ-काम-मोक्ष चतुर्विध-पुरुषार्थसिद्ध्यर्थं हवनं करिष्ये।

एकतन्त्रेण वरणसंकल्पः

यजमानः स्वदक्षिणहस्ते जलाऽक्षत-द्रव्यं चादाय, सङ्कल्पं कुर्यात्—ॐ विष्णुर्विष्णुर्विष्णुः श्रीमद्भगवतो महापुरुषस्य विष्णोराज्ञया प्रवर्तमानस्य अद्य श्रीब्रह्मणोऽह्नि द्वितीयपरार्द्धे श्रीश्वेतवाराहकल्पे वैवस्वतमन्वन्तरे अष्टाविंशतितमे कलियुगे कलिप्रथमचरणे जम्बूद्वीपे भरतखण्डे भारतवर्षे आर्यावर्तैकदेशे, अमुकक्षेत्रे अमुकनद्या अमुकतीरे विक्रमशके बौद्धावतारे अमुकनाम्नि संवत्सरे अमुकायने अमुकऋतौ महामाङ्गल्यप्रदमासोत्तमे मासे

अमुकमासे अमुकपक्षे अमुकतिथौ अमुकवासरे अमुकनक्षत्रे अमुकयोगे अमुककरणे अमुकराशिस्थिते चन्द्रे अमुकराशिस्थिते सूर्ये अमुकराशिस्थिते देवगुरौ शेषेषु ग्रहेषु यथास्थानस्थितेषु सत्सु एवं गुणगणविशेषणविशिष्टायां शुभपुण्यतिथौ अमुकगोत्रोऽमुकशर्माहं (वर्माऽहम्, गुप्तोऽहम्, दासोऽहम्) अस्मिन् धूमावतीहवनकर्मणि एभिर्वरणद्रव्यैः नानानामगोत्रान् नानानामधेयान् शर्मणः आचार्यादि-ब्राह्मणान् युष्मान् वृणे।

अथाग्निस्थापनम्

ततः कुण्डे उपरि मेखलायां श्वेतवर्णालङ्कृतायां विष्णुं पूजयेत्। तद्यथा—ॐ इदं विष्णुर्विचक्रमे त्रेधा निदधे पदम्। समूढमस्यपार्ठ० सुरे स्वाहा॥ ॐ भूर्भुवः स्वः विष्णवे नमः, विष्णुमावाहयामि स्थापयामि॥

ततो मध्यमेखलायां रक्तवर्णालङ्कृतायां ब्रह्माणं पूजयेत्—ॐ ब्रह्म यज्ञानं प्रथमं पुरस्ताद्वि सीमतः सुरुचो वेन आवः। स बुध्न्या उपमा अस्य विष्ठाः सतश्च योनिमसतश्च विवः॥ ॐ भूर्भुवः स्वः ब्रह्मणे नमः, ब्रह्माणमावाहयामि स्थापयामि॥

तत अधोमेखलायां कृष्णवर्णालङ्कृतायां रुद्रं पूजयेत्—ॐ नमस्ते रुद्र मन्यव उतोत इषवे नमः। बाहुभ्यामुत ते नमः॥ ॐ भूर्भुवः स्वः रुद्राय नमः, रुद्रमावाहयामि स्थापयामि॥

ततो योन्यां रक्तवर्णालङ्कृतायां गौरीं पूजयेत्—ॐ अम्बेऽअम्बिके-ऽम्बालिके न मा नयति कश्चन। ससस्त्यश्वकः सुभद्रिकां काम्पीलवासिनीम्॥ ॐ भूर्भुवः स्वः गौर्यै नमः गौरीमावाहयामि स्थापयामि॥

कण्ठे—ॐ नीलग्रीवाः शितिकण्ठा दिवर्ठ० रुद्रा उपश्रिताः। तेषार्ठ० सहस्रयोजनेऽव धन्वानि तन्मसि॥ ॐ कण्ठे नमः कण्ठ-मावाहयामि स्थापयामि॥

नाभिम्—ॐ नाभिर्मे चित्तं विज्ञानं पायुर्मेऽपचितिर्भसत्। आनन्द-नन्दावाण्डौ मे भगः सौभाग्यं पसः। जङ्घाभ्यां पद्भ्यां धर्म्मोऽस्मि विशि राजा प्रतिष्ठितः॥ ॐ नाभ्यै नमः नाभिमावाहयामि स्थापयामि॥

ॐ विश्वकर्मन्हविषा वर्धनेन त्रातारमिन्द्रमकृणोरवध्यम्। तस्मै विशः समनमन्त पूर्वीरयमुग्रो विहव्यो यथासत्॥ ॐ भूर्भुवः स्वः विश्वकर्मणे नमः, विश्वकर्माणमावाहयामि स्थापयामि॥

तत आचार्यः अग्न्यायतनस्य पश्चात्प्राङ्मुखोपविश्याचम्य प्राणा-नायम्य देशकालौ संकीर्त्य, अमुकगोत्रः अमुकशर्माऽहं (वर्माऽहम्, गुप्तोऽहम्, दासोऽहम्) सपत्नीकोऽहं अस्मिन्सनवग्रहमखे धूमावती-हवनकर्मणि पंचभूसंस्कारपूर्वकं शतमङ्गलनामाग्निस्थापनं करिष्ये।

तत्र पञ्चभूसंस्कारः—दर्भैः परिसमूह्य तान्कुशानैशान्यां परित्यज्य। गोमयोदकाभ्यामुपलिप्य। स्फ्येन स्रुवमूलेन वा उल्लिख्य। उल्लेखन क्रमेणानामिकाङ्गुष्ठाभ्यां मृदमुद्धृत्य उदकेनाभ्युक्ष्य ततः कुण्डे सुवर्ण-खण्डं निक्षिप्य वस्त्रेणाच्छाद्य। इसके बाद अरणी प्रदान करें।

तद्यथा—स्मार्त्ताग्निसाधनभूते योनिरूपे इमे अरणी युवाभ्यां प्रतिगृह्यताम्। इयमधरा। इयमुत्तरा॥ ततो यजमानः तौ स्मार्ताग्निसाधनभूते इमे अरणी आवाभ्यां परिगृहाण॥ ततो ब्रह्मा॥ इदं चात्र॥ इदमोवलीं इदं नेत्रम्॥ इमानि स्रुवादीनि पात्राणि प्रतिगृहाण॥ ततो यजमानः इमानि स्रुवादीनि पात्राणि प्रतिगृह्णामि। पत्नी तु यजमानहस्तादधरारणिमंके निदधाति। यजमानोऽप्यंके उत्तरारणिं निदधाति। उभावप्यरण्योः पूजां कुरुतः। तद्यथा—प्राग्ग्रीवमुत्तरलोम कृष्णाजिनं कम्बलोपरि आस्तीर्य तस्योपरि उदगग्राम धरारणिं निधाय। तत्पूर्वं उत्तरारणिं च निधाय ॐ युवाभ्यामरणीभ्यां नमः इति संपूज्य। ततो अधरारण्यामुक्तप्रदेशे प्रमंथमूलं निधाय चात्राग्रे चोवलिमुदगग्रां च नेत्रेण चात्रं त्रिर्वेष्टयित्वा गाढं धृत्वा पश्चिमाभिमुखोपविष्टया पत्न्या

मंथयेत्। यावदग्नेरुत्पत्तिः। पत्न्या मंथनासामर्थ्ये अन्ये ब्राह्मणाः शुचयो मथ्नन्ति। एवं यजमानासामर्थ्ये अन्यो यंत्रं धारयति। ततो यातमग्निं मृण्मयपात्रे शुष्कगोमयचूर्णं नारिकेलजटां च स्थापयित्वा तस्मिन्पात्रे अग्निमाहृत्य वेणुनलिकया प्रज्वालयेत्। तत्र मन्त्राः—

ॐ समास्त्वाग्न ऋतवो वर्धयन्तु संवत्सरा ऋषयो यानि सत्या। सं दिव्येन दीदिहि रोचनेन विश्वा आभाहि प्रदिशश्चतस्त्रः॥ १॥ सं चेद्धयस्वाग्ने प्र च बोधयैनमुच्च तिष्ठ महते सौभगाय। मा च रिषदुपसत्ता ते अग्ने ब्रह्माणस्ते यशसः सन्तु मान्ये॥ २॥ त्वामग्ने वृणते ब्राह्मणा इमे शिवो अग्ने संवरणे भवा नः। सपत्नहा नो अभिमातिजिच्च स्वे गये जागृह्यप्रयुच्छन्॥ ३॥ इहैवाग्ने अधि धारया रयिं मा त्वा निक्रन्पूर्वचितो निकारिणः। क्षत्रमग्ने सुयममस्तु तुभ्यमुपसत्ता वर्धतां ते अनिष्टृतः॥ ४॥ क्षत्रेणाग्ने स्वायुः सर्ठ०रभस्व मित्रेणाग्ने मित्रधेये यतस्व। सजातानां मध्यमस्था एधि राज्ञामग्ने विहंव्यो दीदिहीह॥ ५॥ अति निहो अति स्त्रिधोऽत्यचित्तिमत्यरातिमग्ने। विश्वा ह्यग्ने दुरिता सहस्वाथास्मभ्यर्ठ० सहवीरार्ठ० रयिं दाः॥ ६॥ अनाधृष्यो जातवेदा अनिष्टृतो विराडग्ने क्षत्रभृद्दीदिहीह। विश्वा आशाः प्रमुञ्चन्मानुषीर्भियः शिवेभिरद्य परिपाहि नो वृधे॥ ७॥ बृहस्पते सवितर्बोधयैनर्ठ० सर्ठ०शितं चित्संतरार्ठ० सर्ठ०शिशाधि। वर्धयैनं महते सौभगाय विश्व एनमनुमदन्तु देवाः॥ ८॥ अमुत्रभूयादध यदद्यस्य बृहस्पते अभिशस्तेरमुञ्चः। प्रत्यौहतामश्विना मृत्युमस्ववाद्देवानामग्ने भिषजा शचीभिः॥ ९॥ उद्वयं तमसस्परि स्वः पश्यन्त उत्तरम्। देवं देवत्रा सूर्यमगन्म ज्योतिरुत्तमम्॥ १०॥ ऊर्ध्वा अस्य समिधो भवन्त्यूर्ध्वा शुक्रा शोचीर्ठ०ष्यग्नेः। द्युमत्तमा सुप्रतीकस्य सूनोः॥ ११॥ तनूनपादसुरो विश्ववेदा देवो देवेषु देवः। पथो अनक्तु मध्वा घृतेन॥ १२॥ मध्वा यज्ञं नक्षसे प्रीणानो नराशर्ठ०सो अग्ने। सुकृद्देवः सविता विश्ववारः॥ १३॥ अच्छायमेति शवसा घृतेनेडानो

वह्निर्नमसा। अग्निर्ठ० स्त्रुचो अध्वरेषु प्रत्यसु॥ १४॥ स यक्षदस्य महिमानमग्नेः स ई मन्द्रा सुप्रयसः। वसुश्चेतिष्ठो वसुधातमश्च॥ १५॥ द्वारो देवीरन्वस्य विश्वे व्रता ददन्ते अग्नेः। उरुव्यचसो धा पत्यमानाः॥ १६॥ ते अस्य योषणे दिव्ये न योना उषासानक्ता इमं यज्ञमवतामध्वरं नः॥ १७॥ दैव्या होतारा ऊर्ध्वमध्वरं नोऽग्नेर्जिह्वामभिगृणीतम्। कृणुतं नः स्विष्टिम्॥ १८॥ तिस्रो देवीर्बर्हिरेदर्ठ० सदन्त्विडा सरस्वती भारती। मही गृणाना॥ १९॥ तन्नस्तुरीपमद्भुतं पुरुक्षु त्वष्टा सुवीर्यम्। रायस्पोषं विष्यतु नाभिमस्मे॥ २०॥ वनस्पतेऽवसृजा रराणस्त्मना देवेषु। अग्निर्हव्यर्ठ० शमिता सूदयाति॥ २१॥ अग्ने स्वाहा कृणुहि जातवेद इन्द्राय हव्यम्। विश्वेदेवा हविरिदं जुषन्ताम्॥ २२॥ पीवोअन्ना रयिवृधः सुमेधाः श्वेतः सिषक्ति नियुतामभिश्रीः। ते वायवे समनसो वितस्थुर्विश्वेन्नरः स्वपत्यानि चक्रुः॥ २३॥ राये नु यं जज्ञतू रोदसीमे राये देवी धिषणा धाति देवम्। अध वायुं नियुतः सश्चतः स्वा उत श्वेतं वसुधिती निरेके॥ २४॥ आपो ह यद्बृहतीर्विश्वमायन्गार्भं दधाना जनयन्तीरग्निम्। ततो देवानार्ठ० समवर्ततासुरेकः कस्मै देवाय हविषा विधेम॥ २५॥ यश्चिदापो महिना पर्यपश्यद्दक्षं दधाना जनयन्तीर्यज्ञम्। यो देवेष्वधि देव एक आसीत्कस्मै देवाय हविषा विधेम॥ २६॥ प्र याभिर्यासि दाश्वार्ठ०समच्छा नियुद्भिर्वायविष्टये दुरोणे। नि रौ रयिर्ठ० सुभोजसं युवस्व नि वीरं गव्यमश्व्यं च राधः॥ २७॥ आ नो नियुद्भिः शतिनीभिरध्वरर्ठ० सहस्रिणीभिरुपयाहि यज्ञम्। वायो अस्मिन्सवने मादयस्व यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः॥ २८॥ नियुत्वान्वायवागह्ययर्ठ० शुक्रोअयामि ते। गन्तासि सुन्वतो गृहम्॥ २९॥ वायो शुक्रो अयामि ते मध्वो अग्रं दिविष्टिषु। आयाहि सोमपीतये स्पार्हो देव नियुत्वता॥ ३०॥ वायुरग्रेगा यज्ञप्रीः साकं गन्मनसा यज्ञम्। शिवो नियुद्भिः शिवाभिः॥ ३१॥ वायो ये ते सहस्रिणो रथासस्तेभिरागहि। नियुत्वान्सोमपीतये॥ ३२॥ एकया च दशभिश्च स्वभूते दाभ्यामिष्टये विर्ठ०शती च। तिसृभिश्च वहसे

त्रिर्ठ०शता च नियुद्भिर्वायविह ता विमुञ्च॥ ३३॥ तव वायवृतस्पते त्वष्टुर्जामातरद्भुत। अवार्ठ० स्यावृणीमहे॥ ३४॥ अभि त्वा शूर नोनुमोऽदुग्धा इव धेनवः। ईशानमस्य जगतः स्वर्दृशमीशानमिन्द्र तस्थुषः॥ ३५॥ न त्वावाँ२।। अन्यो दिव्ये न न पार्थिवो न जातो न जनिष्यते। अश्वायनतो मघवन्निन्द्र वाजिनो गव्यन्तस्त्वा हवामहे॥ ३६॥ त्वमिद्धि हवामहे सातौ वाजस्य कारवः। त्वां वृत्रेष्विन्द्र सत्पतिं नरस्त्वां काष्ठास्ववर्वतः॥ ३७॥ स त्वं नश्चित्र वज्रहस्त धृष्णुया महः स्तवानो अद्रिवः। गामश्वर्ठ० रथ्यमिन्द्र संकिर सत्रा वाजं न जिग्युषे॥ ३८॥ कया नश्चित्र आभुवदूती सदावृधः सखा। कया शचिष्ठयाऽवृता॥ ३९॥ कस्त्वा सत्यो मदानां मर्ठ०हिष्ठो मत्सदन्धसः। दृढा चिदारुजे वसु॥ ४०॥ अभी षु णः सखीनामविता जरितॄणाम्। शतं भवास्यूतये॥ ४१॥ यज्ञा यज्ञा वो अग्नये गिरा गिरा च दक्षसे। प्र प्र वयममृतं जातवेदसं प्रियं मित्रं न शर्ठ०सिषम्॥ ४२॥ पाहि नो अग्न एकया पाह्युत द्वितीयया। पाहि गीर्भिस्तिसृभिरूर्जां पते पाहि चतसृभिर्वसो॥ ४३॥ ऊर्जो नपातर्ठ० स हिनाऽयमस्मयुर्दाशेम हव्यदातये। भुवद्वजेष्ववित भुवद्‌वृध उत त्राता तनूनाम्॥ ४४॥ संवत्सरोऽसि परिवत्सरोऽसीदात्सरोऽसीद्वसरोऽसि वत्सरोऽसि। उषसस्ते कल्पन्तामहोरात्रास्ते कल्पन्तामर्धमासास्ते कल्पन्तां मासास्ते कल्पन्ता-मृतवस्ते कल्पन्तार्ठ० संवत्सरस्ते कल्पतात्। प्रेत्या एत्यै संचाञ्च प्र च सारय। सुपुर्णचिदसि तया देवतयाङ्गिरस्वद्ध्रुवः सीद॥ ४५॥

ततोऽग्निं कांस्यपात्रे धृत्वा कांस्यपात्रेणाच्छाद्य कुण्डाद्बहिराग्नेय्यां संस्थाप्य आचार्यस्तमग्निं गृहीत्वा आग्नेयकोणमार्गेण कुण्डमध्ये नीत्वा। ॐ अग्निं दूतं पुरोदधे हव्यवाहमुप ब्रुवे॥ देवाँ२॥ आसादयादिह। इति मन्त्रान्ते शतमङ्गलनामानमग्निमुपसमादधे इत्यग्निं स्वाभिमुखं निधाय। तत आचार्यः—ॐ चत्वारि शृङ्गा त्रयोऽअस्य पादाद्वेशीर्षे सप्तहस्ता-सोऽअस्य। त्रिधा बद्धो वृषभोरोरवीतिमहोदेवो मर्त्यांऽआविवेश॥ इति

मन्त्रेण अग्निमावाह्य। ॐ मनो जूतिर्जुषतामाज्यस्य बृहस्पतिर्यज्ञमिमं तनोत्वरिष्टं यज्ञठं० समिमं दधातु। विश्वेदेवास इह मादयन्तामों ३ँप्रतिष्ठ॥ इति मन्त्रेण प्रतिष्ठाप्य ध्यायेत्—

रक्त माल्याम्बरधरं रक्त पद्मासनस्थितम्।
स्वाहा स्वधा वषट्कारै रङ्कितं मेष वाहनम्॥
शतं मंगलकं रौद्रं वह्निमावाहयाम्यहम्।
त्वं मुखं सर्व देवानां सप्तार्चिर मितद्युते।
आगच्छ भगवन्नग्ने वेद्यामस्मिन् संनिधो भव॥

इति षोडशैरुपचारैरग्निं संपूजयेत्।

केवलं नामाऽनुक्रमेण ग्रहादिस्थापनम्

संकल्पः—देशकालौ सङ्कीर्त्य, अमुकगोत्रोऽमुकशर्माहम् (वर्माऽहम्, गुप्तोऽहम्, दासोऽहम्) अस्मिन् धूमावतीहवनकर्मणि सूर्यादिनवग्रहाणा-मधिदेवता - प्रत्यधिदेवता - पञ्चलोकपाल - दशदिक्पालानां चावाहनं स्थापनं पूजनं च करिष्ये।

नवग्रहस्थापनम्

ॐ भूर्भुवः स्वः कलिङ्गदेशोद्भव काश्यपगोत्र रक्तवर्ण भो सूर्य! इहागच्छ इह तिष्ठ ॐ सूर्याय नमः, सूर्यमावाहयामि स्थापयामि॥ १॥

ॐ भूर्भुवः स्वः यमुनातीरोद्भव आत्रेयगोत्र शुक्लवर्ण भो सोम! इहागच्छ इह तिष्ठ ॐ सोमाय नमः, सोममामावाहयामि स्थापयामि॥ २॥

ॐ भूर्भुवः स्वः अवन्तिकापुरोद्भव भरद्वाजगोत्र रक्तवर्ण भो भौम! इहागच्छ इह तिष्ठ ॐ भौमाय नमः, भौममावाहयामि स्थापयामि॥ ३॥

ॐ भूर्भुवः स्वः मगधदेशोद्भव आत्रेयगोत्र हरितवर्ण भो बुध! इहागच्छेह तिष्ठ ॐ बुधाय नमः, बुधमावाहयामि स्थापयामि॥ ४॥

ॐ भूर्भुवः स्वः सिन्धुदेशोद्भव आङ्गिरसगोत्र पीतवर्ण भो बृहस्पते! इहागच्छ इह तिष्ठ ॐ बृहस्पतये नमः, बृहस्पतिमावाहयामि स्थापयामि॥ ५॥

ॐ भूर्भुवः स्वः भोजकटदेशोद्भव भार्गवगोत्र शुक्लवर्ण भो शुक्र! इहागच्छ इह तिष्ठ ॐ शुक्राय नमः, शुक्रमावाहयामि स्थापयामि॥ ६॥

ॐ भूर्भुवः स्वः सौराष्ट्रदेशोद्भव काश्यपगोत्र कृष्णवर्ण भो शनैश्चर! इहागच्छ इह तिष्ठ ॐ शनैश्चराय नमः, शनिश्चरमावाहयामि स्थापयामि॥ ७॥

ॐ भूर्भुवः स्वः वैराठिनपुरोद्भव पैठीनसिगोत्र कृष्णवर्ण भो राहो! इहागच्छ इह तिष्ठ ॐ राहवे नमः, राहुमावाहयामि स्थापयामि॥ ८॥

ॐ भूर्भुवः स्वः अन्तर्वेदिसमुद्भव जैमिनिगोत्रे धूम्रवर्ण भो केतो! इहागच्छ इह तिष्ठ ॐ केतवे नमः, केतुमावाहयामि स्थापयामि॥ ९॥

अधिदेवतास्थापनम्

ततो ग्रहदक्षिणपार्श्वेऽधिदेवतास्थापनं कुर्यात्—

ॐ भूर्भुवः स्वः ईश्वर इहागच्छ इह तिष्ठ ॐ ईश्वराय नमः, ईश्वरमावाहयामि स्थापयामि॥ १॥

ॐ भूर्भुवः स्वः उमेहागच्छ इह तिष्ठ ॐ उमायै नमः, उमामावाहयामि स्थापयामि॥ २॥

ॐ भूर्भुवः स्वः स्कन्देहागच्छ इह तिष्ठ ॐ स्कन्दाय नमः, स्कन्दमावाहयामि स्थापयामि॥ ३॥

ॐ भूर्भुवः स्वः विष्णो इहागच्छ इह तिष्ठ ॐ विष्णवे नमः, विष्णुमावाहयामि स्थापयामि॥ ४॥

ॐ भूर्भुवः स्वः ब्रह्मन् इहागच्छ इह तिष्ठ ॐ ब्रह्मणे नमः, ब्रह्माणमावाहयामि स्थापयामि॥ ५॥

ॐ भूर्भुवः स्वः इन्द्रेहागच्छ इह तिष्ठ ॐ इन्द्राय नमः, इन्द्रमावाहयामि स्थापयामि ॥ ६ ॥

ॐ भूर्भुवः स्वः यम इहागच्छ इह तिष्ठ ॐ यमाय नमः, यममावाहयामि स्थापयामि ॥ ७ ॥

ॐ भूर्भुवः स्वः कालेहागच्छ इह तिष्ठ ॐ कालाय नमः, कालमावाहयामि स्थापयामि ॥ ८ ॥

ॐ भूर्भुवः स्वः चित्रगुप्तेहागच्छ इह तिष्ठ ॐ चित्रगुप्ताय नमः चित्रगुप्त-मावाहयामि स्थापयामि ॥ ९ ॥

प्रत्यधिदेवतास्थापनम्

ततो ग्रहवामपार्श्वेप्रत्यधिदेवतास्थापनं कुर्यात्—

ॐ भूर्भुवः स्वः अग्ने इहागच्छ इह तिष्ठ ॐ अग्नये नमः, अग्नि-मावाहयामि स्थापयामि ॥ १ ॥

ॐ भूर्भुवः स्वः अप इहाऽऽगच्छत इह तिष्ठत ॐ अद्भ्यो नमः, अपआवाहयामि स्थापयामि ॥ २ ॥

ॐ भूर्भुवः स्वः पृथ्वी इहागच्छ इह तिष्ठ ॐ पृथिव्यै नमः, पृथिवी-मावाहयामि स्थापयामि ॥ ३ ॥

ॐ भूर्भुवः स्वः विष्णो इहागच्छ इह तिष्ठ ॐ विष्णवे नमः, विष्णुमावाहयामि स्थापयामि ॥ ४ ॥

ॐ भूर्भुवः स्वः इन्द्रेहागच्छ इह तिष्ठ ॐ इन्द्राय नमः, इन्द्रमावाहयामि स्थापयामि ॥ ५ ॥

ॐ भूर्भुवः स्वः इन्द्राणि इहागच्छेह तिष्ठ ॐ इन्द्राण्यै नमः, इन्द्राणीमावाहयामि स्थापयामि ॥ ६ ॥

ॐ भूर्भुवः स्वः प्रजापते इहागच्छेह तिष्ठ ॐ प्रजापतये नमः, प्रजापतिमावाहयामि स्थापयामि ॥ ७ ॥

ॐ भूर्भुवः स्वः सर्पा इहागच्छ इह तिष्ठ ॐ सर्पेभ्यो नमः, सर्पानामावाहयामि स्थापयामि॥ ८॥

ॐ भूर्भुवः स्वः ब्रह्मन् इहागच्छेह तिष्ठ ॐ ब्रह्मणे नमः, ब्रह्माण-मावाहयामि स्थापयामि॥ ९॥

पंचलोकपालादिस्थापनम्

ततो विनायकादिपञ्चलोकपालदेवता वास्तोष्पतिं क्षेत्रपालं चाऽऽवाहयेत्—

ॐ भूर्भुवः स्वः गणपते इहागच्छेह तिष्ठ ॐ गणपतये नमः, गणपति-मावाहयामि स्थापयामि॥ १॥

ॐ भूर्भुवः स्वः दुर्गे इहागच्छेह तिष्ठ ॐ दुर्गायै नमः, दुर्गामावाहयामि स्थापयामि॥ २॥

ॐ भूर्भुवः स्वः वायो इहागच्छेह तिष्ठ ॐ वायवे नमः, वायुमावाहयामि स्थापयामि॥ ३॥

ॐ भूर्भुवः स्वः आकाश इहागच्छेह तिष्ठ ॐ आकाशाय नमः, आकाशमावाहयामि स्थापयामि॥ ४॥

ॐ भूर्भुवः स्वः अश्विनौ इहागच्छतां इह तिष्ठतां ॐ अश्विभ्यां नमः, अश्विनौ आवाहयामि स्थापयामि॥ ५॥

ॐ भूर्भुवः स्वः वास्तोष्पते इहागच्छेह तिष्ठ ॐ वास्तोष्पतये नमः, वास्तोष्पतिमावाहयामि स्थापयामि॥ ६॥

ॐ भूर्भुवः स्वः क्षेत्राधिपतये इहागच्छेह तिष्ठ ॐ क्षेत्राधिपतये नमः, क्षेत्राधिपतिमावाहयामि स्थापयामि॥ ७॥

दशदिक्पालस्थापनम्

ततो मण्डलाद् बहिःदशदिक्पालानामावाहनं कुर्यात्—

ॐ भूर्भुवः स्वः इन्द्र इहागच्छ इह तिष्ठ ॐ इन्द्राय नमः, इन्द्रमावाहयामि स्थापयामि॥ १॥

ॐ भूर्भुवः स्वः अग्ने इहागच्छेह तिष्ठ ॐ अग्नये नमः, अग्निमावाहयामि स्थापयामि॥ २॥

ॐ भूर्भुवः स्वः यम इहागच्छेह तिष्ठ ॐ यमाय नमः, यममावाहयामि स्थापयामि॥ ३॥

ॐ भूर्भुवः स्वः निर्ऋते इहागच्छेह तिष्ठ ॐ निर्ऋतये नमः, निर्ऋतिमावाहयामि स्थापयामि॥ ४॥

ॐ भूर्भुवः स्वः वरुण इहागच्छेह तिष्ठ ॐ वरुणाय नमः, वरुणमावाहयामि स्थापयामि॥ ५॥

ॐ भूर्भुवः स्वः वायो इहागच्छेह तिष्ठ ॐ वायवे नमः, वायुमावाहयामि स्थापयामि॥ ६॥

ॐ भूर्भुवः स्वः सोमेहागच्छेह तिष्ठ ॐ सोमाय नमः, सोममावाहयामि स्थापयामि॥ ७॥

ॐ भूर्भुवः स्वः इशानेहागच्छेह तिष्ठ ॐ ईशानाय नमः, ईशानमावाहयामि स्थापयामि॥ ८॥

पूर्वेशानयोर्मध्ये—ॐ भूर्भुवः स्वः ब्रह्मन् इहागच्छेह तिष्ठ ॐ ब्रह्मणे नमः, ब्रह्माणं आवाहयामि स्थापयामि॥ ९॥

निर्ऋति-पश्चिमयोर्मध्ये—ॐ भूर्भुवः स्वः अनन्तेहागच्छेह तिष्ठ ॐ अनन्ताय नमः, अनन्तमावाहयामि स्थापयामि॥ १०॥

आचार्य आगे दिए हुए मंत्र और पौराणिक श्लोक का उच्चारण करते हुए यजमान से अक्षत छोड़वाकर प्रतिष्ठा करावें।

ॐ मनो जूतिर्जुषतामाज्यस्य बृहस्पतिर्यज्ञमिमं तनोत्वरिष्टं यज्ञꣳ समिमं दधातु। विश्वेदेवास इह मादयन्तामोंऽप्रतिष्ठ॥

अस्यै प्राणाः प्रतिष्ठन्तु अस्यै प्राणाः क्षरन्तु च।
अस्यै देवत्वमर्चायै मामहेति च कश्चन॥

ॐ सूर्याद्यनन्तदेवताः सुप्रतिष्ठिताः वरदाः भवन्तु। 'सूर्याद्यनन्त-देवताभ्यो नमः' इति षोडशोपचारैः सम्पूजयेत्।

आचार्य निम्न मंत्र और पौराणिक श्लोक का उच्चारण करते हुए यजमान से प्रार्थना करावें—

ॐ ग्रहा ऽऊर्जाहुतयो व्यन्तो विप्राय मतिम्। तेषां विशिप्रियाणां वोऽहमिषमूर्ज्जꣳ समग्रभमुपयामगृहीतोऽसीन्द्राय त्त्वा जुष्टं गृह्णाम्येष ते योनिरिन्द्राय त्त्वा जुष्टतमम्॥

ब्रह्मा मुरारिस्त्रिपुरान्तकारी भानुः शशी भूमिसुतो बुधश्च।
गुरुश्च शुक्रः शनि-राहु-केतवः सर्वे ग्रहाः शान्ति करा भवन्तु॥
अनया पूजया सूर्याद्यनन्तदेवताः प्रीयन्ताम्।

असङ्ख्यात रुद्रकलश स्थापनं पूजनं च

तदनन्तर ग्रहमण्डल के ईशानकोण में पहले बताई गई कलशस्थापन-विधि के द्वारा असङ्ख्यात रुद्र के कलश की स्थापना करवाकर उसमें वरुण और असङ्ख्यात रुद्र का निम्न मंत्र द्वारा यजमान से पूजन करावें—

ॐ असङ्ख्याता सहस्राणि ये रुद्रा ऽअधि भूम्याम्। तेषाꣳ सहस्रयोजनेऽव धन्वानि तन्मसि॥ ॐ भूर्भुवः स्व असङ्ख्यातरुद्रेभ्यो नमः असङ्ख्यातरुद्रानामावाहयामि स्थापयामि। ॐ मनो जूतिर्जुषता-माज्यस्य बृहस्पतिर्यज्ञमिमं तनोत्वरिष्टं यज्ञꣳ समिमं दधातु। विश्वेदेवास इह मादयन्तामों ऽप्रतिष्ठ॥ इति मन्त्रेण प्रतिष्ठाप्य 'ॐ असङ्ख्यातरुद्रेभ्यो नमः' इति लब्धोपचारेण सम्पूजयेत्।

केवलं नामाऽनुक्रमेण योगिनीस्थापनम्

जिस स्थान में हवनकुण्ड का निर्माण किया गया हो, उस स्थान में आचार्य एक हाथ चौड़ी वेदी पर परिखायुक्त वेदी पर लालवस्त्र से वेदी को ढककर उस पर नौ-नौ रेखाएँ पूर्व से पश्चिम, उत्तर से दक्षिण की ओर देवें। पुनः चौसठ खानों में चतुष्टीपद योगिनी के बनेगे, जिनमें रंगीन अक्षत भर कर योगिनी का आवाहन होगा।

तदुपरान्त स्वस्तिवाचन के मन्त्रों की आवृति से मध्य में तीन कलश स्थापित कर महाकाली, महालक्ष्मी, महासरस्वती का आवाहन कर पूजन करें, योगिनी वेदी के समीप बैठकर आचार्य निम्न संकल्प यजमान से करावें—

देशकालौ सङ्कीर्त्य, अमुक गोत्रः अमुकशर्माऽहं (वर्माऽहं, गुप्तोऽहं, दासोऽहं) अस्य धूमावतीहवनकर्मणः समृद्ध्ये महाकाली-महालक्ष्मी-महासरस्वतीसहितानां चतुःषष्टियोगिनीनां पूजनं करिष्ये।

उपरोक्त संकल्प के पश्चात् महाकाली की प्रतिमा योगिनी की प्रतिमा में '**ॐ अश्मन्नूर्जम्०**' इस वाक्य के द्वारा अग्न्युत्तारण करके प्रतिमा को यथास्थान स्थापित कर आवाहनादि करें—

ॐ अम्बेअम्बिकेऽम्बालिके नमानयति कश्चन। ससस्त्य-श्वकः सुभद्रिकां काम्पीलवासिनीम्॥ १॥ ॐ श्रीश्चते लक्ष्मीश्च पत्न्यावहोरात्रे पार्श्वे नक्षत्राणि रूपमश्विनौ व्यात्तम्। इष्णन्निषाणामुं म इषाण सर्वलोकं म इषाण॥ २॥ ॐ पावका नः सरस्वती वाजेभिर्वाजिनीवती। यज्ञं वष्टु धियावसुः॥ ३॥ इति मन्त्रावावर्तनीयौ।

ॐ गजाननायै नमः गजाननामावाहयामि स्थापयामि॥ १॥
ॐ सिंहमुख्यै नमः सिंहमुखीमावाहयामि स्थापयामि॥ २॥
ॐ गृध्रास्यायै नमः गृध्रास्यामावाहयामि स्थापयामि॥ ३॥

ॐ काकतुण्डिकायै नमः काकतुण्डिकामावाहयामि स्थापयामि॥ ४ ॥
ॐ उष्ट्रग्रीवायै नमः उष्ट्रग्रीवामावाहयामि स्थापयामि॥ ५ ॥
ॐ हयग्रीवायै नमः हयग्रीवामावाहयामि स्थापयामि॥ ६ ॥
ॐ वाराह्यै नमः वाराहीमावाहयामि स्थापयामि॥ ७ ॥
ॐ शरभाननायै नमः शरभाननामावाहयामि स्थापयामि॥ ८ ॥
ॐ उलूकिकायै नमः उलूकिकामावाहयामि स्थापयामि॥ ९ ॥
ॐ शिवारावायै नमः शिवारावामावाहयामि स्थापयामि॥ १०॥
ॐ मयूरायै नमः मयूरामावाहयामि स्थापयामि॥ ११॥
ॐ विकटाननायै नमः विकटाननामावाहयामि स्थापयामि॥ १२॥
ॐ अष्टवक्त्रायै नमः अष्टवक्त्रामावाहयामि स्थापयामि॥ १३॥
ॐ कोटराक्ष्यै नमः कोटराक्षीमावाहयामि स्थापयामि॥ १४॥
ॐ कुब्जायै नमः कुब्जामावाहयामि स्थापयामि॥ १५॥
ॐ विकटलोचनायै नमः विकटलोचनामावाहयामि स्थापयामि॥ १६॥
ॐ शुष्कोदर्यै नमः शुष्कोदरीमावाहयामि स्थापयामि॥ १७॥
ॐ ललज्जिह्वायै नमः ललज्जिह्वामावाहयामि स्थापयामि॥ १८॥
ॐ श्वदंष्ट्रायै नमः श्वदंष्ट्रामावाहयामि स्थापयामि॥ १९॥
ॐ वानराननायै नमः वानराननामावाहयामि स्थापयामि॥ २०॥
ॐ ऋक्षाक्ष्यै नमः ऋक्षाक्षीमावाहयामि स्थापयामि॥ २१॥
ॐ केकराक्ष्यै नमः केकराक्षीमावाहयामि स्थापयामि॥ २२॥
ॐ बृहत्तुण्डायै नमः बृहत्तुण्डामावाहयामि स्थापयामि॥ २३॥
ॐ सुरप्रियायै नमः सुरप्रियामावाहयामि स्थापयामि॥ २४॥
ॐ कपालहस्तायै नमः कपालहस्तामावाहयामि स्थापयामि॥ २५॥
ॐ रक्ताक्ष्यै नमः रक्ताक्षीमावाहयामि स्थापयामि॥ २६॥
ॐ शुष्क्यै नमः शुष्कीमावाहयामि स्थापयामि॥ २७॥

ॐ श्येन्यै नमः शेनीमावाहयामि स्थापयामि ॥ २८ ॥
ॐ कपोतिकायै नमः कपोतिकामावाहयामि स्थापयामि ॥ २९ ॥
ॐ पाशहस्तायै नमः पाशहस्तामावाहयामि स्थापयामि ॥ ३० ॥
ॐ दण्डहस्तायै नमः दण्डहस्तमावाहयामि स्थापयामि ॥ ३१ ॥
ॐ प्रचण्डायै नमः प्रचण्डामावाहयामि स्थापयामि ॥ ३२ ॥
ॐ चण्डविक्रमायै नमः चण्डविक्रमावाहयामि स्थापयामि ॥ ३३ ॥
ॐ शिशुघ्न्यै नमः शिशुघ्नीमावाहयामि स्थापयामि ॥ ३४ ॥
ॐ पापहन्त्र्यै नमः पाहन्त्रीमावाहयामि स्थापयामि ॥ ३५ ॥
ॐ काल्यै नमः कालीमावाहयामि स्थापयामि ॥ ३६ ॥
ॐ रुधिरपायिन्यै नमः रुधिरपायिनीमावाहयामि स्थापयामि ॥ ३७ ॥
ॐ वसाधयायै नमः वसाधयामावाहयामि स्थापयामि ॥ ३८ ॥
ॐ गर्भभक्षायै नमः गर्भक्षामावाहयामि स्थापयामि ॥ ३९ ॥
ॐ शवहस्तायै नमः शवहस्तामावाहयामि स्थापयामि ॥ ४० ॥
ॐ आन्त्रमालिन्यै नमः आन्त्रमालिनीमावाहयामि स्थापयामि ॥ ४१ ॥
ॐ स्थूलकेश्यै नमः स्थूलकेशीमावाहयामि स्थापयामि ॥ ४२ ॥
ॐ बृहत् कुक्ष्यै नमः बृहत्कुक्षीमावाहयामि स्थापयामि ॥ ४३ ॥
ॐ सर्पास्यायै नमः सर्पास्यामावाहयामि स्थापयामि ॥ ४४ ॥
ॐ प्रेतवाहिन्यै नमः प्रेतवाहिनीमावाहयामि स्थापयामि ॥ ४५ ॥
ॐ दन्तशूककरायै नमः दन्तशूककरामावाहयामि स्थापयामि ॥ ४६ ॥
ॐ क्रौञ्च्यै नमः क्रौञ्चीमावाहयामि स्थापयामि ॥ ४७ ॥
ॐ मृगशीर्षायै नमः मृगशीर्षामावाहयामि स्थापयामि ॥ ४८ ॥
ॐ वृषवाहिन्यै नमः वृषवाहिनामावाहयामि स्थापयामि ॥ ४९ ॥
ॐ व्यात्तास्यायै नमः व्यात्तास्यामावाहयामि स्थापयामि ॥ ५० ॥
ॐ धूमविश्वासायै नमः धूमविश्वासामावाहयामि स्थापयामि ॥ ५१ ॥

ॐ व्योमैकचरणोर्ध्वदृशे नमः व्योमैकचरणोर्ध्वदृशमा० स्था० ॥ ५२ ॥
ॐ तापिन्यै नमः तापिनीमावाहयामि स्थापयामि ॥ ५३ ॥
ॐ शोषणीदृष्ट्यै नमः शोषणीदृष्टिमावाहयामि स्थापयामि ॥ ५४ ॥
ॐ कोटर्यै नमः कोटरीमावाहयामि स्थापयामि ॥ ५५ ॥
ॐ स्थूलनासिकायै नमः स्थूलनासिकामावाहयामि स्थापयामि ॥ ५६ ॥
ॐ विद्युत्प्रभायै नमः विद्युतप्रभामावाहयामि स्थापयामि ॥ ५७ ॥
ॐ बलाकास्यायै नमः बलाकास्यामावाहयामि स्थापयामि ॥ ५८ ॥
ॐ मार्जार्यै नमः मार्जारीमावाहयामि स्थापयामि ॥ ५९ ॥
ॐ कटपूतनायै नमः कटपूतनामावाहयामि स्थापयामि ॥ ६० ॥
ॐ अट्टाट्टहासायै नमः अट्टाट्टहासामावाहयामि स्थापयामि ॥ ६१ ॥
ॐ कामाक्ष्यै नमः कामाक्षीमावाहयामि स्थापयामि ॥ ६२ ॥
ॐ मृगाक्ष्यै नमः मृगाक्षीमावाहयामि स्थापयामि ॥ ६३ ॥
ॐ मृगलोचनायै नमः मृगलोचनामावाहयामि स्थापयामि ॥ ६४ ॥

ॐ मनो जूतिर्जुषतामाज्यस्य बृहस्पतिर्यज्ञमिमं तनोत्वरिष्टं यज्ञर्ठ० समिमं दधातु। विश्वेदेवास इह मादयन्तामो ँ३। प्रतिष्ठ॥

तदुपरान्त आचार्य निम्न श्लोक और वाक्य द्वारा यजमान से प्रार्थना करावें—

ॐ सम्पूजिता मयादेव्यो योगिन्यः सगणाः शुभा।
मम यज्ञन्तु निर्विघ्नं कुर्वन्तु गणक्षेत्रपैः॥

ततः साङ्गाः सपरिवाराः सायुधाः सशक्तिकाः सवाहनाः दिव्यादिचतुः षष्टियोगिन्यः सुप्रतिष्ठिताः वरदा भवन्तु

चतुर्वेदोक्तादिमन्त्रैर्योगिनीस्थापनम्

१- ऋग्वेद—तमीशानं जगतस्तस्थुषस्पतिं धियंजिन्वमवसे हूमहे वयम्। पूषा नो यथा वेदसामसद् वृधे रक्षिता पायुरदब्धः स्वस्तये॥ १॥ यजुर्वेद—तमीशानं जगतस्तस्थुषस्पतिं धियञ्जिन्वमवसे हूमहे वयम्। पूषा नो यथा वेदसामसद् वृधे रक्षिता पायुरदब्धः स्वस्तये॥ २॥ (सामवेद) आवो राजा॥ नमध्व। रस्यरुद्राम्। हो। ता। राम्। स। त्ययजाइम्। रोदसीयोः अग्निंपु। रा। तनयि। त्नोरचित्तात्। हिरण्य। रू॥ पा ३ मव। सा ३४३ इ॥ ३॥ अथर्ववेद—ईशां वो मरुतो देव आदित्यो ब्रह्मणस्पतिः। ईशां वा इन्द्रश्चाग्निश्च धाता मित्रः प्रजापतिः। ईशां व ऋषयश्चक्रुरमित्रेषु समीक्षयन् रदिते अर्बुदे तव॥ ४॥ एह्येहि यज्ञेऽत्र गजानने त्वं सिन्दूरवर्णे गणपेऽनुकूले। रक्ताम्बरे रक्तविलोचने च गृहाण पूजां वरदे नमस्ते॥ गजाननायै नमः गजाननामावाहयामि स्थापयामि॥ ५॥

२- ऋग्वेद—ब्रह्मा देवानां पदवीः कवीना मृपिर्विप्राणां महिषो मृगाणाम्। श्येनो गृध्राणां स्वधितिर्वनानां सोमः पवित्रमत्येति रेभन्॥ १॥ यजुर्वेद—आ ब्रह्मन्ब्राह्मणो ब्रह्मवर्चसी जायतामा राष्ट्रे राजन्यः शूरऽइषव्योऽतिव्याधी महारथो जायतान्दोग्ध्री धेनुर्वोढान- ड्वानाशुः सप्तिः पुरन्धिर्योषा जिष्णू रथेष्ठाः सभेयो युवास्य यजमानस्य वीरो जायतान्निकामे निकामेनः पर्जन्यो वर्षतु फलवत्यो न ऽओषधयः पच्यन्तां योगक्षेमो नः कल्पताम्॥ २॥ (सा०) ब्रह्मा। ब्रा २३ ह्या। जज्ञानं प्रथमं पुरस्तात्॥ विसाइ। वा २३ इसी। मतः सुरुचोवेन आवः। सबू। सा२३ बू। न्धिया उपमा अस्य वा इष्ठाः॥ सताः। सा २३ ताः। चयोनिमसतश्च वा इ वा ३४३। ओ २३४५ इ॥ डा॥ ३॥ स्वधितिर्वनानां सोमः पवित्रमत्येति रेभन्॥ अथर्ववेदं—ब्रह्म जज्ञानं प्रथमं पुरस्ताद्वि सीमतः सुरुचो वेन आवः। स बुध्न्याऽउपमा अस्य विष्ठाः सतश्च योनिमसतश्च वि वः ॥ ४॥ आवाहये सिंहमुखीं सुरूपां सर्वार्तिहन्त्रीं

सकलार्थदात्रीम्। विद्युन्निभां सर्वजगत्प्रणम्यां रक्षाध्वरं नो वरदे नमस्ते॥ सिंहमुख्ये नमः सिंहमुखीमावाहयामि स्थापयामि॥ ५॥

३- ऋग्वेद—महाँ इन्द्रो य ओजसा पर्जन्यो वृष्टिमाँ इव। स्तोमैर्वत्सस्य वावृधे॥ १॥ यजुर्वेद—महाँ२॥ इन्द्रो य ओजसा पर्जन्यो वृष्टिमाँ२॥ इव। स्तोमैर्वत्सस्य वावृधे। उपयामगृहीतोऽसि महेन्द्राय त्वैष ते योनिर्महेन्द्राय त्वा॥ २॥ (सा.) इन्द्र हाउ। इा हो इ। पर्वता बृहता रथा २ इना २३ वा ३। ऊ ३४ पा॥ वामीर्हा उ। हा हो इ। इष आ वह तूँ सुवा २ इ रा २३ उवा ३। ऊ ३४ पर॥ वीत् ः हाउ। हा हो इ। हव्यानध्वरे सुदा २ इ वा २ उवा ३॥ ऊ ३४ पा० वर्द्धा हा उ। हा हा थांगीर्भिरिडयामदा २० ता २ उवा ३॥ ऊ ३२३४ पा॥ ३॥ (अ०) महाँ इन्द्रो य ओजसा पर्जन्यो वृष्टिमाँ इव। स्तोमैर्वत्सस्य वावृधे॥ ४॥ एह्येहि गृध्रास्य इहामरेशि प्रचण्डदैतेय विमर्दने त्वम्। कुरु प्रसाद मयि देवि मातः पूजा त्वदर्था रचित्वा परैयन्॥ गृध्रास्यायै नमः गृध्रास्यामावाहयामि स्थापयामि॥ ५॥

४- ऋग्वेद—कद् रुद्राय प्रचेतसे मीह्लष्टमाय तव्यसे। वोचेम शंतमं हृदे॥ १॥ यजुर्वेद—सद्योजातो व्यमिमीत यज्ञमग्निर्देवा-नामभवत्पुरोगाः। अस्य होतुः प्रदिश्यृतस्य वाचि स्वाहा कृतर्ठ० हविरदन्तु देवाः॥ २॥ (सा.) तद्वौहोवा॥ गाया २ सुताइसा २३४ चा। पुरुहूता। यसात्वा १ ना २ इ॥ शंयत्। हा। औ ३ होई। गा २२४ वा इ॥ ना २ शा २३४ औ हो वा॥ ए ३। किने २३४५॥ ३॥ (अ.) देवस्य सवितुः सवे कर्म कृण्वन्तु मानुषाः। शं नो भवन्त्वप ओषधीः शिवा॥ ४॥ आवाहये त्वामिह काकतुण्डै यज्ञ चतुर्वेद भवे सदैव। कोष्ठे तुरीये वसति विधत्स्व पूजां तवाहं विद्रधे विनम्रः॥ काक-तुण्डिकायै नमः काकतुण्डिकामावाहयामि स्थापयामि॥ ५॥

५- (ऋ०) वपुर्नु तच्चिकितुषे चिदस्तु समानं नाम धेनु पत्यमानम्। मर्तेष्वन्यद् दोहसे पीपाय सकृच्छुक्रं दुदुहे पृश्निरूधः॥ १॥

(य०) आदित्यं गर्भं पयसा समङ्ग्धि सहस्रस्य प्रतिमां विश्वरूपम्। परिवृङ्धि हरसा माभिमर्ठ०स्थाः शतायुषं कृणुहि चीयमानः ॥ २ ॥ (सा०) उदुत्यम्। ओहाइ। जा। तवे २ दा २३४ साम्। देवं वहा। हीकेता २३४ वाः। दा २३४ र्शे हाइ। वा इश्वायसू। र्याम्। औ २३ हो वा। हो ५ इ॥ डा॥ ३॥ (अ०) कालो अश्वो वहति सप्तरश्मिः सहस्राक्षो अजरो भूरिरेताः। तमा रोहन्ति कवयो विपश्चितस्तस्य चक्रा भुवनानि विश्वा॥ ४॥ एह्येहि यज्ञेत्र सरोजहस्ते कल्याणदे रक्तमुखोष्ट्रग्रीवे। कलापदण्डास्त्रधरे प्रसीद विशाध्वरं नः सततं शुभाय॥ उष्ट्रग्रीवायै नमः उष्ट्रग्रीवामावाहयामि स्थापयामि॥ ५॥

६- (ऋ०) इतो वा सातिमीहमे दिवो वा पार्थिवादधि। इन्द्रं महो वा रजसः॥ १॥ (य०) स्वर्ण धर्मः स्वाहा स्वर्णार्कः स्वाहा स्वर्ण शुक्रः स्वाहा स्वर्ण ज्योतिः स्वाहा स्वर्ण सूर्यः स्वाहा॥ २॥ (सा०) अबोधिया॥ ग्नाइः समिधाजना २ नाम्। प्रताइधे ३ नूम्। इवायती मुषासम्। यह्वाई ३ वा। प्रवा २ यामुज्जिहानाः॥ प्रभाना २३ वा०। सस्रते नाकमच्छ। इडा २३ भा ३४३। ओ २३४५ इ। डा॥ ३॥ (अ०) कुहूं देवीं सुकृतं विद्मनापसमस्मिन् यज्ञे सुहवा जोहवीमि। सा नो रयिं विश्ववारं नि यच्छाद ददातु वीरं शतदायमुक्थ्यऽम्॥ ४॥ एह्येहि यज्ञेत्र सुवाजिग्रीवे विशालनेत्रे भव भूतिकर्त्री। देवान्समावाहय हव्यकामान् गृहाण पूजां सततं नमस्ते। हयग्रीवायै नमः हयग्रीवामावाहयामि स्थापयामि॥ ५॥

७- (ऋ०) श्रद्धयाग्निः समिध्यते श्रद्धया हूयते हविः। श्रद्धां भगस्य मूर्धनि वचसा वेदयामसि॥ १॥ (य.) सत्यं च मे श्रद्धा च मे जगच्च मे धनं च मे विश्वं च मे महश्च मे क्रीडा च मे मोदश्च मे जातं च मे जनिष्यमाणं च मे सूक्तं च मे सुकृतं च मे यज्ञेन कल्पन्ताम्॥ २॥ (सा.) तु चेतुना। यता ३२ त्सु २३४ नाः द्राधीया र ३४ यूः जीवासा २ इ। आदी २ त्यासाः २॥ समहसा २ः। कृणो ३ ता ५॥ ना २३४५॥ ३॥ (अ.)

वाताज्जातो अन्तरिक्षाद्विद्युतो ज्योतिषस्परि स। नो हिरण्यजाः शंखः कृशनः पात्वं हसः॥ ४॥ एह्येहि वाराहि विशालरूपे द्रंष्ट्राग्रलीलोद्धृतभूमि के च। पीताम्बरे देवि नमोऽस्तु तुभ्यं गृहाण पूजां वरदे नमस्ते॥ वाराह्यै नमः वाराहीमावाहयामि स्थापयामि॥ ५ ॥

८- (ऋ०) गौरीर्मिमाय सलिलानि तक्षत्येकपदी द्विपदी सा चतुष्पदी। अष्टापदी नवपदी बभूवुषी सहस्राक्षरा परमे व्योमन्॥ १॥ (य०) भायै दार्वाहारं प्रभाया अग्न्येधं ब्रध्नस्य विष्टपायाभिषेक्तारं वर्षिष्ठाय नाकाय परिवेष्टारं देवलोकाय पेशितारं मनुष्यलोकाय प्रकरितारर्ठ० सर्वेभ्यो लोकेभ्य उपसेक्तारमवऋत्यै वधायौपमन्थितारं मेधाय वासः पल्पूलीं प्रकामाय रजयित्रीम्॥ २॥ (सा०) आतू औ हो। आतू औ हो॥ न इन्द्र वृत्रा २३४ हान्। अस्माकमर्द्धम्। आगा २३ ही। गाही॥ ३॥ माहा २० माही २३॥ भिरू २३४ वा। ता ५ इभो ६ हाइ॥ ४॥ (अ०) अहमेव स्वयमिदं वदामि जुष्टं देवानामुत मानुषाणाम्। यं कामये तंतमुग्रं कृणोमि तं ब्रह्माणं तमृषिं तं सुमेधाम्। आवाहये हं शरभाननां त्वां समस्तसंसारविधानदक्षाम्। देवाधिदेवेशि परेशि नित्यं गृहाण पूजां वरदे नमस्ते॥ शरभाननायै नमः शरभाननामावाहयामि स्थापयामि॥ ५॥

९- (ऋ०) उपैतु मां देवसखः कीर्तिश्च मणिना सह। प्रादुर्भूतोऽस्मि राष्ट्रेऽस्मिन् कीर्तिमृद्धिं ददातु मे॥ १॥ (य०) जिह्वा मे भद्रं वाङ्महो मनो मन्युः स्वराड् भामः। मोदाः प्रमोदा अङ्गुलीरङ्गानि मित्रं मे सहः॥ २॥ (सा०) हा। वो ३ हा। वो ३ हा ३। हा। ओ २३४ वा। हा इ। पूनाना २३४ सो। माधारापा २३४॥ आपो वा २३४ सा। नो अर्षा २३४ सी॥ आरत्ला २३४ धाः। योनीमा २३४ र्त्ता। स्यासीदा २३४ सी॥ ऊत्सोदा २३४ इवो। हा इरण्या २३४ याः। हा। हा। वो ३ हा ३। ओ २३४ वा। हा ३४। ओ हो वा॥ ए ३॥ अतिविश्वानिदुरितातरमा २३४५॥ ३॥ (अ०) अङ्गेभ्यस्त उदराय जिह्वाया आस्याऽयते। दद्भ्यो

गन्धाय ते नमः ॥ ४॥ उलूकिके त्वामिह भावयेहं काश्मीरपाटीर-विलेपनाढ्याम्। नानाविधालङ्करणोपपन्नां यज्ञे समागन्तुमशेषवन्द्याम्॥ उलूकिकायै नमः उलूकिकामावाहयामि स्थापयामि॥ ५॥

१०- (ऋ०) अभि प्रवन्त समनेव योषाः कल्याण्य १: स्मयमानासो अग्निम्। घृतस्य धाराः समिधो नसन्त ता जुषाणो हर्यति जातवेदाः ॥ १ ॥ (य०) हिङ्काराय स्वाहा हिङ्कृताय स्वाहा क्रन्दते स्वाहाऽवक्रन्दाय स्वाहा प्रोथते स्वाहा प्रप्रोथाय स्वाहा गन्धाय स्वाहा घ्राताय स्वाहा निविष्टाय स्वाहोपविष्टाय स्वाहा सन्दिताय स्वाहा वल्गते स्वाहासीनाय स्वाहा शयानाय स्वाहा स्वपते स्वाहा जाग्रते स्वाहा कूजते स्वाहा प्रबुद्धाय स्वाहा विजृम्भमाणाय स्वाहा विचृत्ताय स्वाहा सꣳ हानाय स्वाहोपस्थिताय स्वाहायनाय स्वाहा प्रायणाय स्वाहा॥ २॥ (सा०) अश्वी अश्वी॥ रथीसु ३ रूपा १ ई २ त्। गोमाः यदि। द्राते १ साखा २। श्वात्रा २ भाजा २। वयसास चतेसा २३ दा॥ चन्द्राइर्या ३ ती ३॥ सा २३ भा ३ म्०। ३४३ पो ६ हाइ॥ ३॥ (अ०) यत् ते देवी निर्ऋत्तिराबबन्ध दाम ग्रीवास्वविमोक्यं यत्। तत् ते वि ष्याम्यायुषे वर्चसे बलायादोमदमन्नमद्धि प्रसूतः॥ ४॥ आवाहयेहं शिवपूर्विकां त्वां रावां महारावजितत्रिलोकीम्। कुरु प्रसादं मम धूमापूजा गृह्णीष्व पूजां करुणामये च॥ शिवारावायै नमः शिवारावामावाहयामि स्थापयामि॥ ५॥

११- (ऋ०) अद्या चिन्नू चित् तदपो नदीनां यदाभ्यो अरदो गातुमिन्द्र। नि पर्वता अद्मसदो न सेदुस्त्वया दृळ्हानि सुक्रतो रजांसि॥ १॥ (य०) अग्निश्च मे धर्मश्च मेऽर्कश्च मे सूर्यश्च मे प्राणश्च मेऽश्वमेधश्च मे पृथिवी च मेऽदितिश्च मे दितिश्च मे द्यौश्च मेऽङ्गुलयः शक्वरयो दिशश्च मे यज्ञेन कल्पन्ताम्॥ २॥ (सा०) पिबासुत-स्यरसिनोमत्स्वाहा ३॥ ना २:। इन्द्रा २ गोमता २३:। हा उ। आपिर्नो २ बो। धिसाधमा २। दिये वृधा २३। हा उ॥ अस्माः अवाँ २३। हा॥ तु ते ३ हो २। या २३४ औ होवा॥ धियऊ २३४५॥ ३॥ (अ०) इन्द्रस्य

वृष्णो वरुणस्य राज्ञ अदित्यानां मरुतां शर्ध उग्रम्। महामनसां भुवनच्यवानां धोषो देवानां जयतामुदस्थात्॥ ४॥ मयूरिके त्वं विश मेऽध्वरेऽस्मिन् लोकत्रयेऽप्यप्रतिमप्रभावे। मयूरिरूपे त्रिदशैकवन्द्ये ममाध्वरं पाहि वरे नमस्ते॥ मयूरिकायै नमः मयूरिकामा० ॥ ५ ॥

१२- (ऋ०) यज्ञायज्ञा वो अग्नये गिरागिरा च दक्षसे। प्रप्र वयममृतं जातवेदसं प्रियं मित्रं न शंसिषम्॥ १ ॥ (य०) पूषन् तव व्रते वयं न रिष्येम कदाचन। स्तोतारस्त इह स्मसि॥ २ ॥ (सा०) यज्ञायज्ञा। होइ। वो ३ ग्नय ए ३४ ॥ हिया ॥ गिरा गिरा। चा २ दक्षसाइ। प्रप्रावयाम्। अमृतं जा ३। त वे २ वा २३४ साम। प्रियम्मित्राम्। नशाः सिषाम्। एहिया। औ हो २३४५ इ॥ डा ॥ ३ ॥ (अ०) विश्वजित् कल्याण्यैऽ मा परि देहि। कल्याणि द्विपाच्च सर्वं नो रक्ष चतुष्पाद् यच्च नः स्वम्॥ ४॥ आवाहयेहं कमलासनस्थां विशालनेत्रां विकटाननां त्वाम्। सर्वज्ञकल्पां बहुमानयुक्तामागत्य रक्षां कुरु सुप्रसन्ने॥ विकटाननायै नमः विकटानानामावाहयामि स्थापयामि॥ ५ ॥

१३- (ऋ०) ईले द्यावापृथिवी पूर्वचित्तये ऽग्निं धर्म सुरुचं यामन्निष्टये। याभिर्भरे कारमंशाय जिन्वथस्ताभिरू षु ऊतिभिरश्विना गतम्॥ १ ॥ (य०) वेद्या वेदिः समाप्यते बर्हिषा बर्हिरिन्द्रियम्। यूपेन यूप आप्यते प्रणीतो अग्निरग्निना॥ २॥ (सा०) भूमिः। (त्रिः)। अन्तरिक्षम् (त्रिः) द्यौः। (द्विः) द्य। ३४। ओहो वा॥ ए ३। भूताया २३४५ ॥ ३ ॥ (अ०) प्रोष्ठेशयास्तल्पेशया नारीर्या वह्यशीवरीः। स्त्रियो याः पुण्यगन्धयस्ताः सर्वाः स्वापयामसि॥ ४॥ आवाहये त्वामहमष्ट-वक्त्रां कल्याणदात्रीं शुभकारिणीं मे। प्रसादये त्वां बहुचाटुकारैर्गृहाण पूजां वरदे नमस्ते॥ अष्टवक्त्रायै नमः अष्टवक्त्रामावाहयामि स्थापयामि॥ ५॥

१४- (ऋ०) अग्निं दूतं पुरो दधे हव्यवाहमुप ब्रुवे। देवाँ आ सादयादिह॥ १ ॥ (य०) अयमग्निः सहस्त्रिणो वाजस्य शतिनस्पतिः। मूर्धा कवी रयीणाम्॥ २॥ (सा०) अग्निः होतारं मन्ये। दा २३४। स्वन्तं

वसोः सू नुम्॥ सहसोजा ३ तावे १ दासा २ म्। विप्रन्नजा ३ तावे १ दासा २ म्। य ऊर्ध्वया ३ सूवध्वारा २ः देवो देवा ३ चाया १ कृपा २। घृतास्यविभ्राष्टिमनुशु। क्राशो १ चिपारः। आजूह्वा ३ ना ३॥ स्या २३ सा ३। पा ३४५ इषो ६ हाइ॥ ३॥ (अ०) सोमेन पूर्णं कलशं बिभर्षि त्वष्टास्य रूपाणं जनिता पशूनाम्। शिवास्ते सन्तु प्रजन्वऽ इह या इमा न्य १ स्मभ्यं स्वधिते यच्छ या अमूः॥ ४॥ आवाहये सुन्दरि कोटराक्षि त्वामत्र यज्ञे भव तापहारिणि। राजप्रजावंशकरी प्रसन्नां ममाध्वरं पाहि वरे नमस्ते॥ कोटराक्ष्यै नमः कोटराक्षीमावाहयामि स्थापयामि॥ ५॥

१५-(ऋ०) उदुत्तमं वरुण पाशमस्मदवाधमं वि मध्यमं श्रथाय। यथा वयमादित्य व्रते तवानागसो अदितये स्याम॥ १॥ (य०) इमं मे वरुण श्रुधी हवमद्या च मृडय। त्वामवस्युराचके॥ २॥ (सा०) यदाकदा च माहा ३॥ ढूषा २ इस्तोता २। जराइ। तमर्तियः। आदिद्वन्दा। औहो ३ हा ३। हा ३ इ। तावा २ रू २३४ णाम्। विपागिरा॥ धर्त्तारंव्या। औहो ३ हा ३। हाइ॥ व्रातानाम्। इडा २३ भा ३४३ ओ २३४५ इ॥ डा॥ ३॥ (अ०) अम्बयो यन्त्यध्वभिर्जामयो अध्वरीयताम्। पृञ्चतीमधुना पयः॥ ४॥ एह्येहि कुब्जे दुरितौघ नाशिनि सदानुकूले कलहंसजामिनि। मां पाहि दीनं शरणागतं च गृहाण पूजां वरदे नमस्ते॥ कुब्जायै नमः कुब्जामावाहयामि स्थापयामि॥ ५॥

१६-(ऋ०) यस्मिन् वृक्षे सुपलाशे देवैः सं पिबते यमः। अत्रा नो विश्पतिः पिता पुराणाँ अनु वेनति॥ १॥ (य०) यमाय त्वा मखाय त्वा सूर्यस्य त्वा तपसे। देवस्त्वा सविता मध्वानक्तु पृथिव्याः सꣳ स्पृशस्पाहि। अर्चिरसि शोचिरसि तपोऽसि॥ २॥ (सा०) आ २ याम्। अयायम्। औ ३ हो ३ इ। आ २ इ। ऊ २। ना के सुपार्णमुपयात्पतन्ताम्। पतन्तम्। औ ३ हो ३ इ। ऊ २। हृदावेनांतो अभ्यचाक्षतत्वा। क्षतत्वो ३। हो ३ इ। आ २ इ। ऊ २। आ २ याम्। अयायम्। औ ३ हो ३ इ। आ २ इ। ऊ २। हिरण्यायाक्षं वरुणास्यदूतम्। स्यदूतम्। औ ३ हो ३ इ। आ २

इ। ऊ २। यमस्य योनौ शकुनां भुरण्यम्। भुरण्यम् औ ३ हो ३ ई। आ २ इ। ऊ २। आ २ याम्। अयायम्। औ ३ हो ३ इ। आ २ इ। ऊ२। वाहा ३१३ वा २३॥ ए ३। दिवम्। ए ३। दिवा २३४५ म॥ ३॥ (अ०) हिङ्कृण्वतौ वसुपत्नी वसूनां वत्समिच्छन्ती मनसाभ्यागात्। गौरमी-मेदभि वत्सं मिषन्तं मूर्धान हिङ्कृणोन्मातवाउ॥ ४॥ एह्येहि दुर्गे विकटाक्षिनाम्नि प्रभावयास्मानिह यज्ञकामान्। संसारदुःखौघविनाशिके च रक्षाध्वरं नो वरदे नमस्ते॥ विकटाक्ष्यै नमः विकटाक्षीमावाहयामि स्थापयामि॥ ५॥

१७- (ऋ०) गन्धर्व इत्था पदमस्य रक्षति पाति देवानां जनिमान्यद्भुतः। गृभ्णाति रिपुं निधया निधापतिः सुकृत्तमा मधुनो भक्षमाशत॥ १॥ (य०) यमेन दत्तं त्रित एनमायुनगिन्द्र एणं प्रथमो अध्यतिष्ठत्। गन्धर्वो अस्य रशनामगृभ्णात्सूरादश्वं वसवो निरतष्ट॥ २॥ (सा०) गायन्तित्वा गायत्रिण आ॥ अर्चन्त्यर्कमर्का २३ इणाः। ब्रह्माणस्त्वा २ हो १ इ। शतक्रा २३ ता ३। उद्वंऽ शमिवया १ इमी ३ रे॥ उद्वंऽ शा २३४ मी॥ वाया ३२ उवा ४। उप्। मा २ इरो ३५ हा इ॥ ३॥ (अ०) स्त्रियः सतीस्ताँ उ मे पुंस आहुः पश्यदक्षण्वान् न वि चेतदन्धः। कविर्यः पुत्रः स ईमा चिकेत यस्ता विजानात्स पितुष्पितासत्॥ ४॥ एह्येहि शुष्कोदरि सुन्दरि त्वं समस्तदैतेयनिषूदयित्रि। आगत्य नः पालय दुःखितांश्च गृहाण पूजां वरदे नमस्ते॥ शुष्कोदर्यै नमः शुष्कोदरी-मावाहयामि स्थापयामि॥ ५॥

१८- (ऋ०) मित्रो जनान् यातयति ब्रुवाणो मित्रो दाधार पृथिवीमुत द्याम्। मित्रः कृष्टीरनिमिषाभि चष्टे मित्राय हव्यं घृतवज्जुहोत॥ १॥ (य०) मित्रस्य चर्षणीधृतोऽवो देवस्य सानसि। द्युम्नं चित्रश्रवस्तमम्॥ २॥ (सा०) आनोमित्रा। वरुणा ३। औ होवा ३२४॥ घृतैर्गव्यूतिमु। क्षता ३ म्। ओ होवा २॥ माध्वारजा २ऽ। सिसू ३। औ होवा २॥ क्रतु। इडा २३ भा ३४३। ओ २३४५ इ॥ डा॥ ३॥ (अ०)

मित्रावरुणयोर्भाग स्थ। अपां शुक्रमापो देवीर्वर्चो अस्मासु धत्त। प्रजापतेर्वो धाम्नास्मै लोकाय सादये॥ ४॥ आवाहयेऽहं ललदाद्याजिह्वानाम्नीं सुदेवीं चपलां सुनेत्राम्। नानाविधास्वादनतत्परां च गृहाण पूजां वरदे नमस्ते॥ ललज्जिह्वायै नमः ललज्जिह्वामावाहयामि स्थापयामि॥ ५॥

१९- (ऋ०) दिवस्पृथिव्योरव आ वृणीमहे मातृन् त्सिन्धून् पर्वताञ्छर्यणावतः॥ १॥ (य०) अग्ने ब्रह्म गृभ्णीष्व धरुणमस्यन्तरिक्षं दृठं० ह ब्रह्मवनि त्वा क्षत्रवनि सजातवन्युपदधामि भ्रातृव्यस्य वधाय। धर्त्रमसि दिवं दृठं० ह ब्रह्मवनि त्वा क्षत्रवनि सजातवन्युपदधामि भ्रातृव्यस्य वधाय। विश्वाभ्यस्त्वाशाभ्य उपदधामि चित्तःस्थोर्ध्वचितो भृगूणामङ्गिरसां तपसा तप्यध्वम्॥ २॥ (सा०) अग्निन्दूताम्। वृणीमहाइ। होतारा २३० वी। श्वद्वेदसाम्। अस्य या २३ ज्ञा। आ। औ ३ होवा। स्यासुक्रतुम्। इडा २३ भा ३४३। ओ २३४५ इ॥ डा ॥ ३ ॥ (अ०) आगन् रात्री संगमनी वसूनामूर्जं पुष्टं वस्वावेशयन्ती। अमावास्याऽ यै हविषा विधेमोजं दुहाना पयसा न आगन् ॥ ४ ॥ आवाहयेऽहं भवतीं श्वदंष्ट्रानाम्नी शुनो मूर्तिधरां महोग्राम्। अत्युग्ररूपां महदाननां च विशाधरं नो वरदे नमस्ते॥ श्वदंष्ट्रयै नमः श्वदंष्ट्रामावाहयामि स्थापयामि॥ ५ ॥

२०- (ऋ०) भवा मित्रो न शेव्यो घृतासुतिर्विभूतद्युम्न एवया उ सप्रथाः। अधा ते विष्णो विदुषा चिदर्ध्यः स्तोमो यज्ञश्च राध्यो हविष्मता ॥ १ ॥ (य०) भग प्रणेतर्भग सत्यराधो भगेमां धियमुदवा ददन्नः। भग प्र नो जनय गोभिरश्वैर्भग प्र नृभिर्नृवन्तः स्याम ॥ २ ॥ (सा०) अग्निरौहोवाहाई। वृत्राणि। जाङ्घा ३ नात्। औ हो ३ वा ३। द्रविणा २३४ स्युः। ओ इ वो इपन्यया २। समाये ३। धा २ः शू २३४ औ हो वा। क्रयाहुता २३४५ः॥ ३ ॥ (अ०) सिन्धुपत्नीः सिन्धुराज्ञीः सर्वा या नद्य १ स्थन। दत्त नस्तस्य भेषजं तेना वो भुनजामहै॥ ४ ॥ आवाहये त्वामिह वानराननां प्रियां हनूमद्विदुषो महामते। देवि त्वमस्मान्परिपाहि

नित्यं श्रीरामभक्ते सततं शिवाय॥ वानराननायै नमः वानरानना-मावाहयामि स्थापयामि॥ ५ ॥

२१- (ऋ०) रात्री व्यख्यदायती पुरुत्रा देव्य १ क्षभिः। विश्वा अधि श्रितोऽधित ॥ १ ॥ (य०) सुपर्णोऽसि गरुत्मान् पृष्ठे पृथिव्याः सीद। भासान्तरिक्षमापृण ज्योतिषा दिवमुत्तभान तेजसा दिश उद्दृठं० ह ॥ २ ॥ (सा०) नित्वामग्राइ॥ मनुर्हा २३४ थाइ। ज्योतिर्जना। या शश्वाता २ इ। दी। दाइ। थक ण्वाऋतजा ३। त ऊ रक्षा २३४ इता॥ यन्नमस्या २३॥ ता २ इ कृ २३४ औ होवा॥ ष्टा २३४ याः ॥ ३ ॥ (अ०) तद् भद्राः समगच्छन्त वशा देष्याथो स्वधा। अथर्वा यत्र दीक्षितो बर्हिष्ट्यस्त हिरण्यये ॥ ४ ॥ एह्येहि ऋक्षाक्षिभवानि नित्यं विनाश-यास्माकमघं समन्तात्। हीनप्रबोधं शरणागतं मां त्रायस्व कल्याणि परे नमस्ते॥ ऋक्षाक्ष्यै नमः ऋक्षाक्षीमावाहयामि स्थापयामि॥ ५॥

२२- (ऋ०) उदीरतामवर उत् परास उन्मध्यमाः पितरः सोम्यासः। असुं य ईयुरवृका ऋतज्ञास्ते नोऽवन्तु पितरो हवेषु ॥ १ ॥ (य०) पितृभ्यः स्वधायिभ्यः स्वधा नमः पितामहेभ्यः स्वधायिभ्यः स्वधा नमः प्रपितामहेभ्यः स्वधायिभ्य स्वधा नमः। अक्षन्पितरोऽ-मीमदन्त पितरोऽतीतृपन्त पितरः पितरः शुन्धध्वम्॥ २॥ (सा०) यद्वाऊ २३ विश्पतिः शिताः॥ सुप्रीतोमनुषोविशे॥ विश्वा इदा ३२ ग्नीः॥ प्रतिरक्षा। सिसेधता। औ ३ होवा हो ५ इ॥ डा॥ ३॥ (अ०) पूर्णं नारि प्र भर कुंभमेतं घृतस्य धारा ममृतेन संभृताम्। इमां पातृनतेमृना समङ्ग्धीष्टापूर्तमभि रक्षात्येनाम्॥ ४॥ आवाहये त्वामिहकेकराक्षीं शुभाननां दिव्यगुणार्णवां चे। समुद्रजातां परमार्थदात्रीं त्रायस्व हे भार्गवनन्दनेऽस्मान्॥ केकराक्षयै नमः केकराक्षीमावाहयामि स्थापयामि॥ ५॥

२३- (ऋ०) क्षुत्पिपासामलां ज्येष्ठामलक्ष्मीं नाशयाम्यहम्। अभूतिमसमृद्धिं च सर्वां निर्णुद मे गृहात्॥ १॥ (य०) या ते रुद्र शिवा

तनूरघोराऽपापकाशिनी। तया नस्तन्वा शन्तमया गिरिशन्ता भिचाकशीहि॥ २॥ (सा०) चन्द्रमाअप्सुवा॥ तरा। सुपर्णो धावते दा २३ इ वी। न वा २३ होइ। हिरण्यनेमयः परं विन्द। तिविद्यता २३ः। वित्तः होई। म आ २३ हो॥ स्यरो २३। दा २ सा २३४ औ होवा॥ ऊ ३२३४ पा॥ ३॥ (अ०) उदुत्तमं वरुण पाशमस्मदवाधमं वि मध्यमं श्रथाय। अधा वयमादित्य व्रते तवानागसो अदितये स्याम॥ ४॥ आवाहये त्वामिह देवपुत्रीं बृहन्मुखीं किन्नरगीयमानाम्। केयूर-माणिक्यविभूषिताङ्गी मनोरमां सर्वसुखाधिदात्रीम्॥ बृहत्तुण्डायै नमः बृहन्तुण्डामावाहयामि स्थापयामि॥ ५ ॥

२४- (ऋ०) तमिद् धनेषु हितेष्वधिवाकाय हवन्ते। येषामिन्द्रस्ते जयन्ति॥ १॥ (य०) वरुणः प्राविता भुवन्मित्रो विश्वाभिरूतिभिः। करतां नः सुराधसः॥ २॥ (सा०) आवोराजा। नमध्व। रस्य रुद्राम्। हो। ता। राम्। स। त्य य जा ३ म्। रोदसीयोः। अग्निं पु। रा। तनयि। त्नोरचिन्तात्॥ हिरण्य। रू॥ पा ३ मव। सा ३४३ इ। का ३ र्णू ५ ध्वी ६५६ म्॥ ३॥ (अ०) वाताज्जातो अन्तरिक्षाद्विद्युतो ज्योतिषस्परि। स नो हिरण्यजाः शंखः कृशनः पात्वंहसः ॥ ४ ॥ एह्येहि यज्ञेऽसुरराज पुत्रि सुराप्रिये सर्वभयापहे त्वम्। सुरप्रिये योगिनि दिव्यदेहे नमामि मातस्तव पादपङ्कजम्॥ सुरप्रियायै नमः सुरप्रियामावाहयामि स्थापयामि॥ ५ ॥

२५- (ऋ०) स्तोत्रमिन्द्रो मरुद्गणस्त्वष्टृमान् मित्रो अर्यमा। इमा हव्या जुषन्त नः॥ १॥ (य०) हꣳस॰ सः शुचिषद्वसुरन्तरिक्षसद्धोता वेदिषदतिथिर्दुरोणसत्। नृषद्वरसदृतसद्व्योमसदब्जा गोजा ऋतजा अद्रिजा ऋतं बृहत्॥ २॥ (सा०) हा उ हो वा। (त्रिः)। परात्परमैरय। ता। (द्वेत्रिः)। यज्जायथाः। अपूर्विया। अपूर्विया। आपूर्वा २३४ या॥ मघवन् वृ। त्रहत्याया त्रहत्यायाः ३ः त्राहत्या २३४ या। तन्पृथिवीम्। अमाथया ३ः। अप्राथयाः। अप्राथया ३ः। अप्राथा २३४ याः॥ तदस्तम्नाः। उतोदिवाम्। उतोदिवा ३ म्। अतोदा २३४ इवाम्। हा

उहोवा। (त्रिः) परात्परमैरय। ता। (द्वेत्रिः)। परात्परमै रय। त। औ हो वाहा उ। वा॥ ए। तेजोधर्मः संक्रीडन्ते वायुगोपास्तेजस्वतीर्म-रुद्भिर्भुवनानि चक्रदुः॥ ३॥ (अ०) ग्रामणीरसि ग्रामणीरुत्थाया-भिषिक्तोऽभि मा सिञ्च वर्चसा। तेजोऽसि तेजो मयि धारयाधि रयिरसि रयिं मे धेहि॥ ४॥ एह्येहि मातस्सुकपालहस्ते जगल्लये शङ्करवल्लभे च। वृषाधिरूढे ललिते सुरेशे गृहाण पूजां वरदे नमस्ते। कपालहस्तायै नमः कपालहस्तामावाहयामि स्थापयामि॥ ५॥

२६- (ऋ०) जातवेदसे सुनवाम सोममरातीयतो नि दहाति वेदः। स नः पर्षदति दुर्गाणि विश्वा नावेव सिन्धुं दुरितात्यग्निः॥ १॥ (य०) सुसंदृशं त्वा वयं मघवन्वन्दिषीमहि। प्र नूनं पूर्णबन्धुरः स्तुतो यासि वशाँ अनु योजान्विन्द्र ते हरी॥ २॥ (सा०) अभाइमाहे। (त्रिः) चर्षणीधृतं मघवाना ३ मूक्था १ याऽ २ म्। इन्द्रंजिरो बृहतीरभ्या ३ नूषा १ ता २॥ वावृधानं पुरुहूतꣳ सु ३ वार्क्ता १ इभी २ः॥ अमर्त्यं जरमाणं दि ३ वो इदा १ इवे २। अभामाइहे। (द्विः)। अभा २३ इ। मा २। हा २३४। औहोवा। सर्पसुवा २३४५ः॥ ३॥ (अ०) बृहद्द्रावासुरेभ्योऽधि देवानुपावर्तत महिमानमिच्छन्। तस्मै स्वप्नाय दधुराधिपत्यं त्रयस्त्रिंशासः स्वऽरान-शानाः॥ ४॥ एह्येहि रक्ताक्षि सुचारूपे क्रोधेन दूरीकृतदानवेन्द्रे। यज्ञे समागच्छ सुमध्यमे त्वं गृहाण पूजां वरदे नमस्ते॥ रक्ताक्ष्यै नमः रक्ताक्षीमावाहयामि स्थापयामि ॥ ५॥

२७- (ऋ०) परा शुभ्रा अयासो यव्या साधारण्येव मरुतो मिमिक्षुः। न रोदसी अप नुदन्त घोरा जुषन्त वृधं सख्याय देवाः॥ १॥ (य०) देवीरापो अपांनपाद्यो ऊर्मिर्हविष्य इन्द्रियावान्मदिन्तमः। तं देवेभ्यो देवत्रा दत्त शुक्रपेभ्यो येषां भाग स्थ स्वाहा ॥ २ ॥ (सा०) ए २। विदामघवन्विदाः॥ गातुमनुशꣳ सिषः। दाइशा ३१ उवा २३। ई ३४ डा॥ ए २। शिक्षाशचीनाम्पताइ॥ पूर्वीषाम्पूरू २। वसा ३१ उवा २३॥ ई ३४ डा। आभिष्ट्रमभा २ ह। ष्टिभिरा ३१ उवा २३। ई ३४ डा। स्वर्न्नाꣳ

शूरः। हाउ १ उवा २३ ई ३४ डा। प्रा। चेतनप्रचेतया॥ ईन्द्रा॥ द्युम्नायना २ इषाइ। इडा॥ ईन्द्रा॥ द्युम्नायना २ इषाइ। अथा ॥ ईन्द्रा॥ द्युम्नायना २ इषाइ। इडा एवाहिशक्रो राये वा जायना १ ज्री ३ वाः। शविष्ठवज्रिन्ना ३। जासाइ॥ मः हिष्ठवज्रिन्ना २३ हो॥ जासा ३१ उवा २३॥ इट् इडा २३४५॥ आया॥ हिपिबमा २ त्सुवा॥ इडा २३४५। ए २। विदाराये सुवीरियाम्। भुवो वाजानाम्पतिर्वशा २ः। अनुआ ३१ उवा २३। ई ३४ डा॥ ए २। मः हिष्ठवज्रिनृञ्जसाइ। यऽशविष्ठः शूरा २। णा ३१ उवा २३॥ ई ३४ डा॥ योमः हिष्ठा मघो २। ना ३१ उवा २३। ई ३४ डा॥ अः शुर्नशोचा २ इः। हा ३१ उवा २३। ई ३४ डा। चाइ। कत्वो अभिनीनया॥ ईन्द्रो॥ विदेतमू २ स्तु हाइ॥ इडा॥ ईन्द्रो॥ विदेतमू २ स्तुहा इ। आथा॥ ईन्द्रो। विदेतमू २ स्तुहाइ। इडा। ईशेहि शक्रस्तमूतये हवा १ मा ३ हाइ। जेतारमपरा ३। जाइताम्। सनः स्वर्षदता २३ होइ॥ द्वाइषा ३१ उवा २३॥ इट् इडा २३४५॥ क्रातूः छन्द ऋता २ म्बृहात् इडा २३४५॥ ए २ इन्द्रन्धनस्य सातयाइ॥ हवामहे जेतारमपरा २। जितमा ३१ उवा २३। ई ३४ डा॥ ए २। सनः स्वर्षदहिद्विषा॥ सानः स्वर्षदता २ इ। द्विष आ ३१ उवा २३। ई ३४ डा। पूर्वस्ययत्त आ २। द्विव आ ३१ उवा २३। ई ३४ डा। अः शु र्म दाया २। हाउ १ उवा २३। ई ३४ डा। सू। म्नआधेहिनो व सा उ॥ पर्त्तीः शविष्ठशा २ स्यताइ। इडा पूर्तीः। शविष्ठशा २ स्य ताइ। अथा॥ पूर्त्तीः॥ शविष्ठशा २ स्यताइ। इडा। वशीहिशक्रो नूनन्तन्नध्यः सा १ न्या २ साइ। प्रभोजनस्यवा ३॥ त्राहान्॥ समर्येषुब्रवा २३ हो इ॥ वाहा ३१ उवा २३॥ इटा इडा २३४५॥ शूरो॥ योगोषुगा २ च्छा ताइ। इडा॥ सारवा सुशेवो २ द्वयूः॥ इडा २३४५ ॥ ३ ॥ आइवा हियेवा २३४५। होइ। हो। वाहा ३१ उवा २३॥ ई ३४ डा॥ आइवा॥ हिइन्द्रा २३४५ इ। होइ। हो। वाहा ३१ उवा २३॥ ई ३४ डा॥ आइवा॥ हिपूषा २३४५ न्। होइ॥ हो। वाहा ३१ उवा २३॥ ई ३४ डा॥ आइवा॥ हि देवा २३४५ः। होइ॥ हो। हो। वाहा ३१ उवा २३॥ ई ३४ डा॥

(अ०) शिवास्त एका अशिवास्त एकाः सर्वा बिभर्षि सुमनस्यमानः। तिस्रो वाचो निहिता अन्तरस्मिन्तासामेका वि पापातानु घोषम्॥ ४ ॥ एह्येहि मातश्शुकि योगिनि त्वमस्मत्सवे ब्रह्ममहेशवन्द्ये। परात्परेशे विहिताङ्गरागे गृहाण पूजां वरदे नमस्ते॥ शुष्क्यै नमः शुष्कीमावाहयामि स्थापयामि॥ ५ ॥

२८- (ऋ०) रक्षोहणं वाजिनमा जिघर्मि मित्रं प्रथिष्ठमुप यामि शर्म। शिशानो अग्निः क्रतुभिः समिद्धः स नो दिव स रिष पातु नक्तम् ॥ १ ॥ (य०) प्रतिपदसि प्रतिपदे त्वानुपदस्यनुपदे त्वा सम्पदे त्वा तेजोऽसि तेजसे त्वा ॥ २ ॥ (सा०) तक्षद्यदी। हो २३४५ इ॥ मनसोवेनतः। वा २३४५ क्॥ ज्येष्ठस्यधा ३१२३४। मन्द्युक्षीरनी॥ का २३४५ इ॥ आदाइमाया ३१२३४ न्। वरमावावशा। ना २३४५:॥ जुष्ठम्यता ३१२३४ इम्। कलशेगा ५ वः। इ। दाउ॥ वा ॥ ३ ॥ (अ०) रक्षोहणं वाजिनमा जिघर्मि मित्रं प्रतिष्ठमुप यामि शर्म। शिशानो अग्निः क्रतुभिः समिद्धः स नो दिवा स रिषः पातु नक्तम्॥ ४॥ हे श्येनि मातर्दह दुःखजातं यज्ञे समागत्य चतुर्भुजे नः। अनन्यभावाः करुणार्द्रचित्ताः कल्याण-काङ्क्षा भवतीं नमामः॥ श्येन्यै नमः शेनीमावाहयामि स्थापयामि॥ ५॥

२९- (ऋ०) समुद्रज्येष्ठाः सलिलस्य मध्यात् पुनाना यन्त्यनिविशमानाः। इन्द्रो या वज्री वृषभो रराद् ता आपो देवीरिह मामवन्तु ॥ १ ॥ (य०) द्वारो देवीरन्वस्य विश्वे व्रता ददन्ते अग्नेः। उरु व्यचसो धा पत्यमानाः॥ २॥ (सा०) हाउहा उहाउ। आयुश्चक्षुर्ज्योति। औ होवा। ईया। उदुत्तमं वरुणपाशमा ३३ स्मात्। अवाधमंविमध्यमः श्रथा २३ या॥ अथा नित्यव्रतेवयता २३॥ अनागसो अदियेसिया २३ मा ३। हाउहा उहाहा आयुश्चक्षुर्ज्योतिः। औ होवा ई २। या २३४। औहोवा॥ ई २३४५ ॥ ३॥ (अ०) आपो अग्रे विश्वमावन् गर्भं दधाना अमृता ऋतज्ञाः। यासु देवीष्वधि देव आसीत् कस्मै देवाय हविषा विधेम॥ ४॥ प्रसादमाधाय कपोतकाख्ये देवि त्वमागच्छ ममाध्वरेऽत्र।

समस्तदेवा सुरवन्दरवनीये गृहाण पूजां वरदे नमस्ते॥ कपोतिकायै नमः कपोतिकामावाहयामि स्थापयामि॥ ५॥

३०- (ऋ०) पिबापिबेदिन्द्र शूर सोमं मा रिषण्यो वसवान वसुः सन्। उत त्रायस्व गृणतो मघोनो महश्च रायो रेवतस्कृधी नः॥ १॥ (य०) देवस्य त्वा सवितुः प्रसवेऽश्विनोर्बाहुभ्यां पूष्णो हस्ताभ्याम्। आददे नार्यसीदमर्ठ० रससां ग्रीवा अपि कृन्तामि। बृहन्नसि बृहद्रवा बृहतीमिन्द्राय वाचं वद॥ २॥ (सा०) एतमुस्यम्। ए ५। मदा॥ च्युताम्। सहस्रधारं वृषभं दिवोदू २३ हाम्॥ वा इश्चा २ वासू २३॥ निषो २३४ वा। श्रा ५ तो ६ हाइ॥ ३॥ (अ०) सत्यं बृहदृतमुग्रं दीक्षा तपो ब्रह्म यज्ञः पृथिवीं धारयन्ति। सा नो भूतस्य भव्यस्य पत्न्युरुं लोकं पृथिवी नः कृणोतु॥ ४॥ आवाहये माशकरां प्रकेतः प्रियां प्रतीच्यामुपलब्ध-वासाम्। जलाधिनाथां स्फटिकप्रभां त्वां गृहाण मेऽर्चां शिवमातनुष्व॥ पाशहस्तायै नमः पाशहस्तमावाहयामि स्थापयामि॥ ५॥

३१- (ऋ०) पृषदश्वा मरुतः पृश्निमातरः शुभंयावानो विदथेषु जग्मयः। अग्निजिह्वा मनवः सूरचक्षसो विश्वे नो देवा अवसा गमन्निह ॥ १॥ (य०) भुवो यज्ञस्य रजसश्च नेता यत्रा नियुद्भिः सचसे शिवाभिः। दिवि मूर्धानं दधिषे स्वर्षां जिह्वामग्ने चकृषे हव्यवाहम् ॥ २॥ (सा०) प्रत्यग्ने। हरसाहरा ६ ए। शृणाहि वा २ इ। श्वता ३४५ः। पा ३४ री॥ यातुधानस्य रक्षसो ३॥ वा २ लाम्। नियुब्जवो २३४ वा॥ री २३४ याम् ॥ ३॥ (अ०) य एवं विदुषेऽदावाथान्येभ्यो ददद् वशाम्। दुर्गा तस्मा अधिष्ठाने पृथिवी सह देवता॥ ४॥ आवाहये त्वामिह दण्डहस्तां यमेप्सितामञ्जनसन्निभां च। विशालवक्षःस्थलरुद्ररूपां गृहाण पूजां वरदे नमस्ते॥ दण्डहस्तायै नमः दण्डहस्तामावाहयामि स्थापयामि॥ ५ ॥

३२- (ऋ०) महे नो अद्य बोधयाषो राये दिवित्मती। यथा चिन्नो अबोधयः सत्यश्रवसि वाय्ये सुजाते अश्वसूनृते ॥ १॥ (य०) कदाचन

स्तरीरसि नेन्द्र सश्चसि दाशुषे। उपोपेन्नु मघवन्भूय इन्नु ते दानं देवस्य पृच्यत आदित्येभ्यस्त्वा॥ २॥ (सा०) शचीभिर्ना ५: शची वसू॥ दिवानक्तं दिशस्यताम्। मावा २ म्। रातिरुपदसत्कदाचना। आस्मा २ त्। रातिः कदो २३४ वा। चा ५ नो ६ हाइ॥ ३॥ (अ०) शिवास्त एका अशिवास्त एकाः सर्वा बिभर्षि सुमनस्यमानः। तिस्रो वाचो निहिता अन्तरस्मिन् तासामेका वि पपातानु घोषम्॥ ४॥ एह्येहि देवि त्वमिह प्रचण्डे प्रचण्डनोर्दण्डसुरारिहस्ते। सुरासुरैरचितपादपद्मे विशाध्वरं नो वरदे नमस्ते॥ प्रचण्डायै नमः प्रचण्डामावाहयामि स्थापयामि॥ ५॥

३३- (ऋ०) मा नस्तोके तनये मा न आयौ मा नो गोषु मा नो अश्वेषु रीरिषः। वीरान् मा नो रुद्र भामितो वधीर्हविष्मन्तः सदमित् त्वा हवामहे ॥ १ ॥ (य०) भद्रं कर्णेभिः शृणयाम देवा भद्रं पश्येमाक्षभिर्यजत्राः। स्थिरैरङ्गैस्तुष्टुवार्ठ० सस्तनूभिर्व्यशेमहि देवहितं यदायुः ॥ २ ॥ (सा०) हा ३ (३)। वाग्घहहहह। (त्रिः)। ऐहि २। (त्रिः) ऐहिहा ३ वाक्। (त्रिः)। हा हाउ। (त्रिः) हाउ (३) वा। प्रजातोकमजीजनेहस। इहा २३४५। हा उ (३)। वाऽघहहह। (त्रिः)। एही २। (त्रिः)। एहिहा उवाक्। (त्रिः)। हाहाउ। (त्रिः) आयाउ। (त्रिः)। अग्निरस्मिजन्मना औ ३ हो। हा २ इया। ॐ ३ हो। हा २ इया। ओ ३ हो ३॥ (हाउ ३)। वाग्धहहहह। (त्रिः)। ऐहिहाउवाक्। (त्रिः) हाहाउ। (त्रिः)। त्हाउ (३)। वाग्हहहह। (त्रिः) एहिहा उवाक्। (त्रिः) हाहाउ। (त्रिः) आयाउ। (त्रिः) जातवेदाओ ३ हो। हा २ हया। ओ ३ हो। हा २ हया। औ ३ हो ३। हाउ (३) वाग्घहहहह। (त्रिः) ऐही २। ऐहिहा उवाक्। (त्रिः)। हाहाउ। (त्रिः)। हाउ (३) वा। रायस्पोषायसुकृतायभूयसेहस। इहा २३४५। हाउ (३)। वाग्घहहहह। (त्रिः)। एही २। (त्रिः) ऐहिहा उवाक्। (त्रिः)। हाहाउ। (त्रिः)। आयाउ। (त्रिः)। घृतं मे चक्षुरमतं म आसानौ ३ हो। हा २ इया। औ ३ हो। हा २ इया। औ ३ हो। हाउ (३) वाग्धहहहह। (त्रिः)। ऐही २।

(त्रिः)। ऐहिहा उवाक्। (त्रिः)। हाहाउ। (त्रिः)। हाउ (३) वा। आगान्वाममिदं बृहद्धस्। इहा। २३४५। हाउ (३)। वाग्घहहहह। (त्रिः)। ऐही २। (त्रिः) ऐहिहाउवाक्। (त्रिः)। हाहाउ। (त्रिः)। आहाउ। (त्रिः)। त्रिधातुरर्कोरकसोविमाना औं ३ हो। २ इया। औं ३ हो। हा २ इया। ॐ ३ हो ३॥ हाउ (३)। वाग्घहहहह। (त्रिः) ऐही २। (त्रिः)। ऐहिहाउवाक्। (त्रिः)। हाहाउ। (त्रिः)। हाउ (३) वा। इदं वामहिद बृहद्धस्। इहा। २३४५। हाउ (३)। वाग्घहहहह। (त्रिः)। ऐही २। (त्रिः) ऐहिहाउवाक्। (त्रिः)। आया उ। (त्रिः) अजस्त्रं ज्योता इरौं ३ हो। हा। हा २ इया। ॐ ३ हो। हा २ इया। ॐ ३ हो ३॥ हाउ (३) वाग्घहहहह। (त्रिः) ऐही २। (त्रिः) ऐहिहाउवाक्। (त्रिः) हाहाउ। (त्रिः)। हाउ (३) वा चराचराय बृहत इदं वाममिदं बृहद्धस्। इहा २३४५। हाउ (३)। वाग्धहहहह। (त्रिः) ऐही ५। (त्रिः)। ऐहिहाउवाक् (त्रिः)। हाहाउ (त्रिः) आयाउ। (त्रिः) हविरस्मिसर्वामौं ३ हो। हा २ इया औं ३ हो। हा २ इया। ॐ ३ हो २। हाउ (३) वाग्घहहहह (त्रिः)। ऐहिहाउवाक्। (त्रिः)। हा हाउ। (त्रिः)। हाउ (३) वा॥ एयशोक्रान्भूतमततनत्प्रजा उसमचूकुपत्पशुभ्योहस्। इहा २३४५ ॥ ३॥ (अ०) मा नो महान्तमुत मा नो अर्भकं मा नो वहन्तमुत मा ना वक्ष्यतः। मा नोः हिंसीः पितरं मातरं च स्वां तन्वऽ रुद्र मा रीरिषो नः ॥ ४॥ आवाहये त्वामिह चण्डविक्रमामज्ञानतामिस्त्रनिराकरीं च। संसारपङ्केऽत्र निमज्जनानानुद्धारयन्तीं भवतीं नमामि॥ चण्डविक्रमायै नमः चण्डविक्रमावाहयामि स्थापयामि॥ ५॥

३४- (ऋ०) अग्निमीळे पुरोहितं यज्ञस्य देवमृत्विजम्। होतारं रत्नधातमम्॥ १॥ (य०) इषे त्वोर्ज्जे त्वा वायव स्त्थ देवो वः सविता प्रार्पयतु श्रेष्ठतमाय कर्मण आप्यायध्वमघ्न्या इन्द्राय भागं प्रजावतीरनमीवा अयक्ष्मा मा वस्तेन ईशत माघशर्ठ०सो ध्रुवा अस्मिन्गोपतौ स्यात बह्वीर्यजमानस्य पशून्याहि॥ २॥ (सा०) अग्न

आयाहि। वा ५ इ तथा इ। गृणानो हव्यदा १ ता ३ ये। निहोता २३४ सा। त्सा इ वा ३। हा २३४ इषो ६ हा इ॥ ३॥ (अ०) शं नो देवीरभिष्टय आपो भवन्तु पीतये। शं योरभि स्त्रवन्तु नः॥ ४॥ शिशुघ्नि देवि त्वमिहाद्य धत्स्व रतिं मयि त्वच्चरणाब्जभाजि। शिशूनवास्मत्कुलजान्सबन्धून् गृहाण पूजां वरदे नमस्ते। शिशुघ्न्यै नमः शिशुघ्नीमावाहयामि स्थापयामि॥ ५॥

३५- (ऋ०) द्रविणोदाः पिपीषति जुहोत प्र च तिष्ठतु। नेष्ट्रादृतुभिरिष्यत॥ १॥ (य०) देवी द्यावापृथिवी मखस्य वामद्य शिरो राध्यास देवयजने पृथिव्याः। मखाय त्वा मखस्य त्वा शीर्ष्णे॥ २॥ (सा०) अयन्त आ॥ द्रसोमो। होवा ३ होइ। निपूतो आ ३। धीबहा २३४ इषी॥ आइहीमस्या २३॥ द्वा २ वा २३४ औ होवा॥ पी २३४ वा ॥ ३ ॥ (अ०) अहं रुद्रेभिर्वसुभिश्चराम्यहमादित्यैरुत विश्वदेवैः। अहं मित्रावरुणोभा बिभर्म्यहमिन्द्राग्नी अहमश्विनोभा॥ ४॥ आवाहये त्वामिहपापहन्त्रीं कन्यापचित्या सुमुखीं प्रसन्नाम्। मुक्तिप्रदां भक्त-जनेष्टदात्रीं गृहाण पूजां वरदे नमस्ते॥ पापहन्त्र्यै नमः पापहन्त्री-मावाहयामि स्थापयामि॥ ५ ॥

३६- (ऋ०) असुनीते मनो अस्मासु धारय जीवातवे सु प्र तिरा न आयुः। रारन्धि नः सूर्यस्य संदृशि घृतेन तन्वं वर्धयस्व॥ १॥ (य०) विश्वानि देव सवितर्दुरितानि परासुव। यद्भद्रं तन्न आसुव ॥ २ ॥ (सा.) असाविस्वोमो अरुषो वृषाह। राइः॥ राजे वदस्मो अभिगा अचिक्रो दात्। पुनानो वारमत्येष्यव्य। याम्॥ श्येनो नयो निंघृत। वा। तमा ३। सार दा २३४ औ हो वा॥ ए ३। दिवी २३४५॥ ३॥ (अ.) आ नो यहि सुतावतोऽस्माकं सुष्टुतीरुप। पिबा सु शिप्रिन्नन्धसः॥ ४॥ एह्येहि कालित्वमिहाध्वरे मे वेदज्ञसम्पादितकार्यजाते। विष्णुप्रिये सर्वनुते गृहाण पूजां यथावत्कृपया सुरेशि॥ काल्यै नमः कालीमावाहयामि स्थापयामि॥ ५॥

३७- (ऋ०) रपद्गन्धर्वीरप्या च योषणा नदस्य नादे परि पातु मे मनः। इष्टस्य मध्ये अदितिर्नि धातु नो भ्राता नो ज्येष्ठः प्रथमो वि वोचति॥ १॥ (य०) असुन्वन्तमयजमानमिच्छ स्तेनस्ये त्यामन्विहि तस्करस्य। अन्यमस्मदिच्छ सा त इत्या नमो देवि निर्ऋते तुभ्यमस्तु॥ २॥ (सा०) वे त्थाहिनिर्ऋतीताम्। वाज्रहस्तपरिवृ। जाम्॥ अहर। हाः। शुन्ध्युः परि। पदा ३ मा ५ इवा ६५६ ॥ ३॥ (अ०) वयमु त्वामपूर्व्य स्थूरं न कच्चिद् भरन्तोऽवस्यवः। वाजे चित्रं हवामहे॥ ४ ॥ आवाहये त्वां रुधिरं पिबन्तीं देवासुराणां भयदां ज्वलन्तीम्। विशालनेत्रां परिपूर्णचन्द्रविम्वाननां चन्दनचर्चिताङ्गीम्॥ रुधिरपायिन्यै नमः रुधिरपायिनीमावाहयामि स्थापयामि॥ ५॥

३८- (ऋ०) सद्यो जातो व्यमिमीत यज्ञमग्निर्देवानामभवत् पुरोगाः। अस्य होतुः प्रदिश्यृतस्य वाचि स्वाहाकृतं हविरदन्तु देवाः॥ १॥ (य०) अग्निश्च मे घर्मश्च मेऽर्कश्च मे सूर्यश्च मे प्राणश्च मेऽश्वेमघश्च मे पृथिवी च मेऽदितिश्च मे दितिश्च मे द्यौश्च मेऽङ्गुलयः शक्करयो दिशश्च मे यज्ञेन कल्पन्ताम् ॥ २॥ (सा०) अगिग्स्तिग्मेन शोचिषा। इह यऽँ साद्विश्वं न्यत्रिणां २ म्। इहा॥ अग्निर्नोवः सता २ इ। इहा ३। रा २३४ यो ६ हाइ ॥ ३॥ (अ०) स्वाहाकृतः शुचिर्देवेषु यज्ञा यो अश्विनोश्चमसो देवपानः। तमु विश्वे अमृतासो जुषाणा गन्धर्वस्य प्रत्यास्ना रिहन्ति ॥ ४॥ वसाधयां त्वामिह भावयेऽहं सामन्त यज्ञ प्रभया समानाम्। यज्ञैः स्तुतां यज्ञवसाधयां च पाहि त्वमम्बे भवतीं नमामि॥ वसाधयायै नमः वसाधयामावाहयामि स्थापयामि॥ ५॥

३९- (ऋ०) कस्य नूनं कतमस्यामृतानां मनामहे चारु देवस्य नाम। को नो मह्या अदितये पुनर्दात् पितरं च दृशेयं मातरं च॥ १॥ (य०) बह्वीनां पिता बहुरस्य पुत्रश्चिश्चाकृणोति समनावगत्य। इषुधिः संकाः पृतनाश्च सर्वाः पृष्ठे निनद्धो जयति प्रसूतः॥ २॥ (सा०) चित्रा ६ ए॥ ए ३१२३४। शिशोस्तरुणस्य वक्षथः। क्षथः। हिहिहियाऽ६ हा उ। ए

३१२३४। नयो मातरावन्वेति धातवे। तवे। हिहिहिया ६ हा उ॥ ए ३१२३४। अनूधा यदजीजनदधाचिदा। हिहिहिया ६ हा उ। ए ३१२३४। ववक्षत्सद्यो महिदूतियंचरन्। हिहिहिया ६ हा उ। वा॥ ए ३। ऋतून॥ ३॥ (अ०) सिनीवालि पृथुष्टुके या देवानामसि स्वसा। जुषस्व हव्यमाहुतं प्रजां देवि दिदिड्ढि नः॥ ४॥ आवाहये त्वामिह गर्भभक्षां देवीं सुमायां भयदां समन्तात्। स्ववंशरक्षार्थमिहार्चयामि गृहाण पूजां शुभदे नमस्ते॥ गर्भभक्षायै नमः गर्भभक्षामावाहयामि स्थापयामि॥ ५॥

४०- (ऋ०) मृगो न भीमः कुचरो गिरिष्ठाः परावत आ जगन्था परस्याः। सृकं संशाय पविमिन्द्र तिग्मं वि शत्रून् ताळ्हि वि मृधो नुदस्व॥ १॥ (य०) नमस्ते रुद्र मन्यव उतो त इषवे नमः। बाहुभ्यामुत ते नमः॥ २॥ (सा०) मृज्यमाना॥ सुहस्तिया ३। सामू ३ द्राइवा। चमिन्वसा ३ इ। रायी ३० पाइशा। गंवहुला ३ म्। पूरू २ स्पृ २३४ हाम्। षवमा। ना। औ ३ हो। भियो २३४ वा। षा ५ सो ६ हाइ॥ ३॥ (अ०) मृगो न भीमः कुचरो गिरिष्ठाः परावत आ जगम्यात् परस्याः। सृकं संशाय पविमिन्द्र तिग्मं वि शत्रून्ताढि वि मृधो नुदस्व॥ ४॥ आवाहयेहं शवहस्तकां त्वां सर्वस्य लोकस्य भयप्रदात्रीम्। कपालखट्वाङ्गधरां सुधूम्रां भजामि देवीं कुलवृद्धिहेतो॥ शवहस्तायै नमः शवहस्तामावाहयामि स्थापयामि॥ ५॥

४१- (ऋ०) सत्या सत्येभिर्महती महद्भिर्देवी देवेभिर्यजता यजत्रैः। रुजद् दृळ्हानि दददुस्त्रियाणां प्रति गाव उषसं वावशन्त॥ १॥ (य०) ऋतं च मेऽमृतं च मेऽयक्ष्मं च मेऽनामयच्च मे जीवातुश्च मे दीर्घायुत्वं च मेऽनमित्रं च मेऽभयं च मे सुखं च मे शयनं च मे सूषाश्च मे सुदिनं च मे यज्ञेन कल्पन्ताम्॥ (सा०) हाउ (३) ओहा। (त्रिः) हा ओवा। (त्रिः)। ऊं २। (त्रिः) ओ २। (त्रिः)। हाउ वाक्। (त्रिः)। आयुर्यन्। (त्रिः) ए आयुः। (त्रिः)। आयुः। (त्रिः)। वयाः। (द्विः)। वयः। इन्द्रन्नरोनेमधिताहवा २ न्ताइ॥ यत्पार्यायुनजते धिया २ स्ता॥

शूरोनृषाताश्रवसश्चका २ माइ। आगोमतिव्रजेभजातुवा २ त्र:। हाउ (३)। ओहा। (त्रिः)। हा ओवा। (त्रिः)। ऊ २। (त्रिः)। ओ २। (त्रिः)। हाउवाक्। (त्रिः)। आयुर्यन। (त्रिः)। ए आयुः। (त्रिः)। आयुः। (त्रिः) वयाः। (द्विः)। वा २। या २२४। औ होवा॥ ए आयुर्द्धा अस्मभ्यं वर्चोधादेवेभ्या २३४५:॥ ३॥ (अ०) सत्यजितं शपथयावनीं सहमानां पुनःसराम्। सर्वाः समह्वयोषधीरितो नः पारयादिति॥ ४॥ आवाहये यज्ञ इहान्त्रमालीं प्रपञ्चकर्त्रीं सुरसानुरूपाम्। गृहाण पूजां श्रुतिमन्त्रजुष्टां कृपाकटाक्षं कुरु मय्यधीने॥ आन्त्रमालिन्यै नमः आन्त्रमालिनीमावाहयामि स्थापयामि॥ ५॥

४२- (ऋ०) द्रविणोदा ददातु नो वसूनि यानि शृण्विरे। देवेषु ता वनामहे॥ १॥ (य०) ते आचरन्ती समनेव योषा मातेव पुत्रं बिभृतामुपस्थे। अप शत्रून्विध्यतार्ठ० संविदानेऽ आर्त्नी इमे विष्फुरन्ती अमित्रान्॥ २॥ (सा०) देवो ३ वो ३ द्रविणोदाः॥ पूर्णां विवष्ट्वासिचम्। उद्वा १ सिञ्च २। ध्वमुपवा पृणध्वम्। आदि द्वोदे २॥ व ओहते। इडा २३ भा ३४३। ओ २३४५ इ॥ डा॥ ३॥ (अ०) अहं राष्ट्री संगमनी वसूनां चिकीतुषी प्रथमा यज्ञियानाम्। तां मा देवा व्यदधुः पुरुत्रा भूरिस्थात्रां भूर्यावेश-यन्तः॥ ४॥ आवाहये त्वामिह स्थूलकेशीं शिरोरुहाच्छादितसर्वदेहाम्। रक्ताम्बरां नक्तचरीं सुवक्त्रां ध्यायेऽध्वरेस्मिन्मनसा च वाचा॥ स्थूलकेश्यै नमः स्थूलकेशीमावाहयामि स्थापयामि॥ ५॥

४३- (ऋ०) ईले द्यावापृथिवी पूर्वचित्तये ऽग्निं घर्मं सुरुचं यामन्निष्टये। याभिर्भरे कारमंशाय जिन्वथस्ताभिरू षु ऊतिभिरश्विना गतम्॥ १॥ (य०) वेद्या वेदिः समाप्यते बर्हिषा बर्हिरिन्द्रियम्। यूपेन यूप आप्यते प्रणीतो अग्निरग्निना॥ २॥ (सा०) भूमिः। (त्रिः)। अन्तरिक्षम्। (त्रिः) द्यौः। (द्विः)। द्या ३४। औ हो वा॥ ए ३। भूताया २३४५॥ ३॥ (अ०) भूतिर्मातादितिर्नो जनित्रं भ्रातान्तरिक्षमभिशस्त्या नः। द्यौर्न पिता पित्र्याच्छं भवाति जामिमृत्वा माव पत्सि लोकात्॥ ४॥

महोदरे त्वामिह भावयामि कुक्षिं बृहन्तं दधतीं सुवेषाम्। यज्ञे समागच्छ विधेहि भद्रं गृहाण पूजां प्रियदे नमस्ते॥ बृहत्कुक्ष्यै नमः बृहत्कुक्षी-मावाहयामि स्थापयामि॥ ५॥

४४- (ऋ०) अश्वदायि गोदायि धनदायि महाधने। धनं मे जुषतां देवि सर्वकामांश्च देहि मे ॥ १॥ (य०) पावका नः सरस्वती वाजेभिर्वाजिनीवती। यज्ञं वष्टु धियावसुः॥ २॥ (सा०) अतीहिमा॥ न्युषा २ वा इ णा २ म्। सुषुवाः सा २ म्। होइ। ऊपै १ राया २॥ अस्यराता २३ उ॥ सू र ता २३४ औ होवा॥ पी २३४ वा॥ ३॥ (अ०) कालोऽमूं दिवमजनयत्काल इमाः पृथिवीरुत। काले ह भूतं भव्यं चेषितं ह वि तिष्ठते॥ ४॥ एह्येहि सर्पास्य इह द्विजिह्वे द्विजिह्वतादोषम-धारयन्तीम्। शिवप्रिये जन्हुसुताप्रिये च नमामि त्वां देवि बहुप्रकोपाम्॥ सर्पास्यायै नमः सर्पास्यामावाहयामि॥ ५॥

४५- (ऋ०) तवार सोम रारण सख्य इन्द्रो दिवेदिवे। पुरूणि बभ्रो नि चरन्ति मामव परिधीँ रति ताँ इहि॥ १॥ (य०) अस्कन्नमद्य देवेभ्य आज्यठं० संभ्रियासमङ्घ्रिणा विष्णो मा त्वावक्रमिषं वसुमतीमग्ने ते च्छायामुपस्थेषं विष्णोः स्थानमसीत इन्द्रो वीर्यमकृणोदूर्ध्वोऽध्वर आस्थात्॥ २॥ (सा०) तवाहः सो। मरा २ रणा। रण। सख्य इन्द्रो दिवा २ इदिवाह। दिवे। पुरूणिबभ्रो निचरन्तिमा २ मवा। अव॥ परिधीः रतिताः इहा २३ इ। आ २ इ। हा २३४। ओ हो वा। औ हो वा॥ ऊ ३२३४ पा॥ ३॥ (अ०) सोम राजत्संज्ञानमा वपैभ्यः सुब्राह्मणा यतमे त्वोपसीदान्। ऋषीनार्षेयांस्तपसोऽधि जातान् ब्रह्मौदने सुहवा जोहवीमि॥ ४॥ आवाहये प्रेतवहां यमप्रियां यमस्य दूतीं सुविशाल-रूपाम्। सुदण्डहस्तां महिषाधिरूढां भजामि देवीं कुलवृद्धिहेतोः। प्रेतवाहिन्यै नमः प्रेतवाहिनीमावाहयामि स्थापयामि॥ ५॥

४६- (ऋ०) ते आचरन्ती समनेव योषा मातेव पुत्रं बिभृतामुपस्थे। अप शत्रून् विध्यतां संविदाने आर्त्नी इमे विष्फुरन्ती

अभित्रान् ॥ १ ॥ (य०) ते आचरन्ती समनेव योषा मातेव पुत्रं बिभृतामुपस्थे। अप शत्रून्विध्यतार्ठं० संविदाने आर्त्नी इमे विष्फुरन्ती अमित्रान् ॥ २ ॥ (सा०) अपामिवे दूर्मयस्तौ। होवाहाइ॥ तुराणा २३४:। हाहोइ। प्रमनी। षाः। ईरते ३। सोमम। छा ३४। हाहोई। नमस्य। ताइः। उपचा ३। यन्तितसम्। चा ३४। हा होइ॥ आच वि। शा। तियुश। तीरुश। ता ३४ म्। हाहा ३४। और होवा। वा ३ डा २३४५:॥ ३ ॥ (अ०) अपो देवीर्मधुमतीर्घृतश्चुतो ब्रह्मणां हस्तेषु प्रपृथक्सादयामि। यत् काम इदमभिषिञ्चामि वोऽहं तन्मे सर्वं सं पद्यतां वयं स्याम पतयो रयीणाम्॥ ४॥ आवाहये शूककरां सुभीमां कामप्रियां घोरमुखीं कृशाङ्गीम्। यज्ञे समागत्य शुभं कुरुष्व गृहाण पूजां शुभदे नमस्ते॥ दन्तशूकरायै नमः दन्तशूककरामावाहयामि स्थापयामि॥ ५॥

४७- (ऋ०) बलित्था पर्वतानां खिद्रं बिभर्षि पृथिवि। प्र या भूमिं प्रवत्वति मह्ना जिन्नोषि महिनि॥ १॥ (य०) मही द्यौः पृथिवी च न इमं यज्ञं मिमिक्षताम्। पिपृतां नो भरीमभिः॥ २॥ (सा०) यज्ञायज्ञा॥ वो अग्नयाः ३ इ। गिरा २ गिरा ३४। हा हो ३ इ। चादक्षा २३४ साइ। प्रप्रा २ वयममृतं जा। ता। वे १ दासा २ म्॥ प्रियम्मित्राम्। नशः सिषाम्॥ एहिया। औ हौ हो २३४५ इ॥ डा॥ ३॥ (अ०) यामृषया भूतकृतो मेधां मे धाविनो विदुः। तया मामद्य मेधयाग्ने मेधाविनं कुरु॥ ४॥ आवाहये दैत्यसुतां सुभीमां क्रौञ्चीं महार्हासनसन्निविष्टाम्। भयस्य हन्त्रीं द्विजसङ्घजुष्टां वने वसन्तीं वनदेवतां त्वाम्॥ क्रौञ्चयै नमः क्रौञ्चीमावाहयामि स्थापयामि॥ ५॥

४८- (ऋ०) देवस्य सवितुर्वयं वाजयन्तः पुरंध्या। भगस्य रातिमीमहे॥ १॥ (य०) उपयामगृहीतोऽसि सावित्रोऽसि चनोधाश्चनोधा असि च नो मयि धेहि। जिन्व यज्ञं जिन्व यज्ञपतिं भगाय देवाय त्वा सवित्रे॥ २॥ (सा०) तत्सवितुर्वरेणियोम्। भर्गो देवस्य धीम हीऽ २। धियो यो नः प्रचो १२१२। हुम् आ २। दायो आ २३४५॥ ३॥ (अ०)

सविता प्रसवानामधिपतिः स मावतु। अस्मिन् ब्रह्मण्यस्मिन् कर्मण्यस्यां पुरोधायामस्यां प्रतिष्ठायामस्यां चित्त्यामस्यामाकूत्यामस्यामाशिष्यस्यां देवहूत्यां स्वाहा॥ ४॥ आवाहयेऽहं मृगशीर्षनाम्नीं निजप्रबोथा-मुडुमध्यसंस्थाम्। चन्द्रप्रियां चन्द्रनिभाननां च संभावयास्मानिह योगिनि त्वम्। मृगशीर्षायै नमः मृगशीर्षामावाहयामि स्थापयामि॥ ५॥

४९- (ऋ०) एको बहूनामसि मन्यवीलितो विशंविशं युधये सं शिशाधि। अकृत्तरुक् त्वया युजा वयं द्युमन्तं घोषं विजयाय कृण्महे ॥ १ ॥ (य०) आप्यायस्व समेतु ते विश्वतः सोम वृष्ण्यम्। भवा वाजस्य संगथे ॥ २ ॥ (सा०) अग्नाइमृडा २ऽ। महाः आ २३४ सी। अय आदा २ इ। वयुञ्जा २३४ नाम्। इयेथ वा २३। हिरा ३ सा ५ दा ६५६ म् ॥ ३ ॥ (अ०) यदन्तरिक्षं पृथिवीमृत द्यां यन्मातरं पितरं वा जिहिंसिम। अयं तस्माद्गाहपत्यो नो अग्निरुदिन्नयाति सुकृतस्य लोकम् ॥ ४ ॥ वृषानने शङ्करवल्लभे त्वमत्रेहि यज्ञे विधि गौरवाय। त्वामर्चये देवि कृपां विधेहि गृहाण पूजां वरदे नमस्ते॥ वृषननायै नमः वृषाननामावाहयामि स्थापयामि॥ ५॥

५०- (ऋ०) अर्यमणं बृहस्पतिमिन्द्रं दानाय चोदय। वातं विष्णुं सरस्वतीं सवितारं च वाजिनम्॥ १ ॥ (य०) कार्षिरसि समुद्रस्य त्वाक्षित्या उन्नयामि। समापो अद्भिरग्मत समोषधीभिरोषधीः ॥ २ ॥ (सा०) अग्नाइ-मृडा २ऽ। महाः आ २३४ सी। अय आदा २ इ। वयुञ्जा २३४ नाम्। इयेथ वा २३। हिरा ३ सा ५ दा ३५६ म् ॥ ३ ॥ (अ०) धनुर्बिभर्षि हरितं हिरण्ययं सहस्त्रघ्नि शतवधं शिखण्डिनम्। रुद्रस्येषुश्चरति देवहेतिस्तस्यै नमो यतमस्यां दिशी उतः ॥ ४ ॥ एह्येहि व्यात्तास्य इहैव सद्यो मदीययज्ञे रुचिराङ्गजाते। सुमूर्धजे पद्मसमाननेत्रे ममाध्वरं योगिनि पाहि नित्यम्॥ व्यात्तास्यायै नमः व्यात्तास्यामावाहयामि स्थापयामि॥ ५॥

५१- (ऋ०) आ नो दिव आ पृथिव्या ऋजीषिन्निदं बर्हिः सोमपेयाय याहि। वहन्तु त्वा हरयो मद्र्यञ्चमाङ्गूषमच्छा तवसं

मदाय॥ १॥ (य०) त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम्। उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय माऽमृतात्। त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिं पतिवेदनम्। उर्वारुकमिव बन्धनादितो मुक्षीय मामुतः॥ २॥ (स०) परीतोषिञ्चता सुताम्॥ सोमोय उ। तमः३ हवाइः दाधाओ २३४ वा ऊ ३४ पा। न्वा३ योनर्यो अप्सुवन्ता २३ रा॥ सुषावाऽ २३ सो॥ मामद्रिभिः। इडा २३ भा ३४३। ओ २३४५ इ॥ डा॥ ३॥ (अ०) उत्तमो अस्योषधीनां तव वृक्षा उपस्तयः। उपस्तिरस्तु सो३स्माकं यो अस्माँ अभिदासति॥ ४॥ एह्येहि यज्ञे मम देवि धूमनिश्वसके योगिनि चारुदन्ते। गोरोचना कुङ्कुमशोभिताङ्गे प्रसीद मातः कमलालये त्वम्॥ धूमनिश्वासायै नमः धूमनिश्वासामावाहयामि स्थापयामि॥ ५॥

५२- (ऋ०) पद्मानने पद्मविपद्मपत्रे पद्मप्रिये पद्मदलायताक्षि। विश्वप्रिये विष्णुमनोऽनुकूले त्वत्पादपद्मं मयि सं नि धत्स्व॥ १॥ (य०) श्रीश्च ते लक्ष्मीश्च पत्न्यावहोरात्रे पार्श्वे नक्षत्राणि रूपमश्विनौ व्यात्तम्। इष्णन्निषाणामुं म इषाण सर्वलोकं म इषाण॥ २॥ (सा०) हा। वो ३ हा। वो ३ हा ३। हा। ओ २३४ वा। हा इ। पूमाना २३४: सो। माधा राप २३४॥ आपो वा २३४ सा अर्षा २३४ सी॥ आरत्ना २३४ धाः। योनी मा २३४ र्ताः। स्यासीदा २३४ सी॥ उत्सोहा इ वो हा इ रण्या २३४ याः। हा वो ३। हा। वो ३ हा ३। हा। ओ २३४ वा। हा ३४। औ हो वा॥ ए ३। अति विश्वानि दुरिता तरमा २३४५॥ ३॥ (अ०) देवी देव्यामधि जाता पृथिव्यामस्योषधे। तां त्वा नितत्नि केशेभ्यो दृंहणाय खनामसि॥ ४॥ व्योमैकपादोर्ध्वदृशं सुरेशीमावाहये योगिनीदिव्यदेहाम्। प्रसीद मातः कमलायताक्षि विशाध्वरं नो वरदे नमस्ते॥ व्योमैकचरणोर्ध्वदृशे नमः व्योमैकचरणोर्ध्वदृशमावाहयामि स्थापयामि॥ ५॥

५३- (ऋ०) आर्ष्टिषेणो होत्रमृषिर्निषीदन् देवापिर्देवसुमतिं चिकित्वान्॥ स उत्तरस्मादधरं समुद्रमपो असृजद्दिव्या अभि॥ १॥ (य०) विष्णोर राटमसि वीष्णोः श्नप्त्रे स्थो विष्णोः स्यूरसि

विष्णोध्रुवोऽसि। वैष्णवमसि विष्णवे त्वा ॥ २ ॥ (सा०) औ हो इत्वमिन्द्र प्रतूर्त्तिषु ३२ ॥ अभाइवा इश्वाः। आसिस्था २३४ द्धाः ॥ श्री॥ आशस्तिहा जनितावृ। त्रतू २३ रसाइ॥ श्री॥ तूवा २३० तुर्या॥ तरौ हो ३। हुम्मा २। स्था २ तो ३४ हाइ॥ ३॥ (अ०) उदगातां भगवती विचृतौ नाम तारके। वि क्षेत्रियस्य मुञ्चतामधमं पाशमुत्तमम् ॥ ४॥ आवाहये तापनि योगिनि त्वां यज्ञे द्विषतापकरीशुभाङ्गीम्। सर्वार्थसम्पत्तिकरी प्रणाम्यां विघ्नव्रज नाशय नमो नमस्तु॥ तापिन्ये नमः तापिनीमावाहयामि स्थापयामि॥ ५॥

५४- (ऋ०) त्वष्टा दुहित्रे वहतुं कृणोतीतीदं विश्वं भुवनं समेति। यमस्य माता पर्युह्यमाना महो जाया विवस्वतो ननाश॥ १॥ (य०) ब्राह्मणमद्य विदेयं पितृमन्तं पैतृमत्यमृषिमार्षेयठं० सुधातु दक्षिणम्। अस्मद्राता देवत्रा गच्छत प्रदातारमाविशत॥ २ ॥(सा०) हा उ (त्रिः)। इमाः। इमाः। प्रजा। (त्रिः) प्रजापते। हो इ (द्वि द्विः)॥ प्रजापते। हा ३१३। वा २॥ ए। हृदयम्। (द्वि द्विः) ए। हृदया ३१३। वा २॥ प्रजारूप मजीजने ३। इट् इडा २३४५॥ ३॥ (अ०) प्रजापतिः सलिलादा समुद्रादाप ईरयन्नुदधिमर्दयाति। प्र प्यायतां वृष्णो अश्वस्य रेतोऽर्वाङ्केतेन स्तनयित्नुनेहि॥ ४॥ आवाहये शोषणि दृष्टि-मस्मिन् यज्ञे समागत्य कुरु प्रसादम्। रसाध्वरं पालय नोरिनीते गृहाण पूजां वरदे नमस्ते॥ शोषणीदृष्ट्यै नमः शोषणीदृष्टिमावाहयामि स्थापयामि॥ ५॥

५५- (ऋ०) कस्य नूनं कतमस्यामृतानां मनामहे चारु देवस्य नाम। को नो मह्या अदितये पुनर्दात् पितरं च दृशेयं मातरं च॥ १ ॥ (य०) आ नो भद्राः क्रतवो यन्तु विश्वतोऽदब्धासो अपरीतासः उद्भिदः। देवानो यथा सदमिद्वृधे असन्नप्रायुवो रक्षितारो दिवेदिवे ॥ २ ॥ (सा०) हा ३ (३)। वाग्घहहहह। (त्रिः)। ऐहि २। (त्रिः) ऐहिहा ३ वाक्। (त्रिः)। हा हाउ। (त्रिः) हाउ (३) वा। प्रजातोकमजीजनेहस। इहा

२३४५। हा उ (३)। वाऽघहहहह। (त्रिः)। एही २। (त्रिः)। एहिहा उवाक्। (त्रिः)। हाहाउ। (त्रिः) आयाउ। (त्रिः)। अग्निरस्मिजन्मना औ ३ हो। हा २ इया। औ ३ हो। हा २ इया। ओ ३ हो ३॥ (हाउ ३)। वाग्घहहहह। (त्रिः)। ऐहिहाउवाक्। (त्रिः) हाहाउ। (त्रिः)। हाउ (३)। वाग्घहहहह। (त्रिः) ऐही २। (त्रिः) एहिहा उवाक्। (त्रिः) हाहाउ। (त्रिः) आयाउ। (त्रिः) जातवेदाओ ३ हो। हा २ हया। ॐ ३ हो। हा २ हया। ॐ ३ हो ३। हाउ (३) वाग्धहहहह। (त्रिः) ऐही २। ऐहिहा उवाक्। (त्रिः)। हाहाउ। (त्रिः)। हाउ (३) वा। रायस्पोषायसुकृतायभूयसेहस। इहा २३४। हाउ (३)। वाग्घहहहह। (त्रिः)। एही २। (त्रिः) ऐहिहा उवाक्। (त्रिः)। हाहाउ। (त्रिः)। आयाउ। (त्रिः)। घृतं मे चक्षुरमतं म आसानौ ३ हो। हा २ इया। ॐ ३ हो। हा २ इया। ॐ ३ हो। हाउ (३) वाग्धहहहह। (त्रिः)। ऐही २। (त्रिः)। ऐहिहा उवाक्। (त्रिः)। हाहाउ। (त्रिः)। हाउ (३) वा। आगावाममिदं बृहद्भस्। इहा। २३४५। हाउ (३)। वाग्घहहहह। (त्रिः)। ऐही २। (त्रिः) ऐहिहाउवाक्। (त्रिः)। हाहाउ। (त्रिः)। आहाउ। (त्रिः)। त्रिधातुरर्कोरकसोविमाना ॐ ३ हो। २ इया। ॐ ३ हो। हा २ इया। ॐ ३ हो ३॥ हाउ (३)। वाग्घहहहह। (त्रिः) ऐही २। (त्रिः)। ऐहिहाउवाक्। (त्रिः)। हाहाउ। (त्रिः)। हाउ (३) वा। इदं वापहिद बृहद्भस्। इहा। २३४५। हाउ (३)। वाग्घहहहह। (त्रिः)। ऐही २। (त्रिः) ऐहिहाउवाक्। (त्रिः)। आया उ। (त्रिः) अजस्त्रं ज्योता इरौ ३ हो। हा। हा २ इया। ॐ ३ हो। हा २ इया। ॐ ३ हो ३॥ हाउ (३) वाग्घहहहह। (त्रिः) ऐही २। (त्रिः) ऐहिहाउवाक्। (त्रिः) हाहाउ। (त्रिः)। हाउ (३) बा चराचराय बृहत इदं धाममिदं बृहद्भस्। इहा २३४५। हाउ (३)। वाग्धहहहह। (त्रिः) ऐही ५। (त्रिः)। ऐहिहाउवाक् (त्रिः)। हाहाउ (त्रिः) आयाउ। (त्रिः) हविरस्मिसर्वामौ ३ हो। हा २ इया ॐ ३ हो। हा २ इया। ॐ ३ हो २। हाउ (३)

वाग्घहहहह (त्रिः)। ऐहिहाउवाक्। (त्रिः)। हा हाउ। (त्रिः)। हाउ (३) वा॥ एयशोक्रान्भूतमततनत्प्रजाउसमचूकुपत्पशुभ्योहस्। इहा २३४५॥ ३॥ (अ०) आ नो भद्राः क्रतवो यन्तु विश्वतो ऽदब्धासो ऽअपरीतासऽ उद्भिदः। देवा नो यथा सदमिद्वृधे असन्नप्रायुवो रक्षितारो दिवे दिवे॥ ४ ॥ आवाहये कोटरि योगिनि त्वां यज्ञेत्र देवार्चितपादपद्मे। आगत्य रक्षां कुरु सप्ततन्तोर्गृहाण पूजां वरदे नमस्ते कोटर्यै नमः कोटरीमावाहयामि स्थापयामि॥ ५॥

५६- (ऋ०) जातवेदसे सुनवाम सोममरातीयतो नि दहाति वेदः। स नः पर्षदति दुर्गाणि विश्वा नावेव सिन्धुं दुरितात्यग्निः॥ १॥ (य०) एका च मे तिस्त्रश्च मे तिस्त्रश्च मे पञ्च च मे पञ्च च मे सप्त च मे सप्त च मे नव च मे नव च म एकादश च म एकादश च मे त्रयोदश च मे त्रयोदश च मे पञ्चदश च मे पञ्चदश च मे सप्तदश च मे सप्तदश च मे नवदश च मे नवदश च म एकविर्ठ० शतिश्च म एकविर्ठ० शतिश्च मे त्रयोविर्ठ० शतिश्च मे त्रयोविर्ठ० शतिश्च मे पञ्चविर्ठ० शतिश्च मे पञ्चविर्ठ० शतिश्च मे सप्तविर्ठ० शतिश्च मे सप्तविर्ठ शतिश्च मे नवविर्ठ० शतिश्च मे नवविर्ठ० शतिश्च म एकत्रिर्ठ० शच्च म एकत्रिर्ठ० शच्च मे त्रयत्रिर्ठ० शच्च मे यज्ञेन कल्पन्ताम्॥ २॥ (सा०) श्रायन्तइवसू ४ रायाम्॥ विश्वा २ इ दिन्द्रा २। स्यभा २ क्षाता। वासू निजातो जनिमा। नियोजा १ सा २॥ प्रतिभागन्न दो २ धिकाः। प्रा २३ ती॥ भागान्न ३ दा। हुम्। धिमा ३ः। ओ २३४ वा॥ हे २३४५॥ ३॥ (अ०) शं नो देवीरभिष्टय आपो भवन्तु पीतये। शं योरभि स्त्रवन्तु नः ॥ ४॥ एह्येहि मातर्वरदानदक्षे विशाध्वरे दैत्यविनाशकारिणि। त्वां स्थूलनासां विनता नमामः प्रसीद धन्ये प्रणतार्तिहन्त्रि॥ स्थूलनासिकायै नमः स्थूलनासिकामावाहयामि स्थापयामि॥ ५॥

५७- (ऋ०) ब्रह्मा देवानां पदवीः कवीनामृषिर्विप्राणां महिषो मृगाणाम्। श्येनो गृध्राणां स्वधितिर्वनानां सोमः पवित्रमत्येति

रेभन् ॥ १ ॥ (य०) ब्रह्माणि मे मतयः शर्ठ० सुतासः शुष्मऽ इयर्ति प्रभृतो मे अद्रिः। आशासते प्रतिहर्यन्त्युक्थेमा हरी वहतस्ता नो अच्छ ॥ २ ॥ (सा०) ब्रह्मा। ब्रा २३ ह्मा। जज्ञानं प्रथमं पुरस्तात्॥ विसाइ। वा २३ इसी। मतः सुरुचो वेन आवः ॥ सबू। सा २३ बू। ध्नियाउपमा अस्य वा इष्ठाः ॥ सताः सा २३ ताः। चयोनिमसतश्च वाइवा ३४३ः। ओ २३४५ इ। डा ॥ ३ ॥ (अ०) तेऽवदन् प्रथमा ब्रह्मकिल्बिषेऽकूपारः सलिलो मातरिश्वा। वीडुहरास्तप उग्रं मयोभूरापो देवीः प्रथमजा ऋतस्य॥ ४॥ आवाहये भूषणभूषिताङ्गीं विद्युत्प्रभां भासितदिव्यदेहाम्। विशाम्बरे देवि गृहाण पूजां देवैर्नुते ते वरदे नमोऽस्तु॥ विद्युत्प्रभायै नमः विद्युत्प्रभामावाहयामि स्थापयामि॥ ५॥

५८- (ऋ०) नि पस्त्यासु त्रितः स्तभूयन् परिवीतो योनौ सीददन्त। अतः संगृभ्या विशां दमूना विधर्मणायन्त्रैरीयतेन्नृन्॥ १॥ (य०) असंख्याता सहस्राणि ये रुद्रा अधि भूम्याम्। तेषार्ठ० सहस्रयोजनेऽव धन्वानि तन्मसि॥ २॥ (सा०) अग्नेयू ३ ऽङ्क्ष्वाहियेतवा। अश्वासोदेवसाधा २३ः। अरं वा २३ हो। तियाशा २३ वा ३४३ः। ओ २३४५ इ ॥ ३॥ (अ०) वरणो वारयाता अयं देवो वनस्पतिः। यक्ष्मो यो अस्मिन्नाविष्टस्तमु देवा अवीवरन्॥ ४॥ नमाम् आह्लादमयीं बलाढ्यां बलाकिकास्यां वरदां शुचिस्मिताम्। प्रविश्य यागेऽत्र मनोरथान्न विधेहि सत्यानखिलान् नमस्ते॥ बलाकास्यायै नमः बलाकास्यामावाहयामि॥ ५॥

५९- (ऋ०) हंसः शुचिषद् वसुरन्तरिक्षसद्धोता वेदिषदतिथिर्दुरोणसत्। नृषद् वरसदृतसद् व्योमसद्डजा गोजा ऋतजा अद्रिजा ऋतम्॥ १॥ (य०) सुपर्णोऽसि गरुत्मांस्त्रिवृत्ते शिरो गायत्रं चक्षुबृहद्रथन्तरे पक्षो। स्तोमऽ आत्मा छन्दार्ठ० स्यङ्गानि यजूर्ठ०षि नाम। साम ते तनूर्वामदेव्यं यज्ञा यज्ञियं पुच्छं धिष्ण्याः शफाः। सुपर्णोऽसि गरुत्मान्दिवं गच्छ स्वः पत॥ २॥ (सा०) अभाइमाहे। (त्रिः)।

चर्षणीधृतं मधवाना ३ मूक्था १ याऽ २ म्। इन्द्रं गिरो बृहतीरभ्या ३ नूषा १ ता २॥ व। वृधानं पुरुहूतः सु ३ वार्क्ता १ इ भी २:॥ अमर्त्यं जरमार्ठ०दि ३ वा इदा १ ईवे २। अभाइमाहे। (द्विः)। अभा २३ इ। मा २। हा २३४। औहो हो वा॥ सर्पसु वा २३४५: ॥ ३ ॥ (अ०) गन्धर्वाप्सरसः सर्पान्देवान्पुण्यजनान् पितॄन्। दृष्टानदृष्टानिष्णामि यथा सेनाममूं हनन् ॥ ४ ॥ मार्जारिके त्वामिह चिन्तयामि मार्जाररूपे निखिला घ हन्त्रीम्। संभावये योगिनि दिव्यरूपे गृहाण पूजां वरदे नमस्ते॥ मार्जयै नमः मार्जारीमावाहयामि स्थापयामि॥ ५ ॥

६०- (ऋ०) दक्षस्य वादिते जन्मनि व्रते राजाना मित्रावरुणा विवाससि। अतूर्तपन्थाः पुरुरथो अर्यमा सप्तहोता विषुरूपेषु जन्मसु॥ १॥ (य०) या ते रुद्र शिवा तनूरघोराऽपापकाशिनी। तया नस्तन्वा शन्तमया गिरिशन्ताभिचा कशीहि ॥ २॥(सा०) ओग्राइ। आयाही ३ वी इ तोया २ इ। तोया २ इ। गृणानोइ। व्यदातोया २ इ। तोया २ इ। नाइ होताया २२। त्सा २ यि। वा २३४ औ हो वा। ही २३४ षी ॥ ३ ॥ (अ०) मृगो न भीमः कुचरो गिरिष्ठाः परावत आ जगम्यात् परस्याः। सृकं संशाय पविमिन्द्र तिग्मं वि शत्रून् ताढि वि मृधो नुदस्व ॥ ४॥ आवाहयेऽहं कटपूतनां त्वां समस्तविघ्नौघविनाशदक्षाम्। वृन्दारकैर्वन्दितपादपद्मां नमामि देवीं परमार्तिहन्त्रीम्॥ कटपूतनायै नमः कटपूतनामावाहयामि स्थापयामि॥ ५॥

६१- (ऋ०) अदितिर्द्यौरदितिरन्तरिक्षमदितिर्माता स पिता स पुत्रः। विश्वे देवा अदितिः पञ्च जना अदितिर्जातमदितिर्जनित्वम् ॥ १ ॥ (य०) देवी द्यावापृथिवी मखस्य वामद्य शिरो राध्यासं देवयजने पृथिव्याः। मखाय त्वा मखस्य त्वा शीर्ष्णे॥ २ ॥(सा०) वृषा हाउ॥ पा २३४ वा। स्वाधारा २३४ या। मा २३४ या। मा २३४ रू। त्वा २३४ ता इ। चामत्सा २३४ रा॥ वा इश्वादधा २३॥ ना २ ओ १३४ औ हो वा॥ जा २३४ सा ॥ ३॥ (अ०) वृषेन्द्रस्य वृषा दिवो वृषा पृथिव्या अयम्। वृषा

विश्वस्य भूतस्य त्वमेकवृषो भव ॥४॥ अट्टाटहासामिह भीमरूपां राकाप्रभामान्त्रयुतां ज्वलन्तीम्। सर्वस्व लोकस्य विषादहन्त्रीमावाहयेस्मिन् विततेऽध्वरेऽहम्॥ अट्टाट्टहासायै नमः अट्टाट्टहासामा०॥५॥

६२- (ऋ०) न वा उ सोमो वृजिनं हिनोति न क्षत्रियं मिथुया धारयन्तम्। हन्ति रक्षो हन्त्यासद् वदन्तमुभाविन्द्रस्य प्रसितौ शयाते॥१॥ (य०) इदं विष्णुर्विचक्रमे त्रेधा निदधे पदम्। समूढमस्य पाठं० सुरे स्वाहा॥२॥(सा०) हाउ (३)। ऊ २ वदः। (त्रिः) वदोवदः। (त्रिः)। वदोनृम्णानिपुरायः। (त्रिः)। यमो हाउ। (त्रिः)। पितरो हाउ। (त्रिः)। भारुण्डो हाउ (त्रिः) इमꣳ स्तोमाम्। अर्हातेजा। तावेदसहोये ३। होये होये॥ हाउ (३)। ऊ २ वदः। (त्रिः)! वदोवदः। (त्रिः)। वदोनृम्णानिपुराणः। (त्रिः)। यमोहाउ। (त्रिः)। पितरो हाउ। (त्रिः)। भारुण्डो हाउ। (त्रिः) रथामिवा। संमाहेमा। मानीषयहोये ३। होये होये॥ हाउ (३)। ऊ २ वदः। (त्रिः)। वदोवदः। (त्रिः) वदोनृम्णानिपुरायः। (त्रिः)। यमोहाउ (त्रिः)। पितरो हाउ। (त्रिः) भारुण्डो हाउ। (त्रिः)। भद्राहिना। प्रमातिरा। स्यासꣳ सदहोये ३। होये होये॥ हाउ (३) ऊ २ वदः (त्रिः) वदोवदः। (त्रिः)। वदोनृम्णानिपुरायः। (त्रिः) यमोहाउ। (त्रिः)। पितरो हाउ। (त्रिः) भारुण्डो हाउ। (त्रिः)। अग्नाइसख्याइ। माराइषामा। वायन्तवहोये ३। होये होये॥ हाउ (३)। ऊ २ वदः। (त्रिः)। वदोवदः। (त्रिः) वदोनृम्णानिपुरायः। (त्रिः)। पितरोहाउ। (त्रिः) पितरो हाउ। भारुण्डोहाउ। (द्विः)। भारुण्डो ३ हाउ। वा॥ ए। वदोवदोनृम्णानिपुराययमोवः पितरो भारुण्डः। ए। वदोवदो नृम्णानिपुराययमोवः पितरो भारुण्डः। ए। व। वदोवदोनृम्णानिपुराययमोव पितरो भारुण्डा २३४५॥३॥ (अ०) अदितिर्मादित्यैः प्रतीच्या दिशः पातु बाहुच्युता पृथिवी द्यामिवोपरि। लोककृतः पथिकृतो यजामहे ये देवानां हुतभागा इह स्थ॥४॥ कामाक्षिसंसारमलापहन्त्रि विद्युत्प्रभा-

चन्द्रनिभानने च। एह्येहि यज्ञे सकलार्थदात्रि गृहाण पूजां वरदे नमस्ते॥ कामाक्षायै नमः कामाक्षीमावाहयामि स्थापयामि॥ ५॥

६३- (ऋ०) मा नः समस्य दूढ्य १: परिद्वेषसो अंहतिः। ऊर्मिर्न नावमा वधीत् ॥ १ ॥ (य०) वृष्णऽ ऊर्मिरसि राष्ट्रदाराष्ट्रं मे देहि स्वाहा वृष्णऽ ऊर्म्मिरसि राष्ट्रदाराष्ट्रममुष्मै देहि वृषसेनोसि राष्ट्रदाराष्ट्रम्मे देहि स्वाहा वृषसेनोऽसि राष्ट्रदाराष्ट्रममुष्मै देहि॥ २॥ (सा०) अहा। वो ३ हा। वो ३ हा। सनादग्नाइ। मृणसि। आतुधानान्। नत्वारक्षा। सी ३ पृत। नासुजिग्यूः॥ अनुदहा। सहमू। रान्कयादाः। अहा। वो ३ हा। वो ३ हा। माता इहेल्याः। मुक्षत। दा १४३ इ। वी ३ या ५ या ६५६॥ ३॥ (अ०) अङ्गेभ्यस्त उदराय जिह्वाया आस्याऽय ते। दद्भ्यो गन्धाय ते नमः॥ ४॥ मृगाक्षिवालार्कनिभामिह त्वामावाहये ज्ञानमयीं सुशीलाम्। ब्रह्मादि-देवार्चितपादयुग्मामागत्य यज्ञेऽत्र विधेहि भव्यम्॥ मृगाक्ष्यै नमः मृगाक्षीमावाहयामि स्थापयामि॥ ५॥

६४- (ऋ०) भद्रं कर्णेभिः शृणुयाम देवा भद्रं पश्येमाक्ष-भिर्यजत्राः। स्थिरैरङ्गैस्तुष्टुवां सस्तनूभिर्व्यशेम देवहितं यदायुः॥ १॥ (य०) भायै दार्वाहारं प्रभायाऽ अग्न्येधं ब्रध्नस्य विष्टपायाभिषेक्तारं वर्षिष्ठाय नाकाय परिवेष्टारं देवलोकाय पेशितारं मनुष्यलोकाय प्रकरितारर्ठ० सर्वेभ्यो लोकेभ्य उपसेक्तारमवऋत्यै वधायोपमन्थितारं मेधाय वासः पल्पूलीं प्रकामाय रजयित्रीम्॥ २॥ (सा०) वृषासोमा॥ द्युमा २ᳲ आसा २ इ। धृषादेषा ३ हा ३ इ। वार्ष व्रा २३४ ताः॥ वृषाधर्मा ३॥ इ ३ या॥ णा इदध्रिषे। इडा २३ भा ३४३। ओ २३४५ इ। डा॥ ३॥ (अ०) अभाशर्वौ मृदन्तं माभि यातं भूतपती नमो वाम्। प्रति हितामायतां मा विस्राष्टं मा नो हिंसिष्टं द्विपदो मा चतुष्पदः॥ ४॥ आवाहयेऽहं मृगलोचनां त्वामाकण्ठदीर्घनयनां मणिकुण्डलाढ्याम्। मन्दस्मितां मृगमदोज्ज्वलमालदेहां विशाध्वरं नो वरदे नमस्ते॥ मृगलोचनायै नमः मृगलोचनामावाहयामि स्थापयामि॥ ५॥

केवलं नामाऽनुक्रमेण क्षेत्रपालस्थापनम्

वायव्यकोण में सफेद वस्त्र से ढकी हुई पीठ पर चारो ओर रेखाओं को देकर। मध्य में पूर्व से पश्चिम, उत्तर से दक्षिण दो-दो रेखाएँ दें, नवग्रह की तरह नौ कोष्ठकों का निर्माण कर पूर्व दिशाओं में छ: षट्दल और उत्तर व ईशान के मध्य के कोष्ठों में सप्तदल का निर्माण करें, तत्पश्चात् यजमान अपनी पत्नी के साथ आसन पर बैठकर आचमन एवं प्राणायाम करें। तदुपरान्त आचार्य निम्न संकल्प यजमान से करावें-

देशकालौ सङ्कीर्त्य, अमुक गोत्रः अमुकशर्माऽहं (वर्माऽहं, गुप्तोऽहं, दासोऽहं) अस्मिन् धूमावतीहवनकर्मणि क्षेत्रपालपूजनं करिष्ये।

संकल्प के पश्चात् आचार्य क्षेत्रपाल का स्थापन निम्न नाममन्त्रों का उच्चारण करते हुए यजमान से करावें—

ॐ अजराय नमः अजरमावाहयामि स्थापयामि॥ १ ॥
ॐ व्यापकाय नमः व्यापकमावाहयामि स्थापयामि॥ २ ॥
ॐ इन्द्रचौराय नमः इन्द्रचौरमावाहयामि स्थापयामि॥ ३ ॥
ॐ इन्द्रमूर्तये नमः इन्द्रमूर्तिमावाहयामि स्थापयामि॥ ४ ॥
ॐ उक्ष्णे नमः उक्षाणमावाहयामि स्थापयामि॥ ५ ॥
ॐ कूष्माण्डाय नमः कूष्माण्डमावाहयामि स्थापयामि॥ ६ ॥
ॐ वरुणाय नमः वरुणमावाहयामि स्थापयामि॥ ७ ॥
ॐ वटुकाय नमः वटुकमावाहयामि स्थापयामि॥ ८ ॥
ॐ विमुक्ताय नमः विमुक्तमावाहयामि स्थापयामि॥ ९ ॥
ॐ लिप्तकाय नमः लिप्तकमावाहयामि स्थापयामि॥ १० ॥
ॐ लीलालोकाय नमः लीलालोकमावाहयामि स्थापयामि॥ ११ ॥
ॐ एकदंष्ट्राय नमः एकादंष्ट्रमावाहयामि स्थापयामि॥ १२ ॥

ॐ ऐरावताय नमः ऐरावतमावाहयामि स्थापयामि॥ १३॥
ॐ ओषधीघ्नाय नमः ओषधीघ्नमावाहयामि स्थापयामि॥ १४॥
ॐ बन्धनाय नमः बन्धनमावाहयामि स्थापयामि॥ १५॥
ॐ दिव्यकरणाय नमः दिव्यकरणमावाहयामि स्थापयामि॥ १६॥
ॐ कम्बलाय नमः कम्बलमावाहयामि स्थापयामि॥ १७॥
ॐ भीषणाय नमः भीषणमावाहयामि स्थापयामि॥ १८॥
ॐ गवयाय नमः गववमावाहयामि स्थापयामि॥ १९॥
ॐ घण्टाय नमः घण्टामावाहयामि स्थापयामि॥ २०॥
ॐ व्यालाय नमः व्यालमावाहयामि स्थापयामि॥ २१॥
ॐ अंशवे नमः अंशुमावाहयामि स्थापयामि॥ २२॥
ॐ चन्द्रवारुणाय नम चन्द्रवारुणमावाहयामि स्थापयामि॥ २३॥
ॐ घटाटोपाय नमः घटाटोपमावाहयामि स्थापयामि॥ २४॥
ॐ जटिलाय नमः जटिलमावाहयामि स्थापयामि॥ २५॥
ॐ क्रतवे नमः क्रतु मावाहयामि स्थापयामि॥ २६॥
ॐ घण्टेश्वराय नमः घण्टेश्वरमावाहयामि स्थापयामि॥ २७॥
ॐ विटकाय नमः विटकमावाहयामि स्थापयामि॥ २८॥
ॐ मणिमानाय नमः मणिमानमावाहयामि स्थापयामि॥ २९॥
ॐ गणवन्धाय नमः गणवन्धमावाहयामि स्थापयामि॥ ३०॥
ॐ मुण्डाय नमः मुण्डमावाहयामि स्थापयामि॥ ३१॥
ॐ वर्वूकराय नमः वर्वूकरमावाहयामि स्थापयामि॥ ३२॥
ॐ सुधापाय नमः सुधापमावाहयामि स्थापयामि॥ ३३॥
ॐ वैनाय नमः वैनमावाहयामि स्थापयामि॥ ३४॥
ॐ पवनाय नमः पवनमावाहयामि स्थापयामि॥ ३५॥
ॐ ढुण्ढकरणाय नमः ढुण्ढकरणमावाहयामि स्थापयामि॥ ३६॥

ॐ स्थविराय नमः स्थविरमावाहयामि स्थापयामि॥ ३७॥
ॐ दन्तुर नमः दन्तुरा मावाहयामि स्थापयामि॥ ३८॥
ॐ धनदाय नमः धनदमावाहयामि स्थापयामि॥ ३९॥
ॐ नागकर्णाय नमः नागकर्णमावाहयामि स्थापयामि॥ ४०॥
ॐ महाबलाय नमः महाबलमावाहयामि स्थापयामि॥ ४१॥
ॐ फेत्काराय नमः फेत्कारमावाहयामि स्थापयामि॥ ४२॥
ॐ वीरकाय नमः वीरकमावाहयामि स्थापयामि॥ ४३॥
ॐ सिंहाय नमः सिंहमावाहयामि स्थापयामि॥ ४४॥
ॐ मृगाय नमः मृगमावाहयामि स्थापयामि॥ ४५॥
ॐ यक्षाय नमः यक्षमावाहयामि स्थापयामि॥ ४६॥
ॐ मेघवाहनाय नमः मेघवाहनमावाहयामि स्थापयामि॥ ४७॥
ॐ तीक्ष्णाय नमः तीक्ष्णमावाहयामि स्थापयामि॥ ४८॥
ॐ अमलाय नमः अमलमावाहयामि स्थापयामि॥ ४९॥
ॐ शुक्राय नमः शुक्रमावाहयामि स्थापयामि॥ ५०॥

पश्चात्—आचार्य निम्न मन्त्र और वाक्य का उच्चारण करते हुए अजरादि क्षेत्रपालों की प्रतिष्ठा करावें–

ॐ मनो जूतिर्जुषतामाज्यस्य बृहस्पतिर्यज्ञमिमं तनोत्वरि यज्ञठ० समिमं दधातु। विश्वेदेवास इह मादयन्तामो ँ३। प्रतिष्ठ॥ ॐ अजरादिक्षेत्रपालाः सुप्रतिष्ठिताः वरदाः भवन्तु।

कुशकण्डिकाविधिः

अग्नेर्दक्षिणतो ब्रह्मासनम्। अग्नेरुत्तरतः प्रणीतासनद्वयम्। ब्रह्मा-सने ब्रह्मोपवेशनम्। यावत्कर्म समाप्यते तावत्त्व ब्रह्मा भव 'भवामि' इति। पठित्वा तत्रोपवेशनम्। 'भवामि' इति ब्रह्मणः प्रत्युक्तिः। ब्रह्मा वाग्यतश्च भवेत्। ततः प्रणीतापात्रं सव्यहस्ते धृत्वा दक्षिणहस्त-गृहीतेनोदकपात्रेण तत्र जलं सम्पूर्य पश्चादास्तीर्णकुशेषु दक्षिणहस्तेन निधाय (कुशैराच्छाद्य तत्पात्रमालभ्य ब्रह्मणो मुखमवलोक्य ईक्षणमात्रेण ब्रह्मणाऽनुज्ञातः उत्तरत आस्तीर्णेषु कुशेषु निदध्यात्। ततो द्वादशानां परिस्तरण कुशानां चतुरो भागान् वामहस्ते कृत्वा एकैकभागेन आग्नेयादीशानान्तम्, ब्रह्मणोऽग्निपर्यन्तम्, नैर्ऋत्याद्वाय-व्यान्तं अग्नितः प्रणीतापर्यन्तम्। इतरथा वृत्तिः। तत उत्तरतः स्तीर्णकुशेषु द्विशः पात्राणि यथा सम्भवं न्युब्जानि उदक्संस्थानि प्राक्संस्थानि वा आसादयेत्। पवित्रे छेदनकुशाः। प्रोक्षणीपात्रम्। आज्यस्थाली। चरुस्थाली। संमार्जनकुशाः पञ्च। उपयमनकुशाः सप्त। समिधस्तिस्त्रः। स्रुवः। आज्यम्। तण्डुला। पूर्णपात्रम्। उपकल्पनीयानि-द्रव्याणि निधाय तत्तद्ग्रहवस्त्राणि। अधिदेवताद्यर्थं श्वेतानि। तत्तद्ग्रहवर्णाः। तत्तद्ग्रहपुष्पाणि। तत्तद्ग्रहधूपाः तत्तदग्रहनैवेद्यानि। फलानि। दक्षिणाः वितानम्। अर्कादिसमिधः। सयवतिलाः पूर्णाहुत्यर्थं नारिकेलवस्त्रादि। ततः पवित्रकरणम्। आसादितकुशपत्रद्वयं स्थौल्येन समं मध्यशल्यरहितं वामहस्ते कृत्वा अग्रतः प्रादेशमात्रं परिमाय मूले तयोरुपरि कुशत्रयमुदग्ग्रं निधाय तत्कुशत्रयं तयोर्मूलभागेन प्रादक्षिण्येन परिवेष्ट्य तयोः प्रादेशपरिमणामग्रभागं वामस्ते कृत्वा अवशिष्टं मूलभागं कुशत्रयं च दक्षिणहस्ते धृत्वा दक्षिणहस्तेन त्रोटयेत् परित्यजेच्च। शिष्टं पत्रद्वयं पवित्रम्। तस्मिन्पत्रद्वयेऽविश्लेषाय ग्रथिं कुर्यात्। ततः प्रागग्रं प्रोक्षणीपात्रं प्रणीतासन्निधौ निधाय तत्र सपवित्रेण पात्रान्तरेण हस्तेन वा प्रणीतोदकं त्रिरासिच्य प्रोक्षणीपात्रं सव्ये कृत्वा दक्षिणेन वामहस्तधृतमेव

कर्णसमुत्थाय नीचैः कृत्वा प्रणीतोदकेनं पवित्रानोतेनोत्तानहस्तेन प्रोक्षणीः प्रोक्षयेत्। ततः प्रोक्षणीजलेन आज्यस्थालीं प्रोक्षणम्। चरुस्थालीं प्रोक्षणम्। समार्जनकुशानां प्रोक्षणम्। उपयमनकुशानां प्रोक्षणम्। समिधां प्रोक्षणम्। स्रुवस्य प्रोक्षणम्। आज्यस्य प्रोक्षणम्। पूर्णपात्रस्य प्रोक्षणम्। ततस्ते पवित्रे प्रोक्षणीपात्रे संस्थाप्य प्रोक्षणीपात्रमग्निप्रणतयोर्मध्ये निदध्यात्। ततोऽग्नेः पश्चादाज्यस्थालीं निधाय तत्राज्यं प्रक्षिपेत्। एवं चरुस्थालीमग्नेः पश्चिमतो निधाय तत्र सपवित्रायां त्रिः प्रक्षालितान् तण्डुलान् प्रक्षिप्य प्रणीतोदकमासिच्योपयुक्तं जलं तत्र निनीय ब्रह्मदक्षिणत आज्यं आचार्य उत्तरतश्चरुमदग्धमस्त्रावितमण्डमन्तरूष्मपक्वं सुशृतं पचेत्। (केवलाज्ये तु उत्तराश्रितामाज्य स्थालीमग्नावारोपयेत्।) ततोऽग्नेर्ज्वलदुल्मुकमादाय ईशानादिप्रदक्षिणमीशान पर्यन्तमग्निमाज्यचर्वोः परितं भ्रामयित्वोल्मुकमग्नौ प्रक्षिप्य अप्रदक्षिणं हस्तमीशानकोणपर्यन्तं पर्यावर्तयेत्। अर्द्धश्रिते चरौ स्रुवं गृहीत्वाऽधोबिलं सकृत् प्रतप्य संमार्जनकुशानामग्रैरन्तरतः उपरिमूलादारभ्याग्रपर्यन्तं प्राञ्चं संमृज्य कुशमूलैर्बहिरधः प्रदेशे अग्रादारभ्य प्रत्यञ्चं समृज्य संमार्जन कुशानग्नौ प्रक्षिप्य प्रणीतोदकेन स्रुवमभ्युक्ष्य पुनःस्रुवं प्रयप्य दक्षिणस्यां दिशि तं तस्थापयेत्। तत् शृतं चरुं स्रुवेण गृहीतेनाज्येनाभिघार्य आज्यस्थालीं चरोः पूर्वेणानीयोत्तरत उद्वास्याग्नेः पश्चिमतः स्थापयेत्। ततश्चरुमादाय उत्तरत उद्वास्य आज्यस्य पूर्वेणानीय आज्यस्योत्तरतः स्थापयेत्। ततो दक्षिणहस्तस्याङ्गुष्ठानामिकाभ्यां पवित्रयोर्मूलं सङ्गृह्य वामहस्तस्याङ्गुष्ठानामिकाभ्यां पवित्रयोर्मूलं संङ्गृह्य वामहस्तस्याङ्गुष्ठा नामिकाभ्यां तयोरग्रं संङ्गृह्य ऊर्ध्वाग्रेऽनम्रीकृत्य धारयन्नेवाज्ये प्रक्षिप्याज्यस्यात्पवनं कुर्यादुच्छालयेत्। तत आज्यमवेक्ष्य सत्यपद्रव्ये तन्निरस्येत्। ततः पूर्ववत् पवित्रे गृहीत्वाप्रोक्षणीनामपामुत्पवनं कुर्यात्। ततो वामहस्ते उपयमनमादाय दक्षिणेन प्रादेशमात्रीः पालाशीस्तिस्त्रः समिधो घृताक्ता द्व्यङ्गुलादूर्ध्वं मध्यमानामिकांगुष्ठैर्मूलभागे धृतास्तर्जन्य-

ग्रवत्स्थूलास्तन्त्रेणग्रौतूष्णीं प्रक्षिप्य सपवित्रेण प्रोक्षण्युदकेन चुलुकगृहीतेन ईशानादि—प्रदक्षिणमीशानकोणपर्यन्तं पर्युक्ष्य अप्रदक्षिणमीशानकोण-पर्यन्तं हस्तं पर्यावर्तयेत्। ततः पवित्रे प्रणीतासु निधाय दक्षिणं जान्वाच्य ब्रह्मणा कुशैरन्वारब्ध उपयमनकुशसहितं प्रसारिताङ्गुलि हस्तं हृदि निधाय दक्षिणहस्तेन मूले चतुरङ्गुल त्यक्त्वा शङ्खसन्निभमुद्रया स्त्रुवं गृहीत्वा समिद्धतमेऽग्नौ वायव्य कोणादारभ्याग्निकोणपर्यन्तं प्राञ्चं वा सन्तघृतधारया मनसा प्रजापतिं ध्यायन् स्त्रुवेण तुष्णीं सशेषं मौनी जुहुयात्। नात्र स्वाहाकारः। इदं प्रजापतये न मम इति यजमानेन त्यागः कर्तव्यः। होमत्यागानन्तरं स्त्रुवावशिष्टस्याज्यस्य सर्वत्र प्रोक्षणीपात्रे प्रक्षेपः कार्यः। ततो निर्ऋतिकोणादारभ्येशानकोणपर्यन्तं प्राञ्चं वा— ॐ इन्द्राय स्वाहा इति जुहुयात्। 'इदमिन्द्राय न मम' इति त्यजेत्। तत उत्तरपूर्वार्द्धे-ॐ अग्नये स्वाहा इदमग्नये न मम इति हुत्वा दक्षिण-पूर्वार्द्धे-ॐ सोमाय स्वाहा-इदं सोमाय न मम इति जुहुयात्।

संकल्प—अस्मिन् धूमावतीहवनकर्मणि इमानि उपकल्पितानि हवनीयद्रव्याणि या या यक्ष्यमाणदेवतास्ताभ्यस्ताभ्यो मया परित्यक्तानि न मम। यथा दैवतानि सन्तु॥

वराहुतिः

आचार्य निम्न दो मन्त्रों का क्रम से उच्चारण करते हुए गणेश व अम्बा के लिए एक-एक घृताहुति हवनकुण्ड में यजमान से प्रदान करावें—

ॐ गणानां त्वा गणपतिर्ठ० हवामहे प्रियाणां त्वा प्रियपतिर्ठ० हवामहे निधीनां त्वा निधीपतिर्ठ० हवामहे वसो मम। आहमजानि गर्भधमात्वमजासि गर्भधम् स्वाहा॥

ॐ अम्बेऽअम्बिकेऽम्बालिके न मा नयति कश्चन। ससस्त्यश्वकः सुभद्रिकां काम्पीलवासिनीम् स्वाहा॥

ग्रहादिहवनम्

आचार्य ' ॐ आ कृष्णेन० ' से ' ॐ स्योना पृथिवि० ' पर्यन्त एक-एक मन्त्र का उच्चारण करते हुए यजमान से हवनकुण्ड में हवन करावें—

ॐ आ कृष्णेन रजसा वर्तमानो निवेशयन्नमृतं मर्त्यं च। हिरण्ययेन सविता रथेना देवो याति भुवनानि पश्यन् स्वाहा ॥ १ ॥

ॐ इमं देवाऽअसपत्नर्ठ० सुवद्ध्वं महते क्षत्राय महते ज्यैष्ठ्याय महते जानराज्यायेन्द्रस्येन्द्रियाय। इममपुष्य पुत्रममुष्यै पुत्रमस्यै विशऽएष वोऽमी राजा सोमोऽस्माकं ब्राह्मणानार्ठ० राजा स्वाहा ॥ २ ॥

ॐ अग्निर्मूर्द्धा दिवः ककुत्पतिः पृथिव्या अयम्। अपार्ठ० रेतार्ठ०सि जिन्वति स्वाहा ॥ ३ ॥

ॐ उद्बुध्यस्वाग्ने प्रतिजागृहि त्वमिष्टापूर्तेसर्ठ० सृजेथामयं च। अस्मिन्त्सधस्थेऽअध्युत्तरस्मिन् विश्वेदेवा कर्ताश्च सीदत स्वाहा ॥ ४ ॥

ॐ बृहस्पते अति यदर्यो अर्हाद्युमद्विभातिक्रतुमज्जनेषु। यद्दीद-यच्छवस ऽऋतप्रजात तदस्मासु द्रविणं धेहि चित्रम् स्वाहा ॥ ५ ॥

ॐ अन्नात्परिस्रुतो रसं ब्रह्मणा व्यपिबत्क्षत्रं पयः सोमं प्रजापतिः। ऋतेन सत्त्यमिन्द्रियं विपानर्ठ० शुक्रमन्धस ऽइन्द्रस्येन्द्रियमिदं पयोऽमृतं मधु स्वाहा ॥ ६ ॥

ॐ शं नो देवीरभिष्ट्य आपो भवन्तु पीतये शंयोरभिस्त्रवन्तु नः स्वाहा ॥ ७ ॥

ॐ कयानश्चित्रऽआभुवदूती सदावृधः सखा। कया शचिष्ठया वृता स्वाहा ॥ ८ ॥

ॐ केतुं कृण्वन्नकेतवे पेशो मर्या अपेशसे समुषद्भिरजायथाः स्वाहा ॥ ९ ॥

ॐ त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्द्धनम्। उर्वारुकमिव बन्धनान्नमृत्योर्मुक्षीय मा ऽमृतात् स्वाहा ॥ १० ॥

ॐ श्रीश्च ते लक्ष्मीश्च पत्न्यावहोरात्रे पार्श्वे नक्षत्राणि रूपमश्विनौ व्यात्तम्। इष्णन्निषाणामुं म ऽइषाण सर्वलोकं म इषाण स्वाहा ॥ ११ ॥

ॐ यदक्रन्द्रः प्रथमं जायमान ऽद्यन्त्समुद्रादुत वा पुरीषात्। श्ये नस्य पक्षा हरिणस्य बाहू उपस्तुयं महि जातं ते ऽअर्वन् स्वाहा॥ १२॥

ॐ विष्णोर राटमसि विष्णोः श्नप्त्रे स्थो विष्णोः स्यूरसि विष्णोर्ध्रुवोऽसि वैष्णवमसि विष्णवे त्वा स्वाहा॥ १३॥

ॐ आ ब्रह्मन्ब्राह्मणो ब्रह्मवर्चसी जायतामा राष्ट्रे राजन्यः शूर इषव्योऽतिव्याधी महारथो जायतां दोग्ध्री धेनुर्वोढानड्वानाशुः सप्तिः पुरन्धिर्योषा जिष्णु रथेष्ठाः सभेयो युवास्य यजमानस्य वीरो जायतां निकामे निकामे नः पर्जन्यो वर्षतु फलवत्यो न ओषधयः पच्यन्तां योगक्षेमो नः कल्पताम् स्वाहा॥ १४॥

ॐ सजोषा इन्द्र सगणो मरुद्भिः सोमं पिब वृत्रहा शूर विद्वान्। जहि शत्रूँ ठ०२॥ रप मृधो नुदस्वाथाभयं कृणुहि विश्वतो नः स्वाहा॥ १५॥

ॐ यमाय त्वाङ्गिरस्वते पितृमते स्वाहा। स्वाहा घर्माय स्वाहा घर्मः पित्रे स्वाहा॥ १६॥

ॐ कार्षिरसि समुद्रस्य त्वाक्षित्या उन्नयामि। समापो अद्भिरग्मत समोषधीभिरोषधीः स्वाहा॥ १७॥

ॐ चित्रावसो स्वस्ति ते पारमशीय स्वाहा॥ १८॥

ॐ अग्निं दूतं पुरो दधे हव्यवाहमुप ब्रुवे। देवाँ२॥ आसादयादिह स्वाहा॥ १९॥

ॐ आपो हि ष्ठा मयोभुवस्ता न ऊर्जे दधातन। महेरणाय चक्षसे स्वाहा॥ २०॥

ॐ स्योना पृथिवी नो भवानृक्षरा निवेशनी। यच्छा नः शर्म सप्रथाः स्वाहा॥ २१॥

ॐ तद्विष्णोः परमं पदठं० सदा पश्यन्ति सूरयः। दिवीव चक्षुराततम् स्वाहा॥ २२॥

ॐ इन्द्र आसां नेता बृहस्पतिर्दक्षिणा यज्ञः पुर एतु सोमः। देवसेनानामभिभञ्जतीनां जयन्तीनां मरुतो यन्त्वग्रम् स्वाहा॥ २३॥

ॐ अदित्यै रास्नासीन्द्राण्या उष्णीषः। पूषासि घर्माय दीष्व स्वाहा॥ २४॥

ॐ प्रजापते न त्वदेतान्यन्यो विश्वा रूपाणि परि ता बभूव। यत्कामास्ते जुहुमस्तन्नो अस्त्वयममुष्य पितासावस्य पिता वयर्ठ० स्याम पतयो रयीणाम् स्वाहा॥ २५॥

ॐ नमोऽस्तु सर्पेभ्यो ये के च पृथिवी मनु। ये अन्तरिक्षे ये दिवि तेभ्यः सर्पेभ्यो नमः स्वाहा॥ २६॥

ॐ ब्रह्म जज्ञानं प्रथमं पुरस्ताद्वि सीमतः सुरुचो वेन आवः। स बुध्न्या उपमा अस्य विष्ठाः सतश्च योनिमसतश्च विवः स्वाहा॥ २७॥

ॐ गणानां त्वा गणपतिर्ठ० हवामहे प्रियाणां त्वा प्रियपतिर्ठ० हवामहे निधीनां त्वा निधिपतिर्ठ० हवामहे वसो मम। आहमजानि गर्भधमा त्वमजासि गर्भधम् स्वाहा॥ २८॥

ॐ अम्बे अम्बिकेऽम्बालिके न मा नयति कश्चन। ससस्त्यश्वकः सुभद्रिकां काम्पीलवासिनीम् स्वाहा॥ २९॥

ॐ वायो ये ते सहस्त्रिणो रथासस्तेभिरागहि। नियुत्वान् सोमपीतये स्वाहा॥ ३०॥

ॐ घृतं घृतपावनः पिबत वसां वसापावानः पिबतान्तरिक्षस्य हविरसि स्वाहा। दिशः प्रदिश आदिशो विदिश उद्दिशो दिग्भ्यः स्वाहा॥ ३१॥

ॐ या वां कशा मधुमत्यश्विना सूनृतावती। तया यज्ञं मिमिक्षतम् स्वाहा॥ ३२॥

ॐ वास्तोष्पते प्रतिजानीह्यस्मान्स्वावेशो ऽअनमीवा भवो नः। यत्वेमहे प्रति तन्नो जुषस्व शन्नो भव द्विपदे शं चतुष्पदे स्वाहा॥ ३३॥

ॐ नहि स्पशमविदन्नन्यमस्माद्वैश्वानरात्पुरएतारमग्नेः। एमेनमवृधन्न-मृता अमर्त्यं वैश्वानर क्षैत्रजित्याय देवाः स्वाहा॥ ३४॥

ॐ त्रातारमिन्द्रमवितारमिन्द्रर्ठ० हवे हवे सुहवर्ठ० शूरमिन्द्रम्। ह्वयामि शक्रं पुरुहूतमिन्द्रर्ठ० स्वस्ति नो मघवा धात्विन्द्रः स्वाहा॥ ३५॥

ॐ त्वं नो अग्ने तव देव पायुभिर्मघोनो रक्ष तन्वश्च वन्द्य। त्राता तोकस्य तनये गवामस्य निमेषर्ठ० रक्षमाणस्तव व्रते स्वाहा॥ ३६॥

ॐ यमाय त्वाङ्गिरस्वते पितृमते स्वाहा। स्वाहा घर्माय स्वाहा घर्मः पित्रे स्वाहा॥ ३७॥

ॐ असुन्वन्तमयजमानमिच्छ स्तेनस्येत्यामन्विहि तस्करस्य। अन्यमस्मदिच्छ सा त इत्या नमो देवि निर्ऋते तुभ्यमस्तु स्वाहा॥ ३८॥

ॐ तत्त्वा यामि ब्रह्मणा वन्दमानस्तदाशास्ते यजमानो हविर्भिः। अहेडमानो वरुणेह बोध्युरुशर्ठ०स मा न आयुः प्रमोषीः स्वाहा॥ ३९॥

ॐ आ नो नियुद्भिः शतिनीभिरध्वर्ठ० सहस्त्रिणीभिरुपयाहि यज्ञम्। वायो अस्मिन्सवने मादयस्व यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः स्वाहा॥ ४०॥

ॐ वयर्ठ० सोम व्रते तव मनस्तनूषु बिभ्रत। प्रजावन्तः सचेमाहि स्वाहा॥ ४१॥

ॐ तमीशानं जगतस्तस्थुषस्पतिं धियं जिन्वमवसे हूमहे वयम्। पूषा नो यथा वेदसामसद्वृधे रक्षिता पायुरदब्धः स्वस्तये स्वाहा॥ ४२॥

ॐ अस्मे रुद्रा मेहना पर्वतासो वृत्रहत्ये भरहूतौ सजोषाः। यः शर्ठ०सते स्तुवते धायि पज्र इन्द्रज्येष्ठा अस्माँ२॥ अवन्तु देवाः स्वाहा॥ ४३॥

ॐ स्योना पृथिवि नो भवानृक्षरा निवेशनि। यच्छा नः शर्म स प्रथाः स्वाहा॥ ४४॥

अथवा

केवलं नामाऽनुक्रमेण ग्रहादिहवनम्

ॐ सूर्याय स्वाहा, सोमाय स्वाहा, भौमाय स्वाहा, बुधाय स्वाहा, बृहस्पतये स्वाहा, शुक्राय स्वाहा, शनैश्चराय स्वाहा, राहवे स्वाहा, केतवे स्वाहा, ईश्वराय स्वाहा, उमायै स्वाहा, स्कन्दाय स्वाहा, विष्णवे

स्वाहा, ब्रह्मणे स्वाहा, इन्द्राय स्वाहा, यमाय स्वाहा, कालाय स्वाहा, चित्रगुप्ताय स्वाहा, अग्नये स्वाहा, अद्भ्यो स्वाहा, पृथिव्यै स्वाहा, विष्णवे स्वाहा, इन्द्राय स्वाहा, इन्द्राण्यै स्वाहा, प्रजापतये स्वाहा, सर्पेभ्यो स्वाहा, ब्रह्मणे स्वाहा, गणपतये स्वाहा, दुर्गायै स्वाहा, वायवे स्वाहा, आकाशाय स्वाहा, अश्विनौ स्वाहा, वास्तोष्पतये स्वाहा, क्षेत्राधिपतये स्वाहा, इन्द्राय स्वाहा, अग्नये स्वाहा, यमाय स्वाहा, निर्ऋतये स्वाहा, वरुणाय स्वाहा, वायवे स्वाहा, सोमाय स्वाहा, ईशानाय स्वाहा, ब्रह्मणे स्वाहा, अनन्ताय स्वाहा।

धूमावतीवैदिकमन्त्रस्य न्यासः

विनियोगः—'ॐ धूम्रा बभ्रुनीकाशेति मन्त्रस्य' प्रजापतिर्ऋषिः, जगतीछन्दः, धूमावती देवता हवने विनियोगः।

ऋष्यादिन्यासः—ॐ प्रजापतिर्ऋषये नमः शिरसि। ॐ जगतीछन्दसे नमः मुखे। ॐ धूमावतीदेवतायै नमः हृदि। ॐ हवनाय नमः गुह्ये। ॐ विनियोगाय नमः सर्वाङ्गे।

करन्यासः—'ॐ धूम्रा बभ्रुनीकाशा' अङ्गुष्ठाभ्यां नमः। 'ॐ पितॄणाꣳ सोमवतां' तर्जनीभ्यां नमः। 'ॐ बभ्रवो धूम्रनीकाशाः' मध्यमाभ्यां नमः। 'ॐ पितॄणां बर्हिषदाम्' अनामिकाभ्यां नमः। 'ॐ कृष्णा बभ्रुनीकाशाः पितॄणामग्निष्वात्तानां' कनिष्ठाकाभ्यां नमः। 'ॐ कृष्णाः पृषन्तस्त्रैयम्बकाः' करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः।

हृदयादिन्यासः—'ॐ धूम्रा बभ्रुनीकाशा' हृदयाय नमः। 'ॐ पितॄणाꣳ सोमवतां' शिरसे स्वाहा। 'ॐ बभ्रवो धूम्रनीकाशाः' शिखायै वषट्। 'ॐ पितॄणां बर्हिषदां' कवचाय हुम्। 'ॐ कृष्णा बभ्रुनीकाशाः पितॄणामग्निष्वात्तानां' नेत्रत्रयाय वौषट्। 'ॐ कृष्णाः पृषन्तस्त्रैयम्बकाः' शिरसि।

मन्त्रन्यासः—'ॐ धूम्रा बभ्रुनीकाशा' ललाटे। 'ॐ पितॄणाꣳ सोमवतां' मुखे। 'ॐ बभ्रवो धूम्रनीकाशाः' हृदये। 'ॐ पितॄणां

बर्हिषदां' नाभौ। 'ॐ कृष्णा बभ्रुनीकाशा:' ऊर्वो:। 'ॐ पितृणा-मग्निष्वात्तानां' जानुनो:। 'ॐ कृष्णा: पृषन्त:' गुल्फयो:। 'ॐ त्रैयम्बका:' पादयो:।

ध्यानम्

धूम्राभां धूम्रवस्त्रां प्रकटितदशनां मुक्तबालाम्बराढ्यां
काकाङ्कस्यन्दनस्थां धवलकरयुगां शूर्पहस्तातिरूक्षाम्।
नित्यं क्षुत्क्षान्तदेहां मुहुरतिकुटिलां वारिवाञ्छाविचित्तां
ध्यायेद् धूमावतीं वामनयनयुगलां भीतिदां भीषणास्याम्॥

भावार्थ—धूम्र आभा से युक्त, धूमिल वस्त्र (अपनी देहयष्टि पर) धारण करनेवाली, बाहर दिखाई देनेवाले दाँतों से युक्त, बिखरे हुए केशों और वस्त्रों से युक्त काक (कौआ) के चिह्न से युक्त ध्वजावाले रथ पर विराजित, धवल वर्ण के दोनों हाथों वाली, हाथों में सूप धारण करनेवाली, रुक्ष शरीर-वाली, नित्य (सदैव) भूख-प्यास से आकुल विग्रह वाली, अत्यन्त कुटिल, जल की इच्छा से व्यग्र चित्तवाली, रोषयुक्त नेत्रयुगल वाली, भय देनेवाली और भयंकर मुखमण्डलवाली देवी धूमावती का (इस प्रकार) ध्यान करना चाहिए।

प्रधानाहुति:

आचार्य धूमावती देवी का हवन करवाने के लिए उनके निम्न वैदिक मन्त्र का उच्चारण करते हुए एक लाख आहुति हवनकुण्ड में प्रदान करावें—

ॐ धूम्रा बभ्रुनीकाशा पितृणाᳬ० सोमवतां बभ्रवो धूम्रनीकाशा: पितृणां बर्हिषदां कृष्णा बभ्रुनीकाशा: पितृणामग्निष्वात्तानां कृष्णा: पृषन्तस्त्रैयम्बका: स्वाहा॥

(अथवा)

धूमावतीतन्त्रोक्तमन्त्रस्य न्यासः

विनियोग:—अस्य धूमावतीमन्त्रस्य पिप्पलादऋषिः निवृच्छन्दः ज्येष्ठा देवता धूंबीजं स्वाहा शक्तिः धूमावती कीलकं ममाभीष्टसिद्ध्यर्थे हवने विनियोगः।

ऋष्यादिन्यास:—ॐ पिप्पलाद ऋषये नमः शिरसि। निवृच्छन्दसे नमः मुखे। ज्येष्ठादेवतायै नमः हृदि। धूं बीजाय नमः गुह्ये। स्वाहा शक्तये नमः पादयोः। धूमावती कीलकाय नमः नाभौ। विनियोगाय नमः सर्वाङ्गे।

करन्यास:—ॐ धूं धूं अङ्गुष्ठाभ्यां नमः। ॐ धूं तर्जनीभ्यां नमः। ॐ मां मध्यमाभ्यां नमः। ॐ वं अनामिकाभ्यां नमः। ॐ त्यैं कनिष्ठिकाभ्यां नमः। ॐ स्वाहा करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः।

हृदयादिषडङ्गन्यास:—ॐ धूं धूँ हृदयाय नमः। ॐ धूं शिरसे स्वाहा। ॐ मां शिखायै वषट्। ॐ वं कवचाय हुम्। ॐ त्यैं नेत्रत्रयाय वौषट्। ॐ स्वाहा अस्त्राय फट्।

ध्यानम्

विवर्णा चञ्चला दुष्टा दीर्घा च मलिनाम्बरा।
विमुक्तकुन्तला रूक्षा विधवाविरलद्विजा॥
काकध्वजरथारूढा विलम्बितपयोधरा।
शूर्पहस्तातिरक्ताक्षीधृतहस्ता वरान्विता॥
प्रवृद्धघोणा तु भृशं कुटिला कुटिलेक्षणा।
क्षुत्पिपासार्दिता नित्यं भयदा कलहास्पदा॥

भावार्थ—खुले मुख वाली चंचल, दुष्ट, लम्बी, मलीन वस्त्रों को धारण करने वाली, खुले केशों वाली, रूक्ष, विधवा, टेढ़े-मेढ़े दाँतों वाली, कौए का ध्वज जिस रथ पर लगा हो उस पर बैठी हुई, लम्बे-लम्बे स्तनों वाली, हाथ में सूप ली हुई, अत्यन्त लाल आँखों वाली, हाथ पकड़ी हुई, वरमुद्रा से युक्त, बहुत बड़ी नाक वाली, अत्यन्त टेढ़ी, टेढ़ा देखने वाली, भूख और प्यास से व्याकुल, सदा भय देने वाली, कलहप्रिय धूमादेवी हैं॥

प्रधानाहुतिः

आचार्य धूमावती देवी का हवन करवाने के लिए उनके तन्त्रोक्त मन्त्र का उच्चारण करते हुए एक लाख आहुति हवनकुण्ड में प्रदान करावें—

ॐ धूं धूं धूमावत्यै स्वाहा॥

वास्तुदेवताहवनम्

आचार्य शिख्यादि देवताओं के निम्न नाममन्त्रों का उच्चारण करते हुए यजमान से कुण्ड में हवन करावें—

ॐ शिखिने स्वाहा, ॐ पर्जन्याय स्वाहा, ॐ जयन्ताय स्वाहा, ॐ कुलिशायुधाय स्वाहा, ॐ सूर्याय स्वाहा, ॐ सत्याय स्वाहा, ॐ भृशाय स्वाहा, ॐ आकाशाय स्वाहा, ॐ वायवे स्वाहा, ॐ पूष्णे स्वाहा, ॐ वितथाय स्वाहा, ॐ गृहक्षताय स्वाहा, ॐ यमाय स्वाहा, ॐ गन्धर्वाय स्वाहा, ॐ भृङ्गराजाय स्वाहा, ॐ मृगाय स्वाहा, ॐ पितृभ्यः स्वाहा, ॐ दौवारिकाय स्वाहा, ॐ सुग्रीवाय स्वाहा, ॐ पुष्पदन्ताय स्वाहा, ॐ वरुणाय स्वाहा, ॐ असुराय स्वाहा, ॐ शेषाय स्वाहा, ॐ पापाय स्वाहा, ॐ रोगाय स्वाहा, ॐ अहये स्वाहा, ॐ मुख्याय स्वाहा, ॐ भल्लाटाय स्वाहा, ॐ सोमाय स्वाहा, ॐ सर्प्पेभ्यः स्वाहा, ॐ अदित्यै स्वाहा, ॐ दित्यै स्वाहा, ॐ अभ्द्यः स्वाहा, ॐ सावित्राय स्वाहा, ॐ जयाय स्वाहा, ॐ रुद्राय स्वाहा, ॐ अर्यम्णे स्वाहा, ॐ सवित्रे स्वाहा, ॐ विवस्वते स्वाहा, ॐ विबुधाधिपाय स्वाहा, ॐ मित्राय स्वाहा, ॐ राजयक्ष्मणे स्वाहा, ॐ पृथ्वीधराय स्वाहा, ॐ आपवत्साय स्वाहा, ॐ ब्रह्मणे स्वाहा, ॐ चरक्यै स्वाहा, ॐ विदार्यै स्वाहा, ॐ पूतनायै स्वाहा, ॐ पापराक्षस्यै स्वाहा, ॐ स्कन्दाय स्वाहा, ॐ अर्यम्णे स्वाहा, ॐ जृम्भकाय स्वाहा, ॐ पिलि-पिच्छाय स्वाहा, ॐ इन्द्राय स्वाहा, ॐ अग्नये स्वाहा, ॐ यमाय स्वाहा, ॐ निर्ऋतये स्वाहा, ॐ वरुणाय स्वाहा, ॐ वायवे स्वाहा, ॐ कुबेराय स्वाहा, ॐ ईशानाय स्वाहा, ॐ ब्रह्मणे स्वाहा, ॐ अनन्ताय स्वाहा।

सर्वतोभद्रदेवताहोमः

आचार्य और ब्राह्मण निम्न मन्त्रों का उच्चारण करते हुए सर्वतोभद्र के देवताओं का हवन करावें—

ॐ ब्रह्म जज्ञानं प्रथमं पुरस्ताद्वि सीमतः सुरुचो वेन आवः। स बुध्न्या उपमा अस्य विष्ठाः सतश्च योनिमसतश्च विवः स्वाहा॥ १॥

वयर्ठ० सोमव्रतेतवमनस्तनूषुबिभ्रतः। प्रजावन्तः सचेमहि स्वाहा॥ २॥

तमीशानं जगतस्तस्थुषस्पतिं धियञ्जिन्वमवसे हूमहे व्यम्। पूषानो यथा वेदसामसद्वृधे रक्षितापायुरदब्धः स्वस्तये स्वाहा॥ ३॥

त्रातारमिन्द्रमवितारमिन्द्रर्ठ० हवे हवे सुहवर्ठ० शूरमिन्द्रम्। ह्वयामि शक्रं पुरुहूतमिन्द्रर्ठ० स्वस्ति नो मघवा धात्विन्द्रः स्वाहा॥ ४॥

त्वं नो अग्ने तव देव पायुभिर्मघोनो रक्ष तन्वश्च वन्द्य। त्राता तोकस्य तनये गवामस्यनिमेषर्ठ० रक्षमाणस्तव व्रते स्वाहा॥ ५॥

यमाय त्वाङ्गिरस्वते पितृमते स्वाहा। स्वाहा घर्माय स्वाहा घर्मः पित्रे स्वाहा॥ ६॥

असुन्वन्तमयजमानमिच्छ स्तेनस्येत्यामन्विहि तस्करस्य। अन्यमस्मदिच्छ सा त इत्या नमो देवि निर्ऋते तुभ्यमस्तु स्वाहा॥ ७॥

तत्त्वा यामि ब्रह्मणा वन्दमानस्तदाशास्ते यजमानो हविर्भिः। अहेडमानो वरुणेह बोध्युरुशर्ठ०स मा न आयुः प्रमोषीः स्वाहा॥ ८॥

आ नो नियुद्भिः शतिनीभिरध्वर्ठ० सहस्रिणीभिरुपयाहि यज्ञम्। वायो अस्मिन्सवने मादयस्व यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः स्वाहा॥ ९॥

सुगा वो देवाः सदना अकर्म य आजग्मेर्ठ० सवनं जुषाणाः। भरमाणा वहमाना हवीर्ठ०ष्यस्मे धत्त वसवो वसूनि स्वाहा॥ १०॥

रुद्राः सर्ठ० सृज्य पृथिवीं बृहज्योतिः समीधिरे। तेषां भानुरजस्रऽइच्छुक्रो देवेषुरोचते स्वाहा॥ ११॥

यज्ञो देवानां प्रत्येतिसुम्नमादित्यासोभवतामृडयन्तः। आवोर्वाची-सुमतिर्ववृत्त्यादर्ठ० होश्चिद्यावरिवोवित्तरासदादित्येभ्यस्त्वा स्वाहा॥ १२॥

अश्विनातेजसाचक्षुः प्राणेन सरस्वती वीर्यम्। वाचेन्द्रो बलेनेन्द्राय दधुरिन्द्रियम् स्वाहा॥ १३॥

विश्वेदेवासऽआगतशृणुतामऽइमर्ठ०हवम्। एदं बर्हिनिषीदत। उपयाम-गृहीतोऽसिविश्वेभ्यस्त्वा देवेभ्यऽएषते यो निर्विश्वेभ्यस्त्वा देवेभ्यः स्वाहा॥ १४॥

अभित्यन्देवर्ठ० सवितारमोण्योः कविक्रतुमर्चामि सत्यसवर्ठ० रत्नधामभि प्रियं मतिं कविम्। ऊर्ध्वायस्याऽमतिर्भाऽअदिद्युतत्सवी-मनिहिरण्य पाणिरमिमीतसुक्रतुः कृपास्वः। प्रजाभ्यसत्वाप्रजास्त्वानु-प्राणन्तु प्रजास्त्वमनु प्राणिहि स्वाहा॥ १५॥

नमोऽस्तु सर्पेभ्यो ये के च पृथिवीमनु। ये अन्तरिक्षे ये दिवि तेभ्यः सर्पेभ्यो नमः स्वाहा॥ १६॥ ॐ ऋताषाड् ऋतधामाग्निर्गन्धर्व स्तस्यौषध-योप्सरसोमुदो नाम। स नऽइदं ब्रह्मक्षत्रंपातुतस्मै स्वाहा वाट् ताभ्यः स्वाहा॥ १७॥

यदक्रन्दः प्रथमं जायमान उद्यन्त्समुद्रादुतवापुरीषात्। श्येनस्य पक्षाहरिणस्यबाहूऽउपस्त्युत्यम्महिजातन्तेऽअर्वन् स्वाहा॥ १८॥

आशुः शिशानो वृषभो न भीमो घनाघनः क्षोभणश्चर्षणीनाम्। संक्रन्दनोऽनिमिष एकवीरः शतर्ठ० सेना अजयत्साकमिन्द्रः स्वाहा॥ १९॥

कार्षिरसि समुद्रस्य त्वाक्षित्त्या उन्नयामि। समापो अद्भिरग्मत समोषधीभिरोषधीः स्वाहा॥ २०॥

कार्षिरसि समुद्रस्य त्वाक्षित्त्या उन्नयामि। समापो अद्भिरग्मत समोषधीभिरोषधीः स्वाहा॥ २१॥

शुक्रज्योतिश्च चित्रज्योतिश्च सत्यज्योतिश्च ज्योतिष्माँश्च। शुक्रश्च ऋतपाश्चात्यर्ठ०हाः स्वाहा॥ २२॥

अम्बे ऽअम्बिकेऽम्बालिके न मा नयति कश्चन। ससस्त्यश्वकः सुभद्रिकां काम्पीलवासिनीम् स्वाहा॥ २३॥

इदं विष्णुर्विचक्रमे त्रेधा निदधे पदम्। समूढमस्य पार्ठ०सुरे स्वाहा॥ २४॥

पितृभ्यः स्वधायिभ्यः स्वधानमः पितामहेभ्यः स्वधायिभ्यः स्वधानमः प्रपितामहेभ्यः स्वधायिभ्यः स्वधा नमः। अक्षन्पितरोमी-मदन्तपितरोऽतीतृपन्त पितरः पितरः शुन्धध्वम् स्वाहा॥ २५॥

परं मृत्यो अनुपरेहिपन्थां यस्ते अन्यऽइतरो देवयानात्। चक्षुष्मते शृण्वत ते ब्रवीमि मा नः प्रजार्ठ० रीरिषो मोत वीरान् स्वाहा॥ २६॥

गणानान्त्वा गणपतिर्ठ० हवामहे प्रियाणान्त्वा प्रियपतिर्ठ० हवामहे निधीनान्त्वा निधिपतिर्ठ० हवामहे वसो मम आहमजानि गर्भधमा त्वमजासि गर्भधम् स्वाहा॥ २७॥

अप्स्वग्ने सधिष्टव सौषधीरनु रुध्यसे। गर्भे सन् जायसे पुनः स्वाहा॥ २८॥

मरुतो यस्य हि क्षये पाथा दिवोविमहसः। स सुगोपातमो जनः स्वाहा॥ २९॥

स्योना पृथिवि नो भवानृक्षरा निवेशनि। यच्छा नः शर्म सप्रथाः स्वाहा॥ ३०॥

पंचनद्यः सरस्वती मपियन्ति सस्त्रोतसः। सरस्वती तु पंचधा सो देशे भवत्सरित् स्वाहा॥ ३१॥

समुद्रोऽसि नभस्वानार्द्रदानुः शंभूर्मयोभूरभि मा वाहि स्वाहा। मारुतोऽसि मरुतां गणः शंभूर्मयोभूरभि मा वाहि स्वाहा अवस्यूरसि दुवस्वाञ्छुंभूर्मयो भूरभि मा वाहि स्वाहा॥ ३२॥

ॐ परि त्वा गिर्वणो गिर इमा भवन्तु विश्वतः। वृद्धायुमनु वृद्धयो जुष्टा भवन्तु जुष्टयः स्वाहा॥ ३३॥

गणानान्त्वा गणपतिर्ठ० हवामहे प्रियाणान्त्वा प्रियपतिर्ठ० हवामहे निधीनान्त्वा निधिपतिर्ठ० हवामहे वसो मम आहमजानि गर्धमात्वमजासि गर्भधम् स्वाहा॥ ३४॥

त्रिर्ठ० शद्धाम विराजति वाक् पतङ्गाय धीयते। प्रतिवस्तोरहद्युभिः स्वाहा॥ ३५॥

महाँ२॥ इन्द्रो वज्रहस्तः षोडशी शर्म यच्छतु। हन्तु पाप्मानं योऽस्मान्द्वेष्टि। उपयामगृहीतोऽसि महेन्द्राय त्वैष ते योनिर्महेन्द्राय त्वा स्वाहा॥ ३६॥

वसु च मे वसतिश्च मे कर्म च मे शक्तिश्च मेऽर्थश्चम एमश्च म इत्या च मे गतिश्च मे यज्ञेन कल्पन्ताम् स्वाहा॥ ३७॥

इडऽएह्यदितऽएहि काम्याऽएत। मयि वः काम धरणं भूयात् स्वाहा॥ ३८॥

खड्गो वैश्वदेवः श्वा कृष्णः कर्णो गर्दभस्तरक्षुस्ते रक्षसामिन्द्राय सूकरः सिर्ठ०हो मारुतः कृकलासः पिप्पका शकुनिस्ते शरव्यायै विश्वेषां देवानां पृषतः स्वाहा॥ ३९॥

उदुत्तमं वरुण पाशमस्मदवाधमं वि मध्यं श्रथाय। अथा वयमादित्य व्रते तवानागसो अदितये स्याम स्वाहा॥ ४०॥

अर्ठ० शुश्च मे रश्मिश्च मेऽदाभ्यश्च मेऽधिपतिश्च म उपार्ठ० शुश्चं मेऽन्तर्यामश्च म ऐन्द्रवायवश्च मे मैत्रावरुणश्च म आश्विनश्च मे प्रतिप्रस्थानश्च मे शुक्रश्च मे मन्थी च मे यज्ञेन कल्पन्ताम् स्वाहा॥ ४१॥

आयङ्गौः पृश्निरक्रमीदसदन्मातरं पुरः। पितरं च प्रयन्त्स्वः स्वाहा॥ ४२॥

अयं दक्षिणा विश्वकर्मा तस्य मनो वैश्वकर्मणं ग्रीष्मो मानसस्त्रि-ष्टुब्ग्रैष्मी त्रिष्टुभः स्वारर्ठ० स्वारादन्तर्यामोन्तर्यामात्पंचदशः पञ्चदशाद् बृहद् भरद्वाज ऋषिः प्रजापतिगृहीतया त्वया मनो गृह्णामि प्रजाभ्यः स्वाहा॥ ४३॥

इदमुत्तरात्स्वस्तस्य श्रोत्रर्ठ० सौवर्ठ० शरच्छौत्र्यनुष्टुप् शारद्यनुष्टुभ ऐडमैडान्मन्थी मन्थिन एकविर्ठ०श एकविर्ठ०शाद्वैराजं विश्वामित्र ऋषिः प्रजापतिगृहीतया त्वया श्रोत्रं गृह्णामि प्रजाभ्यः स्वाहा॥ ४४॥

त्र्यायुषं जमदग्नेः कश्यपस्य त्र्यायुषम्। यद्देवेषु त्र्यायुषं तन्नो ऽअस्तु त्र्यायुषम् स्वाहा॥ ४५॥

अयं पश्चाद्विश्वव्यचास्तस्य चक्षुर्वैश्वव्यचसं वर्षाश्चाक्षुष्यो जगती वार्षी जगत्या ऋक्समम‍ृक्समाच्छुक्रः शुक्रात्सप्तदशः सप्तदशाद्वैरूपं जमदग्नि-र्ऋषिः प्रजापतिगृहीतया त्वया चक्षुर्गृह्णामि प्रजाभ्यः स्वाहा॥ ४६॥

अयं पुरो भुवस्तस्य प्राणो भौवायनो वसन्तः प्राणायनो गायत्री वासन्ती गायत्र्यै गायत्रम् गायत्रादुपार्ठ०शुरुपार्ठ० शोस्त्रिवृत्त्रिवृतो रथन्तरं वसिष्ठ ऋषिः प्रजापतिगृहीतया त्वया प्राणं गृह्णामि प्रजाभ्यः स्वाहा॥ ४७॥

अत्र पितरो मादयध्वं यथाभागमावृषायध्वम्। अमीमदन्त पितरो यथाभागमावृषायिषत स्वाहा॥ ४८॥

तं पत्नीभिरनुगच्छेमदेवाः पुत्रैर्भ्रातृभिरुत वा हिरण्यैः। नाकं गृभ्णानाः सुकृतस्य लोके तृतीये पृष्ठे अधि रोचने दिवः स्वाहा॥ ४९॥

अदित्यै रास्नासीन्द्राण्या उष्णीषः। पूषासि घर्माय दीष्व स्वाहा॥ ५०॥

अम्बेऽअम्बिकेऽम्बालिके न मा नयति कश्चन। ससस्त्यश्वकः सुभद्रिकां काम्पीलवासिनीम् स्वाहा॥ ५१॥

इन्द्रायाहि धियेषितो विप्रजूतः सुतावतः। उप ब्रह्माणि वाघतः स्वाहा॥ ५२॥

इन्द्रस्य क्रोडोऽदित्यै पाजस्यं दिशां जत्रवोऽदित्यै भसज्जीमूतान्हृदयौ-पशेनान्तरिक्षं पुरीतता नभ उदर्येण चक्रवाकौ मतस्नाभ्यां दिवं वृक्काभ्यां गिरीन्प्लाशिभिरुपलान्प्लीहा वल्मीकान्क्लोमभिग्लौंभिर्गुल्मान्हिराभिः स्त्रवन्तीर्हृदान्कुक्षिभ्यार्ठ० समुद्रमुदरेण वैश्वानरं भस्मना स्वाहा॥ ५३॥

अम्बेऽअम्बिकेऽम्बालिके न मा नयति कश्चन। ससस्त्यश्वकः सुभद्रिकां काम्पीलवासिनीम् स्वाहा॥ ५४॥

आप्यायस्व समेतु ते विश्वतः सोम वृष्ण्यम्। भवा वाजस्य सङ्गथे स्वाहा॥ ५५॥

या ते रुद्र शिवा तनूरघोराऽपापकाशिनी। तया नस्तन्वा शन्तमया गिरिशन्ताभिचाकशीहि स्वाहा॥ ५६॥

समख्ये देव्या धिया सन्दक्षिणयोरुचक्षसा। मा म आयुः प्रमीषीर्मो अहं तव वीरं विदेय तव देवि संदृशि स्वाहा॥ ५७॥

अथवा

केवलं नामाऽनुक्रमेण सर्वतोभद्रदेवताहोमः

आचार्य ॐ ब्रह्मणे स्वाहा से ॐ वैनायक्यै स्वाहा तक के निम्न नाम मन्त्रों का उच्चारण करते हुए यजमान से सर्वतोभद्रदेवताओं के लिए हवन करावें—

ॐ ब्रह्मणे स्वाहा। ॐ सोमाय स्वाहा। ॐ ईशानाय स्वाहा। ॐ इन्द्राय स्वाहा। ॐ अग्नये स्वाहा। ॐ यमाय स्वाहा। ॐ निर्ऋतये स्वाहा। ॐ वरुणाय स्वाहा। ॐ वायवे स्वाहा। ॐ अष्टवसुभ्यो स्वाहा। ॐ एकादशरुद्रेभ्यः स्वाहा। ॐ द्वादशा-दित्येभ्यः स्वाहा। ॐ अश्विभ्यां स्वाहा। ॐ सपैतृकविश्वेभ्यो देवेभ्यः स्वाहा। ॐ सप्तयक्षेभ्यः स्वाहा। ॐ नागेभ्यः स्वाहा। ॐ गन्धर्वाप्सरोभ्यः स्वाहा। ॐ स्कन्दाय स्वाहा। ॐ नन्दीश्वराय स्वाहा। ॐ शूलाय स्वाहा। ॐ महाकालाय स्वाहा। ॐ दक्षादिभ्यः स्वाहा। ॐ दुर्गायै स्वाहा। ॐ विष्णवे स्वाहा। स्वधायै स्वाहा। ॐ मृत्युरोगेभ्य स्वाहा। ॐ गणपतये स्वाहा। ॐ अद्भ्य स्वाहा। ॐ मरुद्भ्यः स्वाहा। ॐ पृथिव्यै स्वाहा। ॐ गङ्गादिनदीभ्यः स्वाहा। ॐ सप्तसागरेभ्यः स्वाहा। ॐ मेरवे स्वाहा। ॐ गदायै स्वाहा। ॐ त्रिशूलाय स्वाहा। ॐ व्रजाय स्वाहा। ॐ शक्तये स्वाहा। ॐ दण्डाय स्वाहा। ॐ खड्गाय स्वाहा। ॐ पाशाय स्वाहा। ॐ अङ्कुशाय स्वाहा। ॐ गौतमाय स्वाहा। ॐ भरद्वाजाय स्वाहा। ॐ विश्वामित्राय स्वाहा। ॐ कश्यपाय स्वाहा। ॐ जमदग्नये स्वाहा। ॐ वसिष्ठाय स्वाहा। ॐ अत्रये स्वाहा। ॐ अरुन्धत्यै स्वाहा। ॐ ऐन्द्र्यै स्वाहा। ॐ कौमार्यै स्वाहा। ॐ ब्राह्म्यै स्वाहा। ॐ वाराह्यै स्वाहा। ॐ चामुण्डायै स्वाहा। ॐ वैष्णव्यै स्वाहा। ॐ माहेश्वर्यै स्वाहा। ॐ वैनायक्यै स्वाहा।

योगिनीहोम:

आचार्य निम्न मन्त्रों का उच्चारण करते हुए कुण्ड योगिनी होम यजमान से करावें—

ॐ तमीशानं जगतस्तस्थुषस्पतिं धियं जिन्वमवसे हूमहे वयम्। पूषा नो यथा वेदसामसद्वृधे रक्षिता पायुरदब्धः स्वस्तये स्वाहा॥ १॥

आ ब्रह्मन्ब्राह्मणो ब्रह्मवर्चसी जायतामा राष्ट्रे राजन्यः शूर इषव्योऽति-व्याधी महारथो जायतां दोग्ध्री धेनुर्वोढानड्वानाशुः सप्तिः पुरन्धिर्योषा जिष्णू रथेष्ठाः सभेयो युवास्य यजमानस्य वीरो जायतां निकामे निकामे नः पर्जन्यो वर्षतु फलवत्यो न ओषधयः पच्यन्तां योगक्षेमो नः कल्पताम् स्वाहा॥ २॥

महाँ२॥ इन्द्रो वज्रहस्तः षोडशी शर्म यच्छतु। हन्तु पाप्मानं योऽस्मान् द्वेष्टि। उपयामगृहीतोऽसि महेन्द्राय त्वैष ते योनिर्महेन्द्राय त्वा स्वाहा॥ ३॥

सद्योजातो व्यमिमीत यज्ञमग्निर्देवानामभवत्पुरोगाः। अस्य होतुः प्रदिश्यृतस्य वाचि स्वाहा कृतꣳ हविरदन्तु देवाः स्वाहा॥ ४॥

आदित्यं गर्भं पयसा समङ्ग्धि सहस्रस्य प्रतिमां विश्वरूपम्। परिवृङ्ग्धि हरसा माभिमर्ꣳस्थाः शतायुषं कृणुहि चीयमानः स्वाहा॥ ५॥

स्वर्ण घर्मः स्वाहा स्वर्णार्कः स्वाहा स्वर्ण शुक्रः स्वाहा स्वर्ण ज्योतिः स्वाहा स्वर्ण सूर्यः स्वाहा॥ ६॥

सत्यं च मे श्रद्धा च मे जगच्च मे धनं च मे विश्वं च मे महश्च मे क्रीडा च मे मोदश्च मे जातं च मे जनिष्यमाणं च मे सूक्तं च मे सुकृतं च मे यज्ञेन कल्पन्ताम् स्वाहा॥ ७॥

भायै दार्वाहारं प्रभाया अग्न्येधं ब्रध्नस्य विष्टप्रायाभिषेक्तारं वर्षिष्ठाय नाकाय परिवेष्टारं देवलोकाय पेशितारं मनुष्यलोकाय प्रकरितारꣳ सर्वेभ्यो लोकेभ्य उपसेक्तारमवऋत्यै वधायोपमन्थितारं मेधाय वासः पल्पूलीं प्रकामाय रजयित्रीम् स्वाहा॥ ८॥

जिह्वा मे भद्रं वाङ्महो मनो मन्युः स्वराड्भामः॥ मोदाः प्रमोदा अङ्गुलीरङ्गानि मित्रं मे सहः स्वाहा॥ ९॥

ॐ हिङ्काराय स्वाहा हिङ्कृताय स्वाहा क्रन्दते स्वाहाऽवक्रन्दाय स्वाहा प्रोथते स्वाहा प्रप्रोथाय स्वाहा गन्धाय स्वाहा घ्राताय स्वाहा निविष्टाय स्वाहोपविष्टाय स्वाहा संदिताय स्वाहा वल्गते स्वाहासीनाय स्वाहा शयानाय स्वाहा स्वपते स्वाहा जाग्रते स्वाहा कूजते स्वाहा प्रबुद्धाय स्वाहा विजृम्भमाणाय स्वाहा विचृताय स्वाहा सर्ठ०हानाय स्वाहोपस्थिताय स्वाहायनाय स्वाहा प्रायाणाय स्वाहा॥ १०॥

अग्निश्च मे घर्मश्च मेऽर्कश्च मे सूर्यश्च मे प्राणश्च मेऽश्वमेधश्च मे पृथिवी च मेऽदितिश्च मे दितिश्च मे द्यौश्च मेऽङ्गुलयः शक्करयो दिशश्च मे यज्ञेन कल्पन्ताम् स्वाहा॥ ११॥

पूषन् तव व्रते वयं न रिष्येम कदाचन। स्तोतारस्त इह स्मसि स्वाहा॥ १२॥

वेद्या वेदिः समाप्यते बर्हिषा बर्हिरिन्द्रियम्। यूपेन यूप आप्यते प्रणीतो अग्निरग्निना स्वाहा॥ १३॥

अयमग्निः सहस्त्रिणो वाजस्य शतिनस्पतिः। मूर्धा कवी रयीणाम् स्वाहा॥ १४॥

इमं मे वरुण श्रुधी हवमद्या च मृडय। त्वामवस्युराचके स्वाहा॥ १५॥

यमाय त्वा मखाय त्वा सूर्यस्य त्वा तपसे। देवस्त्वा सविता मध्वानक्तु। पृथिव्याः सर्ठ० स्पृशस्पाहि। अर्चिरसि शोचिरसि तपोऽसि स्वाहा॥ १६॥

यमेन दत्तं त्रित एनमायुनगिन्द्र एणं प्रथमो अध्यतिष्ठत्। गन्धर्वो अस्य रशनामगृभ्णात्सूरादश्वं वसवो निरतष्ट स्वाहा॥ १७॥

मित्रस्य चर्षणीधृतोऽवो देवस्य सानसि। द्युम्नं चित्रश्रवस्तमम् स्वाहा॥ १८॥ अग्ने ब्रह्म गृभ्णीष्व धरुणमस्यन्तरिक्षं दर्ठ०ह ब्रह्मवनि

त्वा क्षत्रवनि सजातवन्युपदधामि भ्रातृव्यस्य वधाय। धर्त्रमसि दिवं दृꣳह ब्रह्मवनि त्वा क्षत्रवनि सजातवन्युपदधामि भ्रातृव्यस्य वधाय। विश्वाभ्यस्त्वाशाभ्य उपदधामि चितः स्थोर्ध्वचितो भृगूणामङ्गिरसां तपसा तप्यध्वम् स्वाहा॥ १९॥

भग प्रणेतर्भग सत्यराधो भगेमां धियमुदवा ददन्नः। भग प्र नो जनय गोभिरश्वैर्भग प्र नृभिर्नृवन्तः स्याम स्वाहा॥ २०॥

सुपर्णोऽसि गरुत्मांस्त्रिवृत्ते शिरो गायत्रं चक्षुर्बृहद्रथन्तरे पक्षौ। स्तोम आत्मा छन्दाꣳस्यङ्गानि यजूꣳषि नाम। साम ते तनूर्वामदेव्यं यज्ञायज्ञियं पुच्छं धिष्ण्याः शफाः। सुपर्णोसि गरुत्मान्दिवं गच्छ स्वः पत स्वाहा॥ २१॥

पितृभ्यः स्वधायिभ्यः स्वधा नमः पितामहेभ्यः स्वधायिभ्यः स्वधा नमः प्रपितामहेभ्यः स्वधायिभ्यः स्वधा नमः। अक्षन्पितरोऽमीमदन्त पितरोऽतीतृपन्त पितरः पितरः शुन्धध्वम् स्वाहा॥ २२॥

या ते रुद्र शिवा तनूरघोराऽपापकाशिनी। तया नस्तन्वा शन्तमया गिरिशन्ताभिचाकशीहि स्वाहा॥ २३॥

वरुणः प्राविता भुवन्मित्रो विश्वाभिरूतिभिः। करतां नः सुराधं सः स्वाहा॥ २४॥

हꣳसः शुचिषद्वसुरन्तरिक्षसद्धोता वेदिषदतिर्दुरोणसत्। नृषद्वरसदृत-सद्व्योमसदब्जा गोजा ऋतजा अद्रिजा ऋतं बृहत् स्वाहा॥ २५॥

सुसंदृशं त्वा वयं मघवन्वन्दिषीमहि। प्र नूनं पूर्णबन्धुरः स्तुतो यासि वशाँ अनु योजा न्विन्द्र ते हरी स्वाहा॥ २६॥

प्रतिपदसि प्रतिपदे त्वानुपदस्यनुपदे त्वा सम्पदसि सम्पदे त्वा तेजोऽसि तेजसे त्वा स्वाहा॥ २७॥

देवीरापो अपां न पाद्यो व ऊर्मिर्हविष्य इन्द्रिया वान्मदिन्तमः। तं देवेभ्यो देवत्रा दत्त शुक्रपेभ्यो येषां भाग स्थ स्वाहा स्वाहा॥ २८॥

हविष्मतीरिमा आपो हविष्माँ २ आ विवासति। हविष्यमान्देवो अध्वरो हविषमाँ २॥ अस्तु सूर्यः स्वाहा॥ २९॥

श्रीश्च ते लक्ष्मीश्च पत्न्यावहोरात्रे पार्श्वे नक्षत्राणि रूपमश्विनौ व्यात्तम्। इष्णन्निषाणामुं म इषाण सर्वलोकं म इषाण स्वाहा॥ ३०॥

भुवो यज्ञस्य रजसश्च नेता यत्रा नियुद्भिः सचसे शिवाभिः। दिवि मूर्धानं दधिषे स्वर्षां जिह्वामग्ने चकृषे हव्यवाहम् स्वाहा॥ ३१॥

कदाचनः स्तरीरसि नेन्द्र सश्चसि दाशुषे। उपोपेन्नु मघवन्भूय इन्नु ते दानं देवस्य पृच्यत आदित्येभ्यस्त्वा स्वाहा॥ ३२॥

भद्रं कर्णेभिः शृणुयाम देवा भद्रं पश्येमाक्षभिर्यजत्राः। स्थिरैरङ्गैस्तुष्टुवार्ठ० सस्तनूभिर्व्यशेमहि देवहितं यदायुः स्वाहा॥ ३३॥

इषे त्वोर्ज्जे त्वा वायव स्थ देवो वः सविता प्रार्पयतु श्रेष्ठतमाय कर्मण आप्यायध्वमघ्न्या इन्द्राय भागं प्रजावतीरनमीवा अयक्ष्मा मा वस्तेन ईशत माघशर्ठ०सो ध्रुवा अस्मिगोपतौ स्यात बह्वीर्यजमानस्य पशून्पाहि स्वाहा॥ ३४॥

देवी द्यावापृथिवी मखस्य वामद्य शिरो राध्यासं देवयजने पृथिव्याः। मखाय त्वा मखस्य त्वा शीर्ष्णे स्वाहा॥ ३५॥

विश्वानि देव सवितर्दुरितानि परासुव। यद्भद्रं तन्न आसुव स्वाहा॥ ३६॥

असुन्वन्तमयजमानमिच्छ स्तेनस्येत्यामन्विहि तस्करस्य। अन्यमस्म-दिच्छ सा त इत्या नमो देवि निर्ऋते तुभ्यमस्तु स्वाहा॥ ३७॥

अग्निश्च म आपश्च मे वीरुधश्च म ओषधयश्च मे कृष्टपच्याश्च मेऽकृष्टपच्याश्च मे ग्राम्याश्च मे पशव आरण्याश्च मे वित्तं च मे वित्तिश्च मे भूतं च मे भूतिश्च मे यज्ञेन कल्पन्ताम् स्वाहा॥ ३८॥

बह्वीनां पिता बहुरस्य पुत्रश्चिश्चाकृणोति समनावगत्य। इषुधिः संकाः पृतनाश्च सर्वाः पृष्ठे निनद्धो जयति प्रसूतः स्वाहा॥ ३९॥

नमस्ते रुद्र मन्यव उतो त इषवे नमः। बाहुभ्यामुत ते नमः स्वाहा॥ ४०॥

ऋतं च मेऽमृतं च मेऽयक्ष्मं च मेऽनामयच्च मे जीवातुश्च मे दीर्घायुत्वं च मेऽनमित्रं च मेऽभयं च मे सुखं च मे शयनं च सूषाश्च मे सुदिनं च मे यज्ञेन कल्पन्ताम् स्वाहा॥ ४१॥

ते आचरन्ती समनेव योषा मातेव पुत्रं बिभृतामुपस्थे। अप शत्रून्विध्यतार्ठ० संविदाने आर्त्नी इमे विष्फुरन्ती अमित्रान् स्वाहा॥ ४२॥

वेद्या वेदिः समाप्यते बर्हिषा बर्हिरिन्द्रियम्। यूपेन यूप आप्यते प्रणीतो अग्निरग्निना स्वाहा॥ ४३॥

पावका नः सरस्वती वाजेभिर्वाजिनीवति। यज्ञं वष्टु धियावसुः स्वाहा॥ ४४॥

अस्कन्नमद्य देवेभ्य आज्यर्ठ०संभ्रियासमङ्घ्रिणा विष्णो मा त्वावक्रमिषं वसुमतीमग्ने ते च्छायामुपस्थेषं विष्णोः स्थानमसीत इन्द्रो वीर्यमकृणोदूर्ध्वोध्वर आस्थात् स्वाहा॥ ४५॥

तीव्रान्घोषान्कृण्वते वृषपाणयोऽश्वा रथेभिः सहवाजयन्तः। अवक्रामन्तः प्रपदैरमित्रान्क्षिणन्तिशत्रूं१। रनपव्ययन्तः स्वाहा॥ ४६॥

मही द्यौः पृथिवी च न इमं यज्ञं मिमिक्षताम्। पिपृतां नो भरीमभिः स्वाहा॥ ४७॥

उपयामगृहीतोऽसि सावित्रोऽसि चनोधाश्चनोधा असि चनो मयि धेहि। जिन्व यज्ञं जिन्व यज्ञपतिं भगाय देवाय त्वा सवित्रे स्वाहा॥ ४८॥

आप्यायस्व समेतु ते विश्वतः सोम वृष्ण्यम्। भवा वाजस्य संगथे स्वाहा॥ ४९॥

कार्षिरसि समुद्रस्य त्वाक्षित्या उन्नयामि। समापो अद्भिरग्मत समोषधीभिरोषधीः स्वाहा॥ ५०॥

त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम्। उर्वारुकमिव बन्धनान्-मृत्योर्मुक्षीय माऽमृतात् स्वाहा॥ त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिं पतिवेदनम्। उर्वारुकमिव बन्धनादितो मुक्षीय मामुतः स्वाहा॥ ५१॥

अम्बेअम्बिकेऽम्बालिके न मा नयति कश्चन। ससस्त्यश्वकः सुभद्रिकाम्काम्पीलवासिनीम् स्वाहा॥ ५२॥

विष्णो रराटमसि विष्णोः श्नप्त्रे स्थो विष्णोः स्यूरसि विष्णोर्ध्रुवोऽसि। वैष्णवमसि विष्णवे त्वा स्वाहा॥ ५३॥

ब्राह्मणमद्य विदेयं पितृमन्तं पैतृमत्त्यमृषिमार्षेयर्ठ० सुधातुदक्षिणम्। अस्मद्राता देवता गच्छत प्रदातारमाविशत स्वाहा॥ ५४॥

आ नो भद्राः क्रतवो यन्तु विश्वतोऽदब्धासो अपरीतास उद्भिदः। देवा नो यथा सदमिद्वृधे असन्नप्रायुवो रक्षितारो दिवेदिवे स्वाहा॥ ५५॥

एका च मे तिस्रश्च मे तिस्रश्च मे पञ्च च मे पञ्च मे सप्त च मे सप्त च मे नव च मे नव च म एकादश च म एकादश च मे त्रयोदश च मे त्रयोदश च मे पञ्चदश च मे पञ्चदश च मे सप्तदश च मे सप्तदश च मे नवदश च मे नवदश च म एकविर्ठ०शतिश्च म एकविर्ठ०शतिश्च मे त्रयोविर्ठ०शतिश्च मे त्रयोविर्ठ०शतिश्च मे पञ्चविर्ठ०शतिश्च मे पञ्चविर्ठ० शतिश्च मे सप्तविर्ठ०शतिश्च मे सप्तविर्ठ०शतिश्च मे नवविर्ठ०शतिश्च मे नवविर्ठ०शतिश्च म एकत्रिर्ठ०शच्च म एकत्रिर्ठ०शच्च मे त्रयस्त्रिर्ठ० शच्च मे यज्ञेन कल्पन्ताम् स्वाहा॥ ५६॥

ब्रह्माणि मे मतयः शर्ठ० सुतासः शुष्म इयर्ति प्रभृतो मे अद्रिः। आशासते प्रतिहर्यन्त्युक्थेमा हरी वहतस्ता नो अच्छ स्वाहा॥ ५७॥

असंख्याता सहस्राणि ये रुद्रा अधि भूम्याम्। तेषार्ठ० सहस्रयोजनेऽव धन्वानि तन्मसि स्वाहा॥ ५८॥

अहिरिव भोगैः पर्येति बाहुं ज्याया हेतिं परिबाधमानः। हस्तघ्नो विश्वा वयुनानि विद्वान्पुमान्पुमार्ठ०सं परिपातु विश्वतः स्वाहा॥ ५९॥

तिस्त्रस्त्रेधा सरस्वत्यश्विना भारतीडा। तीव्रं परिस्त्रुता सोममिन्द्राय सुषुवुर्मदम् स्वाहा॥ ६०॥

सरस्वती योन्यां गर्भमन्तरश्विभ्यां पत्नी सुकृतं बिभर्ति। अपार्ठ० रसेन वरुणो न साम्नेन्द्रर्ठ० श्रियै जनयन्नप्सु राजा स्वाहा॥ ६१॥

इदं विष्णुर्विचक्रमे त्रेधा निदधे पदम्। समूढमस्यपार्ठ० सुरे स्वाहा स्वाहा॥ ६२॥

वृष्ण ऊर्मिरसि राष्ट्रदा राष्ट्रं मे देहि स्वाहा वृष्ण ऊर्मिरसि राष्ट्रदा राष्ट्रममुष्मै देहि वृषसेनोऽसिराष्ट्रदा राष्ट्रं मे देहि स्वाहा वृषसेनोऽसि राष्ट्रदा राष्ट्रममुष्मै देहि स्वाहा॥ ६३॥

मृगो न भीमः कुचरो गिरिष्ठाः परावत आजगन्था परस्याः। सृकर्ठ० सर्ठ०शाय पविमिन्द्र तिग्मं वि शत्रून् ताढि वि मृधो नुदस्व स्वाहा॥ ६४॥

अथवा

केवलं नामाऽनुक्रमेण योगिनीहोमः

आचार्य और ब्राह्मण ॐ गजाननायै स्वाहा से ॐ मृगलोचनायै स्वाहा तक के नाम मन्त्रों का उच्चारण करते हुए यजमान से कुण्ड में योगिनीहोम करावें—

ॐ गजाननायै स्वाहा। ॐ सिंहमुख्यै स्वाहा। ॐ गृध्रास्यायै स्वाहा। ॐ काकतुण्डिकायै स्वाहा। ॐ उष्ट्रग्रीवायै स्वाहा। ॐ हयग्रीवायै स्वाहा। ॐ वाराह्यै स्वाहा। ॐ शरभाननायै स्वाहा। ॐ उलूकिकायै स्वाहा। ॐ शिवारावायै स्वाहा। ॐ मयूरायै स्वाहा। ॐ विकटाननायै स्वाहा। ॐ अष्टवक्त्रायै स्वाहा। ॐ कोटराक्ष्यै स्वाहा। ॐ कुब्जायै स्वाहा। ॐ विकटलोचनायै स्वाहा। ॐ शुष्कोदर्यै स्वाहा। ॐ ललजिह्वायै स्वाहा। ॐ श्वदष्ट्रायै स्वाहा। ॐ वानराननायै स्वाहा। ॐ ऋक्षाक्ष्यै स्वाहा। ॐ केकराक्ष्यै स्वाहा। ॐ बृहत्तुण्डायै स्वाहा। ॐ सुराप्रियायै स्वाहा। ॐ कपालहस्तायै स्वाहा। ॐ रक्ताक्ष्यै स्वाहा। ॐ शुक्यै स्वाहा। ॐ श्येन्यै स्वाहा। ॐ

कपोतिकायै स्वाहा। ॐ पाशहस्तायै स्वाहा। ॐ दण्डहस्तायै स्वाहा। ॐ प्रचण्डायै स्वाहा। ॐ चण्डविक्रमायै स्वाहा। ॐ शिशुघ्न्यै स्वाहा। ॐ पापहन्त्र्यै स्वाहा। ॐ काल्यै स्वाहा। ॐ रुधिरपायिन्यै स्वाहा। ॐ वसाधयायै स्वाहा। ॐ गर्भभक्षायै स्वाहा। ॐ शवहस्तायै स्वाहा। ॐ आन्त्रमालिन्यै स्वाहा। ॐ स्थूलकेश्यै स्वाहा। ॐ बृहत्कुक्ष्यै स्वाहा। ॐ सर्पास्यायै स्वाहा। ॐ प्रेतवाहिन्यै स्वाहा। ॐ दन्दशूकरायै स्वाहा। ॐ क्रौञ्च्यै स्वाहा। ॐ मृगशीर्षायै स्वाहा। ॐ वृषाननायै स्वाहा। ॐ व्यात्तास्यायै स्वाहा। ॐ धूम्रनिश्वासायै स्वाहा। ॐ व्योमैकचरणोर्ध्वदृशे स्वाहा। ॐ तापिन्यै स्वाहा। ॐ शोषिणीदृष्ट्यै स्वाहा। ॐ कोटर्यै स्वाहा। ॐ स्थूलनासिकायै स्वाहा। ॐ विद्युत्प्रभायै स्वाहा। ॐ बलाकास्यायै स्वाहा। ॐ मार्जायै स्वाहा। ॐ कटपूतनायै स्वाहा। ॐ अट्टाट्टहासायै स्वाहा। ॐ कामाक्ष्यै स्वाहा। ॐ मृगाक्ष्यै स्वाहा। ॐ मृगलोचनायै स्वाहा।

क्षेत्रपालहोमः

आचार्य निम्न मन्त्रों का उच्चारण करते हुए कुण्ड में यजमान से क्षेत्रपाल होम करावें—

ॐ इमौ ते पक्षावजरौ पतत्रिणौ याभ्यार्ठ० रक्षार्ठ०स्य पहर्ठ० स्यग्ने। ताभ्यां पतेम सुकृतामु लोकं यत्र ऋषयो जग्मुः प्रथमजाः पुराणाः स्वाहा॥ १॥

प्रथमा वार्ठ० सरथिना सुवर्णा देवौ पश्यन्तौ भुवनानि विश्वा। अपिप्रयं चोदना वां मिमाना होतारा ज्योतिः प्रदिशा दिशन्ता स्वाहा॥ २॥

इन्द्रस्य वज्रो मरुतामनीकं मित्रस्य गर्भो वरुणस्य नाभिः। सेमां नो हव्यदातिं जुषाणो देव रथ प्रतिहव्या गृभाय स्वाहा॥ ३॥

एवेदिन्द्रं वृषणं वज्रबाहुं वसिष्ठासो अभ्यर्चन्त्यर्कैः। स नः स्तुतो वीरवद्धातु गोमद्यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः स्वाहा॥ ४॥

ॐ उक्षा समुद्रो अरुणः सुपर्णः पूर्वस्य योनिं पितुराविवेश। मध्ये दिवो निहितः पृश्निरश्मा विचक्रमे रजसस्पात्यन्तौ स्वाहा॥ ५॥

यद्देवा देवहेडनं देवासश्चकृमा वयम्। अग्निर्मा तस्मादेनसो विश्वान्मुञ्चत्वर्ठ०हसः स्वाहा॥ ६॥

स न इन्द्राय यज्यवे वरुणाय मरुद्भ्यः। वरिवोवित्परिस्त्रव स्वाहा॥ ७॥

बाहू मे बलमिन्द्रियर्ठ० हस्तौ मे कर्म वीर्यम्। आत्मा क्षत्रमुरो मम स्वाहा॥ ८॥

मुञ्चन्तु मा शपथ्यादथो वरुण्यादुत। अथो यमस्य षड्वीशात्सर्व-स्माद्देवकिल्बिषात् स्वाहा॥ ९॥

ॐ कुर्वन्नेवेह कर्माणि जिजीविषेच्छतर्ठ० समाः। एवं त्वयि नान्यथेतोऽस्ति न कर्म लिप्यते नरे स्वाहा॥ १०॥

सन्नः सिन्धुरवभृथायोद्यतः समुद्रोऽभ्यवह्रियमाणः सलिलः प्रप्लुतो ययोरोजसा स्कभिता रजोर्ठ०सि वीर्येभिर्वीरतमा शविष्ठा। या पत्येते अप्रतीता सहोभिर्विष्णू अगन्वरुणा पूर्वहूतौ स्वाहा॥ ११॥

नमो गणेभ्यो गणपतिभ्यश्च वो नमो नमो व्रातेभ्यो व्रातपतिभ्यश्च वो नमो नमो गृत्सेभ्यो गृत्सपतिभ्यश्च वो नमो नमो विश्वरूपेभ्यो विश्वरूपेभ्यश्च वो नमः स्वाहा॥ १२॥

अर्मेभ्यो हस्तिपं जवायाश्वपं पुष्ट्यै गोपालं वीर्यायाविपालं तेजसेऽजपालमिरायै कीनाशं कीलालाय सुराकारं भद्राय गृहपर्ठ०श्रेयसे वित्तधमाध्यक्ष्यायानुक्षत्तारम् स्वाहा॥ १३॥

या ओषधीः पूर्वा जाता देवभ्यस्त्रियुगं पुरा। मनैनु बभ्रूणा-महर्ठ०शतं धामानि सप्त च स्वाहा॥ १४॥

त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिं पतिवेदनम्। उर्वारुकमिव बन्धनादितो मुक्षीय मामुतः स्वाहा॥ १५॥

देवसवितः प्रसुव यज्ञं प्रसुव यज्ञपतिं भगाय। दिव्यो गन्धर्वः केतपूः केतं नः पुनातु वाचस्पतिर्वाजं नः स्वदतु स्वाहा स्वाहा॥ १६॥

सीसेन तन्त्रं मनसा मनीषिण ऊर्णासूत्रेण कवयो वयन्ति। अश्विना यज्ञर्ठ० सविता सरस्वतीन्द्रस्य रूपं वरुणो भिषजयन् स्वाहा॥ १७॥

आशुः शिशानो वृषभो न भीमो घनाघनः क्षोभणश्चर्षणीनाम्। संक्रन्दनोऽनिमष एकवीरः शतर्ठ० सेना अजयत्साकमिन्द्रः स्वाहा॥ १८॥

इमर्ठ० साहस्त्रर्ठ० शतधारमुत्सं व्यच्यमानर्ठ० सरिरस्य मध्ये। घृतं दुहाना-मदितिं जनायाग्ने मा हिर्ठ०सीः परमे व्योमन्। गवयमारण्यमनु ते दिशामि तेन चिन्वानस्तन्वो निषीद। गवयं ते शुगृच्छतु यं द्विष्मस्तं ते शुगृच्छतु स्वाहा॥ १९॥

कुम्भो वनिष्ठुर्जनिता शचीभिर्यस्मिन्नग्रे योन्यां गर्भो अन्तः। प्लाशिर्व्यक्तः शतधार उत्सो दुहे न कुम्भी स्वधां पितृभ्यः स्वाहा॥ २०॥

आक्रन्दय बलमोजो न आधा निष्टनिहि दुरिताबाधमानः। अपप्रोथ दुन्दुभे दुच्छुना इत इन्द्रस्य मुष्टिरसि वीडयस्व स्वाहा॥ २१॥

इन्द्रायाहि तूतुजान उप ब्रह्माणि हरिवः। सुते दधिष्व नश्चनः स्वाहा॥ २२॥

चन्द्रमा अप्स्वन्तरा सुपर्णो धावते दिवि। रयिं पिशङ्गं बहुलं पुरुस्पृहर्ठ० हरिरेति कनिक्रदत् स्वाहा॥ २३॥

गणानां त्वा गणपतिर्ठ० हवामहे प्रियाणां त्वा प्रियपतिर्ठ० हवामहे निधीनां त्वा निधिपतिर्ठ० हवामहे वसो मम। आहमजानि गर्भधमा त्वमजासि गर्भधम् स्वाहा॥ २४॥

उग्रं लोहितेन मित्रर्ठ० सौव्रत्येन रुद्रं दौर्व्रत्येनेन्द्रं प्रक्रीडेन मरुतो बलेन साध्यान्प्रमुदा। भवस्य कण्ठ्यर्ठ० रुद्रस्यान्तः पार्श्व्यं महादेवस्य यकृच्छर्वस्य वनिष्ठुः पशुपतेः पुरीतत् स्वाहा॥ २५॥

पवित्रेण पुनीहि मा शुक्रेण देव दीद्यत्। अग्ने क्रत्वा क्रतूँरनु॥ रनु आजिघ्र कलशं मह्या त्वा विशन्त्विन्दवः। पुनरूर्जा निवर्तस्व सा नः सहस्त्रं धुक्ष्वोरुधारा पयस्वती पुनर्माविशताद्रयिः स्वाहा॥ २७॥

वायो शुक्रो अयामि ते मध्वो अग्रं दिविष्टिषु। आयाहि सोमपीतये स्पार्हो देव नियुत्वता स्वाहा॥ २८॥

दैव्या होतारा ऊर्ध्वमध्वरं नोऽग्नेर्जिह्वामभिगृणीतम्। कृणुतं नः स्विष्टिम् स्वाहा॥ २९॥

त्रीणि त आहुर्दिवि बन्धनानि त्रीण्यप्सु त्रीण्यन्तःसमुद्रे। उतेव मे वरुणश्छन्त्स्यर्वन् यत्रा त आहुः परमं जनित्रम् स्वाहा॥ ३०॥

प्रतिश्रुत्काया अर्तनं घोषाय भषमन्ताय बहुवादिनमनन्ताय मूकर्ठ० शब्दायाडम्बराघातं महसे वीणावादं क्रोशाय तूणवध्ममवरस्पराय शङ्खध्मं वनाय वनपमन्यतोऽरण्याय दावपम् स्वाहा॥ ३१॥

शुद्धवालः सर्वशुद्धवालो मणिवालस्त आश्विनाः श्येतः श्येताक्षोऽरुणस्ते रुद्राय पशुपतये कर्णा यामा अवलिप्ता रौद्रा नभोरूपाः पार्जन्याः स्वाहा॥ ३२॥

वनस्पते वीड्वङ्गो हि भूया अस्मत्सखाप्रतरणः सुवीरः। गोभिः सन्नद्धो असिवीडय स्वास्थाता ते जयतु जेत्वानि स्वाहा॥ ३३॥

सुपर्णां वस्ते मृगो अस्यादन्तो गोभिः संनद्धा पतति प्रसूता। यत्रा नरः सं च वि च द्रवन्ति तत्रास्मभ्यमिषवः शर्म यर्ठ०सन् स्वाहा॥ ३४॥

अग्ने अच्छा वदेह नः प्रति नः सुमना भव। प्र नो यच्छ सहस्रजित्त्वर्ठ०हि धनदा असि स्वाहा॥ ३५॥

भद्रं कर्णेभिःशृणुयाम देवा भद्रं पश्येमाक्षभिर्यजत्राः। स्थिरै-रङ्गैस्तुष्टुवार्ठ० सस्तनुभिर्व्यशेमहि देव हितं यदायुः स्वाहा॥ ३६॥

अपां फेनेन नमुचेः शिर इन्द्रोदवर्तयः। विश्वा यदजयः स्पृधः स्वाहा॥ ३७॥

वातं प्राणेनापानेन नासिके उपयाममधरेणौष्ठेन सदुत्तरेण प्रकाशेनान्तरमनूकाशेन बाह्यं निवेष्यं मूर्ध्ना स्तनयित्नुं निर्बाधेनाशनिं मस्तिष्केण विद्युतं कनीनकाभ्यां कर्णाभ्यार्ठ० श्रोतर्ठ० श्रोत्राभ्यां कर्णौ तेदनीमधरकण्ठेनापः शुष्ककण्ठेन चित्तं मन्याभिरदितिर्ठ० शीर्ष्णा निर्ऋतिं निर्जल्पेन शीर्ष्णा संक्रोशैः प्राणान् रेष्माणर्ठ० स्तुपेन स्वाहा॥ ३८॥

इदर्ठ० हविः प्रजननं मे अस्तु दशवीरर्ठ० सर्वगणर्ठ० स्वस्तये। आत्मसनि प्रजासनि पशुसनि लोकसन्यभयसनि। अग्निः प्रजां बहुलां मे करोत्वन्नं पयो रेतो अस्मासु धत्त स्वाहा॥ ३९॥

खड्गो वैश्वदेवः श्वा कृष्णः कर्णो गर्दभस्तरक्षुस्ते रक्षसामिन्द्राय सूकरः सिर्ठ०हो मारुतः कृकलासः पिप्पका शकुनिस्ते शरव्यायै विश्वेषां देवानां पृषतः स्वाहा॥ ४०॥

मृगो न भीमः कुचरो गिरिष्ठाः परावत आजगन्था परस्याः। सृकर्ठ०सर्ठ०शाय पविमिन्द्र तिग्मं वि शत्रून् ताढि वि मृधो नुदस्व स्वाहा॥ ४१॥

इन्दुर्दक्षः श्येन ऋतावा हिरण्यपक्षः शकुनो भुरण्युः। महान् सधस्थे ध्रुव आ निषत्तो नमस्ते अस्तु मा मा हिर्ठ०सीः स्वाहा॥ ४२॥

जीमूतस्येव भवति प्रतीकं यद्वर्मी याति समदामुपस्थे। अनाविद्धया तन्वा जय त्वर्ठ० स त्वा वर्मणो महिमा पिपर्तु स्वाहा॥ ४३॥

तीव्रान्घोषान्कृण्वते वृषपाणयोऽश्वा रथेभिः सह वाजयन्त। अवक्रामन्तः प्रपदैरमित्रान्क्षिणन्ति शत्रूं १॥ रनपव्ययन्तः स्वाहा॥ ४४॥

अग्निं दूतं पुरो दधे हव्यवाहमुप ब्रुवे॥ देवाँ२॥ आसादयादिह स्वाहा॥ ४५॥

अदित्यास्त्वा पृष्ठे सादयाम्यन्तरिक्षस्य धत्री विष्टम्भनीं दिशामधिपत्नीं भुवनानाम्। ऊर्मिर्द्रप्सो अपामसि विश्वकर्मा त ऋषिरश्विनाध्वर्यू सादयतामिह त्वा स्वाहा॥ ४६॥

द्यौस्ते पृथिव्यन्तरिक्षं वायुश्छिद्रं पृणातु ते। सूर्यस्ते नक्षत्रैः सह लोकं कृणोतु साधुया स्वाहा॥ ४७॥

संबर्हिरङ्क्तार्ठ०हविषा घृतेन समादित्यैर्वसुभिः संमरुद्भिः। समिन्द्रो विश्वदेवेभिरङ्क्ता दिव्यं नभो गच्छतु यत्स्वाहा॥ ४८॥

पवमानः सो अद्य नः पवित्रेण विचर्षणिः। यः पोता स पुनातु मा स्वाहा॥ ४९॥

अभ्यर्षत सुष्टुतिं गव्यमाजिमस्मासु भद्रा द्रविणानि धत्त। इमं यज्ञं नयत देवता नो घृतस्य धारा मधुमत्पवन्ते स्वाहा॥ ५०॥

अथवा

केवलं नामाऽनुक्रमेण क्षेत्रपालहोमः

ॐ अजराय स्वाहा से ॐ शुक्राय स्वाहा तक के पचास नाम मन्त्रों का आचार्य सहित सभी ब्राह्मण उच्चारण करते हुए यजमान से क्षेत्रपालहोम करावें।

ॐ अजराय स्वाहा। ॐ व्यापकाय स्वाहा। ॐ इन्द्रचौराय स्वाहा। ॐ इन्द्रमूर्तये स्वाहा। ॐ उक्ष्णे स्वाहा। ॐ कूष्माण्डाय स्वाहा। ॐ वरुणाय स्वाहा। ॐ वटुकाय स्वाहा। ॐ विमुक्ताय स्वाहा। ॐ लिप्तकाय स्वाहा। ॐ नीललोकाय स्वाहा। ॐ एकदंष्ट्राय स्वाहा। ॐ ऐरावताय स्वाहा। ॐ ओषधीघ्नाय स्वाहा। ॐ बन्धनाय स्वाहा। ॐ दिव्यकरणाय स्वाहा। ॐ कम्बलाय स्वाहा। ॐ भीषणाय स्वाहा। ॐ गवयाय स्वाहा। ॐ घंटाय स्वाहा। ॐ व्यालाय स्वाहा। ॐ अंशवे स्वाहा। ॐ चन्द्रवारुणाय स्वाहा। ॐ घटाटोपाय स्वाहा। ॐ जटिलाय स्वाहा। ॐ क्रतवे स्वाहा। ॐ घण्टेश्वराय स्वाहा। ॐ विकटाय स्वाहा। ॐ मणिमाणाय स्वाहा। ॐ गणबन्धाय स्वाहा। ॐ मुण्डाय स्वाहा। ॐ बर्बूकराय स्वाहा। ॐ सुधापाय स्वाहा। ॐ वैनाय स्वाहा। ॐ पवनाय स्वाहा। ॐ ढुण्ढकरणाय स्वाहा। ॐ स्थविराय स्वाहा। ॐ दन्तुराय स्वाहा। ॐ धनदाय स्वाहा। ॐ नागकर्णाय स्वाहा। ॐ महाबलाय स्वाहा। ॐ फेत्काराय स्वाहा। ॐ वीरकाय स्वाहा। ॐ सिंहाय स्वाहा। ॐ मृगाय स्वाहा। ॐ यक्षाय स्वाहा। ॐ मेघवाहनाय स्वाहा। ॐ तीक्ष्णाय स्वाहा। ॐ अमराय स्वाहा। ॐ शुक्राय स्वाहा।

पीठदेवताहवनम्

आचार्य और ब्राह्मण 'ॐ मण्डूकाय स्वाहा' से 'ॐ धूमावती योगपीठाय स्वाहा' तक के आगे दिए हुए नाम मन्त्रों का उच्चारण करते हुए पीठदेवताओं का हवन यजमान से करावें—

ॐ मण्डूकाय स्वाहा। ॐ कालाग्नि रुद्राय स्वाहा। ॐ मूलप्रकृत्यै स्वाहा। ॐ आधारशक्तये स्वाहा। ॐ कूर्माय स्वाहा। ॐ शेषाय स्वाहा। ॐ वाराहाय स्वाहा। ॐ पृथिव्यै स्वाहा। ॐ सुधाम्बुधये स्वाहा। ॐ रत्नदीपाय स्वाहा। ॐ मेरवे स्वाहा। ॐ नन्दनवनाय स्वाहा। ॐ कल्पवृक्षाय स्वाहा। ॐ विचित्रानन्दभूम्यै स्वाहा। ॐ रत्नमन्दिराय स्वाहा। ॐ रत्नवेदिकायै स्वाहा। ॐ धर्मवारणाय स्वाहा। ॐ रत्नसिंहासनाय स्वाहा। ॐ धर्माय स्वाहा। ॐ ज्ञानाय स्वाहा। ॐ वैराग्याय स्वाहा। ॐ ऐश्वर्याय स्वाहा। ॐ अधर्माय स्वाहा। ॐ अज्ञानाय स्वाहा। ॐ अवैराग्याय स्वाहा। ॐ अनैश्वर्याय स्वाहा। ॐ आनन्दकन्दाय स्वाहा। ॐ संविन्नालाय स्वाहा। ॐ सर्वतत्त्वात्मक पद्माय स्वाहा। ॐ प्रकृतिमय पत्रेभ्यो स्वाहा। ॐ विकारमय केसरेभ्यो स्वाहा। ॐ पञ्चाशद्बीजाढ्य कर्णिकायै स्वाहा। ॐ अं द्वादश कलात्मने सूर्यमण्डलाय स्वाहा। ॐ उं षोडशकलात्मने सोममण्डलाय स्वाहा। ॐ मं दशकलात्मने वह्निमण्डलाय स्वाहा। ॐ सं सत्त्वाय स्वाहा। ॐ रं रजसे स्वाहा। ॐ तं तमसे स्वाहा। ॐ अं आत्मने स्वाहा। ॐ उं अन्तरात्मने स्वाहा। ॐ मं परमात्मने स्वाहा। ॐ ह्रीं ज्ञानात्मने स्वाहा। ॐ मां मायातत्त्वाय स्वाहा। ॐ कं कलत्त्वाय स्वाहा। ॐ विं विद्यातत्त्वाय स्वाहा। ॐ णं परतत्त्वाय स्वाहा। ॐ बं ब्रह्म प्रेताय स्वाहा। ॐ विं विष्णु प्रेताय स्वाहा। ॐ रुं रुद्र प्रेताय स्वाहा। ॐ इं ईश्वर प्रेताय स्वाहा। ॐ सं सदाशिव प्रेताय स्वाहा। ॐ सुधार्णवासनाय स्वाहा। ॐ प्रेताम्बुजासनाय स्वाहा। ॐ दिव्यासनाय स्वाहा। ॐ चक्रासनाय स्वाहा। ॐ सर्वयन्त्रासनाय स्वाहा। ॐ साध्यसिद्धासनाय स्वाहा। ॐ कामदायै स्वाहा। ॐ मानदायै स्वाहा। ॐ नक्तायै स्वाहा। ॐ मधुरायै स्वाहा। ॐ मधुराननायै स्वाहा। ॐ नर्मदायै स्वाहा। ॐ भोगदायै स्वाहा। ॐ नन्दायै स्वाहा। ॐ प्राणदायै स्वाहा। ॐ धूमावतीयोगपीठाय स्वाहा।

आवरणदेवताहोमः

ॐ धूं धूं हृदयाय स्वाहा। ॐ धूं शिरसे स्वाहा। ॐ मां शिखायै वषट् स्वाहा। ॐ वं नमः कवचाय हुं स्वाहा। ॐ तिं नेत्रत्रयाय वषट् स्वाहा। ॐ स्वाहा अस्त्राय फट् स्वाहा। ॐ क्षुधायै स्वाहा। ॐ तृष्णायै स्वाहा। ॐ रत्यै स्वाहा। ॐ निद्रायै स्वाहा। ॐ निर्ऋत्यै स्वाहा। ॐ दुर्गत्यै स्वाहा। ॐ रुषायै स्वाहा। ॐ अक्षमायै स्वाहा। ॐ लं इन्द्राय स्वाहा। ॐ रं अग्नये तेजोऽधिपतये स्वाहा। ॐ मं यमाय स्वाहा। ॐ क्षं निर्ऋतिये स्वाहा। ॐ वं वरुणाय स्वाहा। ॐ यं वायवे स्वाहा। ॐ सं सोमाय स्वाहा। ॐ हं ईशान्ये स्वाहा। ॐ आं ब्रह्मणे स्वाहा। ॐ ह्रीं अनन्ताय स्वाहा। ॐ वं व्रजाय स्वाहा। ॐ शं शक्तये स्वाहा। ॐ दं दण्डाय स्वाहा। ॐ खं खंगाय स्वाहा। ॐ पां पाशाय स्वाहा। ॐ अं अंकुशाय स्वाहा। ॐ गं गदाय स्वाहा। ॐ शूं शूलाय स्वाहा। ॐ पं पद्माय स्वाहा। ॐ चं चक्राय स्वाहा।

धूमावत्यष्टोत्तरशतनामावल्या होमः

आचार्य धूमावती के निम्न नामों का क्रमानुसार उच्चारण करते हुए यजमान से प्रत्येक नाममन्त्र के द्वारा कुण्ड में हवन करावें—

१. ॐ धूमावत्यै स्वाहा।
२. ॐ धूम्रवर्णायै स्वाहा।
३. ॐ धूम्रपानपरायणायै स्वाहा।
४. ॐ धूम्राक्षमथिन्यै स्वाहा।
५. ॐ धन्यायै स्वाहा।
६. ॐ धन्यस्थाननिवासिन्यै स्वाहा।
७. ॐ अघोराचारसन्तुष्टायै स्वाहा।
८. ॐ अघोराचारमण्डितायै स्वाहा।
९. ॐ अघोरमन्त्रसम्प्रीतायै स्वाहा।
१०. ॐ अघोरमन्त्रपूजितायै स्वाहा।
११. ॐ अट्टाट्टहासनिरतायै स्वाहा।
१२. ॐ मलिनाम्बरधारिण्यै स्वाहा।
१३. ॐ वृद्धायै स्वाहा।
१४. ॐ विरूपायै स्वाहा।
१५. ॐ विधवायै स्वाहा।
१६. ॐ विद्यायै स्वाहा।
१७. ॐ विरलद्विजायै स्वाहा।
१८. ॐ प्रवृद्धघोणायै स्वाहा।
१९. ॐ कुमुख्यै स्वाहा।
२०. ॐ कुटिलायै स्वाहा।
२१. ॐ कुटिलेक्षणायै स्वाहा।
२२. ॐ कराल्यै स्वाहा।

२३. ॐ करालास्यायै स्वाहा।
२४. ॐ कङ्काल्यै स्वाहा।
२५. ॐ शूर्पधारिण्यै स्वाहा।
२६. ॐ काकध्वजरथारूढायै स्वाहा।
२७. ॐ केवलायै स्वाहा।
२८. ॐ कठिनायै स्वाहा।
२९. ॐ कुह्वै स्वाहा।
३०. ॐ क्षुत्पिपासार्दितायै स्वाहा।
३१. ॐ नित्यायै स्वाहा।
३२. ॐ ललज्जिह्वायै स्वाहा।
३३. ॐ दिगम्बर्यै स्वाहा।
३४. ॐ दिर्घोदर्यै स्वाहा।
३५. ॐ दिर्घरवायै स्वाहा।
३६. ॐ दिर्घाङ्ग्यै स्वाहा।
३७. ॐ दीर्घमस्तकायै स्वाहा।
३८. ॐ विमुक्तकुन्तलायै स्वाहा।
३९. ॐ कीर्त्यायै स्वाहा।
४०. ॐ कैलासस्थानवासिन्यै स्वाहा।
४१. ॐ क्रूरायै स्वाहा।
४२. ॐ कालस्वरूपायै स्वाहा।
४३. ॐ कालचक्रप्रवर्तिन्यै स्वाहा।
४४. ॐ विवर्णायै स्वाहा।
४५. ॐ चञ्चलायै स्वाहा।
४६. ॐ दुष्टायै स्वाहा।
४७. ॐ दुष्टविध्वंसकारिण्यै स्वाहा।
४८. ॐ चण्ड्यै स्वाहा।
४९. ॐ चण्डस्वरूपायै स्वाहा।
५०. ॐ चामुण्डायै स्वाहा।
५१. ॐ चण्डनिःस्वनायै स्वाहा।
५२. ॐ चण्डवेगायै स्वाहा।
५३. ॐ चण्डगत्यै स्वाहा।
५४. ॐ चण्डविनाशिन्यै स्वाहा।
५५. ॐ मुण्डविनाशिन्यै स्वाहा।
५६. ॐ चाण्डालिन्यै स्वाहा।
५७. ॐ चित्ररेखायै स्वाहा।
५८. ॐ चित्राङ्ग्यै स्वाहा।
५९. ॐ चित्ररूपिण्यै स्वाहा।
६०. ॐ कृष्णायै स्वाहा।
६१. ॐ कपर्दिन्यै स्वाहा।
६२. ॐ कुल्लायै स्वाहा।
६३. ॐ कृष्णारूपायै स्वाहा।
६४. ॐ क्रियावत्यै स्वाहा।
६५. ॐ कुम्भस्तन्यै स्वाहा।
६६. ॐ महोन्मत्तायै स्वाहा।
६७. ॐ मदिरापानविह्वलायै स्वाहा।
६८. ॐ चतुर्भुजायै स्वाहा।
६९. ॐ ललज्जिह्वायै स्वाहा।
७०. ॐ शत्रुसंहारकारिण्यै स्वाहा।
७१. ॐ शवारूढायै स्वाहा।
७२. ॐ शवगतायै स्वाहा।
७३. ॐ श्मशानस्थानवासिन्यै स्वाहा।
७४. ॐ दुराराध्यायै स्वाहा।
७५. ॐ दुराचारायै स्वाहा।
७६. ॐ दुर्जनप्रीतिदायिन्यै स्वाहा।
७७. ॐ निर्मांसायै स्वाहा।
७८. ॐ निराकारायै स्वाहा।
७९. ॐ धूमहस्तायै स्वाहा।
८०. ॐ वरान्वितायै स्वाहा।

८१. ॐ कलहायै स्वाहा।
८२. ॐ कलिप्रीतायै स्वाहा।
८३. ॐ कलिकल्मषनाशिन्यै स्वाहा।
८४. ॐ महाकालस्वरूपायै स्वाहा।
८५. ॐ महाकालप्रपूजितायै स्वाहा।
८६. ॐ महादेवप्रियायै स्वाहा।
८७. ॐ मेधायै स्वाहा।
८८. ॐ महासङ्कटनाशिन्यै स्वाहा।
८९. ॐ भक्तप्रियायै स्वाहा।
९०. ॐ भक्तगत्यै स्वाहा।
९१. ॐ भक्तशत्रुविनाशिन्यै स्वाहा।
९२. ॐ भैरव्यै स्वाहा।
९३. ॐ भुवनायै स्वाहा।
९४. ॐ भीमायै स्वाहा।
९५. ॐ भारत्यै स्वाहा।
९६. ॐ भुवनात्मिकायै स्वाहा।
९७. ॐ भेरुण्डायै स्वाहा।
९८. ॐ भीमनयनायै स्वाहा।
९९. ॐ त्रिनेत्रायै स्वाहा।
१००. ॐ बहुरूपिण्यै स्वाहा।
१०१. ॐ त्रिलोकेश्यै स्वाहा।
१०२. ॐ त्रिकालज्ञायै स्वाहा।
१०३. ॐ त्रिस्वरूपायै स्वाहा।
१०४. ॐ त्रयीतनवे स्वाहा।
१०५. ॐ त्रिमूर्त्यै स्वाहा।
१०६. ॐ तन्व्यै स्वाहा।
१०७. ॐ त्रिशक्त्यै स्वाहा।
१०८. ॐ त्रिशूलिन्यै स्वाहा।

अग्निपूजनम्

आचार्य निम्न वैदिक मंत्र का उच्चारण करके यजमान से अग्निदेवता का पूजन करावें—

ॐ अग्ने नय सुपथा राये अस्मान्विश्वानि देव वयुनानि विद्वान्। युयोध्यस्मज्जुहुराणमेनो भूयिष्ठां ते नम उक्तिं विधेम॥ ॐ भूर्भुवः स्वः स्वाहा-स्वधायुताय मृडाग्नये वैश्वानराय नमः। इत्यग्निं गन्धपुष्पादीना सम्पूजयेत्।

स्विष्टकृद्धोमः

आचार्य बचे हुए शेष हविद्रव्य को प्रोक्षणीपात्र में ग्रहण कर अन्वारब्ध होकर यजमान को खड़ा करवाके स्विष्टकृत् होम करावें—

ॐ अग्नये स्विष्टकृते स्वाहा - इदमग्नये स्विष्टकृते न मम।

यह कहकर बचे हुए हविर्द्रव्य का प्रक्षेप प्रज्वलित अग्निकुण्ड में करें।

भूरादिनवाहुतिभिर्होमः

ॐ भूः स्वाहा — इदमग्नये न मम। ॐ भुवः स्वाहा—इदं वायवे न मम। ॐ स्वः स्वाहा—इदं सूर्याय न मम।

ॐ त्वं नो अग्ने वरुणस्य विद्वान्देवस्य हेडो अवयासिसीष्ठाः। यजिष्ठो वह्नितमः शोशुचानो विश्वा द्वेषाठं०सि प्रमुमुग्ध्यस्मत् स्वाहा॥ इदमग्नीवरुणाभ्यां न मम॥

ॐ स त्वं नो अग्नेऽवमो भवोती नेदिष्ठो अस्या उषसो व्युष्टौ। अवयक्ष्व नो वरुणठं० रराणो वीहि मृडीकठं० सुहवो न एधि स्वाहा॥ इदमग्नीवरुणाभ्यां न मम॥

ॐ अयाश्चाग्नेऽस्यनभिशस्तिपाश्च सत्यमित्वमया असि। अया नो यज्ञं वहास्यया नो धेहि भेषजठं० स्वाहा॥ इदमग्नये अयसे न मम॥

ॐ ये ते शतं वरुण ये सहस्त्रं यज्ञियाः पाशा वितता महान्तः। ते भिर्न्नो अद्य सवितोत विष्णुर्विश्वे मुञ्चन्तु मरुतः स्वर्काः स्वाहा॥ इदं वरुणाय सवित्रे विष्णवे विश्वेभ्यो देवेभ्यो मरुद्भ्यः स्वर्केभ्यश्च न मम॥

ॐ उदुत्तमं वरुण पाशमस्मदवाधमं वि मध्यमं श्रथाय। अथा वयमादित्य व्रते तवानागसो अदितये स्याम स्वाहा॥ इदं वरुणा-यादित्यादितये न मम॥ ॐ प्रजापतये स्वाहा, इदं प्रजापतये न मम।

दशदिक्पालबलिः

आचार्य निम्न मन्त्रों और उनके आगे दिये गये वाक्यों का उच्चारण करते हुए यजमान से क्रमानुसार दशदिक्पालों को बलि प्रदान करावें—

अग्न्यायतनस्य प्राच्याम्—ॐ त्रातारमिन्द्रमवितारमिन्द्रठं० हवे हवे सुहवठं० शूरमिन्द्रम्। ह्वयामि शक्रं पुरुहूतमिन्दठं० स्वस्ति मघवा धात्विन्द्रः॥ ॐ इन्द्राय नमः। इन्द्राय साङ्गाय सपरिवाराय सायुधाय सशक्तिकाय इमं सदीपदधिभाषभक्तबलिं समर्पयामि। भो इन्द्र! स्वां

दिशं रक्ष बलिं भक्ष मम सकुटुम्बस्य सपरिवारस्य आयुःकर्ता क्षेमकर्ता शान्तिकर्ता पुष्टिकर्ता तुष्टिकर्ता वरदो भव अनेन बलिदानेन इन्द्रः प्रीयताम्॥ १ ॥

आग्नेयाम्—ॐ त्वं नो अग्ने तव देव पायुभिर्मघोनो रक्ष तन्वश्च वन्द्य। त्राता तोकस्य तनये गवामस्य निमेषꣳ रक्षमाणस्तव व्रते॥ ॐ अग्नये नमः। अग्नये साङ्गाय सपरिवाराय सायुधाय सशक्तिकाय इमं सदीपदधिमाषभक्तबलिं समर्पयामि। भो अग्ने! स्वां दिशं रक्ष बलिं भक्ष मम सकुटुम्बस्य सपरिवारस्य आयुःकर्ता क्षेमकर्ता शान्तिकर्ता पुष्टिकर्ता तुष्टिकर्ता वरदो भव। अनेन बलिदानेन अग्निः प्रीयताम्॥ २॥

दक्षिणे—ॐ यमाय त्वाङ्गिरस्वते पितृमते स्वाहा। घर्माय स्वाहा घर्मः पित्रे॥ ॐ यमाय नमः। यमाय साङ्गाय सपरिवाराय सायुधाय सशक्तिकाय इमं सदीपदधिमाषभक्तबलिं समर्पयामि। भो यम! स्वां दिशं रक्ष बलिं भक्ष मम सकुटुम्बस्य सपरिवारस्य आयुःकर्ता, क्षेमकर्ता, शान्तिकर्ता, पुष्टिकर्ता, तुष्टिकर्ता वरदो भव। अनेन बलिदानेन यमः प्रीयताम्॥ ३॥

नैर्ऋत्याम्—ॐ असुन्वन्तमयजमानमिच्छ स्तेनस्येत्यामन्विहि तस्करस्य। अन्यमस्मदिच्छ सा त इत्या नमो देवि निर्ऋते तुभ्यमस्तु॥ ॐ निर्ऋतये नमः। निर्ऋतये साङ्गाय सपरिवारायै सायुधायै सशक्तिकायै इमं सदीप-दधिमाषभक्तबलिं समर्पयामि। भो निर्ऋते! स्वां दिशं रक्ष बलिं भक्ष मम सकुटुम्बस्य सपरिवारस्य आयुःकर्ता क्षेमकर्ता शान्तिकर्ता पुष्टिकर्ता तुष्टिकर्ता वरदो भव। अनेन बलिदानेन निर्ऋतिः प्रीयताम्॥ ४॥

पश्चिमे—ॐ तत्त्वा यामि ब्रह्मणा वन्दमानस्तदाशास्ते यजमानो हविर्भिः। अहेडमानो वरुणेह बोध्युरुशꣳ स मा न आयुः प्रमोषीः॥ ॐ वरुणाय नमः। वरुणाय साङ्गाय सपरिवाराय सायुधाय सशक्तिकाय इमं सदीपदधिमाषभक्तबलिं समर्पयामि। भो वरुण! स्वां दिशं रक्ष बलिं भक्ष मम सकुटुम्बस्य सपरिवारस्य आयुःकर्ता शान्तिकर्ता पुष्टिकर्ता तुष्टिकर्ता वरदो भव। अनेन बलिदानेन वरुणः प्रीयताम्॥ ५॥

वायव्याम्—ॐ आ नो नियुद्भिः शतिनीभिरध्वरꣳ सहस्त्रिणी-भिरुपयाहि यज्ञम्। वायो अस्मिन्सवने मादयस्व यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः॥ ॐ वायवे नमः। वायवे साङ्गाय सपरिवाराय सायुधाय सशक्तिकाय इमं सदीपदधिमाषभक्तबलिं समर्पयामि। भो वायो! स्वां दिशं रक्ष बलिं भक्ष मम सकुटुम्बस्य सपरिवारस्य आयुःकर्ता क्षेमकर्ता शान्तिकर्ता पुष्टिकर्ता तुष्टिकर्ता वरदो भव। अनेन बलिदानेन वायुः प्रीयताम्॥ ६॥

उत्तरे—ॐ वयꣳ सोम व्रते तव मनस्तनुषु बिभ्रतः। प्रजावन्तः सचेमहि॥ ॐ सोमाय नमः। सोमाय साङ्गाय सपरिवाराय सायुधाय सशक्तिकाय इमं सदीपदधिमाषभक्तबलिं समर्पयामि। भो सोम! स्वां दिशं रक्ष बलिं भक्ष मम सकुटुम्बस्य सपरिवारस्य आयुःकर्ता क्षेमकर्ता शान्तिकर्ता पुष्टिकर्ता तुष्टिकर्ता वरदो भव। अनेन बलिदानेन सोमः प्रीयताम्॥ ७॥

ईशान्याम्—ॐ तमीशानं जगतस्तस्थुषस्पतिं धियं जिन्वमवसे हूमहे वयम्। पूषा नो यथा वेदसामसद्वृधे रक्षितापायुरदब्धः स्वस्तये॥ ॐ ईशानाय नमः। ईशानाय साङ्गाय सपरिवाराय सायुधाय सशक्तिकाय इमं सदीपदधिमाषभक्तबलिं समर्पयामि। भो ईशान! स्वां दिशं रक्ष बलिं भक्ष मम सकुटुम्बस्य सपरिवारस्य आयुःकर्ता क्षेमकर्ता पुष्टिकर्ता तुष्टिकर्ता वरदो भव। अनेन बलिदानेन ईशानः प्रीयताम्॥ ८॥

ईशानपूर्वयोर्मध्ये—ॐ अस्मे रुद्रा मेहना पर्वतासो वृत्रहत्ये भरहूतौ सजोषाः। यः शꣳ सते स्तुवते धायि पज्र इन्द्रज्येष्ठा अस्माँ२॥ अवन्तु देवाः॥ ॐ ब्रह्मणे नमः। ब्रह्मणे साङ्गाय सपरिवाराय सायुधाय सशक्तिकाय इमं सदीपदधिमाषभक्तबलिं समर्पयामि। भो ब्रह्मन्! स्वां दिशं रक्ष बलिं भक्ष मम सकुटुम्बस्य सपरिवारस्य आयुःकर्ता क्षेमकर्ता शान्तिकर्ता पुष्टिकर्ता तुष्टिकर्ता वरदो भव। अनेन बलिदानेन ब्रह्मा प्रीयताम्॥ ९॥

निर्ऋतिपश्चिमयोर्मध्ये—ॐ स्योना पृथिवि नो भवानृक्षरा निवेशनी। यच्छा नः शर्म सप्रथाः॥ ॐ अनन्ताय नमः। अनन्ताय साङ्गाय सपरिवाराय सायुधाय सशक्तिकाय इमं सदीपदधिभाष-भक्तबलिं समर्पयामि। भो अनन्त! स्वां दिशं रक्ष बलिं भक्ष मम सकुटुम्बस्य सपरिवारस्य आयुःकर्ता क्षेमकर्ता शान्तिकर्ता पुष्टिकर्ता तुष्टिकर्ता वरदो भव अनेन बलिदानेन अनन्त प्रीयताम्॥ १०॥

(अथवा)

एकतन्त्रेण दशदिक्पालबलिः

ॐ प्राच्यै दिशे स्वाहार्वाच्यै दिशे स्वाहा दक्षिणायै दिशे स्वाहार्वाच्यै दिशे स्वाहा प्रतीच्यै दिशे स्वाहार्वाच्यै दिशे स्वाहोदीच्यै दिशे स्वाहार्वाच्यै दिशे स्वाहोर्ध्वायै दिशे स्वाहार्वाच्यै दिशे स्वाहार्वाच्यै दिशे स्वाहार्वाच्यै दिशे स्वाहा॥ ॐ इन्द्रादिभ्यो दशभ्यो दिक्पालेभ्यो नमः। ॐ इन्द्रादिदशदिक्पालेभ्यः साङ्गेभ्य सपरिवारेभ्य सायुधेभ्यः सशक्तिकेभ्यः इमान् सदीपदधिमाषभक्तबलीन् समर्पयामि। भो भो इन्द्रादिदशदिक्पालाः! स्वां स्वां दिशं रक्षत बलिं भक्षत मम सकुटुम्बस्य सपरिवारस्य आयुःकर्तारः क्षेमकर्तारः शान्तिकर्तारः पुष्टिकर्तारः तुष्टि-कर्तारः वरदाः भवत। अनेन बलिदानेन इन्द्रादिदशदिक्पालाः प्रीयन्ताम्।

नवग्रहबलिः

ॐ आ कृष्णेन रजसा वर्तमानो निवेशयन्नमृतं मर्त्यं च। हिरण्ययेन सविता रथेनादेवो याति भुवनानि पश्यन्॥ ॐ सूर्याय नमः। सूर्याय साङ्गाय सपरिवाराय सायुधाय सशक्तिकाय ईश्वराग्निरूपाधिदेवता-प्रत्यधिदेवता-सहिताय इमं सदीपदधिमाषभक्तबलिं समर्पयामि। भो सूर्य! इमं बलिं गृहाण मम सकुटुम्बस्य सपरिवारस्य आयुःकर्ता क्षेमकर्ता शान्तिकर्ता पुष्टिकर्ता तुष्टिकर्ता वरदो भव। अनेन बलिदानेन सूर्यः प्रीयताम्॥ १॥

ॐ इमं देवा असपत्नर्ठ० सुवध्वं महते क्षत्राय महते ज्यैष्ठ्याय महते जानराज्यायेन्द्रस्येन्द्रियाय। इमममुष्य पुत्रममुष्यै पुत्रमुस्यै विश एष वोऽमी राजा सोमोऽस्माकं ब्राह्मणानार्ठ० राजा॥ ॐ सोमाय नमः। सोमाय साङ्गाय सपरिवाराय सायुधाय सशक्तिकाय उमाऽऽपो-रूपाधिदेवता—प्रत्यधिदेवतासहिताय इमं सदीपदधिमाषभक्तबलिं समर्पयामि। भो सोम! इमं बलिं गृहाण मम सकुटुम्बस्य सपरिवारस्य आयुःकर्ता क्षेमकर्ता शान्तिकर्ता पुष्टिकर्ता तुष्टिकर्ता वरदो भव। अनेन बलिदानेन सोमः प्रीयताम्॥ २॥

ॐ अग्निर्मूर्धा दिवः ककुत्पतिः पृथिव्या अयम्। अपार्ठ० रेतार्ठ० सि जिन्वति॥ ॐ भौमाय नमः। भौमाय साङ्गाय सपरिवाराय सायुधाय सशक्तिकाय स्कन्दभूमिरूपाधिदेवता-प्रत्यधिदेवतासहिताय इमं सदीपदधिमाषभक्तबलिं समर्पयामि। भो भौम! इमं बलिं गृहाण मम सकुटुम्बस्य सपरिवारस्य आयुःकर्ता क्षेमकर्ता शान्तिकर्ता पुष्टिकर्ता तुष्टिकर्ता वरदो भव। अनेन बलिदानेन भौमः प्रीयताम्॥ ३॥

ॐ उद्बुध्यस्वाग्ने प्रतिजागृहि त्वमिष्टापूर्तेसर्ठ० सृजेथामयं च। अस्मिन्त्सधस्थे अध्युत्तरस्मिन् विश्वेदेवा यजमानश्च सीदत॥ ॐ बुधाय नमः। बुधाय साङ्गाय सपरिवाराय सायुधाय सशक्तिकाय नारायण-विष्णुरूपाधिदेवता-प्रत्यधिदेवतासहिताय इमं सदीपदधिमाष-भक्तबलिं समर्पयामि। भो बुध! इमं बलिं गृहाण मम सकुटुम्बस्य सपरिवारस्य आयुःकर्ता क्षेमकर्ता शान्तिकर्ता पुष्टिकर्ता तुष्टिकर्ता वरदो भव। अनेन बलिदानेन बुधः प्रीयताम्॥ ४॥

ॐ बृहस्पते अति यदर्यो अर्हाद्युमद्विभातिक्रतुमज्जनेषु। यद्दीद-यच्छवस ऋतप्रजात तदस्मासु द्रविणं धेहि चित्रम्॥ ॐ बृहस्पतये नमः। बृहस्पतये साङ्गाय सपरिवाराय सायुधाय सशक्तिकाय ब्रह्मेन्द्र-रूपाधिदेवता-प्रत्यधिदेवतासहिता इमं सदीपदधिमाषभक्तबलिं

समर्पयामि। भो बृहस्पते! इमं बलिं गृहाण मम सकुटुम्बस्य सपरिवारस्य आयुःकर्ता क्षेमकर्ता शान्तिकर्ता पुष्टिकर्ता तुष्टिकर्ता वरदो भव। अनेन बलिदानेन बृहस्पतिः प्रीयताम्॥ ५॥

ॐ अन्नात्परिस्रुतो रसं ब्रह्मणा व्यपिबत्क्षत्त्रं पयः सोमं प्रजापतिः। ऋतेन सत्यमिन्द्रियं विपानर्ठ० शुक्रमन्धस इन्द्रस्येन्द्रियमिदं पयो मृतं मधु॥ ॐ शुक्राय नमः। शुक्राय साङ्गाय सपरिवाराय सायुधाय सशक्तिकाय इन्द्रेन्द्राणीरूपाधिदेवता-प्रत्यधिदेवतासहिताय इमं सदीपदधिमाषभक्तबलिं समर्पयामि। भो शुक्र! इमं बलिं गृहाण मम सकुटुम्बस्य सपरिवारस्य आयुःकर्ता क्षेमकर्ता शान्तिकर्ता पुष्टिकर्ता तुष्टिकर्ता वरदो भव। अनेन बलिदानेन शुक्रः प्रीयताम्॥ ६॥

ॐ शं नो देवीरभिष्टय आपो भवन्तु पीतये। शं यो रभिस्त्रवन्तु नः॥ ॐ शनैश्चराय नमः। शनैश्चराय साङ्गाय सपरिवाराय सायुधाय सशक्तिकाय यमप्रजापतिरूपाधिदेवता-प्रत्यधिदेवतासहिताय इमं सदीपदधिमाषभक्तबलिं समर्पयामि। भो शनैश्चर! इमं बलिं गृहाण मम सकुटुम्बस्य सपरिवारस्य आयुःकर्ता क्षेमकर्ता शान्तिकर्ता पुष्टिकर्ता तुष्टिकर्ता वरदो भव। अनेन बलिदानेन शनैश्चरः प्रीयताम्॥ ७॥

ॐ कया नश्चित्र आभुवदूती सदावृधः सखा। कया शचिष्ठया वृता॥ ॐ राहवे नमः। राहवे साङ्गाय सपरिवाराय सायुधाय सशक्तिकाय कालसर्परूपाधिदेवता-प्रत्यधिदेवतासहिताय इमं सदीपदधिमाषभक्तबलिं समर्पयामि। भो राहो! इमं बलिं गृहाण मम सकुटुम्बस्य सपरिवारस्य आयुःकर्ता क्षेमकर्ता शान्तिकर्ता पुष्टिकर्ता तुष्टिकर्ता वरदो भव। अनेन बलिदानेन राहुः प्रीयताम्॥ ८॥

ॐ केतुं कृण्वन्नकेतवे पेशो मर्य्या अपेशसे समुषद्भिरजायथाः॥ ॐ केतवे नमः। केतवे साङ्गाय सपरिवाराय सायुधाय सशक्तिकाय चित्रगुप्तब्रह्मरूपाधिदेवता-प्रत्यधिदेवतासहिताय इमं सदीपदधिमाष-

भक्तबलिं समर्पयामि। भो केतो! इमं बलिं गृहाण मम सकुटुम्बस्य सपरिवारस्य आयु:कर्ता क्षेमकर्ता शान्तिकर्ता पुष्टिकर्ता तुष्टिकर्ता वरदो भव। अनेन बलिदानेन केतुः प्रीयताम्॥ ९॥

पञ्चलोकपालबलि:

ॐ गणानां त्वा गणपतिर्ठ० हवामहे प्रियाणां त्वा प्रियपतिर्ठ० हवामहे निधीनां त्वा निधिपतिर्ठ० हवामहे वसो मम। आहमजानि गर्भधमा त्वमजासि गर्भधम्॥ ॐ गणपतये नमः। गणपतये साङ्गाय सपरिवाराय सायुधाय०। भो गणपते! इमं बलिं गृहाण मम सकुटुम्बस्य सपरिवारस्य०। अनेन बलिदानेन गणपतिः प्रीयताम्॥ १॥

ॐ अम्बे ऽअम्बिकेऽम्बालिके न मा नयति कश्चन। ससस्त्यश्वकः सुभद्रिकां काम्पीलवासिनीम्॥ ॐ दुर्गायै नमः। दुर्गायै साङ्गायै सपरिवारायै०। भो दुर्गे! इमं बलिं गृहाण मम सकुटुम्बस्य सपरिवारस्य आयुः कर्त्री क्षेमकर्त्री शान्तिकर्त्री पुष्टिकर्त्री तुष्टिकर्त्री वरदा भव। अनेन बलिदानेन दुर्गा प्रीयताम्॥ २॥

ॐ वायो ये ते सहस्त्रिणो रथासस्तेभिरागहि। नियुत्वान्सोमपीतये॥ ॐ वायवे नमः। वायवे साङ्गाय सपरिवाराय सायुधाय०। भो वायो! इमं बलिं गृहाण मम सकुटुम्बस्य सपरिवारस्य०। अनेन बलिदानेन वायुः प्रीयताम्॥ ३॥

ॐ घृतं घृतपावनः पिबत वसां वसापावानः पिबतान्तरिक्षस्य हविरसि स्वाहा। दिशः प्रदिश आदिशो विदिश उद्दिशो दिग्भ्यः स्वाहा॥ ॐ आकाशाय नमः। आकाशाय साङ्गाय सपरिवाराय सायुधाय०। भो आकाश! इमं बलिं गृहाण मम सकुटुम्बस्य सपरिवारस्य०। अनेन बलिदानेन आकाशः प्रीयताम्॥ ४॥

ॐ या वां कशा मधुमत्यश्विना सूनृतावती। तया यज्ञं मिमिक्षतम्॥ ॐ अश्विभ्यां नमः। अश्विभ्यां साङ्गाभ्यां सपरिवाराभ्यां सायुधाभ्यां

सशक्तिकाभ्यां इमं सदीपदधिमाषभक्तबलिं समर्पयामि। भो अश्विनौ! इमं बलिं गृहाण मम सकुटुम्बस्य सपरिवारस्य आयु० कर्तारौ क्षेमकर्तारौ शान्तिकर्तारौ पुष्टिकर्तारौ तुष्टिकर्तारौ वरदौ भवतम्। अनेन बलिदानेन अश्विनौ प्रीयेताम्॥ ५॥

वास्तोष्पतिबलिः

ॐ वास्तोष्पते प्रतिजानीह्यस्मान्स्वावेशो ऽअनमीवा भवो नः। यत्वेमहे प्रति तन्नो जुषस्व शन्नो भव द्विपदे शं चतुष्पदे॥ ॐ वास्तोष्पतये नमः। वास्तोस्पतये साङ्गाय सपरिवाराय सायुधाय०। भो वास्तोष्पते! इमं बलिं गृहाण मम सकुटुम्बस्य सपरिवारस्य आयुःकर्ता क्षेमकर्ता शान्तिकर्ता पुष्टिकर्ता तुष्टिकर्ता वरदो भव। अनेन बलिदानेन वास्तोष्पतिः प्रीयताम्॥

(अथवा)

एकतन्त्रेण नवग्रहबलिः

ॐ ग्रहा ऽऊर्ज्जाहुतयो व्वयन्तो विप्राय मतिम्। तेषां व्विशिप्रियाणां व्वोऽहमिषमूर्ज्जंठं० समग्ग्रभमुपयामगृहीतोऽसीन्द्राय त्त्वा जुष्टं गृह्णाम्येष ते योनिरिन्द्राय त्त्वा जुष्टतमम्॥

ॐ सूर्यादिनवग्रहेभ्यो नमः। सूर्यादिनवग्रहेभ्यः साङ्गेभ्यः सपिरवारेभ्यः सायुधेभ्यः सशक्तिकेभ्यः अधिदेवता-प्रत्यधिदेवता-गणपत्यादिपञ्चलोक-पालवास्तोष्पतिसहितेभ्यः इमं सदीपदधिमाषभक्तबलिं समर्पयामि।

भो भो सूर्यादिनवग्रहाः! साङ्गाःसपरिवाराः सायुधाः सशक्तिकाः अधिदेवता-प्रत्यधिदेवताः गणपत्यादिपञ्चलोकपाल-वास्तोष्पति-सहिताः इमं बलिं गृह्णीत मम सकुटुम्बस्य सपरिवारस्य आयुःकर्तारः क्षेमकर्तारः शान्तिकर्तारः पुष्टिकर्तारः तुष्टिकर्तारो वरदा भवत्। अनेन बलिदानेन साङ्गाः सूर्यादिनवग्रहाः प्रीयन्ताम्।

वास्तुबलिः

ॐ वास्तोष्पते प्रति जानीह्यस्मान् स्वावेशो अनमीवोभवा नः। यत्वे महे प्रति तं नो जुषस्व शं नो भव द्विपदे शं चतुष्पदे॥

शिख्यादिसहितवास्तोष्पतये साङ्गाय सपरिवाराय सायुधाय सशक्तिकाय इमं सदिपदधिमाषभक्तबलिं समपर्यामि।

भो शिख्यादिसहितवास्तोष्पते! इमं बलि गृह्णीत मम सकुटुम्बस्य सपरिवारस्य आयुकर्ता क्षेमकर्ता पुष्टिकर्ता तुष्टिकर्ता वरदो भवत्। अनेन बलिदानेन शिख्यादिसहितवास्तोष्पतिः प्रीयताम्॥

योगिनीबलिः

ॐ योगे योगे तवस्तरं वाजे वाजे हवामहे। सखाय इन्द्रमूतये॥ महाकाली - महालक्ष्मी - महासरस्वतीसहितगजाननाद्यावाहितचतुः षष्टि- योगिनीभ्यः साङ्गाभ्यः सपरिवाराभ्यः सायुधाभ्यः सशक्तिकाभ्यः इमं सदीपदधिमाषभक्तबलिं समर्पयामि।

भो महाकाली - महालक्ष्मी - महासरस्वतीसहितचतुःषष्टियोगिन्यः! इमं बलिं गृह्णीत मम सकुटुम्बस्य सपरिवारस्य आयुःकर्त्र्यः, क्षेमकर्त्र्यः, शान्तिकर्त्र्यः, पुष्टिकर्त्र्यः तुष्टिकर्त्र्यः वरदा भवत्। अनेन बलिदानेन महाकाली महालक्ष्मी महासरस्वतीसहितगजाननाद्यावाहितचतुःषष्टि-योगिन्यः प्रीयन्ताम्।

(प्रधानदेवताबलिः)

श्रीधूमावतीबलिः

आचार्य और ब्राह्मण धूमावती देवी के वैदिक मन्त्र का उच्चारण करे—
ॐ धूम्रा बभ्रुनीकाशा पितॄणाꣳ सोमवतां बभ्रवो धूम्रनीकाशाः पितॄणां बर्हिषदां कृष्णा बभ्रुनीकाशाः पितॄणामग्निष्वात्तानां कृष्णाः पृषन्त-स्त्रैयम्बकाः॥

तदुपरान्त आगे दिए हुए वाक्यों का उच्चारण यजमान से करवाकर बलि प्रदान करावें—

ॐ धूमावत्यै नमः। धूमावत्यै साङ्गायै सपरिवारायै सायुधायै सशक्तिकायै इमं सदीपदधिमाषभक्तबलिं समर्पयामि।

भो धूमावति! इमं बलिं गृहाण मम सकुटुम्बस्य सपरिवारस्य आयुःकर्त्री क्षेमकर्त्री शान्तिकर्त्री पुष्टिकर्त्री तुष्टिकर्त्री वरदा भव। अनेन बलिदानेन श्रीधूमावती प्रीयतां न मम।

क्षेत्रपालबलयः

संकल्पः—यजमानः दक्षिणहस्ते जलाऽक्षत-द्रव्यं चादाय, सङ्कल्पं कुर्यात्–देशकालौ सङ्कीर्त्य, अमुकगोत्रोऽमुकशर्माहम् (वर्माऽहम्, गुप्तोऽहम्, दासोऽहम्) सपत्नीकोऽहं अस्य धूमावतीहवनकर्मणः साङ्गतासिद्ध्यर्थं क्षेत्रपालादिप्रीत्यर्थं भूत-प्रेत-पिशाचादिनिवृत्यर्थं च सार्वभौतिक-बलिप्रदानं करिष्ये।

एक बाँस आदि के पात्र में कुशों को बिछाकर उसके ऊपर मनुष्य के आहार के चौगुना अथवा दोगुना अथवा दही, उड़द और जलपात्र रखकर चतुर्मुख दीप जलाकर निम्न मन्त्र का उच्चारण करें—

ॐ नहि स्पशमविदन्नन्यमस्माद्वैश्वानरात्पुरएतारमग्नेः। एमेनमवृधन्नमृता अमर्त्यं वैश्वानरं क्षैत्रजित्याय देवाः॥

'ॐ क्षेत्रपालाय नमः' यह कहकर क्षेत्रपाल की षोडशोपचार अथवा पञ्चोपचार से पूजा करके निम्न श्लोकों का उच्चारण करके प्रार्थना करें—

नमो वै क्षेत्रपालस्त्वं भूतप्रेतगणैः सह।
पूजां बलिं गृहाणेमं सौम्यो भव च सर्वदा॥
पुत्रान् देहि धनं देहि सर्वान् कामांश्च देहि मे।
आयुरारोग्यं मे देहि निर्विघ्नं कुरु सर्वदा॥

यजमानः बलिदानार्थं दक्षिणहस्ते जलं गृहीत्वा—क्षेत्रपालाय साङ्गाय सपरिवाराय सायुधाय सशक्तिकाय मारीगण-भैरव-राक्षस-

कूष्माण्ड-वेताल-भूत-प्रेत-पिशाच-डाकिनी-शाकिनी-पिशाचिनी-ब्रह्मराक्षस-गणसहिताय इमं कुङ्कुमरक्तपुष्पादियुतं सदीपं सताम्बूलं सदक्षिणं दधि-माष-भक्तबलिं समर्पयामि। भोः क्षेत्रपाल! सर्वतो दिशं रक्ष बलिं भक्ष मम सकुटुम्बस्य सपरिवारस्य आयुः कर्ता क्षेमकर्ता शान्तिकर्ता पुष्टिकर्ता वरदो भव। अनेन बलिदानेन क्षेत्रपालः प्रीयताम्।

बलिं गृहणन्त्विमे देवा आदित्या वसवस्तथा।
मरुतश्चाश्विनौ रुद्राः सुपर्णाः पन्नगाः खगाः (नगाः)॥ १॥
असुरा यातुधानाश्च पिशाचोरगरक्षसाः।
डाकिन्यो यक्षवेताला योगिन्यः पूतनाः शिवाः॥ २॥
जृम्भकाः सिद्धगन्धर्वाः सौम्या विद्याधरानगाः।
दिक्पाला लोकपालाश्च ये च विघ्नविनायकाः॥ ३॥
जगतां शान्तिकर्तारो ब्रह्माद्याश्च महर्षयः।
मा विघ्नं मा च मे पापं मा सन्तु परिपन्थिनः॥
सौम्या भवन्तु तृप्ताश्च भूत-प्रेताः सुखावहाः॥ ४॥
भूतानि यानीह वसन्ति तानि बलिं गृहीत्वा विधिवत्प्रयुक्तम्।
अन्यत्र वासं परिकल्पयन्तु रक्षन्तु मां तानि सदैव चात्र॥ ५॥

ततो दुर्ब्राह्मणेन नापितेन (शूद्रेण) वा क्षेत्रपालबलिं गृहीत्वा यजमान-मस्तकोपरि सकृत् भ्रामयित्वा चतुष्पथे निःक्षिपेत्। ततो आचार्यः—

ॐ हिङ्काराय स्वाहा हिङ्कृताय स्वाहा क्रन्दते स्वाहा वक्क्रन्दाय स्वाहा प्रोथते स्वाहा प्रप्रोथाय स्वाहा गन्धाय स्वाहा घ्राताय स्वाहा निविष्ट्टाय स्वाहो पविष्ट्टाय स्वाहा सन्दिताय स्वाहा वल्गते स्वाहासीनाय स्वाहा शयानाय स्वाहा स्वपते स्वाहा जाग्रते स्वाहा कूजते स्वाहा प्रबुद्धाय स्वाहा विजृम्भमाणाय स्वाहा विचृत्ताय स्वाहा सठं० हानायस्वाहोपस्थिताय स्वाहा ऽयनाय स्वाहा प्रायणाय स्वाहा॥ इति मन्त्रेण यजमानमस्तकोपरि जलं प्रक्षिपेत्।

पूर्णाहुतिः

सङ्कल्पः—देशकालौ सङ्कीर्त्य, अमुकगोत्रोऽमुकशर्माऽहम् (वर्माऽहम्, गुप्तोऽहम्, दासोऽहम्) कृतस्य धूमावतीहवनकर्मणः साङ्गतासिद्ध्यर्थं तत्सम्पूर्णफलप्राप्त्यर्थं च मृडनामाग्नौ पूर्णाहुतिं होष्यामि।

यजमानः रक्तवस्त्रवेष्टितं श्रीफलं (नारिकेलफलं) स्रुच्यामुपरि-संस्थाप्य 'ॐ पूर्णाहुत्यै नमः' इति यथोपचारद्रव्यैः श्रीफलं सम्पूजयेत्। पश्चात् श्रीफलसहितां स्रुची गृहीत्वा उत्थाय पूर्णाहुतिं कुर्यात्।

पूर्णाहुतिमन्त्राः

ॐ समुद्रादूर्मिर्मधुमाँ२॥ उदारदुपाठं०शुना सममृतत्वमानट्। घृतस्य नाम गुह्यं यदस्ति जिह्वा देवानां मृतस्य नाभिः॥ १॥

वयं नाम प्रब्रवामा घृतस्यास्मिन्यज्ञे धारयामा नमोभिः। उप ब्रह्मा शृणवच्छस्यमानं चतुःशृङ्गोऽवमीद्गौर एतत्॥ २॥

चत्वारि शृङ्गा त्रयो अस्य पादा द्वे शीर्षे सप्त हस्तासो अस्य। त्रिधा बद्धो वृषभो रोरवीति महो देवो मर्त्याँ २॥ आविवेश॥ ३॥

भावार्थ—गाय के स्तनरूप समुद्र से दूध की मधुर ऊर्मि उद्गमित होती है। वह अग्नि के संयोग से अमृतत्व को प्राप्त हो जाती है। घृत का जो प्रिय नाम है, वह देवों की जिह्वा को चंचल बना देने के लिए पर्याप्त है और अमरणत्व का निबन्धक है॥ १॥

हम घृत के नाम का उच्चारण करते हैं और उसे इस यज्ञ में अन्नों के साथ धरते हैं। प्रशंसा किये जाते हुए इस घृत को ब्रह्मा सुनें। चार ऋत्विजरूपी सींगों वाला यह 'गौर' यज्ञ अब ध्यान कर रहा है॥ २॥

इस यज्ञ-वृषभ के चार ऋत्विज ही चार सींग हैं, तीन वेद ही तीन पैर हैं, हविर्धान और प्रवर्ग्य ही दो शिर हैं तथा सात छन्द ही सात हाथ हैं। तीन सवनों में प्रतिबद्ध यह यज्ञ-वृषभ तुमुल वेदनाद करता है। इस प्रकार यह महान् यज्ञदेव मनुष्यों में प्रविष्ट हो गये हैं॥ ३॥

त्रिधा हितं पणिभिर्गुह्यमानं गवि देवासो घृतमन्वविन्दन्। इन्द्र एकर्ठ० सूर्य एकं जजान वेनादेकर्ठ० स्वधया निष्टतक्षुः ॥ ४॥

एता अर्षन्ति हृद्यात्समुद्राच्छतव्रजा रिपुणा नावचक्षे। घृतस्य धारा अभिचाकशीमि हिरण्ययो वेतसो मध्य आसाम्॥ ५॥

सम्यक् स्रवन्ति सरितो न धेना अन्तर्हृदा मनसा पूयमानाः। एते अर्षन्त्यूर्मयो घृतस्य मृगा इव क्षिपणो रीषमाणाः॥ ६॥

सिन्धोरिव प्राध्वने शूघनासो वातप्रमियः पतयन्ति यह्वाः। घृतस्य धारा अरुषो न वाजी काष्ठा भिन्दन्नूर्मिभिः पिन्वमानः॥ ७॥

अभिप्रवन्त समनेव योषाः कल्याण्यः स्मयमानासो अग्निम्। घृतस्य धाराः समिधो नसन्त ता जुषाणो हर्यति जातवेदाः॥ ८॥

भावार्थ—तीन प्रकार से धरे हुए और पणियों से छिपाये गये घृत को अन्त में देवों ने गाय में ही प्राप्त किया। उस घृत के एक भाग को इन्द्र ने और एक भाग को सूर्य ने उत्पन्न किया। तृतीय भाग को द्विजातियों ने स्वधा के द्वारा यज्ञसाधक अग्नि की सहायता से सम्पादित किया॥ ४॥

दुग्ध की तरह यह धाराएँ, गाय के हृदय समुद्र से उठती हैं। शत-शत गामिनी यह धाराएँ शत्रु के द्वारा कभी तिरस्कृत नहीं देखी जातीं। मैं घृत की धाराओं को देखता हूँ। घृत की इन धाराओं के मध्य ही तो वह सुनहला अग्नि स्थित है॥ ५॥

हृदय के अन्दर मन से ही पवित्र होती हुई गाएँ इन घृत की धाराओं को सम्यक् प्रस्रवित करती हैं, जैसे नदियाँ जल धाराओं को। घृत की यह लहरें ऐसी उछल रही हैं, मानों व्याध से भयभीत पलायन पर मृग भाग रहे हों॥ ६॥

विषम प्रदेश में महानद की क्षिप्र लहरें जिस प्रकार गिरकर नष्ट हो जाती हैं तथा जिस प्रकार सीमा को पार करके घुड़दौड़ का घोड़ा बाहर निकल जाता है उसी प्रकार यह घृत की महती धाराएँ भी लहरों में उमड़ती हुई गिर रही हैं॥ ७॥

कल्याण चाहने वाली, हँसती हुई एवं प्रसन्नचित्त स्त्रियाँ जिस प्रकार अपने प्रियतम को प्राप्त होती हैं, उसी प्रकार यह घृतधाराएँ अग्नि को सम्प्राप्त होती हैं। घृत की धाराएँ समिधाओं में समा जाती हैं। उनका सेवन करते हुए जातप्रज्ञ अग्नि अति प्रसन्न होता है॥ ८॥

कन्या इव वहतुमेतवा उ अञ्ज्यञ्जाना अभिचाकशीमि। यत्र सोमः सूयते यत्र यज्ञो घृतस्य धारा अभि तत्पवन्ते॥ ९॥

अभ्यर्षत सुष्टुतिं गव्यमाजिमस्मासु भद्रा द्रविणानि धत्त। इमं यज्ञं नयत देवता नो घृतस्य धारा मधुमत्पवन्ते॥ १०॥

धामन्ते विश्वं भुवनमधि श्रितमन्तः समुद्रे हृद्यन्तरायुषि। अपामनीके समिथे य आभृतस्तमश्याम मधुमन्तं त ऊर्मिम्॥ ११॥

पुनस्त्वादित्या रुद्रा वसवः समिन्धतां पुनर्ब्रह्माणो वसुनीथ यज्ञैः। घृतेन त्वं तन्वं वर्धयस्व सत्याः सन्तु यजमानस्य कामाः॥ १२॥

मूर्धानं दिवो अरतिं पृथिव्या वैश्वानरमृत आ जातमग्निम्। कविर्ठ० सम्राजमतिथिं जनानामासन्ना पात्रं जनयन्त देवाः॥ १३॥

भावार्थ—पति के घर की ओर जाने के लिए कन्यायें स्वयं को काजल-आभरणादि से सजाती हैं, उसी प्रकार इन घृतधाराओं को मैं भी देखता हूँ। जहाँ-जहाँ सोमरस पावित होता है तथा जहाँ यज्ञ प्रवर्तित होता है, उसी देश को घृत की धाराएँ पवित्र बना देती हैं॥ ९॥

हे देवों! तुम शोभनस्तुति तथा घृतमय यज्ञ को सम्प्राप्त होओ। आकर हममें धनों को धारित करो। हमारे इस सौत्रामणियाग को देवों में प्राप्त बनाओ। यह मधुर घृत की धाराएँ अग्नि में गिर रही हैं—उन्हें भी देवों में प्राप्त बनाओ॥ १०॥

हे अग्ने! यह समस्त ब्रह्माण्ड ही तुम्हारी व्याप्ति के अन्दर स्थित है। समुद्र के अन्दर, हृदय के अन्दर और आयुष्य में। जलों के मुख एवं युद्ध में तेजोरूप जो घृत भरा हुआ है—तुम्हारी उस मधुर तरंग घृत को हम आस्वादित करें॥ ११॥

हे अग्ने! तुम उपशान्त को आदित्य-रुद्र-वसुगण पुनः प्रज्वलित करें और धन के नेता अग्ने! यज्ञों के द्वारा यजमान पुरोहितादि भी तुम्हें पुनः-पुनः प्रबुद्ध करें। घृत से तुम अपने ज्वाला-शरीर को बढ़ाओ। तुम्हारी पृथ्वी पर हमारे इस यजमान के सर्वसंकल्प सफल होवे॥ १२॥

द्युलोक की मूर्धाभूत, पृथ्वी को व्याप्त करनेवाले और यज्ञ में उत्पन्न वैश्वानर अग्नि को कवि, सम्राट्, यजमानों के अतिथि और ज्वालारूप मुख में स्रुवापात्र को लगाए रखने वाले इस अग्नि को ऋत्विज उत्पन्न करते हैं॥ १३॥

पूर्णा दर्वि परापत सुपूर्णा पुनरापत। वस्नेव विक्रीणावहा इषमूर्जर्ठ० शतक्रतो॥ १४॥

इदमग्नये वैश्वानराय वसुरुद्रादित्येभ्यः शतक्रतवे सप्तवते अग्नये अद्भ्यश्च न मम।

वसोर्द्धाराहोमः

सङ्कल्पः—देशकालौ सङ्कीर्त्य, अमुकगोत्रोऽमुकशर्माहम् (वर्माऽहम्, गुप्तोऽहम्, दासोऽहम्) कृतस्य धूमावतीहवनकर्मणः साङ्गतासिद्ध्यर्थं तत्सम्पूर्णफलप्राप्त्यर्थं च वसोर्द्धारां होष्यामि।

इति सङ्कल्प्य कुण्डोपरि वसोर्द्धारां प्रागग्रां निधाय तदुपरि घृत-पूरितेन ताम्रादिपात्रधृतेनाधोयवमात्रछिद्रेणाज्यं विमुञ्चतोऽग्नेरुपरि वसोर्द्धारां पातयेत्। वसोर्द्धारायाः मुखं सुवर्णनिर्मितजिह्वां बध्नीयात्। तस्यां च घृतधारायां पतन्त्यां स्रुक्प्रणालिकयाऽग्नौ पतन्त्यां इमान् मन्त्रान् पठेत्।

वसोर्द्धाराहवनमन्त्राः

ॐ सप्त ते अग्ने समिधः सप्त जिह्वाः सप्त ऋषयः सप्त धाम प्रियाणि। सप्त होत्राः सप्तधा त्वा यजन्ति सप्त योनीरापृणस्व घृतेन स्वाहा॥ १॥

शुक्रज्योतिश्च चित्रज्योतिश्च सत्यज्योतिश्च ज्योतिष्माँश्चा शुक्रश्च ऋतपाश्चात्यर्ठ० हाः॥ २॥

भावार्थ—हे कल्छुल! तुम पतीली से भरी हुई निकल कर इन्द्र के लिए आगे बढ़ो और उसके पास पुनः अभीष्ट फल के साथ वापस आओ। हे शतयज्ञ इन्द्र! मूल्य के विनियम के तुल्य हम दोनों वर्षा और अन्न का व्यापार करते हैं॥ १४॥

वसोर्द्धाराहवनमन्त्र का भावार्थ—हे अग्ने! तुम्हारी सात समिधाएँ हैं, सात ज्वाला जिह्वाएँ हैं, सात ऋषि हैं और सात ही प्रिय गायत्री प्रभृति छन्द स्थान हैं। सात ऋत्विज तुम्हें सात अग्निष्टोमादि यज्ञ-विधानों के द्वारा यजन करते हैं। हे अग्ने! तुम सात चिति वाली वेदि को घृत से आपूरित करो। यह आहुति है॥ १॥

शुक्रज्योति, चित्रज्योति, सत्यज्योति, ज्योतिषमान्, शुक्र, ऋतपा और पाप के परे विद्यमान सप्तम मरुत अपने-अपने सप्तगण के साथ हमारे यज्ञ में आवें॥ २॥

ईदृङ् चान्यादृङ् च सदृङ् च प्रतिसदृङ्। मितश्च संमितश्च सभराः ॥ ३ ॥

ऋतश्च सत्यश्च ध्रुवश्च धरुणश्च। धर्ता च विधर्ता च विधारयः ॥ ४ ॥

ऋतजिच्च सत्यजिच्च सेनजिच्च सुषेणश्च। अन्तिमित्रश्च दूरे अमित्रश्च गणः ॥ ५ ॥

ईदृक्षास एतादृक्षासऽऊषणुः सदृक्षासः प्रतिसदृक्षास एतन। मितासश्च संमितासो नो अद्य सभरसो मरुतो यज्ञे अस्मिन् ॥ ६ ॥

स्वतवांश्च प्रघासी च सान्तपनश्च गृहमेधी च। क्रीडी च शाकी चोज्जेषी ॥ ७ ॥

इन्द्रं दैवीर्विशो मरुतोऽनुवर्त्मानोऽभवन्यथेन्द्रं दैवीर्विशो मरुतोऽनु-वर्त्मानोऽभवन्। एवमिमं यजमानं दैविश्च विशो मानुषीश्चानुवर्त्मानो भवन्तु ॥ ८ ॥

भावार्थ—ईदृङ्, अन्यादृङ्, सदृङ्, प्रतिसदृङ्, मित, समित और सभर संज्ञक मरुत हमारे इस यज्ञ में आवें ॥ ३ ॥

ऋत, सत्य, ध्रुव, धरुण, धर्त्ता, विधर्त्ता और विचारयसंज्ञक मरुत हमारे इस यज्ञ में आवें ॥ ४ ॥

ऋतजित्, सत्यजित्, सुषेण, अन्तिमित्र, दूरे अमित्र और गणसंज्ञक मरुत हमारे इस यज्ञ में आवें ॥ ५ ॥

ईदृक्षास, एतादृक्षास, ऊषुण, सदृक्षास, प्रतिसदृक्षास, मितास, सम्मितास और सभरस मरुत आज हमारे इस यज्ञ में आवें ॥ ६ ॥

स्वतवान्, प्रघासी, सान्तपन, गृहमेधी, क्रीडी, शाकी और उज्जेषी संज्ञक मरुत आज हमारे इस यज्ञ में आवें ॥ ७ ॥

देवरूप प्रजा मरुत इन्द्र के अनुकूल चलने वाली हुई। जिस प्रकार दैवी प्रजा मरुत और इन्द्र के अनुकूल होकर चले, उसी प्रकार इस यजमान के प्रति यह दैवी एवं मानव प्रजाएँ अनुकूल हों ॥ ८ ॥

इमर्ठ० स्तनमूर्जस्वन्तं धयापां प्रपीनमग्ने सरिरस्य मध्ये। उत्सं जुषस्व मधुमन्तमर्वन्समुद्रियर्ठ० सदनमाविशस्व॥ ९॥

घृतं मिमिक्षे घृतमस्य योनिर्घृते श्रितो घृतम्वस्य धाम। अनुष्वध-मावह मादयस्व स्वाहाकृतं वृषभ वक्षि हव्यम्॥ १०॥

ॐ धूम्रा बभ्रुनीकाशा पितृणार्ठ० सोमवतां बभ्रवो धूम्रनीकाशाः पितृणां बर्हिषदां कृष्णा बभ्रुनीकाशाः पितृणामग्निष्वात्तानां कृष्णाः पृषन्तस्त्रैयम्बकाः॥

पुरुषसूक्तम्

ॐ सहस्रशीर्षा पुरुषः सहस्राक्षः सहस्रपात्।
स भूमिर्ठ० सर्वत स्पृत्वात्यतिष्ठद्दशाङ्गुलम्॥
पुरुष एवेदर्ठ० सर्वं यद्भूतं यच्च भाव्यम्।
उतामृतत्वस्येशानो यदन्नेनातिरोहति॥
एतावानस्य महिमातो ज्यायांश्च पूरुषः।
पादो ऽस्य विश्वा भूतानि त्रिपादस्यामृतं दिवि॥
त्रिपादूर्ध्व उदैत्पुरुषः पादोऽस्येहाभवत्पुनः।
ततो विष्वङ् व्यक्रामत्साशनानशने अभि॥

भावार्थ—हे अग्ने! विशिष्ट रसवान् और घृत से भरे हुए इस स्रुक् रूप का आस्वादन करो। हे अग्ने! तृप्त होकर तुम चयनयाम सम्बन्धित इस अपने गृह में प्रवेश करो॥ ९॥

मैं इस अग्नि को ज्वालामुख से आसिंचित् करना चाहता हूँ, घृत ही इसकी उत्पत्तिभूमि है। यह अग्नि इस घृत में ही आश्रित रहता है। इसका तेज यह घृत ही है। हे अध्वर्यो! हविरान्न को सम्पादन करके इस अग्नि को उसके भक्षणार्थ आह्वान करो तथा उसके आने पर उसे पूर्णतया तृप्त बनाओ। हे कामवर्षक अग्ने! तुममें स्वाहा बोलकर डाले गए हव्य को तुम देवों को वहन करके प्राप्त कराओ॥ १०॥

ततो विराडजायत विराजो अधि पूरुषः।
स जातो अत्यरिच्यत पश्चाद्भूमिमथो पुरः॥
तस्माद्यज्ञात्सर्वहुतः संभृतं पृषदाज्यम्।
पशूंस्तांश्चक्रे वायव्यानारण्या ग्राम्याश्च ये॥
तस्माद्यज्ञात्सर्वहुत ऋचः सामानि जज्ञिरे।
छन्दांर्ठ०सि जज्ञिरे तस्माद्यजुस्तस्मादजायत॥
तस्मादश्वा अजायन्त ये के चोभयादतः।
गावो ह जज्ञिरे तस्मात्तस्माज्जाता अजावयः॥
तं यज्ञं बर्हिषि प्रौक्षन्पुरुषं जातमग्रतः।
तेन देवा अयजन्त साध्या ऋषयश्च ये॥
यत्पुरुषं व्यदधुः कतिधा व्यकल्पयन्।
मुखं किमस्यासीत्किं बाहू किमूरू पादा उच्येते॥
ब्राह्मणोऽस्य मुखमासीद्बाहू राजन्यः कृतः।
ऊरू तदस्य यद्वैश्यः पद्भ्यार्ठ० शूद्रोऽ अजायत॥
चन्द्रमा मनसो जातश्चक्षोः सूर्यो अजायत।
श्रोत्राद्वायुश्च प्राणश्च मुखादग्निरजायत॥
नाभ्या आसीदन्तरिक्षर्ठ० शीर्ष्णो द्यौः समवर्तत।
पद्भ्यां भूमिर्दिशः श्रोत्रात्तथा लोकाँ २॥ अकल्पयन्॥
यत्पुरुषेण हविषा देवा यज्ञमतन्वत।
वसन्तोऽस्यासीदाज्यं ग्रीष्म इध्मः शरद्धविः॥
सप्तास्यासन्परिधयस्त्रिःसप्त समिधः कृताः।
देवा यद्यज्ञं तन्वाना अबध्नन्पुरुषं पशुम्॥
यज्ञेन यज्ञमयजन्त देवास्तानि धर्माणि प्रथमान्यासन्।
ते ह नाकं महिमानः सचन्त यत्र पूर्वे साध्याः सन्ति देवाः॥

ॐ वसोः पवित्रमसि शतधारं वसोः पवित्रमसि सहस्त्रधारम्। देवस्त्वा सविता पुनातु वसोः पवित्रेण शत धारेण सुप्वा कामधुक्षः ॥ ११ ॥

यजमान हवनोपरान्त जो घृतादि शेष हो उसे प्रोक्षणीपात्र में इस वाक्य का उच्चारण करके छोड़ दें–'**ॐ इदमग्नये वैश्वानराय न मम।**' निम्न श्लोकों का उच्चारण करके यजमान से अग्निदेवता की प्रार्थना करावें–

श्रद्धां मेधां यशः प्रज्ञां विद्यां पुष्टिं श्रियं बलम्।
तेज आयुष्यमारोग्यं देहि मे हव्यवाहन!॥ १ ॥
भो भो अग्ने! महाशक्ते! सर्वकर्मप्रसाधन!।
कर्मान्तरेऽपि सम्प्राप्ते सान्निध्यं कुरु सर्वदा॥ २ ॥

अग्निप्रदक्षिणा, हवनीयकुण्डभस्मधारण, पूर्णपात्रदान, श्रेयोदान, दक्षिणा-दान, गोदानादिसंकल्प इस पुस्तक में दी गई धूमावतीप्रतिष्ठाविधि में से करें।

उत्तरपूजनम्

ततः यजमानः प्रधानपीठादीनां विशेषतः श्रीधूमावत्याः षोडशोपचारैः पञ्चोपचारैर्वा पूजनं कुर्यात्।

उत्तरपूजन के उपरान्त मण्डपप्रधानपीठादिदानसंकल्प, इस पुस्तक में दी गई धूमावतीप्रतिष्ठा के द्वारा करावें।

अभिषेकः

यजमान के वाम भाग में उसकी धर्मपत्नी को बैठाकर आचार्य और ब्राह्मण पूर्वस्थापित सभी कलशों के जल को शुद्ध ताँबे के चौड़े मुख के पात्र में थोड़ा-थोड़ा लेकर 'दूर्वा और पंचपल्लवादि' से आगे दिए हुए वैदिक मंत्रों का उच्चारण करके अभिषेक करें—

भावार्थ—हे पवित्र! तुम शतधार क्षीर को पवित्र करनेवाले हो सहस्त्र-धारक्षीर के तुम पवित्र करने वाले हो। हे क्षीर! तुम्हें शोधक सवितादेव शतधार पवित्र से पवित्र करें। हे दुहने वाले! तुमने किस गाय को दुहा है?॥ ११ ॥

ॐ देवस्य त्वा सवितुः प्रसवेऽश्विनोर्बाहुभ्यां पूष्णो हस्ताभ्याम्॥ १॥

पयः पृथिव्यां पय ओषधी षुपयो दिव्यन्तरिक्षे पयो धाः। पयस्वतीः प्रदिशः सन्तु मह्यम्॥ २॥

पञ्चनद्यः सरस्वतीमपियन्ति सस्त्रोतसः। सरस्वती तु पञ्चधा सो देशेऽभवत्सरित्॥ ३॥

आपो हि ष्ठा मयोभुवस्तान ऊर्जे दधातन। महे रणाय चक्षसे॥ ४॥

यो वः शिवतमो रसस्तस्य भाजयतेह नः। उशतीरिव मातरः॥ ५॥

द्यौः शान्तिरन्तरिक्षर्ठ० शान्तिः पृथिवी शान्तिरापः शान्तिरोषधयः शान्तिः। वनस्पतयः शान्तिर्विश्वे देवाः शान्तिर्ब्रह्म शान्तिः सर्वर्ठ० शान्तिः शान्तिरेवशान्तिः सा मा शान्तिरेधि॥ ६॥

अभिषेक की समाप्ति के पश्चात् इस पुस्तक में दी गई धूमावतीप्रतिष्ठा के द्वारा घृतच्छायापात्रदान करावें।

क्षमापनम्

आवाहनं न जानामि न जानामि विसर्जनम्।
पूजां चैव न जानामि क्षमस्व परमेश्वरि॥ १॥
मन्त्रहीनं क्रियाहीनं भक्तिहीनं सुरेश्वरि।
यत्पूजितं मया देवि परिपूर्णं तदस्तु मे॥ २॥
अन्यथा शरणं नास्ति त्वमेव शरणं मम।
तस्मात्कारुण्यभावेन क्षमस्व परमेश्वरि॥ ३॥
गतं पापं गतं दुःखं दारिद्र्यमेव च।
आगता सुखसम्पत्ति पुण्यानि तव दर्शनात्॥ ४॥
क्षमस्व देवदेवेशि मत्कृतं परमेश्वरि।
तव पादाम्बुजे नित्यं निश्चला भक्तिरस्तु मे॥ ५॥

विसर्जनम्

संकल्पः—देशकालौ संकीर्त्य, कृतस्य धूमावतीहवनकर्माङ्गत्वेन देवविसर्जनं कर्म करिष्ये। इति सङ्कल्पय स्थापितदेवानग्निं च सानुनयं पुष्पाक्षतैर्विश्रीजेत्।

यान्तु देवगणाः सर्वे पूजामादाय मामिकाम्।
इष्टकामसमृद्ध्यर्थं पुनरागमनाय च॥ १॥
गच्छ गच्छ सुरश्रेष्ठ स्वस्थाने परमेश्वरि।
यत्र ब्रह्मादयो देवा तत्र गच्छ हुताशन॥ २॥
प्रमादात्कुर्वतां कर्म प्रच्यवेताध्वरेषु यत्।
स्मरणादेव तद्विष्णोः सम्पूर्णं स्यादिति श्रुतिः॥ ३॥
यस्य स्मृत्या च नामोत्त्या तपोयज्ञक्रियादिषु।
न्यूनं सम्पूर्णतां याति सद्या वन्दे तमच्युतम्॥ ४॥
यजमानः—'ॐ विष्णवे नमः' इति त्रिर्वदेत्।

आशीर्वादः

श्रीर्वर्च्चस्वमायुष्यारोग्यमाविधात् पवमानं महीयते।
धान्यं धनं पशुं बहुपुत्रलाभं शतसंवत्सरं दीर्घमायुः॥ ५॥
शान्तिरस्तु शिवं चास्तु शुभं चास्तु धनं तथा।
ऋद्धिरस्तु वृद्धिरस्तु ब्राह्मणानां प्रसादतः॥ १॥
अपुत्राः पुत्रिणः सन्तु पुत्रिणः सन्तु पौत्रिणः।
निर्धनाः सधनाः सन्तु जीवन्तु शरदां शतम्॥ २॥
मन्त्रार्थाः सफलाः सन्तु पूर्णाः सन्तु मनोरथाः।
शत्रूणां बुद्धिनाशोऽस्तु मित्राणामुदयस्तव॥ ३॥

ततो यजमानाय—प्रसादार्पणम्।

॥ इति धूमावतीहवनविधिः॥

परिशिष्टो भागः

धूमावतीसहस्रनामस्तोत्रम्

ध्यानम्

धूम्राभां धूम्रवस्त्रां प्रकटितदशनां मुक्तबालाम्बराढ्यां
काकाङ्कस्यन्दनस्थां धवलकरयुगां शूर्पहस्तातिरूक्षाम्।
नित्यं क्षुत्क्षान्तदेहां मुहुरतिकुटिलां वारिवाञ्छाविचित्तां
ध्यायेद् धूमावतीं वामनयनयुगलां भीतिदां भीषणास्याम्॥

भावार्थ—धूम्र आभा से युक्त, धूमिल वस्त्र (अपनी देहयष्टि पर) धारण करनेवाली, बाहर दिखाई देनेवाले दाँतों से युक्त, बिखरे हुए केशों और वस्त्रों से युक्त काक (कौआ) के चिह्न से युक्त ध्वजावाले रथ पर विराजित, धवल वर्ण के दोनों हाथों वाली, हाथों में सूप धारण करनेवाली, रुक्ष शरीर-वाली, नित्य (सदैव) भूख-प्यास से आकुल विग्रह वाली, अत्यन्त कुटिल, जल की इच्छा से व्यग्र चित्तवाली, रोषयुक्त नेत्रयुगल वाली, भय देनेवाली और भयंकर मुखमण्डलवाली देवी धूमावती का (इस प्रकार) ध्यान करना चाहिए।

श्रीभैरव्युवाच

धूमावत्या धर्मरात्र्याः कथयस्व महेश्वर।
सहस्रनामस्तोत्रं मे सर्वसिद्धिप्रदायकम्॥ १॥

श्रीभैरुव उवाच

शृणु देवि महामाये प्रिये प्राणस्वरूपिणी।
सहस्रनामस्तोत्रं मे भवशत्रु विनाशनम्॥ २॥

विनियोगः—ॐ अस्य धूमावतीसहस्रनामस्तोत्रस्य पिप्पलाद ऋषिः, पंक्तिश्छन्दो, धूमावती देवता, पाठे विनियोगः।

धूमाधूमवती धूमा धूमपानपरायणा।
धौता धौतगिरा धाम्नी धूमेश्वरनिवासिनी॥ ३॥
अनन्ताऽनन्तरूपा च अकाराकाररूपिणी।
आद्या आनन्ददा नन्दा इकारा इन्द्ररूपिणी॥ ४॥

धन-धान्यार्थवाणीदा यशोधर्मप्रियेष्टदा।
भाग्यसौभाग्यभक्तिस्था गृहपर्वतवासिनी॥ ५॥
राम-रावण सुग्रीवमोहदा हनुमत्प्रिया।
वेदशास्त्रपुराणज्ञा ज्योतिश्छन्दःस्वरूपिणी॥ ६॥
चातुर्यचारुरुचिरा रञ्जनप्रेम तोषदा।
कमलासनसुधावक्त्रा चन्द्रहासा स्मितानना॥ ७॥
चतुरा चारुकेशी च चतुर्वर्गप्रदा मुदा।
कला कलाधरा धीरा धारिणी वसुनीरदा॥ ८॥
हीरा हीरकवर्णाभा हरिणायतलोचना।
दम्भमोहक्रोधलोभस्नेहद्वेष परा॥ ९॥
नरदेवकरी रामा रामानन्द मनोहरा।
योगभोगक्रोधलोभहरा हरनमस्कृता॥ १०॥
दानमानज्ञानमानपानगानसुखप्रदा।
गजगोश्वप्रदा गञ्जा भूतिदा भूतनाशिनी॥ ११॥
भवभावा तथा बाला वरदा हरवल्लभा।
भगभङ्गभया माला मालतीमालना ह्रदा॥ १२॥
जालवालहालकालक पालप्रियवादिनी।
करञ्जशील गुञ्जाढ्या चूतांकुरनिवासिनी॥ १३॥
पनसस्था पानसक्ता पनशेशकुटुम्बिनी।
पावनी पावनाधारापूर्णा पूर्ण मनोरथा॥ १४॥
पूत पूतकला पौरा पुराणसुरसुन्दरी।
परेशी परदा पारा परत्मा परमोहिनी॥ १५॥
जगन्माया जगत्कर्त्री जगत्कीर्तिर्जगन्मयी।
जननी जयिनी जायाजिता जिनजयप्रदा॥ १६॥

कीर्तिज्ञानध्यानमानदायिनी दानवेश्वरी।
काव्य व्याकरणज्ञा काप्रज्ञा प्राज्ञानदायिनी॥ १७॥
विज्ञाज्ञा विज्ञजयदा विज्ञा विज्ञप्रपूजिता।
परावरेज्या वरदा पारदा शारदा दरा॥ १८॥
दारिणी देवदूती च दमना दमनामदा।
परमज्ञानगम्या च परेशी परगा परा॥ १९॥
यज्ञा यज्ञप्रदा यज्ञज्ञानकार्यकरी शुभा।
शोभिनी शुभ्रपथिनी निशुम्भासुरमर्द्दिनी॥ २०॥
शाम्भवी शम्भुपत्नी च शम्भुजाया शुभानना।
शाङ्करी शङ्कराराध्या सन्ध्या सन्ध्यासुधर्मिणी॥ २१॥
शत्रुघ्नी शत्रुहा शत्रुप्रदा शात्रवनाशिनी।
शैवी शिवलया शैला शैलराजप्रिया सदा॥ २२॥
शर्वरी शर्वरी शम्भुः सुधाढ्या सौधवासिनी।
सगुणा गुणरूपा च गौरवी भैरवारवा॥ २३॥
गौराङ्गी गौरदेहा च गौरी गुरुमती गुरुः।
गौर्गौर्गव्यस्वरूपा च गुणानन्दस्वरूपिणी॥ २४॥
गणेशगणदा गुण्या गुणागौरववाञ्छिता।
गणमाता गणाराध्या गणकोटि विनाशिनी॥ २५॥
दुर्गा दुर्जनहन्त्री च दुर्जनप्रीतिदायिनी।
स्वर्गापवर्गदा दात्री दीना दीनदयावती॥ २६॥
दुर्निरीक्ष्या दुरादुःस्था दौःस्थ्यभञ्जनकारिणी।
श्वेतपाण्डुरकृष्णाभा कालदा कालनाशिनी॥ २७॥
कर्मनर्मकरी नर्मा धर्मा धर्मविनाशिनी।
गौरी गौरवदा गोदा गणदा गायनप्रिया॥ २८॥

गङ्गा भागीरथी भङ्गा भगा भाग्यविवर्द्धिनी।
भवानी भवहन्त्री च भैरवी भैरवासना॥ २९॥
भीमा भीमरवा भैमी भीमानन्दा प्रदायिनी।
शरण्या शरणा शम्या शशिनी शङ्खनाशिनी॥ ३०॥
गुणा गुणकरी गौणी प्रिया प्रीतिप्रदायिनी।
जगमोहनकर्त्री च जगदानन्ददायिनी॥ ३१॥
जिता जाया च विजया विजया जयदायिनी।
कामा काली करालास्या खर्वा खञ्जा खरागदा॥ ३२॥
गर्वा गुरुत्मती धर्मा घर्घरा घोरनादिनी।
चराचरी चराराध्या छिन्ना छिन्नमनोरथा॥ ३३॥
छिन्नमस्ता जया जाप्या जगज्जाया च झर्झरी।
झकारा झीष्कृतिष्टीका टङ्का टङ्कारनादिनी॥ ३४॥
ठीका ठक्कुरठक्काङ्गी ठठाङ्कार ढुण्ढुरा।
ढुण्ढीता राजतीर्णा च तालस्था भ्रमनाशिनी॥ ३५॥
थकारा थकरादात्री दीपा दीपविनाशिनी।
धन्या धना धनवती नर्मदा नर्ममोदिनी॥ ३६॥
पद्मा पद्मावती पीता स्फान्ता फूत्कारकारिणी।
फुल्ला ब्रह्ममयी ब्राह्मी ब्रह्मानन्दप्रदायिनी॥ ३७॥
भवाराध्या भवाध्यक्षा भगाली मन्दगामिनी।
मदिरा मदिरेक्षा च यशोदा यमपूजिता॥ ३८॥
याम्या राम्या रामरूपा रमणी ललितालता।
लङ्केश्वरी वाक्प्रदा सदाश्रमवासिनी॥ ३९॥
श्रान्ता शकाररूपा च षकारा खरवाहना।
सह्याद्रिरूपा सानन्दा हरिणी हरिरूपिणी॥ ४०॥

हराराध्या बालवा च लवङ्गप्रेमतोषिता।
क्षपाक्षयप्रदा क्षीरा अकारादिस्वरूपिणी॥ ४१॥
कालिका कालमूर्तिश्च कलहा कलहप्रिया।
शिवा शन्दायिनी सौम्या शत्रुनिग्रहकारिणी॥ ४२॥
भवानी भवमूर्तिश्च शर्वाणी सर्वमङ्गला।
शत्रुविद्राविणी शैवी शुम्भासुरविनाशिनी॥ ४३॥
धकारमन्त्ररूपा च धूंबीजपरितोषिता।
धनाध्यक्षसुता धीरा धरारूपा धरावती॥ ४४॥
चर्विणी चन्द्रपूज्या च छन्दोरूपा छटावती।
छाया छायावती स्वच्छा छेदिनी भेदिनी क्षमा॥ ४५॥
वलिनी वर्द्धिनी वन्द्या वेदमाता बुधस्तुता।
धारा धारावती धन्या धर्मदानपरायणा॥ ४६॥
गर्विणी गुरुपूज्या च ज्ञानदात्री गुणान्विता।
धर्मिणी धर्मरूपा च घण्टानादरपरायणा॥ ४७॥
घण्टानिनादिनी घूर्णा घूर्णिता घोररूपिणी।
कलिघ्नी किलदूती च कलिपूज्य कलिप्रिया॥ ४८॥
कालनिर्णाशिनी काल्या काव्यदा कालरूपिणी।
वर्षिणी वृष्टिदा वृष्टिर्महावृष्टिनिवारिणी॥ ४९॥
घातिनी घाटिनी घोण्ठा घातकी घनरूपिणी।
धूंबीजा धूंजपा नन्दा धूंबीजजपतोषिता॥ ५०॥
धूंधूंबीजजपासक्ता धूंधूंबीजपरायणा।
धूंकारहर्षिणी धूमा घनदा धनगर्विता॥ ५१॥
पद्मावती पद्ममाला पद्मयोनिप्रपूजिता।
अपारा पूर्णपूर्णा तु पूर्णिमापरिवन्दिता॥ ५२॥

फलदा फलभोक्त्री च फलिनी फलदायिनी।
फूत्कारिणी फलावाप्त्री फलभोक्त्री फलाविन्ता॥ ५३॥
वारिणी वारणप्रीता वारिपाथोधिपारगा।
विवर्णा धूम्रनयना धूम्राक्षी धूम्ररूपिणी॥ ५४॥
नीतिर्नीतिस्वरूपा च नीतिज्ञा नयकोविदा।
तारिणी तरिरूपा च तत्त्वज्ञानपरायणा॥ ५५॥
स्थूला स्थूलाधरा स्थात्री उत्तमस्थानवासिनी।
स्थूला पद्मपदस्थाना स्थानभ्रष्टा स्थलस्थिता॥ ५६॥
शोषिणी शोभिनी शीता शीतपानीयपायिनी।
शारिणी शाङ्खिनी शुद्धा शङ्खसुरविनाशिनी॥ ५७॥
शर्वरी शर्वरीपूज्या शर्वरीशप्रपूजिता।
शर्वरीजागृता योग्या योगिनी योगिवन्दिता॥ ५८॥
योगिनीगणसंसेव्या योगिनीयोगभाविता।
योगमार्गरता युक्ता योगमार्गानुसारिणी॥ ५९॥
योगभावा योगयुक्ता यामिनीपतिवन्दिता।
अयोध्या योधिनी योद्ध्री युद्धकर्मविशारदा॥ ६०॥
युद्धमार्गरतानन्ता युद्धस्थाननिवासिनी।
सिद्धा सिद्धेश्वरी सिद्धिः सिद्धिगेहनिवासिनी॥ ६१॥
सिद्धरीतिः सिद्धप्रीतिः सिद्धा सिद्धान्तकारिणी।
सिद्धगम्या सिद्धपूज्या सिद्धवन्द्या सुसिद्धिदा॥ ६२॥
साधिनी साधनप्रीता साध्या साधनकारिणी।
साधनीया साध्यसाध्या साध्यसंघसुशोभिनी॥ ६३॥
साध्वी साधुस्वभावा सा साधुसन्ततिदायिनी।
साधुपूज्या साधुवन्द्या साधुसन्दर्शनोद्यता॥ ६४॥

साधुदृटा साधुपृष्टा साधुपोषणतत्परा।
सात्त्विकी सत्त्वसंसिद्धा सत्त्वसेव्या सुखोदया॥ ६५॥
सत्त्ववृद्धिकरी शान्ता सत्त्वसंहर्षमानसा।
सत्त्वज्ञाना सत्त्वविद्या सत्त्वसिद्धान्तकारिणी॥ ६६॥
सत्त्ववृद्धि सत्त्वसिद्धिः सत्त्वसम्पन्नमानसा।
चारुरूपा चारुदेहा चारुचञ्चललोचना॥ ६७॥
छद्मिनी छद्मसंकल्पा छद्मवार्ता क्षमाप्रिया।
हठिनी हठसम्प्रीतिर्हठवार्ता हठोद्यमा॥ ६८॥
हठकार्या हठधर्मा हठकर्मपरायणा।
हठसम्भोगनिरता हठात्काररतिप्रिय॥ ६९॥
हठसम्भेदिनी हृद्या हृद्यवार्ता हरिप्रिया।
हरिणी हरिणीदृष्टिर्हरिणीमांसभक्षणा॥ ७०॥
हरिणाक्षी हरिणापा हरिणीगण हर्षदा।
हरिणीगणसंहन्त्री हरिणीपरिपोषिका॥ ७१॥
हरिणीमृगयासक्ता हरिणीमानपुरः सरा।
दीना दीनकृतिर्दूना द्राविणी द्रविणप्रदा॥ ७२॥
द्रविणाचलसम्वासा द्रविता द्रव्यसंयक्ता।
दीर्घा दीर्घपदा दृश्या दर्शनीया दृढाकृतिः॥ ७३॥
दृढा दुष्टमतिर्दुष्टा द्वेषिणी द्वेषिभञ्जिनी।
दोषिणी दोषसंयुक्ता दुष्टशत्रुविनाशिनी॥ ७४॥
देवतार्तिहरा दुष्टदैत्यसंघविदारिणी।
दुष्टदानवहन्त्री च दुष्टदैत्यनिषूदिनी॥ ७५॥
देवताप्राणदा देवी देवदुर्गतिनाशिनी।
नटनायकसंसेव्या नर्त्तकी नर्त्तकप्रिया॥ ७६॥

नाट्यविद्या नाट्यकर्त्री नादिनी नादकारिणी।
नवीना नूतना नव्या नवीनवस्त्रधारिणी॥ ७७॥
नव्यभूषा नव्यमाल्या नव्यालङ्कारशोभिता।
नकारवादिनी नभ्या नवभूषणभूषिता॥ ७८॥
नीचमार्गा नीचभूमिर्नीचमार्गगतिर्गतिः।
नाथसेव्या नाथभक्ता नाथानन्दप्रदायिनी॥ ७९॥
नम्रा नम्रगतिर्नैत्री निदानवाक्यवादिनी।
नारीमध्यस्थिता नारी नारीमध्यगताऽनघा॥ ८०॥
नारीप्रीतिर्नराराध्या नरनाम प्रकाशिनी।
रती रतिप्रिया रम्या रतिप्रेमा रतिप्रदा॥ ८१॥
रतिस्थानस्थिताऽऽराध्या रहिहर्षप्रदायिनी।
रतिरूपा रतिध्याना रतिरीतिसुधारिणी॥ ८२॥
रतिरासमहोल्लासा रतिरासविहारिणी।
रक्तिकान्तस्तुता राशी राशिरक्षणकारिणी॥ ८३॥
अरूपा शुद्धरूपा च सुरूपा रूपगर्विता।
रूपयौवनसम्पन्ना रूपराशी रमावती॥ ८४॥
रोधिनी रोषिणी रुष्टा रोषिरुद्धा रसप्रदा।
मादिनी मदनप्रीता मधुमत्ता मधुप्रदा॥ ८५॥
मद्यपा मद्यपध्येया मद्यपप्राणरक्षिणी।
मद्यपाननन्ददात्री च मद्यपप्रेमतोषिता॥ ८६॥
मद्यपानरता मत्ता मद्यपानविहारिणी।
मदिरा मदिरारक्ता मदिरापानहर्षिणी॥ ८७॥
मदिरापानसन्तुष्टा मदिरापानमोहिनी।
मदिरामानसा मुग्धा माध्वीपा मदिराप्रदा॥ ८८॥

माध्वीदानसदानन्दा माध्वीपानरता सदा।
मोदिनी मोदसन्दात्री मुदिता मोदमानसा॥ ८९॥
मोदकर्त्री मोददात्री मोदमङ्गलकारिणी।
मोदकादानसन्तुष्टा मोदकग्रहणक्षमा॥ ९०॥
मोदकालब्धिसंक्रुद्धा मोदकप्राप्तितोषिणी।
मांसादा मांससम्भक्षा मांसभक्षणहर्षिणी॥ ९१॥
मांसपाकपरप्रेमा मांसपाकालयस्थिता।
मत्स्यमांसकृतास्वादामकारपञ्चकार्चिता ॥ ९२॥
मुद्रा मुद्रान्विता माता महामोहा मनस्विनी।
मुद्रिका मुद्रिकायुक्ता मुद्रिकाकृतलक्षणा॥ ९३॥
मुद्रिकालङ्कृता माद्री मन्दराचलवासिनी।
मन्दराचलसंसेव्या मन्दराचलवासिनी॥ ९४॥
मन्दरध्येयपादाब्जा मन्दरारण्यवासिनी।
मन्दुरावासिनी मन्दा मारिणी मारिका मिता॥ ९५॥
महामारी मामारीशमिनी शवसंस्थिता।
शवमांसकृताहारा श्मशानलयवासिनी॥ ९६॥
श्मशानसिद्धिसंहृष्टा श्मशान भवनस्थिता।
श्मशानशयनागारा श्मशानभस्मलेपिता॥ ९७॥
श्मशानभस्मभीमाङ्गी श्मशानावासकारिणी।
शामिनी शमनाराध्या शमनस्तुतिवन्दिता॥ ९८॥
शमनाचारसन्तुष्टा शमनागारवासिनी।
शमनस्वामिनी शान्तिः शान्तसज्जनपूरिता॥ ९९॥
शान्तापूजापरा शान्ता शान्तागारप्रभोजनी।
शान्तपूज्या शान्तवन्द्या शान्तग्रहसुधारिणी॥ १००॥

शान्तरूपा शान्तियुक्ता शान्तचन्द्रप्रभाऽमला।
अमला विमलाऽम्लाना मालतीकुञ्जवासिनी॥ १०१॥
मालतीपुष्पसम्प्रीता मालतीपुष्पपूजिता।
महोग्रा महती मध्या मध्यदेशनिवासिनी॥ १०२॥
मध्यमध्वनिसम्प्रीता मध्यमध्वनिकारिणी।
मध्यमा मध्यमप्रीतिर्मध्यमप्रेतपूरिता॥ १०३॥
मध्याङ्गचित्रवसना मध्यखिन्ना महोद्धता।
महेन्द्रसुरसम्पूज्या महेन्द्रपरिवन्दिता॥ १०४॥
महेन्द्रजालसंयुक्ता महेन्द्रजालकारिणी।
महेन्द्रमानिता मान्या मानिनीगणमध्यगा॥ १०५॥
मानिनीमानसंप्रीता मानविध्वंसकारिणी।
मानिन्याकर्षिणी मुक्तिर्मुक्तिदात्री सुमुक्तिता॥ १०६॥
मुक्तिद्वेषकरी मूल्यकारिणी मूल्यहारिणी।
निर्मूला मूलसंयुक्ता मूलिनी मूलमन्त्रिणी॥ १०७॥
मूलमन्त्रकृताह्लाद्या मूलमन्त्रार्घहर्षिणी।
मूलमन्त्रप्रतिष्ठात्री मूलमन्त्रप्रहर्षिणी॥ १०८॥
मूलमन्त्रप्रसन्नास्या मूलमन्त्रप्रपूजिता।
मूलमन्त्रप्रणेत्री च मूलमन्त्रकृतार्चना॥ १०९॥
मूलमन्त्रप्रहृष्टात्मा मूलविद्या मलापहा।
विद्याऽविद्या वटस्था च वटवृक्षनिवासिनी॥ ११०॥
वटवृक्षकृतस्थाना वटपूजापरायणा।
वटपूजापरिप्रीता वटदर्शन लालसा॥ १११॥
वटपूजाकृताह्लादा वटपूजाविवर्द्धिनी।
वशिनी विवशाराध्या वशीकरणमन्त्रिणी॥ ११२॥

वशीकरणसम्प्रीता वशीकारकसिद्धिदा।
बटुका बटुकाराध्या बटुकाहारदायिनी॥ ११३॥
बटुकार्चापरा पूज्या बटुकार्चाविवर्द्धिनी।
बटुकानन्दकर्त्री च बटुकप्राणरक्षिणी॥ ११४॥
बटुकेज्याप्रदाऽपरा पारिणी पार्वतीप्रिया।
पर्वताग्रकृतावासा पर्वतेन्द्रप्रपूजिता॥ ११५॥
पार्वतीपतिपूज्या च पार्वतीपतिहर्षदा।
पार्वतीपतिबुद्धिस्था पार्वतीपतिमोहिनी॥ ११६॥
पार्वतीयद्विराजाध्या पर्वतस्था प्रतारिणी।
पद्मला पद्मिनी पद्मा पद्ममालाविभूषिता॥ ११७॥
पद्मजाढ्यपदा पद्ममालालङ्कृतमस्तका।
पद्मार्चितपदद्वन्द्वा पद्महस्ता पयोधिजा॥ ११८॥
पयोधिपारगंत्री च पयोधिपरिकीर्तिता।
पाथोधिपारगा पूता पल्वलाम्बुप्रतर्पिता॥ ११९॥
पल्वलान्तः पयोमग्ना पवमानगतिर्गतिः।
पयःपाना पयोदात्री पानीयपरिकांक्षिणी॥ १२०॥
पयोजमालाभरणा मुण्डमालाविभूषणा।
मुण्डिनी मुण्डहन्त्री च मुण्डिता मुण्डशोभिता॥ १२१॥
मणिभूषा मणिग्रीवा मणिमालाविराजिता।
महामोहा महाशौर्या महामाया महाहवा॥ १२२॥
मानवी मानवीपूज्या मनुवंशविवर्द्धिनी।
मठिनी मठसंहन्त्री मठसम्पत्तिहारिणी॥ १२३॥
महाक्रोधवती मूढा मूढशत्रुविनाशिनी।
पाठीनभोजिनी पूर्णा पूर्णहारविहारिणी॥ १२४॥

प्रलयानलतुल्याभा प्रलयानलरूपिणी।
प्रलयार्णव संमग्ना प्रलयाब्धिविहारिणी॥ १२५॥
महाप्रलयसम्भूता महाप्रलयकारिणी।
महाप्रलयसम्प्रीता महाप्रलयसाधिनी॥ १२६॥
महाप्रलयसम्पूज्या महाप्रलयमोदिनी।
छेदिनी छिन्नमुण्डोग्रा छिन्ना छिन्न रुहार्थिनी॥ १२७॥
शत्रुसंछेदिनी छन्ना क्षोदिनी क्षोदकारिणी।
लक्षिणी लक्षसम्पूज्या लक्षिता लक्षणान्विता॥ १२८॥
लक्षशस्त्रसमायुक्ता लक्षबाणप्रमोचिनी।
लक्षपूजापराऽलक्ष्या लक्षकोदण्डखण्डिनी॥ १२९॥
लक्षकोदण्डसंयुक्ता लक्षकोदण्डधारिणी।
लक्षलीलालया लभ्या लक्षागारनिवासिनी॥ १३०॥
लक्षलोभपरा लोला लक्षभक्तप्रपूजिता।
लोकिनी लोकसम्पूज्या लोकरक्षणकारिणी॥ १३१॥
लोकवन्दितपादाब्जा लोकमोहनकारिणी।
ललिता लालिता लीना लोकसंहारकारिणी॥ १३२॥
लोकलीलाकरी लोक्या लोकसम्भवकारिणी।
भूतशुद्धिकरी भूतरक्षिणी भूतपोषिणी॥ १३३॥
भूतवेतालसंयुक्ता भूतसेनासमावृता।
भूतप्रेतपिशाचादिस्वामिनी भूतपूजिता॥ १३४॥
डाकिनीशाकिनीडेया डिण्डिमारावकारिणी।
डमरुवाद्यसन्तुष्टा डमरुवाद्यकारिणी॥ १३५॥
हूंकारकारिणी होत्री हविनी हवनार्थिनी।
हासिनी ह्वासिनी हास्यहर्षिणी हठवादिनी॥ १३६॥

अट्टाट्टहासिनी टीका टीकानिर्माणकारिणी।
टङ्किनी टङ्किता टङ्का टङ्कामात्रसुवर्णदा॥ १३७॥
टङ्कारिणी टकाराढ्यशत्रुत्रोटनकारिणी।
त्रुटिता त्रुटिरूपा च त्रुटिसन्देहकारिणी॥ १३८॥
तर्षिणी तृट्परिक्लान्ता क्षुत्क्षामा क्षुत्परिप्लुता।
अक्षिणी तक्षिणी भिक्षाप्रार्थिनी शत्रुभक्षिणी॥ १३९॥
कांक्षिणी कुट्टिनी क्रूरा कुट्टिनीवेश्मवासिनी।
कुट्टिनीकोटिसम्पूज्या कुट्टिनीकुलमार्गिणी॥ १४०॥
कुट्टिनी कुलसंरक्षा कुट्टिनीकुलरक्षिणी।
कालापाशावृता कन्या कुमारीपूजनप्रिया॥ १४१॥
कौमुदी कौमुदीहृष्टा करुणादृष्टिसंयुता।
कौतुकाचारनिपुणा कौतुकागारवासिनी॥ १४२॥
काकपक्षधरा काकरक्षिणी काकसंवृता।
काकाङ्करथसंस्थाना काकाङ्कस्यन्दनस्थिता॥ १४३॥
काकिनी काकदृष्टिश्च काकभक्षणदायिनी।
काकामाता काकयोनिः काकमण्डलमण्डिता॥ १४४॥
काकदर्शनसंशीला काकसङ्कीर्णमन्दिरा।
काकध्यानस्थदेहादिध्यानगम्याऽधमावृता ॥ १४५॥
धनिनी धनिसंसेव्या धनच्छेदनकारिणी।
धुन्धुरा धुन्धुराकारा धूम्रलोचनघातिनी॥ १४६॥
धूङ्कारिणी च धूंमन्त्रपूजिता धर्मनाशिनी।
धूम्रवर्णा च धूम्राक्षी धूम्राक्षासुरघातिनी॥ १४७॥
धूंबीजजपसन्तुष्टा धूंबीजजपमानसा।
धूंबीजजपपूजार्हा धूंबीजजपकारिणी॥ १४८॥
धूंबीजकर्षिता धृष्या धर्षिणी धृष्टमानसा।
धूलिप्रक्षेपिणी धूलिव्याप्तधम्मिल्लधारिणी॥ १४९॥

धूंबीजजपमालाढ्या धूंबीजनिन्दकान्तका।
धर्मविद्वेषिणी धर्मरक्षिणी धर्मतोषिता॥ १५०॥
धारास्तम्भकरी धूर्ता धारावारिविलासिनी।
धां धीं धूं धैं मन्त्रवर्णा धौंधः स्वाहास्वरूपिणी॥ १५१॥
धरित्रीपूजिता धूर्वा धान्यच्छेदनकारिणी।
धिक्कारिणी सुधीपूज्या धामोद्यानिवासिनी॥ १५२॥
धामोद्यानपयोदात्री धामधूलिप्रधूलिता।
महाध्वनिमती धूप्या धूपामोदप्रहर्षिणी॥ १५३॥
धूपादानमतिप्रीता धूपदानविनोदिनी।
धीवरीगणसम्पूज्या धीवरीवरदायिनी॥ १५४॥
धीवरीगणमध्यस्था धीवरीधामवासिनी।
धीवरीगणगोप्त्री च धीवरीगणतोषिता॥ १५५॥
धीवरीधनदात्री च धीवरीप्राणरक्षिणी।
धात्रीशा धातृसम्पूज्या धात्रीवृक्षसमाश्रया॥ १५६॥
धात्रीपूजनकर्त्री च धात्रीरोपणकारिणी।
धूम्रपान रतासक्ता धूम्रपानरतेष्टदा॥ १५७॥
धूम्रपानकरानन्दा धूम्रवर्षणकारिणी।
धन्यशब्दश्रुतिप्रीता धुन्धुकारिजनच्छिदा॥ १५८॥
धुन्धुकारीष्टसन्दात्री धुन्धुकारिसुमुक्तिदा।
धुन्धुकार्याराध्यरूपा धुन्धुकारिमनःस्थिता॥ १५९॥
धुन्धुकारिहिताकांक्षी धुन्धुकारिहितैषिणी।
धिन्धिमाराविणी ध्यात्री ध्यानगम्या धनार्थिनी॥ १६०॥
धोरिणी धोरणप्रीता धोरिणी घोररूपिणी।
धारित्रीरक्षिणी देवी धराप्रलयकारिणी॥ १६१॥
धराधरसुताऽशेषधाराधरसमद्युतिः
धनाध्यक्षा धनप्राप्तिर्द्धनधान्यविवर्द्धिनी॥ १६२॥

धनाकर्षणकर्त्री च धनाहरणकारिणी।
धनच्छेदनकर्त्री च धनहीना धनप्रिया॥ १६३॥
धनसंवृद्धिसम्पन्ना धनदानपरायणा।
धनहृष्टा धनपुष्टा दानाध्ययनकारिणी॥ १६४॥
धनरक्षा धनप्राणा धनानन्दकरी सदा।
शत्रुहन्त्री शवारूढा शत्रुसंहारकारिणी॥ १६५॥
शत्रुपक्षक्षतिप्रीता शत्रुपक्षनिषूदिनी।
शत्रुग्रीवाच्छिदा छाया शत्रुपद्धतिखण्डिनी॥ १६६॥
शत्रुप्राणहरा हाय्या शत्रून्मूलनकारिणी।
शत्रुकार्यविहन्त्री च साङ्गशत्रुविनाशिनी॥ १६७॥
साङ्गशत्रुकुलच्छेली शत्रुसद्मप्रदाहिनी।
साङ्गसायुध सर्वारिसर्वसम्पत्तिनाशिनी॥ १६८॥
साङ्गसायुधसर्वारिदेहगेहप्रदाहिनी

फलश्रुति:

इतीदं धूमरूपिण्या: स्तोत्रं नामसहस्त्रकम्॥ १६९॥
य: पठेच्छन्यभवने सन्ध्यान्ते यतमानस:।
मदिरामोदयुक्तो वै देवीध्यानपरायण:॥ १७०॥
तस्य शत्रु: क्षयं याति यदि शक्रसमोपि वै।
भवपाशहरं पुण्यं धूमावत्या: प्रियं महत्॥ १७१॥
स्तोत्रं सहस्त्रनामाख्यं मम वक्त्राद्विनिर्गतम्।
पठेद् वा श्रृणुयाद्वापि शत्रुघातकरो भवेत्॥ १७२॥
न देयं परशिष्यायाऽभक्ताय प्राणवल्लभे।
देयं शिष्याय भक्ताय देवीभक्तपराय च।
इदं रहस्यं परमं दुर्लभं दुष्टचेतसाम्॥ १७३॥

॥ धूमावतीसहस्त्रनामस्तोत्रं सम्पूर्णम्॥

धूमावत्यष्टोत्तरशतनामस्तोत्रम्

ध्यानम्

धूम्राभां धूम्रवस्त्रां प्रकटितदशनां मुक्तबालाम्बराढ्यां
काकाङ्कस्यन्दनस्थां धवलकरयुगां शूर्पहस्तातिरूक्षाम्।
नित्यं क्षुत्क्षान्तदेहां मुहुरतिकुटिलां वारिवाञ्छाविचित्तां
ध्यायेद् धूमावतीं वामनयनयुगलां भीतिदां भीषणास्याम्॥ १॥

विवर्णा चञ्चला दुष्टा दीर्घा च मलिनाम्बरा।
विमुक्तकुन्तला रूक्षा विधवाविरलद्विजा॥
काकध्वजरथारूढा विलम्बितपयोधरा।
शूर्पहस्तातिरक्ताक्षीधृतहस्ता वरान्विता॥
प्रवृद्धघोणा तु भृशं कुटिला कुटिलेक्षणा।
क्षुत्पिपासार्दिता नित्यं भयदा कलहास्पदा॥ २॥

ईश्वर उवाच

ॐ धूमावती धूम्रवर्णा धूम्रपानपरायणा।
धूम्राक्षमथिनी धन्या धन्यस्थाननिवासिनी॥ १॥
अघोराचारसन्तुष्टा अघोराचारमण्डिता।
अघोरमन्त्रसम्प्रीता अघोरमन्त्रपूजिता॥ २॥
अट्टाट्टहासनिरता मलिनाम्बरधारिणी।
वृद्धा विरूपा विधवा विद्या च विरलद्विजा॥ ३॥
प्रवृद्धघोणा कुमुखी कुटिला कुटिलेक्षणा।
कराली च करालास्या कङ्काली शूर्पधारिणी॥ ४॥
काकध्वजरथारूढा केवला कठिना कुहूः।
क्षुत्पिपासार्दिता नित्या ललज्जिह्वा दिगम्बरी॥ ५॥
दीर्घोदरी दीर्घरवा दीर्घाङ्गी दीर्घमस्तका।
विमुक्तकुन्तला कीर्त्या कैलासस्थानवासिनी॥ ६॥

क्रूरा कालस्वरूपा च कालचक्रप्रवर्तिनी।
विवर्णा चञ्चला दुष्टा दुष्टविध्वंसकारिणी॥ ७॥
चण्डी चण्डस्वरूपा च चामुण्डा चण्डनिःस्वना।
चण्डवेगा चण्डगतिश्चण्डमुण्डविनाशिनी॥ ८॥
चाण्डालिनी चित्ररेखा चित्राङ्गी चित्ररूपिणी।
कृष्णा कपर्दिनी कुल्ला कृष्णरूपा क्रियावती॥ ९॥
कुम्भस्तनी महोन्मत्ता मदिरापानविह्वला।
चतुर्भुजा ललज्जिह्वा शत्रुसंहारकारिणी॥ १०॥
शवारूढा शवगता श्मशानस्थानवासिनी।
दुराराध्या दुराचारा दुर्जनप्रीतिदायिनी॥ ११॥
निर्मांसा च निराकारा धूमहस्ता वरान्विता।
कलहा च कलिप्रीता कलिकल्मषनाशिनी॥ १२॥
महाकालस्वरूपा च महाकालप्रपूजिता।
महादेवप्रिया मेधा महासङ्कटनाशिनी॥ १३॥
भक्तप्रिया भक्तगतिर्भक्तशत्रुविनाशिनी।
भैरवी भुवना भीमा भारती भुवनात्मिका॥ १४॥
भेरुण्डा भीमनयना त्रिनेत्रा बहुरूपिणी।
त्रिलोकेशी त्रिकालज्ञा त्रिस्वरूपा त्रयीतनुः॥ १५॥
त्रिमूर्तिश्च तथा तन्वी त्रिशक्तिश्च त्रिशूलिनी।

फलश्रुतिः

इति धूमामहत्स्तोत्रं नाम्नामष्टशतात्मकम्॥ १६॥
मया ते कथितं देवि शत्रुसङ्घविनाशनम्।
कारागरे रिपुग्रस्ते महोत्पाते महाभये॥ १७॥
इदं स्तोत्रं पठेन्मर्त्यो मुच्यते सर्वसङ्कटैः।
गुह्याद् गुह्यतरं गुह्यं गोपनीयं प्रयत्नतः॥ १८॥
चतुष्पदार्थदं नृणां सर्वसम्पत्प्रदायकम्॥ १९॥

॥ धूमावत्यष्टोत्तरशतनामस्तोत्रं सम्पूर्णम्॥

धूमावतीकवचम्

श्रीपार्वत्युवाच

धूमावत्यर्चनं शम्भो श्रुतं विस्तरयो।
कवचं श्रोतुमिच्छामि तस्या देव वदस्व मे॥ १॥

श्रीभैरव उवाच

शृणु देवि परं गुह्यं न प्रकाश्यं कलौ युगे।
कवचं श्रीधूमवत्याः शत्रुनिग्रहकारकम्॥ २॥
ब्रह्माद्या देवि सततं यद्वशादरिघातिनः।
योगिनी भवन्ति शत्रुघ्ना यस्या ध्यानप्रभावतः॥ ३॥

विनियोगः—ॐ अस्य धूमावतीकवचस्य पिप्पलादऋषिरनुष्टुप्छन्दः श्रीधूमावती देवता धूं बीजं स्वाहा शक्तिः धूमावती कीलकं पाठे विनियोगः।

ॐ धूं बीजं मे शिरः पातु धूं ललाटं सदावतु।
धूमा नेत्रयुगं पातु वती कर्णौ सदावतु॥ ४॥
दीर्घा तूदरमध्ये तु नाभिं मे मलिनाम्बरा।
शूर्पहन्ता पातु गुह्यं रूक्षा रक्षतु जानुनी॥ ५॥
मुखं मे पातु भीमाख्या स्वाहा रक्षतु नासिकाम्।
सर्वविद्याऽवतु कण्ठ विवर्णा बाहुयुग्मकम्॥ ६॥
चञ्चला हृदयं पातु धृष्टा पार्श्वे सदाऽवतु।
धूमहस्ता सदाऽवतु धूमहस्ता सदा पातु पादौ पातु भयावहा॥ ७॥
प्रवृद्धरोमा तु भृशं कुटिला कुटिलेक्षणा।
क्षुत्पिपासार्दिता देवी भयदा कलहप्रिया॥ ८॥
सर्वाङ्ग पातु मे देवी सर्वशत्रुविनाशिनी।

फलश्रुतिः

इति ते कथितं पुण्यं कवचं भुवि दुर्लभम्॥ ९॥
न प्रकाश्यं न प्रकाश्यं न प्रकाश्यं कलौ युगे।
पठनीय महादेवि त्रिसन्ध्यं ध्यानतत्परैः॥ १०॥
दुष्टाभिचारो देवेशि तद्गात्रं नैव संस्पृशेत्॥ ११॥

॥ धूमावतीकवचं सम्पूर्णम्॥

धूमावतीस्तोत्रम्

ध्यानम्

विवर्णा चञ्चला दुष्टा दीर्घा च मलिनाम्बरा।
विमुक्तकुन्तला रूक्षा विधवाविरलद्विजा॥
काकध्वजरथारूढा विलम्बितपयोधरा।
शूर्पहस्तातिरक्ताक्षीधृतहस्ता वरान्विता॥
प्रवृद्धघोणा तु भृशं कुटिला कुटिलेक्षणा।
क्षुत्पिपासार्दिता नित्यं भयदा कलहास्पदा॥

प्रातर्या स्यात्कुमारी कुसुमकलिकया जापमाला जपन्ती
मध्याह्ने प्रौढरूपा विकसितवदना चारुनेत्रा निशायाम्।
संध्यायां वृद्धरूपा गलितकुचयुगा मुण्डमालां वहन्ती
सा देवी देवदेवी त्रिभुवनजननी कालिका पातु युष्मान्॥ १॥

बद्ध्वा खट्वाङ्गखेटौ कपिलवरजटामण्डलं पद्मयोनेः
कृत्वा दैत्योत्तमाङ्गैः स्रजमुरसि शिरःशेखरं तार्क्ष्यपक्षैः।
पूर्ण रक्तैः सुराणां यम महिषमहाशृङ्गमादाय पाणौ
पायाद्वौ वन्द्यमानप्रलयमुदितया भैरवः कालरात्र्याम्॥ २॥

चर्वन्तीमस्थिखण्डं प्रकटकटकटाशब्दसंघातमुग्रं
कुर्वाणा प्रेतमध्ये कहहकहकहाहास्यमुग्रं कृशाङ्गी।
नित्यं नित्यप्रसक्ता डमरुडिमडिमान् स्फारयन्ती मुखाब्जं
पायान्नश्चण्डिकेयं झझमझझझझमाजल्पमाना भ्रमन्ती॥ ३॥

टंटंटंटंटंटाप्रकरटमटमाना घण्टां वहन्ती
स्फेंस्फेंस्फेंस्कारकारा टकटकितहसा नादसंघट्टभीमा।
लोलन्मुण्डाग्रमाला ललहलहलहालोललोलाग्रवाचं
चर्वन्ती चण्डमुण्डं मटमटमटितैश्चर्वयन्ती पुनातु॥ ४॥

वामे कर्णे मृगाङ्कं प्रलप परिगतं दक्षिणे सूर्यबिम्बं
कण्ठे नक्षत्रहारं वरविकटजटाजूटके मुण्डमालाम्।

स्कन्धे कृत्वोरगेन्द्रध्वजनिकरयुतं ब्रह्मकङ्कालभारं संहारे
धारयन्ती मम हरतु भयं भद्रदा भद्रकाली॥५॥
तैलाभ्यक्तैकवेणी त्रपुमयविलसत्कर्णिकाक्रान्तकर्णा
लौहेनैकेन कृत्वा चरणनलिन कामात्मनः पादशोभाम्।
दिग्वासा रासभेन ग्रसति जगदिदं या यवाकर्णपूरा
वर्षिण्यातिप्रवृद्धा ध्वजविततभुजा सासि देवि त्वमेव॥६॥
संग्रामे हेतिकृत्तैः सरुधिरदशनैर्यद्भटानां शिरोभिर्माला-
माबद्ध्य मूर्ध्नि ध्वजविततभुजा त्वं श्मशाने प्रविष्टा।
दृष्टा भूतप्रभूतैः पृथुतरज घनाबद्धनागेन्द्रकाञ्ची
शूलाग्रव्यग्रहस्ता मधुरुधिरसदाताम्रनेत्रा निशायाम्॥७॥
दंष्ट्रारौद्रे मुखेऽस्मिंस्तव विशति जगद्देवि सर्वं क्षणार्द्धात्
संसारस्यान्तकाले नररुधिरवशासम्प्लवे धूमधूम्रे।
काली कापालिकी सा शवशयनरता योगमुद्रा रक्ता
ऋद्धिः सभास्था मरणभयहरा त्वं शिवा चण्डघण्टा॥८॥

फलश्रुतिः

धूमावत्यष्टकं पुण्यं सर्वापद्विनिवारकम्।
यः पठेत्साधको भक्त्या सिद्धिं विंदति वाञ्छिताम्॥९॥
महापदि महाघोरे महारोगे महारणे।
शत्रूच्चाटे मारणादौ जन्तूनां मोहने तथा॥१०॥
फटेत्स्तोत्रमिदं देवि सर्वत्र सिद्धिभाग्भवेत्।
देव-दानव-गन्धर्वा यक्ष-राक्षस-पन्नगाः॥११॥
सिंहव्याघ्रादिकाः सर्वे स्तोत्रस्मरणमात्रतः।
दूराद्दूरतरं यान्ति किं पुनर्मानुषादयः॥१२॥
स्तोत्रेणानेन देवेशि किं न सिद्ध्यति भूतले।
सर्वशान्तिर्भवेद्देवि अन्ते निर्वाणतां व्रजेत्॥१३॥

॥ धूमावतीस्तोत्रं सम्पूर्णम्॥

धूमावतीहृदयम्

विनियोग:—ॐ अस्य श्रीधूमावतीहृदयस्तोत्रमन्त्रस्य पिप्पलाद ऋषिरनुष्टुप्छन्दः श्रीधूमावती देवता धूं बीजं ह्रीं शक्तिः क्लीं कीलकं पाठे विनियोगः।

हृदयादिषडङ्गन्यासः—ॐ धां हृदयाय नमः। ॐ धीं शिरसे स्वाहा। ॐ धूं शिखायै वषट्। ॐ धैं कवचाय हुम्। ॐ धौं नेत्रत्रयाय वौषट्। ॐ धः अस्त्राय फट्।

ध्यानम्

धूम्राभां धूम्रवस्त्रां प्रकटितदशनां मुक्तबालाम्बराढ्यां
काकाङ्कस्यन्दनस्थां धवलकरयुगां शूर्पहस्तातिरूक्षाम्।
नित्यं क्षुत्क्षान्तदेहां मुहुरतिकुटिलां वारिवाञ्छाविचित्तां
ध्यायेद् धूमावतीं वामनयनयुगलां भीतिदां भीषणास्याम्॥ १॥

कल्पादौ या कालिकाद्याऽचीकलन्मधुकैटभौ।
कल्पान्ते त्रिजगत्सर्वं धूमावतीं भजामि ताम्॥ २॥
गुणागाराऽगम्यगुणा या गुणागुणवर्धिनी।
गीता वेदार्थतत्त्वज्ञैर्धूमावतीं भजामि ताम्॥ ३॥
खट्वाङ्गधारिणी खर्वाखण्डिनी खलरक्षसाम्।
धारिणी खेटकस्यापि धूमावतीं भजामि ताम्॥ ४॥
घूर्णघूर्णकरा घोरा घूर्णिताक्षी घनस्वना।
घातिनी घातकानां या धूमावतीं भजामि ताम्॥ ५॥
चर्वन्तीमस्थितखण्डानां चण्डमुण्डविदारिणीम्।
चण्डाट्टहासिनीं देवीं भजे धूमावतीमहम्॥ ६॥
छिन्नग्रीवां क्षताच्छन्नां छिन्नमस्तस्वरूपिणीम्।
छेदिनीं दुष्टसङ्घानां भजे धूमावतीमहम्॥ ७॥
जाता याचिता देवैरसुराणां विघातिनी।
जल्पन्ती बहु गर्जन्ती भजे तां धूम्ररूपिणीम्॥ ८॥
झङ्कारकारिणीं झंझां झंझमाझमवादिनीम्।
झटित्याकर्षिणीं देवीं भजे धूमावतीमहम्॥ ९॥

टीपटङ्कारसंयुक्तां धनुष्टंकारकारिणीम्।
घोरां घनघटाटोपां वन्दे धूमावतीमहम्॥ १०॥
ठंठंठंठंमनुप्रीतिं ठःठःमन्त्रस्वरूपिणीम्।
ठमकाह्लगति प्रीतां भजे धूमावतीमहम्॥ ११॥
डमरूडिंडिमारावां डाकिनीगणमण्डिताम्।
डाकिनीभोगसन्तुष्टां भजे धूमावतीमहम्॥ १२॥
ढक्कानादेन सन्तुष्टां ढक्कावादकसिद्धिदाम्।
ढक्कावादचलच्चित्तां भजे धूमावतीमहम्॥ १३॥
तत्त्ववार्त्ताप्रियमाणां भवपाथोधितारिणीम्।
तारस्वरूपिणीं तारां भजे धूमावतीमहम्॥ १४॥
थांथींथूंथैंमन्त्ररूपां थैंथौंथंथःस्वरूपिणीम्।
थकारवर्णसर्वस्वां भजे धूमावतीमहम्॥ १५॥
दुर्गास्वरूपिणीं देवीं दुष्ट-दानवदारिणीम्।
देव-दैत्यकृतध्वंसां वन्दे धूमावतीमहम्॥ १६॥
ध्वान्ताकारांधकध्वंसांुक्तधम्मिल्लधारिणीम् ।
धूमधाराप्रभां धीरां भजे धूमावतीमहम्॥ १७॥
नर्तकीनटनप्रीतां नाट्यकर्मविवर्द्धिनीम्।
नारसिंहींनराराध्यां नौमि धूमावतीमहम्॥ १८॥
पार्वतीपतिसम्पूज्यां पर्वतोपरिवासिनीम्।
पद्मारूपां पद्मपूज्यां नौमि धूमावतीमहम्॥ १९॥
फूत्कारसहितश्वासां फट्मन्त्रफलदायिनीम्।
फेत्कारिगणसंसेव्यां सेवे धूमावतीमहम्॥ २०॥
बलिपूज्यां बलाराध्यां बगलारूपिणीं वराम्।
ब्रह्मादिवंदितां विद्यां वन्दे धूमावतीमहम्॥ २१॥
भव्यरूपां भावाराध्यां भुवनेशीस्वरूपिणीम्।
भक्तभव्यप्रदां देवीं भजे धूमावतीमहम्॥ २२॥

मायां मधुमतीं मान्यां मकरध्वजमानिताम्।
मत्स्यमांसमहास्वादां मन्ये धूमावतीमहम्॥ २३॥
योगयज्ञप्रसन्नास्यां योगिनीपरिसेविताम्।
यशोदां यज्ञफलदां यजे धूमावतीमहम्॥ २४॥
रामाराध्यपदद्वन्द्वां रावणध्वंसकारिणीम्।
रमेशरमणीं पूज्यामहं धूमावतीं श्रये॥ २५॥
लक्षलीलाकलालक्ष्यां लोकवन्द्यपदाम्बुजाम्।
लम्बितां बीजकोशाढ्यां वन्दे धूमावतीमहम्॥ २६॥
बकपूज्यपदाम्भोजां बकध्यानपरायणाम्।
बालां बकारिसंध्येयां वन्दे धूमावतीमहम्॥ २७॥
शाङ्करीं शङ्करप्राणां सङ्कटध्वंसकारिणीम्।
शत्रुसंहारिणीं शुद्धां श्रये धूमावतीमहम्॥ २८॥
षडाननारिसंहन्त्रीं षोडशीरूपधारिणीम्।
षड् रसास्वादिनीं सौम्यां सेवे धूमावतीमहम्॥ २९॥
सुरसेवितपादाब्जां सुरसौख्यप्रदायिनीम्।
सुन्दरीगणसंसेव्यां सेवे धूमावतीमहम्॥ ३०॥
हेरम्बजननीं योग्यां हास्यलास्यविहारिणीम्।
हारिणीं शत्रुसङ्घानां सेवे धूमावतीमहम्॥ ३१॥
क्षीरोदतीरसम्वासां क्षीरपानप्रहर्षिताम्।
क्षणदेशेज्यपादाब्जां सेवे धूमावतीमहम्॥ ३२॥
चतुस्त्रिंशद्वर्णकानां प्रतिवर्णादिनामभिः।
कृतं तु हृदयं स्तोत्रं धूमावत्याः सुसिद्धिदम्॥ ३३॥
य इदं पठति स्तोत्रं पवित्रं पापनाशनम्।
स प्राप्नोति परां सिद्धिं धूमावत्याः प्रसादतः॥ ३४॥
पठन्नेकाग्रचित्तो यो यद्यदिच्छति मानवः।
तत्सर्वं समवाप्नोति सत्यं सत्यं वदाम्यहम्॥ ३५॥

॥ धूमावतीहृदयं सम्पूर्णम्॥

धूमावतीप्रतिष्ठासामग्री

रोली १०० ग्राम, मौली २ बड़ी लच्छी, धूपबत्ती ४ पैकेट, केसर ३ मासा, कपूर १०० ग्राम, अबीर, बुक्का, सफेद चन्दन, सिन्दूर १०० ग्राम, हलदी पीसी २५० ग्राम, मेंहदी पीसी १०० ग्राम, यज्ञोपवीत (५०), रूई २५० ग्राम, चावल १० किलो, पान ५० नग प्रतिदिन, सुपारी ५ किलो। भोग के लिए पेड़ा और मिष्ठान्न १ किलो प्रतिदिन, मिश्री आधा किलो, बतासा १ किलो, ऋतुफल एक दर्जन प्रतिदिन, पंचमेवा १ किलो। इलायची छोटी दो तोला, लवंग दो तोला, जावित्री दो तोला, जायफल २० नग, अतर की शीशी दो, कस्तूरी शीशी एक, गुलाबजल की शीशी एक बड़ी, गोबर, गोमूत्र, दुग्ध आधा लीटर प्रतिदिन, दधि २५० ग्राम प्रतिदिन, चीनी ५०० ग्राम प्रतिदिन, गो घृत, शहद २५० ग्राम, पीली सरसों १०० ग्राम, कच्चा सूत सौ हाथ। लाल पुष्पों व अड़हुल की माला २५ प्रतिदिन, लाल पुष्प, तुलसी, दूर्वा, बिल्वपत्र, प्रतिदिन। नारियल जटादार पचीस, गरी का गोला ग्यारह, चन्दन का मुठ्ठा लाल, सफेद एक-एक, हरसा एक। पाँच-पाँच रुपये का लाल, पीला, हरा, काला रंग, पंचरत्न की पुड़िया सात।

सर्वौषधि—५ रुपये का मुरा, ५ रुपये का जटामासी, ५ रुपये का वच, ५ रुपये का कूट, ५ रुपये शिलाजीत, ५ रुपये आंबाहलदी, ५ रुपये दारूहलदी, ५ रुपये का सटी (कचूर), ५ रुपये का चंपा, ५ रुपये का नागरमोथा।

सप्तमृत्तिका—हाथी के स्थान की मिट्टी, घोड़े के स्थान की मिट्टी, बल्मीक (दीमक) की मिट्टी, नदी संगम की मिट्टी, तालाब की मिट्टी, राजद्वार (चतुष्पथ) की मिट्टी, गोशाला की मिट्टी।

सप्तधान्य—यव दो किलो, गेहूँ दो किलो, धान दो किलो, तिल दो किलो, ककुनी आधा किलो, सावाँ आधा किलो, चना दो किलो।

नवग्रहकाष्ठ—नवग्रह काष्ठ की १०८-१०८ लकड़ियाँ। कुशा एक सौ आठ। मृगचर्म एक व कम्बल एक, सूत की डोरी दस हाथ की, ताँबे का तार बीस हाथ का, काली उड़द एक किलो, लोहे की कंटिया चार, काष्ठ की दो चौकी, काष्ठ का पाटा तीन, १ बण्डल सूतरी, केले के स्तम्भ आठ, ५ रुपये का हरताल, ५ रुपये का मैनसिल, ५ रुपये का सुरमा काला, ५ रुपये का सुरमा सफेद, ५ रुपये का पारा, कांक्षी वरिका, कौसिस, गेरू, अगर, तगर, खश, वैष्णवी, सहदेवी, लक्ष्मणा, ब्राह्मी, सोंठ, शमी, शताबरी, गुडूची, सौराष्ट्री, अर्जुन, आवला, गोरोचन, कौवाकोठी, शंख-पुष्पी, वरियरा, भटकटैया, सोमलता, ऋतु जन्य फल प्रतिदिन, बड़ा नीबू, कागजी नीबू, जामुन पत्र, अशोक पत्र,

शमीपत्र, कदम्बपत्र, सेमरपत्र, पंचपल्लव की छाल, सेवार, ऊख का रस, सुरोदक, शान्त्युदक, क्षीरोदक, सितपुष्पोदक, गोशृङ्गोदक, फलोदक, नवरत्नोदक, सुवर्णोदक, मेघजल, तीर्थजल, गुलाब-जल, केवड़ाजल, अतर, फुलेल। अग्निहोत्र की भस्म। मक्खन आधा किलो, दुग्ध पाँच किलो, दही ढ़ाई किलो, गोबर, गोमूत्र, धान का लावा एक पाव, सत्तू सौ ग्राम, जौ का आटा डेढ़ किलो, चावल का आटा २५० ग्राम, मसूर का आटा २५० ग्राम, जटामासी का चूर्ण ५० ग्राम, आँवला का चूर्ण ५० ग्राम।

अन्नाधिवास के लिये अन्न—दो बोरा चावल, दो बोरा गेहूँ।

घृताधिवास के लिये घृत—गो घृत टीन एक, ब्रह्मशिला एक, कूर्मशिला एक। मिट्टी की पेटी एक, लोहे की कंटियां आठ, ऊन का सूत २५० ग्राम, तीन ताँगे का सूत पाँच सौ हाथ। चाँदी का तार दो सौ हाथ, कलश चाँदी अथवा ताम्र का एक, कलश ताम्र अथवा पीतल के पाँच, कमण्डलु (झारी) एक, तस्तरी पीतल दस, पूर्णपात्र कलश (ब्रह्मा के लिये) एक, बघोना (खीर पकाने के लिये) एक, कटोरा कांसे का बड़ा एक, कटोरी ग्यारह, थाली दो, थाली कांसे की एक, परात एक, कड़छुल पीतल एक, सड़सी पीतल एक, दो कांसे की कटोरी (छायापात्र के लिये), आरतीदानी एक, धूपदानी एक, घण्टा एक, घड़ौल एक, शंख एक, मिट्टी के कलश दो सौ पचास, मिट्टी कसोरा एक सौ, पत्तल एक सौ, मीठा तेल ढ़ाई किलो, सुवर्ण के टुकड़े पाँच, चाँदी के टुकड़े पाँच, ताँबे के टुकड़े पाँच, पीतल के टुकड़े पाँच, शीशा एक, रांगा एक।

आचार्यवरणसामग्री, ब्राह्मणवरणसामग्री।

देवी को चढ़ाने के लिये सभी वस्त्र।

धूमावती की स्वर्ण प्रतिमा, वास्तु, क्षेत्रपाल, योगिनी, नवग्रह एवं असंख्यात रुद्र की मूर्ति स्वर्ण या चाँदी की, सुवर्ण की शलाका दो, सुवर्ण का सर्प (नाग) एक, सुवर्ण के टुकड़े नब्बे, सुवर्ण की जिह्वा एक (वसोर्धारा के लिए), चाँदी के यज्ञपात्र। मृगचर्म, व्याघ्रचर्म।

ध्वजा-पताका तथा वेदियों के लिये वस्त्र—सफेद कपड़ा दो थान, लाल कपड़ा एक थान, पीला कपड़ा एक थान, हरा कपड़ा एक थान, काला कपड़ा एक थान, पंचरंगा चंदवा बड़ा एक, चंदवा छोटे पाँच।

शय्यासामग्री। मन्दिर के लिये शय्यासामग्री की सभी वस्तुएँ। मन्दिर के लिये समस्त पूजनसामग्री।

हवन सामग्री—प्रतिष्ठा की हवन-सामग्री प्रतिष्ठा का आचार्यत्व करनेवाले आचार्य ही स्वयं बतायें।

॥ इति धूमावतीप्रतिष्ठासामग्री ॥

धूमावतीपूजासामग्री

अक्षत, केशर, शहद।
चन्दन, बतासा।
अबीरबुक्का, रूई, पान, सोपाड़ी, रोली, मौली, कपूर, केसर।
धूपबत्ती १ पैकेट
इत्र और गुलाबजल १-१ शीशी।
ऋतुफल, पेड़ा और मिष्ठान्न भोग के लिए।
पञ्चामृत के लिए—दूध, दही, शक्कर, घृत, शहद।
लाल फूलों की माला, लाल पुष्प फुटकर, कमल-पुष्प, अड़हुल की माला।
तुलसी, दूर्वा, बिल्वपत्र।
आसन।

पञ्चपात्र, आचमनी, तष्टा, अर्घा, नारियल, गिरी-गोला, यज्ञोपवीत ११ नग, गंगाजल, चावल २ किलो, लाल, पीला, हरा, काला रंग ५-५ रुपये का, शक्कर एक किलो।
धूमावती देवी के सभी वस्त्र व आभूषण आदि।
धूमावती देवी की मूर्ति सुवर्ण की।
एक चौकोर सुवर्ण पत्र यन्त्र के लिए।
एक चाँदी का सिक्का।
तीन धोती जनानी, चार धोती व चार गमछे।
अनार की कलम।

केले के चार खम्भे।
वन्दनवार, दो झण्डे लाल रंग के।
जौ, पीली सरसों, चौकी एक बड़ी, दो चौकी छोटी, पीढ़ा ३।
३ मीटर सफेद कपड़ा, २ मीटर लाल कपड़ा।
कलश ताम्र का १ बड़ा।
पञ्चपल्लव, सप्तमृत्तिका सर्वौषधि, गोमूत्र, गोबर।
आचार्य वरण और ब्राह्मणों के वरण की सामग्री।
कांसे का छायापात्र एक, पूर्णपात्र एक, दो थाली, पाँच कटोरी, एक लोटा, एक सिंहासन, दीया और पत्तल।

॥ इति धूमावतीपूजासामग्री ॥

धूमावतीहवनसामग्री

काला तिल ८० किलो।
चावल ४० किलो।
जौ २० किलो।
चीनी १० किलो।
आधा किलो गुग्गुल।
आधा किलो चन्दन का चूरा।

२५० ग्राम भोजपत्र।
१ टीन शुद्ध घृत।
३ कुंतल आम की लकड़ी।
५० गोयठा।
हवन के सभी पात्र।

आज्यस्थाली, चरुस्थाली पीतल की सँड़सी
पूर्णपात्र का भगोना
एक कांसे का छायापा

॥ इति धूमावतीहवनसामग्री ॥

धर्मशास्त्र-कर्मकाण्ड-ग्रन्थ

ग्रन्थ	लेखक
अन्नपूर्णा-रहस्यम्	पं० अशोक कुमार गौड़
कुण्डार्कः	महर्षि अभय कात्यायन
कालभैरवरहस्यम्	पं० अशोक कुमार गौड़
श्रीकृष्णरहस्यम्	पं० अशोक कुमार गौड़
गणपतिरहस्यम्	पं० अशोक कुमार गौड़
गायत्रीरहस्यम्	पं० अशोक कुमार गौड़
नवग्रहयाग रहस्यम्	पं० अशोक कुमार गौड़
नृसिंहरहस्यम्	पं० अशोक कुमार गौड़
नारदभक्तिसूत्र	हिन्दी टीका सहित
पञ्चदेव-प्रतिष्ठा-रहस्यम्	पं० अशोक कुमार गौड़
पारस्करगृह्यसूत्रम्	डॉ० जगदीशचन्द्र मिश्र
भुवनेश्वरी-रहस्यम्	पं० अशोक कुमार गौड़
मण्डपकुण्डसिद्धिः	महर्षि अभय कात्यायन
मनुस्मृतिः	आचार्य शिवराज कौण्डिन्यायन
महामृत्युञ्जययाग-रहस्यम्	पं० अशोक कुमार गौड़
यज्ञमीमांसा	पं० वेणीरामशर्मा 'गौड़'
याज्ञवल्क्यस्मृतिः	डॉ० गङ्गासागर राय
रामरहस्यम्	पं० अशोक कुमार गौड़
रुद्रपद्धतिः	पं० दौलतराम गौड़
रुद्रयागरहस्यम्	पं० अशोक कुमार गौड़
लक्ष्मीरहस्यम्	पं० अशोक कुमार गौड़
वेदी पूजा-रहस्यम्	पं० अशोक कुमार गौड़
खाँटू बाबा श्यामरहस्यम्ः	पं० अशोक कुमार गौड़
सूर्ययागरहस्यम्	पं० अशोक कुमार गौड़
हनुमद्यागरहस्यम्	पं० अशोक कुमार गौड़

चौखम्बा सुरभारती प्रकाशन
वाराणसी
email : chaukhambasurbharatiprakashan@gmail.com
website : www.chaukhamba.co.in